श्रीमद्भागवतको प्रारूप

और

वल्लभाख्यान

(श्रीगोपालदासजी कृत)

गोस्वामी श्याम मनोहर

प्रकाशक : गोस्वामी श्याममनोहर
६३,स्वस्तिक सोसायटी
४था रस्ता, जुहु स्कीम
विले-पार्ला, मुंबई.४०००५६.

प्रकाशनार्थ

आर्थिकसहयोग : श्रीमती इन्दुमति एवम् श्रीगिरिराजभूषण

सी.डी.रॅकार्डसे लिपिबद्धकर्ता : श्रीअशोक शर्मा

सम्पादक : श्रीअतुल्य शर्मा, श्रीमती मनीषा-परेश शाह

प्रवचनकार : गोस्वामी श्याम मनोहर

प्रति : २०००

नि:शुल्कवितरणार्थ

प्रथम संस्करण : श्रीमद्वल्लभाचार्यप्राकट्योत्सव वि.सं.२०७०

मुद्रक :
Sainath printers
moti chhipwad, main road,
near khatri pole, vadodara.
mob : 9825588850
Email : sainath.printers@yahoo.co.in

प्रस्तावना

श्रीमदाचार्यचरणान् लीलापरिकरैर्युतान्।
प्रभुचरणौ च सप्तान् सुतान् वन्दे अहं मुदा।।

(उपक्रम)

'आख्यान' पद संस्कृत और गुजराती दोनों ही भाषाओंमें, गद्य या पद्य किसी भी शैलीमें, प्रसिद्ध या अप्रसिद्ध वृत्तान्तके वर्णनार्थ प्रयोज्य माना गया है. यथा **''अवतारानुचरितं हरेः च अस्य अनुवर्तिनां पुंसाम् ईशकथा प्रोक्ता नाना-आख्यान-उपबृंहिता''** (भाग.पुरा.२।१०।५). गुजराती-भाषामें, परन्तु, आख्यान एक विशेष काव्यविधा ही बन गया. ऐसे आख्यानोंका व्यक्ततया किसी उपदेश्य विषयके अंगभूत होना आवश्यक नहीं होता. फिरभी दत्तात्रेयकी तरह कोई अपने कर्तव्यके स्वरूपके निर्धारणार्थ तो व्यक्ततया अनुपदिष्ट भी किसी बातको, किसी व्यक्तिके चरित्र या गुणों से इंगित होती मान कर गुरुभाव रख कर उनसे मिलते उपदेश लेना चाहे तो वह कथा अन्य है. 'उपाख्यान', परन्तु, बहुधा किसी व्यक्ततया उपदेशके अंगतया वर्णित वृत्तान्तके अर्थमें उपयोगमें लाये जाते हैं. आख्यान और उपाख्यान के बीच यों प्रभेद जान लेनेपर अतिलघुकाय वृत्तान्तके वर्णनपरक होनेपर भी श्रीवल्लभाख्यान एक स्वतन्त्र आख्यान है नकि उपाख्यान. क्योंकि स्वयं आख्यानकारने कुछ एक आख्यानोंके आद्यन्तमें इन आख्यानोंके गानकी प्रयोजनश्रुति या फलश्रुति यों दी है :

''वन्दूं श्रीविट्ठलवर... जगतीतल उद्धार करेवा प्रकट्या

परमदयाल'',''आ धवलधनाश्री गान जे करे उच्चरे श्रीविट्ठल–अवतार सारस्वतलीला ते जन लहे'',''स्कन्धसंख्याए कह्या श्रीभागवत रसराज भक्तजनपदरजप्रतापे सकल सरियां काज'',''एणी पेरे श्रीगुसांईजीने जाणो रे, जाणी अहर्निश गाई वखाणो रे. जे जीवजाति होय कोई रे, तेने तत्क्षण सर्वेसुख होय रे'',''एवा ते गुणनिधि नाथ गातां ब्रह्महत्यादिक अघ टळे लीला ते लहरीसिन्धु झीले रासरसिकने जई मळे... एणी पेरे लीला करे श्रीवल्लभराजकुमार भक्तजननां कोड़ पूरो आपो चरणविहार'',''नित्यप्रति क्षणुं–क्षणुं सुमरिये श्रीवल्लभनो परिवार रे रसना, श्रीपुरुषोत्तम प्रकटिया जगत्नो करेवा उद्धार रे रसना''.

(श्रीवल्लभाख्यान)

प्रभुचरण श्रीविट्ठलनाथका अवतार भी जगत्के उद्धारार्थ ही हुवा है. अत: इनके स्वरूप गुण एवं लीला के श्रवणादि करनेसे भागवतोक्त सारस्वतकल्पकी लीलाओंका अवगाहन सुलभ बन जाता है. रसराज श्रीभागवतकथाकी तरह श्रीविट्ठलावतारकी कथाद्वारा सभी पुरुषार्थ सिद्ध हो पाते होनेसे यह कथा भी किसी इतर पुरुषार्थके अंगतया निरूपित नहीं हुयी है. एतावता निखिल दुरितोंके क्षायक और सकल सुखोंके प्रदायक परब्रह्म परमात्मा पूर्ण पुरुषोत्तमकी प्राप्ति इस कथाके कीर्तन–स्मरणद्वारा शक्य बनती है. क्योंकि स्वयं पुरुषोत्तम ही श्रीविट्ठलेशके रूपमें अवतीर्ण हुवे हैं. अत: इस अवान्तरावतारलीलाके भी श्रवण स्मरण कीर्तन उसी तरह फलतया श्लाघ्य हैं.

श्रीमद्भागवत महापुराणमें भगवान्की सर्वविध सृष्टिलीलाका;

और, उस निजलीलात्मिका सृष्टिमें पुनः अवतीर्णरूपकी लीलाओंका श्रवण स्मरण एवं कीर्तन, कर्म-ज्ञान-भक्त्यादि साधनाओंके शेषतया कर्तव्य नहीं माना गया. इसे तो सर्वविध साधनाओंके शेषी अथवा फलरूप होनेके रूपमें मान्य रखा गया है. अतएव कहा गया है :

१.''धर्मः स्वनुष्ठितः पुंसां विष्वक्सेनकथासु यो, न उत्पादयेद् यदि रतिं श्रमएव हि केवलम्.''

२.''यदृच्छया मत्कथादौ जातश्रद्धस्तु यः पुमान् न निर्विण्णो नातिसक्तो भक्तियोगो अस्य सिद्धिदः. तावत् कर्माणि कुर्वीत न निर्विद्येत यावता, मत्कथाश्रवणादौ वा यावत् श्रद्धा न जायते... तस्माद् मद्भक्तियुक्तस्य योगिनो वै मदात्मनो न ज्ञानं नच वैराग्यं प्रायः श्रेयो भवेद् इह. यत् कर्मभिः यत् तपसा ज्ञानवैराग्यतः च यद् योगेन दानधर्मेण श्रेयोभिः इतरैरपि सर्वं मद्भक्तियोगेन मद्भक्तो लभते अञ्जसा.''

३.''येन-येन अवतारेण भगवान् हरिः ईश्वरः करोति कर्णरम्यानि ... यत् शृण्वतो अपैति अरतिः वितृष्णा, सत्त्वं च शुद्ध्यति अचिरेण पुंसो, भक्तिः हरौ, तत्पुरुषे च सख्यम्...''

(भाग.पुरा.१।२।८, ११।२०।८-३३, १०।७।१-२).

अतः भगवत्कथा भक्तिभावके उद्दीपनार्थ भी होती है और भक्तिके अनुभावतया भी. तद्वत् प्रस्तुत श्रीवल्लभाख्यान भी, आख्यानकारके गुरु गोस्वामिश्रीविट्ठलनाथ प्रभुचरणकी अवतारलीला भी, अनन्यशेषतया श्रवण-कीर्तन-स्मरणार्थ ही है **''यस्य देवे परा भक्तिः यथा देवे तथा गुरौ, तस्य एते कथिताः हि अर्थाः प्रकाशन्ते**

महात्मनः'' (श्वेता.उप.६।२३) इस चिरन्तन औपनिषदिक आदर्शसे अनुप्रेरित हो कर.

इसे बहुधा भागवतोक्त परब्रह्म परमात्मा भगवान् श्रीकृष्णकी आत्मरत्येकरूपा सृष्टिलीला और प्रमुखतया २४ अवतारोंकी लीलाओंको गौण बना कर श्रीवल्लभाख्यानोक्त सम्प्रदायसृष्टिलीला और उस सम्प्रदायमें अवतीर्ण उद्धारक आचार्यरूपकी अवतारलीलाकी प्रमुखता दरसानेका उपक्रम मान लिया जाता है. यह तो, किन्तु, सर्वथा अप्रसक्त ही है. क्योंकि देवमाहात्म्यके अवमूल्यन करनेपर तो तदुपमानक गुरुमाहात्म्य भी निःशेष निरस्त हो जायेगा. श्रीवल्लभाख्यानमें आख्येय निजगुरु श्रीविट्ठलनाथ प्रभुचरणमें आख्यानकार श्रीगोपालदासजीके श्रद्धाभक्तिभावका नियामक, सारस्वतकल्पमें प्रकट होनेवाले पुरुषोत्तमके ही लीलाभेद या भावभेद वाला अवतारान्तरतया, जगत्के उद्धारार्थ प्रकट होना है. अतएव भागवतप्रतिपादित लीलाओंके अवान्तरप्रभेदतया इन लीलाओंका अवगाहन यहां अभिप्रेत है. अतः भागवतोक्त भगवत्स्वरूप और भगवल्लीला का अवमूल्यन किये जानेपर तो इस प्रस्तुत कथाका मूल्य कुछ भी रह नहीं जाता. इस कथाके गानका प्रयोजन तो श्रीभागवतमें प्रतिपादित न हो पाये, ऐसे आचार्यरूप श्रीप्रभुचरणके भूतलपर अधुनाप्रकट अवतारस्वरूपमें और आचार्योचित लीलाओंमें, भागवत-प्रतिपादित पुरुषोत्तमस्वरूप और उसकी लीलाओं के साथ निगूढ़ तादात्म्यको खोजना ही है. अतः भागवतप्रतिपाद्य लीलाओंके विस्तारके रूपमें ही श्रीविट्ठलावतारलीलाको आख्यानकारने निहारना चाहा है. निष्कर्षतया भागवतोक्त पुरुषोत्तमकी लीलाओंकी

भजनानन्दरूपा रसानुभूति करना-करवाना ही यहां एक श्लाघ्य प्रयोजन है. श्रद्धातिरेकवशात्, परन्तु, ''अपरः कृष्णावतारो जगति श्रीविट्ठलो'' वचनका अभिप्राय ''अपरो विट्ठलावतारो जगति श्रीकृष्णः'' पर्यन्त हठात् अपहरण करके श्रीकृष्णलीलामें विट्ठललीला खोजना या आचार्यात्मना प्रकट हुवे प्रभुचरणमें पुरुषोत्तमावतार होनेके अपराधवश श्रीकृष्णकी पुरुषोत्तमात्मना की गयी लीलाओंका गुणोपसंहार करना भक्तिमें रसाभास प्रकट करना लगता है. अतः इस सन्दर्भमें आचार्यचरणका **''इयं हि फलरूपा भक्तिः... फलरूपता तदैव भवति यदा भजनाद् रसो अभिव्यक्तो भवति''** (सुबो.३।२५।३४) अभिप्राय इस लिये अवधेय लगता है कि रसाभास होनेपर तो भक्तिका फलात्मना विकास तो दूर साधनात्मना स्वरूप भी खण्डितप्राय हो जाता है!

यहां निजगुरुकी ध्यान-धारणा या भाव-भावना की रीति या प्रकार को ऐतिहासिक तथ्य अथवा सर्वजनगोचर तथ्य के रूपमें सोचना अनावश्यक है. इसका निर्धारण केवल इस एक आधारपर सहज ही बुद्धिगत हो सकता है कि प्रभुचरण श्रीविट्ठलनाथ जब व्रजमें निवास करने लगे तब प्रथम भार्या श्रीमती रुक्मिणीजी नहीं प्रत्युत द्वितीय श्रीमती पद्मावतीजी ही थी परन्तु आख्यानकार और व्याख्यानकार भी सभी ऐसा वर्णन कर रहे हैं कि मानों दोनों विद्यमान हों. प्रायः वर्णनकी विधामें जहां भूतकालिक क्रियापदका प्रयोग है वहां इतिहासका वर्णन अभिप्रेत है परन्तु जहां वर्तमानकालमें क्रियापदका प्रयोग है वहां इतिहासके बजाय ध्यान-धारणा या भाव-भावना ही निर्दिष्ट हुयी है. इनमें आधिभौतिक

विप्रवर आचार्यस्वरूप एवं आधिदैविक पुरुषोत्तमस्वरूपकी विवक्षाभेदके अनुरोधवश भी सामञ्जस्य सोचा जा सकता है. आधिभौतिक स्वरूप देश-काल-व्यक्तिस्वरूपकी कर्ममर्यादाके भीतर अनुभूतिगोचर होता है जबकि आधिदैविक स्वरूप देश-काल-व्यक्तिस्वरूपकी मर्यादाओंसे अतीत अलौकिक लीलाओंके रूपमें.

अत: श्रीमद्भागवतोक्त परब्रह्म पुरुषोत्तम श्रीकृष्णसे कट कर महाप्रभु श्रीवल्लभ या प्रभुचरण श्रीविट्ठल के पन्थ चलाने या मानने की दुर्वासना आख्यानकारके मौलिक अभिप्रायका अतिशय निष्ठुर अन्यथानयन लगता है.

(आख्येय वृत्त)

प्रस्तुत श्रीवल्लभाख्यानमें आख्येय पदार्थ विभिन्न व्याख्याकारोंकी व्याख्यानीतिके प्रभेदवश अनेकविध हो सकते हैं. अत: उनकी जटिलतामें उलझे बिना यहां तो यथामति स्वयं प्रस्तुत लेखकको रुचते व्याख्येय पदार्थका निरूपण विवक्षित है. यह अन्य सभी व्याख्याकारोंको मान्य हो या अनभिप्रेत ही हो ऐसा नहीं. और न ही उन्हें जो अभिप्रेत है उसके ऐकान्तिक प्रत्याख्यानके लिये ही है. अत: यहां तो नभ: पतन्ति आत्मसमं पतत्त्रिण: का उदार दृष्टिकोण रख कर ही विमर्शकी अपेक्षा है.

महर्षि बादरायण वेदव्यासद्वारा विरचित निगमकल्पतरुसे गलित होनेवाला फलरूप श्रीभागवत महापुराण द्वादश स्कन्धात्मक है. इसके विपरीत परमभगवदीय श्रीगोपालदासद्वारा विरचित श्रीवल्लभाख्यानके कड़वा या आख्यानों की संख्या नौ ही है. फिरभी प्रारम्भके प्रथम-

द्वितीय स्कन्ध तो भागवतोक्त लीलाके उत्तम मध्यम आदिम अधिकारी और उनके साधनों के ही निरूपक हैं. अत: अवशिष्ट तृतीय स्कन्धसे लेकर एकादश स्कन्ध पर्यन्त भगवान्‌की नवविध ही लीलाओंका निरूपण भागवतमें भी अभिप्रेत है. बारहवां स्कन्ध उन लीलाओंके कर्ता-आश्रयरूप स्वयं भगवान्‌के निजलीलालक्षित स्वरूपके निरूपणार्थ माना गया है. प्रस्तुत श्रीवल्लभाख्यानके भी नौ आख्यान नवविध लीलाओंके प्रतिपादनार्थ हैं. समग्रतया, किन्तु, इन नवाख्यानोंद्वारा प्रतिपाद्य लीलाओंके कर्ता-आश्रयरूप श्रीवल्लभके स्वरूपका प्रतिपादन अभिप्रेत है. यों श्रीभागवत और श्रीवल्लभाख्यान के बीच किसी तरहका असामंजस्य प्रकट नहीं होता. उपनिषद्‌में जैसे उत्पत्ति-स्थिति-लयरूप त्रिविध लीलाओंद्वारा तथा प्रत्यापत्ति-आश्रयरूप ब्रह्मका स्वरूप प्रतिपादनीय माना गया है (द्रष्ट.तैत्ति.उप.२ एवं ३) तद्‌वत् श्रीभागवतमें भी भगवान्‌से प्रकट होती नौ लीलाओं ३-११ स्कन्धोंमें और प्रत्यापत्ति-आश्रयरूप ब्रह्मका प्रतिपादन बारहवें स्कन्धमें प्रतिपाद्य बनाया गया है.

भागवतोक्त नवविध लीलाओंके प्रतिपाद्य विषयका सामान्य स्वरूप महाप्रभु श्रीवल्लभ यों समझाते हैं : १.अशरीर विष्णुका पुरुषशरीर धारण करना तृतीयस्कन्धोक्त सर्गलीला है. २.उस पुरुषरूपसे सृष्टिके उत्पादक स्थापक संहारक ब्रह्मा आदि देवता और तत्त्वों की उत्पत्ति चतुर्थ स्कन्धोक्त विसर्गलीला है. ३.उत्पन्न सृष्टिगत नाम-रूप-कर्मोंका तत्तद् मर्यादाओंमें पालन पंचमस्कन्धोक्त स्थानलीला है. ४.इस तरह अवस्थित होनेवालोंकी अभिवृद्धि षष्ठस्कन्धोक्त पोषणलीला है. ५.जिन नाम-रूप-कर्मोंका पोषण किया गया उनका आचरण सप्तमस्कन्धोक्त ऊतिलीला है. ६.उस

आचरणके अन्तर्गत जिनका आचरण सदाचारतया मान्य हुवा वह अष्टमस्कन्धोक्त मन्वन्तरलीला है. ७.सदाचारके अन्तर्गत भगवद्भक्ति नवमस्कन्धोक्त ईशानुकथालीला है. ८.ऐसे भगवद्भक्ति करनेवालोंके प्रपंचमें प्रकट हुवे होनेके बावजूद जलकमलवद् भगवत्परायण रह पाना दशमस्कन्धोक्त निरोधलीला है. ९.ऐसे निष्प्रपंचोंका निजस्वरूपलाभ एकादशस्कन्धोक्त मुक्तिलीला है. ये नौ तरहकी लीला जहां प्रकट हो रही हैं और जो इनका कर्ता है उसे द्वादशस्कन्धोक्त 'आश्रय' कहा गया है.

भगवान्की ऐसी लीलाका निरूपक ग्रन्थ जैसे 'भागवत-महापुराण' है, ठीक उसी तरह [१]समग्रतया श्रीवल्लभाख्यानमें श्रीवल्लभ और उसके [२]नौ कड़वा=प्रकरणोंमें श्रीविट्ठलनाथजीका स्वरूप और लीला का निरूपण अभिप्रेत है. यों वाल्लभ सम्प्रदायके सर्गविसर्गादिकी नौ लीलाओंके क्रमशः वर्णनार्थ जो आख्यान ऐसा यह नवाख्यान है.

इनमें सर्वप्रथम भागवतोक्त पुरुषविशेषके शरीरतया तृतीयस्कन्धमें ब्रह्माण्डसर्गकी तरह पुष्टिसम्प्रदायरूप शरीरके धारक सम्प्रदायके मूलपुरुषके प्राकट्यका वर्णन प्रस्तुत आख्यानके प्रथम प्रकरणमें अभिप्रेत है. उस पुरुषमेंसे जैसे ब्रह्माण्डके उत्पादक-पालक-उपसंहार अधिष्ठाता देवरूपोंका प्राकट्य चतुर्थस्कन्धमें है, वैसे ही पुष्टिसम्प्रदायके भी उत्पादक-पालक अधिष्ठाता देवरूप जैसे प्रमाण-प्रमेयरूप श्रीगोपीनाथ-श्रीविट्ठलनाथ प्रभुचरणोंके ऐसे स्वरूपोंका निरूपण द्वितीय प्रकरणमें अभिप्रेत है. भागवतके पांचवे स्कन्धमें जैसे

उत्पन्न रूपोंका तत्तद् मर्यादाके अनुसार परिपालन स्थानलीलाके रूपमें निरूपित हुवा, तदनुसार यहां तृतीय प्रकरणमें श्रीविट्ठलनाथका प्राकट्य भी पुष्टिसम्प्रदायमें अपेक्षित मर्यादाके अनुसार उसके परिपालनार्थ वर्णित हुवा है.भागवतके छट्ठे स्कन्धमें प्रतिपाद्य पोषणलीला तत्तद् मर्यादाके अनुसार स्थापित पदार्थोंकी अभिवृद्धिके रूपमें वर्णनीय है, उसी तरह प्रस्तुत आख्यानके अन्तर्गत चतुर्थाख्यानमें भी, अन्यतम व्याख्याकार गो.श्रीजीवनेशाचार्यके शब्दोंमें कहना हो तो, **'अनिष्ट-नष्टि-सन्तुष्ट-शिष्ट-इष्टफलद श्रीमान् विट्ठल'** (श्रीवल्ल.श्रीजी.कृत व्या.४।१२) द्वारा पुष्टिसम्प्रदायके अभिवर्धनकी रीति वर्णित की गयी है. भागवतके सातवें स्कन्धका विषय ऊतिलीला है और इस नवाख्यानके अन्तर्गत भी पांचवें आख्यानमें भी श्रीविट्ठलनाथद्वारा पोषितोंके स्वरूप और आचरण का निरूपण अभिलषित है. भागवतके आठवें स्कन्धमें मन्वन्तर अर्थात् स्वयंमें पनपी सद्वासनाके कारण अभिवर्धितोंके सदाचारका निरूपण हुवा है, तदनुसार प्रस्तुत छट्ठे आख्यानमें भी आख्याननायककी श्रीकृष्णस्वरूपसेवापरता और श्रीकृष्णलीलाकथा के निरूपणद्वारा पुष्टिसम्प्रदायमें प्रमुख सदाचाररूप भगवत्सेवाकथापरायताको बिरदाना है. भागवतके नवमस्कन्धमें भगवान्की अवतारलीला और भगवद्भक्तोंकी भक्तिरूपा लीला का गुणगान है, उसी तरह प्रस्तुत सातवें आख्यानमें **''आप सेवा करी शीखवे श्रीहरि भक्तिपक्ष-वैभव''** (श्रीवल्लभा.७।१) को प्रभुचरणने दृढ़ कैसे बनाया यह दरसाना चाहा है. भागवतके दसवें स्कन्धमें भगवान्की भक्तोंमें और भक्तोंकी भगवान्में अनन्यासक्ति अर्थात् निरुद्ध हो जाना प्रमुख प्रतिपाद्य विषय है, ठीक उसी तरह इस नवाख्यानके अन्तर्गत भी आठवें आख्यानमें अपने सकल

लीलापरिकरके साथ प्रभुचरण श्रीविट्ठलनाथजीके श्रीकृष्णसेवा-कथामें आत्यन्तिकतया निरुद्ध हो जानेकी लीलाका गुणगान किया गया है. भागवतके ग्यारहवें स्कन्धमें लीलार्थ प्रकट होनेवाले दैवी जीवात्मा और लीलाकर्ता परमात्मा का अपने-अपने स्वरूपोंमें अवस्थित हो जाना मुक्तिलीला है, तो इन आख्यानोंके अन्तिम प्रकरणमें आख्याननायक श्रीप्रभुचरणका अपने निखिल परिजनोंके साथ भगवत्सेवामें निरन्तर परायण रहनेकी स्वरूपावस्थानरूपा मुक्तिलीलाके वर्णनतया किया गया है.

इसी तरह तत्तद् आख्यानोंके तत्तत् प्रतिपाद्य-विषयोंको समग्रतया एक महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यके आख्यानके ही रूपमें निहार पानेको नौ के नौ आख्यानोंको 'श्रीवल्लभाख्यान' नाम्ना द्योतित किया गया है.

श्रीमद्भागवतमें भगवल्लीलाओंमें सर्गादि नवविध लीला लक्षणरूपा मानी गयी हैं. इन लक्षणोंके आधारपर समझमें आनेवाले इन लीलाओंके कर्ता और लीला के साथ तादात्म्यवाला अभिन्ननिमित्तोपादानभूत आश्रयरूप पुरुषोत्तमका धाम/धर्म रूपी अक्षरब्रह्म माना गया है. इस अक्षरब्रह्मको भी स्वरूपोपादानक काल-कर्म-स्वभाव-द्रव्य-चेतनारूप नित्यलीलाके रूपमें निहारनेपर दशविध लीलाकर्ता पुरुषोत्तम दशस्कन्धात्मक समग्रशास्त्रके प्रतिपाद्यतया मान्य किये जा सकते हैं.

एक अन्य दृष्टिसे इन नवविध लीलाओंको निहार कर इन्हीं लीलाओंको महाप्रभुने तीन अन्य उपखण्डोंमें भी वर्गीकृत किया है.

यथा १.प्रमेयखण्ड २.प्रमाणखण्ड और ३.ज्योति:खण्ड :

''ननु भगवान् प्रमेयं, तत्सामर्थ्येन ज्ञातं प्रमेयबलमेव भवति नतु प्रमाणस्य... य: सर्वत्र वेदादौ श्रुत: पदार्थ: स सर्वोऽपि भगवदीयएव 'सर्वेवेदा: यत्पदम् आमनन्ति'...'शतं शुक्राणि यत्र एकं भवन्ति, सर्वेहोतारो यत्र एकं भवन्ति' इति श्रुते: अनुग्राहक-प्रमाण-प्रमेयानाम् एकपर्यवसानविधानाद् यत्र त्रयोऽपि एते पर्यवस्यन्ति स आश्रय:. एते त्रयो अन्योन्यप्रवेशाद् नवसर्गादीनां लक्षणरूपा: भवन्ति. तत्र सर्गादिषु प्रमेयं लक्षणं, कारणप्राधान्यात्. पुष्ट्यादिषु प्रमाणम्. ईशानुकथादिषु ज्योतींषि इति. अर्थाद् एते उत्पत्ति-स्थिति-लयात्मानो भवन्ति.''

(सुबो.२।१०।२).

अर्थात् भागवतोक्त नवविध भगवल्लीलाओंके अन्तर्गत प्रथम त्रिक प्रमेय=उत्पत्तिपरक लक्षणरूप है, दूसरा त्रिक प्रमाण=स्थितिपरक लक्षणरूप है और तीसरा त्रिक ज्योति:=लयपरक लक्षणरूप है. श्रीवल्लभाख्यानके भी प्रथम त्रिकमें पुष्टिसम्प्रदायके प्रमेय तत्त्वका प्रतिपादन अभिप्रेत है. दूसरे त्रिकमें पुष्टिसम्प्रदायका भलीभांति बोध हो पाये ऐसी प्रमाणरूप लीला प्रभुचरणकी वर्णित हुयी है. तीसरे अर्थात् सात-आठ-नौ प्रकरणोंमें लीलाश्रयरूप महाप्रभु श्रीवल्लभके स्वरूपके अनुरूप ज्योति:=लयरूपा है. इस तरह इन नौ आख्यानोंमें श्रीविट्ठलनाथ प्रभुचरणकी नवविध लीला गायी गयी है.

(आख्यानकार श्रीगोपालदासजी)

इनके व्यक्तित्व और साहित्य के बारेमें मौलिक या प्राथमिक स्रोत प्रभुचरण श्रीविट्ठलनाथजीके चतुर्थात्मज श्रीगोकुलनाथजी द्वारा विरचित '२५२ वैष्णवनकी वार्ता' और उसपर महानुभाव श्रीहरिरायजीकृत 'भावप्रकाश' ही केवल हैं. पश्चात्कालिक सारेके सारे उल्लेख इन्हींपर अवलम्बित हैं.

ये गोपालदासजी वार्तासाहित्यके अनुसार, अधुना 'रूपाल' नाम्ना ख्यात, 'रूपापुरा' नामक गांव जो 'सरढव' और 'गांधीनगर' के बीच अवस्थित है, उसमें वैश्यपरिवारमें जन्मे थे. नौ वर्षकी आयुमें वर्तमान अमदावादकी 'असारवा' नामक बस्तीके निवासी तथा प्रभुचरणके नितान्त कृपापात्र भायला कोठारीकी 'गोमती' नामिका पुत्रीके साथ इनका विवाह अल्पायुमें ही हो चुका था. वार्ताकारके अनुसार ये 'सूधो मुग्ध' थे तो भावप्रकाशकारके अनुसार जन्मना मूक थे. प्रभुचरणके अनुग्रहसे इनके भीतर ज्ञान और वाणी दोनों ही प्रस्फुटित हो गये. वार्ताकार एक और महत्त्वपूर्ण स्पष्टीकरण यों देते हैं :

> **''तब गोपालदासजी श्रीगुसांईजीको दंडवत् करिकै श्रीवल्लभाख्यानको आरंभ किये सो कारिका 'वंदों श्रीविट्ठलवर सुंदर नवघनश्यामतमाल' यह कड़वा संपूरन गोपालदासने श्रीगुसांईजीके आगे गाई सुनायो... पाछें श्रीगुसांईजी गोपालदाससों यह आज्ञा करे जो गोपालदास ! श्रीआचार्यजीको गुनगान करो... तब दूसरे आख्यानको गान करे. ताकी कारिका 'श्रीलक्ष्मणसुत श्रीवल्लभरायजी सुमरिन करतां दुष्कृत जायेजी' यह**

आख्यान गोपालदास श्रीगुसांईजी आगे गाए... पाछें सात आख्यान और हू गोपालदास किये.''

(२५२ वै.वा.११।१).

इस विवरणके आधार दोनों तरहकी सम्भावना प्रकट होती हैं. सर्वप्रथम तो यह कि प्रथम दो आख्यान ही गोपालदासजीने प्रभुचरणके समक्ष गाये और शेष सात बादमें कभी जोड़ कर इन्हें नवाख्यान बनाया गया. अथवा नौ के नौ आख्यान तभी प्रभुचरणके सम्मुख भाविनी वृत्तिका अवलम्बन कर गाये या सुनाये. प्रथम सम्भावनाके पक्षमें यह उपपत्ति सरलतया बुद्धिग्राह्य हो जाती है कि प्रभुचरणके पश्चात्कालिक इतिवृत्त बादमें संयोजित हुवे होंगे. प्रभुचरण (प्रादु.वि.सं.१५७२ तिरो.वि.सं.१६४२) के निवासका इतिवृत्त पांच कालखण्डोंमें विभक्त माना गया है : अड़ैलनिवास जबलपुरनिवास गोकुलनिवास मथुरानिवास और अन्तमें पुनः गोकुलनिवास. इनमें अन्तिम गोकुलनिवासकी अवधिमें प्रभुचरणने वहांसे जो गुजरातयात्रा की, उस यात्राके समय गोपालदासका दीक्षित होना संभावित लगता है.

श्रीगंगाबेटीजीद्वारा विष्णुदासको लिखे पत्रमें प्रभुचरणकी छह गुजरातयात्राका विवरण, क्रमशः यों मिलता है : अड़ैलसे वि.सं.१६०० तथा १६१३ में, मथुरा–गोवर्धनसे १६२१ तथा १६२३ में, गोकुलसे १६३१ तथा १६३८ में. इन आख्यानोंमें व्रजवासके उल्लेखके कारण १६२१–१६३८ के बीच जो चार यात्रा की उनमेंसे किस समय गोपालदास दीक्षित हुवे और श्रीवल्लभाख्यानके प्रथम दो कड़वाओंकी रचना की. अथवा सारेके सारे आख्यानोंकी रचना कब

की यह तो पता नहीं चलता. फिरभी प्रभुचरण और गोपालदास की आयुमें पचास-साठ वर्षोंका तारतम्य तो सुस्पष्ट झलकता ही है.

प्रभुचरणके पुत्रपौत्रादि परिवारके उल्लेखके अन्त:साक्ष्यके आधारपर भी पौत्र मुरलीधरजीका जन्म वि.सं.१६३० की प्रथमावधि सिद्ध होती है. प्रभुचरणका तिरोधान वि.सं.१६४२ की अन्तिमावधि है. अत: वि.सं.१६३१ से १६४१ के बीच श्रीवल्लभाख्यानकी रचनाका काल निर्धारित किया जा सकता है.

पूर्वोल्लिखित वार्ताके आधारपर ही गोपालदासजीने स्वयंको गुजरातीभाषाके आदिकवि श्रीनरसी मेहताकी तरह गुजरातीभाषामें श्रीकृष्णभक्तिके काव्यसाहित्यकी समान रचनाधर्मिताके तादात्म्यभाववश 'नरसी मेहता' काव्योपनामसे भी अनेक पद रचे थे **''पाछें ता गोपालदासने श्रीठाकुरजीके पद एक से गुजरातीभाषामें 'नरसी मेहता'को भोग दै के बहोत ही करे''** (२५२ वै.वा.११।२). उल्लेखनीय है कि 'भोग दे कर' मुहावरा पद्यमें पद्यकार कविका नामोल्लेख करनेके अर्थमें प्रयुक्त होता है (द्रष्ट.ज्ञानशब्दकोश 'आभोग' पृ.८५). ये पद अब मिलते हैं या नहीं मिलते; अथवा, गुजरातीभाषाके ब्रह्मशुद्धाद्वैतवादाश्रित श्रीकृष्णलीलाके भक्तिसे ओतप्रोत पदोंके गायक आदिकवि श्रीनरसी मेहताके पदसाहित्यमें ही कहीं अनवधानवश संकलित तो नहीं हो गये! कमसे कम प्रस्तुत लेखकको इस विषयमें कुछ भी अवगत नहीं है.

''श्रीहरि नरहरि कृष्ण करुणा करि राख्य राधावर चरणशरणे... देह इन्द्रिय प्राण अन्त:करण दारा धन

सोंपियां चरण तारे... दास तुं नाथ तुं एम जाणी सदा द्वार बेठो तारा गुण विखाणुं. श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल भूतळे प्रगटीने पुष्टिमार्ग ते विशद करशे.. बेउ कर जोडीने नरसैयो विनवे नित्यप्रति आवीने वदन दाखो''.

(नर.मेह.कृत काव्यसं.पृ.५३३-५३४).

प्रतीत होता है यह पद स्वयं गोपालदासजीकृत ही होना चाहिये. इसे आदिकवि नरसी मेहताका मान कर निरर्थक निजमार्गकी अप्रामाणिक प्रामाणिकता प्रमाणित करनेका मोह काफी अरसेसे साम्प्रदायिक लेखक पालते रहें हैं. फिरभी वार्तासाहित्यके साक्ष्यपर इस पदके बारेमें पदकर्ताका निश्चयेन अनुमान किया जा सकता है. ऐसे, परन्तु, अन्य भी कुछ पद जो आदिकवि नरसी मेहताके काव्यनामके साथ उपलब्ध होते हैं या नहीं अथवा जो विवादास्पद हों उन्हें गोपालदासजीकृत मानने या नहीं इस विषयमें ऐतिहासिक गवेषणा करना हमारा कर्तव्य बन जाता है. एक व्यवस्थित खोजबीन कर 'नरसी मेहता' के काव्योपनामके साथ लिखे गोपालदासजी पदोंका संकलन प्रकाशित होना चाहिये. इस दिशामें ऐसा अन्वेषण अति आवश्यक लगता है. सम्प्रदायकी मिथ्या निन्दा या स्तुति की संकीर्ण मनोवृत्तिसे बाहर निकल कर आदिकवि श्रीनरसी मेहता तथा पुष्टिकवि गोपालदासजी दोनोंके साथ उचित न्याय करनेको भी यह अति-आवश्यक है!

(श्रीवल्लभाख्यानका पुष्टिसम्प्रदायमें स्थान और महत्त्व)

श्रीमद्भागवतमहापुराण परब्रह्म परमात्मा पुरुषोत्तम

स्वाश्रयाश्रयरूप भगवान् वासुदेवमें से ब्रह्माण्डके सर्ग-विसर्ग स्थान-पोषण-ऊति-मन्वन्तर-ईशानुकथा निरोध-मुक्ति रूपिणी लीलाओंके गानार्थ है. तद्वत् भगवद्वदनारविन्दावतार महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यद्वारा पुष्टिभक्तिसम्प्रदायके प्रकट होनेकी जो सर्गादि नवविधलीला उनके गानार्थ प्रस्तुत नवाख्यान वाल्लभ भागवत है! यह एक असाधारण इसका महत्त्व उड़ कर आंखोंके सामने आता है. यद्यपि श्रीवल्लभाख्यानके प्रकट हो जानेके बाद चतुर्थात्मज श्रीगोकुलनाथजी द्वारा प्रकट वार्तासाहित्य तथा श्रीगदाधर द्विवेदीरचित अल्पख्यात सम्प्रदायप्रदीप ही व्यापकतया प्रसिद्ध और सर्वमान्य हैं तथापि.

इनके प्रतिरूप 'वल्लभदिग्विजय' तथा 'सम्प्रदायकल्पद्रुम' नामक ग्रन्थोंमें मिलते वर्णन अधिकांश जनश्रुति या कपोलकल्पना पर अवलम्बित मौखिक परम्परागत वृत्तान्तोंको लेखबद्ध किये जाते लगते हैं. लेखकतया जिन षष्ठात्मज 'श्रीयदुनाथजी' तथा 'श्रीविट्ठलनाथ भट्ट' का नाम इनके साथ जोड़ दिये गये हैं, वह तो सम्भवत: मिथ्यायोजित ही लगते हैं. विभिन्न ग्रन्थसंग्रहोंमें इन ग्रन्थोंकी हस्तलिखित मातृकाओंकी अनुपलब्धि भी इन ग्रन्थोंकी विश्वसनीयतापर एक गम्भीर प्रश्नचिह्न तो लगा देती ही है.

लगता है कि विद्यानगरमें कृष्णदेव रायके दरबारमें आयोजित शास्त्रार्थ-कनकाभिषेकके मिथ्या किंवदन्तीमूलक वृत्तान्तको प्रमाणित करनेके एकमात्र प्रयोजनवश ये ग्रन्थ लिखे गये होने चाहियें. अन्यथा प्रभुचरणरचित स्तोत्र, समकालिक भक्तकवियोंके पद तथा चतुर्थात्मज श्रीगोकुलनाथकृत ८४ वै.वा. इनमें तो कहीं भी इसका उल्लेख नहीं

मिलता. फिरभी ऐसी कल्पित घटना इतनी क्यों बढ़ा-चढ़ाके सामने लायी जाती है? गदाधरदास द्विवेदीके सम्प्रदायप्रदीपकी सो-डेढ़ सो वर्षसे प्राचीन हस्तलिखित मातृकाओंमें तुलापुरुषदानकी घटनाको गौण बना कर कनकाभिषेकमें रूपान्तरित किया गया. मानो महाप्रभुके द्विज होनेसे भी ऊपर आचार्य या पुरुषोत्तमावतार होना प्रमुख तथ्य हो. वास्तविकतया पुरुषोत्तमत्वके मूलमें आचार्यत्व और आचार्यत्वके मूलमें द्विजत्व तो अपरिहार्य ही माना जाना चाहिये, इसमें स्वरूपवैपरीत्यकी भावना अकाण्डताण्डव ही है.

हम देख सकते हैं कि प्रस्तुत श्रीवल्लभाख्यानमें **''कनकस्नान शतमण सुवर्णेकराव्युं महीपाल, ते मूकी वेगे चालिया राय दृष्टि न पाछी वाल. त्यांथी दक्षिण पाऊं धारिया पांडुरंग श्रीविट्ठलनाथ''** (श्रीवल्ल.२।१५-१६) वचनावलीमें कनकस्नानके घटनास्थलसे पंढरपुरका दक्षिणमें होना प्रतिपादित किया गया है. ऐसी स्थितिमें विद्यानगरसे उत्तरमें अवस्थित पंढरपुरके साथ मेल नहीं खा सकता. अत: ओरछामें हुवे कनकस्नानको विद्यानगर हुवा माननेकी भ्रान्ति काम करती लग रही है. अतएव श्रीद्वारकादास परीख सम्पादित 'श्रीमहाप्रभुजीकी प्राकट्यवार्ता'में विद्यानगरके राजा कृष्णदेवरायकी सभामें कनकाभिषेकके बाद उपसंहारमें अकस्मात् **''सो राजा रामचन्द्रने हुकुम कियो... या बाततें औरछा देशमें...''** ये वचनावली विद्यानगरके राजप्रासादके परदोंके बाहर आ कर पाठकोंके सम्मुख आ धमकी है!

लगता है कि यह मिथ्या किंवदन्ती महाप्रभुसे तीसरी-चौथी पीढ़ीकी अवधिमें प्रचलित हो कर 'मूलपुरुष'' तथा

'प्रभुचरित्रचिन्तामणि' जैसे अन्य भी कुछ ग्रन्थोंमें स्थान पा गयी होगी. जैसे इन्हीं ग्रन्थोंमें उल्लिखित महाप्रभुका प्राकट्यस्थल भीमानदीके तटपर चौड़मण्डलमें या चौड़ानगरके समीप कहीं रहा होगा. इस तथ्यपर, किन्तु, अनवधानवश वर्तमानमें छत्तीसगढ़में रायपुरके समीप एकके बजाय दो मिथ्या प्राकट्यस्थल बैठकव्यवसायार्थ चल पड़े हैं! इस दृष्टिसे श्रीवल्लभाख्यानका ऐतिहासिक महत्त्व अधिक लगता ही है.

इसके अलावा इसपर इतनी अधिक व्याख्याओंका लिखा जाना तथा अद्यावधि वैष्णवोंमें सायंकाल इसे नित्यप्रति गानेकी श्रद्धानिष्ठा इसकी पुष्टिसम्प्रदायमें असाधारण महत्ताका द्योतक है.

वैसे प्रस्तुत ग्रन्थ या ग्रन्थकार के साथ इस बातका कुछ भी लेना-देना नहीं है. फिरभी बहुधा तत्तत् सम्प्रदायके धौर्त्यव्यसनके रोगिओंने जैसे 'उपनिषद्'की महत्ताका दुरुपयोग करने मठाम्नायोपनिषद् अल्लोपनिषद् आदि अनेक मिथ्योपनिषद् प्रकट कर दिये. मुझे लगता है कि इसी तरह किसी पुष्टिमार्गीयने ही सामरहस्योपनिषद्की रचना प्रस्तुत श्रीवल्लभाख्यानका संस्कृतानुवाद प्रकट करके मिथ्या सन्तोष लेना चाहा है. इसे महत्ता माननी या दुरुपयोग इस विषयमें कुछ भी कथनीय नहीं रह जाता है.

विभिन्न व्याख्याकार ऐकमत्या इस ग्रन्थका प्रामाण्य अतएव प्रभुचरणके वचनके रूपमें मान्य करते हैं, यह तो सर्वातिशायी महत्त्व इस ग्रन्थका माना जाना चाहिये.

अतएव गुजरातीभाषामें रचित होनेपर भी इसपर संस्कृत व्रजभाषा गुजराती एवं अंग्रेज़ी भाषाओंमें कितनी सारी व्याख्या प्रकट हुयी हैं! संभवत: आगे भी होती रहेंगी.

इन विविध व्याख्याओंमें व्याख्यानीतिके सम्प्रदायप्रभेद भी पर्याप्त प्रकट दिखलायी देते हैं. इनमें वाल्लभ सम्प्रदायके इतिहास, दार्शनिक सिद्धान्त, भक्तिमार्गीय भाव-भावना, मार्गाचार्योंमें 'गुणोपसंहार'न्यायेन पुरुषोत्तमताके उत्कर्षातिरेक आदि मनोभावोंका प्रभेद परिलक्षित होता देखा जा सकता है.

महाप्रभुको मान्य ब्राह्मिक शुद्धाद्वैतवादके मूलमें तो **''ऐतदात्म्यम् इदं सर्वं'', ''त्रयं वा इदं नाम रूपं कर्म... तद् एतत् त्रयं सद् एकम् अयम् आत्मा आत्मा उ एक: सन् एतत् त्रयम्'', ''स सर्वधीवृत्त्यनुभूतसर्व:''** (छान्दो.उप.६।८।७, बृह.उप.१।६।१-३, भाग.पुरा.२।१।३९) ये शास्त्रवचन आधारभूमिके तरह अवलम्बनीय हैं. अत: मार्गाचार्योंके बारेमें उनके साक्षात् पुरुषोत्तमस्वरूप होनेके भाव या भावना के अप्रामाणिक होनेका तो प्रश्न ही अनवसरपराहत हो जाता है.

भाष्यकारने, फिरभी, भगवत्स्वरूपके ध्यान-धारणार्थ या भाव-भावनार्थ कुछ नितान्त महत्त्वपूर्ण विवेक रखनेके उपदेश दिये हैं :

१. **'' 'सर्ववेदान्तप्रत्ययम्' = अनेकरूपनिरूपकै: 'वेदान्तै: प्रत्ययो' ज्ञानं यस्य तत् तथा. ब्रह्मणो अनन्तरूपत्वे यानि-यानि रूपाणि विविधै: जीवै: उपासितुं शक्यानि**

तानि-तानि रूपाणि तैस्तैः वेदान्तैः निरूप्यन्तइति तावद्रूपात्मकम् एकमेव ब्रह्म''.

२.**''यद्रूपोपासनाप्रकरणे यावन्तो धर्माः उक्ताः तस्मिन् रूपे तावद्धर्मवत्त्वेनैव उपासना कार्या तद्बोधकप्रमाणानुरोधात्. नतु रूपान्तरोपासनाप्रकरणोक्ता साधारणधर्मत्वेनापि... परमकाष्ठापन्नं ब्रह्मस्वरूपम् इति ज्ञात्वा हि उपासना कार्या तेन एतस्यैव अन्ये अवताराः तद्रूपेण तानि-तानि कर्माणि अयमेव कृतवान् इति ज्ञेयं नतु तस्मिन्नेव रूपे अन्यावतारधर्मवत्त्वमपि इति. तथाच तस्मिंस्तस्मिन् अवतारे तत्तद्धर्मवान् इति श्रुत्या बोध्यते नतु सर्वत्रापि.''**

३.**''आनन्दस्वरूपस्य यावन्तो धर्माः भक्तिमार्गीयाः परोक्षवादेन उच्यन्ते प्रियत्वप्राधान्यत्वादयः तेषां सर्वेषाम् 'आध्यानम्'=असमन्ताद् ध्यानं तदर्थं ये धर्माः उपयुक्ताः तएव उपसंहर्तव्याः न अन्ये. तत्र हेतुः प्रयोजनाभावात्. ध्यानपदार्थस्य तावद्भिरेव सिद्धेः अधिकोपसंहारे तथात्वाद् इति अर्थः.''**

(अणुभा.३।३।१, ३।३।३, ३।३।१४).

ध्यान-धारणा या भाव-भावना के बारेमें गुणोपसंहारके इन मान्य नियमोंको भूल कर जब कोई भक्त या व्याख्याकार स्वयं भगवद्रूप या आचार्य के धर्मिस्वरूपके विपरीत ध्यान-धारणार्थ या भाव-भावनार्थ प्रयोजनरहित गुणधर्मोंका उपसंहार स्वयं भगवान् या आचार्य के स्वरूपचिन्तनार्थ या स्वरूपव्याख्यानार्थ करता हो तो कुछ न कुछ असंमजसता तो प्रकट होती ही है. भाष्यकार इसका मृदु उपहास **''तथा सति मत्स्योपासकस्य चापशरादिकमपि भावनीयं स्यात्**

पुरुषोपासकस्य च लक्ष-योजनायाम-शृंगादिकम् !'' (अणुभा.३।३।३) इन शब्दोंमें करते हैं!

फिरभी **''आचार्यदेवो भव'', ''आचार्यचैत्यवपुषा स्वगतिं व्यनक्ति'', ''तं यथायथा उपासते तथैव भवति'', ''यद्यद्धिया त उरुगाय विभावयन्ति तत्तद् वपुः प्रणयसे सदनुग्रहाय''** (तैत्ति.उप.१।११।१, भाग.पुरा.११।२९।६, मुद्ग.उप.३।३, भाग.पुरा.३।९।११) ऐसे वचनोंके आधारपर कोई भावुक या चिन्तक या व्याख्याकार भी कुछ धर्मिस्वरूपसे विपरीत ही गुणधर्मोंका उपसंहार निजी ध्यान-भावना-व्याख्यानमें करता हो तो, उसे उसका और अनुग्रहशील भगवान्का आपसी कोई रहस्य समझना चाहिये, **''क्वचिद् रसाभासेनापि रसः पोष्यते''** न्यायेन. कथमपि इसे सिद्धान्तके रूपमें न तो प्रस्तुत किया जा सकता है और न मान्य ही रखा जा सकता है. इस दृष्टिसे प्रस्तुत ग्रन्थके व्याख्याकारोंके द्वारा अपनायी गयी नीतिके बारेमें विवेक आवश्यकतया अवगन्तव्य है.

भगवद्गीता और भागवतपुराण में सभी सम्प्रदायोंके व्याख्याकारोंको अपने-अपने मत निर्विवादतया दिखलायी देते हैं ''स्वल्पाक्षरम् असन्दिग्धं सारवद् विश्वतोमुखम्'' अर्थात् सूत्रात्मक भाषा होनेके कारण. वही बात यहां भी चरितार्थ होती देखी जा सकती है.

(उपसंहार)

प्रभुचरणके चरित्र या माहात्म्य; अथवा तो, प्रभुचरणकी पुरुषोत्तमताके भावको प्रधान बना कर, इसमें भी औपनिषदिक

अथवा भागवतीय विभिन्न दृष्टिकोणोंके अनुसार पुरुषोत्तमत्वके भावातिदेशकी नीति अथवा पुरुषोत्तमत्वके लीलान्तरभावादेशकी नीति यों विभिन्न नीतिओंके अनुसरणवश अनेक व्याख्याओंकी अनेक विधायें व्याख्याकारोंने अपनायी हैं. मेरे अन्त:करणमें बरसोंसे इस श्रीवल्लभाख्यानमें श्रीभागवतपुराणोक्त दशविधलीलाको निहारनेकी उत्कण्ठा बनी रही. मेरे इस मनोभावको प्रकट करनेके साहसमें मुझे एक यह संकोच सदा आड़े आता था कि अपने सम्प्रदायमें श्रीभागवतके सर्वातिशायी माहात्म्यके स्वीकारके कारण उसका सर्वाधिक अर्थोपार्जनकी आजीविकाके रूपमें जघन्य व्यवसायीकरण कर दिया गया. निर्गुण भक्तिरसके प्रतिपादक इस ग्रन्थराजका ऐसा जघन्यतम व्यावसायिक दुरुपयोग वर्तमान कालमें हम वाल्लभ सम्प्रदायके उपदेशक और अनुयायी वर्ग ही कर दूसरे सम्प्रदायोंको ऐसा करनेको उकसाते रहते हैं. अत: श्रीभागवतके समकक्ष श्रीवल्लभाख्यानको प्रतिष्ठापित करनेपर इसका भी दुरुपयोग होने कहीं न लग जाये! अत: ऐसी व्याख्या न करनी ही उचित लगती रही. खेद होता है कि हम पुष्टिमार्गिओंकी लाभपूजाकी अदान्त दुर्वासनाके वश अब यह भी शुरु हो ही गया. इसकी रोकथाम भी अब तो अशक्य ही लगती होनेसे, इस मनोभावको प्रकट करना या अप्रकट करनेसे कुछ भी अन्तर पड़नेवाला नहीं है. यह जान कर प्रकट करनेमें अब आपत्तिजनक कुछ नहीं लगता. फिरभी व्याख्याकी इस नीतिके अनुसार मैंने यहां मूल परब्रह्म परमात्मा भगवान् श्रीकृष्णकी दशविध लीला जैसे श्रीभागवतका प्रमुख प्रतिपाद्य विषय है, तदनुसार यहां पुष्टिभक्तिसम्प्रदायके सन्दर्भमें पुरुषोत्तमास्यरूप आचार्यचरणकी दशविध लीलाओंको प्रत्यभिज्ञापन कैसे अभीष्ट है, यह दिखलाना

चाहा है. मुझे अपने इस सम्प्रत्ययके औचित्य या अनौचित्य के बारेमें अधिक कुछ न तो विचारणीय लगता है और न कुछ कहना भी योग्य लगता है.

इस प्रकाशनके कार्यमें सहयोगी पीयूष गोंधिया तथा श्रीजगदीश शेठ निरतिशय अभिनन्दनीय हैं. ग्रन्थका सुन्दर आवरणपृष्ठ श्रीमती ख्याति भूलाने बनाया है. जिन वैष्णवोंने प्रकाशनार्थ आर्थिक सहयोग प्रदान किया उन सभीको कैसे भुलाया जा सकता है!

श्रीवल्लभाचार्यप्राकट्योत्सव.
वि.सं.२०७०

गोस्वामी श्याम मनोहर
पार्ले,मुंबई
महाराष्ट्र.

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्टक्रम
उपक्रम	१-४
वल्लभाख्यानकी प्रासंगिकता और स्थिति...	१
वल्लभाख्यान १ (प्रमेयप्रकरण-सर्गलीला)	४-९१
तत्त्वध्यान...	४
उत्पत्तिपक्षके अनुरोधसु सर्गलीलाके उपादानको कूटस्थ-तत्त्व व्यापकरूप...	४
उपपत्तिपक्षके अनुरोधसु नित्यलीलाविहारको कर्तृतत्त्व...	५
अभिन्ननिमित्तोपादानभूतताको निरूपण...	५
माहात्म्यबोधनिरपेक्षक्रिया और भगवद्रतिसापेक्ष भक्तिकी सृष्टि...	५
स्वसृष्टद्विविधजीवकी मिथ:मिश्रणनिरसनके लिये आचार्यकी अपेक्षा...	६
नित्यलीलास्थ पुरुषोत्तमको आचार्यरूपसु भूतलगोकुलागमन...	६
ग्रन्थ टीका और टीकाकारन् को माहात्म्य...	७
व्याख्याको उपक्रम...	१५
भागवतकी सर्वसंदेहवारकता...	१६
पुष्टिमार्गको मूल भागवतमें...	१७
वल्लभाख्यान=पुष्टिसम्प्रदायकी भागवत...	१८
भागवत और वल्लभाख्यान की तुलनात्मक दृष्टि...	२२
तुलनाको प्रथम बिन्दु : नौमो आख्यान आश्रयको, एकसु आठ आख्यान लीलान्को...	२८
तुलनाको द्वितीय बिन्दु : साधनलीला...	३३

तुलनाको तृतीय बिन्दु : आश्रय ''व्यापकरूप...
एको नव लहीए''... ३५
तुलनाको चतुर्थ बिन्दु : सर्गलीला उपपत्तिपक्ष और
उत्पत्तिपक्ष... ३७
उपपत्तिपक्ष... ३८
उत्पत्तिपक्ष... ३८
उत्पत्तिपक्ष-''अक्षर आदि...एको त्यां नव लहिये''... ३९
उपपत्तिपक्ष ''ते थकी पुरुषोत्तम...केवळ भक्त न
थाय''... ४०
तुलनाको पांचवो बिन्दु : सर्गलीला... ४४
माया और भक्ति को अन्तर... ४४
मायाके प्रोडक्ट्... ४५
सर्गलीलामें माया और अविद्या सु प्रवाहसृष्टि माने वर्च्युअल्
रियालिटी ''कर्मजड...भजनधर्मथी हीन''... ४६
भक्तिमार्गी जीवकी स्वतन्त्रता : प्रभुकी भक्ताधीनता और
भक्तिकी स्वतन्त्रपुरुषार्थता... ४८
आसुरीभावकी लाक्षणिकता-कर्म इच्छा फल स्वातन्त्र्यरूप
तलवारसु कालादिपे प्रहारकी क्षुद्र साहस... ५०
सर्गलीलाको सिंहावलोकन और श्रीव्रजरायजीकी
प्रथमाख्यानकी सिनोप्सिस्... ५२
प्रवचनकारकी सिनोप्सिस् ५३
क. तत्त्वध्यान... ५४
ख. भागवतको विपुलीकरण... ५४
ग. व्यासजीकी पॅनोरेमिक् त्रिकाल सर्वज्ञता... ५६
घ. भागवतके मंगलाचरणमें तत्त्वध्यानकी विशेषता... ५७
ङ. वल्लभाख्यानके मंगलाचरणमें पुष्टिसम्प्रदायको

तत्त्वचिंतन... ६०
च. भागवतोक्त पुरुषोत्तमकी स्वतन्त्रक्रीडा और
लीला द्विजतनुधारीकी प्रमाणतन्त्रक्रीडा... ६३
छ. स्वतन्त्रक्रीड़ामें साधना निरुपयोगी... ६५
ज. द्विजतनुधारीकी क्रीड़ा माने प्रमाणपंथ
पुष्टिसंप्रदाय... ६८
झ. द्विज तनुधारी द्वारा प्रवर्तित पुष्टिसंप्रदायकी
साधनाको स्वरूप... ६९
ञ. भागवतकी रूपरेखापे आधारित
वल्लभाख्यानकी रूपरेखा... ७१
दैवी और आसुरी दोनों प्रभुकी ही अभिव्यक्ति... ७४
स्वतन्त्रक्रीड़ा माने कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं सामर्थ्य... ७६
आसुरीसृष्टि–कर्तुं सामर्थ्य... ७८
दैवीसृष्टि–अन्यथाकर्तुं सामर्थ्य... ७८
आश्रय–अकर्तुं सामर्थ्य... ७९
सर्गलीला... ७९
भक्तिमार्गी जीवकी स्वतन्त्रताको स्वरूप... ८४
पूर्णपुरुष प्रमाणपंथा व्याख्याता वेदान्त... ८६
मायादासी भक्तिकी सेवामें... ८८
प्रश्नोत्तर... ९१–११२

वल्लभाख्यान २ (प्रमेयप्रकरण–विसर्गलीला) ११३–१६७
यज्ञसु यज्ञयजनयाजनपर ब्रह्मरूपसु विसर्गपुरुषविराटके
प्राकट्यके वर्णनको उपक्रम... ११३
विसर्गपुरुषके प्राकट्यसु वाके प्रयोजनकी पूर्ति... ११३
पुष्टिसम्प्रदायमें विसृष्टपुरुषकी प्रमाणरूपता... ११३

पुष्टिसम्प्रदायमें विसृष्टपुरुषकी साधनरूपता... ११४
पुष्टिसम्प्रदायके आचार्यकी सम्प्रदायप्रवर्तनमें
लौकिकप्रयोजननिरपेक्षता... ११४
मर्यादापुष्टिनामरूपवाले पुष्टिस्थापनकर्मपरायण ऐसे
आचार्यवपु धारण करवेके लिये पुरुषोत्तमको वल्लभगृहमें
प्रादुर्भावके मनोरथको वर्णन... ११५
पुष्टिसम्प्रदायकी मर्यादाके मंडनके लिये प्रमाण और प्रमेय
रूपी पुरुषोत्तमकी निजहृद्गतस्थायिभावसु विभावनाको
निरूपण... ११५
पुत्रभावसु श्रीविट्ठलनाथश्रीनाथके प्राकट्यके आश्वासनसु
प्रमुदितको व्रजयात्रामहोत्सवको वृत्त... ११५
यात्रोत्सवमें श्रीभागवतकथाके उत्सवको वृत्तांत... ११६
पुष्टिसम्प्रदायविसृष्टकी फलरूपता... ११६
द्वितीयाख्यानको उपक्रम... ११६
पुष्टिमार्ग और पुष्टिसम्प्रदाय को भेद... ११८
विसर्गलीला... १२०
चित्रकलाके उदाहरणसु विसर्गकी समझ... १२०
पुष्टिसम्प्रदायकी विसर्गलीला... १२२
महाप्रभुजीकी प्रमाणरूपता... १२५
साधनको निरूपण... १२६
मर्यादा और पुष्टि पुरुषोत्तमको भेद लीलाको... १३०
प्रमाण-प्रमेय और साधन-फल की परस्पर निगूढ़ता... १३५
लीलाके गुणगान और लीलाकी भावना सु पुष्टिपुरुषोत्तमको
प्राकट्य... १३७
प्रमाणपंथाके मार्गमें अनुगामीको गैरजिम्मेदारा अनुगमन!!... १३९
सेवा-कथासु पुष्टिपुरुषोत्तमको प्राकट्य... १४१

अट्ठाईसतत्त्वन्‌की संख्याको समाधान
श्रीगोपालदासजीद्वारा... १४२
वल्लभाख्यानके सर्गके २४तत्त्व,द्योतित या वाच्य?... १४३
पुष्टिसंप्रदायके सर्गको रॉ–मटीरीयल्‌... १४७
सृष्टिलीला अवतारलीला और भक्तिलीला... १५१
विसर्गलीला : पुष्टिसम्प्रदायको प्राकट्य... १५२
'पुरुष'को अर्थ... १५४
सृष्टिकी रचना अनेकधा... १५४
पुरुषकी परिभाषा और सृष्टिरचनामें तादात्म्यको मॉडेल्‌... १५६
विसर्गपुरुष महाप्रभुजीको और पुरुषोत्तमको संबंध
तादात्म्यको... १६५
प्रश्नोत्तर... १६७–१७०

वल्लभाख्यान ३(प्रमेयप्रकरण – स्थानलीला) १७१–१९४
प्रभुश्रीविट्ठलके जन्मोत्सवमें स्वरूप और काल की
विरुद्धधर्माश्रताको वर्णन... १७१
देशादि पंचककी दिव्यताको निरूपण... १७१
कीर्तिद्योतक विविधसुगन्धके वर्णनसु श्रीगुसांईजीको पञ्चविध
पुरुषार्थसाधक माहात्म्य... १७२
श्रीगुसांईजीकी स्तुति और आशिष... १७३
परोक्षापरोक्ष अवतारके गुणसंकीर्तनमें परमानन्दकी ही
फलश्रुति... १७३
स्थानकी परिभाषा... १७४
नाम रूप कर्म को परस्पर स्थापन... १७५
भक्तिमें नामरूपको परस्पर स्थापन... १७७
वस्तु क्रिया भाव में मर्यादासु ही स्थापन... १७८

प्रभुके जन्मप्रकरणके तादात्म्यको मॉडेल् माने श्रीगुसांईजीको जन्मप्रकरण ''आ पोष...प्रगटियो''... १८०
श्रीगुसांईजीके प्राकट्यके कारण देश काल द्रव्य मन्त्र कर्म की दिव्यता... १८२
सेवामें भावकी महत्ता... १८६
उत्सवको प्रयोजन-तादात्म्यको फॉरमेट्... १८९
उत्सवनायकमें सब स्वरूपको प्रत्यय... १९१
दासके दासकी विशेषता ''यत्र एकाग्रता तत्र अविशेषात्''... १९४

वल्लभाख्यान ४ (प्रमाणप्रकरण-पोषणलीला) १९५-३५३
प्रमाणप्रकरणमें पोषणरीतिको निरूपण... १९५
पुष्टिजीवन्को श्रीगुसांईजीके द्वारा स्वस्वरूपप्रबोधन और नियोग सु प्रभुसेवार्थयोजन... १९६
उपसंहारमें पदसंख्यान्के अभिप्रायको निरूपण... १९६
लीलाको स्वरूप... १९६
लीला मेकेनीकल् नहीं पर आनंदको उच्छलन... २००
सर्गलीलामें आनंदको उच्छलन या चिंताको उच्छलन?... २०१
प्राथमिक दृष्टिसु चिंताको उच्छलन... २०२
अक्षरब्रह्मके दृष्टिकोणसु चिंताको उच्छलन नहीं हे... २०३
पुरुषोत्तमकी दृष्टिसु चिन्ता भी लीलात्मक... २०४
पुरुषकी संग्राहक लीला... २०५
महाप्रभुजीकी लीला प्रमाण-परतन्त्र नहींके स्वतन्त्र... २०६
लीला द्विजतनुधारीकी संग्राहकलीला... २०९
पुरुषोत्तमकी स्वतन्त्रक्रीड़ाको प्रकार... २१२
सर्गलीलामें सर्गपुरुषकी माने महाप्रभुजीकी संग्राहकलीला या वाक्तन्त्रलीला... २१२

सर्गपुरुषकी विसर्गमें आयोजकलीला... २१४
विसर्गपुरुष/आयोजककी वाणीकी महत्ता... २१९
वाक्पति श्रीवल्लभके आनन्दके उच्छलनके कारण
पुष्टिसंप्रदाय... २२०
वाक्पतिकी लीलासु विरोधी धाक्पतिकी लीला... २२१
स्थापनको विवेक और अविवेक... २२२
पोषकको लीलाभाव और लीलाभावकी महत्ता... २२६
स्थापितको मर्यादासु पोषण : पोषणलीला... २२७
चेष्टा और क्रिया को अन्तर... २२८
महाप्रभुजी और गुसांईजी में भेद लीलाको... २३२
निगमरहस्यमें रह्यो भयो द्वन्द्व... २३५
भगवान्की स्वप्रकाशितता और वेदप्रकाशितता... २३९
निगमरहस्यको प्रकाशन महाप्रभुजीद्वारा... २४१
गुसांईजीके द्वारा प्रमाण और स्वाचरण सु अपने भावको
पोषण... २४२
गुसांईजीके आचार्यात्मक रूपसु भक्तिभावको पोषण... २४६
नामात्मक रूपसु पोषण... २४८
स्वस्वरूपप्रबोधन और नियोगसु अपनो प्रभुसेवार्थ योजन... २४९
ब्रह्मकीपरिभाषा : जड़की दृष्टिसु उत्पत्ति स्थिति लय और
जीवकी दृष्टिसु उत्पत्ति स्थिति मुक्ति लय... २५३
ब्रह्म ही जड़जीवसृष्टिको आश्रयतत्त्व... २६०
ब्रह्मके स्वरूपकी दृष्टिसु प्रयाण संभव नहीं... २६०
लीलामें प्रयाण और प्रयाणके प्रकार... २६१
सेवाफलके सन्दर्भमें सायुज्य माने अन्तर्मुखी प्रयाण... २६२
ऊर्ध्वमुखप्रयाण अन्तर्मुखप्रयाण और समानान्तरप्रयाण... २६४
सर्ग विसर्ग स्थान लीला प्रमेयको लक्षण हे कारणकी

प्रधानताके कारण... २६६
पोषण ऊति मन्वन्तर लीला : प्रमाणलीला... २६९
ईशानुकथा निरोध मुक्ति लीला : ज्योतिरूपा लीला... २७३
पुष्टिसाम्प्रदायिक स्थानलीला : गुसांईजीकी प्रमेयरूपता... २७४
प्रमाणलीला : गुसांईजीको रोल्-मॉडेल् भक्तिके लिये... २७८
'राज'को अर्थ... २८०
गुसांईजीके सरसवचनसु पुष्टिजीवन्की स्थितिके अनुरूप पालन... २८२
गुसांईजीकी प्रमाणरूपा पोषणलीला... २८४
अखिलसाधनन्को भगवत्सेवार्थ विनियोग... २८५
अपनो स्वस्वरूप पोर्सुवा हे माने प्रभुके लिये होनो... २८८
श्रीगोपालदासजीके निर्धारको आधार श्रीलक्ष्मणसुतको निर्धार... २८९
तत्त्वमीमांसाकी और ज्ञानमीमांसाकी दृष्टिसु प्रमाणलीलाको निरूपण... २९३
पोषककी प्रमाणलीला... २९८
श्रीवल्लभाचार्यमते फलं तत्प्राकट्यम्... २९९
अभिवृद्धिके लिये पोषणकी महत्ता... ३००
पुष्टिजीवन्के स्वस्वरूपकी योग्यतानुरूप निगमानुसार ही अनेकधर्म... ३००
कृपा भी प्रमाणरूपा... ३०३
विसर्गपुरुष और स्थापकपुरुष : प्रमाणपंथापुरुष... ३०५
सिस्टेमॅटिक् हियरार्कीके अनेकधर्म... ३१०
उदाहरणमें देहसेवामें कर्मन्की अनेकता... ३१०
कर्मको अनधिकार भी सत्कर्म... ३११
महाप्रभुके द्वारा कर्तव्योपदेशमें रह्यो भयो तात्त्विक सातत्य... ३१७

तत्त्व और प्रमाणप्रमेयसाधनफल की सिस्टम् या संहति... ३१८
लौकिक साधन... ३१९
अलौकिक साधन या कृपात्मक अवान्तरव्यापार... ३२०
अनेक धर्मन्‌की सिस्टम्... ३२१
लौकिकसाधनको विवेक... ३२२
शास्त्रप्रमाणमूलक साधन ही अलौकिक... ३२३
प्रमाण-प्रमेयको कॉरस्पॉन्डन्स् या परस्परता... ३२४
ब्रह्मको साधनरूप कॉरस्पॉन्डन्स् : ब्रह्मतादात्म्यबोधरूप शरणागतिको साधन... ३२५
परमात्माको साधनरूप कॉरस्पॉन्डन्स् : शरणागति और अनौपाधिकरति... ३२६
भगवान्‌को साधनरूप कॉरस्पॉन्डन्स् : नवधाभक्तिरूप साधन... ३२८
भगवान्‌की दृष्टिसु साधनमर्यादा न कि ब्रह्मकी दृष्टिसु... ३२९
श्रीकृष्णको साधनरूप कॉरस्पॉन्डन्स् : पुष्टिभक्ति या पुष्टिप्रपत्ति... ३३२
प्रमादके कारण प्रकट होती अपनी पोपटरूपता... ३३२
स्वस्वरूपके अनुरूप अनेकधर्मन्‌को प्रवर्तन... ३३३
सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डितः... ३३६
सहजता या स्वभावके अनुरूप ही धर्मनिर्धार... ३३७
परब्रह्म श्रीकृष्णके स्वरूपके या वाके विविध पदभूतके अनुरूप अनेकधर्म... ३३९
श्रीलक्ष्मणसुतनिर्धारके अनुरूप साधना होयेंगी तो गिरिराजधरणको ताप टलेगो... ३४२
फलको ब्राह्मिकस्वरूप : स्वरूप या लीलामें स्थिति... ३४४
फलको पारमात्मिक स्वरूप : अन्तर्मुखी प्रयाण... ३४५

फलको भागवती स्वरूप : सालोक्यादि ऊर्ध्वमुख प्रयाण... ३४६
फलको कार्ष्ण स्वरूप : अलौकिकसामर्थ्यरूप
समानान्तरप्रयाण... ३४६
भक्तिको मूल आत्मरतिमें... ३४७
कृष्णकी प्रियता पुष्टिप्रेरित आत्मरतिमें... ३४८
भक्तिको सृजन भगवान्... ३४९
अनेकधर्मसु पोषणलीला... ३४९
गुसांईजीकेद्वारा ''योऽन्तप्रविश्यवाचम्'' गोपालदासजीमें... ३५०
भक्तिकी तात्त्विक और साधनात्मक अखंडता... ३५१
प्रश्नोत्तर... ३५३–३६०

वल्लभाख्यान ५ (प्रमाणप्रकरण– ऊतिलीला) ३६१–४२३
मंगलाचरण... ३६१
असद्वासनाके वारण और सद्वासनाके पोषणको प्रकार... ३६१
श्रीविट्ठलनाथजीको श्रुत्यादिके परम तात्पर्यरूप
आविष्कारको पंचविधपुरुषार्थसाधनपनो... ३६२
श्रीवल्लभविट्ठलप्रवर्तितसम्प्रदायकी
भगवदात्मरतिरूपनित्यलीलाप्रवेशसंपादकतासु
कालादिसर्वातीतता... ३६२
प्रभुचरणमें भगवदनुभावप्रदर्शनप्रार्थना... ३६२
प्रमेय होय तो प्रमाणकी जरूरत... ३६२
नामदीक्षासु स्वस्वरूपार्थेप्रयोजितकी डिसिप्लिन्... ३६४
उपनिषद्में निरूपित उत्पत्ति महाप्रभुजीके मतसु तीन तरहसु;
कारणत: कार्यत: और आधारत:... ३६६
कारणत: उत्पत्ति : श्रीपुरुषोत्तमस्वतन्त्रक्रीड़ा
कार्यत: उत्पत्ति : लीलाद्विजतनुधारी

आधारत: उत्पत्ति : स्थानलीला... ३६९
जगत्की कीमत भजनके लिये... ३७०
प्रमाणलीला : स्थिति... ३७३
उपनिषद्-निरूपित स्थिति,महाप्रभुजीके मतसु तीनतरह :
पोषण विलास और धर्म... ३७४
स्नेहसु विलास और वाकी महत्ता... ३७४
विलासमें खेलवेको भाव... ३७६
विलासको अर्थ... ३७७
परस्पर विलासात्मकभावसु स्थिति... ३८०
विलाससु धर्मबोध... ३८२
उत्पत्त्यादिकी उपनिषद् भागवत और वल्लभाख्यान की
एकवाक्यता... ३८२
कर्मकी विलासरूपता... ३८४
विलासकी संगति वल्लभाख्यानमें... ३८७
परार्थ अनुमानकी पद्धतिसु श्रीगुसांईजीकी विलासकारिताकी
संगति... ३८८
परार्थ अनुमानके पांच अवयव [१]प्रतिज्ञा [२]हेतु [३]उदाहरण
[४]उपनय [५]निगमन... विलासकारिताकी सिद्धि... ३९०
उत्पथजनको दंड श्रीगुसांईजीके द्वारा... ३९८
अभक्ति कर्मयोग ज्ञानयोग की असद्वासनाको विस्थापन
और भक्तिकी सद्वासनाको स्थापन... ४०१
''भक्तिपक्ष...जेनो सीधो''को श्रीव्रजरायजीके द्वारा कियो
गयो अर्थ... ४०२
श्रीव्रजाभरणजीको मत ''हरेरपि हरि: यदि'': परस्परनिर्भयतापे
भक्तिकी कथा... ४०३

भक्तिमें असद्वासनाको उदाहरण... ४०९
''जे लीलामांहे...श्रीविट्ठलनाथविचारे'': गुसांईजीके द्वारा
भक्तिलीलामें अंगीकार... ४१०
भक्तिलीलाके विरोधीभाव... ४११
भक्तिकी पुरुषार्थरूपता अथवा सद्वासनाकी अभिवृद्धि... ४१२
भक्तिकी अपुरुषार्थता अथवा असद्वासनाकी अभिवृद्धि... ४१३
तादात्म्यके कारण निर्भयरमण... ४१७
सभयात्मक और अरमणात्मक वृत्ति... ४१९
सेवामें प्रेमसहित निर्भयरमणकी आवश्यकता... ४२०
गुसांईजीकी सुखकारिता... ४२१
गुरुभजनको हेतु सेवापर होवेके लिये... ४२२

वल्लभाख्यान ६(प्रमाणप्रकरण–मन्वन्तरलीला) ४२४–५०३
पुष्टिसम्प्रदायमें व्रजाधिपके भजनरूप धर्मके अधिकरणभूत
व्रजमंडलस्थापनके लिये गुरुकु प्रार्थना... ४२४
भगवद्लीला और कथा की हृदयमें स्थिरस्थापनाके लिये
सर्वात्मना गुरुको आश्रय... ४२४
वात्सल्यसंयोगरसकी भावना... ४२४
गोपीन्को स्वबाह्यशृंगाररसात्मक विप्रयोगमें और गोपन्को
सख्यरसात्मकबाह्यसंयोगकी आंतरभावना... ४२४
गोकुलस्थगोपन् और गोपीन् के सख्यशृंगारसंयोगकी
लीलाभावना... ४२४
वात्सल्यभावमें मातायशोदाकु जोस्वसुतके दर्शनलालनसंयोग
सुख भयो वाकी भावना... ४२५
अपने घरमें क्रियारूपभक्तिको भजन और प्रमाणरूपभक्ति
यदि अशक्य होय तो वाकी परिचर्या भी परम्परा सुशक्य हो

वैसी भावनाको निरूपण... ४२५
वाकी सन्तुष्टि आत्मरति होवे फिरभी भक्तिरूपा रतिसु
अन्यथाकर्तुंसमर्थ होवेसु अपनी संतुष्टि प्रकट करे... ४२५
उपसंहारमें ऐसी स्वतन्त्रलीला हृदयमें निरुद्ध होवेकी
प्रमाणपंथा स्थापकपुरुषके समक्षयाचना... ४२६
कर्मके कारण कायिकादिमें पैदा होती वासनाके प्रकार... ४२६
प्रमेयकी पोषण विलास और धर्म रूप पारस्परिकताके कारण
प्रमाणलीला या स्थितिलीला... ४२९
भागवतके सद्धर्मके कॅनवास्पे पुष्टिभक्तिसम्प्रदायके
सदाचारको चित्र... ४३४
अपने माथे बिराजते ठाकुर परमतत्त्व ही हे... ४३५
ठाकुरजीके दृष्टिकोणसु सदसद्वासनाको नियमन... ४३७
सत्संगके दृष्टिकोणसु सदसद्वासनाको नियमन... ४४४
सद्वासना भी अनियंत्रित होवेपे असद्धर्मको रूप लेवे... ४४८
सदसद्वासनाकी योगरूपता... ४५३
निष्ठाकी महत्ता और धर्मरूपता... ४५५
धर्ममें सदसद्वासनाको रोल् और वाकी व्यवस्थाको
विचार... ४६०
पर्यावरणको सद्धर्म... ४६६
संप्रदायको सदाचार और वाको अर्थ... ४६८
धर्मकु 'सद्' विशेषण क्यों?... ४६९
धर्मकी असद्रूपता... ४७१
धर्मकी सद्रूपता : सद्वासनामें निष्ठा... ४७४
स्मरणभजनरूप सदाचारकी संगति षष्ठाख्यानमें... ४७७
प्रभुकी आन्तरबाह्य विद्यमानताके कारण स्थिरता... ४७८
सदसद्वासनाको बिनजरूरी इन्स्टिगेशन् असद्धर्मको मूल... ४८०

पुष्टिसंप्रदायमें सद्धर्म : लीलानुसंधानसहित सेवा... ४८१
भजन धर्मथी हीन... ४८६
भावात्मक लीलानुसंधानसु निरोधकी कामना... ४८७
श्रीगोपालदासजी और श्रीगुसांईजी को सेवामें व्रजलीलाको अनुसंधान... ४८८
भक्तिमें आत्मविश्वासको रोल्... ४९१
नित्यलीलाकी अनुसंधानकी याचना... ४९३
भक्तिकी साधनामें लीलाको दृष्टिकोण... ४९७
साधनाकी प्रवृत्ति सिद्धि या असिद्धि की हो सके पर प्रमाणप्रवृत्तिके लिये पूर्वसिद्ध प्रमेय जरूरी... ५०२
षष्ठाख्यानकी प्रमाणकोटिकी उपपत्ति... ५०३
प्रश्नोत्तर ५०३–५१९

वल्लभाख्यान ७ (ज्योतिप्रकरण – ईशानुकथा) ५२०–५८९
निर्गुणभक्तिके अनुभावरूप सेवाकथाकी श्रीमद्वल्लभविट्ठलको वैभव... ५२०
विषयासक्तिके कारण प्रपन्न न होवेवाले जीवन्की निन्दा... ५२०
''आचार्यं मां विजानीयाद्'' ये श्रुतिवचनसु पुष्ट्याचार्यको पुरुषोत्तमपनेा वेदादिशास्त्रकु प्रतिपाद्य लगतो होवेपर भी कण्ठत: अप्रतिपादन लोकवेदसु अतीत होवेके कारण... ५२०
आचार्यसु विमुखकी निन्दा और अभिमुखकी स्तुति... ५२१
श्रीविट्ठलेशप्रभुचरणमें स्थायिनिर्गुणभक्तिभावके संचारिभावतया चन्द्रावलीजीके भावको उपपादन... ५२१
या प्रकारसु भक्तिपरायण आचार्यमें उनके अनुगामिन्को भी ऐसे भक्तिभावके संचारको निरूपण... ५२३

उपसंहारपद्यमें प्रभुचरणकी स्वमाहात्म्यकी सत्यापकत्वकी स्तुति... ५२३
पूर्वसिद्ध सेवाकी साधना क्यों?... ५२३
साधनामें साधकभाव जरूरी... ५२६
जीवनशैलीके रूपमें साधनाप्रणाली जरूरी... ५२८
तत्त्वभेदसु धर्मभेद... ५३०
सिद्धकी साधना... ५३४
असद्वासनासु की जाती सेवा भी असद्धर्म... ५३५
नींद भगावेके लिये की जाती भगवच्चर्चा असद्धर्म... ५३८
लीलानुसंधानसहित की जाती सेवा ही सद्धर्म... ५३९
भक्तिको रोल्-मॉडेल् : श्रीगुसांईजी... ५४०
सेवाकी निर्गुणरूपता... ५४१
भक्तिको रोल्-मॉडेल् ईशानुकथाके रूपमें गुसांईजीको स्थापन... ५४६
आत्मभावसु प्रभुसेवा... ५४९
भक्तिमार्गीय विमुखको वर्णन... ५५०
विषयासक्तिवश अप्रपन्न जीवन्की निन्दा... ५५२
गुसांईजीकी सेवापरता... ५५२
आचार्यजीकु अभिमुखकी स्तुति... ५५२
गुसांईजीके स्थायिनिर्गुणभक्तिभावको उपपादन... ५५३
ईशत्वसिद्ध भक्तिपरायण गुसांईजीके रोल्-मॉडेल्को अनुगामिन्के लिये भक्तिभावको निरूपण... ५५४
ज्योतिप्रकरणको प्रसंग... ५५४
भक्तिकी प्रवृत्तिके लिये ब्रह्मको भगवद्रूप... ५५६
भक्तिभावके दो संबंध ममतामूलकसख्य और अहंतामूलकदास्य... ५६१

स्नेहसंबंधके दो मॉडेल् –उंचो–नीचो और बराबरीको... ५६२
भक्तिमें स्नेहके दोनों मॉडेल्... ५६४
भक्तिमें भगवच्छास्त्रानुमोदित भगवान्की विभावना भक्तके द्वारा... ५६५
अब्राह्मिकधर्ममें भक्तिको प्रकार... ५६७
भक्तिमार्गमें आत्मसमर्पणके प्रारंभसु संबंध... ५७०
ज्योतिके प्रकार और प्रक्रिया... ५७३
अहंता–ममताके समर्पणसु ज्योतिष्मान् होवेको प्रोग्राम्... ५७४
भक्तिके प्रोग्राम्में भजनानन्द... ५८१
भक्तिमें अहंता–ममताकी भूमिका और वाको एन्लाईटन्मेन्ट्... ५८३
भक्तिको मूड्... ५८९
प्रश्नोत्तर... ५९०–५९७

वल्लभाख्यान ८(ज्योतिप्रकरण–निरोधलीला) ५९८–६०५
व्रजजीवनप्राणरूप धर्म और प्रभुचरणको उभयसाधारण होवेसु दोनोंके व्रजवास साधननिरोधरूप... ५९८
स्वस्वरूपसु श्रीविट्ठलनाथजीके द्वारा प्रमाणादिको निरोध... ५९८
व्रजवाससु व्रजभावभावुक भक्तन्को साधननिरोधको प्रकार... ५९८
नादसृष्टिके पुष्टिजीवन्कु श्रीविट्ठलनाथजीके स्वरूपसु भगवान् श्रीकृष्णमें फलात्मक निरोधकी प्राप्ति... ५९९
श्रीविट्ठलनाथजीके द्वारा प्रकाशित निजशक्तिरूपसप्तात्मजन्की फलनिरोधलीला... ५९९
श्रीविट्ठलनाथजीकी अन्त:पुरलीलामें भी फलरूपा श्रीनवनीतप्रियजीमें निरुद्धता... ६००

श्रीविट्ठलनाथजीके आवासमें स्थित प्रिय और आप्तजनन्को
भी भगवत्सेवा-कथामें फलनिरोधको निरूपण... ६००
निरोधको मूड् और वाकी प्रक्रिया... ६०१

वल्लभाख्यान ९ (ज्योतिप्रकरण -मुक्तिलीला) ६०६-६१५
भक्तिमार्गमें भगवदीय होनो मोक्षसु श्रेष्ठ उपलब्धि हे वो
वल्लभपरिवारमें कैसे निभी वाको विवरण... ६०६
प्रमाणरूप श्रीगोपीनाथजी और प्रमेयरूप
श्रीविट्ठलनाथजीकी भगवदीयताको स्वरूप... ६०६
प्रभुचरणके सप्त-आत्मजन्की भगवदीयताको स्वरूप... ६०७
श्रीगोपीनाथजीकी दोनों पुत्रीन्की भगवदीयताको स्वरूप... ६०८
श्रीविट्ठलनाथजीकी चारों पुत्रीन्की भगवदीयताको स्वरूप... ६०८
आख्यानोपसंहार... ६०८
मुक्ति : ''भगवदीयत्वेन परिसमाप्तासर्वार्था:''... ६०९
भक्तकी स्वरूपभावापत्ति और आश्रयभावापत्ति... ६१२

परिशिष्ट
विवरणम्... ६१६-६९१

उद्धरण तालिका... ६९२-७०२

उपक्रम

(मंगलाचरण)

चिन्तासन्तानहन्तारो यत्पादाम्बुज रेणवः ।।
स्वीयानां तान् निजाचार्यान् प्रणमामि मुहुर्मुहुः ।।१।।
यदनुग्रहो जन्तुः सर्वदुःखातिगो भवेत् ।।
तमहं सर्वदा वन्दे श्रीमद्वल्लभनन्दनम् ।।२।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।३।।
नमामि हृदये शेषे लीला क्षीराब्धि शायिनम् ।।
लक्ष्मीसहस्रलीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम् ।।४।।
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च त्रिभिस्तथा ।।
षड्भिर्विराजते योऽसौ पञ्चधा हृदये मम ।।५।।

(वल्लभाख्यानकी प्रासंगिकता और स्थिति)

अपनो पुष्टिअस्मिताको उत्सव हे. वाको गान करके अपन् वल्लभाख्यान शुरु करेंगे.

अपने पुष्टिअस्मिताके उत्सवमें करीब दो साल पहले **श्री**गोपीनाथजी पधारे हते. अब या बख़त श्रीगुसांईजी पधारे हें. पुरानो एक नियम हतो **"शिष्टागमने अनध्यायः"**– बड़े लोग आवें वा दिन छुट्टी. अभी अपनो पुष्टिअस्मिताको जो कार्यक्रम चल रह्यो हतो वामें छुट्टी हे. अब जब बड़े आये हें तो मैंने सोच्यो के श्रीगोपीनाथजीके उत्सवमें, क्योंकि उनको भागवतके पाठको अत्यधिक नियम हतो, तो वाके लिये अपन्ने भागवतचिन्तनको कार्यक्रम रख्यो. अभी वो भी चल रही हे और चलती रेहनी चहिये. बीचमें अभी श्रीगुसांईजी पधार आये हें तो या बरस अपन्

कमसुकम, टेन्टेटिवली तो सोच रहे हें के याही बरस; पर इच्छा ऐसी हे के इन नौ दिनन्में अपन् वल्लभाख्यानकु सोचें के क्या हे ?

वल्लभाख्यान, जैसोके अपनो नियम हे के कोई भी अपन् विचार करें तो पहले वाको पाठ करें. वल्लभाख्यान सिर्फ पठनीय ही नहीं हे पर ज्ञेय भी हे और पठनीय भी हे. सबसु बड़ी तकलीफ वल्लभाख्यानके साथ ये भई के इन सालन्में जो वल्लभाख्यानकी मूल राग हती, उन रागन्के बजाय कोई दूसरी-दूसरी रागन्में अपन् वल्लभाख्यान गावे लग गये. अच्छी हें वो राग भी और मेरे दिमागमें भी बैठी भई हें. कोई निकालवेकु कहे तो भी गलामें पीछेसु घुस जावेके चान्सिस् हें. याके लिये मैंने अंशुकु बुलाके बैठायो के तू हारमोनियमपे बैठके रागकु पकड़के बैठ, जासु गला फिरसु नये रागन्में नहीं घुस जाय. तो गान अपन् उन ट्युनन्में नहीं करेंगे. जो राग लिख्यो भयो हे वा रागमें अपन् वल्लभाख्यानको गान करेंगे. वाही रागानुसार प्रतिदिन अपन् एक आख्यान करेंगे. प्रचलित रागके अनुसार नहीं करेंगे और रोज याकु बैठायेंगे. अंशु अपनो म्युजिक् डायरेक्टर्, कन्डक्टर् रहेगो. याकी जरूरत हे क्योंके उनने जा रागमें लिखी हें, वा रागकु भी अपन्कु भूलनो नहीं चहिये. फिर दूसरे रागमें अच्छो लगतो होय वामें गाओ, वामें आपत्ति नहीं हे. मैं भी कीर्तनन्की पुस्तकनमें जो राग लिख्यो भयो हे, उन रागन्में नहीं गाऊं हूँ. उमंगमें जो राग अच्छो लगे वामें गाऊं. मूलत: तो ये जितनी भी कीर्तनप्रणालीकी पुस्तकें हें, उनमें भी एक बात ख़ास ध्यान देवे लायक हे के अष्टछापने जा रागमें वो कीर्तन लिखे हें वा रागमें वो कीर्तन नहीं हें. हर घरकी प्रणालिकामें उन उन पदन्कु अपने अपने रागमें बैठाके, सेवामें कौनसे बख़त कौनसे पद गाये जावेके लिये सूट् करते हते वा तरहसु उनने राग अरेन्ज् किये हें. कई लोग बेवकूफ़ीके कारण ऐसो

सोचें के यामें राग चेन्ज् नहीं हो सके, ऐसो कछु भी नहीं हे. राग चेन्ज् हो सके हे. क्योंके सब घरन्की प्रणालिकाके अलग अलग राग हें. तो चेन्ज् हुये बिना वो राग कैसे हो सकें हें! यदि अपन् अष्टछापके मूल संकलन देखें तो वामें वो पद कोई दूसरे ही रागमें लिखे भये हें. अभी एक बात बताऊं, जैसे के अभी अभी अंशुने एक ऑब्जेक्शन् कियो के भैरवी आप क्यों गा रहे हो? अब यामें भी भैरवीके भी छप्पन प्रकार हें. वामें कौनसी भैरवीकु गोविन्दस्वामीने प्रोहिबिट् करी वो तो अपन्कु पता नहीं हे. खाली भैरवी प्रोहिबिट् करी. दूसरे अपने यहां मालकोष जो इतनो गायो जाय हे वो भी भैरवीको ही एक प्रकार हे. भैरवी प्रोहिबिट् होवेके कारण मालकोष यदि प्रोहिबिट् नहीं होतो होय तो भैरवीके दूसरे प्रकार काहेकु प्रोहिबिट् होंयगे ? अब अंशुको ऑब्जेक्शन् तो ठीक ही हतो के आप भैरवी क्यों गा रहे हो यहां ? अब सच्ची बात बताऊं के वो प्रचलित चलनकी जो भैरवी हती वो नहीं गाई हती. थोड़ी अप्रचलित चलनकी भैरवी गाई. उमंग आई तो गा ली. 'राग'को मतलब हे स्नेह. और यदि रागको मतलब स्नेह हे तो वो जो गाइड्लाईन् देतो होय, वो गाईडलाईन् प्रभुके गुणगान करवेमें फॉलो करनी चहिये. जो गला पकड़के केहतो होय के ऐसे गाओ तो वामें तो अपन् जाने ही हें के गोपालदासजीने तो बोहोत सारे राग लिखे हें के ऐसे गाओ. तो अपन् कहां गा रहे हें ! गा ही नहीं रहें हें वो राग. कछु और ही भलत-भलते राग गा रहे हें. राग अच्छे हें, बुरे हें मैं ऐसे नहीं केह रह्यो हूँ पर गावेके बारेमें ये नियम नहीं चल सकें हे. गला जामें जायगो वाहीमें तो जायगो ना! गाते गाते भी गला दूसरे सुरमें चल्यो जाय तो क्या कर सके हे आदमी! ऐसे ही कोईकु बैठानो पड़े हारमोनियम्पे के गला सरके तो तुम हमकु टोकियो.

वल्लभाख्यान पहलो

(प्रमेयप्रकरण–सर्गलीला)

।। राग केदारो ।।

(तत्त्वध्यान और हृत्प्रसाद)

वंदू श्रीविट्ठलवर सुंदर नवघनश्याम तमाल ।।
जगतीतल उद्धार करेवा प्रगट्या परम दयाल ।।१।।
श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीड़ा लीला द्विज तनुधारी ।।
सात दिवस गिरिवर कर धार्यो वासववृष्टि निवारी ।।२।
ते प्रगट्यानुं कारण कहिये जो सुरता मन आणो ।।
करो कृपा हुं करूं विनंती पोतानो करि जाणो ।।३।।

(उत्पत्तिपक्षके अनुरोधसु सर्गलीलाके उपादानको कूटस्थ–तत्त्व)

व्यापकरूप अद्वैत ब्रह्म जे 'तेजोमय' कहेवाय ।।
आर्यपंथ अधिकारी मुनिजन ते मांहे लय थाय ।।४।।
अक्षर आदि अखंड अनुपम उपमा कही नव जाय ।।
अस्ति अस्ति सउको मळि बोले ।।
निगम नेति–नेति गाय ।।५।।
निर्गुणनो निर्देश अटपटो रसना शी पेरे कहिये ।।
रूपवर्णवपु दृष्ट पदारथ त्यां एको नव लहिये ।।६।।

(उपपत्तिपक्षके अनुरोधसु नित्यलीलाविहारको कर्तृतत्त्व)

तेहथकी पुरुषोत्तम अळगा लीला अचल विहार ।।
ब्रह्मज्ञानी ने मुक्तिमारगी स्वप्ने नहीं व्यवहार ।।७।।
ज्यां वृंदावन आदि अचल शशी शरद रेन बहुवेश ।।
वनदेवी पद कुमकुम मुखसुख परसे रंग विशेष ।।८।।

ज्यां सरिता चामीकर–मणिगण उभय–बद्ध सोपान ।।
कमल कुमुद नाना अलि सुंदर मधुर करे त्यां गान ।।९।।
कनकलता मालती मल्लिका विविध कुसुम मकरंद ।।
शीतल पवन झकोरे लहरी परसे अति आनन्द ।।१०।।
पद्मराग मरकत मणि स्फटिक श्रीगोवर्धन सोहे ।।
ब्रह्मा रुद्र त्यां कोण बापडा श्रीहरिनुं मन मोहे ।।११।।
नाना पक्षीनी शब्दमाधुरी शोभा तणों नहीं पार ।।
विविध प्रकारे जूजवा कहेतां ग्रन्थ थाय विस्तार ।।१२।।
श्यामा शतदल नयन सुन्दरी यूथ तणों नहीं पार ।।
विविध रासमंडल रचना रची खेले श्रीनंदकुमार ।।१३।।
एणी पेरे नित नवली लीला घोष वाद्य झंकार ।।
अंग स्वेद मकरंदे मोह्या मधुप करे गुंजार ।।१४।।

(अभिन्ननिमित्तोपादानभूतताको निरूपण)

ए प्रभुने मन इच्छा उपनी यश थावा विस्तार ।।
अधिकारी पाखें ए वाणी नहीं कोने उच्चार ।।१५।।
भ्रूभंगेथी सृष्टि नीपनी अति सुंदर ब्रह्माण्ड ।।
चौद लोक नानावैचित्र्ये भूमंडल नवखण्ड ।।१६।।

(माहात्म्यबोधनिरपेक्षक्रिया और भगवद्रतिसापेक्ष भक्तिकी सृष्टि)

पर पोतानी व्यक्ति करेवा सृष्टि ते द्विधा प्रकार ।।
दैवी–आसुरी बे उपजावी प्रभु मन करी विचार ।।१७।।
भक्ति सुंदरी ने माया दासी बे मूरत प्रगटावी ।।
तेमां पहेली नखसिख सुभगा श्रीहरिने मन भावी ।।१८।।

कृपाकटाक्षे हुवा अक्षरमां उपन्या सत्त्व अनन्त ।।
भक्तिलीन हुवा सौभागी ते वैष्णव गुणवंत ।।१९।।
बीजी कटाक्षे जे जन उपन्या मायामां थया लीन ।।
कर्मजड आसुर अन्यउपासक भजनधर्मथी हीन ।।२०।।

(स्वसृष्टद्विविधजीवकी मिथ:मिश्रणनिरसनके लिये आचार्यकी अपेक्षा)
एणी प्रकारे सृष्टि द्विधा गुणमिश्रित चाली जाय ।।
भक्तिमारगी जीव स्वतन्त्र केवळ भक्त न थाय ।।२१।।
श्रीपुरुषोत्तमे वळि विचार्युं हवे प्रकार शो करिये ।।
म्हारी सेवा अने कथारस निरूपवा तनु धरिये ।।२२।।

(नित्यलीलास्थ पुरुषोत्तमको आचार्यरूपसु भूतलगोकुलागमन)
भक्तजीवनां भाग्य विस्तर्या इच्छा करी हरि सार ।।
तणे हेते आपोपें प्रगट्या श्रीवल्लभराज कुमार ।।२३।।
पूर्णब्रह्म श्रीलक्ष्मण–सुत पुरुषोत्तम श्रीविट्ठलनाथ ।।
श्रीगोकुलमां प्रगट पधार्या स्वजन कीधा सनाथ ।।२४।।

या रागमें गावेको एक अलग ही आनन्द हे. आपकु फील् भयो होयगो. मूल रागमें गावें तो वाकी एक अलग ही ब्युटी हे. अपन्कु पता होनो चहिये के ये मूल राग कैसो हे और याकी चलन कैसी हे! अपन् सब भूल गये हें. जब भूल जायें तो कोई भी राग दिमागमें चढ़ जाय. मेरे भी चढ़ जाय, ऐसो नहीं हे के आपके ही चढ़े. पर गला कब फिसल जाय अपन्कु पता ही नहीं चले.

वल्लभाख्यान यदि श्रीगुसांईजीने लिखवायो हे तो भी गोपालदासजीने लिख्यो हे. यदि गोपालदासजीने लिख्यो हे तो भी श्रीगुसांईजीने लिखवायो हे. या तरीकाकी या वल्लभाख्यानकी कथा और स्टेटस् हे.

(ग्रन्थ टीका और टीकाकारन् को माहात्म्य)

सबसु बड़ी बात वल्लभाख्यानके बारेमें ये हे के ये गुजराती भाषाको एक ऐसो अद्‌भुत ग्रन्थ हे; मेरी तो मातृभाषा गुजराती नहीं हे, फिर भी याकी भाषाको लालित्य, भाषाकी मधुरता, या ग्रन्थके छन्दको सौष्ठव देखें तो अपनो हृदय मुग्ध हो जाय. अब ये गोपालदासजीको करिश्मा हे के श्रीगुसांईजीको करिश्मा हे? जाको भी करिश्मा होय, रहवे दो वाको करिश्मा. इतिहास सब लोग जानें हें.

नहीं भी जानते होंय तो भी याको माहात्म्य ऐसो हे के वल्लभाख्यानपे कमसु कम बारह टीकायें हें. इतनी टीकायें हें कि जिनमेंसु निश्चित मोकु पता नहीं हे पर लग ऐसो रह्यो हे के सबसु प्राचीन टीका व्रजाभरणजीकी होनी चहिये. वो ट्रेन्ड-सेटर् हें. द्वारकेशजीकी भी संस्कृतकी टीका हती, ऐसो सुनें हें मगर मिली नहीं हे अभी तक. कोशिश कर रह्यो हूँ, यदि मिल जायगी तो वो भी छापूंगो. पर या बख़त अभी अपने पास दो मॅन्युस्क्रिप्ट् ऐसे मिले, जिन दो मॅन्युस्क्रिप्ट्में व्रजाभरणजीकी टीका व्रजभाषामें ही लिखी भई मिली हे और वो जो मॅन्युस्क्रिप्ट्के लिखवेवाले हें वो भी शायद गुजरातके हें. वामें व्रजभाषाकी भी अच्छी खासी अशुद्धियें हें. और व्रजाभरणजी हें ये शायद तो कोटाके घरके हें. अब उनकु गुजराती नहीं आवे, वाकी भी गड़बड़. जो टीका

करवेवाले हें उनकु गुजराती नहीं आवे और जो लिखवेवाले हें उनकु व्रजभाषा नहीं आवे, वाकी गड़बड़ हे. या कारणसु जैसे पेन् सरके हे, जैसे अपने गला सरक गये दूसरी ट्युनन्में, ऐसे व्रजाभरणजीकी टीकामें पेन् यहां वहां सरक गई हे. पता नहीं चले हे के क्या करनो याको और कैसे करनो ? पर जो भी कछु अवेलेबल् हे, वो व्रजाभरणजीको अपनेपे सबसु बड़ो उपकार ये हे के उनने पहली बार टीका लिखके यापे सबन्को ध्यान दिलवायो वाको उपकार अपन् भूल नहीं सकें. खुद दयारामभाई केह रहे हें के मैं व्रजाभरणजीकी टीकाकु रेफर् करके गुजरातीमें टीका लिखनो चाह रह्यो हूँ. दयारामभाईने वल्लभाख्यानपे टीका लिखवेके लिये कलम उठाई पर एक कड़वासु ज्यादा आगे वो बढ़ नहीं पाये और एक कड़वा भी पूरो नहीं कर पाये. जैसो कछु अधबीचमें ही छूट गयो मिले हे पर वो अपने पास सफिशियेन्ट् ग्राउन्ड् हे या बातकु समझवेके लिये के व्रजाभरणजी बोहोत प्राचीन हें. क्योंके दयारामभाई उनकु रेफर् कर रहे हें. दयारामभाई उनपे रिलाय् कर रहे हें. वो ये केह रहे हें के मैं व्रजाभरणजीकी टीकाकु देखके वाकी गुजरातीमें टीका करनो चाह रह्यो हूँ. माने यहां काफी ऑथेन्टिक् बात हो रही हें. या लिये नहीं के दयारामभाई केह रहे हें पर या लिये के उतने प्राचीनकालमें भी या टीकाकी अवेलेबिलिटी हती जाकु दयारामभाई जैसो स्कॉलर्; उनने धोल-पद लिखे हें या लिये उनकु स्कॉलर् नहीं समझें तो ये अपनी बेबकूफ़ी होयगी. वो सम्प्रदायके बोहोत बड़े स्कॉलर् हते. अद्भुत् विद्वान हते. अब संस्कृतमें नहीं लिख्यो करके विद्वान नहीं हते ऐसी बात नहीं हे. वा तरीकेको विद्वान जा बख़त कबूल कर रह्यो हे के व्रजाभरणजीकी टीकाकु देखके मैं अपनी टीका लिखनो चाह रह्यो हूँ. मतलब या टीकाको कोई शुद्धरूप भी होनो चहिये.

व्रजाभरणजीकु गुजराती नहीं आती हती और जो कॉपी करवेवालेकु व्रजभाषा नहीं आती हती यासु जा टॅक्स्ट् मिल रही हे वामें बोहोत घोटाला हे. प्राचीन संस्कृतकी कोई टॅक्स्ट् मिले तो वाकु और शुद्ध कियो जा सके हे. मेरे बनते इन डेढ़ दो महीनामें मैंने अपनी जान लगाई हे या टॅक्स्ट्कु ठीक करवेमें. या बख़त वो टॅक्स्ट् मेरे पास पूरी तैयार हे.

व्रजाभरणजीके बाद क्योंके दयारामभाईने भी उनकु रिकोग्नाईज़् कियो करके शायद सम्प्रदायमें हो-हल्ला मच्यो हे. हो-हल्ला मच्यो हे करके एक साथ कन्टेम्पोरेरी तीन टीकाकार आये हें. एक हमारे तातजी जीवनलालजी महाराज, एक अहमदाबादवाले व्रजरायजी महाराज और एक मथुरावाले श्रीरमणजी महाराज. ये तीनों टीकाकार कहीं न कहीं तो व्रजाभरणजीपे रिलाय् करके चले हें, पर शतप्रतिशत उनपे रिलाय् नहीं करें हें क्योंके ये तीनों ही खुद अच्छे विद्वान हते, अच्छे जानकार हते. तो उनने अपनी बातें भी काफी यामें डाली हें जो के व्रजाभरणजीकी टीकामें नहीं मिलें हें.

वामें सबसु बड़ी अद्भुत महत्ता व्रजरायजीकी टीकाकी ये हे के या वल्लभाख्यानकी टीका लिखते-लिखते उनने एक एन्सायक्लोपीडिया लिख दियो हे. कभी कभी तो अपनो माथा दुःख जाय. अभी मैंने महीना भरसु याकु एडिट् कियो तो माथामें चम्पी करनी पड़ती हती, इतनो माथा भारी हो जातो हतो क्योंके गोपालदासजीकी एक भी कड़ी ऐसी नहीं के जापे दस पन्द्रह पच्चीस शास्त्रवचन वो उद्धृत न करते होंय! यहां ऐसो कह्यो हे, यहां ऐसो कह्यो हे. अपनो चित्त घबरा जाय के ये सब

शास्त्रवचनन्को गुजराती अनुवाद हे के गोपालदासजीने लिख्यो हे. नर्वसनेस् आ जाय. हर कड़ीपे जैसे कोई मशीनगन् छोड़ दें. हर कड़ीके बारेमें शास्त्रके इतने वचन हें. अब उनकु चॅक् करनो भी मुश्किल हे. क्योंके उतने टॅक्स्ट् वचन उनकु बाय-हार्ट् याद हते. यहां तो खोपड़ी खाली भपका भारी हे. अब उन वचनन्कुं कहां खोजवे जायें, कैसे करें ? कैसे उनकु चॅक् करें ? मैंने सबसु सुरक्षित कोर्स् ये समझ्यो; अब यामें मेरी कमजोरी भी हे और मेरी यामें इक्नॉमी भी हे. यदि इतनो सारो एन्सायक्लोपीडिया शास्त्रवचनको एक-एक कड़ीमें आतो होय तो आदमी वल्लभाख्यानकु समझवेके बजाय सकल-शास्त्र-पारंगत हो जायगो. तो मैंने क्या कियो के सबसु सेफ् कोर्स् ये हे के एकादसू सकल शास्त्रके वचनन्कुं डिलीट् कर दो. टीकामें क्या केह रहे हें वो देखो. मैंने ये कियो के जितने भी अधिक उद्धृत शास्त्रवचन हें उन सबकु डिलीट् कर दियो और टीका छांटी. टीकामें वो क्या केह रहे हें ? वो टीका भी काफी विस्तृत हे, छोटी टीका नहीं हे. मगर अद्भुत टीका हे यामें कोई संदेह नहीं हे. व्रजरायजीने, जाकु अपन् हॅट्स् ऑफ् कहें ना, ऐसी टीका लिखी हे.

और सबसु बड़ी व्रजरायजीकी टीकाकी महत्ता ये हे के अक्सर संस्कृतके विद्वानन्कु एक भ्रमणा होवे हे, हमारे दादाजी यद्यपि अपवाद हते याके के संस्कृतमें लिखे भये ग्रन्थको वज़न कछु ज्यादा होवे हे. भाषामें लिखे भये ग्रन्थन्को वज़न कछु ज्यादा नहीं होवे हे मगर व्रजरायजीकी वल्लभाख्यानकी टीका पढ़ें तो पता लगे हे के या टीकाको वज़न कितनो हे. बोहोत ज्यादा, बोहोत ज्यादा. उनके अनुसार ये कोई आख्यान नहीं हे पर कोई पूरो शास्त्र हे. पर अपन्

वाकु समझ नहीं सकें हें. उनकी भाषाको लालित्य इतनो हे, उनकी भाषाको प्रवाह ऐसो हे.

वल्लभाख्यानकी भाषामें वो गामठी प्रयोग जो हें, पता नहीं वो गामठी हते के परिष्कृत भाषाके प्रयोग हते. गुजराती भाषाको जो जानकार होयगो वो या बातकु अच्छी तरहसु जान सकतो होयगो. मैं तो यामें ऑथोरिटी नहीं हूँ. मगर कहीं तो कछु ऐसो लगे हे के ये जो गामठी प्रयोग हें वो अति मिठास लिये भये हें. उन गामठी प्रयोगन्की या परिष्कृत गुजरातीके प्रयोगनकु देखें तो कितनी मीठी गुजराती हे. ये तो अपन् भाषाके दृष्टिकोणसु पढ़ें तो ही समझमें आ सके ऐसो हे. ये व्रजरायजीकी टीका और गोपालदासजीको वल्लभाख्यान इन दोनोंन्की अपन् तुलना करें तो माइन्ड-बोगलिंग् हें, कल्पना नहीं आवे.

याके साथ साथ श्रीरमणजी थोड़े पीछे टाईमके हेर-फेरके साथ हें. उनने भी टीका लिखी हे. उनकी भावनासु भरी भई प्रमेयमार्गी टीका हे. वो एक अलग एप्रोच् हे.

इन दोनोंन्को समन्वय करके, थोड़ो प्रमाण और थोड़ो प्रमेय, दोनोंन्को सिन्थिसिस् करके एक टीका हमारे तातजी महाराजने लिखी. माने मेरे परदादाने. काफी बॅलेन्स्ड् टीका हे सब दृष्टिसु. वापे फुटनोट लिखी हें गट्टुलालाजीने जो सम्प्रदायके बहोत बड़े विद्वान भये हे. अब हम बालक ही नहीं पढ़ें शास्त्र तो बिचारे लालाजी काहेकु पढ़ेंगे. उनने क्या भांग पी हे के शास्त्र पढ़ें! पर वो गट्टुलालाजी उन लालाजीन्मेंसु हते के जिनको पाण्डित्य अपन्

केह सकें के पुरुषोत्तमजीके बाद वा कॅलिबर्को कोई पण्डित भयो होय अपने यहां तो गट्टुलालाजी भये. वा कॅलिबर्के वो पण्डित हते. मैं टॉपिक्सु डायग्रेशन् नहीं करनो चाहूं पर मेरो मन रुके नहीं हे या लिये केहनो पड़े हे के जा बख़त दयानन्द सरस्वतीने बम्बईमें आके चॅलेन्ज् करी के तुम्हारो पुष्टिमार्ग अशास्त्रीय अप्रामाणिक हे. वा समय हमारे जितने भी गोस्वामी बालक हते वो सब बोरिया बिस्तर बांधके भाग गये बम्बईसु. एक गट्टुलालाजी हते जो खड़े रहे और जाके दयानन्द सरस्वतीके सामने बोले के ''क्या केहनो हे तोकु ? जो केहनो होय केह, मैं पूरो शास्त्रार्थ करवे तैयार हूँ.'' दयानन्द मुंह भर-भरके गाली दे हे पुष्टिमार्गकु पर साथमें ये भी कबूल करे हे के पुष्टिमार्गमें गट्टूलाला एक विद्वान हे. तो वासु अपन् समझ सकें हें के वो व्यक्ति गट्टूलालाजी क्या हते ! वो गट्टूलालाजी वा बख़त बिचारे रो रहे हें. दुःखकी बात हे के **''आचार्यवाच्यपि चेद् न यतते कथा का. श्रीपुरुषोत्तममुखोक्ति-सुधावधाने''** (श्रीगट्टुलालाजी कृत) लोग महाप्रभुजीकी वाणीकु नहीं अनुसरे हें तो पुरुषोत्तमजीकी वाणी कहांसु पढ़ेंगे! और **''भट्टस्य मे तु रणितं मशकोपमस्य दूरं क्षिपेत्छ्रवणतो नहि वैष्णवः कः''** "मैं तो भट्ट हूँ, मच्छरकी तरह गुनगुना रह्यो हूँ तो सब लोग कानके आगेसु यों ही उड़ा देंगे." वो गट्टुलालाजी हें जाने यहां पुष्टिमार्गकी शान बढ़ाई, सारी गालियें खाई. वो खुद कबूल करें के सब भगवदीय मन्दिरके मोकु वृद्ध-वेश्या-तपस्विनी कहें हें, धृतराष्ट्र कहें हें माने अन्धो. और बूढ़ी वेश्या तपस्विनी होवे हे क्योंके क्लाईन्ट् मिले नहीं या लिये, ऐसे मोकु गाली देवें हें. तो अपन् समझ सकें हें के उन बिचारेनकु कैसी ट्रेजेडीमेंसु पास् होनो पड़्यो होयगो! सिर्फ

एक अपराध के वो पण्डित हते. वाके अलावा गट्टुलालाजीको कोई भी अपराध नहीं हतो. उनको एक ही अपराध हतो के उनने महाप्रभुजीके शास्त्र अपने जमानेमें अच्छी तरहसु पढ़े, अच्छी तरहसु संकलन कियो, हर ग्रंथपे उनने व्याख्या लिखवेकी सोची. वो यहां केह रहे हें के यद्यपि जीवनलालजी तातजी हमारे परदादा हें पर क्योंके वो संस्कृतके अच्छे लेखक हें, पर उनने व्रजभाषामें लिखवेकी सोची हे, तो मैं वाकी थोड़ी कॉमेन्टरी फुटनोट्की तरह लिख रह्यो हूँ, वाकु और जस्टीफाई करवेके लिये. तो ये कोलेबोरेशन्में लिखी भई टीका हे. एक बाजु हमारे परदादा जीवनलालजी महाराज हैं और दूसरे बाजु गट्टुलालाजी जैसो उनको फुटनोट लिख रह्यो हे.

या टीकाको माहात्म्य अभी काफी प्रचलित हे. बाकी दो दूसरी टीकायें श्रीरमणजीकी टीका शायद रमणपंथमें पॉप्युलर् होयगी, क्योंके रमणपंथीन्के साथ बोहोत सम्पर्क नहीं हे मेरो. व्रजाभरणजीकी टीका तो ऑल्मोस्ट खो गई हती जो पाछे मोकु मिली हे और जाकु अपन् पहली बार प्रकाशित कर रहे हें.

याके अलावा गुजरातीमें चार टीकायें, अंग्रेजीमें यापे श्यामदासने टीका लिखी हे. मेरे पिताजी दीक्षितजी महाराजने भी याके एक आख्यानपे टीका लिखी हे. तो अपन् समझ सकें हें के ये एक ग्रन्थ कितनो महत्त्वपूर्ण रह्यो हे और कितनो बड़ो रोल् रह्यो हे याको पुष्टिमार्गमें!

अब सचमुचमें ये गोपालदासजीके मुखसुं श्रीगुसांईजी बोले हें

के गुसांईजीकी बात गोपालदासजी बोले हें!! हिन्दीमें एक कविता हती पुराने जमानामें, कविको नाम तो मोकु याद नहीं आ रह्यो पर कविता कुछ ऐसी हे ''नारी बीच सारी हे के सारी बीच नारी हे. सारी हे के नारी हे नारी हे के सारी हे.'' ऐसे ही यहां गोपालदासजी हें के गुसांईजी हें, गुसांईजी हें के गोपालदासजी हें के दोनों हें के क्या हे? अब यामें डिसाईड् कर पानो बोहोत मुश्किल हे. पर जा तरीकेकी याकी गहराई हे, वा गहराईकु देखते बख़त अपन् शत-प्रतिशत केह सकें हें के जा तरहको गोपालदासजीको रहवेको लोकेशन् हतो, स्थान हतो, रूपाल गांव; मैं खास रूपाल गांव जाके भी आयो याहीके लिये; वो रूपाल गांव आजकी तारीखमें भी बोहोत ही छोटो गांव हे. वा जमानामें तो ना जाने कितनो छोटो होयगो और वा छोटेसे गांवमें गोपालदासजी इतनो शास्त्रको निचोड़ केह रहे हें!

कैसे केह रहें हें ये तो नहीं केह सकें क्योंके शंकराचार्यजी जा कालड़ीमें प्रकटे वो शायद रूपालसु भी छोटो गांव हतो. और रूपाल तो फिर भी अहमदाबादके पास हे, जो बरसन्सु गुजरातकी राजधानी रही हे कर्णावतीके नामसु. करणसिंहघेलाने वाकु स्थापित करी हती. तो वो कर्णावती राजधानी हती और फिर अहमदाबाद तो बेगड़ाने नाम बदलके रख दियो. बोहोत पासमें हें अहमदाबादके और इतने पास होवेके कारण कछु न कछु मटीरियल् उनकु अवेलेबल् भी होयगो, नहीं होयगो ऐसी बात नहीं हे पर शंकराचार्यजीकु तो कालड़ीमें कछु भी अवेलेबल् नहीं हतो फिर भी कितनो उनने लिख्यो हे!! तो वा बातसु अपन् समझ सकें हें के पुराने जमानामें

आज जैसी स्थिति नहीं हती के गामके सब लोग मूरख ही होते हते और शहरके सब लोग समझदार होते हते. कभी कभी ऐसो भी लगे हे के शहरके लोग ज्यादा मूरख हें, गामके लोग ज्यादा समझदार हें, पुरानी बातन्कु देखें, सोचें तो. मोकु तो कई बार ऐसो हादसा फेस् करनो पड़्यो के गामके लोगन्सु मुठभेड़ हो गई तो पता चली के ये तो बोहोत समझदार हें. अपने यहांकी ऐसी संस्कृति हती के बोहोत बुद्धिशाली विद्वान गांवमें रहनो पसन्द करते हते. ये शहरमें आवेको मॉडर्न ट्रेन्ड् जो हे ये तो इन्डस्ट्रीयलाईज़ेशन् और व्यापारीकरण के बाद शुरु भयो हे. हो सके हे गोपालदासजीकु गुसांईजीकी कृपासुं होय. हो सके हे के गुसांईजीने ही लिखवायो होय और गोपालदासजीको मुख होय खाली. मैं वा विवरणमें जानो नहीं चाहूं. वो सारी टीकायें जो छपवे जा रही हें उनमेंसु भी देखवेकु मिलेगो.

याके अलावा काफी गुजरातीकी टीकायें भी अवेलेबल् हें. एक दो नहीं बोहोत टीकायें अवेलेबल् हें गुजरातीकी. सौराष्ट्रमें लिखी भई, गुजरातमें लिखी भई, गुजरातमें भी अलग अलग दो शहरन्में लिखी भई. वो सब डिटेल् आपकु पता चल जायगी जब छपके आयगी.

(व्याख्याको उपक्रम[१-३])

मैं यहां जो बात कहवे जा रह्यो हूँ वो सबसु महत्त्वपूर्ण बात हे के इन सब टीकाकारन्ने वल्लभाख्यानकु अलग अलग दृष्टिकोणसु देख्यो हे. बोहोत सारे व्याख्याके सिनोप्सिस् उनने सपोज़्

करे हें. हमारे दादाजी क्योंके वल्लभाख्यानके अनन्यभक्त हते और जब भी हार्टअटेक आतो तो डॉक्टर्कु बुलावेके बजाय कहते के वल्लभाख्यानको पाठ करो, वल्लभाख्यानको पाठ करो, सीवियर् हार्टअटेकमें भी. नेचरली हमपे भी वल्लभाख्यानको बचपनसु काफी असर रह्यो और अपन् पाठ भी करते रहे. मैंने कलकत्तामें वल्लभाख्यानपे प्रवचन भी कियो हतो. अब पता नहीं के वाको रिकॉर्ड् हे के नहीं कोईके पास पर मैं भी या बारेमें काफी सोचतो रह्यो हूँ के वल्लभाख्यान क्या हे? मैं यहां जो केहवे जा रह्यो हूँ, समझावे जा रह्यो हूँ तो मैं उन टीकान्को कहीं सहारा लऊं हूँ कहीं नहीं भी लऊं क्योंके सबन्ने अपनी अपनी टीका लिखी हें. मैं तो अपनी सोच बतावे जा रह्यो हूँ. अब वो सच्ची हे के झूठी हे वो तो श्रीगुसांईजी जाने और गोपालदासजी जाने, मैं नहीं जान सकूं! पर जो मेरी सोच हे वो मैं बतावे जा रह्यो हूँ.

(ँभागवतकी सर्वसंदेहवारकता)

मेरी सोच सबसु पहले वल्लभाख्यानके बारेंमें ये हे के शुकदेवजी और व्यासजी की लिखी भई जो भागवत हे वा भागवतकु महाप्रभुजी सर्वसंदेहवारक शास्त्र केह हें. सर्वसंदेहवारक शास्त्र होवेके कारण महाप्रभुजीके मनमें कहीं ये धारणा हे के यदि कहीं वेदको अर्थ करनो हे तो भागवत क्या केह रही हे, वाकु समझे बिना अर्थ मत करो. उपनिषद्को कोई अर्थ करनो हे तो भागवत क्या केह रही हे वाकु रिफर् किये बिना अर्थ मत करो. गीता यदि कछु केह रही हे तो भागवत वामें क्या खुलासा दे रही हे वो जाने बिना अर्थ मत करो. ब्रह्मसूत्र कछु केह रह्यो हे तो

भागवत वाके बारेमें क्या केह रही हे, वाकी क्रॉसचॅकिंग् किये बिना ब्रह्मसूत्रको अर्थ करवेको साहस मत करो. ये श्रीमहाप्रभुजी अपन्कु सर्वसंदेहवारक शास्त्र तरीके केहनो चाह रहे हें. मतलब कहीं न कहीं महाप्रभुजीके एप्रोच्में, अपन् वाकु एप्रोच् बायस् प्रीसपोज़ीशन् केह सकें हें. ये सब कछु पसन्द नहीं आतो होय तो प्रेजुडाईज्ड् भी केह सकें हें. जो भी कछु होय महाप्रभुजीके मनमें कहीं न कहीं ऐसो हे के प्रमाण प्रमेय साधन फल; कोई भी चीजके बारेमें संदेह हो रह्यो हे तो फाईनल् वा संदेहको निराकरण भागवतसु ही करनो चहिये.

(पुष्टिमार्गको मूल भागवतमें)

अब जब ये स्थिति हे तो अपन् समझ सकें हें के भागवतको सिर्फ ब्रह्मवादपे ही असर हे, ऐसो नहीं पर भागवतकी पुष्टिमार्गपे भी असर माननी पड़ेगी क्योंके जो भागवत केह रही हे, यदि पुष्टिमार्गको आधार वामें नहीं हे, तो सर्वसंदेहवारणको कोई उद्देश्य पूरो नहीं भयो. फिर तो पुष्टिमार्ग खुद ही संदिग्ध हो जायगो. पुष्टिमार्गकी ऑथेन्टिसिटी ही संदिग्ध हो जायगी. तासु पुष्टिमार्गके हर पहलूको कहीं न कहीं भागवतमें मूल दिखाते आनो चहिये के ये पुष्टिमार्गको पहलू हे, ये ब्रह्मवादको पहलू हे तो वाकी जड़ें भागवतमें यहां हें. वो अपन्कु ट्रेस् करनो आनो चहिये या महाप्रभुजीके डिसिप्लीन्के कारण, या प्रेजुडाईज़्के कारण, जो भी केहनो होय कहो.

या बातकु मैं ध्यानमें लऊं तो मोकु ऐसो लगे हे के यदि ये श्रीमद्भागवत महापुराण हे तो वाही तरह ये वल्लभाख्यान

पुष्टिमार्गकी भागवत हे. अपन् या भागवतकु ऐसे नहीं केह सकें के ये औरन्की भागवत भी हे. औरनकी होयगी तो होयगी न होय तो नहीं भी. ये पुष्टिमार्गकी भागवत हे, इतनो तो अपन् निश्चित केह सकें. वो जैसे कृष्ण रासमें सोलह हजार गोपीन्के संगमें नाचे, तो हर गोपीकु लग्यो के कृष्ण मेरो ही हे, कृष्ण मेरे साथ नाच रह्यो हे. वैसे जितनेन्के साथ भागवत नाचती होय तो नाचे वो भागवतको हेडेक् हे वो अपनो हेडेक् नहीं हे. पर अपन्कु लगनो चहिये के भागवत मेरी हे, मेरे कहवेको मतलब ये हे. अपन्कु ये एहसास रहनो चहिये के हर बख़त भागवत मेरे पास सर्वसंदेहवारणके लिये हे. ये भागवतकी महत्ता हे. अभी भागवतकी महत्ताकु मैं बतानो नहीं चाहूं क्योंके थोड़ो कम्पॅरेटिव् सोचें तो और भी बातें यामें समझवेकी हें पर ये जो भागवतकी महत्ता हे वो पुष्टिमार्गमें हो सके हे, पुष्टिसम्प्रदायमें नहीं. मैं पुष्टिमार्ग और पुष्टिसम्प्रदाय कु डिफरेन्शियेट् करनो चाहूँ हूँ.

([३]वल्लभाख्यान=पुष्टिसम्प्रदायकी भागवत)

ये वल्लभाख्यान अपने पुष्यिसम्प्रदायकी भागवत हे. Know it once for all के अपनो पुष्टिसम्प्रदाय कोई एक अर्थमें पुष्टिमार्गकी कोई एक विशेष डेवलपमेन्ट् हे क्योंके आज अपन् कन्फ्युज्ड् हें पुष्टिसम्प्रदायकु पुष्टिमार्ग समझें हें और पुष्टिमार्गकु पुष्टिसम्प्रदाय समझें हें. पुष्टिमार्ग महाप्रभुजीको प्रवर्तित नहीं हे. पुष्टिमार्ग तो भगवान्के पुष्टिके स्वरूपसु प्रवर्तित हे. अपन् सुबोधिनी पढ़ें तो अपन्कु पता चले के महाप्रभुजीसु बोहोत पहले ठाकुरजीने कहां कहां अपनो पुष्टिस्वरूप प्रकट कियो हे. वामें महाप्रभुजी स्वयं

ये स्वीकारें हें के ये पुष्टिके अवतार हें, ये मर्यादाके अवतार हें, ये ऐसे अवतार हें, ये वैसे अवतार हें. ये पुष्टिसृष्टि हे. ये मर्यादासृष्टि हे. एक बात समझो के पांचसौ बरस भये महाप्रभुजीकु प्रकट भये और पुष्टिसृष्टि तो पुष्टिप्रवाहमर्यादा ग्रन्थमें महाप्रभुजी आज्ञा कर रहे हें के सृष्टिके आरम्भमें प्रकट भयी. तो इतने बरस क्या पुष्टिमार्ग खानमें दब्यो हतो जैसे हीरा सोना खानमें दब्यो रहे! ऐसे कोई खानमें दब्यो भयो नहीं हतो. पुष्टिमार्ग तो हतो ही. पर जो चीज नहीं हती वो पुष्टिसम्प्रदाय नहीं हतो. तो जब पुष्टिसम्प्रदाय प्रकट भयो तो वाकी भी तो एक भागवत चहिये ना! जैसे पुष्टिमार्गकी एक भागवत होनी चहिये, ऐसे ही पुष्टिसम्प्रदायकी भी भागवत होनी चहिये. कहीं न कहीं वो वेक्युम् गुसांईजीकु सता रह्यो हतो अथवा गोपालदासजीकु सता रह्यो हतो. वाकी चिंतामें अपन् नहीं पड़ें; या दोनोंन्कु सता रह्यो हतो, वा वेक्युम्कु फिल्अप् करवेके लिये, पुष्टिसम्प्रदायकी भागवत प्रकट करवेके लिये, ये वल्लभाख्यान प्रकट भयो हे. और या वल्लभाख्यानको सारो मॉडेल् भागवतपे हे. शुरुसु लेके आखिर तक **''अत्र सर्गोविसर्गश्च स्थानं पोषणम् ऊतय: मन्वन्तर ईशानुकथा निरोधो मुक्ति: आश्रय:" "आश्रयस्य विशुद्ध्यर्थं नवानाम् इह लक्षणम्."** (भाग.पुरा.२।१०।१-२) ये सारी बातें अपन्कु यामें दिखलाई दे रही हें. इतने डेप्थवाली ये पुष्टिसम्प्रदायकी भागवत हे. भागवतकी मॉडेलिटीकु स्वीकार करके ये ग्रन्थ प्रकट भयो हे. भागवतकी मॉडेलिटीकु पकड़के ये वल्लभाख्यान चल्यो हे. वा मॉडेलिटीकु छोड़के नहीं चल्यो हे. जैसे अपन् वो दूरबीनमें फोकस् करें हें ना! कोई वाईड् चीज़कु फोकस् करके अपन् साफ साफ देखनो चाहें हें. वा तरहसु पुष्टिमार्गके वाईड् एन्गल्में एकदम ये

वल्लभाख्यान फोकस् करके पुष्टिसम्प्रदाय क्या हे वो अपन्कु दिखानो चाह रह्यो हे. यदि वल्लभाख्यानको कोई माहात्म्य हे तो सबसु पहले वा माहात्म्यकु समझवेके लिये अपन्कु तैयार रेहनो चहिये के पुष्टिसम्प्रदायकी ये भागवत हे. निश्चित ये भागवत हे क्योंके भागवतको कोई लक्षण ऐसो नहीं हे जो के वल्लभाख्यानपे घटित नहीं होतो होय. मैंने पच्चीसन् ढंगसु याकु देख्यो हे. जहां जहां देख रह्यो हूँ और जब जब भी याकु देखुं हूँ तब तब मोकु या वल्लभाख्यानमें भागवत, भागवत और भागवत ही दिखलाई दे हे.

मैं हर बख़त परेशान रहतो हतो ये सोचके के क्यों दादाजी याकु इतनो गवाते हते और दादाजीको इतनो यामें भाव हतो. वाके कारण कछु और होंयगे शायद, पर कहीं वाके कारण तो वल्लभाख्यान मोकु नहीं अच्छो लग रह्यो हे ! वाके लिये तो कहीं एप्रिसियेशन् नहीं हे मेरो ! तो मैं कन्फ्युज्ड् रहतो हतो के याकु मैं सोचूं के नहीं सोचूं, सोचूं तो कहूं के नहीं कहूं, दबी जबानसु ही केहवेको प्रयास करतो हतो. कभी मैंने खुलके इतनो केहवेको प्रयास नहीं कियो क्योंके मैं खुद ही कन्फ्युज्ड् हतो. या बातकु केहवेसु याको इम्प्लीकेशन् क्या होयगो पता नहीं. हर चीजको दुरुपयोग होवे हे, भागवतको इतनो दुरुपयोग होवे हे तो कदाचित वल्लभाख्यानको दुरुपयोग पुष्टिसम्प्रदायमें नहीं हो जाय करके ''बन्द कर दासतां शकील अपनी, सुननेवालोंके दिल दहलते हें.'' मोकु लग्यो के याकु इतनो ग्लोरिफाई करनो के नहीं करनो? पर एक बात निश्चित समझो के दुरुपयोग करवेवाले तो भागवतकु ही नहीं छोड़ रहे हें तो वल्लभाख्यानकु क्यों छोड़ेंगे!!

वो उनकी कथा हे. **दैवी–आसुरी बे प्रकटावी प्रभु मन करी विचार. तेमां पहेली नखशिख सुभगा ते प्रभुने मनभावी.** दोनों ही सृष्टि प्रभुने प्रकट करी हें, जब पुष्टिमार्गमें दोनों सृष्टि हें तो पुष्टिसम्प्रदायमें भी दोनों सृष्टि हें. आप लोगन्में प.भ. और बापा बापीन्में, दोनों तरहके प्रकार हें और हम लोगन्में भी पुरुषोत्तमन्के दोनों प्रकार हें; दैवी और आसुरी. अब वामें काहेकु डरनो, ये तो प्रभुकी लीला हे.

लिहाजा जब मैंने व्रजरायजीकु पढ्यो तो वो तो एकदम मशीनगनकी तरह हर कड़ीपे भागवतके वचन छोड़ें हें. मोकु लग्यो के ये खाली अपन् ही नहीं सोच रहे हें पर अपन्सु बोहोत पहले व्रजरायजीने सोचके रखी हे. यद्यपि उनने कही नहीं पर हर कड़ीपे भागवतके वचनन्की ऐसी फायरिंग करें हें के अपन्कु घबराहट हो जाय के इतने सारे वचन!! अब ये उन भागवतके श्लोकन्को गुजरातीमें अनुवाद हे के इन कड़ीन्को वा तरहसु जस्टीफिकेशन् हे! सारी प्रॉब्लेम् वोही हे के ''सारी बीच नारी हे के नारी बीच सारी हे. के सारी हे के नारी हे के नारी हे के सारी हे.'' पता ही नहीं चले के क्या चक्कर हे या वल्लभाख्यानमें ? कोई पंक्ति आई नहीं के ले भागवतको वचन. प्रथम स्कन्धमें ऐसो कह्यो हे, द्वितीय स्कन्धमें ऐसो कह्यो हे, तृतीय स्कन्धमें ऐसो कह्यो हे. कहांसु आ जायें हें इतने वचन पता ही नहीं चले हे ! भागवतको पाठ मैंने भी बरसन्सु कियेा हे पर सचमुचमें इनकी पॅराफ्रेजिंग्में भागवतके श्लोक या तरहसु आयेंगे वो मेरी कल्पनाके बाहरकी बात हती. व्रजरायजीकी टीका एडिट् करी तो पता चल्यो के इतनो आसान नहीं हे. मैं जो

सोच रह्यो हतो वो निर्मूल नहीं हे. बोहोत पहले व्रजरायजीने ऐसो सोच रख्यो हे. यद्यपि व्रजरायजी ऐसे नहीं केह रहे हें के याको सिनोप्टिक् मॉडेल् भागवतको हे. So what? हर कड़ीमें यदि उनके भागवतके चार चार पांच पांच छः-छः, बीस-बीस वचन बोलते होंय तो फर्क क्या पड़्यो? बात तो वोकी वो हो रही के नहीं? मूंड़को नाम कपाल भयो. याकु देखके मोकु हिम्मत आ गई केहवेकी के ये वल्लभाख्यान अपने पुष्टिसम्प्रदायकी भागवत हे.

भागवतसु लेश कछु भी कम नहीं हे पर कन्फ्युज़ मत होओ. वल्लभाख्यान पुष्टिमार्गकी भागवत नहीं हे पर पुष्टिसम्प्रदायकी भागवत हे. पुष्टिमार्गको जो एक पेनोरॅमिक-व्यु हे वामें पुष्टिसम्प्रदायकु फोकस् करके वा पॉइन्ट्कु दिखानो चाह रहे हें के देखो ये क्या हे? ये वल्लभाख्यानकी विशेषता हे. अपन् समझ सकें हें के भागवतकी सारी कथायें यामें कही नहीं गई हें.

(भागवत और वल्लभाख्यान की तुलनात्मक दृष्टि)

गुजरातीके भी कई टीकाकारन्ने या प्रोब्लम्कु टॅकल् करी हे. उनने ऐसे भी टॉपिक् उठाई हे के "भागवत और वल्लभाख्यान". पर भागवत और वल्लभाख्यान की टॉपिक् उठावेमें उनने कम्पेरिज़न् करवेके बजाय कॉन्ट्रास्ट् देखवेकी ज्यादा बात उठाई हे और उन टीकाकारन्सु मैं सहमत नहीं हूँ. सच्ची बात कहूं तो उनको आभार मानूं हूँ के उनने एक आधार सोचवेके लिये प्रोवाईड् कियो. पर मैं या बातसुं सहमत नहीं हूँ के भागवतमें और वल्लभाख्यानमें कॉन्ट्रास्ट् देखनो चहिये.

मैं या मतको हूँ के भागवतको जो एक पूरो बॅकग्राउन्ड् हे वा बॅकग्राउन्ड्में वल्लभाख्यान कैसे फिगर्की तरह उभर रह्यो हे. फिगर् और बॅकग्राउन्ड् को कॉन्ट्रास्ट् देखवेकी बजाय फिगर्के प्लेसमेन्ट्कु देखवेकी अपनी दृष्टि होनी चहिये के या बॅकग्राउन्ड्में या फिगर्को प्लेसमेन्ट् कहां हे ? कॉन्ट्रास्ट् नहीं हो सके हे, ऐसी बात नहीं हे. कॉन्ट्रास्ट् भी हो सके हे और कोम्बिनेशन् भी हो सके हे. ये तो आर्टकी स्टाइल्पे डिपेन्ड् करे के आप कॉन्ट्रास्ट्में फिगर्कु बता रहे हो के कोम्बिनेशन्में फिगर्कु बता रहे हो के फिगर्कु आप as a part of the landscape बता रहे हो ? तीनों तरहकी पेन्टिंग बनाई जा सके हें. पर वामेंसु जो स्वरूप मोकु पसन्द आ रह्यो हे, कमसु कम कॉन्ट्रास्ट्को नहीं पसन्द आके, भागवतकी बॅकग्राउन्ड्में लॅन्डस्केप्में वल्लभाख्यानको फिगर् कैसे उभर रह्यो हे, वो इम्मर्ज् कैसे हो रह्यो हे ! कॉन्ट्रास्ट् देखवेके बजाय वाकु देखवेकी दृष्टि होनी चहिये, वो मेरो अभिप्राय हे. होयगें कॉन्ट्रास्ट्, नहीं होयगें ऐसी बात नहीं हे, उनने जो कॉन्ट्रास्ट् दिखाये हें वो सच्चे भी हो सकें हें और खोटे भी हो सकें हे. मैं यहां कॉन्ट्रास्ट् नहीं देखनो चाहूं. वाकी प्लेसमेन्ट् कहां हे ? कोई भी लॅन्डस्केप्में फिगर्को फोटो पाड़ो तो वाकु कहां प्लेस् कियो हे. वाके प्लेसमेन्ट्सु लॅन्डस्केप्की शोभा बढ़ी के नहीं बढ़ी ? वा लॅन्डस्केप्के कारण वा फिगर्की शोभा बढ़ रही हे के नहीं ? ये दृष्टिकोण आर्ट एप्रिसियेशन्में होनो चहियें. क्योंके लॅन्डस्केप्में कहीं भी कोई भी फिगर् खड़ो कर दियो तो शायद वा फिगर्के खड़े होवेके कारण वा लॅन्डस्केप्की ब्युटी मर भी सके हे. शायद वा लॅन्डस्केप्में वा फिगर्की प्रोपर् प्लेसमेन्ट् नहीं करी.

जैसे आपकु एक साधारण बात बताऊं के एक सिद्धान्त ऐसो होवे हे के लॅन्डस्केप्के लिये कागजमें चार काल्पनिक हिस्सा बनावें. वामें आप जा भी चीजकु नीचेकी लाइन्में दिखा रहे हो, जो हाफ् लाईन् हे, वा लॅन्डस्केप्के कोई भी फिगर्कु वा हाफ् लाईन्की नीचेकी लाईन्में दिखा रहे हो, तो आर्टको सिद्धान्त ये बतावे हे के आप वाकु लॅन्डस्केप्सु छोटो बतानो चाह रहे हो. यदि ऊपर लटका रहे हो तो वाकु इन्सिग्नीफिकेन्ट् बतानो चाह रहे हो. वाको सिग्निफिकेन्स् आप खतम कर रहे हो. तो हर बख़त प्लेसमेन्ट् फिगर्को लॅन्डस्केप्में कहां करनो, वामें इमेजिनेरी दो क्रॉस् धरने कोई भी लॅन्डस्केप्में. एक यों और एक यों. वाके कितने खाना बनेंगे ? अब उन खानान्में कहां वा फिगर्कु प्लेस् करनो, ये आर्टिस्टिक इवेल्युऐशन् करवेके लिये बोहोत ही महत्त्वपूर्ण बात होवे हे. अक्सर लोग समझें नहीं और कहीं भी क्लिक् कर दें फोटोग्राफ. रंग तो आयेगो, लाईट तो आयेगी ब्लॅक् एण्ड् व्हाईट् पर वो प्लेसमेन्ट्के कारण यातो वा फिगर्की शोभा खतम हो जाय या वा फिगर्के कारण लॅन्डस्केप्की शोभा खतम हो जाती होवे हे. जब अपन्कु वो सेन्स् नहीं होवे हे. तो ये भागवतके लॅन्डस्केप्पे वल्लभाख्यानको फिगर् कहां प्लेस् हो रह्यो हे वाकु देखवेकी अपन्कु इनसाईट् डेवलप् करनी चहिये. मैं ऐसे मानके चल रह्यो हूँ कॉन्ट्रास्ट् देखवेके बजाय; जो गुजराती व्याख्याकार यहां कॉन्ट्रास्ट् देख रहे हें के यहां भागवत ऐसे कहे हे और वल्लभाख्यान ऐसे केहे हे. होयगो फर्क कछु न कछु, लॅन्डस्केप् और फिगर्में कछु न कछु फर्क तो होवे ही हे. मेरे हिसाबसु वो इम्मटीरियल् बात हे. जो मटीरियल् इम्पोर्टन्ट और् सिग्निफिकेन्ट बात हे के वाकी

प्लेसमेन्ट् कहां भई हे ? एक ठिकाने एक प्लेसमेन्ट् कर दो तो वा बॅकग्राउन्ड्के कारण वा फिगर्की महत्ता कछु बढ़ जाती होवे हे. फिगर्के कारण बॅकग्राउन्ड्की ब्युटी भी बढ़ जाती होवे हे. वो फिगर् वहां नहीं होय तो बॅकग्राउन्ड् आपकु खाली लगेगो, वेक्युम् लगेगो, उजाड़ लगेगो.

यहां ही आप इमेजिन् करके देख सको हो. ये महाप्रभुजीको चित्र हे यामें देखो, उनने आधी लाईन्के ऊपर आसनको होराईज़न् बनायो हे. यदि वो थोड़ो भी नीचे हो जातो एग्जेक्ट् सेन्टर् लाईन्पे होतो तो या पेन्टिंगके दो टुकड़ा हो गये होते. पेन्टिंग् ही खतम हो गई होती. आर्टको सिद्धान्त ये हे. आर्टके एन्गल्सु आप देखो तो एक बाजू एक फिगर् हे, दूसरे बाजू सात फिगर्स हें. एक फिगर् हे बीचमें गुसांईजीको. ऑफ् बॅलेन्स् हो जाती पेन्टिंग. क्यों ऑफ बॅलेन्स् नहीं भई, क्योंके महाप्रभुजी उनकी तरफ देख रहे हें, वो महाप्रभुजीकी तरफ देख रहे हें. तो आपकी दृष्टि उनकी दृष्टिके हिसाबसु चक्कर मार रही हे. ऑफ बॅलेन्स् नहीं होवे दे रही हे. जैसे वो फटफटी कुआमें चले हे चक्कर मारती रहे, गिरे नहीं हे. चक्कर नहीं मारे तो गिर जाय हे. अपनी दृष्टि पेन्टिंग्में चक्कर मार रही हे. वो या तरफ देख रहे हें और वो उनकी तरफ देख रहे हें, दृष्टि घूमती रहेगी. याके कारण वो ऑफ् बॅलेन्स् नहीं होयगी. नहीं तो क्या हे के एक बाजु एक फिगर् होय, दूसरी बाजु सात फिगर् होंय, तो पेन्टिंग्को बॅलेन्स् ऊंचो नीचो हो जायगो. आर्टिस्ट्की ब्युटी देखो, गुसांईजी कहां देख रहे हें, न यहां न वहां. तो उनकी दृष्टिकु जा बख़त देख रहे हो वा बख़त वहां जाके खड़े होओगे तो गुसांईजी आपकु देख रहे हें. वा आर्टिस्टने आपकी दृष्टि

चुका दी. चक्कर काटके गुसांईजीकी दृष्टि आपके नेत्रमेंसु बाहर आ रही हे. देखो फील् करो. एप्रीसियेशन् फिगर् और बॅकग्राउन्ड् कैसे समझनो वाकी टेक्नीक् मैं आपकु समझानो चाह रह्यो हूँ. वा झाड़कु ऊपरसु लटकतो बतायो हे, वो कोई बादल थोड़े ही हे, पेड़ हे. वो आर्टिस्ट पेड़की थड़ नहीं बता रह्यो हे. इन्सिग्नीफिकेन्स् हे वाकी. इन्सिग्नीफिकेन्स् क्यों हे? क्योंके वा पेड़के नीचे ये सब बिराजे भये हें. वाकी सिग्नीफिकेन्स् हे. पेड़ बॅकग्राउन्ड्में चल्यो गयो हे. इवन् गिरिराजजी छोटेसे बना दिये हें. इतने छोटे और छोटेपनके कारण आपकी आंखकु डेप्थ् कितनी मिल रही हे! अब यदि आंखकु इतनी डेप्थ् मिली तो आपकी आंख वहांकी यात्रा करवे निकल जायगी. लौटके पाछी आयेगी ही नहीं महाप्रभुजी तक. आर्टिस्ट्ने क्या कियो के गिरिराजजीके कॉन्ट्रास्ट्में आसमानकी एक छोटीसी लाईन् दे दी हे. एग्जेक्टली वा ढंगकी के जा तरहके इनके आसन, इनके वस्त्र और यमुनाजी हें. पाछे इन्टीग्रिटी पैदा कर दी हे.

ये सारे सिद्धान्त हें फिगर् और बॅकग्राउन्ड् के, जापे अपन् ध्यान नहीं देवें हें.

जब अपन्कु समझमें नहीं आवें हें. अपन् कॉन्ट्रास्ट् देखवेमें रेह हें. कॉन्ट्रास्ट् नहीं, अपनी आंखकु गाईड् कैसे करनो? कोई भी आर्टिस्ट् हे, नेरेटर् हे तो वो अपने कामकु कैसे गाईड करे हे? आर्टिस्ट् हे तो अपनी आंखकु कैसे गाईड् कर रह्यो वो. वो केह नहीं रह्यो हे के यहां देखो वहां देखो पर प्लेसमेन्ट् ऐसी हे के वाके कारण आपकी आंखकु जब आप या पेन्टिंग्कु देख रहे हो तो आपकी आंखकु वो आर्टिस्ट कन्ट्रोल् कर रह्यो हे. अपन्कु पता

नहीं चले हे. वो जो छोरा पूछ रह्यो हतो के क्या अपन् पपेट हें ? मैं ये पूछनो चाह रह्यो हूँ के अपनी आंख पपेट हे क्या ? अपनी आंख भी अपनी आंख हे. आर्टिस्ट्ने अपनी आंखपे कन्ट्रोल् कर लियो हे वो काहेके कारण, प्लेसमेन्ट्के कारण. अपनी आंख पपेटकी तरह काम कर रही हे. वो आर्टिस्ट जो आपकु जितनी भी सिग्नीफिकेन्स् या इन्सिग्निफिकेन्स् दिखानो चाह रह्यो हे, उतनी ही सिग्नीफिकेन्स् या इन्सिग्निफिकेन्स् सु वो आपकु दिखा रह्यो हे. अब वाने मेनेज् कैसे कियो हे ? वो जो लाईन हे ना, देखो इन सबके मस्तक सेन्टर् लाईन्के ऊपर ले लिये हें. यदि सेन्टर् लाईन्के नीचे लिये गये होते तो अपनी आंख तुमकु केह देती के ये सब इन्सिग्निफिकेन्ट् हें. अब इन सबन्के मस्तक थोड़े थोड़े सेन्टर् लाईन्के ऊपर कर दिये हें तो उनकी इम्पोर्टेन्स् भी दिखा दी हे. Just try to see and feel के कैसे ब्रेक् कियो हे सेन्टर् लाईन्कु और सीधी लाईन ये आसनकी और मैदानकी जो कट रही हे वो सीधी लाईन ज्योमेट्रिकल् पॅटर्न क्रियेट् नहीं करके डिस्टर्बन्स् क्रियेट् कर रही हे ज्योमेट्रिकल् पेटर्नमें. यदि ज्योमेट्रिकल् पेटर्न क्रियेट् हो जातो तो या पेन्टिंग्के दो टुकड़ा हो जाते. एक लोअर्हाफ् और अपरहाफ्. अपनी आंख कहीं न कहीं उलझ ही जाती उन टुकड़ान्में. इन्टिग्रिटी खो जाती पेन्टिंग्की. Just to maintain the integrity of the landscape, आर्टिस्ट्ने कितनी सावधानी बरती हे! सबके मस्तक थोड़े थोड़े ऊंचे रख दिये हें. ये सारी टेक्नीक् हें. लॅन्डस्केप् विसाविस् फिगर्कु कैसे हेन्डल् करनो, कैसे प्लेसमेन्ट् करनो, वाकी ये सब टेक्नीक् हें.

ये खाली पेन्टिंग्में ही हे, ऐसी बात नहीं हे. नेरेशन्में भी

वोही टेक्नीक् हे और वो टेक्नीक् गोपालदासजीने वापरी हे के भागवतके या बॅकग्राउन्ड्पे या पुष्टिसम्प्रदायकी भागवतकु कहां प्लेस् करनो और कैसे प्लेस् करनो ? एब्सोल्युटली कॉन्फिडेन्स्के साथ उनने याकु टेकल् कियो हे. जैसे मैंने या पेन्टिंगकी एक ऐस्थेटिक् एनेलिसिस् बताई जासु आपकु समझमें आवे के कोई भी फिगर् और बॅकग्राउन्ड्कु कैसे इवेल्युऐट् करनो, ये एक टेक्नीक् होवे हे. वा टेक्नीक्के हिसाबसु आप काल्पनिक लाईन् खेंचके देखोगे तो हर लाईन्कु आर्टिस्ट्ने या तरहसु मेन्युपुलेट् कियो हे के अपन् समझ सकें. वाने एस्थेटिक्की ग्रामर्कु अच्छी तरहसु निभायो हे. जैसे ये एस्थेटिक्की ग्रामर् हे, वैसे वो टॅक्स्ट्को ग्रामर् हे, वाकु गोपालदासजीने निभायो हे. कथा दूसरी हे. भागवतकी कथा बॅकग्राउन्ड्में हे और वल्लभाख्यानकी कथा फिगर् बनके आ रही हे. पर भागवतकी कथा बॅकग्राउन्ड्में और वल्लभाख्यानकी कथा फिगर्में, वाकु मॅन्युपुलेट् कर रहे हें वा ढंगसु के जासुं दोनोंन्को कॉम्प्लीमेन्ट्री नेचर् समझमें आवे. अब मैं गुसांईजीकी प्रसंशा करूं के गोपालदासजीकी करूं फिर कन्फ्युज्ड् हूँ पर जाकी भी होय पर simply hats off. याको कोई शब्द नहीं हो सके हे के कैसे उनने याकु मॅनेज् कियो हे. वो जैसे मॅनेज् कियो हे वाकु मैं शेयर् करनो चाह रह्यो हूँ आप लोगन्के साथ.

(तुलनाको प्रथम बिन्दु नौमों आख्यान आश्रयको, एकसु आठ आख्यान लीलान्को)

सबसु पहले सर्ग विसर्ग स्थान पोषण ऊति मन्वन्तर ईशानुकथा निरोध मुक्ति और आश्रय. भागवत क्या केह हे **''दशमस्य**

विशुद्ध्यर्थं नवानामिह लक्षणम्. वर्णयन्ति महात्मानः श्रुतेन अर्थेन चाञ्जसा.'' (भाग.पुरा.२।१०।२) आश्रय तत्त्वकु समझावेके लिये मैं तुमकु भगवानकी नौ कथायें सुनानो चाह रह्यो हूँ जासु तुमकु आश्रय क्या हे वाको क्लीयर्-कट कन्सेप्ट् माइन्ड्में आवे. गोपालदासजी क्या कर रहे हें ? सात बालक, एक गुसांईजी, एक गोपीनाथजी, ये नवाख्यान हे. महाप्रभुजी आश्रय हें. वो महाप्रभुजीको स्वरूप समझावेके लिये; कथा देखो महाप्रभुजीकी नहीं कही हे. भागवतको मॉडेल् समझो. आश्रयकी कथा द्वादशस्कन्धमें बिल्कुल छोटी कथा हे और कृष्णकी कथा नब्बे अध्यायन्की हे. ऑफ् बॅलेन्स हो रह्यो हे. एग्जेक्टली याही ढंगसु ऑफ बॅलेन्स् हो रह्यो हे. वाकु बॅलेन्स् कियो हे. ये सारी कथायें सर्ग विसर्ग स्थान पोषण ऊति मन्वन्तर ईशानुकथा निरोध मुक्ति की कथा समझ जाओ तो आश्रय तुमकु अपने आप समझमें आ जायगो. आश्रयकु केहवेकी फिर ज्यादा जरूरत नहीं हे. और इतनी सब कथायें केहवेके बाद भी आश्रय समझमें नहीं आयो तो ''सीतानु हरण थयुं तो पाछी स्त्री थई के नहीं थई ?'' वो प्रोब्लम् बाकी रेह जायगी तो वा रामायणको कभी कोई सॉल्युशन् आनो ही नहीं हे. जो नहीं समझे वो तो नहीं ही समझेगो. ये वाकी प्रोब्लम् हे. वाको तो कोई उपाय ही नहीं हे पर जो समझ जायगो वाकु आश्रय समझमें आयगो. अब अपन्कु लगेगो के आश्रयकी लीला हे के कृष्णकी लीला हे ? अरे भई भागवतने शुरुआतमें ही खुलासो कर दियो हे **''वदन्ति तत् तत्त्वविदः तत्त्वं यज्ज्ञानम् अद्वयं ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्द्यते''** (भाग.पुरा.१।२।११) उपनिषद् जाकु ब्रह्म केह रह्यो हे, गीता जाकु

परमात्मा केह रही हे, वाकु मैं भगवान् केहके कृष्णके रूपमें यहां नॅरेट् कर रह्यो हूँ. आश्रयकु समझ जाओगे तो समझ नहीं सकोगे. **निर्गुणनो निर्देश अटपटो रसना शी पेरे कहिये. रूपवर्णवपु दृष्ट पदारथ एको त्यां नव लहिये. तेह थकी पुरुषोत्तम अळगा लीला अचल विहारी. सात दिवस गिरिवर कर धार्‌यो, वासववृष्टि निवारी.** देखो बॅकग्राउन्ड् और फिगर् को रोल् आयो समझमें ? जैसे प्लेसमेन्ट् कर रहे हें वो. ऐसे आश्रयकु समझावेके लिये महाप्रभुजीकी लीलाकी ज्यादा जरूरत नहीं हे. गुसांईजीकी लीलाकी ज्यादा जरूरत हे. नवाख्यानमें गोपालदासजी केहनो चाह रहे हें के एक महाप्रभुजीके व्यक्तित्वके ये नौ फॅसेट्स् हें. जामें दो फॅसेट्स् गोपीनाथजी और गुसांईजी के हें और सात फॅसेट्स् सातों बालकन्के हें. उनने बिल्कुल वो ही मॉडेल् स्वीकार्‌यो हे के **''दशमस्य विशुद्धयर्थं नवानामिह लक्षणम्''** जैसे वहां द्वादश स्कन्धकु छोटेमें पटा दियो हे, ऐसे यहां भी नौमों आख्यान एकदम छोटेमें पटा दियो हे. लीलान्को विस्तार बड़ो कर दियो हे. आश्रय बॅकग्राउन्ड्में चल्यो गयो और फिगर् फोरग्राउन्ड्में आ रह्यो हे. ब्युटी वाकी देखो. भागवतमें भी 'आश्रय' बॅकग्राउन्ड्में गयो हे. यहां भी आश्रय बॅकग्राउन्ड्में चल्यो गयो. भागवतने जा पॉलिसी नेरेशन्की स्वीकारी हे, वा पॉलिसीकु पकड़के चल रहे हें गोपालदासजी वल्लभाख्यानमें.

यदि अपन्कु कॉन्ट्रास्ट् देखनो होय तो यों दीखेगो के भागवतमें तो बारह स्कन्ध हें. यहां तो नवाख्यान हें. अरे ! गोपालदासजी अपनेसु डेढ़गुने चतुर हें. अपन् ये शंका करें तो वासु

डेढ़गुनी चतुराई करके उनने कैसे प्लेसमेन्ट् कर दी हे! ध्यानसु देखोगे तो आपकु समझमें आयगो. देखो मैं थोड़ी थोड़ी बातें आपकु दिखाऊं जासु अपनी देखवेकी दृष्टि खिले के भागवतकु कैसे देखनो ?

सबसु पहले गोपालदासजी केह रहे हें के **वंदू श्रीविट्ठलवर सुंदर नवघनश्याम तमाल. जगतीतल उद्धार करेवा प्रगट्या परम दयाल.** ये फोकस् कर दियो हे. मैं कौनकी लीला केहनो चाह रह्यो हूँ, लीला कौनकी केह रह्यो हूँ? फोकस् कर दियो हे एकदम. महाप्रभुजीकी नहीं! आश्रय होवेके कारण महाप्रभुजी बॅकग्राउन्ड्में गये हें. नाम वल्लभाख्यान हे. फोकस् कैसे कर रहे हें देखो. नाम विट्ठलाख्यान नहीं हे. अपन् कैसे बेवकूफ़ हें के अपन् सोच रहे हें के गुसांईजीको मङ्गलाचरण हे तो या ग्रन्थको नाम तो विट्ठलाख्यान होनो चहिये. नाम यदि वल्लभाख्यान हे तो महाप्रभुजीको मङ्गलाचरण क्यों नहीं हे!

अरे भई! ये बॅकग्राउन्ड् और फिगर् की बात हे के नहीं? कौनकु बॅकग्राउन्ड्में दिखानो हे, कौनकु फिगर्में बैठानो हे, वा फिगर्कु कहां प्लेस् करनो हे के जासु बॅकग्राउन्ड्की भी शोभा बढ़ जाय और फिगर् भी एकदम ग्लोरिफाईड् दीखे. वा तरहकी प्लेसमेन्ट्में वल्लभाख्यानकु **वंदू श्रीविट्ठलवर सुन्दर नवघनश्याम तमाल. जगतीतल उद्धार करेवा प्रकट्या परम दयाल.** फोकस् कर दियो. आयो ख्यालमें! तुम्हारी आंखकु, तुम्हारे कानकु, तुम्हारी बुद्धिकु वो डिक्टेट् कर रहे हें के ऐसे सोचो. जैसे ये पेन्टर् सोचे हे, बिल्कुल वाही मॉडेल्में. कहीं विट्ठलपंथ खोटो न चल जाय,

ये मोड़ा–मोड़ियें जैसे वल्लभपंथ चलावें हें, गिरिराजपंथ चलावें हें, यमुनापंथ चलावें हें, बापापंथ चलावे हें, बापीपंथ चलावें हें, ऐसे विट्ठलपंथ भी न चल जाय, तो पहलेसु खुलासा कर दियो **श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीड़ा लीला द्विजतनुधारी. सात दिवस गिरिवर कर धार्‌यो वासववृष्टि निवारी.** धूम–धड़ाका कर दियो. गोपालदासजी भोले नहीं हें, भाषा भोली हे याकी. याको जो टॅक्स्ट् हे वो भोलो नहीं हे. वो तो बोहोत चतुराई भर्‌यो भयो टॅक्स्ट् हे. हर बख़त गोपालदासजीकी बोहोत ही सावधानी हे. अब मैं नहीं जानूं के गोपालदासजीकी हे के गुसांईजीकी हे. कहीं कोई मिसइन्टर्‌प्रिटेशन् न हो जाय वाकी अटमोस्ट् केयर् लेके चल रहे हें के **श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीड़ा.**

'स्वतन्त्र'को मतलब कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं सर्वसमर्थ हे. पुरुषोत्तमकु तुम कैसे रोक सकोगे के वो विट्ठलरूप धारण नहीं करे? जो पुरुषोत्तम टेबल् बन्यो हे, जो पुरुषोत्तम जमीन बन्यो हे, जो पुरुषोत्तम आसमान बन्यो हे, सूरज बन्यो हे, चांद बन्यो हे, धूप बन्यो हे, धूल बन्यो हे, झाड़ू बन्यो हे, सब कछु बन्यो हे; वाकु तुम ऐसे रोक सको के तुम गुसांईजी नहीं बन सको! धूमधड़ाका करके जस्टिफाई कर दियो हे एकदम. **श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीड़ा** ज्यादासु ज्यादा तुम पूछोगे के गुसांईजीकु तुम क्यों 'कृष्ण' केह रहे हो? वो कहेगो के **स्वतन्त्रक्रीड़ा.** जस्टिफिकेशन् देखो कैसे कर रहे हें!! फोकस् कैसे कर रहे हें! **श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीड़ा लीला द्विजतनु धारी.** उनने अपनी लीला करवेके लिये द्विजतनु धारण कर लियो तो वामें तुमकु क्या तकलीफ हे? कैसे ढंगसु फोकस् कर

रहे हें, उनकी टॅक्निक् देखो ध्यानसु. **लीला द्विजतनु धारी. सात दिवस गिरिवर कर धार्‌यो, वासववृष्टि निवारी.** गिरिराज धारण कियो, लौकिक बाधा दूर करी, इन्द्रकी दैविक बाधा दूर करी. ऐसे अपनी दैविक लौकिक सारी बाधा दूर करवेके लिये भगवान्‌ने एक बार फिर प्रकट होनो चाह्यो हे और वो गुसांईजीके रूपमें प्रकटे हें, अब बोलो क्या केहनो हे? याकु कैसे ढंगसु मेन्युपुलेट् कर रहे हें के वल्लभाख्यानकी तो बात चल रही हे और वामें मङ्गलाचरण गुसांईजीको आ रह्यो हे. गुसांईजीके मङ्गलाचरणसु पहले महाप्रभुजीकु इन्ट्रोड्युस् करनो हे, अन्यथा गुसांईजीकु कैसे इन्ट्रोड्युस् करेंगे? वाके लिये नवाख्यानको मतलब हे नवको आख्यान और आख्यात कौन हे? वल्लभ. नवको आख्यान माने दो भाई और सात बालक. उन सात बालकन्‌के नवको आख्यान और एक वल्लभको निरूपण; यासु वल्लभाख्यान. लीलामें वो नहीं आयगो. वो चल्यो गयो आश्रयके रोल्‌में. लीलामें ये आयेंगे.

(तुलनाको द्वितीय बिन्दु : साधनलीला)

अब अपन् केह रहे हें के भागवतमें तो बारह स्कन्ध हें और बारह स्कन्धमें सर्ग विसर्ग स्थान पोषण ऊति मन्वन्तर ईशानुकथा निरोध मुक्ति ये नव लीलायें हें. यदि भागवतकी मॉडेलीटी हे तो दो स्कन्ध कहां गायब हो गये? याके लिये गोपालदासजीकु कन्सल्ट् करो. **ते प्रगट्यानुं कारण कहिये जो सुरता मन आणो. करो कृपा हूँ करूं विनंती पोतानो करि जाणो.** प्रथम और द्वितीय स्कन्ध को सारो सार यामें भर दियो हे. द्वितीय स्कन्धमें क्या हतो? "हृत्प्रसाद मनन और अमात्सर्य." **ते प्रगट्यानुं कारण कहिये,** ये हृत्प्रसाद्. कोई पैदा

होवे जैसे ''सुनोरी आज नवल बधायो हे'', हृत्प्रसाद हो गयो के गुसांईजी महाप्रभुजी प्रकट होयगें वाको हृत्प्रसाद हे. **जो सुरता मन आणो.** यहां मनन आ गयो. अब जिन बिचारेन्कु गुजराती नहीं आवे हे उनने यामें श्रोता कर दियो हे. निन्यान्वे प्रतिशत चान्स् ये लगे हे के गोपालदासजीने 'श्रोता' नहीं लिखके 'सुरता' ही लिख्यो होयगो. गुजरातीमें सुरता शब्द सुरत शब्दसु बने हे. 'सुरत'को मतलब होवे हे स्मृति. कई लोग यों समझ रहे हें के श्रोताको अपभ्रंश सुरता हे. कई टीकाकार ''सुरता मन आणो'' माने दैवीभाव मेरेमें लाओ. ऐसे अर्थ कर रहे हें. वो सब अच्छी बात हे. व्याख्याके रूपमें अच्छी बात हे. पर 'सुरता' ये स्मृतिके बारेमें प्रयोग कियो जातो मध्यकालीन शब्द हे. तो जो सुरता हे, स्मृति मेरे मनमें लाओ. क्योंके जब कोई जातको कारण केहनो हे तो वाको अपने भीतर रीकलेक्शन् होनो चहिये. द्वितीय स्कन्धमें वो विषय हे के मनन करो वाको पहले. जब तुमकु भागवतकथा कहनी हे तो भगवल्लीलाको मनन करो. ''**तस्माद् भारत सर्वात्मा भगवान् हरिरीश्वरः श्रोतव्यः कीर्तितव्यश्च स्मर्तव्यः च इच्छता अभयम्.**'' (भाग.पुरा.२।१।५) वाको स्मरण करो, वाको मनन करो. ''**आत्मावारे श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः**'' (बृह.उप.२।४।५) वा उपनिषद्के मॉडेल्कु पकड़के भागवत चली हे. करके **जो सुरता मन आणो, करो कृपा,** ये मेरे अहंकारसु नहीं केह रह्यो हूँ.

हमारे इन्दौरवाले गोकुलोत्सवजी कहें हें के बोहोत सारी विद्यायें गुरुमारविद्यायें होवे हें. विद्यार्थीकु पढ़ाई नहीं के सबसु पहले गुरुकु ही शूट करवेकी सोचे हे. या लिये संगीत सबन्कु नहीं

सिखानो चहिये. क्योंके सिखायो तो वो सबसु पहले गुरुकु ही शूट् करे हे. ऐसे ही मात्सर्यकी विद्यायें हें. वो सीख जायें गुरुसु और फिर गुरुकु ही सबसु पहले सेबोटेज् करें. पर ये गुरुमारविद्या नहीं हे. ये उनकी कोइन्ड् करी भई टर्म हे, मेरी करी भई टर्म नहीं हे 'गुरुमारविद्या'. वो केह रहे हें के **करो कृपा हुं करूं विनंती पोतानो करी जाणो.** मेरेमें या बातको मात्सर्य नहीं हे के या ज्ञानकु लेके अन्तमें तुम्हारेपे ही अटॅक् करूं. तुम्हारी कृपा होय तो मैं कर सकूं हूँ. तो वो जो हृत्प्रसाद मनन और अमात्सर्य; द्वितीय स्कन्धको विषय यामें आ गयो.

(तुलनाको तृतीय बिन्दु : आश्रय, ''व्यापकरूप...एको नव लहीए'')

अब देखो यहांसु सर्ग शुरु हो रह्यो हे; **व्यापकरूप अद्वैत ब्रह्म जे 'तेजोमय' कहेवाय** आश्रयके बारेमें स्पष्ट भागवतमें ये बात समझाई गई हे के **''शब्दो न यत्र पुरुकारकवान् क्रियार्थो माया परैति अभिमुखे च विलज्जमाना''** (भाग.पुरा.२।७।४७) **''संसुप्तवत् शून्यवद् अप्रतर्क्यं तद् मूलभूतं पद्म आमनन्ति."** (भाग.पुरा.१२।४।२१) जो मूलभूत प्राईम् स्टफ् हे, वाके बारेमें अपन् कछु केह नहीं सकें हें. कछु बोल नहीं सकें हें. कछु सोच नहीं सकें हें. क्योंके वहां अद्वैत इतनो ज्यादा इन्टेन्सिफाईड् हे. द्वैतके बगैर तो बोल्यो ही नहीं जा सकेगो. क्योंके बोलवेके लिये, सब्जेक्ट् और प्रेडिकेट्के लिये द्वैत तो क्रियेट् करनो ही पड़ेगो. काहेके बारेमें तुम क्या बोल रहे हो ? जैसे Man is a rational animal. यामें कितनी ड्युएलिटी पैदा भई. एक तो 'मॅन्' अलग फिनोमिना हे. 'रेशनेलिटी' एक अलग

फिनोमिना हे. 'एनिमलिटी' एक तीसरो फिनोमिना हे. तीन फिनोमिना नहीं होंय, तो एक वाक्य पूरी तरहसु तुम केह नहीं सको के Man is a rational animal. तीन चीज तो प्रिसपोज़ करोगे के कछु एक रेशनेलिटी हे, कछु एक एनिमेलिटी हे और कछु एक ह्युमेनिटी हे. उन तीनों कन्सेप्टन्कुं क्लब् करके तुम Man is a rational animal. ये सिच्युऐशन् ब्रह्ममें क्यों नहीं पैदा होवे हे? क्योंके ब्रह्ममें या तरीकेकी कोई मल्टीप्लिसिट्टी हे ही नहीं. **''संसुप्तवत् शून्यवद् अप्रतर्क्यं तन्मूलभूतं पदम आमनन्ति."** (वहीं) गोपालदासजी आश्रयकु रेफर् कर रहे हें. **व्यापक रूप अद्वैत ब्रह्म जे 'तेजोमय' कहेवाय.** फिर अपनकु प्रश्न उठेगो के वाकी कथा फिर यहांसु कहां आ गई बीचमें? **आर्यपंथ अधिकारी मुनिजन ते मांहे लय थाय.** हमकु आश्रयमें नहीं चहिये. हमकु क्या चहिये हे **अक्षर आदि अखंड अनुपम उपमा कही नव जाय. अस्ति–अस्ति सउ को मळि बोले निगम नेति नेति गाय** ज्यादासु ज्यादा तुम वाके बारेमें कितनो केह सको हो? उपनिषद् बोहोत अच्छी एक बात केह हे **''असन्नेव स भवति. 'असद्ब्रह्म इति वेद चेत्'. अस्ति ब्रह्म इति चेद्वेद. सन्तम् एनं ततो विदुरिति."** (तैत्ति.उप.२।१) जब तुम ब्रह्मकी टोटेलिटीकु नकार रहे हो तो तुम अपनी टोटेलिटीकु नकार रहे हो. क्योंके तुम टोटेलिटीके ही तो पार्ट हो. ब्रह्मको मतलब क्या हे? टोटेलिटी. जब तुम टोटेलिटीकु नकार रहे हो, तो तुम खुदकु नकार रहे हो. **''असन्नेव स भवति. 'असद्ब्रह्म' इति वेद चेत्. अस्ति ब्रह्म इति चेद्वेद.''** यदि तुम ऐसे कबूल कर रहे हो के हे **अस्ति वस्तु सहु को मळी बोले** तो फिर तुमकु बतानो पड़ेगो के हे क्या? बतायो नहीं जा सके हे. क्योंके जो कछु हे सो वोही हे.

नाम भी वोही हे, रूप भी वोही हे, कर्म भी वोही हे. देव भी वो हे. असुर भी वो हे. काल कर्म स्वभाव प्रकृति पुरुष सब कछु वो हे. जब सब कछु वो हे तो वामें द्वैत आयेगो कैसे ? वाकु बोलोगे कैसे ? महाप्रभुजीने ये बात पत्रावलंबनमें समझाई हे. वाही बातकु गोपालदासजी केह रहे हें जो के रूपाल गांवके हें. आज भी रूपाल गांवमें जाके देखके आओ तो कोई ऐसी इतनी गम्भीर बात नहीं करेगो. **अस्ति वस्तु सहु को मळी बोले निगम नेति नेति गाय.** निगम वाको इतने लम्बे विवरणसु वर्णित करवेके बाद भी पूरी तरहसु वर्णित नहीं कर सके हे तो तुम कैसे एक्स्पेक्ट् कर सकोगे के अपन् वाकु अपनी वाणीसु बोल सकेंगे! ज्यादासु ज्यादा अपन् क्या केह सकेंगे के 'हे'. इतनो तो अपन् कान पकड़के मानेंगे. टोटेलिटी तो होनी चहिये, अन्यथा अपन् कहांसु होंयगे ? वाके अलावा अपन् कछु केह नहीं सकें हें. **''रूपवर्णवपु दृष्ट पदारथ एको त्यां नव लहिये."** ये पूरो आश्रयको वर्णन हे.

(तुलनाको चतुर्थ बिन्दु : सर्गलीला उपपत्तिपक्ष और उत्पत्तिपक्ष)

महाप्रभुजीने सर्गलीलामें या बातकु स्पष्ट कियो हे के सृष्टि कैसे पैदा भई. वाके दो मॉडेल् हें. एक उपपत्तिपक्षको मॉडेल् हे और एक उत्पत्तिपक्षको मॉडेल् हे. उत्पत्तिपक्षको मॉडेल् क्या ? जैसे एक बात ध्यानसु समझो के अपन्के सामने कोई सोनाकी ईयरिंग या रिंग् या सोनाकी चेन् कोईने अपन्कु हाथमें दे दी. अब अपन्कु पता नहीं चले के यामें कारण क्या हे और कार्य क्या हे ? ये तो अपने यहां अवेलेबल् दृष्टान्त हे और अपन्कु पता हे के सोना पहलेसु हे और सोनी वाकु गढ़े हे, वासु अपन्कु पता हे. अब

समझो के कोई ऐसी चीज के जाकु अपन्ने गढ़ते नहीं देख्यो होय, अचानक अपन्कु कोई ऐसी चीज अपनी फॉर्मके साथ हाथमें आवे, तो पता कैसे चले के फॉर्मके कारण वो वस्तु गढ़ी गई हे के वस्तुके कारण वो फॉर्म पैदा भयो हे ?

(उपपत्तिपक्ष)

जैसे बीबा मिलें हें, तो बीबा छापके अपन् रुपया गढें के रुपयाके कारण बीबा घढ़्यो जाय ? तो वहां मॅटल् तो बादमें आवे, वो जो छाप बीबामें बना रखी हे, वो निकल्पे डाल दोगे तो निकल्पे आ जायगो, स्टील्पे डालोगे तो स्टील्पे आ जायगो, चांदीपे डालोगे तो चांदीपे आ जायगो, सोनापे डालोगे तो सोनापे आ जायगो. क्योंके बीबा पहलेसु अवेलेबल् हे. ठप्पा लगानो हे. तो फॉर्म पहले हे और सब्स्टेन्स् बादमें हे.

(उत्पत्तिपक्ष)

कोई ठिकाने क्या हे के सब्स्टेन्स् पहले होवे, फॉर्म बादमें होवे. जैसे मूर्ति. मूर्तिमें क्या हे ? आज तक अपन्ने ऐसी कोई टेक्नोलोजी नहीं खोजी हे के पत्थरकु बीबामें फंसाओ और मूर्ति बनके निकल जाय. वा मूर्तिकु तो तराशनी पड़े. वहां पत्थर पहले हे, सब्स्टेन्स् पहले हे और फॉर्म बादमें आवे हे.

प्रोडक्शन्के दो मॉडेल् हें. इन दो मॉडेल्मेंसु प्रोब्लम् फिलोसफीके सामने ये हे के जगत् कौनसे मॉडेल्सु पैदा भयो ? फॉर्म पहले हतो के सब्स्टेन्स् पहले हतो ? महाप्रभुजीने कही के दोनों साईक्लिकली सच्चे मॉडेल् हें. पार्शियली दोनों मॉडेल् सच्चे हें

पर टोटली दोनों मॉडेल् खोटे हें. याके लिये महाप्रभुजी प्रपोज़ कर रहे हें के एक उत्पत्तिपक्ष भी हे और एक उपपत्तिपक्ष भी हे. माने एक ऐसो पक्ष हे के जामें सब्स्टेन्स् पहले हे और फॉर्म बादमें आयो हे. एक ऐसो पक्ष हे के जामें फॉर्म पहलेसु हे, सब्स्टेन्स् वाकु सप्लाई कर दियो जाय. जो सब्स्टेन्स् आवे वाकु वो निकालके दे दे. आपके कम्प्युटर्में दोनों तरहके प्रोग्राम होवें हें.

जैसे तुम लोग कर रहे हो तो तुमकु या बातको पता होनो चहिये के मनीषने फाईल्को एक फॉरमेट् बना रख्यो हे. जो मॅटर् आई वाकु वा फॉर्ममें डाल दी तो वो फाईल् वा फॉरमेट्में आ जाय. तो फॉर्म पहलेसु हे. सब्स्टेन्स् अपन् बादमें सप्लाई कर रहे हें. फॉरमेट् अपन्ने फाईल्को बनाके रख्यो हे, या फॉरमेट्में फाईल् आयगी. जा भी सब्स्टेन्स्कु डालनो होय तो कम्प्युटर् वा सब्स्टेन्स्कु वा फॉरमेट्में करके बाहर काढ़ दे. फॉरमेट् पहले और सब्स्टेन्स् बादमें आ रह्यो हे. कोई ठिकाने बाईट्स् पहले आयेंगी, फॉरमेट् पीछेसु सप्लाई कियो जायगो. अब यदि कम्प्युटर् दोनों तरहसु काम करतो होय, तो ब्रह्म क्यों नहीं दोनों तरहसु काम कर सके ?

(उत्पत्तिपक्ष–''अक्षर आदि...एको त्यां नव लहिये'')

अपन् कहें के नहीं, खाली एक बात बताओ के उत्पत्ति हे के उपपत्ति हे ? महाप्रभुजी कहें हें के दोनों हें **'विरुद्ध धर्माश्रयत्वात्'**. अब देखो इतनी कॉम्प्लीकेटेड् बात रूपाल गाँवको गोपालदासजी केह रह्यो हे. **''तेह थकी पुरुषोत्तम अळगा लीला अचल विहार.''** फॉरमेट् पहलेसु ही हे. **''अक्षर आदि अखण्ड अनुपम 'तेजोमय'**

कहेवाय. निर्गुणनो निर्देश अटपटो रसना शी पेरे कहिये. रूपवर्णवपु दृष्ट पदारथ एको त्यां नव लहिये.(उत्पत्तिपक्ष)" यहां फॉरमेट् हे ही नहीं. वहां फॉरमेट् नहीं हे तो पुरुषोत्तम कहां हे ?

(उपपत्तिपक्ष ''ते थकी पुरुषोत्तम...केवळ भक्त न थाय'')

''**तद्धाम परमं मम.**" (भग.गीता.८।२१,१५।६) जो अक्षर हे वाहीमें तो ये पुरुषोत्तम सब फॉरमेटस्के साथ रेह रह्यो हे.(उपपत्तिपक्ष) और ये अक्षर विदाउट् फॉरमेट् हे. (उत्पत्तिपक्ष) Supply the substance, it will be formatted accordingly. यहां सब्स्टेन्स् पहले हे, विथ् फोरमेट् हे, फॉर्म पहले क्यों हें? ''**ते थकी पुरुषोत्तम अळगा लीला अचल विहार. ब्रह्मज्ञानी ने मुक्तिमारगी स्वप्ने नहीं व्यवहार.**" जाकु पहले सब्स्टेन्स्को ज्यादा लोभ हे, वाकु पहले फॉरमेट् समझमें नहीं आयगो.

अपन्कु भी ऐसो अहंकार हो जाय के हम हमारी फाईल्को फॉरमेट् करेंगे. मनीषको फॉरमेट् हम क्यों फॉलो करें ? मनीष कौन होवे हे फॉरमेट् बनावेवालो ? ठीक हे तो तुम करो. अपनो सब्स्टेन्स् डालके वाकु फॉरमेट् करो. अपन्कु ऐसो अहंकार होवे ही नहीं के मनीषने फॉरमेट् कियो तो हे ना, तो अपन्कु काहेकु खोटी खटपटमें पड़नो ? अपन्कु काहेकी माथाफोड़ीमें पड़नो. वाके फॉरमेट्में सिर्फ अपनो सब्स्टेन्स् डालते जावेको, जैसे बीबामें ढलके निकल आवे. बात समझमें आई ? प्रोडक्शन्में दोनों तरीकेकी प्रोसीजर् हें. Supply the bytes within the format, the bytes will be formulated according to the format. Plan your format.; काहेकु दूसरेको 'फॉरमेट् फॉलो करनो ? वो भी हो सके हे.

कम्प्युटर् क्या कर रह्यो हे ? वो तो दोनों तरहसु ओपन् हे. ऐसे ब्रह्म भी दोनों तरहसु ओपन् हे के सब्स्टेन्स्सु पैदा करनो हे तो सब्स्टेन्स्सु पैदा करो(उत्पत्तिपक्ष). फॉरमेट्सु पैदा करनो हे तो फॉरमेट्सु पैदा करो(उपपत्तिपक्ष).

महाप्रभुजी केह रहे हें के उत्पत्तिपक्ष हे और उपपत्तिपक्ष भी हे. वाकु गोपालदासजी केह रहे हें के **ते थकी पुरुषोत्तम अळगा लीला अचल विहार**. सारी लीलायें वहां कैसी हें ? वो फॉरमेट् बता रहे हें. क्यों फॉरमेट् बता रहे हें, क्योंके उनकु ये बात समझानी हे के या फॉरमेट्मेंसु एक दूसरो फॉरमेट् पैदा हो रह्यो हे, सबफॉरमेट. वो फॉरमेट् सृष्टिको हे. वा सृष्टिके फॉरमेट्में जैसे सृष्टि पैदा भई हे, Within that सृष्टि महाप्रभुजी आज्ञा करें हें के वा फॉरमेटके अन्तर्गत एक कोई प्रवाहसृष्टि पैदा भई हे; एक कोई मर्यादासृष्टि पैदा भई हे; एक कोई पुष्टिसृष्टि पैदा भई हे. अब उनकु फोकस् करके पुष्टिसृष्टिपे लानो हे. बाकी सबन्कु बॅकग्राउन्ड्में डाल देनो हे. भागवतमें वो सब चीज मिलेगी. इनकु फोकस् करके पुष्टिसृष्टि कैसे पैदा भई, वाके लिये भागवतकी लीलामें उतनो ही फोकस् करनो हे. वहां भागवतमें आपकु प्रवाह भी मिलेगो, मर्यादा भी मिलेगी. यहां जो कोई भी दैत्य दानव पैदा भये, वाकी हिन्ट हे **कर्मजड आसुर अन्यउपासक भजनधर्मथी हीन** ये आसुरीजीव, वो खाली हिन्ट् दी हे, नेरेशन् वाको नहीं कियो क्योंके फोकस् यहां पुष्टिसृष्टि कैसे पैदा भई वापे करनो हे, वा बॅकग्राउन्ड्में. वाके लिये सर्गलीलाके अन्तर्गत सृष्टिको सारो सर्ग नहीं बतानो हे सृष्टिको; खाली पुष्टिको सर्ग बतानो हे. **''पुष्टिं कायेन निश्चयः''**

(पु.प्र.म.९) अब कायासु पुष्टिसृष्टि कैसे पैदा भई? कायासु यदि पुष्टिसृष्टि पैदा भई तो **निर्गुणनो निर्देश अटपटो**सु कैसे बतायेंगे? फॉरमेट्सु बतानो पड़ेगो, याके लिये फॉरमेट् इन्ट्रोड्युस् कर रहे हें. सर्गलीलामें वो फोकस् कर रहे हें. जो भागवतकी सर्गलीला हे, वाकु उनने इन दो कड़ीन्में, उन दो स्कन्धकु छोटेमें पटा दिये.

वाके बाद प्रथम कड़वासु उनने सर्गलीलाकु टॅकल् करनो शुरु कियो हे. और सर्गलीलाकु टॅकल् करवेके लिये शुरुमें उत्पत्तिपक्ष पहले बता दियो जो महाप्रभुजीकु स्वीकार्य हे. तुम उपपत्तिके भरोसे ऐसो मत समझियो के उत्पत्तिपक्ष होवे नहीं हे. उत्पत्तिपक्ष भी होवे हे. तुम अपनी उत्पत्तिपक्षकु क्रियेट् कर सको हो. महाप्रभुजी केह हें के जितने प्रकार हें **''अतएव श्रुतौ भेदाः सृष्टेः उक्ताः हि अनेकधा''** (त.दी.नि.१।४०) जो मैं बता रह्यो हूँ वैसे तो वाके पास अनेक फॉरमेट् हें. माने कम्प्युटर्की फाईल्, जामें डॉस् कमान्ड् जावे हे, ऑटोएक्स्में तो तुम कई तरहके फॉरमेट्स् पैदा कर सको हो. जैसे तुम्हारो एक फॉरमेट् हे वैसे दूसरे दस भी तो पैदा हो सकें हें. ऐसे वहां उत्पत्तिकी कई सम्भावनायें हें. उनमेंसु एक उत्पत्ति हम बता रहे हें. वामें हमकु बोहोत ज्यादा डिटेल्में जानो नहीं हे. हमकु कहां फोकस् करनो हे? जो फॉरमेट् वहां पहलेसु ही अवेलेबल् हतो वामेंसु दूसरो कैसे भयो? जो पुरुषोत्तम नित्यलीला कर रह्यो हतो वामेंसु एक या जगत्में सृष्टिलीला कैसे पैदा भई? जो पुरुषोत्तम नित्यलीला विहार कर रह्यो हतो वामेंसु एक आचार्यलीला करवेवालो पुरुषोत्तम कैसे पैदा भयो, वाकु फोकस् करके बतानो हे.

सर्ग, जाके कारण पुष्टि **'कायोद्भवाः'** हे, **'अक्षरोद्भव'** पुष्टि नहीं हे, ये फॉरमेट् तुमकु समझमें आवे. आखी पॉलिसी लेके चलें हें और वाके कारण वहांसु लेके उपपत्तिपक्ष उठायो. माने **तेह थकी पुरुषोत्तम अळगा लीला अचल विहार. ब्रह्मज्ञानी अने मुक्तिमारगी स्वप्ने नहीं व्यवहार** अब देखो ये के वृन्दावन वहां भी हे. गिरिराज वहां भी हे. वा फॉरमेटकी एक कॉपीमें एक पृथ्वीपे भी वृन्दावन हे, एक पृथ्वीपे भी गिरिराज, एक पृथ्वीपे भी आचार्यरूपसों द्विजवर पुरुषोत्तम आ रह्यो हे, द्विजतनुधारी पुरुषोत्तम आ रह्यो हे. भागवतको पुरुषोत्तम द्विजतनुधारी नहीं. वो भागवतवालो पुरुषोत्तम कैसो हे? **''ब्राह्मणो अस्य मुखम् असीत् बाहू राजन्यः कृतः, ऊरू तद् अस्य यद् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत."** (तैत्ति.आर.३।१३।२) वाकी अपनी पर्सनालिटीमें चारों वर्ण हें. वाकु एक वर्णमें कन्फाईन्ड् नहीं कियो जा सके. और ये पुरुषोत्तम कैसे पैदा भयो हे, द्विजतनुधारी. वा फॉरमेटमेंसु एक दूसरो सब-फॉरमेट् निकल्यो उपपत्तिपक्षको. जो एक फॉरमेट् हतो वा फॉरमेटमेंसु एक दूसरो फॉरमेट् पैदा करके निकाल्यो हे. वो वहांसु लेके शुरु कियो हे तो ठेठ २१ श्लोक तक फॉरमेट्की बात बताई. फॉरमेट्कु समझो और वा फॉरमेट्में भक्ति भी आ गई, माया भी आ गई, पहली नखशिख सुभगा भी आ गई, उपन्या सत्त्व अनन्त भी आ गयो, **भक्तिलीन हुआ सौभागी ते वैष्णव गुणवंत, बीजी कटाक्षे जे जन उपन्या मायामां थया लीन, कर्मजड आसुर अन्यउपासक भजनधर्मथी हीन, एणी पेरे सृष्टि द्विधा गुणमिश्रित चाली जाय भक्तिमार्गी जीव स्वतन्त्र केवल भक्त न थाय.** यहां तक उनने तैयारी करके बताई के दूसरो फॉरमेट् पैदा होवेके लिये सारी परिस्थितियें क्यों तैयार भई. क्योंके प्रभुके

मनसु, प्रभुकी कायासु, प्रभुकी वाणीसु, तीन तरहकी सृष्टि पैदा भई और वामें मिश्रण आ गयो. अब वा मिश्रण आवेके कारण वो सृष्टि जाके लिये हती, वो रोल् अपनो अदा नहीं कर पा रही हती, करके थोड़ेसे छोटे फॉरमेट्में एक दूसरो रोल् पैदा करनो हे.

(तुलनाको पांचवो बिन्दु : सर्गलीला)

आजकलके हम बालकन्कु एक भ्रमणा सता रही हे के हमारो पुष्टिमार्ग एक युनीवर्सल् धर्म हे. गोपालदासजीकु नहीं सता रही हे. गोपालदासजी माइन्डमें बिल्कुल क्लीयर् हें. जो पूर्वमें भगवान्ने पुष्टिसृष्टि बनाई हे वो पुष्टिसृष्टि मर्यादासृष्टिसु प्रवाहीसृष्टिसु मिक्स्-अप् न हो जाय वाके लिये एक छोटे मिनी पुरुषोत्तमकी ओर जरूरत हती. पूर्णपुरुषोत्तमके प्रोडक्शन्की ओर जरूरत हती. वाकु गुरुके फॉरमेट्में भेजनो हतो. वाकु ऐसे पुरुषोत्तमके फॉरमेट्में नहीं भेजनो हे करके **लीलाद्विजतनु धारी** पुरुषमेंसु एक दूसरो छोटो पुरुष पैदा भयो. वा पुरुषको जो सर्ग हे वो विसर्ग केहवावे हे. पर वा सर्गके पहले भागवतमें महाप्रभुजीने ये बात खुलासा करके कही हे के 'सर्ग'को मतलब क्या ? के जहां सारो रॉ-मटीरियल् पैदा कियो जाय. 'विसर्ग'को मतलब क्या के वा रॉ-मटीरियल्कु प्रयोगमें लावेवालो पुरुष पैदा होवे. तो पहले उनने पुष्टिसृष्टिको रॉ-मटीरियल् या तरहसु समझायो के ये सब रॉ-मटीरियल् हे. कोई कृपासु पैदा भये हें, कोई भक्तिसुन्दरी और भगवान् के दाम्पत्यसु पैदा भये हें, कोई मायादासी और भगवान् के दाम्पत्यसु पैदा भये हें.

(माया और भक्ति को अन्तर)

यामें याकी ब्युटीकी एक बात समझवेकी हे के जो मैं आपकु

बताये बिना पूरो नहीं करनो चाहूं. 'माया'को मतलब होवे हे **'माम् याति इति माया,'** मेरे तरफ आवे वाको नाम 'माया'. **'भजति इति भक्ति'**. जो मेरे तरफ आवे नहीं पर मेरो भजन करे. तो भक्ति और माया में अन्तर हे. क्योंके भगवान् कोई क्रीड़ा करनो चाह रह्यो हे. वैसी क्रीड़ा करवेके लिये तुमकु वो 'दाइनो घोड़ो रमतो जमतो छुट्टो' कर रह्यो हे तो माया हे. और तुमकु छुट्टो नहीं करनो चाह रह्यो हे, भजन करवेके लिये पैदा करनो चाह रह्यो हे, तो भक्तिसुन्दरी. मायादासी वो मायाकु काम सोंप्यो के ऑलराईट् तू ऐसो ही बना के जैसे मैंने सृष्टिमें पैदा होनो चाह्यो हे. जो जो मैंने करनो चाह्यो हे वाकु वो सब करवे दे. वो कहेगी के आपकु अहंकार हे के मैं परमेश्वर हूँ. तो बोले के वाकु भी अहंकारी बना दे. वो अपने कर्ममें मानेगो, भजनमें नहीं मानेगो, भक्तिकु वो मूर्खन्की कृति मानेगो, कर्मकु इन्टेलिजेन्स् मानेगो तो वाकु इन्टेलिजेन्स् दे दे. मेरो क्या गयो ! वाकु इन्टेलिजेन्ट् बना दे इतनो के वो कभी भक्ति कर ही नहीं सके. वाकु हर समय ये ही समझमें आवे हे के कर्मकी क्या कीमत हे ? हमारे कर्मको क्या रोल् ? भजनो काहेकु ? ऐसेन्कु इन्टेलिजेन्स् दे दे. वो इन्टेलिजेन्स् सप्लाईड् बाय् माया हे, भक्तिसुन्दरीके द्वारा नहीं. जो प्रभुके मनकु भा रही हे वा सुन्दरीके दाम्पत्यकी ये औलाद नहीं हे. ये औलाद कौनकी हे ? जो भगवान्के पास एक गुलाम हे, माया. वाकु हुक्म दियो के मेरे जैसो एक रॅप्लिका खड़ो कर दे.

(मायाके प्रोडक्ट्)

अब भगवान्को रिप्लिका होनो और भगवानकु भजनो; जितने

भी आसुरीभाव हें, वामें सदा ये ही स्ट्रगल् रहे हे के हम भगवान्के रिप्लिका कैसे बन जायें? **''ईश्वरो अहम् अहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी. आढ्यो अभिजनवान् अस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया. यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्ये''** (भग.गीता.१६।१४) मैं अपनो काम करूंगो, मैं ये करूंगो, मैं वो करूंगो. **कर्मजड आसुर अन्यउपासक भजनधर्मथी हीन.** वो मायाके प्रोडक्ट् हें. बातकु कैसे ढंगसु टॅकल् कर रहे हें. बड़ी बड़ी फिलोसिफीकी टॉपिक्कु देखें तो माइन्ड् बॉगलिंग् लगे के रूपालको गोपालदासजी भोलो आदमी नहीं हे बोहोत चतुर हे. दर्शनकी बोहोत बड़ी बड़ी बातें कर रह्यो हे. छोटी छोटीसी बातन्में कितनी गम्भीर बातें समझानो चाह रह्यो हे! वो काम उनने मायाकु केह दियो के चल तू एक मेरो रॅप्लिका पैदा कर दे.

(सर्गलीलामें माया और अविद्या सु प्रवाहसृष्टि माने वर्च्युअल् रियालिटी. ''कर्मजड...भजनधर्मथी हीन'')

वर्च्युअल् रियालिटी आपने अपनी पैदा कर दी तो वो बोहोत सारे काम आपके करेगी. कोई महमान आयगो तो hello! How are you ? I am a little busy. come after some time. अब यामें आपको साउन्ड् होयगो, आपके एक्शन् होंयगे, आपके एक्स्प्रेशन् होंयगे. पर virtual reality only possesses virtues of reality but not the reality itself. और जो भजन हे, भक्तिसुन्दरी हे जो प्रभुके मनकु भाई हे, वो वर्च्युअल् रियालिटी नहीं हे वाकी पर फेक्च्युअल् रियालिटी हे के ये मोकु पसन्द आ रह्यो हे. He is for my use. फिरसु ध्यानसु समझो. थोड़ी ऑड् बात हे. अभी मेनिया बढ़ जाय तो केह नहीं सकूं, क्योंके वो

शकील बदायुनी केह हे के ''नई सुबह पे नजर हे और साथ ये भी डर हे ये सेहर भी रफ्ता रफ्ता कहीं शाम तक न पहुंचे.'' जब सब चीज दौड़ रहीं हें तो सुबह कहीं दौड़ते दौड़ते शाम तक नहीं पोंहोंच जाय, ऐसो डर लग रह्यो हे. पोंहोंच सके शायद पर अभी with the grace of God, वो अभी पोंहोंची नहीं हे. अपन् दूसरेकु बेबकूफ़ बनावेके लिये अपनी वर्च्युअल् रियालिटी खड़ी कर सकें हें, पर अपनी बिलवेड्की या लवर्की वर्च्युअल् रियालिटी खड़ी करके कोई बात करनो पसन्द करेगो ? कोई नहीं करेगो. अभी कल पॉहोंच जाय तो पता नहीं. अभी तक ये बात वहां तक नहीं पॉहोंची हे के तू तेरे पीहरमें रेह और मैं तेरी वर्च्युअल् रियालिटीसु बात करतो रहूंगो. ''केम छो ? मजामां. शुं करो छो ? हां हां अमे जमवा जईए छीए.'' अरे कोई वर्च्युअल् रियालिटीसु बात करेगो ? कोई बात नहीं करेगो. तो या बातकु ध्यानसु समझो के प्रभु भी अपनी वर्च्युअल् रियालिटीसु बात नहीं कर रहे हें. वो वर्च्युअल् रियालिटी हे जो मायाकी प्रोडक्ट् हे. वर्च्युअल् रियालिटी मायाकी हे. माया दासीके द्वारा क्रियेटेड् वर्च्युअल् रियालिटी हें. माया और अविद्या दो रॉ-मटीरियल् हें जिनसु ये सृष्टि पैदा हो रही हें. या बातकु महाप्रभुजी पुष्टिप्रवाहमर्यादामें केह रहे हें के **''मनसा प्रवाहं सृष्टवान् हरि:''** (पु.प्र.म-९)

भक्त बिचारे वर्च्युअल् रियालिटी नहीं हें, पर वर्च्युअस् रियालिटी हें. थोडोसो ही डिफरेन्स् हे वर्च्युअल् और वर्च्युअस् में. इनको कोई वर्च्यु हे ऐसो के जा वर्च्युकु वो लव् कर रह्यो हे.

और वा लव् करवेके कारण **ते प्रभुने मन भावी.** मेरे लिये ये हें. ये मेरे लिये हें. वर्च्युअल् रियालिटी अपन् खुदके लिये पैदा नहीं करेंगे. दूसरेन्के लिये पैदा करेंगे और वर्च्युअस् रियालिटी हे वाकु अपन् अपने साथ रखेंगे. तो ये भक्तिसुन्दरीकी जो रियालिटी हे वो वर्च्युअस् रियालिटी होवेके कारण प्रभु अपने खुदके लिये रखें हें. मन हे वो माया हे. प्रभुको तन हे वामें तो भक्तिओरियन्टेशन् हे. माने स्वरूपेण सृष्टि पुष्टिसु पैदा भई हे. **''पुष्टिं कायेन निश्चय:.''** (पु.प्र.म.-९) मनमें सारी वर्च्युअल् रियालिटी हे. अब स्विटज़्रलॅण्ड् नहीं जा सके तो मनमें वाको सपना आ रह्यो हे. ये वर्च्युअल् रियालिटी हे. ये कम्प्युटर् ही करे हे ऐसो थोड़े ही हे! माईन्ड् भी करे हे. लड्डू नहीं खा सके एकादशीके दिन तो लड्डू खा रहे हें. अब वर्च्युअल् लड्डू खावेसु शुगर् नहीं बढ़ेगी. वर्च्युअल् रियालिटी तो ऐसे ही हे. सब कछु वर्च्युअल् करते रहो और मजा लो वाको. स्वाद सब आयेगो. नुकसान लाभ कछु भी नहीं वर्च्युअल् रियालिटीमें. दूसरेसु अपन् इन्टरएक्ट् कर सकें हें वर्च्युअल् रियालिटीमें पर खुदके लिये वो काम नहीं आवे. खुदके लिये तो वर्च्युअस् रियालिटीकी जरूरत हे. जो भक्तिसुन्दरीके द्वारा वर्च्युअस् रियालिटी पैदा करी हे वो **''प्रभुने मन भावी.''** प्रभुने मन भावी ये रॉ-मटीरियल् हते.

(भक्तिमार्गी जीवकी स्वतन्त्रता माने प्रभुकी भक्ताधीनता और भक्तिकी स्वतन्त्र पुरुषार्थता)

वा रॉ-मटीरियल्मेंसु जो सृष्टि पैदा भई वाकु केह रहे हें के वो जब मिक्सअप् हो जाय, जैसे वर्च्युअल् रियालिटी. अपने यहां

दरवाजाके बाहर जो केमेरा लगावें हें, अभी तो वामें वो सिस्टम् पैदा नहीं भई हे के वर्च्युअल् रियालिटीमें माने केमेराके स्क्रीनमें अपन्कु बॅल् बजातो दिखाई देवें. पर समझो के कभी सच्चो दीखतो होय और कभी नहीं दीखतो होय और वर्च्युअल् रियालिटीमें दीखतो होय तो अन्दर बैठ्यो भयो आदमी तो नर्वस् हो जायगो के सच्चो आयो के खोटो आयो? अपन्ने तो बॅल् दरवाजापे लगा दी सी.सी.टी.वी. केमेराके साथ. अब वहां अपन्कु स्क्रीन्पे जो दीख रह्यो हे वो वर्च्युअस् दीख रह्यो हे के वर्च्युअल् दीख रह्यो हे, वो कैसे पता चलेगो? जब नहीं पता चले तब तो कन्फ्युजन् हो जायगो! तो वो मिश्रित हो जायगी सृष्टि. वो सृष्टि मिश्रित ना हो जाय, वाको रेस्पोन्स् डिलेट् ना हो जाय, वाके लिये **एणी प्रकारे सृष्टि द्विधा गुणमिश्रित चाली जाय. भक्तिमार्गी जीव स्वतन्त्र केवळ भक्त न थाय.** जो भक्तिमार्गीय जीव हे वाके बारेमें प्रभुने ऐसे नहीं सोच्यो के मोकु याकु सिर्फ भक्त बनानो हे. वाकु वो राईट् देनो हे, वो प्रिविलेज् देनो हे के जैसे मैं दुनियाकु एन्जोय् कर रह्यो हूँ वैसे अगर तुम चाहो तो मोकु एन्जोय् करो. वो स्वातन्त्र्य वाकु देनो हे; वाकु केवल भक्त ही नहीं बनानो हे वाकु वो स्वातन्त्र्य देनो हे **''अहं भक्त पराधीनो ह्यस्वतन्त्र इव द्विज.''** (भाग.पुरा.९।४।६३) मैं रॅलिशेबल् हूँ, तू मोकु रॅलिश् कर. दुनिया मेरे लिये रॅलिशेबल् हे और मैं तेरे लिये रॅलिशेबल् हूँ. ये प्रिवलेज् वाकु देनो हे के तू मोकु रॅलिश् कर. वो दो मॉडेल् हें के कछु मेरे लिये रॅलिशेबल् हे और मैं कोईके लिये रॅलिशेबल् हूँ. मैं जाके लिये रॅलिशेबल् हूँ वो भक्तिकी औलाद हें. यासु भक्तिमार्गी जीव खुदके चार पुरुषार्थन्के अन्तर्गत भक्ति करवेके बजाय भक्तिवश भक्तिके

अंगोपांगके रूपन्में चार पुरुषार्थ निभायेगो.

(आसुरीभावकी लाक्षणिकता–कर्म इच्छा फल स्वातन्त्र्यरूप तलवारसु कालादिपे प्रहारकी क्षुद्र साहस)

जो मेरेलिये रॅलिशेबल् हें वो सब मायाकी औलाद हें. वो मायाके द्वारा खड़ी की भई वर्च्युअल् रियालिटी हे. क्योंके उनको मोड् ऑफ बिहेवियर्, उनको सारो फन्क्शनिंग् हे, वो बिल्कुल वैसो ही हे **''ईश्वरो अहम् अहं भोगी सिद्धो अहं बलवान्सुखी. आढ्यो अभिजनवान् अस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया. यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्ये''** (वहीं) हमारो कर्मको स्वातन्त्र्य हे, हमारो इच्छाको स्वातन्त्र्य हे, ये सब झांसायें अपने भीतर भरे भये हें, कर्मके, फलके, निष्काम कर्मके सारे स्वातन्त्र्य भरे भये हें पर सब मिनी मॉडेल्में.

भूलतो नहीं हूँ तो एक फिल्म आई हती 'वीवा ज़पाटा' वामें क्या होवे हे के स्पेनिश् लोग अमरीका जावें हें और रेड इन्डियन्सुकु कॅप्चर् करें हें क्योंके उनके यहां सोना खूब भर्‌यो भयो होवे हे. तो उन रेड इन्डियन्स्की सब सोनाकी खदानन्कु कॅप्चर् करनो हे. अब वो रेड इन्डियन्स् बिचारे भोले होंवे, उनकु पता नहीं पड़े के अब क्या करनो. उनने कभी बन्दूक देखी नहीं. उनके पास तीर तलवार हती. तो ये जब कॅप्चर् करवे आवें तो वो तलवार हिलाते आवें. वीवा ज़पाटामें क्या होवे के वो बैठ्यो भयो हे स्पेनिश वो देखतो रहे के कितनी देर तलवार चलावे हे. जब तलवार हिट् करवेकी रेन्जमें आवे तो गन् चलाके ढ्युशुम् वाकु मार

दे. बाकी वो देखतो रहवे के कितनी देर! तक तलवार चलावे! रॅप्लिका खड़े किये गये हें ईश्वरके तो कितनी देर **''ईश्वरो अहम् अहं भोगी सिद्धो अहं बलवान्सुखी. आढ्यो अभिजनवान् अस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया. यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्ये''** (वहीं) और जब मेरेपे आयो तो ढ्युशुम्. जितनी देर हो सके तू तलवार चला. वो इतनो अच्छो सीन् हतो. स्पेनिश् देखतो रहवे हे, कछु भी एक्शन् नहीं करे. अपनकु लगे के ये काट नहीं दे स्पेनिशकु. पर जैसे ही वो पॉइन्ट्पे आयो तो फटसु ढ्युशुम्. सारी तलवारबाजी खतम. ऐश्वर्य आढ्य धनवान इच्छास्वातन्त्र्य कर्मस्वातन्त्र्य फलस्वातन्त्र्य, ये करें और वो करें. ऐसा करें वैसा करें. छोटीसी ये जिन्दगी, पल पलमें हम क्या करें? ढ्युशुम् खतम. वाके लिये कोई सीरियस् प्रोब्लम् नहीं हे. चलवे दे तलवार. तलवार चलती कौनकु असर करे हे? जाकु लड़नो होय तलवारसु वाकु असर करे तलवारको वार. पर यहांसु ढ्युशुम कर दियो तो खतम तलवारबाजी. ऐसे काल कर्म स्वभाव प्रकृति पुरुष आदि हथियार जाके हाथमें हें, वाके सामने अपनो इच्छास्वातन्त्र्य, अपनो कर्मस्वातन्त्र्य, अपनो फलस्वातन्त्र्य, अपनो सद्असद्विवेक, अपनो औचित्य अनौचित्यको विवेक, ढ्युशुम् और खतम. वापर अपनी सारी तलवारबाजी, आ हिलाते भयो हाथ, घुमाते भयो हाथ, पर मेरे पास तो वीवा ज़पाटा हे. **कर्मजड आसुर अन्यउपासक भजनधर्मथी हीन. श्रीपुरुषोत्तमे वळी विचार्युं हवे प्रकार शुं करिये? म्हारी सेवा अने कथारस निरूपवा तनु धरिये.** माने जो मोकु रॅलिश् कर सके, ऐसो जीव वा जीवसु मिश्रित नहीं हो जाय, वा सृष्टिकु कैसे प्रकट करूं? वाके लिये एक पुरुषकु उत्पन्न करनो पड़ेगो. पुरुषकु उत्पन्न करवेके पहले जो

द्वितीय स्कन्धको विषय हे पहले रॉ–मटीरियल् पैदा करके बतायो **भक्तजीवनां भाग्य विस्तर्‌या इच्छा करी हरि सार. तेने हेते आपोपे प्रकट्‌या श्रीवल्लभराजकुमार. पूर्णब्रह्म श्रीलक्ष्मणसुत पुरुषोत्तम श्रीविट्ठलनाथ. श्रीगोकुलमां प्रगट पधार्या स्वजन कीधां सनाथ.**

ये देखो आखो सृष्टिप्रकरण उनने लियो हे पर फोकस् करके पुष्टिमार्गकी सृष्टि नहीं पर पुष्टिसम्प्रदायकी सृष्टिको कैसो सर्ग पैदा भयो, वा सर्गलीलाकु यहां गोपालदासजी वर्णन कर रहे हें. और अपन् देखें तो ऐसे ही द्वितीय आख्यान विसर्गलीला हे. ओनवर्डस् सारी टेली हो रही हें भागवतकी लीलान्सु. यामें एक भागवत छुपी भई हे. याकी सिनोप्सिस् शतप्रतिशत भागवतकु पकड़के चल रही हे. कहीं भी भागवतसु अलग नहीं जा रही हे. सारे पॅरामीटर्स् वो ही वापरे हें पर उतनो बड़ो वाईड् एन्गल् नहीं हे. बोहोत छोटोसो पुष्टिसृष्टिको एंगल् लियो हे. पुष्टिमार्गको नहीं लियो हे. ये गोपालदासजीको प्रथमाख्यान हे. मैं समझूं के पूरी बात तो नहीं भई हे यामें बोहोत बात रेह गई हें. कछु पूछनो होय तो पूछो नहीं तो आजको यहां समाप्त करें.

(सर्गलीलाको सिंहावलोकन और श्रीव्रजरायजीकी प्रथमाख्यानकी सिनोप्सिस्)

थोड़ोसो सिंहावलोकन करे बिना आगे नहीं बढ़ पायेंगे. कछु बातें जो खास ध्यान देवेकी यामें हें, वो ये हें के हर बखत टीकाकारन्ने सिनोप्सिस् याकी दी नहीं हें, कहीं कहीं सिनोप्सिस् दी भी हें. व्रजरायजीने पूरे पहले आख्यानकी सिनोप्सिस् या ढंगसु बताई

हे के याके चौबीस पद हें. और इन चौबीस पदन्मेंसु पहले-पहले निर्विघ्न समाप्तिके लिये नमन कियो हे. दूसरे पदमें प्रभुचरणको भगवत्स्वरूपेण प्रतिपादन कियो हे. तीसरेमें अपने हृदयमें लीलाके भावको स्फुरण होय वाकी प्रार्थना हे. चौथेसु लेके सातवें पर्यन्त चिदंशको वर्णन हे. आठवेंसु पन्द्रह पर्यन्त आनन्दांशको वर्णन हे. सोलहसु लेके इक्कीस श्लोक पर्यन्त सदंशको वर्णन हे. वाके बाद एक श्लोकसु प्रागट्यके कारणको वर्णन हे और एकसु प्रागट्यको वर्णन हे.

(प्रवचनकारकी सिनोप्सिस्[क सु अ])

ये जो सिनोप्सिस् बताई हे, मैं ऐसे नहीं केह रह्यो हूं के यामें कोई गलती हे पर मोकु यामें कछु और भी सिनोप्सिस् सूझे हे. मैं यापे इतनो भार देनो नहीं चाह रह्यो हूं. ये तो मैं बता रह्यो हूं, वाकु आप फाइनल् मत समझियो. जैसे व्रजरायजीने अपनी खुदकी एक सिनोप्सिस् दी हे वैसे मोकु भी याकी एक सिनोप्सिस् सूझ रही हे. वा सिनोप्सिस्कु मैं यहां यों केहनो चाह रह्यो हूं के मैं जा तरहसु याकु समझ्यो हूं वासु मेरी सिनोप्सिस् सिन्थेसाईज़् हो रही हे. जैसे श्रीव्रजरायजीने टीका करी हे वा ढंगसु मेरी सिनोप्सिस् सिन्थेसाईज़् नहीं हो रही हे जा तरहसु मैं व्याख्या कर रह्यो हूं. या लिये मैं याकी अलग ढंगसु कुछ सिनोप्सिस् सोच रह्यो हूं. यामें सबसु पहली बात ये हे के प्रथमाख्यानमें तीन बातें क्लब भई हें. एक प्रथम स्कन्धकी, दूसरी द्वितीय स्कन्धकी. प्रथम स्कन्ध अधिकारको वर्णन हे. द्वितीय स्कन्ध साधनको वर्णन हे. तृतीय स्कन्ध सर्गको वर्णन हे. कल मैंने आपकु बतायो वा ढंगसु

भागवतके अधिकार, भागवतके साधन और भागवतको जो सर्गको वर्णन हे वाको लॅण्डस्केप् बोहोत बड़ो वाईड् हे. उतनो वाईड लॅण्डस्केप् यहां नहीं हे. वा लॅण्डस्केप्कु छोटोसो करके एक छोटोसो सीन लेके यहां ये तीनों स्कन्ध वर्णन किये गये हें. अब फोकस् करवेके कारण, बीचके कोई पॉइन्ट्पे ज्यादा फोकस् हे, तो उतनो वाईड् एन्गल् अपनेकु यहां मिल नहीं रह्यो हे.

(क तत्त्वध्यान)

याके लिये मोकु ऐसो लग रह्यो हे के शुरुआतके जो दो श्लोक हें, वामें तत्त्वको ध्यान हे जो द्वितीय स्कन्धको वर्णन हे. देखो तत्त्वको ध्यान वामें दीख रह्यो हे के नहीं! **वंदू**[अधिकारलीला] **श्रीविट्ठलवर सुन्दर नवघनश्याम तमाल. जगतीतल उद्धार करेवा प्रगट्या परम दयाल. श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीडा लीला द्विज तनुधारी. सात दिवस गिरिवर कर धार्‌यो वासववृष्टि निवारी.** ये तत्त्वको ध्यान कर रहे हें. मोकु ऐसो फील् हो रह्यो हे. यामें एक और बात खास ध्यानमें लेवेकी हे जो दिखलाई दे रही हे.

(ख भागवतको विपुलीकरण)

भागवतके साथ जब या आख्यानकी तुलना करें तो क्योंके ये आख्यान एक साथ तीनको प्रतिनिधित्व कर रह्यो हे तो सबसु पहली कथा यामें ये हे के भागवतके कई मल्टीपल् लेवल् हें. सबसु पहलो लेवल् ब्रह्माजीकु भगवान्ने जो चार श्लोकमें चतुःश्लोकी कही वो एक सूत्र लेवल् हे. वा सूत्र लेवल्के बाद एक वृत्तिरूप लेवल् हे, जो दो एक अध्यायन्में कह्यो गयो हे.

वाके बाद वहां यों कही गई के **''इदं भागवतं नाम यन्मे भगवता उदितम्. संग्रहो अयं विभूतीनां त्वम् एतद् विपुलीकुरु.''** (भाग.पुरा.२।७।५१) ब्रह्माजीने जा बखत नारदजीकु भागवत बताई, वामें वो जो चार श्लोक हते वाको डेढ़ दो अध्यायन्में विस्तार करके वृत्तिरूपसु वर्णन कियो गयो हे और नारदजीने जा बखत भागवत खुदके गावेके लिये तैयार करी तो वामें व्यासजीकु वा बखत कन्फ्युज़न् हो रह्यो हतो. ब्रह्मसूत्र रच्यो, सब पुराण रचे पर उनकु सन्तोष नहीं हो रह्यो हतो. कछु डिस्सॅटिस्फॅक्शन् हतो. तो वा डिस्सॅटिस्फॅक्शन्कु मिटावेके लिये नारदजीने व्यासजीकु ये समझायो के आप याको समाधिमें दर्शन करो. तो जा बखत नारदजीने समाधिकी कही और उनके कहे अनुसार व्यासजीने समाधिमें जो भागवत देखी, इन चक्षुन्सु नहीं देखी. याकी ब्युटी समझो. अपन् ऐसे नहीं केह सकें के ब्रह्माजीकु वो दृष्टि अपने चक्षुन्सु अवेलेबल् नहीं हती, विष्णुकु नारायणकु वो दृष्टि अवेलेबल् नहीं हती पर उनकी क्योंके सूत्रात्मक दृष्टि हे; ब्रह्माजीने जा बखत नारदजीकु उपदेश दियो वाकी वृत्ति बनाके सूत्रात्मक उपदेश दियो तो थोड़ो वाको विस्तार भयो. और वाके जो फाईन् पॉइन्ट्स् हते उनकु थोड़ो डेवलप् करके बतायो और फिर कही के याकु तुम अच्छी तरहसु गाओ. पर जब व्यासजीने समाधिमें देखी तब पूरी परिस्थिति बदल गई हे. क्योंके अपने यहांके पुष्टिमार्गके एन्गल्की दृष्टिसु देखें तो सिच्युऐशन् या तरहसु बदल गई हे के नारदजीकु जो ब्रह्माजीने उपदेश दियो वामें भगवद्अवतार-लीलाको ही वर्णन हे और फिगर वहां भगवानके चौबीस अवतार हें. और भी बोहोत सारे अवतार हें पर मुख्य चौबीस अवतार हें. वामें जगत्की सारी बातें आ रहीं हें

वो लीलाके स्टेजकी तरह आ रही हें, माने बॅक्ग्राउन्ड् तरीके आ रही हें. वहां हीरो सिर्फ भगवान् ही हें. दूसरे कोई भी या तो एक्स्ट्रा हें या स्टेज कर्टेन् हें या और कछु हें. या तरीकेकी सिच्युऐशन् हे. कल जो अपन्ने पेन्टिंग्की तरहसु सोच्यो वा तरहको कोई दूसरो पिक्चर् आ रह्यो हे.

(ॅ व्यासजीकी पॅनोरेमिक त्रिकाल सर्वज्ञता)

जब व्यासजीने समाधि लगाई और पूरी बातकु देखी, तो वामें कोई एक पर्टिक्युलर् कालकु या कोई पर्टिक्युलर् फॅसेट्कु नहीं देख्यो, **''अपश्यत् पुरुषं पूर्णं मायां च तदपाश्रयाम्.''** (भाग.पुरा.१।७।४) वा अवतार और अवतारी पुरुषकी पूर्णताको उनकु साक्षात्कार भयो. वा पूर्णताके साक्षात्कारमें फर्क ये पड़ गयो के ये भूत भविष्य और वर्तमान की जो त्रैकालिकता हे वो छोटी पड़ गई.

बोहोत सारे सर्वज्ञ हें, उनकी सर्वज्ञताके दावा बस इतनीसी बातके हें के तुम लोग असर्वज्ञ क्यों हो क्योंके तुमकु तो खाली वर्तमान दीख रह्यो हे. भूतकाल तुमकु नहीं दीख रह्यो हे, भविष्य तुमकु नहीं दीख रह्यो हे. वाके लिये तुम असर्वज्ञ हो. वो याके लिये ही ऐसी फ्रेज़ीज़् वापरें हें के त्रिकालसर्वज्ञ. तीनकालके सर्वज्ञ हें माने तीनों कालन्में क्या हो रह्यो हे. (जैनमतकी सर्वज्ञता)

पर व्यासजीकु समाधिमें साक्षात्कार भयो हे वामें त्रिकालसर्वज्ञतासु बात ओर आगे बढ़ गई हे क्योंके उनकु समाधिमें त्रिकालके कई साईकल् भूत भविष्य उनकु दिखलाई दे रहे हें. एक

ही साईकल् नहीं, पर मल्टीपल् साईकल्स् ऑफ त्रिकाल. एक भूत भविष्य और वर्तमान, वाके बाद दूसरो भूत भविष्य और वर्तमान, वाके बाद फिर भूत भविष्य और वर्तमान्; ऐसे कई कल्पन्के साईकल् उनकु दिखलाई दे रहे हें. तो त्रिकालसर्वज्ञता वामें छोटी पड़ रही हे. ये भागवतको एक रिमार्केबल् फॅसेट् हे और वाही लिये अपन्कु बोहोत सारी बातें असंगत लगें हें. वो यों असंगत लगें हें क्योंके वो एक कालकी बात तो हे नहीं! और एक साईकल्की बात भी नहीं हे. मल्टीपल् साईकल्स्की बात हे. तो वामें कौनसे साईकल्मेंसु याकी बात आई हे वो अपन्कु जब तक ट्रेस्आउट् नहीं होय तब तक तो वो सब कॅओटिक् लगेगो ना! क्योंके एक साथ सारे विज़न् खुल गये हें. मल्टीपल साईकल्स् भूत, भविष्य, वर्तमान के एक साथ उनकु समाधिमें दीखें हें. वो इतनो बड़ो जो पॅनोरेमिक् व्यु हे, वाईडेस्ट् पॅनोरेमिक् व्यु, वाकु वाईड् व्यु कहनो भी खोटो लगेगो. वा पॅनोरेमिक् व्युमें जो सर्वज्ञता हे वो कोई दूसरे नेचर्की सर्वज्ञता हे. वा सर्वज्ञतामें उनकु जो जो चीज दिखलाई दे रही हे, वो उतने बड़े वास्ट् सर्कलमेंसु सारोको सारो या वल्लभाख्यानमें तो लियो नहीं जानो हे. कोई एक फोकस् करके, कोई एक पर्टिक्युलर् सीन्कु लेनो हे.

(घ भागवतके मंगलाचरणमें तत्त्वध्यानकी विशेषता)

जैसे अपन् दिल्ली गये, कुतुब मीनारको एक फोटो ले लियो. तो वा कुतुब मीनारमें कोई आखी दिल्ली थोड़े ही दीखेगी! आगरा गये तो ताजमहलको फोटो ले लियो. समझो के अपन् गोकुल गये और ठकुरानी घाटको फोटो ले लियो; जतीपुरा गये तो

गिरिराजजीको एक फोटो ले लियो. अब गिरिराजजीको एक फोटो लेंगे तो वामें पूरे गिरिराजजीको फोटो थोड़े ही आयेगो. एक छोटोसो ले लियो फोटो फोकस् करके गिरिराजजीको. याद रखवेके लिये एक फोटो अपने लिये पर्याप्त हे. वो जो पॅनोरेमिक् व्यु हे वामेंसु एक सीन् ले लियो, वा तरहसु एक एपीसोडमें लियो भयो कछु यहां हे. तो कौनसो मङ्गलाचरण भागवत्को लेनो? क्योंके भागवतके इतने मल्टीपल् लेवल् हें और वाके अलग अलग इतने ही मङ्गलाचरण भी हें! जो जो भागवत शुरु भई हे, जा जा लेवल् या लेयर् की भागवत हे, वा लेयरकी वा लेवलकी भागवतके अलग अलग मङ्गलाचरण भी हें. पर सारी भागवत जो उनकु समाधिभाषामें दीखी वाकु महाप्रभुजी कहें हें के उनकु समाधिमें सब कछु दिखलाई दियो. **''जन्माद्यस्य यतो अन्वयाद् इतरतः च अर्थेषु अभिज्ञः स्वराट्. तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि''** (भाग.पुरा.१।१।१) वो मङ्गलाचरण हे समाधिभाषाको. वामें एक बोहोत ही इम्पॉर्टेन्ट् और सिग्निफिकेन्ट् बात कही गई हे के जो सृष्टिकु उत्पन्न करवेवालो भगवान् ब्रह्माजीको स्वरूप हे. वा ब्रह्माजीके स्वरूपकु वेदको ज्ञान नारायणने हृदयमें स्फुरित करवायो और वो पहलो तत्त्वध्यान हे. **''तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः''** जहां विद्वानन्कु मोह हो जाये, उन सारे विषयन्को, उन सारी घटनान्को, उनके तत्त्वन्के स्वरूपन्के ज्ञानकु देवेवाली जो श्रुति वेद हे. वो ब्रह्माजीके हृदयमें भगवान्ने स्फुरित करी. ये वा मङ्गलाचरणमें कह्यो हे. वाके पॅरेलल् यहां केह रहे हें.

अपने भारतीय चिन्तनकी ये खास विशेषता रही हे के नास्तिकदर्शन होय के आस्तिकदर्शन होय, ब्रह्मवादी होय के अब्रह्मवादी होय, दर्शन होय के साहित्य होय, संगीत होय के कोई कला होय, राजनीति होय के सिविक्स् होय, कोई भी शास्त्र अपने यहां लिख्यो जाय, पता नहीं व्याकरण तक भी, ग्रामर् भी वामें अपवाद नहीं हे. उन सब शास्त्रन्की खोड़; खोड़ केहनो होय तो खोड़ केह दो, मॅरिट् केहनो होय तो मॅरिट् कहो, जो कहनो होय सो कहो. और वो ये हे के कोई भी ब्रांच् ऑफ् नॉलेज्कु वो सेग्मेन्टेरी फॉर्ममें नहीं देखें हें पर पूरे युनिवर्स्के पर्सपेक्टिव्में देखें हें. जब भी कोई अपनो शास्त्र लिखें हें तो वामें युनिवर्स्की चर्चा करें के युनिवर्स्के बारेमें उनकी राय क्या हे. और वा व्युके तहत या शास्त्रको व्यु क्या हे. इतने बड़े पर्सपॅक्टिव्में देखें हें. पॉलिटिक्स् आयुर्वेद ग्रामर् में देखो तो या ढंगसु हे. सब जगह देखो तो ये उपद्रव मिले हे. संगीतशास्त्रमें देखो तो ब्रह्म जगत्को उपादान कारण हे के निमित्त कारण हे के विवर्त कारण हे, ये लियो हे. संगीतशास्त्रको क्या लेना देना यासुं? संगीतशास्त्र देखोगे तो वहां भी ये ही चर्चा मिलेगी.

जहां धर्मकी चर्चा हे, वो तो कोई पार्ट्-टाईम् कमिट्मेन्ट् नहीं हे. लाईफ्को कमिटमेन्ट् हे. लाईफकमिट्मेन्ट्के लिये तो युनिवर्सल् पर्सपेक्टिव्कु लानो बोहोत जरूरी हे. क्योंके और जो थोड़े बोहोत शास्त्र हें वो अपने लाईफ-टाईम् कमिट्मेन्ट् होवें के नहीं होवें, पर वो पार्ट-टाईम् कमिटमेन्ट् भी हो सकें हें. पर धर्म तो वा प्रिसपोज़ीशन्सु नहीं चले के पार्ट-टाईम्को कमिट्मेन्ट् हे. आज जो

पुष्टिमार्गीय वैष्णवन्ने बना रख्यो हे. वो कथा तो अलग हे पर ये तो लाईफ्-टाईम् कमिट्मेन्ट् हे. तो लाईफ्-टाईम्के लिये तो बोहोत बड़ो युनिवर्सल् बॅकड्रॉप् होनो चहिये.

चार्वाककु भी देखोगे तो वो अपने चार्वाकके मतके सिद्धान्तन्कु कोई न कोई युनिवर्सल् मॅटाफिज़िक्स्के बॅक्ग्राउन्ड्पे समझानो चाहे हे के युनिवर्स्की मॅटाफिज़िक्स् या ढंगकी हे और वा ढंगकी मॅटाफिज़िक्स् होते भये अपनो कर्तव्य ये हे.

शांकर लोगन्सु अपन् खूब झगड़ा करें हें. सच्ची बात हे. पर जब वो ''**अहं ब्रह्मास्मि**'' की साधना बता रहे हें, वा साधनाके विसा-विस् वो विवर्तपरिणाम बता रहे हें के ये सारो जगत् ब्रह्मपे, जैसे शुक्तिपे चांदीको भास होवे हे वैसे, वा तरहसु भासित हो रहयो हे. याके लिये बचेगो क्या करवेके लिये. यासु **"अहं ब्रह्मास्मि."** देखवेकी बात हे के कितनी खूबसूरतीसू निकलके आवे हे उनको मॅटाफिज़िकल् एप्रोच् उनके पर्सनल् लाईफ्के एप्रोच्में. वो ही बात भागवत भी कर रही हे.

(श्री वल्लभाख्यानके मंगलाचरणमें पुष्टिसम्प्रदायको तत्त्वचिंतन)

वो ही बात वल्लभाख्यान भी कर रह्यो हे. जब वाकु भक्तिसंहिता कहें तो भक्तिसंहिता तो माहात्म्यज्ञानपूर्वक सुदृढ़ स्नेह भी केह रही हे. अब माहात्म्यज्ञानको आस्पेक्ट् आयेगो कहांसु? ''**तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः**'' वो नारायणने अपनो सारो माहात्म्यज्ञान ब्रह्माजीके हृदयमें अचानक फ्लॅश् कियो. जहां सूरन्कु विद्वानन्कु मोह पैदा हो जाय; क्योंके सूरी एक एक

शास्त्रके सूरी हें. उनके सामने पॅनोरेमिक् व्यु नहीं हे. जैसे कोई डॉक्टर् आंखको हे तो वाकु कानको नहीं पता हे. कानको हे तो वाकु पेटको पता नहीं हे. पेटको हे तो हार्टको पता नहीं हे. हार्टको पता हे तो ब्रेइन्को नहीं पता हे. एक्स्पर्ट सब हें. पर उनके सामने पूरी बॉडीको व्यु तो नहीं हे!

ब्रह्माजी क्रियेटर् हें वाके सामने भी यदि ये ही स्पेश्यालिस्ट् होयगो तो कोई एकाध चीजकु क्रियेट् करके सारी दुनियाकु देगो. तो वाके लिये नारायणने पूरो मल्टी डायमॅन्शनल् व्यु उनके सामने खोल्यो के देख लो. जगत्को मॅटाफिज़िकल् स्वरूप कैसो होनो चहिये, कैसो हो सके हे, और कैसो तुमकु करनो हे. ''**तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरय:**'' जो मङ्गलाचरण कियो वाके पॅरेलल् यहां भी देखो क्या केह रहे हें **वंदू श्रीविट्ठलवर सुन्दर नवघनश्याम तमाल. जगतीतल उद्धार करेवा, प्रगट्या परम दयाल. श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीडा, लीला द्विज तनुधारी. सात दिवस गिरिवर कर धार्‌यो वासववृष्टि निवारी.** दो तरहके पुरुषोत्तम हें. एक स्वतन्त्रक्रीड़ा करवेवालो पुरुषोत्तम और एक प्रमाणतन्त्रलीला करवेवालो द्विजतनुधारी पुरुषोत्तम हे. अब ये इनको व्यु हे ''**नमो भगवते तस्मै कृष्णाय अद्भुतकर्मणे. रूपनामविभेदेन जगत् क्रीडति यो यत:**'' (त.दी.नि.१।१) जो पुरुषोत्तम जगत्के रूपमें नामसु क्रीडा कर रह्यो हे; वो दो रूप हो गये. एक रूप स्वतन्त्रक्रीड़ा. 'स्वतन्त्रक्रीड़ा' माने कोई प्रमाणके आधीन वाकी क्रीड़ा नहीं हे. महाप्रभुजी वालिये एक बोहोत सुन्दर बात कहें हें के जितने भी प्रमाण हें वो तो जैसे राजाके चापलूस बन्दीजन होवें के राजा खड़ो

हो गयो तो वाके खड़े होवेको गाना गावें; राजा बैठ जाये तो वाके बैठवेको गाना गावें. राजाकु छींक आवे तो वाकी छींकको गाना गावें. जीत जाय तो जीतको गाना गावें. शादी करे तो शादीके गीत गावें. जन्मदिन आवे तो जन्मदिनके. जो भी राजा काम करे तो राजाके गीत गाते रहें. ऐसे जितने प्रमाण हें वो तो ब्रह्मने जो भी कछु कियो वाके गीत गा रहे हें. थोड़े थोड़े जो भी हें वाके वो गीत गा रहे हें.

अभी मैंने यहांकी लायब्रेरीमेंसु नाथद्वाराके बड़े कवि घनश्यामकी पुस्तक ली. वाने नाथद्वारामें देख्यो परसादियायें दुकानमें बैठके मिठाई बेचें हें. सो वाने लिख्यो के ''बूंदीके सेवके मनोहरके मगदहुके मोहनथालके केसरी धरी हें नेग लायके. घनश्यामप्यारे पेड़ा पूरी बदामपाक पेठापाक मावादार गूंजा देख खायके.'' अब कवि हे सो वाने जो देख्यो वाको बखान कर दियो. अब कविने जो कह्यो वासु अपन् नाथद्वाराको इक्वेशन् करें के जहां 'बूंदीके सेवके मनोहरके मगदहुके मोहनथालके केसरी धरी हें नेग लायके. घनश्याम प्यारे पेड़ा पूरी बदामपाक पेठापाक मावादार गूंजा देख खायके.' अरे भई! और भी तो कछु हे के नहीं वहां? कितनी सारी एक्टिविटी चल रही हें पेन्टिंगकी, पिछवाईकी, मूर्तिकी, चित्रन्की, सिंहासन बना रहे हें. अब कविकु जो चीज निगाहमें आ गई सो वाने लिख दियो. अब कविको काम ही ऐसो हे. तो ऐसे ही जितने भी प्रमाण हें उनको काम ही ऐसो हे के जो भी सामने आयो वाकु वो दिल खोलके नरेट् कर दें हें. इतनी सामग्रीके नाम अपन्कु याद नहीं हें जितने उनकु पता चलें. क्योंके वो एक्स्पर्ट हें. तो प्रमाणको ये

काम हे. ये सारे प्रमाण तो जो प्रभुने काम कियो वाको वर्णन कर रहे हें. उनकी एक सिस्टमेटिक् बॉडी कौन बनायेगो? मल्टीपल् सोर्सेस् ऑफ् इन्फोरमेशन्कु को-ऑर्डिनेट् करके एक सिस्टमेटिक् बॉडी कौन बनायेगो? वो तो कोईकु बनानी पड़ेगी.

(ॅभागवतोक्त पुरुषोत्तमकी स्वतन्त्रक्रीड़ा और लीला द्विजतनुधारीकी प्रमाणतन्त्रक्रीड़ा)

वो ब्रह्माजीके दिलमें भगवान्ने स्फुरित करी. ऐसे ही भागवतने एक पुरुषोत्तमकी क्रीड़ा स्वतन्त्रक्रीड़ा बताई. वाकी स्वतन्त्रक्रीड़ाके कारण, अपने वा स्वातन्त्र्यके कारण; ये वल्लभपंथी तो बेवकूफ हें सब, ये समझें के महाप्रभुजी स्वतन्त्रक्रीड़ा हें. महाप्रभुजी स्वतन्त्र क्रीड़ा नहीं हें.

भागवतोक्त जो पुरुषोत्तम हे वो स्वतन्त्रक्रीड़ा हे. और वा स्वतन्त्रक्रीड़ा करवेवालेको ये स्वातन्त्र्य हे के वो द्विजतनु धारण करके प्रकट हो सके या भूमिपे. ये वा पुरुषोत्तमको दूसरो रूप हे. या पुरुषोत्तमकी लीलाके रूपकु पुष्टिमार्गमें वा पुरुषोत्तमकी लीलाके रूपमें देखनो हे. और पुष्टिसम्प्रदायमें या लीलाकु द्विजतनुधारीकी लीलाके रूपमें देखनो हे के द्विजतनुधारीकी लीला हे. वा दृष्टिकोणसु याकु सोचोगे तो सारी बात समझमें आयेगी. कोई मॅटाफिज़िक्स् उनके पीछे बोल रही हे के आगे जो भी सिद्धान्त वर्णन करनो चाहते होंयगे, जो भी लाइफ्-स्टाइल् बतानो चाहते होंयगे, वो लाइफ्-स्टाईल् ऊपरसु ऐसी इम्पोस्ड् नहीं होनी चहिये. लाईफ्-स्टाईल्को पहलो तकाज़ा ये हे के अपनो जो मॅटाफिजिकल्

कन्सॅप्ट्, मॅटाफिजिकल् प्रिसपोज़ीशन् हे वामेंसु खिली भई अपनी लाईफ्-स्टाईल् होनी चहिये.

यदि तुम मान रहे हो के भगवान् नहीं हे तो तुम्हारी लाईफ्-स्टाईल्मेंसु वो बात खिलके आनी चहिये के भगवान् नहीं हे दुनियामें और तुम ही हो दुनियामें! यदि तुम मान रहे हो के भगवान् हे, तो तुम्हारी लाईफ्-स्टाईल्में वो बात खिलके आनी चहिये के हां, भगवान् हे. वा भगवान्कु कैसे खिलानो अपनी लाईफ्-स्टाईल्में? यदि ब्रह्मकु तुम निर्गुण निराकार मान रहे हो तो कोई बुरी बात नहीं हे. तुम्हारी लाईफ्-स्टाईल्में निर्गुणता निराकारता निर्विकारता निर्विशेषता खिलके आनी चहिये. वो प्रिसपोज़ीशन् हे. तुम नहीं मान रहे हो के भगवान् हे, सांख्यकी तरह खाली प्रकृति-पुरुष हे. तो प्रकृति-पुरुषको जो इन्टरएक्शन् हे वो खिलके तुम्हारी लाईफ्-स्टाईल्में दीखनो चहिये. ये ग्रामर्में संगीतमें सबमें ऐसे हे. अपने यहांको कोई भी शास्त्र उठाओ तो या तरीकेको वाको एक बायस् हे ही.

गोपालदासजी भी रूपाल गांवके हें तो उनको भी वो बायस् हे के आगे जाके वाको भी वर्णन करेंगे, तो पहले बता तो दें के मॅटाफिज़िकली कौनकी लीला हे? एकदम वाईड् रेन्जकी लीला वो तो स्वतन्त्रपुरुषोत्तमकी लीला हे. मैं जहां फोकस् कर रह्यो हूं वो लीला द्विजतनुधारी पुरुषोत्तमकी लीला हे. वाकी लीलाकु मैं यहां नरेट करनो चाह रह्यो हूं. बी एब्सोल्युटली श्योर् के वाकी लीला पुष्टिसम्प्रदायकी लीला हे. पुष्टिमार्गकी लीला नहीं हे. वो उनके हृदयमें (हृत्प्रसाद) कैसे स्फुरित भयो वाकु भी वो अच्छी तरहसु

खोलके समझा रहे हें. **ते प्रगट्यानुं कारण कहिये जो सुरता मन आणो. करो कृपा हुं करूं विनंती पोतानो करि जाणो.** जैसे ब्रह्माजीकु नारायणने **पोतानो करि** मान्यो के तू सब नरेट् कर. जैसे ब्रह्माजीने नारदकु अपनो मान्यो, ऐसे यदि आप भी मोकु अपनो मानते हो, तो मेरे हृदयमें भी वो अपनी लीलाको सब विस्तार करो. वो गुह्य ज्ञान जो महाप्रभुजी डिस्कस् कर रहे हें, तो वाको सीक्रेट् ज्ञान होनो चहिये के वो सीक्रेट् क्या हे? फेस्वेल्युपे तो कछु दिखलाई दे रह्यो हे पर वाके भीतर छुपी भई सीक्रेट क्या हे?

यदि वक्ता वाकु नहीं जान रह्यो हे तो फिर वो प्रमाणके ''बूंदीके सेवके धरी हें छप्पन भोगके'' देखो और खाओ और पेट खराब करके डायबिटीज् करके मरो. वो तो पुष्टिमार्गको इतनोसो ही वर्णन करेगो. वाकु वाके सीक्रेटको तो ज्ञान होनो चहिये के कथा क्या हे या सबकी, याको गुह्यज्ञान क्या हे? वा गुह्यज्ञानके सोर्सेस् क्या हें? वाके रिसोर्सेस् क्या हें वो बता रहे हें. या लिये अपन् देखें तो एक सबसु बड़ी बात यामें ये आवे हे के ये लीला प्रगट हो रही हे, वो प्रगट होवेवाली लीला द्विजतनुधारी पुरुषोत्तमकी लीला हे, या लीलाको फॉरमेट् क्या हे? वा फॉरमेट्कु समझो. वा फॉरमेट्को ये पार्ट हे. वो फॉरमेट् यदि डायरेक्ट्री हे तो ये वाकी एक फाईल् हे. वहां जा तरहसु पॅनोरेमिक् व्यु लियो भयो हे, उतनो पॅनोरेमिक व्यु यहां नहीं हे.

(ॐ स्वतन्त्रक्रीड़ामें साधना निरुपयोगी)

वहां जो स्वतन्त्रक्रीड़ा हे, याके लिये कोई साधनाको प्रतिबन्ध

नहीं हे. या लिये भागवतकार स्पष्ट केह हे के ''**ते नाधीतश्रुतिगणा नोपासितमहत्तमाः. अव्रतातप्ततपसः सत्सङ्गान्मामुपागताः... केवलेन हि भावेन गोप्यो गावो नगा मृगाः. ये अन्ये मूढधियो नागाः सिद्धा माम् ईयुः अञ्जसा..**'' (भाग.पुरा.११।१२।७) उनने न तो कछु पढ़्यो, न कछु काम कियो; ''**अहन्यापृतं निशि शयानम् अतिश्रमेण लोकं विकुण्ठम् उपनेष्यति गोकुलं स्म.**'' (भाग.पुरा.२।७।३१) दिनमें जागते हते और गाय चराते हते. रातमें थकके सो जाते हते. ठाकुरजी उनके साथ थकके सोवे आ गये. जागके उनके साथ गाय चरावे चले गये. उनकु पता ही नहीं चल्यो के ये उनकी जो सांसारिक लोकचर्या हती वो लोकचर्या कैसे एकके आवेसु लीलामें परिवर्तित हो गई! और वामें उनकु कोई साधना करवेकी जरूरत नहीं पड़ी. खाली प्रेज़ेन्स्सु काम चल गयो. ''तुम तसल्ली न दो सिर्फ बैठे रहो. वक्त मरनेका मेरे यों टल जायेगा. वक्त ये कम है मसीहाके रहने ही से मौतका भी इरादा बदल जायेगा.'' यमराजको वहां इरादा बदल गयो. भागवत खुद ये बात केह के दिन और रात में रोज अपनी आयुष्य घटती जावे हे. अरे घटती होयगी जाकी घटती होयगी पर हमारी तो लीला बढ़ रही हे. ये बेवकूफ लोग मोमबत्तीकु फूंक मारके बुझावें हें. अपन् तो जलावें हें बत्ती जनमदिनकी. उनको एप्रोच् नेगेटिव् हे के जो जनम दिन बीत गयो वाकु सब फूंक मार–मारके बुझावें हें. ये जनमके दिनपे दीया क्यों फूंक मार मारके बुझाओ हो! उनको खातो ही ऐसो हे के जनमके दिन फूंक मार मारके दिया बुझावें हें. जितने जनमके दिन भये उतने दिया क्यों नहीं जलाओ, ऐसे क्यों नहीं? तो **कर्मजड आसुर अन्यउपासक भजन धर्मथी हीन.** उनको कछु लफड़ा हे करके वो जनमदिनपे फूंक

मार-मारके दियाकु बुझावें हें. एक पुरानो गाना हतो ''दिया जलाओ जगमग जगमग.'' अपने यहां तो दिया जलावेके गाना गाये जायें. दिया बुझावेको गाना कोईने सुन्यो? ऐसो कोई भी गाना अपने यहां नहीं हे के दिया बुझाओ झटपट झटपट. जो दिया जले हें वो दिया जलवेमें अपन् जनमदिन मना रहे हें.

वामें जो पुरुषोत्तम प्रगट भयो हे, वाने अपने साथ क्या कियो? वाकी लीलाको नेचर क्या हे? वहां बिना साधनाके जीवन्कु लीलामें बदलवेकी लीला हे. जो जैसो जी रह्यो हे, वाकु वैसी लीलामें कन्वर्ट् कर दो. कौनसे ढंगसु? वाको महाप्रभुजीने उदाहरण दियो के डूबते भयेको जो अपनो नहीं होय वाकु रस्सी फेंकके कह्यो जाय के रस्सी पकड़के ऊपर आ जा और अपनो होय तो अपन् खुद कूदके वाकु बचावें, डूबवे नहीं दें. वो जो मॉडेल् हे के भगवान् अपने साथ अपने संसारके अहंता-ममतामें डूबे हे, डूबके अपने साथ तैरे हे और डूबवेके बजाय अपन्कु ये मजा और दिवा दे हे के चलो तैरो. मैं भी तुम्हारे साथ तैर रह्यो हूं. वो अपने साथ कूदके वा स्वीमिंगपूल्में अपन्कु तैरनो ओर सिखा दे हे. वा तरीकेकी लीला हे. यहां साधनाकी लीला नहीं हे. एक खेल हे वहां क्योंके स्वतन्त्रक्रीड़ा हे.

वहां कोई प्रमाणको, कोई साधनके प्रतिबन्धसु बंधके की जावेवाली लीला नहीं हे. या लिये वहां असुरकु भी मारें हें तो मुक्ति दे हें और भक्तकु भी तारें हें तो मुक्ति नहीं दे हें. भक्तकु दर्शन देवेके बाद, उपनिषद् कहते होंयगे तो कहते रहें के वाके

दर्शनमात्रसु **''भिद्यते हृदय ग्रंथिः छिद्यन्ते सर्वसंशयाः क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे.''** (मुण्ड.उप.२।२।८)

मुचुकुन्दने भगवान्सु पूछी के तुम कौन हो? आपने कही के साक्षात् भगवान् हूं. तो वाने मुक्ति मांगी. तो आपने कही के अभी नहीं. अभी आराम कर, राज्य कर. ध्रुवकु भी केह दी के जा छत्तीस हजार साल तक राज कर. मुक्ति दे दो महाराज अब दर्शन दिये हें तो. तो बोले के अभी नहीं. पोस्टपोन् कर रह्यो हूं तेरी प्रार्थना. अब भक्त हे बिचारो. भक्तकु भी ब्रह्माजीकी तरह, ध्रुवकु भी ब्रह्माजीकी तरह मोहड़ापे शंख लगाके ज्ञान दियो हे. अब वा ज्ञानसु वो केह रह्यो हे के महाराज दर्शन, ज्ञान दे दियो तो मुक्ति ओर दे दो. तो बोले के नहीं, अभी नहीं. अभी तो राज कर. स्वतन्त्रक्रीड़ा हे ना! कोई नियममें बंधके चलवेवाली क्रीड़ा नहीं हे.

(ॐ द्विजतनुधारीकी क्रीड़ा माने प्रमाणपंथ पुष्टिसंप्रदाय)

ये द्विजतनुधारी पुरुषोत्तम प्रगट भयो हे या तरीकेकी स्वतन्त्रक्रीड़ा नहीं कर रह्यो हे. वल्लभपंथी बेवकूफ समझते होंय तो भले समझें पर कमसुकम गोपालदासजी ऐसे नहीं समझ रहे हें. ये स्वतन्त्रक्रीड़ा नहीं कर रह्यो हे. ये तो **पूर्णपुरुष प्रमाण पंथा हे, व्याख्याता वेदान्त** हे. और वामें **ग्रंथ सर्वे रसरूप कीधां पोताने सिद्धान्त**. कोई भी रसकी बात, फलकी बात, ऐसी नहीं हे के जो प्रमाणित नहीं होय. कोई भी फलकी बात ऐसी नहीं होय के जाके कॉरेस्पॉन्डेन्स्में कोई साधना नहीं बताई होय. ऐसी साधना जो प्रमाणपंथा आचार्यकु बतानी चहिये. कोई भी फलकी बात ऐसी नहीं

हे के जो कोई प्रमाणसु सिद्ध नहीं होय. जो मनमें फितूर आई वैसे हो गयो, ऐसे नहीं.

वहां कुब्जा और रुक्मणी वाके लिये दोनों बराबर हें. यहां बराबर नहीं हो सकें. वहां पूतना और यशोदा बराबर हें. यहां बराबर नहीं हो सकें. क्यों नहीं हो सकें? क्योंके ये 'पुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीड़ा' नहीं हे. वाको (भागवतको) लॅन्ड्स्केप् बोहोत बड़ो हे. ये फोकस् करके उतने ही जीवन्के साथ लीलाके लिये प्रगट भयो हे के जितने जीवन्कु प्रभुने स्वतन्त्रक्रीड़ा करवेवाले पुरुषोत्तमने पुष्टिमार्गमें वरण कियो हे. उनमें पुष्टिसम्प्रदाय प्रवर्तित करवेके लिये ये पुरुषोत्तमको रूप प्रगट भयो हे, **लीला द्विजतनुधारी.** वा बातकु को–ओर्डिनेट् करके देखो तब बात समझमें आयेगी.

(ॐ द्विज तनुधारी द्वारा प्रवर्तित पुष्टिसंप्रदायकी साधनाको स्वरूप)

या सर्गलीलामें या तरहको लीलाकर्ता हे. या लीलाको अधिकरण क्या हे? महाप्रभुजी खुद या बातमें आज्ञा करें हें के **''भगवानेव हि फलं स यथा आविर्भवेद् भुवि.''** (पु.प्र.म.१७) या सम्प्रदायमें, शायद दूसरेन्के लिये फल न भी होय मायिक ही होय, भगवान् प्रगट भी हो जाये भूतलपे, तो फल होवेके बजाय वो माया हो सके हे. फल होवेके बजाय वो साधना हो सके हे. बोहोत सारे आचार्य, बोहोत सारे व्याख्याता आज भी या बातकु बोहोत जोर–शोरसु नगाड़ा बजा–बजाके कहें हें के भगवान्को अवतार प्रशिक्षण देवेके लिये हे. आइडियल् लाईफ्कु जीवेके लिये प्रशिक्षण देवेके लिये हे. माने भगवान्को भूतलपे प्रकट होनो, फल

नहीं होके एक साधना हे. अब भगवान् तो साधना भी हे, प्रमाण भी हे, फल भी हे, नरक भी हे और स्वर्ग भी हे, सब कछु ही हे. देव भी हे दानव भी हे. अपन् कैसे केह सकें के वो क्या हे और क्या नहीं हे? जो सब कछु हे तो वामें तो सब कछु हे. वो साधना भी हे, दण्ड भी हे. वो फल भी हे और निष्फलता भी हे. वा स्वतन्त्रक्रीड़ामें तो सब कछु हे.

पर यहां जो लीला द्विजतनुधारी पुरुषोत्तम प्रकट भयो हे, वा स्वतन्त्रक्रीड़ा पुरुषोत्तममेंसु **प्रमाणपंथा व्याख्याता वेदान्त** पुरुषोत्तम प्रगट भयो हे, वो तो प्रमाणतन्त्र हे. प्रमाणतन्त्र होवेके कारण वो एक बड़ी मजेदार बात केह रह्यो हे के **''भगवानेव हि फलं स यथा आविर्भवेद् भुवि. गुणस्वरूपभेदेन तथा तेषां फलं भवेत्''** (वहीं) गुण और स्वरूप के भेदसु भगवान्को प्रगट होनो; या तो गुणके रूपसु या तो स्वरूपेण प्रगट होनो या सम्प्रदायमें फल हे. कहीं गुणसु प्रगट हो जाये. वाके गुण दोनों ढंगके हे.

ज्ञान भी वाको एक गुण हे. अपन् वाकु जान रहे हें वो अपनो गुण नहीं हे वो वाको गुण हे, शास्त्र यों केह हे. अपन् जो वाकु चाह रहे हें वो अपनो गुण नहीं हे वो वाको गुण हे. तो अपन्कु वाको ज्ञान हो रह्यो हे वो भी फल हे. अपन् वाकु चाह रहे हें वो भी फल हे. यदि वो प्रगट हो जाय तो वो भी फल हे. ये तीनों चीज फल हें. महाप्रभुजी या बातकु समझा रहे हें के अपन् ज्ञानसु वाकु चाह रहे हें, जान रहे हें, अथवा वाकु ज्ञानसु जानवेके बाद चाह ओर रहे हें तो भक्तिके रूपमें वो भजनीय फल

हे. पर जा तरहसु वो भूतलपे प्रगट हो रह्यो हे वा तरहसु फल हे. यामें एक बड़ी विचित्र कन्डीशन् आ रही हे के भूतलपे प्रकट होतो भगवान्, अपनी मल्टीपल् वॅरायटीके साथ फल हे और वा फलके कारण महाप्रभुजी यों केह रहे हें के वा स्वतन्त्रक्रीड़ा पुरुषोत्तमको भी निरोध भूतलपे भयो हतो. निरोधलीला भूतलपे प्रकट भई हती. **''प्रपञ्चाधिकरणिका सर्वविस्मरणपूर्वक भक्तैकनिरुद्धतारूपा लीला इति निरोधलीला.''**

ऐसे या पुरुषोत्तमके मतमें भी ये बात कायम हे, कॅरीफॉर्वर्ड् हो रही हे वा पॅनोरेमिक् व्युमेंसु के भूतलपे प्रकट होतो भगवान् फल हे. वाकु तुम भज रहे हो के याद कर रहे हो, ये फल हे. वामें वो प्रगट होके कछु जतावे तो वो भी फल हे. यदि वो नहीं होतो होय तो नहीं होय, ये तो वाको हेडेक् हे. अपनो हेडेक् थोड़े ही हे. अपनो हेडेक् क्या हे? या तो वाकु याद करें या वाको भजन करें. **''स्मरणं भजनं चापि न त्याज्यम्.''** (चतु.४) अपने यहां ये फल हे. अपने यहां वा फलताको पिक्चर या तरीकेको हे या साधनाको. ये **व्याख्याता वेदान्त** कु या तरहसु स्फुरित हो रह्यो हे. या लिये गोपालदासजी पहलेसु ही प्रिकोशन् ले रहे हें के निरोध भूमिपे हे. या लिये केह रहे हें **ते प्रकट्यानुं कारण कहिये जो सुरता मन आणो.**

(अ भागवतकी रूपरेखापे आधारित वल्लभाख्यानकी रूपरेखा)

तो कहीं वो भूमि पाछी कोई गड़बड़ाध्यायके रूपमें तो प्रगट नहीं हो जायगी के वो भूमिपे भी प्रगट होवे और अपनकु वो

स्वीकार्य नहीं होवे! तो वाके लिये देखो गोपालदासजीने कितनी चतुराई वापरी हे के भगवान्के चौबीस अवतार, जैसी चौबीस कड़ी यामें हें, तत्त्व चौबीस हें जिनसु भूमि गढ़ी भई हे, भूमिके घटक तत्त्व चौबीस हें. या लिये या आख्यानकी कड़ीयें भी चौबीस हें. वो सर्गलीलामें रॉ-मटीरियल् जो जगत्कु पैदा कियो, वो तत्त्व चौबीस हें. यहां कड़ीयें भी वो चौबीस धर रहे हें. वो वाकी प्रतिनिधि हें सर्गलीलाकी के चौबीस तत्त्व जो रॉ-मटीरियल्के तरीके पैदा किये वो चौबीस कड़ीन्में वा सर्गलीलाकारी पुरुषोत्तम पॅनोरेमिक् व्युमें और द्विजतनुधारी पुरुषोत्तम या पृथ्वीपे, **अवतर्या टाळवा भुविभार**. कैसे वाकु फोकस् करके खींच रहे हें ; वाके लिये वो सिस्टम् इन्ट्रोड्युस् कर रहे हें.

क्योंके वहांके लिये ये बात बता दी गई हती के ''**अशरीरस्य विष्णोः पुरुष शरीर स्वीकारः सर्गः**'' (सुबो.२।१०।२) अशरीर विष्णुको शरीरधारण करनो सर्ग हे. ये आखो युनिवर्स वाको शरीर हे क्योंके वो ब्रह्माण्डविग्रह हे. ब्रह्माण्ड/ युनिवर्सको जो भी कॉम्पोनेन्ट् फॅक्टर् हें, उनकु वाने अपने शरीर तरीके धारण किये. वाके बाद वामें अपनी प्रेज़ेन्स् ओर रजिस्टर् करवाई के देखो मैंने धारण किये हें और कौनसी तरहकी प्रेज़ेन्स्; दो तरहकी प्रेज़ेन्स् होवे हें. एक जैसे अपन् अन्डरग्राउन्ड् छुप जायें जहां अपनी प्रेज़ेन्स् पता नहीं चलती होय. एक प्रेज़ेन्स् ऐसी भी हो सके हे के जैसे लाइट् या बल्ब्में छुपी भई बिजली, बल्ब्को जो भी रंग होय वा रंगकु लेके प्रगट तो होवे हे. यदि पीलो बल्ब् हे तो पीली लाईट्, लाल बल्ब्

हे तो लाल लाईट्, ब्लु बल्ब् हे तो ब्लु लाईट् प्रगट होवे हे. वो जो लाईट्को शरीर (बल्ब्) हे, वा शरीरमेंसु लाईट् (बिजली) प्रगट होवे हे. वा लाईट्कु कॅन्सल् करके प्रगट नहीं होवे हे. वाकु ओ.के. करके प्रगट होवे हे. तू तेरो रूप जता और मैं तेरे रूपके साथ मेरो रूप जता रह्यो हूं. तो जैसे रंगको बल्ब् होय वैसे रंगकी लाईट् प्रगट हो जाये, वा तरीकेसु दो तरहसु शरीर धारण करे. देखो, ये अपनो शरीर कैसे धारण कर रह्यो हे? अन्डरग्राउन्ड्की तरह? नहीं. वा लाईट्की तरह, बल्ब्की तरह. क्योंके अपने अन्दर चेतना हे, जितने भी अपने बाहरके रंग हें, आंख नाक कान हाथ पैर मुंह के उन सब रंगन्में वो चेतना प्रगट हो रही हे. अपन्कु पता ही नहीं चले के ये चेतना हे. माने ' सारी बीच नारी हे के नारी बीच सारी हे' वो कन्फ्युज़न् अपन्कु भी होवे हे के नहीं होवे हे? अपनी आंख हे के चेतना हे? चेतना हे के आंख हे? के आंखमें चेतना हे? कछु सोचो तो पता ही नहीं चले. खोपड़ी खाली हो जाय अपनी सोचते सोचते. कभी ऐसो लगे कभी वैसो लगे. क्योंके लाईट् ब्लु हे के काच ब्लु हे? गुजरातीमें भद्रंभद्रकी कथामें आतो हतो के **"पात्राधारे घृतं के घृताधारे पात्रम्."** या तरीकेको विचार एक तरहसु वेस्टेज् ऑफ् टाईम् अपन्कु लगतो होवे हे, जब अपन् अपने पर्सनल् फीलिंग्पे चॅक् करते होंय तो. वो यहां प्रकट भये चौबीस तत्त्वन्में जिनसु भूमि गढ़ी भई हे. उन चौबीस कड़ीन्में ये लीला द्विजतनुधारी पुरुषोत्तम हे वो वा तरहसु वल्लभाख्यानमें प्रगट भयो हे. आखो ये फॉर्मेट् गोपालदासजीने भागवतसु डिराइव् कियो हे. सर्गलीलाके चौबीस तत्त्व हे जो वहां

रॉ–मटीरियल्के रूपमें प्रोवाईड् कियो गयो हे वामें यह पुरुष अन्तर्यामीकी तरह प्रकट भयो. वो अन्डरग्राउन्ड् सिस्टम्सु अपने अन्दर बैठ्यो भयो हे. ये लाईट्के सिस्टम्सु नहीं पर ये बोहोत खतरनाक हे. सारे काम कराके भीतर छुप्यो रहे हे. पता ही नहीं चले. मैंने दीपक रागवाली बात बताई हती वो वा सिस्टम्को छुपनो हे. स्विच् ऑफ् करके अन्दर घुस जाय महाराज और पता ही नहीं चले, मारामारी चलती रहे. महाराज कहां हें वो हाथमें ही नहीं आवें, दीपक राग गावे अन्तर्यामी. ये दीपक राग नहीं गा रह्यो हे, ये खिलनेवाली रामकली गा रह्यो हे. ये तुम्हारे रमणके रूपमें खिले हे. वो छुपवेवालो दीपक राग नहीं हे पर ये रामकली रागकी लीला प्रगट हो रही हे. तो ये आखो एक पॅटर्न हे. यामें सबसु महत्त्वपूर्ण एक बात ये हे.

(दैवी और आसुरी दोनों प्रभुकी ही अभिव्यक्ति)

एणी प्रकारे सृष्टि द्विधा गुण मिश्रित चाली जाय. ये तो अपन्ने कल मिश्रित होवे हे वाको मॉडेल् भी देख्यो. पर वो **मिश्रित चाली जाय** वामें अपन्ने एक महत्त्वपूर्ण पॉइन्ट्कु टच नहीं कियो, वो ये पॉइन्ट् हे **पर पोतानी व्यक्ति करेवा सृष्टि ते द्विधा प्रकार. दैवी आसुरी बे प्रगटावी प्रभु मन करी विचार.** अब अपन्कु वो दैवी हे के आसुरी हे, कर्मजड़ हे, अन्य उपासक हे, भजनधर्मथी हीन हे, ऐसी ऐसी गाली सुनके लगे के कौन जाने कौन शैतान आ गयो. भगवान् बोहोत अच्छी लीला करनो चाहतो हतो और बीचमें ये कौन आ गयो के ऐसे ऐसे सब पैदा हो गये. ये गोपालदासजी

कितनी सावधानी बरत रहे हें, जो के महाप्रभुजीकी सावधानी हे, वो क्या हे? वो केह रहे हें **पर पोतानी व्यक्ति करेवा सृष्टि ते द्विधा प्रकार.** ब्रह्मने खुदकी अभिव्यक्ति दो तरहसु करी हे. या गलत फहमीमें मत रहियो के यहां कोई शैतान आके पॉल्युशन् कर गयो हे. कोई शैतान पॉल्युट् कर नहीं सके. वाकु खुदकी अभिव्यक्ति दो तरहसु करनी हे. वाकु खुदकु दो तरहसु प्रगट करनो हे. करके **दैवी आसुरी बे प्रगटावी प्रभु मन करी विचार.** एक दैवी होनी चहिये और दूसरी आसुरी होनी चहिये. अब अपनकु लगे के भगवान्में या तरहकी क्रिमिनल् टॅन्डेन्सी क्यों हे? अपनमें होवे तो ठीक हे. अपनो तो बर्थ राईट् हे क्रिमिनल् होवेको. तो वा बातकु थोड़ो ध्यानसु समझो. वा लिये मैंने ये चार्ट बनायो हे. या चार्टकु देखो आप अच्छी तरहसु :

सृष्टि

- **आसुरी – एकमेवाद्वितीयस्य बहुभवनानन्दविषयका (नियति) कर्तुं सामर्थ्य**
- **दैवी – बहुभूतानाम् एकमेवाद्वितीयानन्दविषयका (नियतिस्वातंत्र्य) अन्यथाकर्तुं सामर्थ्य**

आश्रय – बहुभवनअकर्तुं सामर्थ्य

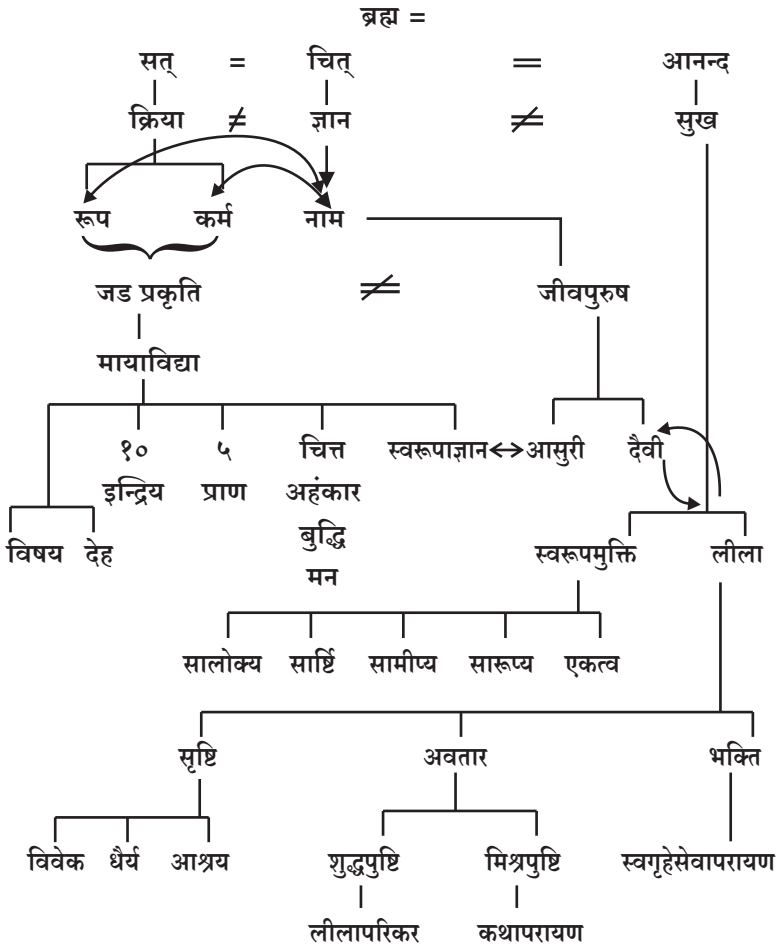

या चार्टकु एक बार ध्यानसु देख लोगे तो गोपालदासजी क्या केहनो चाह रहे हें या सर्ग प्रकरणमें वो सारी बात एकदम स्पष्ट हो जायगी. ईक्वेशन् समझ लो पहले.

आसुरी दैवी सृष्टिको मतलब क्या? **"एकमेवाद्वितीयस्य बहुभवनानन्दविषयका (नियति)"** कर्तुसामर्थ्य- स्वतन्त्रक्रीड़ा है.

(स्वतन्त्रक्रीड़ा माने कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं सामर्थ्य)

ते पुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीड़ा– स्वतन्त्रक्रीड़ाको मतलब क्या? जामें करवेको और नहीं करवेको या अन्यथा करवेको, तीनों तरह करवेको स्वातन्त्र्य है. जहां भी एक तरहको स्वातन्त्र्य खंडित भयो, वहां स्वातन्त्र्य अधूरो रह गयो, पूर्णस्वातन्त्र्य नहीं हे. जा भी काममें अपन्कु ये तीनों तरहके स्वातन्त्र्य हैं, वा काममें अपनो पूर्णस्वातन्त्र्य हे. 'पूर्ण स्वातन्त्र्य'की परिभाषा ये हे के अपन् करनो चाहें तो करें, नहीं करनो चाहें तो नहीं करें, और या ढंगसु नहीं करके कोई और ढंगसु करनो होय तो कछु और ढंगसु करवेकी भी अपन्कु छूट होय तो वा विषयमें अपनो पूर्णस्वातन्त्र्य हे. जहां अपन्कु करवेकी छूट हे पर नहीं करवेकी छूट नहीं हे; जैसे बम्बईके रस्तापे दाई साईडमें गाड़ी चलावेकी तुमकु छूट हे पर बीच रस्तामें गाड़ी रोकवेकी छूट नहीं होय तो अकर्तुं सामर्थ्य नहीं हे. बीच रस्तामें कार पार्क करवेकी छूट नहीं हे. कार पार्क करनो होय तो साईड्में करो. बीच रस्तामें कार पार्क नहीं कर सको. वो छूट नहीं हे तो अकर्तुं सामर्थ्य नहीं हे. वामें अपन् समझ सकें के अपनो पूरो पूरो स्वातन्त्र्य नहीं हे. अब अपन् केह के जैसे अपन् लेफ्ट हॅन्ड्पे गाड़ी चला रहे हें, वैसे राईट हॅन्ड्पे भी गाड़ी चलावे दो. चलाओगे तो आर.टी.ओ. पकड़ेगो. वो तुमकु छूट नहीं हे. लेफ्ट हॅन्ड्पे गाड़ी चलावेकी छूट हे तो कर्तुं सामर्थ्य हे; पर अकर्तुं और अन्यथा कर्तुं सामर्थ्य नहीं हे. जा विषयमें अपन्कु कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथा कर्तुं तीनों सामर्थ्य हैं वा विषयमें अपन्कु पूरी सामर्थ्य हे.

जैसे घरमें तुमकु बैठनो होय तो बैठवेकी सामर्थ्य हे. बैठनो

नहीं होय, नाचनो होय तो नाचवेकी सामर्थ्य हे. नाचनो नहीं होय, उल्टो टंगके शीर्षासन करनो होय तो वाकी भी सामर्थ्य हे, पूरो स्वातन्त्र्य हे. पर रोडपे ऐसो ऊधम करनो होय तो कर सकें? पुलिस तुरंत आके पकड़ेगी के भई क्या चक्कर हे ये! तो कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथा कर्तुं जहां तीनो सामर्थ्य होंय वहां स्वातन्त्र्य पूर्ण हे. जहां भी एकाध स्वातन्त्र्य खंडित भयो वहां अपनो पूरो स्वातन्त्र्य नहीं हे. कछु पार्शियल् स्वातन्त्र्य हे.

(आसुरीसृष्टि–कर्तुं सामर्थ्य)

सो जो आसुरीजीव हे वाकी सिस्टम देखो क्या हे! एकमेवाद्वितीयको जो बहुभवनानन्द हे, ''मैं एक अद्वितीय हूं, मेरे अलावा और कोई नहीं हे.'' पर ''मेरे अलावा कोई नहीं हे'' वामें बोहोत बनवेकी सामर्थ्य हे. मेरेमें बोहोत बनवेकी सामर्थ्य हे. वाके कारण मैं बोहोत बन्यो. अब जाके कारण मैं बोहोत बन्यो तो बोहोत तरीकासु मैं मजा लऊं. बोहोत होवेकी नियति हे वामें एक गायब हो जाये. जब एक बोहोत बन गयो और वामेंसु वो एक गायब हो जाय तो एकको अनुभव होनो बन्द हो गयो. जब एकको अनुभव होनो बन्द हो गयो तो वो एक नियतिकी तरह, डेस्टिनीकी तरह अपनेपे मल्टीप्लिसिटी इम्पोज़् हो जाय. वा मल्टीप्लिसिटीको जो मजा ले रहे हे, आनन्द ले रहे हैं वो सब **कर्मजड आसुर अन्यउपासक भजनधर्मथी हीन**'' हें.

(दैवीसृष्टि–अन्यथाकर्तुं सामर्थ्य)

दैवीसृष्टिकु वो क्या केहनो चाह रहे हें? **बहुभूतानाम्**

एकमेवाद्वितीयानन्दविषयका (नियति–स्वातन्त्र्य) अन्यथाकर्तुं सामर्थ्य. वो वाहीको पार्ट हें. प्रकृतिके चौबीस तत्त्व हें उनसु बनी भूमिपे जैसे आसुरीजीव हें वैसे ये भी जीव हें. वाही भूमिपे रहवेवाले जीवन्को **बहुभूतानाम् एकमेवाद्वितीयानन्दविषयका** नियतिसु स्वातन्त्र्य. वो जो नियति हे –'मैं' बोहोत हो गयो तब तुम एक मोकु नहीं चाह सको हो, एक मोकु तुम जान नहीं सको हो, एक मोकु एप्रोच् कर सको हो, तुमकु तो बोहोतन्कु एटेंड् करनो पड़ेगो. हम कोई द्रौपदी थोड़े ही हें के पांच पाण्डवकु एटेंड् करें! हमारो कोई एक हे. वो एककु एटेंड् करवेके लिये ऐसो जीव बनानो के जो बहुभवन हे वाकु वो एटेंड् करे परंतु बहुभवनकु पोस्टपोन् करके वा एककु एटेंड् करे. प्रभुकी वो अन्यथाकर्तुं सामर्थ्य हे. वो जीवको रूप धारण कर सके.

(आश्रय–अकर्तुं सामर्थ्य)

अकर्तुंसामर्थ्यको मतलब क्या के सृष्टिके पीछे जो आश्रयरूप हे जो बहुभवनको कर्तुम् अकर्तुं सामर्थ्य हे के बहुभवनको सामर्थ्य पोस्टपोन्. फिर पाछो सबकु एब्सोर्व कर लियो. फिर वो बहुभवन अकृत हो गयो वो वाकी अकर्तुंसामर्थ्य हे.

(सर्गलीला)

दूसरे चार्टमें देखो, ब्रह्मको सत् चित्के बराबर हे. चित् आनन्दके बराबर हे. पर जब वाने बहुभवनको सामर्थ्य प्रकट कियो वा बखत सत्मेंसु क्रिया प्रगट हो गई और चित्मेंसु ज्ञान प्रकट हो गयो और आनन्दमेंसु सुख प्रकट हो गयो. अब चित् बराबर सत् हे

और सत् बराबर आनन्द हे. पर क्रिया बराबर ज्ञान नहीं हे. क्रिया कछु और बला हे. ज्ञान कछु और बला हे. मोटर् चले हे पर वाको ज्ञान नहीं हे. बोहोत सारे इलेक्ट्रिक् एपरेटस् ऐसे हें के उनकु ज्ञान हे पर चलें नहीं हें. तो जहां क्रिया हे वहां ज्ञान नहीं हे और जहां ज्ञान हे वहां क्रिया नहीं हे. और जहां क्रिया और ज्ञान होंय वहां सुख हे के नहीं? अपन् या वीडियो कॅमेराकु पूछें के भई तोकु सुख हे तो वो क्या केह पायेगो? यामें वाकु काहेको सुख हे? सुखदु:खको कोई सवाल ही नहीं हे. हम तो ब्राह्मिकी स्थितिमें भैंसकी तरह हे. न तो कोई सुख हे और न तो कोई दु:ख हे. ये सब चीज यहां सेग्मेन्टेड् हो गई. हर चीज बंट गई. जो सच्चिदानंद ब्रह्म एक युनिफाईड् होमोजीनियस् हतो वो सेग्मेन्टेशन्में बंट गयो. क्रियामें ज्ञानमें और सुखमें.

अब जो क्रिया हे, वामेंसु दो चीज पैदा होवे हें. क्रिया जब बोहोत इन्टेन्सीफाई होवे हे तो वो रूप धारण करे हे. और वोही क्रिया जब चेतनामें जावे हे तो वो कर्मको रूप धारण करे हे. उनको या तरीकेसु नामके और रूपके साथ जीवमें इन्टरएक्शन् होवे हे. ये रूप और कर्म के कारण जड़ प्रकृति पैदा हो रही हे. और नामके कारण जीव पैदा हो रह्यो हे, वो जड़प्रकृति और जीवपुरुष पाछे एक दूसरेके बराबर नहीं हें. जड़प्रकृति कछु अलग हे. जाकु अपन् मॅटर् केह हें. मॅटर् कोई अलग चीज हे और ये जो जीवपुरुष हे हरेक चीजकु माईन्ड् करवेवालो; फॉर् गुड् और फॉर् वर्स, वो अलग हे.

वा जीवपुरुषके पाछे दो भेद हो रहे हें, आसुरी और दैवी. जो

जड़ प्रकृति हे वामेंसु एक माया हे और एक अविद्या. ये सारी बात इनने बताई हें. ये तो मैं चार्टमें बता रह्यो हूं. सर्गलीलाको विजुअल् एक पूरो पिक्चर् मिल जाय. सर्गलीलाको पिक्चर् ये कैसे ड्रॉ कर रहे हें वाकु देखो. एक माया हे. वा मायामेंसु पहलो विषय पैदा होवे हे. देह इन्द्रिय प्राण चित्त अहंकार बुद्धि मन सब वा विषयसु पैदा हो रहे हें. मायामें एक अविद्या वाको और आस्पॅक्ट् हे.

वा अविद्याके कारण क्या होवे हे; ये जो आसुरी जीव हे वाकु अपनी रियलिटीको भान नहीं रह जाय के 'मैं' क्या हूं. वाके कारण वा हकीकतकु वो समझे नहीं हे. ये मल्टीप्लिसिटीकी हकीकत हती नहीं, ली भई हे. वासु वो केवल मल्टीप्लिसिटीकु ही एन्जॉय् करे हे, युनिटीको एन्जॉय् नहीं कर पावे. वो कर्मजड़ हे, आसुर हे, अन्य उपासक हे, भजनधर्मसु हीन हे. 'आसुर'को मतलब भगवान्की क्रियाशक्तिमेंसु पैदा भयो वो आसुरी भाव हे, जाकु ये केह रहे हें के **पर पोतानी व्यक्ति करेवा**. अब **पोतानी व्यक्ति** कैसे भई? क्रियामेंसु और ज्ञानमेंसु **पोतानी व्यक्ति** भई हे. **पर पोतानी व्यक्ति करेवा सृष्टि ते द्विधा प्रकार. दैवी आसुरी बे उपजावी प्रभु मन करी विचार.** कोई शैतानने कछु कियो ही नहीं हे. सब या तरीकेके सिस्टम्में काम भयो हे. 'आसुरी' शब्द गाली–गलौचमें वापर्‌यो जा रह्यो हे यासु अपन्कु लगे के कछु गलत बात हो गई हे. कछु गलत बात नहीं भई हे. वो अपनी अभिव्यक्ति या तरहसु कर रह्यो हे. वो अपने आपकु क्रियाके रूपमें व्यक्त कर रह्यो हे. वो अपने आपकु ज्ञानके रूपमें व्यक्त कर रह्यो हे. वाने प्रोग्राम्के तहत दो सिस्टम् सोची हें. कोई मेरी युनिटी एन्जॉय् करे और कोई मेरी मल्टीप्लिसिटी एन्जॉय् करे. तो जो वाकी

मल्टीप्लिसिटीकु एन्जॉय् करे वाकु वाने 'आसुरी' नाम दे दियो के ये आसुरी हे. वो मल्टीप्लिसिटीकु एन्जॉय् करवेके लिये कर्ममें तो जड़ होनो ही पड़ेगो ना!! कर्ममें जड़ नहीं होयगो तो मल्टीप्लिसिटी कैसे एन्जॉय् करेगो! वाकु कर्मजड़ होनो पड़ेगो करके वो मल्टीप्लिसिटी एन्जॉय् कर रह्यो हे.

दूसरेकु वाने कह्यो के ऑल राईट!! तुम्हारो रोल् क्या हे? तुम मेरी युनिटी एन्जॉय् करो. तुम सब हो मेरी मल्टीप्लिसिटीमें ही. मेरी क्रियेटेड् मल्टीप्लिसिटीकी फील्ड्में तुम रहवेवाले, कोई मल्टीप्लिसिटीकु एन्जॉय् करो, कोई युनिटीकु एन्जॉय् करो. जो युनिटीकु एन्जॉय् करे, वाको नाम वाने 'दैवी' कर दियो हे. पाछे दैवीके दो प्रभेद कर दिये हें. कोईकु वो स्वरूपसु मुक्ति दे हे. पांच प्रकारकी मुक्ति हें– सालोक्य सार्ष्टि सामीप्य सायुज्य सारूप्य. तो वहां वो स्वरूपको आनन्द देवे हे. वो यों कहे के तुम मेरी युनिटीकु एन्जॉय् करो. मेरे लोकमें एन्जॉय् करनो होय तो मेरे लोकमें एन्जॉय् करो. मेरी ग्लोरीमें एन्जॉय् करनो होय तो मेरी ग्लोरीमें एन्जॉय् करो. मेरी प्रोक्सिमिटीमें एन्जॉय् करनो होय तो मेरी प्रोक्सिमिटीमें एन्जॉय् करो. मेरे जैसे बनके एन्जॉय् करनो होय तो मेरे जैसे बनके एन्जॉय् करो. मेरेमें मर्ज होके एन्जॉय् करनो होय तो मेरेमें मर्ज होके एन्जॉय् करो. इन सबसु मेरी युनिटीकु एन्जॉय् करो. वाने एक और दूसरो मॉडेल् क्रियेट् कियो हे. अरे भई! मोकु एन्जॉय् मत करो. मेरी लीलाकु एन्जॉय् करो. अन्तर समझमें आयो?

लीला एन्जॉय् करवेके पाछे तीन मॉडेल् बना दिये हें. लीला

कौन कौनसी हें? महाप्रभुजी केह हें एक तो वाकी सृष्टिकी लीला हे, दूसरी वाकी अवतारलीला हे और तीसरी वाकी भक्तिलीला हे. भक्तिके रूपमें वो तुम्हारे दिलमें प्रगट हो रह्यो हे. अपन् यों समझ रहे हें के अपन् भक्ति कर रहे हें, अपने अहंकारके कारण. महाप्रभुजी अपन्कु ये समझानो चाहें हें के नहीं, जा बखत तुम भगवान्की भक्ति कर रहे हो, वा बखत भगवान् तुम्हारे दिलमें लीला करवेके लिये प्रगट हो गयो हे. जब तुमकु भगवान्में भक्ति जागी, वा बखत भगवान् तुम्हारे दिलमें कोई लीला करवेके लिये प्रगट हो गयो हे. अब तुम थोड़ी खानखोद करके वाकु बाहर काढ़ो तो वो बाहर भी आ जायगो, नहीं तो पड़्यो रहेगो अन्दर. जैसे अपन् बीज बो दें हें, बीजभाव पड़्यो रहे. कोई दिन बरसात पड़ेगी तो खिलके बाहर आ जायगो. अन्यथा तब तक वो छुप्यो भयो रहगो, इतनो सो अन्तर हे. वाके सीचन करवेके उपाय जैसे सृष्टिकी लीला हे वाकु कॉरस्पोन्ड् करवेके लिये विवेक धैर्य और आश्रय; वो माहात्म्यज्ञानको उपाय अपन्कु स्वतन्त्रक्रीड़ामें दिखलाई दे रह्यो हे.

अवतारलीलायें पाछी शुद्धपुष्टि और मिश्रपुष्टि की तरह हें. तो जो शुद्धपुष्टिकी लीला हे वो तो लीलापरिकर हे. वहां साधना हे ही नहीं कुछ. **''ते नाधीतश्रुतिगणा नोपासितमहत्तमाः अव्रतातप्ततपसः सत्सङ्गाद् माम् उपागताः.. केवलेन हि भावेन गोप्यो गावो नगा मृगाः. ये अन्ये मूढधियो नागाः सिद्धा माम् ईयुः अञ्जसा''** (भाग.पुरा.११।१२।७-८) अब वो खुद आके बाहर खड़ो हो जा रह्यो हे तो अपन् क्या कर सकें? पर जहां वो बाहर आके प्रगट नहीं हो रह्यो हे वहां मिश्रपुष्टि हे तो वा अवतारलीलाकु रेस्पॉन्स्

अपन् कैसे दे सकें हें, कथाको. अपन् कहां ठाकुरजीके साथ द्वापरमें रास खेलवे जायेंगे? ये कात्यायनीव्रतके नामपे उलटी पट्टी पढ़ाके सबकु केह दियो के तुम कात्यायनीव्रत करो. तुम यहां साड़ियें टांग दो तो भगवान् आके चोर लेगो. अरे! कोई भगवान् आके तुम्हारी साड़िये नहीं चोर रह्यो हे! तुम्हारी साड़ीमें इतनो दम ही नहीं हे. बेवकूफ हो तुम लोग! तुम्हारी साड़ी चोरवे आयगो वो! तुम लीलाके परिकर हो के कात्यायनीव्रत करोगे तो तुम्हारी साड़ी चोर जायगो? काहेकु चोरेगो साड़ी? वानें कईन्की अक्कलकी साड़ी चोरके रखी हें, तो वो काहेकु शरीरकी साड़ीकु चोरेगो? बेवकूफ बनावें अपन्कु. जो लीलापरिकर हे, वाके साथ वो सारी लीला करेगो बिना कोई साधनाके. पर वा लीलाकु तुम कथापरायण करते होगे तो वाको कैसो लीलात्मक स्वभाव हे, वाको कैसो एन्जोयफुल् नेचर् हे, कैसो तूफानी नेचर् हे, तुमकु क्या पसन्द आ रह्यो हे? वा तरीकेकी सारी लीलान्के मल्टीपल् मूड्स् तुमकु वहां अवेलेबल् मिलेंगे, कथामें वाकी अवतारलीलाकु वाकु रेलिश करवेके लिये.

जो भी अवतारलीला हे, वो कथाके माध्यमसु रॅलिशेबल् हे और जो भक्तिकी रूपलीला हे, वो स्वगृहमें सेवापरायण होके वाकी रूपलीला हे. माने **''भगवानेव हि फलं स यथा आविर्भवेद् भुवि. गुण-स्वरूप-भेदेन तथा तेषां फलं भवेत्.''**(पु.प्र.म.१७)

(भक्तिमार्गी जीवकी स्वतन्त्रताको स्वरूप)

ये जो आखी सिस्टम् हे वा सिस्टम्कु देखो गोपालदासजी केह रहे हें **एनी प्रकारे सृष्टि द्विधा गुणमिश्रित चाली जाये.**

भक्तिमार्गी जीव स्वतन्त्र केवळ भक्त न थाय. याको मतलब गोपालदासजी अपन्कु ये समझानो चाह रहे हें के स्वतन्त्रता वाने काहेमें प्रदान करी हे? नियति हती के तुम मल्टीप्लिसिटीमें पैदा भये हो अब तुम वा मल्टीप्लिसिटीमें बंधे भये हो, तो वा मल्टीप्लिसिटीसु तुमकु एग्ज़म्प्ट् कियो जा रह्यो हे. वो जो एग्ज़म्प्शन् हे वो स्वातन्त्र्य हे. वो मल्टीप्लिसिटीके जो रूल्स् एण्ड रेग्युलेशन्स् हें उनसु तुमकु एग्ज़म्प्ट् कियो जा रह्यो हे, करके अपने यहां अनन्यासक्ति, अनन्याश्रय इन सब बातन्कु अपने प्रोग्राम्में लायो जा रह्यो हे. क्योंके अपन् मल्टीप्लिसिटीके बन्धनसु मुक्त हें. मल्टीप्लिसिटीके बन्धनमें बंधे भये नहीं हें. वो आखी बात बतावेके लिये जो अपन्ने ऊपर चार्ट देख लियो. तो वासु सारी बात समझमें आ जायेगी. वामेंसु अपन्कु स्वतन्त्र कर दियो हे.

जैसे गाड़ीको गियर् बदलवेके लिये क्लच्सु छुट्टो कर दियो जाय, क्लच् दबाते ही गियर् छुट्टो हो जाय, फिर वाकु जा गियर्में डालनो होय वामें डालो. वो क्लच् दबाके अपनी मल्टीप्लिसिटीको जो गियर् हे वामेंसु अपन्कु छुट्टो कर दियो. अब तुम डिसाईड् करो के गियर्कु कहां डालनो हे? फर्स्टमें के सॅकण्डमें के थर्डमें के फोर्थमें के बॅक्में डालनो हे के नहीं डालनो हे. कतुर्म् अकर्तुम् अन्यथा कर्तुं सामर्थ्य, एक मिनी सामर्थ्य तुम्हारेमें डाल दी हे के तुमकु छोला भोग धरने हें के छप्पनभोग धरने हें, तुमकु गुंजामाला धरनी हे के हीरा मोती जवाहरातके आभूषण धरने हें, तुमकु केलाके छिलका भोग धरने हें के तुमकु केला भोग धरनो हे. माखनभोग धरनो हे के खाली मिश्री धराके टिलली टिलली कर देनी

हे, सब भक्तिमार्ग में **जीव स्वतन्त्र केवळ भक्त न थाय.** खाली भक्ति तुमकु नहीं करनी हे वाके लिये ये सारी फ्रीडम् तुमकु प्रोवाईड् कर दी हे. पानीको एक गिलास भोग धर दो ना! भक्तिमार्गी जीव स्वतन्त्र केवल भक्त न थाय. वो बॉन्डेड् मल्टीप्लिसिटीको जो बॉन्ड् हतो वासु तुमकु एग्ज़म्प्ट् कर दियो हे. वा कॉन्ट्रेक्ट्सु तुमकु फ्री कर दियो गयो हे. ये बात समझा रह्यो हे रूपाल गांवको व्यक्ति. ये आखी सिस्टम हे उनकी. सर्गलीलामें क्या रॉ-मटीरियल् हे वो तुमकु अच्छी तरहसु समझमें आ जायगो.

(पूर्णपुरुष प्रमाणपंथा व्याख्याता वेदान्त)

या तरीकेके रॉ-मटीरियल्की अवेलेबिलिटीमें एक आचार्यकी जरूरत हे के जो ऐसी साधना बतावे, द्विजतनुधारी जो पूर्ण पुरुष प्रमाण पंथा व्याख्याता वेदान्त. माने वाकी जो पॅनोरेमिक् व्युवाली वाईड् एन्गल्की लीला हे वाकु कॅन्सल् किये बिना, वाकु इन्टॅक्ट् रखते भये वामेंसु कछु ऐसी बात लावे. एक बात समझो के सागरकु खाली करवेको नहीं हे. पेड़कु नौंच देवेको नहीं हे. पेड़ पेड़की तरह कायम रहे और वामेंसु जो फल चहिये तुमकु वो फल तुम ले सको. सागर सागरकी तरह कायम रहे. वाकु खतम करके मोती नहीं निकालनो हे. Let the aqua culture remain where it is but can you find pearl there or not? बस ये आखो इश्यु हे.

पेड़कु पेड़ रहवे दो, वापे फल उगवे दो, वापे फूल उगवे दो, वामेंसु तुम अपनी आवश्यकतानुसार एकाध कोई फल, एकाध कोई

फूल चुन पा रहे हो के नहीं चुनवेकी तुम्हारी तैयारी हे? वो तैयारी **भक्तिमार्गी जीव स्वतन्त्र केवळ भक्त न थाय.** वाकी मॅटाफिज़िकल् ईकोलॉजीकु मेनटेन् करते भये; प्रमाणसु बराबर वाकु समझते भये वा ईकोलॉजीकु, **व्याख्याता वेदान्त** बने ऐसे एक आचार्य लीलाद्विजतनुधारी पुरुषोत्तमकी जरूरत हती. वो भगवान्कु फील् भई हे. वाके लिये बेसिक् डिफरेन्स् कहां आयो? मैंने जैसे कल आपकु बतायो के कई गुजराती टीकाकार वो भागवत और वल्लभाख्यान को कॉन्ट्रास्ट् विचारे हें. मैं कॉन्ट्रास्ट् नहीं विचारूं हूं वाको कारण ये हे कि कॉन्ट्रास्ट् देखनो चाहु नहीं. हो सके हे कॉन्ट्रास्ट्, ऐसी बात नहीं हे; पर यामें कॉन्ट्रास्ट् देखवेको नहीं पर यामें देखवेको ये हे के कोई पॉइन्टपे फोकस् कैसे कियो गयो हे बॅकग्राउन्ड्के. वा बॅकग्राउन्ड्पे फिगर्कु कैसे फोकस् कियो गयो हे? ये देखवेकी वामें खास आवश्यकता हे. वो जब देखोगे तब पता चलेगो के इनकु ऐसे फील् हो रह्यो हे. एक या तरीकेको वा बखत जो पुष्टिमार्ग हतो वो भगवान्के स्वरूपसु गवर्न हो रह्यो हतो. या बखत वाक्पतिकी वाणीसु, उपदेशसु गवर्न होवेवालो एक पुष्टिसम्प्रदाय होनो चहिये. जाकु श्रीहरिरायजी कहें हें **''नाश्रितो वल्लभाधीशो न च दृष्टा सुबोधिनी. नाराधि राधिकानाथो वृथा तज्जन्मभूतले.''** (जन्मवैफल्यनिरूपणाष्टकम्-१) वाक्पतिकी वाणीसु गवर्न होती भयी एक नयी वॅरायटी पुष्टिमार्गकी और पुरानी जो द्वापरलीलामें पुष्टिमार्गकी हती वो कोई अलग वॅरायटी हती. वामें कई उपद्रव हते. और उन उपद्रवन्कु सम्भालवेवालो **श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीडा** वहां मौजूद हतो. यहां वा पुरुषोत्तमकी जरूरत नहीं हे. यहां पुष्टिमार्गकु मॅनेज् करवेके लिये कौनसे पुरुषोत्तमकी जरूरत हे

पूर्णपुरुष प्रमाणपंथा व्याख्याता वेदान्तकी, खाली व्याख्याता वेदान्तकी नहीं, **ग्रन्थ सर्वे रसरूप कीधां पोताने सिद्धान्त.** ऐसे ग्रन्थ प्रगट करके जामें वाकी रसरूपता कॅन्सल् ना हो जाय, पूर्णपुरुष स्वतन्त्र होवेके कारण वाकी जो रसरूपता हे वो भी कॅन्सल् ना हो जाय, वा रसरूपताके कारण वाकी प्रमाणरूपता खण्डित न हो जाय. प्रमाणरूपता और रसरूपता दोनोंन्को एक युनीक् बॅलेन्स् करवेवालो और अपनी वाणीसु वाकु समझावेवालो. न केवल वाणीसु समझावेवालो पर अपनी लाईफ्में इम्प्लीमेन्ट् करवेवालो, वा तरहको उपदेश देवेवालो, वा तरीकेको **"आचिनोति हि शास्त्राणि स्वाचारे अपि स्थापयति अपि यस्माद् उपदिशति अन्यान् तम् आचार्यं प्रचक्षते."** वो आचार्य रूपी एक अवतारकी जरूरत हे. वो **''आचार्यचैत्यवपुषा स्वगतिं व्यनक्ति''** (भाग.पुरा.११।२९।६) वो एक अवतारकी जरूरत हती. पहले पुष्टिमार्ग स्वरूपसु कन्ट्रोल् हो रह्यो हतो, वाकु अब उपदेशसु कन्ट्रोल् करवेवाले आचार्यकी जरूरत हे पुष्टिसम्प्रदायकु. वा बातकु फोकस् करके गोपालदासजीने आखो ये सर्गलीलाको वर्णन चौबीस कड़ीन्में कियो हे. कल क्योंके टाईम् नहीं हतो करके नहीं केह पाये पर ये बात खास समझवेकी हती.

(मायादासी भक्तिकी सेवामें)

या लिये वो केह रहे हें के **श्रीपुरुषोत्तमे वळी विचार्युं हवे प्रकार शुं करिये. म्हारी सेवा अने कथा रस निरूपवा तनु धरिये.** ये तनु धरिये प्रथम (तृतीय) स्कन्धको विषय हे. पहले मटीरियल् तो सप्लाई करो. तो भगवान्की सेवाको मटीरियल् होनो चहिये. भगवान्की कथाको मटीरियल् होनो चहिये. भगवान्की सेवाको

मटीरियल् कहांसु आयगो? वो मायाविद्यासु आयगो. भगवान्की सेवा करवेकी जो अन्डरस्टॅन्डिंग् हे वो लीलाकथासु आयगी. उन दोनोंन्कु क्लब् करके; या लिये महाप्रभुजी निबन्धमें आज्ञा करें हें के जाकी ज्ञानसु मुक्ति होवे हे, वाकु स्वरूपेण आनन्द मिले हे पर वाके देह-इन्द्रियादि सब व्यर्थ चले जायें हें. जाकु भक्ति मिले हे वाकु तो इन ही देह-इन्द्रियादिन्सु माने वो मायाविद्याके जितने भी प्रोडक्ट् हें उनकु भगवान्के साथ रॅलिश् कर सके हे. वाको एक पूरी तरहको युनिफिकेशन्को प्रोग्राम् हे. मायाविद्या जो दासी और जो वाकु पसन्द आ रही हे भक्तिसुन्दरी **बे मूरत प्रगटावी, भक्तिसुन्दरी अने मायादासी.** अरे! समझो के भक्ति वाकी रानी होयगी तो वाके साथ बाजूमें बैठेगी. घरको काम कौन करेगो? वाकु मायाकी तरहसु घरके काममें लगा दोगे तो घरको काम करके वाके नख वख खराब हो जायेंगे, हाथ पैर खराब हो जायेंगे, फेस् बिगड़ जायगो घरको कचरा साफ करते करते! तो भक्तिसुन्दरीकु तो वाही तरहसु पेम्पर् करके रखनो पड़ेगो ना! वासु कोई घरको काम लियो जायगो!!

कोई इन्टरव्युमें लड़काने लड़कीकू पूछी के "तुमकु रसोई बनानी आवे?" वाने कही के "रसोई बनावेवाली चहिये के कपडा धोवेवाली चाहिये के वाईफ् चहिये?" ये शादीको प्रपोज़ल् हे. अरे भई! वाईफ्की कछु तो डिग्निटी होयगी के नहीं होयगी?

दरिद्रके यहां नहीं होयगी भले. पर जो भक्तिसुन्दरी हे और मायादासी अवेलेबल् हे तो वाईफ्सु घरको काम काहेकु लेनो! वाकु छुट्टी काहेकु छोड़नी के यहां वहां भागे? वासु घरको काम लो.

वो घरको काम तो लियो जा रह्यो हे. **"दारा आगार पुत्राप्त वित्तेहापराणि"**, घरको काम करवेपे मायादासीकु लगा दियो कामपे. "नन्दनन्दन कर घरको ठाकुर आपु होय रहे चेरो." और मायादासी भी अपने साथ काम कर रही हे. ये वो सिस्टम् हे, ये गाली-गलौच नहीं हे. लीलाकी तरह वाकु देखोगे तो जो ये अवतार प्रगट भयो हे, वो कौनसी तरहकी लीला कर रह्यो हे; मायाकु वो दासी बना रह्यो हे. दासीसु वो सेवा करवा रह्यो हे, कौनकी? भक्तिकी.

हम गुसांई बालकें आजकल भक्तिकु मायाकी दासी बनाके करवा रहे हें. वो कथा एक दूसरी प्रगट पुरुषोत्तमकी लीला हे. या लीलाको बिचारे गोपालदासजीकु ख्याल भी नहीं होयगो. भोले होंयगे, यासु इनकु पता ही नहीं होयगो?

भक्त जीवनां भाग्य विस्तर्‌या इच्छा करी हरि सार. तेणे हेते आपो पे प्रकट्‌या श्रीवल्लभराजकुमार. पूर्णब्रह्म श्रीलक्ष्मणसुत पुरुषोत्तम श्रीविट्ठलनाथ. श्रीगोकुलमां प्रगट पधार्‌या स्वजन कीधां सनाथ. ये जो सेट्‌अप् हे, यामें जो बात गोपालदासजी बतानो चाह रहे हें के जा तरहको कोई नित्यलीलापरिकर हे, ये सारी बात बता दी हे वहां. वहां वृन्दावन भी हे, वहां वन भी हे, वहां गिरिराज भी हे, वहां गाय भी हें. वोही पाछो लेके फिर ये आचार्य प्रगट भयो. **गोकुलमां प्रगट पधार्‌या स्वजन कीधां सनाथ.** 'स्वजन' माने मनोरथी, मनोरथ करावेवाले सेठिया नहीं. 'स्वजन' माने ठाकुरजीकी घरमें सेवा करवेवाले सेवाकथापरायण जन. वो महाप्रभुजी गुसांईजीकु स्वजन लग रहे हें. मनोरथके और भागवतकथाके

यजमान बनवेवाले दुष्टजन नहीं. ये आखो सर्गलीलाको मटीरियल् हे. जाकु गोपालदासजीके दृष्टिकोणसु अपने आचार्यने अपने स्वरूपसु गवर्न कियो हे, समझायो हे. ये कल छूट गयो हतो बता नहीं पायो हतो; आज अपन्कु द्वितीयाख्यानपे आनो हे.

प्रश्नोत्तर

प्रश्न : I had some queries. Virtual reality, is it not reality in itself? It is like you said that it is mind's creation. i.e. going to Singapore or eating sweets in thoughts, is virtual reality?

उत्तर : It is not reality in reality itself. Let us consider all of it's issues one by one. Virtual reality has its own reality which we can not deny. Is it mind's creation? अब ऐसो हे के यदि वर्च्युअल् रियालिटी माईन्ड्को क्रियेशन् होय तो अपनो मन कहीं अलग चल्यो गयो और भटक गयो तो वर्च्युअल् रीयालिटी गायब हो जानी चहिये पर वर्च्युअल् रीयालिटी गायब तो नहीं होवे हे. वर्च्युअल् रीयालिटीकी खुदकी भी एक रीयालिटी हे. एक अर्थमें माईन्ड्को क्रियेशन् हे भी. एक मॅन्टल् रीयालिटी और दूसरी नेचरल् रीयलिटी. बोहोतसे लोगन्की ये धारणा हे के जो मॅन्टल् रीयालिटी हे, वो नेचरल् रीयालिटीसु कछु अलग हे. जब भी अपन् ऐसे केह हें, दूसरे सिस्टम्में जो कछु भी वाकी जस्टिफिकेशन् या प्रिसपोज़ीशन् होंय पर अपने सिस्टम्में वाकु देखें तो एक शुद्ध बात ये समझ सकें हें के तुम क्यों ऐसो मान रहे हो के माईन्ड् तुम्हारो नेचरल् नहीं हे? एक माईन्ड ही तो तुम्हारे पास

हे, तुम्हारे नेचर्‌की तरह वाकु भी तुम अन्‌-नेचरल्‌ मानोगे तो तुम खुदकु गाली दे रहे हो. माईन्डकु अन्नेचरल्‌ कहके फायदा क्या होयगो? सो यदि माईन्ड खुद नेचरल्‌ हे तो मॅन्टल्‌ रीयालिटी अन्नेचरल्‌ तो हो नहीं सके. पहले ये बताओ के माईन्ड्‌ नेचरल्‌ हे के नहीं? माईन्ड्‌ नेचर्‌को प्रोडक्ट्‌ हे के नहीं? यदि नेचर्‌को प्रोडक्ट नहीं हे तो कौनने याकु प्रोड्‌यूस्‌ कियो? अब वा नेचर्‌की कछु भी परिभाषा करो तुम. मटीरियालिस्टिक्‌ करो, आईडियालिस्टिक्‌ करो, स्पिरिच्युयालिस्टिक्‌ करो, तुमकु नेचर्‌की जो परिभाषा करनी होय; पर जो भी नेचर्‌ हे, वाको प्रोडक्ट्‌ यदि माईन्ड्‌ भी होय तो वाके जितने भी सॅकन्ड्री प्रोडक्ट्‌ हें वो भी नेचुरल्‌ ही होंयगे. संस्कृतमें एक 'ब्राह्मण परिव्राजक न्याय' हे. इंग्लिशमें वाकु 'लेडीज़्‌ जेन्टलमॅन्‌ एण्ड चेयरमॅन्‌' कहें हें. जैसे चेयरमॅन्‌ न कोई लेडीज़्‌ होवे, न जॅन्टलमॅन्‌ होवे पर जमात भाई कोई थोडे होवे! जब लेडीज़्‌ एण्ड जॅन्टलमॅन्‌ केह दियो तो वामें चेयरमॅन्‌ तो आ ही गयो के नहीं? क्यों वाकु अलगसु कह्यो जाय क्योंके बाकी सब साधारण लेडीज़्‌ साधारण जेन्टलमॅन्‌ हें. उनसु वाकी स्टेटस्‌ कछु स्पेशल्‌ हे. ऐसे जो नेचुरल्‌ प्रोडक्ट्‌स्‌ हें उनसु ज्यादा माईन्ड्‌की कछु स्पेशल्‌ स्टेट्‌स्‌ होय तो वा अर्थमें वाकु अलगसु रेफर्‌ कर सकें के ये नेचरल्‌ नहीं हे. मतलब सिर्फ नेचुरल्‌ नहीं हे, In addition to being natural it has its quality of being mentle too. अन्नेचरल्‌ तो हो नहीं सके. सो वर्च्युअल्‌ रीयालिटी यदि मॅन्टल्‌ क्रियेशन्‌ हे तो वाके दो मतलब हो सकें. माईन्डने नेचर्‌में क्रियेट्‌ करी वो रीयालिटी अथवा माईन्ड्‌ने अपने भीतर खुद क्रियेट्‌ करी वो रीयालिटी.

प्रश्न : I want to just ask you that books like Harry Potter are being made up in mind, would you consider that ? That is like magic. Is this question troubling you too?

उत्तर : Let me first explain the background then I will deal with your question. जो मॅन्टल् रीयालिटी हे वाके दो स्वरूप हो सकें हें माईन्डके द्वारा नेचर्में क्रियेटेड् कोई रीयालिटी; जो नेचर्में अपने आप क्रियेट् नहीं हो सकती हती, पर कोई इन्टेलिजेन्ट् माईन्ड्ने या कोई नॉनइन्टेलिजेन्ट् माईन्ड्ने; mind can be intelligent and unintelligent also; माईन्ड्ने नेचर्में जो रीयलिटी क्रियेट् करी हे, ऐसी रियेलिटी. वा स्थितिमें, जैसे याको सवाल हे के हेरी पॉटर्के जो नोवल् हें, वाको लेखक जब तक लिखे नहीं हे, पब्लिश् नहीं करावे, तब तक वो नोवल् वाके माईन्ड्में हे, तब तक वो मॅन्टल् रीयलिटी हे. एक बार जब वो पब्लिश् हो गई ओन् पेपर, it becomes natural reality, how to deny; it can be read, it can be transferred, it can be stored , it can be all that we can do with natural phenomenon, we can do with this also. Then It is natural and not really mentle. जब तक माईन्ड्के भीतर हे, अन्स्पोकन् वर्ड् हे वो मॅन्टल् हे. स्पोकन् वर्ड् मॅन्टल् नहीं रह्यो. वो तो सबकी प्रोपर्टी हो गई. वो मेरी नहीं रही. अन्स्पोकन् वर्डपे मेरी मोनोपोली हे. जब तक कोई ब्रेन्की मोर्फोलॉजी न करे. पर स्पोकन् वर्ड् तो सबके द्वारा शेयर् हो सके हे. वो पब्लिक् हो गयो. पब्लिक् प्याऊकी तरह. धर्मशालाकी तरह. जाकु वापरनो हे, जैसो वापरनो हे वैसो वापर सके. स्पोकन्, पब्लिश्ड्, रिटन्, एक बार

तुम याकु मटीरियल् फॉर्ममें कन्वर्ट् कर दो तो ये पब्लिक् प्रोपर्टी हो जाय हे. ये फिर प्राईवेट् नहीं रह जावे हे. माईन्ड् जब माईन्ड्में ही कोई रीयालिटी क्रियेट् खड़ी करे हे तब वा रीयालिटीकु अपन् प्योर् मॅन्टल् रीयालिटी केह सकें हें. पर माईन्ड् यदि खुद अन्नेचरल् नहीं होय तो वो नेचरल् रीयालिटीके सबसेट्को सबसेट् होयगो. सीधीसी बात हे ना! या तो फिर अपन्कु ये कबूल करनो पड़ेगो के माईन्ड् कोई अन्नेचरल् फिनोमिना हे. ये बात कहवेके लिये पाछे माईन्ड् ही चहियेगो और माइन्ड्के नेचर्पे रिलाई करनो पड़ेगो. जब वर्च्युअल् रीयालिटी अपन् केह रहे हें, तब ये इश्यु नहीं हे के ये मॅन्टल् हे के मटीरियल् हे.

'वर्च्युअल् रीयालिटी'को मतलब हे कोई भी एक चीज, वस्तु, वाकी कछु वर्च्युस् हें. वा वस्तुकु अपन्ने रिप्रोड्युस् नहीं कियो पर वाके सारे वर्च्युस्कु रिप्रोड्युस् कर दिये, वा तरीकेकी रीयालिटी. अब वो चाहे माईन्ड्में भई हे, चाहे मॅटर्में भई हे, वाकु अपन् वर्च्युअल् रीयालिटी केह रहे हें. एकदम कॉन्क्रीट् उदाहरण देके समझाऊं. एक ढोकला हे. वा ढोकलाकु बनावेकी सारी विधि हें. कैसे बनानो? वो अपन्ने ढोकला नहीं बनायो, पर ढोकलाकी जितनी भी वर्च्युस् (गुण, क्वालिटी) हें, साईज्की, शेपकी, कलरकी, टेस्टकी, वाकी गंधकी, वो सब वर्च्यु अपन् खड़ी कर दें और ढोकला नहीं खड़ो करें तो वो वर्च्युअल् ढोकला हो गयो. आयो ख्यालमें?

जैसे तेरो ही एक फोटो लेके वाको एनीमेशन् कियो, वामें

तेरी आवाज भरी, तेरी मूवमेन्ट्स् धरीं. अब वामें तेरी सारी वर्च्युस् आ गई पर तू नहीं आई तो वो तेरी वर्च्युअल् रीयलिटी हे. अब वाकी भी एक अपनी रीयलिटी हे विसा-विस् तेरी रियेलिटीके. ऐसो नहीं कह्च्यो जा सके के तेरी रीयलिटी नहीं हे वासु वो अनरियल् हे. नहीं तो कैसी प्रोब्लम् आयेगी, ध्यानसु समझियो. या झांझकी जो रीयालिटी हे, वो दूसरी झांझकी रीयालिटी नहीं हे. तो क्या ये दूसरी झांझ अनरियल् हे? याकी रीयालिटी कछु और रीयालिटी हे. देख, यामें चोटी लटक रही हे. यामें नहीं हे. अब दोनोंकी रीयालिटीमें तो फर्क हो गयो ना! अब वो नहीं हे करके ये अनरियल् तो नहीं हो जायगो ना! तो कोई भी वस्तुकी जो एक्च्युअल् वर्च्युस् हें वा वर्च्युस्कु अपन्ने कहीं क्लब् कर दी हे तो वो वर्च्युअल् रीयालिटी हो गई. ये टर्म अभी तक इतनी कॉमन् नहीं भई हे के चहिये जाकु, चहिये जाके लिये अपन् छूटसु वापर सकें. कछु समय बाद शुरु हो जाय तो वाकी भविष्यवाणी तो नहीं कर सकें. अभी ये वर्च्युअल् रीयलिटी टर्म पर्टिक्युलरली डिजिटल् रिक्रियेशन्के लिये, रिप्रोडक्शन्के लिये प्रयोगमें आवे हे. और कोई तरहको रिप्रोडक्शन् करो तो वाको वर्च्युअल् कहवेको ढर्रा शुरु नहीं भयो हे. वो ढर्रा शुरु होयगो तब होयगो. 'ढर्रा' माने ट्रेन्ड्, वो नहीं शुरु भयो हे तो अपन् सिर्फ वाकु वाही फील्ड्में वापर रहे हें, सब फील्ड्में नहीं वापर रहे हें.

ये शब्द या तरहसु यात्रा करें हें. जैसे माऊस् कोई और चीज हती. अब कम्प्युटर्में एक माऊस् ओर अलग आ गयो. अब ये ढर्रा हो गयो. कम्प्युटरमें एक अलग माऊस् है. वा कम्प्युटरके

माऊस्कु अपन् वर्च्युअल् माऊस् नहीं केह सकें. अभी ऐसो ढर्रा शुरु नहीं भयो हे के कम्प्युटर्को माऊस् वर्च्युअल् माऊस् हे क्योंके वाकु सिर्फ नाम दियो गयो हे. सारे गुण वाकु चूहाके नहीं दिये गये हें.

प्रश्न : आपश्रीने वर्च्युअल् रियालिटीकी बात करी हती. ये वर्च्युअल् और रियालिटी दोनों कॉन्ट्राडिक्ट्री शब्द हें. जो वर्च्युअल् होवे हे वो रियल् नहीं होवे हे और जो रियल् होवे हे वो वर्च्युअल् नहीं होवे हे. खासकरके विज्ञानके विद्यार्थीकु समझमें आवे हे के जैसे प्रकाशमें वर्च्युअल् इमेज् और रियल् इमेज् की बात आवे हे तो वर्च्युअल् रियालिटी शब्द खुद ही पॅरॉडोक्स्में हे. ऐसो हो सके हे के वर्च्युअल् रियालिटी जब रियलके सॅन्स्में कहते होंय तो वो तो वर्च्युअल् हो ही नहीं सके. जो रियालिटी हे वो वर्च्युअल् नहीं हो सके. आपने याको खुलासा कियो हतो के जो वर्च्यु हे वाको वर्च्युअस् कह सकें. जामें वर्च्युस् भरी पड़ी हें पर वर्च्युअल् नहीं. अगर याकु हम वर्च्युअल् लें तो तब ये तो कॉन्ट्राडिक्ट्री शब्द हें.

उत्तर : बात तो तुम्हारी बिल्कुल सच्ची हे. याके खुलासाके रूपमें मैं एक ही बात कहूंगो के सबसु पहले; मैंने एक बोहोत मजेदार और रोचक खबर पढ़ी हती. जापानमें एक छोकराने अपनी एक वर्च्युअल् इमेज् कम्प्युटरमें खड़ी करी. या वर्च्युअल् इमेज्कु खड़ी करके वासु काम क्या करे हे के सबकु शूट् करे हे. अब अपनी वर्च्युअल् इमेज्के द्वारा दूसरेन्कु शूट् करवेकी एडिक्शन् याकी इतनी बढ़ गई के याकी पढ़ाई छूट गई, कोईके साथ बातचीत भी नहीं करे, कोईके साथ कछु भी नहीं करे. सारे दिन अपनी

वर्च्युअल् इमेज्सु ढिशुम ढिशुम करतो रहे. अन्तमें याके पिताने पांच लाख रुपये कोईकु दिये के याकी वर्च्युअल् इमेज्को मर्डर् कर दो. तो ये देख्यो जा सके हे के जो रियल् छोकरा हे जाकी वायोलेन्ट् इमेज् इतनी बढ़ गई हे या मर्डर गेमकी, सारो दिन प्रेक्टिकली कम्प्युटर्में वा किलिंग् गेम्में ही लग्यो रहे. याके पिताकु डर लग रह्यो हे के इतनो ज्यादा एडिक्शन् या बच्चाकी पर्सनालिटीकु बिगाड़ देगो. अब ये जो क्रियेट् कर दी गई हे, वाकु मारवेके लिये सुपारी दी कोई दूसरे कम्प्युटर् इंजीनियर्कु के या वर्च्युअल् इमेज्को मर्डर् तू कर दे. जासु के ये सर्ववाईव् नहीं कर सके. ये इमेज् जब भी आये तो वाको ढिशुम ढिशुम कर दे. ये काहेके लिये के ये वाकु समझ आवे के वो ही सबकु नहीं मार सके हे पर कोई वाकु भी मार सके हे. अब स्थितिको जायजा लो के ये खाली वर्च्युअल् इमेज् जो याकी हे वो छोकरा नहीं हे. अथवा पिताने जाके लिये सुपारी दी हे यामें छोकरेको मर्डर् नहीं करनो चाहे हे पर वर्च्युअल् इमेज्को मर्डर् करवानो चाह रह्यो हे. यासु वो कोई क्रिमिनल् पर्सन् तो नहीं कहलायेगो. लेकिन क्या अपन् ऐसो केह सकें हें के ये जो सारोके सारो चतुष्कोण बन्यो हे वो अनरियल् हे या रियल् हे? ये दोनों यदि अनरियल् होंय तो क्या इतनो ज्यादा करवेकी जरूरत पड़े? कोई न कोई तो रियालिटी होयगी याकी? वर्च्युअल् इमेज् जो हे किलरकी यदि वाकी कोई भी, कछु भी रियालिटी न होय, पिताके पास याको सॉल्युशन् नहीं हे. क्योंके प्रोग्रामर् बेटा हे. वो अपनी वर्च्युअल् इमेज् पैदा कर सके हे. अब बिचारे पिता गरीबकु पता नहीं हे के करनो क्या? अपने वर्च्युअल् बेटाकु कैसे मारनो? तो वाने कोई प्रोफॅशनल् किलर्कु किरायेपे लियो. अब वो किलर्

रियल् हे के वर्च्युअल् हे? वो तो रियल् हे. और जब वो वर्च्युअल् इमेज्कु मार देगो तब वो किलिंग् रियल् होयगी के अनरियल् होयगी? याके हर नुक्कड़पे कछु न कछु रियालिटी इन्वॉल्वड् हे. हम लोग ये कॉन्ट्राडिक्शन् नहीं कर सके हें के वर्च्युअल्, रियल् नहीं हो सके हे और रियल्, वर्च्युअल् नहीं हो सके हे. वर्च्युअल्की कछु रियालिटी होवे हे जाकु अपन् नकार नहीं सके हें. और ये वा रियल् पर्सन्कु बोहोत ज्यादा प्रभावित करे हे, वाकु भी नकारो नहीं जा सके हे. मोकु ऐसो नहीं लगे हे के पिताकी चिंता गलत हे. कोई भी पिता होयगो वाकु नेचरली विचार आयेगो ही के मारो वा वर्च्युअल् इमेज्कु. ये मेरो बेटा जो किलर् स्ट्रिंग्मे ट्रॅप् हो गयो हे, वासु वो बाहर आवे और वाके लिये पांच लाख रुपया इन्वॅस्ट करनो, ये भी बोहोत अच्छी बात हे एक पिताके लिये. मैं तो कॉन्ट्रीब्युट् नहीं कर सकूं हूं पर यदि कर सकतो तो जरूर या कारणके लिये कॉन्ट्रीब्युट् करतो, सिर्फ वा इमेज्कु मारवेके लिये. कितनी दर्दनाक ये इमेजिस् हें. अपन् यों तो नहीं केह सकें हें के वर्च्युअल् रियालिटी कॉन्ट्राडिक्टरी और पॅराडोक्सिकल् हे. ये पॅराडोक्सिकल् फ्रेज़् नहीं हे. वर्च्युल् इमेज्की खुदकी अपनी रियालिटी हे. वो आपपे प्रभाव भी डाल सके हे, आपकु इन्फ्लुएन्स् भी कर सके हे. वो हमारी जिन्दगीमें तूफान भी ला सकें हें. अनरियल् हे वो तो अपन् कभी कबूल नहीं कर सकें हें. एक रियालिटी ये हे. एक दूसरी रियालिटी और भी हे. वाकु भी कबूल करनो होय तो कर सकें हें के याको एक वर्चुअस् मॉडेल् हे. रियालिटीके अपन् दो भाग कर सकें हें. रियालिटी और वर्च्युअल् रियालिटी. यामें मोकु तो नहीं लगे के कोई लॉजिकल्

कॉन्ट्राडिक्शन् जैसी बात हे. लेकिन फिर भी हरेककु याद दिलावेके लिये मैंने स्पेसिफिकली ये खुलासो कियो हे के मानसीसेवाकी अपने यहांकी भावना, जाको अपने यहां दर्शन हो रह्यो हे, ये वर्च्युअल् रियालिटी नहीं हे. ये तो कछु और दूसरी ही चीज हे. लेकिन याकु समझवेके लिये वर्च्युअल् रियालिटीको अपन् एक उदाहरण, एनोलॉजी दे सके हें.

याके लिये अंग्रेजीमें एक एप्रोप्रियेट् शब्द हे सुर्रियलिज़्म्. तो ये सुर्रियल्ज़्म् अनरियल् भी नहीं हे और रियल् भी नहीं हे. पर सुर्रियल् हे. याके लिये अपन् एक सुर्रियल् एप्रोच् एडोप्ट् कर सकें हें. कभी पेन्टिंग्में युरोपमें एक सुर्रियलिज़्म्को बोहोत बड़ो ट्रेन्ड् हतो; अभी भी कोई कोई आर्टिस्ट् वाकु एडोप्ट् करें हे लेकिन करीब करीब हरेक आर्टिस्ट्ने वा सुर्रियलिज़्म्कु ड्रॉप् कर दियो हे. लेकिन वास्तवमें या सुर्रियलिज़्म्की पेन्टिंग अपन् देखें ना तो सिम्प्ली फॅन्टास्टिक्. यामें तुम केह नहीं सको के ये अनरियल् हे. याकु ये भी नहीं केह सको हो के ये रियल् हे. यामें जो क्रियेशन् हे वाकु इन दोनों टर्म्समेंसु एकमें भी क्लासिफाई नहीं कियो जा सके हे. या पेन्टिंग्कु तुम कोई भी सुर्रियलिज़्म्की साईट् खोलके देख सको हो. वाको मॉडेल् तुम देखोगे तो तुमकु ऐसो लगेगो के न तो तुम याकु रियल् कह सको हो, न तुम याकु अनरियल् कह सको हो. ये तो कोई बिल्कुल अलग ही वॅरायटी हे पेन्टिंग्की. ये 'सुर्' शब्द अपने यहां जैसे पुरुषोत्तम शब्द हे. वामें जैसे पुरुषोत्तममें पुरुषकी रियालिटी नहीं हे; प्रकृतिकी रियालिटी नहीं हे **''यस्मात् क्षरम् अतीतो अहम् अक्षरादपि चोत्तमः, अतोऽस्मि लोके वेदे च**

प्रथितः पुरुषोत्तमः'' (भग.गीता.१५।१८) यामें भगवान् अपनेकु सुर्रियलिस्टिक् हूं ये बता रहे हें. ये पुरुषोत्तमकी हकीकत हे ये सुर्रियलिस्टिक् हे. न तो ये रियल् हे और न ही अनरियल. ऐसे ही मानसीभावना में जो भी कछु अपन्कु दीखे हे या जो भी कछु अपन् देख रहे हें ये सब सुर्रियलिस्टिक् फिनोमिना हें. ये न तो रियलिस्टिक् हें और न ही अनरियलिस्टिक् हें. अब ऐसे कहनो के यदि रियलिस्टिक् नहीं हे तो अनरियलिस्टिक् होगी या वाईसे वर्सा, वो ठीक नहीं हे. कछु रियल् भी हो सके हे, कछु अनरियल् भी हो सके हे और कछु इन दोनों कन्सॅप्ट्सु उठके भी हो सके हे जाकु 'सुर्रियल्' कहें हें. भावना और मानसी सुर्रियलिटीकी कोई वॅरायटी हें. वैसे ही एक लोअर् ग्रेड्में कोई भी वर्च्युअल् रियालिटी नहीं पर वामें कोई सुर्रियलिस्टिक् एट्रीब्युट् हो सके हे. जाकु रियलिटी या अनरियालिटीमें क्लासीफाई नहीं कियो जा सके हे पर सुर्रियलिस्टिक्में क्लासीफाई कियो जा सके हे. वामें एक साईनेस्थेसिया हो सके हे. एक वर्च्युअल् रियलिटी हो सके हे. एक भावनात्मक रियलिटी हो सके हे. एक मानसीकी हो सके हे. ये एक अलग मॉडेल् हे. पर कोई भी हालतमें अपन् ये नहीं कह सकें हें के वर्च्युअल् रियलिटी अन-रियालिटी हे. क्यों? क्योंके वर्च्युअल् खुद ही रियल् हे के अनरियल् हे? याको निचोड़ क्या के वर्च्युअल् रियालिटी रियल् हे. याके लिये वेदान्तदेशिकको एक श्लोक हे **"मिथ्यात्वस्य च मिथ्यात्वे मिथ्यात्वं बाधितं भवेत्"** (न्याय.सि.ईश्व.परि.) तुम्हारे प्रश्नके संदर्भमें याकु मॉडिफाई करूं **''मिथ्यात्वस्य च सत्यत्वे सत्यत्वं साधितं भवेत्.''** जो वस्तु मिथ्या हे, अनरियल् हे वाको मिथ्या होनो रियल् हे के अनरियल् हे?

याको मिथ्या होनो तुम कहते हो तो ये मिथ्या नहीं हे ये अर्थ होयगो और याको मिथ्या होनो तुम रियल् कहते हो तो सत्य तो तुम्हारे गले आ गयो. जो बात भगवान् गीतामें कह रहे हें **''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः, उभयोरपि दृष्टो अन्तः त्वनयोः तत्त्वदर्शिभिः''** (भग.गीता.२।१६)

प्रश्न : मानसी सेवा क्या हे? क्या ये वर्च्युअल् रीयालिटीके बराबर नहीं हे? जाने भी पूछ्यो हे वाकु बधाई.

उत्तर : अभी तक अपन्ने देख्यो के वर्च्युअल् रीयालिटी अपन् काहेकु केह रहे हें. वा स्थितिमें मानसी सेवाकु वर्च्युअल् रीयालिटी कहनो जरा आउट् ऑफ् कॉन्टेक्स्ट् लग रह्यो हे. पर यदि कोई ढर्रा शुरु करनो हे, कछु कम्प्युटरकी टर्मिनोलॉजीमें अपन् करेंगे तो वामें सबसु बड़ी आपत्ति क्या आ रही हे के जा बखत अपन् वर्च्युअल् रीयालिटी केह रहे हें वा बखत अपनो प्रिसपोज़ीशन् ये हे के सब्स्टेन्स्कु रिप्रोड्युस् नहीं कियो हे, वाके एट्रीब्युट्स्कु रिप्रोड्युस् कियो हे. जहां तक मानसी सेवाको सवाल हे, वहां अपन् ऐसे नहीं माने हें के अपने मनमें भगवान् नहीं हें, इफ् एट् ऑल अपन् मानसी सेवा कर रहे हें तो; क्योंके वो तो सर्वव्यापक हे, सर्व विद्यमान हे. वाके कारण वो भीतर भी विद्यमान हे और बाहर भी प्रेज़ेन्ट् हे. भीतर जब अपन् मानसी सेवा कर रहे हें, तो वो सिर्फ भगवान्की वर्च्युअल् रीयलिटी हे, ऐसो कहनो मानसीसेवाको अनादर हे. क्योंके अपने यहां मानसी सेवाकी जो डिग्निटी हे, वो दूसरे लोग जो पुष्टिमार्गके सिद्धान्तकु नहीं मान रहे हें, नहीं समझ रहे हें, उनके

लिये शायद मानसीसेवाके लिये एक अच्छी डिरोगेटरी टर्म हो जायगी के भगवान् वर्च्युअल् रीयालिटी हे. अपन् ऐसे नहीं मानें हें. अपन् ऐसे मान रहे हें के भगवान् मनके भीतर भी हे, मनरूप भी हे, मनके बाहर भी हे. अमनरूप भी हे. मनके भीतर कोई भगवान्को रूप या लीला कछु भी गढ़्यो तो खाली भगवान्की वर्च्युअल् रीयालिटी ही नहीं हे, सब्सटेन्शियल् रीयालिटी भी हे पर एक अन्तरके साथ के बाहर वो मटीरियल् हो सके हे पर यहां वो मॅन्टल् हे.

प्रश्न : पिछली बार आपने साईनेस्थेटिक् इमेजिनेशन्के बारेमें बतायो हतो. तो क्या साईनेस्थेटिक् और वर्च्युअल् रीयालिटी एक जैसी ही हें? या माईन्डकी क्रियेशन् हे?

उत्तर : मैंने पहले ही बता दियो हे के साईनेस्थेटिक् इमेजिनेशन्कु वर्च्युअल् रीयलिटी कहवेको अभी ढर्रा शुरु नहीं भयो हे. जहां तक साईनेस्थेटिक् इमेजिनेशन्को रिलेशन् हे प्रभुके साथ जोड़के, तो वहां पाछे वो मानसीको कॅरेक्टर् आ रह्यो हे. यासु वहां सब्स्टेन्शियल् और वर्च्युअल् रीयालिटी दोनोंके कॅरेक्टर् आ रहे हें. जहां तक और दूसरी बातन्को सवाल हे तो आमीरखानकी फिल्म हती 'तारे ज़मी पर' तो वामें जो वाकु साईनेस्थेसिया होवे हे, मच्छीयां तैरती दीखें हें, तारें झिलमिलातें दीखें हें, वामें अपन् यों समझ सकें हें के माईन्ड् कोई एक्स्ट्रा करिक्युलम् एक्टिविटी कर रह्यो हे. वहां वो वापर्‌यो जा सके हे.

साईनेस्थेसिया अपने आपमें एक अलग फिनोमिना हे. जा

फिनोमिनाकु सायकोलॉजी न परसेप्शन् माने हे, न कन्सेप्शन् माने हे, न हेल्यूसिनेशन् माने हे, न इमेजिनेशन् माने हे. इन सबसु अलग एक अनुभवको प्रकार हे साईनेस्थेसियाको. इन कोई भी प्रकारन्में वाकु खपायो नहीं जा सके हे. साईनेस्थेसियाको अपनो एक सायकोलॉजिकल् स्टेटस् हे और जहां तक मानसी सेवासु क्लब् करवेकी बात हे, तो मैं समझूं के प्रभुके बारेमें साईनेस्थेसिया हे, तो ठीक बात हे वामें कोई गड़बड़ नहीं हे. पर कोई दूसरेके बारेमें हे तो पाछी फिर वो ही प्रोब्लम् आयेगी के या तो लोग वाकु हेल्यूसिनेशन् समझेंगे या फिर वाकु इमेजिनेशन् समझेंगे. इन दोमेंसु कहीं एकमें वाकु खपानो चाहेंगे क्योंके जब भी कोई व्यक्तिकु साईनेस्थेसिया होवे हे, तब सबसु बड़ी प्रोब्लम् ये ही होवे हे के औसतन आदमी जाकु वो नहीं हे, वाकु वो समझ नहीं पावे. जब समझ नहीं पावे तो वाको पहलो रीएक्शन् वाके बारेमें ये ही आवे के ये तो पागल हे. जबके वाको पागल होनो जरूरी नहीं हे. वो पागल लगेगो वाकु. या ऐसो लगेगो के ये बैठके कछु कल्पना कर रह्यो हे. पर वास्तवमें साईनेस्थेसिया कल्पना यालिये नहीं हे के जा बखत अपन् कल्पना केह हें वा बखत अपनो ख्याल कछु वॉलेन्टरी होवे हे. जो अपन् कल्पना करें हें वा तरहकी वाकी कल्पना हे. तो वो वॉलेन्टरी तो हे ही नहीं पर अपने सिस्टम्में उभरी भई कोई इर्रेग्युलैरिटी हे. अपनी कॉग्निटिव् सिस्टम्में उभरी भई कोई एक इर्रेग्युलैरिटी हे. वापे अपन् वॉलेन्टरी कन्ट्रोल् कर ही नहीं सकें. वाकु दस बखत समझा दो के भई ये गलत फील् हो रह्यो हे. पर जाकु साईनेस्थेसिया हो रह्यो हे वाके सामने वो मजबूर हे.

प्रश्न : Is the product of Maya Daasi are virtual reality possessing only virtues of Prabhu and then being virtual reality are they not real or virtual creation of Prabhu's mind?

उत्तर : मायादासीके जो प्रोडक्ट् हें, मैंने कल याही लिये अच्छी तरहसु ये ग्राफ् समझायो हतो के पुष्टिजीव भी मायादासीके ही प्रोडक्ट् हें. पर उनकु इशारा कछु और कटाक्षसु भयो हे. **कृपा कटाक्षे हुवा अक्षरमां उपन्या सत्त्व अनन्त. भक्तिलीन हुवा सौभागी ते वैष्णव गुणवंत** और **बीजी कटाक्षे जे जन उपन्या मायामां थया लीन.** तो उनके भीतर जो अन्तर हे वो भगवान्के कटाक्षको हे. तो वहां उनमें जो भेद आ रह्यो हे वो एक्च्युअली प्रोडक्ट् मायादासीके हें और वो भक्तिसुन्दरीके हें, ऐसी बात नहीं हे. भेद जो आ रह्यो हे वो या बातको आ रह्यो हे के कटाक्ष कैसे कियो गयो हे? अब ये 'कटाक्ष' शब्द आजकल डिरोगेटिव् सॅन्स्में वापर्‌यो जाय हे अथवा कोई सेटायरिकल् सेन्स्में वापर्‌यो जाय. कटाक्षको मतलब ये जरूरी नहीं हे के वो डिरोगेटिव् ही होय और न ही सॅटायरिकल् होनो जरूरी हे. याने ओवर यूज़्के कारण युसेज्में ऐसो टर्न ले लियो हे. जैसे पुराने जमानामें रुपया शब्द हतो, 'रूप्यकम्' माने चांदीको सिक्का. वो चांदीको सिक्का कबसु बन्द हो गयो चलनो. निक्कलके आ गये, कागजके आ गये, पर नाम 'रूप्यकं' चालू ही रह गयो. रूपा कहें हें ना चांदीकु! अब चांदी तो कबकी नदारद हो गई पर नाम रह गयो रूप्यकम्.

यामें एक बात ध्यानसु समझो के ये जो सारो इश्यु हे,

मायादासीके हें के नहीं, तो मायादासीके कटाक्षके कारण, 'कटाक्ष'को मतलब होवे हे देखवेकी एक छटा. कौनसे दृष्टिकोणसु वाकु देख्यो वा तरीकेकी वाकी इन्स्पीरेशन्. वा तरीकेकी वाकी इन्क्लिनेशन् पैदा हो गई. जैसे अपन् कोईकु तीव्र कटाक्षसु देखें, हिंसाके कटाक्षसु देखें तो वाकु डर लग जायगो. स्नेहके कटाक्षसु देखें तो सामनेवालेकु मनमें कछु गुदगुदी होयगी. द्वेषके कटाक्षसु देखेंगे तो सामनेवालेकु अपने बारेमें जैलेसी उत्पन्न होयगी. अपन् मूर्खताके कटाक्षसु कोईकु देख सकें हें. दूसरेकु लगेगो के चलो समझा दऊं, मूर्खताके कटाक्षसु देख रह्यो हे. अब या कटाक्षको मतलब ये सब होनो जरूरी नहीं हे. 'कटाक्ष'को मतलब आंखसु देखवेको एक अन्दाज. जा अन्दाजसु अपन् कोईकु देख रहे हें वाको नाम 'कटाक्ष' हे. 'अक्ष' माने आंख. 'कट' माने आवरण. माने अपनी पलकन्सु अपनी आंखकु कितनो खोल रहे हें, कैसे खोल रहे हें, या साईडमें खोल रहे हें, वा साईडमें खोल रहे हें, नीचे खोल रहे हें, ऊपर खोल रहे हें, वाके कारण वाके कटाक्ष बदल जाते होवें हें. कभी शर्मको कटाक्ष होवे हे, कभी भयको कटाक्ष होवे हे, कभी चतुराईको कटाक्ष हे; ऐसे अलग अलग कटाक्ष हें. कटाक्षको मतलब जरूरी नहीं हे के वो डिरोगेटिव् होय या सॅटायरिकल् होय. एक आंखमें बोहोत सारे एक्स्प्रेशन्स् हें. छोटीसी दो आंखे वो चीज एक्स्प्रेस् कर सके हे जो शायद जिह्वा भी एक्स्प्रेस् नहीं कर सके हे. जब मुहंसु कछु बोल्यो नहीं जाय. अपनी वाणी चुप रह जाय पर अपनी आंख सब कछु एक्स्प्रेस् कर देती होवे हे.

जैसे मर्यादामार्गके जितने भी स्वरूप हें उनके कटाक्ष और

अपने पुष्टिमार्गमें जो ठाकुरजीकु नेत्र धराये जायें हें, दोनोंन्के कटाक्षन्में जमीन-आसमानको अन्तर हे. उनके स्वरूपन्कु अपन देखें तो लगे के मारवेकु ठाड़े हें. ऐसो लगे के हमारे ऊपर आंख तान रहे हें. अपने यहांके स्वरूप देखें तो ऐसो नहीं लगे के मारे हे के काटे हे पर अपन्कु लगे हे के आंख नीची करके बैठ्यो भयो हे. कछु तो हे. इतनो हॉरिबल् फिनोमिना नहीं हे. कटाक्ष बदल गयो तो भाव भी बदल जाय.

मायादासीको कोई प्रोडक्ट् नहीं हे. मायामें लीन भये. भक्तिमें लीन भये. ये इश्यु हे के लीन काहेमें भये? 'लीन'को मतलब इन्वॉल्व् होनो. उनकु ऐसे कटाक्षसु देख्यो के वो मायामें लीन हो गये. इनकु ऐसे कटाक्षसु देख्यो के ये भक्तिमें लीन हो गये. प्रोडक्ट् वो मायाके नहीं हें और न प्रोडक्ट् भक्तिके हें. वो भक्तिमें लीन हो रहे हें. आखो इश्यु ये हे.

प्रश्न : Aap Shri explained that Bhakti is not created only to be Bhakt. Except for Bhakti then does it mean bodily or other senses? Aap Shri had explained that bhakt is given privilege. Privilege means he can opt for the privilege or can deny it also. So in which context it was privilege? You had explained the chart that in which Context bhakt has got bhakti? Means different from all others. In the same context I was asking the question.

उत्तर : बोहोत सारी प्रिविलेजेस् यदि रेग्युलरली मिलती रहें तो वो अपनी आदत बन जाय हे. अपनी मजबूरी भी बन जाती होवें

हैं. बोहोत सारी प्रिविलेजेस्सु अपन्कु डिप्राईव् कियो जाय, तो अपने भीतर एक ऐसो स्टफ् भी पैदा होवे हे के याके बगैर भी अपन् काम कर सकें हें. जैसे अभी भी हमारे बोहोत सारे गुसांई बालकन्के आगे 'सावधान सावधान' करवेवालो मेजर् डोमो (छडीदार) चलतो होवे हे. तो जिनके आगे वो 'सावधान सावधान' करवेवालो मेजर् डोमो चले हे, वो यदि उनके आगे नहीं चले तो उनकु चलवेमें कम्फर्ट फील् नहीं होवे हे. वास्तवमें तो वो प्रिविलेज् हतो. और तेरे हिसाबसु वी कॅन् डू और कॅन् अनडू होनो चहिये हतो पर उनकु नर्वस्नेस् आ जाय यदि 'सावधान सावधान' करवेवालो उनके आगे नहीं हे तो. हम आगे कैसे बढ़ें? तो बोहोत बखत जो प्रिविलेज् मिलती होय वाकु आदमी अपनी आदतमें शुमार कर लेतो होवे हे. यदि थोड़ी भी प्रिवलेज् कट हो जाय तो थोड़े दिन तकलीफ होवे. कितने सारे हिन्दुस्तानके राजान्कु कितनी सारी प्रिविलेजेस् हतीं. इन्दिरा गांधीने एक ही झटकामें वो प्रिविलेजेस् कॅन्सल् कर दीं. सब राजायें लाईनपे लग गये. कोई होटल् चलावे लग गये, कोई धन्धा करवे लग गये, कोई पान पट्टी बेच रह्यो हे, एक राजा अपने सामने बैठ्यो भयो हे. सब राजान्की हालत खस्ता कर दी. हम गुसांई महाराजन्की बड़ी भारी प्रिविलेज् हती. ट्रस्टीन्ने आके स्वीच् ऑफ् कर दियो तो सब महाराज यहां वहां डोल रहें हें क्या करें बिचारे? ट्रस्टी मान्य करेगो तो रहेंगे, नहीं तो जायेंगे. हमारो क्या बस चले? अब वो हती हमारी प्रिविलेज् पर खतम हो गई. बोहोत सारी प्रिविलेज्की ये ही स्टोरी हे. तो कोई भी प्रिविलेज् ऐसो नहीं हे के जो बोहोत अरसा तक अपन्कु मिलतो रहे और वो अपनी आदतमें शुमार हो जाय और ऐसी

आदत के वाके बिना अपन्कु चल्यो नहीं जाय.

बात वैसे सच्ची नहीं हे पर लोग मजाक उड़ावें (अंग्रेजन्की उड़ाई भई मजाक हे) के वाजिद अली शाह जब भागनो चाहते हते तो जूता पहनावेवालो कोई नहीं हतो. या लिये अरेस्ट् हो गये हते. क्योंके उनकु प्रिविलेज् लगतो हतो के कोई जूता पहरावे तो हम पहनें. वो आदतमें शुमार हो जाय. चलनो कैसे? कोई जूता पहनावेवालो तो हे नहीं? मोकु खबर नहीं हे के वाजिद अली शाहके वंशज बचे के नहीं बचे; बचे भी होंयगे तो कोई उनकु जूता नहीं पहनातो होयगो, सब अपने अपने जूता खुद पहर रहे होंयगे. सिवाय जापानके, वहां अभी भी गेस्टकु ये प्रिविलेज् मिले हे के गेस्टके जूता वो खोलें हें, गेस्टकु जूता वो पहरावें हें. वो भी मॉर्डन् कल्चर् जैसे जैसे डॅवलप् होती जायगी वो प्रिविलेज् भी खतम होतो जायगो. बोहोत सारी प्रिविलेज् अपनी आदत बन जाय हें और उनपे अपनो कन्ट्रोल् नहीं रह जाय हे. जब प्रिविलेज् बन्द हो जाय तो फिर उन आदतन्पे कन्ट्रोल् आ जाय. माईन्ड् और बॉड़ी इतनी फ्लॅक्सिबल् बनाई हे के अपन्कु कल्पना नहीं आ सके.

ऐसे ही बोहोत सारी भक्तिकी भी प्रिविलेज् ऐसी ही हें. अपन् पुष्टिजीवन्कु प्रिविलेज्के रूपमें भक्ति मिली हे पर अपनी वो आदत नहीं हती तो अपन् भक्तिकु भक्तिकी तरह नहीं करके धन्धाकी तरह कर रहे हें. वा प्रिविलेज्कु रॅलिश् करवेकी अपनी कॅपेसिटी नहीं हती, अपन् पुष्टिजीवन्की कॅपेसिटी कछु और हती, जबकि प्रिविलेज् तो दियो हतो ठाकुरजीने जब पुष्टिमार्गमें वरण

कियो के अपन् पुष्टिभक्ति करें. वो प्रिविलेज् हती अपनी. कॉन्स्टीट्युशन् अपनो कछु गड़बड़ायो भयो हे. कोई कटाक्ष दूसरी कर दी हे प्रभुने अपनी तरफ. अपन् कहीं और मायामें लीन हो गये हें. ये सारी संभावनायें उनमें हें.

प्रश्न : जब महाप्रभुजीने पुष्टिप्रवाहमर्यादा ऐसे तीन जीवके प्रभेद बताये हें तो गोपालदासजी खाली दो ही प्रभेद क्यों कर रहे हें?

उत्तर : बोहोत ही जेन्युइन् और डीप् प्रश्न हे ये. खास करके तब जब के मैं प्रश्नकु अपनेपे अटॅक् ले रह्यो हूं क्योंके मैं ये स्टेन्ड लेके चल्यो हूं के ये पुष्टिसम्प्रदायकी भागवत हे. पुष्टिमार्गकी भागवत हे तो हे पर गीतामें तो दो ही हें तीन नहीं हें. ये तो बात साफ हे पर पुष्टिसम्प्रदायके आचार्य श्रीमहाप्रभुजीने पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेदमें वा बॅकग्राउन्ड्में फोकस् कर करके जीवन्के नेचर्की तीन वॅरायटी खोजी हें और वो तीन वॅरायटी यहां होनी चहिये हती. यदि ये पुष्टिसम्प्रदायकी भागवत हे तो. बोहोत तीखो और तर्राट सवाल कोईने एस.एम.एस.में भेज्यो हे. जाने भी भेज्यो हे वाकु मेरे बोहोत बोहोत अभिनन्दन. या सवालको उत्तर मैं या तरीकेसु देनो चाहूंगो के कल मैंने थोड़ी हिन्ट तो दी हती के मर्यादा और पुष्टि को भेद जितनो अपन्ने सोच्यो हे, उतनो भेद हे नहीं और वो या बातको प्रमाण हे. महाप्रभुजी पुष्टिप्रवाहमर्यादामें ओर भी नॅरो फोकस् करके भेद बता रहे हें. शास्त्रमें जो कण्ठोक्त भेद हें, वो तो दो ही हें. दैव और आसुर सर्ग. तीन भेद हें नहीं.

अपने पुष्टिसम्प्रदायमें ये बोहोत मेजर् इश्यु हो गयो. खास करके गुसांईजीके लेखनके कारण प्रभुके वरणकी विविधतायें हें. उन वरणकी विविधताके कारण मर्यादामार्गीय वरण एक अलग हे. पुष्टिमार्गीय वरण एक अलग हे. न केवल इतनो प्रवाहमार्गीय वरणमें भी चर्षणीमार्गीय वरण और प्रवाहमार्गीय अज्ञ दुर्ज्ञ पाछे अलग हो रहे हें. इन सारी बातन्कु विचार करके मैंने वरणके और भी कई प्रभेद निकाले के जन्मवरण, मार्गवरण, साधनवरण, फलवरण. वो अपन्ने सेमिनार्में एट् लेन्थ् डिसकस् किये हते. वहांसु जाकु रेफर् करनो होय तो वो रेफर् कर सके हे. वो तो क्या हे के जा भी चीजकु अपन् जब फोकस् करें तो वाको इन्टिग्रिटीमें रूप कछु दूसरो होवे हे और फोकस् करवेमें थोड़ोसो सेग्मेन्टेशन्को एक अलग ही रूप उभरके आवे हे. वो समझवेके लिये अच्छी बात हे, पर जब बॅकग्राउन्ड्में अपन् वाकु देखें तो वामें वा तरीकेको सेग्मेन्टेशन् नहीं हे. बॅकग्राउन्ड्में वो वाही इन्टिग्रिटीमें काम कर रहे हें. वास्तवमें तो ये ही बात बतावेके लिये मैंने कल ये बात भी कही हती के अपन् सबकु ये प्रोब्लम् हो रही हे, **कर्मजड आसुर अन्य उपासक भजन धर्मथी हीन**, ये सब दुष्ट कहांसु आ गये. मारो खतम करो इनकु.

ऐसो नहीं हे भई! **पर पोतानी व्यक्ति करेवा सृष्टि ते द्विधा प्रकार. दैवी आसुरी बे उपजावी प्रभु मन करी विचार.** तो कोई एक बड़े बॅकग्राउन्ड्में ये दैवी और आसुरी वाकी इन्टिग्रिटीके कोई पार्ट हें, फिगर् हें. और जब अपन् दैवीपे ही फोकस् कर रहे हें, तो वो फिर अलग छंट जायेंगे. फिर तो जाकु फोकस् करके देखोगे उतनी ही दीखेगी, बाकी सब बॅकग्राउन्ड्में चली जायगी. सीधोसो सिद्धान्त

हे. फोकसिंग्के प्रोसेस्के कारण वो गायब हो रही हें, पर वो वस्तुत: वहां गायब नहीं हो रही हें. याही लिये जैसे फिल्ममें क्या होवे के कोई फ्रेम् डिसाईड् करनी होय तो हाथको फ्रेम बनाके वामें वा ऑब्जेक्ट्कु देख्यो जाय हे के मूवमेन्ट्में हर फ्रेम्में सीन् कैसो आयेगो? ये उनको अन्दाज होवे हे. कॅमराको मूवमॅन्ट् कैसो चलेगो तो वो यों >> चलेगो. तो फ्रेम्में कोई भी चीज जब देखोगे तो बाहरकी सब चीज निकल जायगी. फ्रेम्में निकल गई तो वाको मतलब बाहर नहीं निकलीं हें.

जैसे या महाप्रभुजीके चित्रके ऊपर अपन् फ्रेम् करें तो वा फ्रेम्मेंसु गुसांईजी और सात बालक निकल जायेंगे. वो गायब हो जा रहे हें फ्रेम्में पर चित्रमेंसु गायब नहीं हो रहे हें. फोकस्की फ्रेम्मेंसु गायब हो रहे हे.

जैसे अपन् दैवीजीवपे फोकस् कर रहे हें तो आसुरीजीव अलग हट जायगो. वा दैवीजीवपे भी अपन् जा बखत पुष्टिजीवपे फोकस् कर रहे हें तो मर्यादामार्गीय जीव अलग हो जायगो. पुष्टिजीवमें भी अपन् जब शुद्धपुष्टिजीवपे फोकस् करेंगे तो अपन् सब वामेंसु निकल जायेंगे. वो जो निकल रहे हें पुष्टिमार्गमेंसु वो काहेके लिये निकल रहे हें? पुष्टिकी शक्तिके विषयमेंसु अपन् नहीं निकल रहे हें. अपन् वो फोकसिंग्की रेन्ज्मेंसु बाहर हो जा रहे हें. या तरहसु याकु समझनो चहिये. मैं समझूं के जाने भी वो एस.एम.एस. भेज्यो वाने इतनो तीखो तर्राट सवाल भेज्यो पर या बातकु समझेंगे तो पूछ्वेवालेकु मेरी बात ऑब्जेक्शनेबल् बात नहीं

लगेगी के यदि महाप्रभुजी तीन भेद कर रहे हें तो गोपालदासजीने दो ही क्यों किये?

प्रश्न : भक्तिमार्गी जीव स्वतन्त्र केवल भक्त न थाय. या पंक्तिको कई गोस्वामी बालक अर्थ करें हें के कोई वैष्णव हमारे पास नहीं आवे तो वो भक्तिमार्ग पर नहीं चल सके. जीव स्वतन्त्रतया भक्ति नहीं कर सके. हमारे आश्रय बिना भक्ति कभी सिद्ध नहीं हो सके.

उत्तर : बात तो सच्ची भी हो सके और खोटी भी हो सके. सवाल ये हे के जो बालक केह रह्यो हे वाकु खुदकु भक्ति सिद्ध भई हे के नहीं? या पैसा सिद्ध करवेके लिये ऐसी बात केह रह्यो हे? ये बात पहले सोच लेनी चहिये.

QQQ

वल्लभाख्यान दूसरो

(प्रमेयप्रकरण–विसर्गलीला)

(राग रामकली)

(यज्ञसु यज्ञयजनयाजनपर ब्रह्मरूपसु विसर्गपुरुषविराटके प्राकट्यके वर्णनको उपक्रम)

श्रीलक्ष्मणसुत श्रीवल्लभरायजी,
स्मरण करतां दुष्कृत जाय जी ।।
कलिजन तरेवा नहीं अवर उपाय जी।।
यज्ञपुरुष हरिनां श्रुति गुण गाय जी ।।१।।
गाय श्रुति गुण रूप अहर्निश, धरि ध्यान विचार ।।
आनंदरूप अनुपम सुंदर, पामें नहीं कोई पार ।।२।।

(विसर्गपुरुषके प्राकट्यसु वाके प्रयोजनकी पूर्ति)

प्राणपति–प्राकट्य–कारण, कांईक कहूं मतिमंद ।।
हर सुर विधाता नव लहे साक्षाद् ब्रह्मानन्द ।।३।।
श्रीवृन्दावन–चंद–मुख–रुचि अग्नि ते अवतार ।।
द्विजतिलक–त्रिभुवन नाम निरूपम रूप अंगीकार ।।४।।

(पुष्टिसम्प्रदायमें विसृष्टपुरुषकी प्रमाणरूपता)

देवलोक दुंदुभि वाजिया आनंद करे रे निशंक ।।
असुरतिमिर उछेदवा भुवि वल्लभदेव मयंक ।।५।।
पूरण पुरुष प्रमाणपंथा व्याख्याता वेदान्त ।।
ग्रंथ सर्वे रसरूप कीधां पोताने सिद्धान्त ।।६।।

रसिक रसना रसिक वाणी, जाणी नर नवखंड ।।
ऊर्ध्वपंथा सुजस पसर्यो, वाधियो ब्रह्माण्ड ।।७।।

एक ब्रह्माण्डे जेना यश न माया, तेना हुवा कोटि अनंत ।।
तोय त्यां थकी वाधियो, जई वस्यो मुख धीमंत ।।८।।

अतुल अमल उद्योत उद्‌यो, भूतल–द्विजमार्तण्ड ।।
भक्ति–मारग–केसरी, गज–मायिक–मत शतखंड ।।९।।

दिग्विजय दश दिशायें कीधो, परिक्रमाने ब्याज ।।
तीर्थ सकल सनाथ कीधां, चरण–रेणु–समाज ।।१०।।

पत्रावलम्बे पंडित जीत्या, मायिक–मत्त–मातंग ।।
श्रीकृष्ण पूरण ब्रह्म स्थाप्या,जेनां रूप कोटि अनंग ।।११।।

(पुष्टिसम्प्रदायमें विसृष्टपुरुषकी साधनरूपता)

स्वमारग स्थिर स्थापवा आपवा भजनानंद ।।
नाम आप्यां जीवनें शुभ, मिष्ट मुखमकरंद ।।१२।।

अनेक जीवने कृपा करवा, देशांतर–प्रवेश ।।
कोमलपद ज्यां कमल विलसे, धन्य कहुं ते देश ।।१३।।

अंग बंग कलिंग कैकट मगध मरु सुर सिंध ।।
ते तामसनां अघ हर्यां परताप पदरज–गंध ।।१४।।

(पुष्टिसम्प्रदायआचार्यकी सम्प्रदायप्रवर्तनमें लौकिकप्रयोजननिरपेक्षता)

कनकस्नान शतमण सुवर्णे कराव्युं महिपाल ।।
ते मुकीनें वेगे चालियां राय दृष्टि न पाछी वाळ ।।१५।।

(मर्यादापुष्टिनामरूपवाले पुष्टिस्थापनकर्मपरायण ऐसेआचार्यवपु धारण करवेके लिये पुरुषोत्तमको वल्लभगृहमें प्रादुर्भावके मनोरथको वर्णन)

त्यांथी दक्षिण पाउं धारिया पांडुरंग श्रीविट्ठलनाथ ।।
नेत्र मळतां बात कीधी, वचन दीधुं हाथ ।।१६।।
वचन निश्चे श्रीनाथे मांग्यु कीधी श्रीवल्लभजी शुं वात ।।
अमने तो इच्छा एह छे, जे हुं नंदन तमें तात ।।१७।।

(पुष्टिसम्प्रदायकी मर्यादाके मंडनके लिये प्रमाण और प्रमेय रूपी पुरुषोत्तमकी निजहृद्गतस्थायिभावसु विभावनाको निरूपण)

ते पुरुषोत्तम प्रगटशे श्रीविट्ठल रूपनिधान ।।
नेत्रकमलें नाना भावें देशे भक्तने सन्मान ।।१८।।

(पुत्रभावसु श्रीविट्ठलनाथश्रीनाथके प्राकट्यके आश्वासनसु प्रमुदितको व्रजयात्रामहोत्सवको वृत्त)

त्यांथी श्रीवृन्दावन पांउ धारिया ज्यां मधुप करे झंकार ।।
कुसुमद्रुम–नवमल्लिका–मकरंदनो नहिं पार ।।१९।।
तरु तमाल अति शोभतां हेमजूथिका संघोड ।।
ललना तें सुभगा लटकतां हींडे ते मोडा–मोड ।।२०।।
तानधुनि मुनि मयूररूपे सांभळे धरि ध्यान ।।
नित्य–लीला–गान–श्रवणे करे ते मधुपान ।।२१।।
कुंजसदन सोहामणुं शोभा तणों नहि पार ।।
विविध रासमण्डल रचना रचि खेले श्रीनन्दकुमार ।।२२।।
रंगे ते रमतां दीठडां बलदेव श्रीगोविन्द ।।
ते पुत्रभावे प्रगटशे मन उपन्यो आनन्द ।।२३।।

बलदेव श्रीगोपीनाथ कहियें श्रीविट्ठल नन्दानन्द ।।
ते वेदपथ विस्तारशे जन आपशे आनन्द ।।२४।।

(यात्रोत्सवमें श्रीभागवतकथाके उत्सवको वृत्तांत)

त्यांथी केशीघाट पांउ धारिया कहि कथा तत्त्वसमाधि ।।
रसपुंज पुरुषोत्तम प्रमाण्या सरस्वती तजि आधि ।।२५।।
गिरिराजने आश्वास दीधो धरी कोमलचरण ।।
हरखें ते सामा आविया श्रीगोवर्धन-उद्धरण ।।२६।।
हळी-मळीने चालियां चरणाट ज्यां निजधाम ।।
नवरंग नागर प्रगटियां मन पूरवा बहुकाम ।।२७।।

(पुष्टिसम्प्रदायविसृष्टकी फलरूपता)

तत्त्व संख्याए कह्यां पद सार मांहे सार ।।
हवे कांई एक स्तुति करूं श्रीवल्लभराजकुमार ।।।२८।।

इन रागनूमें गावें तो एक अलग गाम्भीर्य प्रकट होवे हे.

(द्वितीयाख्यानको उपक्रम)

या द्वितीयाख्यानकी पहले भागवतके आधारपे सिनोप्सिस् समझ लो. क्योंके भागवतमें चौथो स्कन्ध विसर्गलीला हे. सो यहां सबसु पहले, गोपालदासजी कितने चतुर हे. देखो अभी गाली दे चुके हें **कर्मजड आसुर अन्यउपासक भजन धर्मथी हीन.** अब यदि महाप्रभुजीकी जीनोलॉजी ट्रेस् करें तो **यज्ञपुरुष हरिनां श्रुति गुण गायजी.** यदि कर्म करवेवाले सब जड़ आसुर हें तो महाप्रभुजीके

पूर्वज कौन हते? महाप्रभुजी खुदको स्वरूप क्या हे? **"यज्ञ-भोक्ता यज्ञ-कर्ता चतुर्वर्ग-विशारद"** (सर्वो.३०) वो कर्मकु गाली नहीं दे रहे हें. भगवान्‌की लीलाके दो मोड् समझा रहे हें. वो ही कर्म, वो ही संसार, वो ही जड़ता, भगवान्‌की सेवामें जा बखत विनियोग हो जाय तो **श्रीलक्ष्मणसुत श्रीवल्लभरायजी, स्मरण करतां दुष्कृत जाय जी.** सारे दुष्कृत वामेंसु निवृत्त हो जायेंगे.

दुष्कर्म क्यों पैदा हो रह्यो हे? क्योंके तुम वाकु भूलके कर रहे हो, तब वो दुष्कर्म हे. वाकु याद करके, वाके लिये, वाकी आज्ञासु, वो जैसो केह रह्यो हे, वा तरहसु कर रहे हो तो वोही दुष्कर्मके बजाय सारे कर्म सत्कर्म बन जा रहे हे. एक बात समझो के घर संसारके सारे कर्म धर्म बन जायें तो भक्तिके अंग नहीं बन सकें क्या? क्या कोई बाप मारेको बैर हे कर्म और भक्ति को? **''स्वकर्मणा तम् अभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः''** (भग.गीता.१८।४६) पूरी महाप्रभुजीकी वंशपरम्परा हे वे सब कर्मकाण्डी ब्राह्मणन्‌की वंशपरम्परा हे. तो क्या ये कर्मजड़ आसुर अन्यउपासकन्‌की वंश परम्परा हे? गोपालदासजीने बोहोत सावधानीसु जाकु गाली दी हे वाहीकु पाछे ग्लोरीफाई कर रहे हे. यहां जैसे अपन् वल्लभाख्यानमें पहलो छेल्लो दोहराके गावें हें वैसे ही. **यज्ञपुरुष हरिनां श्रुति गुण गाय जी. गाय श्रुति गुण रूप अहर्निश धरी ध्यान विचार. आनन्दरूप अनुपम सुन्दर पावें नहीं कोई पार.** दुष्कर्म कहां हो रह्यो हे? सत्कर्म भी दुष्कर्म हो जा रह्यो हे और दुष्कर्म भी पाछो सत्कर्म हो सके हे. या खेलमें भाग लेतो आनो चहिये. माने मैं अक्सर याको ये ही उदाहरण दऊं के हॉकीमें अपन् यहां–वहां बॉल् लेके

दौड़ते फिरें मैदानमें, तो वामें आप हॉकीके खिलाड़ी कहलाओगे. क्रिकेटमें या तरहसु बॉल् लेके दौड़ते फिरो, बॉलकु छोड़ो ही नहीं, तो वो क्रिकेटको क्या रूप होयगो वो तो कभी सोचो? एक बखत तुम्हारे बॅट्के आगे बॉल् आ गयो और तुम सारे मैदानमें बॉल्कु लेके दौड़ रहे हो हॉकीकी तरह. अरे! हॉकी-हॉकी करते हो जाओगे वहां. वा बॉल्कु लेके दौड़नो या बॉल्कु हिट् करनो, ये सब नियम स्पोर्टके हें. जो नियम हे वा नियममें वो सच्चो हे.

(पुष्टिमार्ग और पुष्टिसम्प्रदाय को भेद)

ऐसे वाके बड़े पॅनोरेमिक् व्युमें कछु और नियम हते. पॅनोरेमिक् व्यु हते, पॅनोरेमिक् रूल्स् हते. या छोटेसे सम्प्रदायमें **पूर्ण पुरुष प्रमाण पंथा व्याख्याता वेदान्त. ग्रन्थ सर्वे रस रूप कीधां पोताने सिद्धान्त.** वाको बोहोत छोटोसो फोकस् एक पार्ट पर हे. वा फोकस् किये भये छोटेसे पार्टके रूल्स् कछु और हें. वहां जो आउट् हे वो यहां आउट् नहीं हे. जो यहां आउट् हे वहां वो आउट् नहीं हे. बातकु समझे? अपन् पुष्टिमार्ग और पुष्टिसम्प्रदाय कु कन्फ्युज़् करें हें. वासु ये सारो कबाड़ा हो रह्यो हे. पुष्टिमार्ग और पुष्टिसम्प्रदाय सिनोनिम्स् नहीं हे पर पुष्टिमार्ग तो महाप्रभुजीके प्रकट होवेके पहले वा दिन प्रगट हो गयो जा दिन भगवान्ने जीवकु पुष्टिजीवकी तरह वरण कियो. वा पुष्टिमार्गमेंसु पुष्टिसम्प्रदाय तो आजसु साढ़ेपांचसौ साल पहले महाप्रभुजीने प्रकट कियो. भगवान्कु भी कछु ऐसे लग्यो के मार्ग जो मैं खुद अटॅन्ड् कर रह्यो हूं वाके बजाय मेरो कोई रिप्रेजेन्टेटिव आचार्य आवे, मेरी या पुष्टिमार्गीय गतिकु कोई ट्रेस् करके कोई सम्प्रदाय प्रवर्तित करे, वाके लिये एक दूसरो पुरुष

प्रमाणपंथा व्याख्याता वेदान्त प्रकट कियो हे, वो पुष्टिसम्प्रदाय हे. वा पुष्टिसम्प्रदायके सारे रूल् पुष्टिमार्गके नहीं हें और सारे पुष्टिमार्गके रूल् पुष्टिसम्प्रदायके नहीं हें. वहां भगवान्पे सवारी करी जा सके हे. वहां भगवान्के साथ बोहोत सारे व्यवहार गाली देवेके भी हो सकें हें. अपने यहां भक्तिके जो रूल् हे वहां भक्तिमें जो एलाउड् हें वो दे सको हो. वो तो दे सको हो पर दण्डवत तो करनी ही पड़ेगी. तुम समझो के ब्रजभक्तन्ने कोई बखत ठाकुरजीकु चरणमें तुलसी समर्पी होयगी? उनकु कहें के समर्पो तो उनकु हंसी आयगी और ठाकुरजीकु भी हंसी आयगी के भई! ये क्या कर रहे हो? तुम्हारे मेरे बीचमें ये सम्बन्ध तो हतो ही नहीं के तुम मेरे चरणनमें तुलसी समर्पोगी. अपन्कु तुलसी समर्पनी कम्पलसरी हे. पुष्टिसम्प्रदायमें एन्ट्री ही नहीं हो रही हे तुलसी समर्पे बिना. याको वा लीलासु क्या सम्बन्ध? ये पुष्टि सम्प्रदायको रूल् हे. मैं नहीं समझुं के सोलह हजार गोपिकान्मेंसु कोईने, गोपबालकन्ने या यशोदानन्दरायजीने कोई गुरुजीसों अष्टाक्षरमंत्रकी दीक्षा लेके तुलसीकी कंठी पहरी होयगी! वहां याकी जरूरत ही नहीं हती. काहेकु कान फूंके. ठाकुरजी जब खुद प्रगट भयो हे तो वामें कान फूंकवेकी जरूरत क्या हे? वो रूल् पुष्टिमार्गको नहीं हे.

ये **पूर्ण पुरुष प्रमाणपंथा व्याख्याता वेदान्तने** जो पुष्टिसम्प्रदाय प्रवर्तित कियो हे, वाके रूल्स् हें. अपन् इन दोनोंन्के रूल्सकु बेकारमें कन्फ्युज् कर रहे हें. वहांको यहां लागु नहीं होयगो और यहांको वहां लागु नहीं होयगो. दोनोंन्को वाईड् एन्गल्को और नॅरो एन्गल्को डिफरेन्स् हे. वाकु कॉन्ट्रास्ट् करवेकी जरूरत नहीं हे.

वाकु बॅक्ग्राउन्ड् और फिगर् की तरह खाली समझवेकी जरूरत हे. वो समझोगे तो ये सारी बात समझमें आयगी.

(विसर्गलीला)

श्रीलक्ष्मणसुत श्रीवल्लभरायजी, स्मरण करतां दुष्कृत जाय जी. कलिजन तरेवा नहीं अवर उपाय जी, यज्ञपुरुष हरिनां श्रुतिगुण गायजी. ये विसर्गलीलाको मङ्गलाचरण कियो. विसर्गलीलाको ये मङ्गलाचरण या लिये जरूरी हे क्योंके विसर्गलीलामें वेदके उद्धारके लिये वाराह प्रगट भये हे क्योंके ऑरगेनाईज़् करनो हे. जो रॉ-मटीरियल् प्रोड्युस् कियो हे वाकु प्रोपर् ऑरगेनाईज़् करके, प्रोपर् डिस्ट्रिब्युशन्, प्रोपर् मेन्टिनॅन्स् करनो हे. वाके लिये भगवान्ने टाईम् टु टाईम् प्रगट होके, अवतार लेके उनकु ऑरगेनाईज़् कियो हे सब देवतान्के रूपन्में. वो जो ऑरगेनाईज़ेशन् हे रॉ-मटीरियलकु मेन्टेन् करवेके लिये वाको नाम 'विसर्ग' हे.

(चित्रकलाके उदाहरणसु विसर्गकी समझ)

विसर्गलीलाकी परिभाषामें क्या कहें हें **''ब्रह्मणो गुणवैषम्याद् विसर्गः पौरुषः स्मृतः''** (भाग.पुरा.२।१०।१३) जो क्रियेटर् हे वाके गुणवैषम्यके अनुसार वाकु ऑरगेनाईज़् करनो. जैसे याको यहां प्लेस् हे, याको यहां प्लेस् हे. जैसे मैंने कल आपकु बतायो. या पेन्टिंग्कु आप ध्यानसु देखो. दूर गिरिराजजी दीख रहे हें. पेड़की हाईट्सु गिरिराजजी कितने छोटे हें? चौथाईसु भी छोटे हें. इतने छोटे होवेके बाद तुम्हारी आंख तुमकु यों केह रही हे के गिरिराजजी पेड़सु छोटे हें? पेड़सु बोहोत बड़े हें. ऐसे तो हजारन् पेड़ गिरिराजजीमें समा जायेंगे. पर उनकु दूर बता दियो हे. याके लिये गिरिराजजीको बड़प्पन

या पेड़सु घट नहीं रह्यो हे. गिरिराजजी पासमें बताये होते और पेड़ इतनो ऊंचो बतायो होतो तो सब समझ जाते के गिरिराजजी कोई ऐसे वैसे छोटेसे पहाड़ ही हें, गिरिराज नहीं हें. उतनी दूर बता दियो. ऑलमोस्ट् पेड़ गिरिराजजीसु ऊपर जा रह्यो हे. वाके बाबजूद गिरिराजजी ही बड़ो हे, पेड़ बड़ो नहीं हे. ये प्लेसमेन्ट्की ब्युटी समझो. कौनसी चीजकु दूर रखनी, कौनसी चीजकु पास रखनी, कौनसी चीजकु लम्बी बतानी, कौनसी चीजकु टूकी बतानी. जाकु टूकी बतानी होय वाकु कहां प्लेस् करनो? जाकु ऊंची बतानी होय; यदि दोनों बातें बतानी हें के पेड़के नीचे महाप्रभुजी बिराज रहे हें और वो पेड़ गिरिराजजीकी तरहटीमें हे, तो चित्रकार कैसे बतायेगो? ऐसे थोड़े ही बतायेगो के गिरिराजजी यहां पेड़के नीचे हें? वो तो फिर चट्टानके जैसे दीखेंगे, फिर पर्वतके जैसे तो दीखेंगे ही नहीं. बोहोत बड़ी डेप्थ् दे दी हे अन्दर. छोटेसे गिरिराजजी बताये. आंख तुमकु कभी यों नहीं कहेगी के पेड़सु छोटे हें गिरिराजजी! आंख हर बखत ये ही कहेगी के गिरिराजजी तो बोहोत बड़े हें. पेड़ तो बोहोत छोटो हे. ये सब प्लेसमेन्ट्को रोल् हे.

पेन्टिंग्में अपन्कु या तरहसु फिगर् और बॅकग्राउन्ड् ऑरगेनाईज़् करनी पड़े और जा बखत ऑरगेनाईज् करो तो चित्रमें वो आर्टिस्टिक् ब्युटी और सेन्स् क्रियेट् होवे हे. नहीं तो नॉनसेन्सिकल् आर्ट हो जाये. चित्रकु फिर देखो. पेड़की जो हाईट हे वासु महाप्रभुजीकी हाईट् दुगनेसु ज्यादा हे. अब महाप्रभुजी क्या इतने बड़े ताड़ हते? बिराजें तो पेड़के इतने पास तक जावें? चित्रकारने क्या चतुराई करी हे महाप्रभुजीकु आगे बिरजवा दिये हें. पेड़कु पीछे रख

दियो हे. अब तुम्हारी आंख तुमकु ये नहीं केह रही के महाप्रभुजी इतने लम्बे हते, ताड़की तिहाई हते. यद्यपि पेन्टिंगमें फुटपट्टीसु मापोगे तो ताड़की तिहाई दीख रहे हें महाप्रभुजी. आंख ये समझा रही हे के महाप्रभुजी आगे बिराजे भये हें, हाईट ज्यादा दीख रही हे. पेड़ पीछे हे, हाईट् छोटी दीख रही हे. गिरिराजजी ओर पीछे हें, तो भले हाईट् छोटी दीख रही हे पर बोहोत बड़ी हाईट हे. आंख तुमकु समझा रही हे ये बात. याको नाम 'विसर्ग' हे. कलर् इक्ट्ठो करनो, ब्रश इक्ट्ठो करनो, कॅनवास् इक्ट्ठो करनो, डिज़ाईन् इक्ट्ठी करनी वो सब 'सर्ग' हे. इनको प्लेसमेन्ट् हे वो 'विसर्ग' हे. वो विसर्गकी जो लीला हे वाकु कैसे करी? ये पेन्टिंग्कु देखोगे तो एकदम रॅकनर्की तरह ये बतायगी के सर्ग क्या हे, विसर्ग क्या हे, स्थान क्या हे, पोषण क्या हे, ऊति क्या हे, मन्वन्तर क्या हे, ईशानुकथा क्या हे, निरोध क्या हे, सब कछु पेन्टिंगमें मिलेगो. दशविधलीला मिलेगी. दृष्टि होय तो ईवन् आश्रय भी मिलेगो.

(पुष्टिसम्प्रदायकी विसर्गलीला)

गाय श्रुति गुण रूप अहर्निश धरी ध्यान विचार. आनन्दरूप अनुपम सुन्दर पामें नहीं कोई पार. यहां **प्राणपति–प्राकट्य–कारण काईंक कहूं मतिमंद.** ये तीन कड़ीन्में विसर्गलीलाको उपक्रम हे. वाके बाद **हर सुर विधाता नव लहे साक्षाद् ब्रह्मानन्द. श्रीवृन्दावनचंद–मुखरुचि, अग्नि ते अवतार. ''गुण वैषम्याद् पौरुषः स्मृतः''** (वहीं) पौरुषके प्रगट होवेको जो डिस्क्रिप्शन् हे वो विसर्ग हे. माने मॅटर् क्रियेट् हो गई रॉ–मैटीरियल; वाके बाद वाको एक

ऑरगेनाईजर् भी तो होनो चहिये. जो ऑरगेनाईज् करे और फिर डिस्ट्रीब्युट् करे. वो पुरुष भी तो प्रगट होनो चहिये. वा पुरुषके प्रगट होवेके वर्णनके लिये केह रहे हें; **हर सुर विधाता नव लहे साक्षाद् ब्रह्मानन्द. श्रीवृन्दावनचंद–मुखरुचि अग्नि ते अवतार.** वो पुरुष यहां विसर्गलीलामें प्रगट भयो हे वाकु ऑरगेनाईज् करवेके लिये. देखो भूल नहीं रहे हें. **द्विज–तिलक त्रिभुवन नाम निरूपम रूप अंगीकार. देवलोक दुंदुभि वाजिया आनन्द करे रे निसंक. असुर–तिमिर उच्छेदवा भुवि वल्लभदेव मयंक.** भुविकु अन्डर् लाईन् करो. निरोधलीलाकु प्रगट करवेके लिये ये अवतार हे, साधनाप्रणालीसु, लीलाप्रणालीसु नहीं. भक्तिप्रणालीसु निरोध प्रगट करवेके लिये ये अवतार हे.''**भगवानेव हि फलं स यथाविर्भवेद् भुवि.**'' (पु.प्र.म.१७) वो भुविपे प्रकट होके वा निरोधलीलाकु फिरसु कैसे ऑरगेनाईज़् करनी, रिमोल्ड् कैसे करनी, वा निरोधलीला जो उतने वाईड् एन्गल्में, वाईड् स्पेक्ट्रम्में घटित भई हती; वाकु फिरसु भक्तिकी साधनामें कैसे रीमॉडेल् करनी? वाके लिये **असुर तिमिर उच्छेदवा भुवि वल्लभदेव मयंक.** यहां आचार्य नहीं कहके देव केह रहे हैं. एक हेतु तो ये हे के आपकु रिमाईन्ड् करवा रहे हें के ये उनकी क्रीड़ा हे. देव माने क्रीड़ा विजिगीषा मोद मद स्वप्न कांति और गति; वाकु देवता केहके ग्लोरिफाई कर रहे हें. ये एक देव प्रगट हो गयो हे. वा तरहकी क्रीड़ा करेगो भूमिपे के जितने भी पुष्टिजीव हे उनको स्वरूप गुण और नामलीला में निरुद्ध करवेके लिये देवकी तरह प्रगट हो गयो हे. **भुवि वल्लभदेव मयंक.** ये उनके आचार्यताको रूप हे. जब आचार्यताको रूप बतायो तब पहली बात

ये आ रही हे **"आचिनोति हि शास्त्राणि."**

जो शास्त्रको आचयन नहीं करे और केह ''हमसु सवाल मत करियो. हम शास्त्रको जबाब नहीं देंगे. तुम पूछवेवाले हो कौन?'' अरे भई तो तुम आचार्य बनवेवाले कौन हो? बेबकूफ होंय तो ऐसे सोचें ना! ''हमारे सामने सवाल मत करियो. क्योंके हम पुरुषोत्तम हें. पूछोगे तो हमारो अपमान हो जायगो. परिश्रम हो जायगो.''

अरे भई! डॉक्टरकु नाड़ी दिखा रहे हें और वामें डॉक्टरकु परिश्रम हो रह्यो हे तो डॉक्टरकु तो दवाखानामेंसु निकलके फुटपाथपे बैठनो चहिये ना! दवाखाना क्यों चला रह्यो हे? एक तो डिस्पेन्सरी खोलके बैठे. अपन् जब तकलीफ बतावें तो कहें के परिश्रम हो रह्यो हे. पौढ़ रहे हें. अरे इन्जेक्शन् कौन देगो? वो कम्पाउन्डर दे देगो, समाधानी. ये कोई लीला हे? कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं सामर्थ्यकी लीला हे! चक्कर क्या हे आखिरमें ये? समाधानी काहेकु कम्पाउन्डरी करेगो? ''नहीं नहीं. वो प्रसादी बीड़ा मठढ़ी तुलसी माला सब दे देगो. अभी तो हम पौढ़ रहे हें.'' काहेकु पौढ़ रहे हो, जागो ना? तुम यदि पौढ़ रहे हो तो फिर वैष्णवकुं जरूरत क्या हे यहां आवेकी? हम भी अपने घरमें पौढ़ेंगे. वो बात बता रहे हें. **असुर–तिमिर उच्छेदवा भुवि वल्लभदेव मयंक. पूरण पुरुष प्रमाण–पंथा व्याख्याता वेदान्त. ग्रंथ सर्वे रसरूप कीधां पोताने सिद्धान्त.** प्रमाणपंथ ये पुरुष हे. जबकि पुष्टिमार्गको प्रमेयस्वरूप पुष्टिसम्प्रदायकु प्रकट करवे प्रमाणपुरुष होवेको रूप धारण करिके प्रकट भयो हे.

अभी सब पुष्टिमार्गीय केह रहे हें के हम तो प्रमेयपंथी हे.

अरे तुम्हारो बाप प्रमाणपंथा हे तो तुम प्रमेयपंथी कैसे हो गये! गोपालदासजीके हिसाबसु वो पूर्णपुरुष प्रमाणपंथा हे और यदि याकु गुसांईजीकी वाणी मानें तो गुसांईजी भी येही बात केह रहे हें के आचार्यचरण प्रमाणपंथा पुरुष हें. प्रमाणपंथा होते भये भी पूर्णपुरुष हे और पूर्णपुरुष होते भये भी प्रमाणपंथा हे. वो तो बायफरकेशन् नहीं कर रहे हें, सेग्मेन्टेशन् नहीं कर रहे हें के हम तो प्रमेयपंथा हें. प्रमेयपंथा या लिये के तुमने पढ़्यो नहीं हे. लड्डू पूरी मठरी की नुमाइश कर रहे हो या लिये प्रमेयपंथा हो. ग्रंथ पढ़ोगे और ग्रंथके जो संशय हे उनको निराकरण करो तो तुम भी प्रमाणपंथा हो जाओगे. वो करनो नहीं हे. जीभके चटकारेको मजा लेनो हे, वाको एक्प्लॉइटेशन् करनो हे तो फिर तो प्रमेयपंथा होनो ही पड़ेगो. फिर तो प्रमेहपंथा भी होनो पड़ेगो, प्रमेयपंथाके बजाय. प्रमेह माने समझे? डायबिटीज़्.

(महाप्रभुजीकी प्रमाणरूपता)

पूर्ण पुरुष प्रमाणपंथा व्याख्याता वेदान्त. ग्रंथ सर्वे रसरूप कीधां पोताने सिद्धान्त. ये ब्युटी हे महाप्रभुजीकी. या लीलाद्विजतनुधारीकी कोई ब्युटी हे, कोई ग्लोरी हे. या ग्लोरीकु लेके वो प्रगट भयो हे. **"आचिनोति हि शास्त्राणि,"** अपने आचारमें स्थापित कियो हे. **रसिक रसना रसिक वाणी जाणी नर नवखंड. ऊर्ध्व पंथा सुजस पसर्यो वाधीयो ब्रह्माण्ड.**

अपनो सुयश कैसो पसर्यो हे के अमेरीकामें इग्लॅण्डमें आस्ट्रेलियामें भी छप्पनभोग; ले तेरी छप्पनभोग दे तेरी छप्पनभोग;

आज छप्पनभोग कल छप्पनभोग और छप्पनभोग नहीं तो कुनवारोभोग; ये क्या लफड़ा लगा रख्यो हे? प्रमेयपंथी सब लोग हो गये.

वा बिचारे प्रमाणपंथाको गौरव देखो. **ऊर्ध्वपंथा सुजस पसर्यो वाधियो ब्रह्माण्ड. एक ब्रह्माण्डे जेनो यश न माया, तेना हुवा कोटि अनन्त.** परन्तु आज तो फेसबुक्पे सबन्के यश कोटि अनन्त हो रहे हें. **तोए त्यां थकी बाधियो, जई बस्यो मुख धीमंत** (जई वस्यो फेस्बुक्मां श्रीमंत) वो ऐसो नहीं हे भई. कछु और कथा हे यहां महाप्रभुजीकी. ये कथा नहीं हे. फेस्बुक्पे वो वाकु गाली दे रह्यो हे, वो वाकु गाली दे रह्यो हे. ऊर्ध्वपंथा फेस्बुक्पे ग्लोब्लाईज़ेशन् गालीन्को. वो ऐसे हें, वो ऐसे हें. फेस्बुक् देखो ना! गोस्वामी बालकन्की एकदम गाली-गलौच ही निरन्तर चलती रहे. शास्त्रकी चर्चा कछु चले ही नहीं. तो उन सबको ग्लोब्लाईज़ेशन् हो गयो हे. फेस्बुक्पे सब गाली-गलौच कर रहे हें.

अतुल अमल उद्योत उदयो भूतल द्विज-मार्तण्ड. भक्ति-मारग-केसरी गज मायिक-मत शतखंड. श्रीकृष्ण पूरण ब्रह्म स्थाप्यां जेनां रूप कोटि अनंग. यहां तक उनने समझो के कितनी प्रमाणरूपता महाप्रभुजीकी प्रगट करके दिखाई. आचार्यकु प्रमाणचयन करनो चहिये. प्रमाणको चयन करवेको मॉडेल् क्या हतो और वा प्रमाणके चयनके पूरे मॉडेल्में बोहोत सारी बातें हें जाके विवरणमें अभी अपन् नहीं जा सकें हें.

(साधनको निरूपण)

वा प्रमाणके बाद साधन आ रह्यो हे. **स्वमारग स्थिर स्थापवा**

आपवा भजनानंद. नाम आप्यां जीवने शुभ मिष्ट मुख मकरंद. अनेक जीवने कृपा करवा देशांतर–प्रवेश. कोमल पद ज्यां कमल विलसे धन्य कहुं ते देश. अंग बंग कलिंग कैकट मागध मरू सुर सिंध. ते तामसना अघ हर्‌त्या परताप पदरज गंध. कनकस्नान शतमण सुवर्णे कराव्युं महिपाल. ते मुकी वेगे चालिया राय दृष्टि न पाछी वाळ. डॉलर्‌के लिये हम अपनो जन्माष्टमीको उत्सव छोड़के अमेरीका जा रहे हें और वो **कनकस्नान शत मण सुवर्णे कराव्युं महिपाल. ते मूकी वेगे चालिया राय दृष्टि न पाछीवाळ.** वोही डॉलर्‌के लिये चक्कर मार रहे हें. ''गतागतं डॉलरं लभन्ते'' की तरह. ये महाप्रभुजी ऐसो आचार्य प्रमाणपंथा हतो के **ते मूकी वेगे चालिया राय दृष्टि न पाछीवाळ.** देख्यो नहीं वाकी तरफ. नहायो भयो बेकारको अशुद्ध जल हे. याकु कहा देखनो!! हे कोईमें ऐसो गट्‌स्? हे हमारेमें ये गट्‌स्? कहां वल्लभाख्यान चलेगो यामें? या तरीकेको वल्लभाख्यान हे. क्योंके महाप्रभुजी स्पष्ट आज्ञा कर रहे हें **''कृष्णसेवा परं वीक्ष्य दम्भादि रहितं नरम्.''** (त.दी.नि.२।२२७) दम्भादि माने दम्भ लोभ पूजार्थ भगवत्सेवा नहीं होनी चहिये.

जबकि आज तो एक एक डॉलर्‌के लिये यमुनाजीको उत्सव करें वहां. दो चार बूंद स्वीमिंग् पूल्‌में पधरा दें और कहें के वामें डुबकी लगाओ तो तुमकु यमुनाजीके स्नानको फल मिलेगो. टिकट लगावें एक एक डॉलर्‌की, लाख रुपया बना लें एक स्वीमिंग्‌पूल्‌पे टिकट लगाके तथाकथित यमुनास्नान करावेकी. तो क्या ये ऊर्ध्वपंथा यश हे? अपन् गलत मान रहे हें. अपन् अपयश हासिल कर रहे हें, यश हासिल नहीं कर रहे हें. कछु कौभांड हो गयो हे.

महाप्रभुको वल्लभाख्यान कोई दूसरी लीलापे फोकस् करनो चाह रह्यो हे. ये बालक वहां जाके पुष्टिमार्गको ग्लोब्लाईज़ेशन् करें हें. अरे भई! ग्लोब्लाईज़ेशन् नहीं कर रहे हें वो तो पुष्टिमार्गको डीग्रेडेशन् कर रहे हें. अरे! तुम्हारे पिताने तो **कनकस्नान शतमण सुवर्णे कराव्युं महिपाल. ते मूकी वेगे चालिया राय दृष्टि न पाछी वाळ.** तुमकु अमेरिकासु कोई नहीं बुला रह्यो हे तो भारतसु केहवा रहे हो के हमारी पधरावनी करवाओ. स्पॉन्सर् कर दो हमारी ट्रिप्. तो सौ सौ पचास हजार डॉलर् मिल जाये. क्या हे लफड़ा? यहां कहीं न कहीं कछु लफड़ा हो गयो हे. **कर्मजड आसुर अन्यउपासक भजन धर्मथी हीन** अपन् हो गयें हें वाको ये प्रमाण हे. **भजन धर्मथी हीन**में ये सारी बातें हें.

वाके बाद प्रगट साधन; गोपालदासजी बोहोत सुंदर केह रहे हें **त्यांथी दक्षिण पाउं धारिया पांडुरंग श्रीविट्ठलनाथ. नेत्र मळतां बात कीधी वचन दीधुं हाथ.. वचन निश्चे** ये साधनकी बात हती, फिरसु रिमाइन्ड करा दूं. माने बारहवें कड़ीसु लेके पन्द्रह कड़ी तक साधनकी बात हे के साधनकी इन्टीग्रिटी कैसी होनी चहिये. सोनाके लोभके लिये पुष्टिमार्गको प्रचार नहीं कर रहे हें. पुष्टिमार्गके प्रचारके लिये शतमण सोनाकु थूकवेकी उनकी शक्ति हे. ये पांच पांच डॉलर्के लिये यमुनाजीके स्नान नहीं करवावे हें, छप्पनभोग कुनवारा भागवतसप्ताह नहीं करवा रहे हें. या तरीकेकी पुष्टिमार्गमें साधननिष्ठा होनी चहिये. वा साधननिष्ठाकु बतानी आचार्य होवेकी दूसरी कन्डीशन् हे **"कृष्णसेवा परं वीक्ष्य दम्भादि रहितं नरं, भागवततत्त्वज्ञं"** (वहीं) ये तीन कन्डीशन् हें. वामेंसु वो कैसे

कन्डीशन्कु इम्प्लिमेन्ट् कर रहे हें विसर्गलीलामें, सृष्टिलीलाकु ऑरगेनाईज़् करवेमें. वाकु देखो यहां यदि ये सेट्-अप् मेन्टेन् हो रह्यो हे तो विट्ठलनाथजी उनकु आज्ञा कर रहे हें, **नेत्र मळतां बात कीधी वचन दीधुं हाथ.** मैं तुम्हारे यहां प्रगट होऊंगो. **वचन निश्चे श्रीनाथे मांग्यु कीधी श्रीवल्लभजी शुं बात. अमने तो इच्छा एह छे जे हूं नंदन तमे तात.** भगवान् अब केह रहें हें के "ठीक बात हे के वा बखत मैं कोईको भी बेटा बन्यो होऊंगो पर अब यदि तुम या स्टाईल्कु जी सकते हो निरोधसु तो मैं तुम्हारे यहां पुत्रभावसुं प्रकट होने तैयार हूं. मैं निरुद्ध होने तैयार हूं" वोही बात बता रहे हें.

यामें एक बोहोत ही रिमार्केबल् बात हे. पुराने टीकाकारन्ने यहां काफी चर्चा और विवाद कियो हे और कछु टीकाकार यों मानें हें के वचन विट्ठलनाथजीने मांग्यो और वचन निश्चे महाप्रभुजीने दियो श्रीनाथजीकु. अब क्योंके विट्ठलनाथजी मर्यादामार्गके हें और श्रीनाथजी पुष्टिमार्गके हें, ऐसे ऐसे कई तरहकी डिस्प्युट् हे प्राचीन टीकाकारन्में. अब वो सच्ची हें के खोटी हें, उनके भावके लेवल्पे पोहोंचे बिना अपन् डिसाईड् नहीं कर सकें के वो लेवल् क्या हें?

मैं यामें जो बात समझ रह्यो हूं वो मेरे सामने बिल्कुल साफ बात हे के श्रीनाथजीने वचन निश्चय मांग्यो करके महाप्रभुजीने अपने पुत्रको नाम श्रीनाथ नहीं धरके 'विठ्ठलनाथ' धर्‌यो. क्योंके वचन मांग्यो हे विठ्ठलनाथने. सो नाम विठ्ठलनाथजीको धर्‌यो श्रीनाथजीको नहीं धर्‌यो. अब श्रीनाथजीकु उनने प्रोमिस् करी भी होय पर वचन विठ्ठोबाके श्रीहस्तमें देवेके बजाय श्रीनाथजीके श्रीहस्तमें भी वचन

दियो होय तो वो भगवान् खुद मर्यादा और पुष्टि के भेदसु प्रगट भयो हे.

(मर्यादा और पुष्टि पुरुषोत्तमको भेद लीलाको)

मर्यादा अपने यहां प्रमाण मानी गई हे. पुष्टि प्रमेय मान्यो गयो हे. वो मैं आपकु दिखा चुक्यो. प्रमाणमें प्रमेय छुप्यो भयो हे और प्रमेयमें प्रमाण छुप्यो भयो हे. व्रजरायजीने यहां पूरी महाभारत छेड़ी हे. वामें पढ़वे लायक सब आर्ग्युमेन्ट्स् हें और वो यहां तक केह हें के या तरहको भेद करवेवाले **कर्मजड आसुर अन्यउपासक भजन धर्मथी हीन** हें. मस्तराम हें व्रजरायजी, यामें कोई संदेह नहीं. बोहोत बड़ी महाभारत छेड़ दी हे. पेज्के पेज् लिख दिये हें. समझवेकी बात वामें ये हे के जा तरीकेकी मूर्खताके कारण अपन् मर्यादापुरुषोत्तम और पुष्टिपुरुषोत्तम को भेद समझ रहे हें, वा तरीकेको भेद दोनों पुरुषोत्तमन्में हे नहीं. क्योंके वा तरीकेको भेद होय तो वो पुरुषोत्तम रेह ही नहीं जायगो. उत्तमको मतलब क्या? गुड, बॅटर् और बॅस्ट्. बॅस्ट्कु उत्तम कह्यो जाय. सब पुरुषन्में जो उत्तम होय वो पुरुषोत्तम. यदि मर्यादामें भी एक पुरुषोत्तम हे और पुष्टिमें भी एक पुरुषोत्तम हे तो दोनों उत्तम ही नहीं रह गये, पुरुषोत्तम नहीं रहे. तो या तो अपन्कु अपनी टर्मिनोलॉजीको मतलब समझनो चहिये के 'मर्यादापुरुषोत्तम'को मतलब मर्यादामें होते भये भी वो पुरुषोत्तम हें. पुरुषोत्तम होते भये भी वो मर्यादा पाल रह्यो हे. एक पुरुषोत्तम होते भये पुष्टि पाल रह्यो हे. या तरहसु टर्मिनोलॉजीको अर्थ अपनेकु क्लीयर् करनो चहिये. या फिर ऐसी टर्मिनोलॉजीकु छोड़नो चहिये. व्यर्थमें या विवादमें पड़वेको कोई सेन्स्

नहीं हे, नॉनसेन्सिकल् बात हे.

क्योंके सच हकीकत ये हे के पाण्डुरङ्ग विठ्ठलनाथजी होंय के श्रीरङ्ग होंय के तिरुपतिबालाजी होंय के जगन्नाथजी होंय, जैसे ये तन्त्रके द्वारा प्रतिष्ठापित देव हें वैसे एक समय श्रीनाथजी भी तन्त्रके द्वारा प्रतिष्ठापित देव हते. पौष्कर संहिता उठाके देख लो. स्पष्ट वहां विवरण आ रह्यो हे के श्रीनाथजी तन्त्रके द्वारा प्रतिष्ठापित देव हें. तन्त्रमार्गसु प्रतिष्ठापित देव होंय तो वो भी मर्यादामार्गके हें. श्रीनाथजी खुद मर्यादामार्गके हें. पौष्कर संहितामें क्लीयरकट् विवरण हे के तन्त्रके द्वारा प्रतिष्ठापित देव हें श्रीनाथजी, जैसे तिरुपतिबालाजी पाण्डुरङ्ग विट्ठलनाथ. तो श्रीनाथजी भी तो मर्यादादेव हें. मर्यादामार्गीय हें के पुष्टिमार्गीय हें, राजा अपने राज्यसिहांसनपे बैठ्यो होय या वो जंगलमें शिकार करवे गयो होय, तो वहां जावेसु क्या वाको राजापन हट रह्यो हे वामेंसु? राजाको राजापन तो नहीं हट रह्यो हे. राजा समझो के कोई अपने दोस्तकी चाकरी करतो होय, जैसे कृष्णने महाभारतमें युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें सबन्के चरण धोये. सबके चरण धोवेके कारण क्या कृष्णको डीग्रेडेशन् हो गयो? कौन कौनके चरण धोये? सब कौरवन्के, सब गिलिन्डरन्के. अच्छे आदमीन्के ही नहीं धोये पर सब आवेवाले मेहमानन्के चरण धोये. याके लिये ही उनकु एपोइन्ट् कियो गयो के चलो ये काम तुम करो. कृष्णने सबन्के चरण धोये तो यासु क्या उनको डीग्रेडेशन् भयो? कृष्णको डीग्रेडेशन् नहीं भयो पर ये तो कृष्णको ग्लोरिफिकेशन् भयो! **"सूरदास प्रभु नांगे पायन, अनुदिन गैया चारीं."** गायन्कु चरानो, ढोरकु चरावेसु क्या कृष्णको डीग्रेडेशन् भयो?

डीग्रेडेशन् नहीं भयो पर प्रोमोशन् भयो. ग्लोरिफिकेशन् भयो के पुरुषोत्तम हें और वो कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं समर्थ हे. कोई मर्यादासु प्रतिष्ठापित हो गयो तो वाके कारण वा पुरुषोत्तमको डीग्रेडेशन् कैसे होयगो? यदि डीग्रेडेशन् हो गयो तो पुरुषोत्तम नहीं हे. यदि पुरुषोत्तम हे तो डीग्रेडेशन् पॉसिबल् नहीं हे. कॉमनसेन्स्की बात समझो.

अपन् पुरुषोत्तम भी केह रहे हें और सबसु फनिएस्ट् पार्ट यामें ये हे के अपन्के अकलपे परदा गिर गये हें के कृष्ण पुरुषोत्तम हे, वाको प्रमाण क्या? गीता. गीता तो मर्यादापुरुषोत्तम सिद्ध करे हे. वो या व्रजके कृष्णपे तो लागू होयगी ही नहीं. वो क्या ग्यारह बरस बावन दिन पूर्णपुरुषोत्तम हे. बाकी सब दिन मर्यादापुरुषोत्तम हे. याको प्रमाण क्या? गीतामें कह्यो हे के **''यस्मात् क्षरम् अतीतो अहम् अक्षरादपि चोत्तमः. अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः''** (भग.गीता.१५।१८) प्रमाण ये. अकलके बारदान हे के नहीं? यदि ये प्रमाण हे तो वो पुरुषोत्तम कैसे सिद्ध होयगो? वो तो महाभारतको कृष्ण केह रह्यो हे. वो तो पुरुषोत्तम ही नहीं हे अपने यहां. वो केह रह्यो हे के मैं **''यस्मात् क्षरम् अतीतो अहम् अक्षरादपि चोत्तमः. अतोऽस्मि लोके वेदे प्रथितः च पुरुषोत्तमः''** याके लिये पुरुषोत्तम हूं. अब ये बात व्रजके ग्यारह बरस बावन दिनके पुरुषोत्तमपे कैसे लागू होयगी? यदि दोनों एक नहीं हें तो. यदि लागू हो रही हे तो बात साफ हो गई के दोनों एक हें. अलग हो नहीं सकें. चलो मैं भी केह रह्यो हूं के मैं पुरुषोत्तम हूं. लागू होयगी कृष्णपे बात? अरे घुटने टूट रहे हें, बाल झड़ रहे हें, जावेकी

तैयारी हो रही हे और पुरुषोत्तम हो गये, अरे वाके सींग न पूंछ!! अकल बिनाकी खोटी बात. यदि वा पुरुषोत्तमके पुरुषोत्तमत्वके कारण व्रजको कृष्ण पुरुषोत्तम सिद्ध होतो होय तो या कृष्णको वचन कहां हे के मैं पुरुषोत्तम हूं. कमसु कम अपन्कु ऐसो तो भूलके करनो ही नहीं चहिये. गीतामें कहे गये कृष्णके वचन पुरुषोत्तमत्वके यहां अपन् प्रमाण तरीके वापर रहे हें. मतलब टॉप् फ्लोर् वेकेन्ट् हे अपनो! यदि टॉप् फ्लोर्में कछु भी मसाला भर्‌यो भयो होय तो ऐसी बात कैसे सोची जा सके! यदि व्रजको कृष्ण पुरुषोत्तम हे और वामें प्रमाण गीता हे. **''क्षराक्षरातीत पुरुषोत्तम''** ये वचन कौन केह रह्यो हे? गीताको कृष्ण केह रह्यो हे के व्रजको कृष्ण केह रह्यो हे? यदि वो वचन वो केह रह्यो हे और वो वचन प्रमाण हे के अप्रमाण? तो पहले यहां प्रमाण होयगो के वहां प्रमाण होयगो? खाली कॉमन्सेन्स् यूज़् करवेकी जरूरत हे; पुरुषोत्तमसेन्स् यूज़् करवेकी जरूरत नहीं हे. खाली कॉमनसेन्स् यूज़् करो तो ये छोटीसी बात समझमें आ जाये, ऐसी बात हे. अंडबंड कछु भी सोचते रहें. मर्यादापुरुषोत्तम और पुष्टिपुरुषोत्तम वो पुरुषोत्तमकी लीलाके दो भेद हें. वाम और दक्षिण अंगके भेद हें. दो दृष्टिके भेद हें. दो चरणके भेद हें. श्रीनाथजीको वाम अंग दक्षिण चरण, दक्षिण हस्त, वाम दृष्टि, वाम चरण, वाम हस्त आदि ये सब मर्यादा और पुष्टि के प्रभेद हें. श्रीनाथजीके पीठिकामें मर्यादाभक्त मोर भी हे, पुष्टिभक्त गाय भी हे.

उनकु अपन् केह रहे हें **सपने नहीं व्यवहार.** जब पीठिकामें बैठे भये हें और तुम केह रहे हो सपने नहीं व्यौहार. औरंगजेबकी

तरह खंडित करोगे क्या? अरे भई अकल तो चलाओ! घास तो अपन् भी नहीं खा रहे हें, अकल तो चलाओ के श्रीनाथजीकी पीठिकामें मर्यादाभक्त बैठे भये हें, जब भोग धर रहे हें तो दिखलाई दे रह्यो हे के नहीं दिखलाई दे रह्यो उनकु? छू गयो के नहीं छू गयो? जब तुम भोग धर रहे हो श्रीनाथजीकु तो पीठिकामें मर्यादाभक्त तो बैठे भये हें. **ब्रह्मज्ञानीने मुक्तिमार्गी सपने नहीं व्यवहार.** मयूर मुक्तिमार्गी हें. गाय भक्तिमार्गी हें. सपने नहीं व्यौहार तो भोग धरो ही नहीं, उनकु ढको. कैसे ढकोगे? श्रीनाथजी सबन्कु इक्ट्ठो करके बिराजो भयो हे वाम-दक्षिणके भेदसु. सब कछु वामें हे. वाकु ढकोगे कैसे? सर्दीमें तो चलो अपन् आड़ वस्त्र धरा दें. गर्मीमें क्या करोगे? गरमीमें तो फिर भोग नहीं धरनो चहिये, छू जायगो. मर्यादामार्गीकी दृष्टि पड़ गई. पीठिकामें भक्त बैठे ही भये हें. जीव बैठे भये हें, सब बैठे भये हें वा पीठिकामें. या तो वाकु इन्कार करो. यदि इन्कार कर दियो तो वो पुरुषोत्तम नहीं रह जायगो. यदि वो पुरुषोत्तम हे तो वो सबन्को संग्रह करके बैठो भयो हे, छोड़ोगे कैसे वाकु? तुम कौन कहवेवाले के तुम इनकु साथ मत रखो. ये तो मर्यादाजीव हें. एक दिन धरना लेके जायें नाथद्वारा के पीठिकामेंसु मर्यादाभक्तकु हटाओ. ये पुष्टिमार्गको प्रिविलेज् हे. हटाओ मर्यादाभक्तन्कु. ये अन्याय नहीं चलेगो. ऐसो चल सके का? बेकारकी बात अकल बिनाकी. हो ही नहीं सके ना!

पीठिकामें दोनों तरहके भक्त हें, दोनों तरहके जीव हें, श्रीनाथजीके श्रीअंग हें. दोनों तरहके श्रीनाथजीके चरणारविन्द हें. दोनों तरहके श्रीनाथजीके हस्तकमल हें. दोनों तरहके श्रीनाथजीकी

दृष्टियें हें. उनकु तुम ना कैसे पाड़ सकोगे? बेसिकली अपन् कन्सॅप्ट्में ही गोता खा गये हें. कहीं न कहीं भारी घोटाला हो गयो हे. जो बात केह रहें हें वो बात अपनकु ही समझमें नहीं आ रही हे. खुद अपन् ही समझ जायें तो सारी बातको खुलासा हो सके हे. या तरीकेकी सिच्युएशन् हे.

(प्रमाण–प्रमेय और साधन–फल की परस्पर निगूढ़ता)

त्यांथी दक्षिण प्रभुजी पाउं धारिया पांडुरंग श्रीविठ्ठलनाथ. नेत्र मळतां बात कीधी वचन दीधुं हाथ. वचन निश्चे श्रीनाथे मांग्यु कीधी श्रीवल्लभजी शुं बात. अपने ते इच्छा एह छे जे हुं नन्दन तमे तात. तो श्रीनाथ नाम रखनो चहितो हतो! विठ्ठलनाथ क्यों रख्यो? अकल तो वापरोगे के नहीं वापरोगे? और यदि तुम फिर श्रीनाथ नाम नहीं रखके श्रीविठ्ठलनाथ नाम रख रहे हो तो श्रीनाथजीको अपराध भयो के नहीं भयो? ऐसे कोई चल सके? ऐसे सोच्यो ही नहीं जा सके. या तरहकी सेगमेन्टेड् थियोरी मूलत: गलत हे. **ते पुरुषोत्तम प्रगटशे श्रीविट्ठल रूप निधान. नेत्र कमलें नाना भावे देशे भक्तने सन्मान.** श्रीविठ्ठलरूपनिधान, श्रीनाथरूपनिधान तो नहीं केह रहे हें. रूप कौनको उनने चुरायो हे? कौनके रूपके निधान हें? 'निधान' मतलब स्टोरेज्. कौनको रूप यहां स्टोर्ड् भयो हे? श्रीविठ्ठल–रूप–निधान. **नेत्र कमले नाना भावे देशे भक्तने सन्मान.** मैंने यहां एक श्लोक लिख्यो हे. **''मानं गूढप्रमेयात्मा प्रमेये गूढमानता'' बलदेव श्रीगोपीनाथ कहिये विठ्ठल नंदानंद. ते वेद पंथ विस्तारशे जन आपशे आनन्द.**

हर प्रमाणमें एक प्रमेय छुप्यो भयो हे, हर प्रमेयमें एक प्रमाण

छुप्यो भयो हे. हर साधनमें एक फल छुप्यो भयो हे और हर फलमें एक साधन छुप्यो भयो हे. जैसे हर फलमें वाकु उगावेको साधन वाको बीज छुप्यो भयो हे और हर बीजमें पाछो वाकु उगावेको एक फल छुप्यो भयो हे. बीजकु बोके देखोगे तो पता चलेगो. हर जगह एक–दूसरमें बीज और फल को भाव हे. कम्पार्टमेन्टलाईज़ेशन् पॉसिबल् नहीं हे. श्रीगुसांईजी और श्रीगोपीनाथजी में या तरहको कम्पार्टमेन्टलाईज़ेशन् पॉसिबल् नहीं हे. ये मर्यादामार्गीय हें और ये पुष्टिमार्गीय हें. याके ऊपर तो व्रजरायजीने एकदम पूरी अक्षोहणी सेनाके साथ महाभारत छेड़ दी हे. वो देखवे लायक हे. मुंह भर भरके गाली दे रहे हें. **कर्मजड आसुर अन्य उपासक भजन धर्मथी हीन.** मोकु व्रजरायजीकी बात अच्छी लगी. सेन्सिबल् बात हे. उनकी सॉलिड् आर्ग्युमेन्टको कोईके पास जबाब नहीं हे. माने प्रमेयरूप नंदनंदनमें प्रमाणरूप विट्ठलनाथको गूढ़भाव हे. वाको कारण समझो. गोपीन्कु अपने यहां ''प्रेमकी ध्वजा''कहें हें. वो गोपीनाथजीको नाम हे. और **"विदा ज्ञानेन् ठ शून्यान् लाति इति विट्ठलनाथ."** अज्ञाननिवारक विट्ठलनाथ हे. प्रेमके नाथ गोपीनाथ हें. क्या घोटाला हे? हेरा फेरी हो गई हे कछु? दोनोंमें पन्द्रहसालको अन्तर हे. तो हेरा–फेरी कैसे हो सके हे दोनोमें! जुड़वां होते तो हेराफेरी सम्भव हती. वो गोपीनाथ हें और ये विट्ठलनाथ हें. विट्ठलनाथ नाम तो हे ही मर्यादाको. और अपने तो **ज्ञानमार्गी स्वपने नहीं व्यवहार.** अज्ञान निवृत्त करोगे तो हमारे क्या फायदा होयगो? भायला कांई स्नेहनी बात कर. ज्ञान के अज्ञान नी वात अहियां क्यांथी आवी गई पुष्टिमार्गमां? तो फिर विठ्ठलनाथजीने क्यां पधरावना? आ तो नक्की करो. भायला स्नेहनी

वात करो. प्रमेयनी वात करो. फिर विठ्ठलनाथजीने क्यां पधरावुं? विट्ठलनाथजी तो अज्ञानने निवृत्त करे छे. गोपीनाथजीने पधरावो. गोपी प्रेमनी ध्वजा, एनो नाथ छे. भायला शुं करे छे विचार तो कर. अरे कछु भी विस्तार करते रहें हें. **''आनन्दस्य हरेर्लीला'' पर पोतानी व्यक्ति करेवा सृष्टि ते द्विधा विचार.** अपने पुष्टिसृष्टिवाले सम्प्रदायमें भी दोनों प्रकारकी सृष्टि हें. कर्मजड़ आसुर भी हें व्रजरायजीके हिसाबसु; भजन धर्मथी हीन भी हें. महाप्रभुजी गुसांईजी कु समझवेवाले भी हें. तीन तरहकी वॅरायटी हें.

(लीलाके गुणगान और लीलाकी भावना सु पुष्टिपुरुषोत्तमको प्राकट्य)

याकु भगवल्लीला समझनी चहिये. पर याके बाद जो कड़ी आ रही हे **त्यांथी वृन्दावन पांउ धारिया ज्यां मधुप करे झंकार. कुसुम द्रुम नव मल्लिका** सु लेके **रंगे ते रमता दीठड़ा बलदेव श्रीगोविन्द. ऐ पुत्रभावे प्रगटशे मन उपन्यो आनन्द.** यामें एक बात ध्यानसु समझो के जब भी पुरुषोत्तमको प्रागट्य होनो हे वो मैंने यहां आपकु बतायो के लीलाकथामें गुणको अवलम्बन करनो पड़ेगो. या ग्राफमें देखो. अवतार जब भी होयगो तो **''मर्यादया गुणज्ञास्ते''** (पु.प्र.म.१६) वो अवतारलीलाको गुणगान करनो पड़ेगो करके यहां गोपालदासजी वो गुणगान और कीर्तन के द्वारा बता रहे हें. व्रजकी लीला करवेवाले पुरुषोत्तमकु यदि आचार्यके रूपमें प्रकट होनो चहिये तो पहले बॅकग्राउन्ड्में व्रजकी लीला तो प्रकट होनी चहिये! याके लिये केह रहे हें के आज्ञा मिलते ही **त्यांथी वृन्दावन पाउं धारिया,** अब वो वृन्दावनको वर्णन हे के **जहां मधुप करे रे झंकार.** इन सबकी बोहोत सुन्दर सुन्दर व्याख्यायें हें पर वा डीटेल्में अपन्

अभी नहीं जा सकें हें. **तरु तमाल अति शोभतां हेमजूथिका संघोड. ललना ते सुभगा लटकतां हींडे ते मोडामोड. तान धुनि मुनि मयूररूपे सांभळे धरि ध्यान. नित्य–लीला–गान– श्रवणें करे ते मधुपान.**

नित्यलीला और व्यापिवैकुण्ठलीला हे. दो बातकु ध्यानसु समझो. वो केवल 'नित्यलीला' माने टाईम्के फ्रेम्में एवर् लास्टिंग् नहीं हे. माने स्पेस्के फ्रेम्में भी वो हे. माने सब जगह हे वो (नित्य)लीला. और वो लीला जहां भी हे, जहां भी वो पुष्टिपुरुषोत्तम प्रकट हो रह्यो हे वो अपनी पुष्टिलीलाके परिकरके साथ प्रकट हो रह्यो हे. वा लीलाकी भावना अपन् करें तो पुष्टिपुरुषोत्तम प्रकट हो सके हे. याके लिये ये आगे कड़ी आवे हें **ते पुत्र भावे प्रगटशे मन आपशे आनन्द.** वाके बाद वो केह रहे हें के **बलदेव श्रीगोपीनाथ कहिये श्रीविट्ठल नन्दानन्द. ते वेद पंथ विस्तारशे जन आपशे आनन्द.**

कछु टीकाकार यों कहें हे के गोपीनाथजी वेदपंथको विस्तार करेंगे और गुसांईजी आनन्द देंगे. ये बात मूलतः गलत हे. गोपालदासजीके मूडसु सच्ची पड़वेवाली बात नहीं हे. क्योंके ते बन्ने वेदपंथ विस्तारशे और ते बन्ने जन आपशे आनन्द. यहां व्रजरायजीने बोहोत सॉलिड् आर्ग्युमेन्ट् दी हे; गुसांईजीके श्लोक स्तुतिके, गुसांईजीके पत्र सब दिखाके वो केह रहे हें के गोपीनाथजीने गुसांईजीकु आनन्द दियो हे. गुसांईजीकु आनन्द दियो हे तो गुसांईजी बहिर्मुख हते के सन्मुख हते, पहले ये बात बताओ? गुसांईजी खुद पत्रन्में आज्ञा कर रहे हें के "आपको पत्र आवेसु

मेरो रोम-रोम राजी हो गयो.'' तो गुसांईजीकु आनन्द दे रहे हें गोपीनाथजी. यदि मर्यादामार्गीय आनन्द दियो गुसांईजीकु तो गुसांईजीने वा आनन्दकु झेल्यो क्यों? यदि गुसांईजीने मर्यादामार्गीय आनन्दकु झेल्यो तो गुसांईजी मर्यादामार्गीय भये? पाछी बात वहींकी वहीं आ गई. या लिये वो केह रहे हें के ये प्रभेद खोटो हे. **ए वेद पंथ विस्तारशे जन आपशे आनन्द.** हकीकतमें बात ये हे के गोपीनाथजीने जो सेवाभावनाकी सारी बातें लिखी हें उनकु गुसांईजीने कॉपी करी हें. उनकु कॅन्सल् नहीं करी हें. उनकु ओर बढ़ाई हें. गुसांईजीने वेदपंथको विस्तार कैसे कियो वो तो अपन् विद्वनमंडन देखें तो पता चलें. जितनो गुसांईजीने कियो हे इतनो तो गोपीनाथजीने कियो ही नहीं हे. एक छोटीसी साधनदीपिका प्रकट करी हे. वामें भी आप केह रहे हें के ''महाप्रभुजी जो केह गये हें वाकु मैं कह रह्यो हूं.'' और सेवाकी भावनायें प्रगट करी हें, वो जनकु नहीं पर पुरुषोत्तमकु आनन्द देवेवाली भावनायें हें. वा मॉडेलकु तो गुसांईजीने स्वीकार्‌यो हे. ये प्रभेद हो कैसे सके? कहांसु अपन्ने खड़ो कियो? एक वेदपंथ विस्तारशे और एक जन आपशे आनन्द.

(प्रमाणपंथाके मार्गमें अनुगामीको गैरजिम्मेदारा अनुगमन!!)

बेसिकली या तरहकी सोच कहीं न कहीं कछु गड़बड़ाध्याय लिये भयी हे. व्रजरायजीने ये इश्यु भी डिस्कस् कियो हे के ये गड़बड़ाध्याय पुष्टिमार्गमें पैदा क्यों भयो? बोहोत ही गज़बको हे व्रजरायजीको खाता. वो कहें हें के बोहोत सारी बातें लोग आधी सुनके केहवे लग जायें. सोचें नहीं के वाको मूल क्या हे? कोईने कछु केह दी और अपन्ने सुन ली और परम्परा चल निकले. पता

ही नहीं चले के कौनने क्या कही हती, कहां कही हती और कैसे कही हती? ''सुन्यो हे के ऐसे कह्यो गयो हे.'' वाके भी उनने कई उदाहरण दिये हें के कैस-कैसे मार्गमें घोटाला चलें हें. कोई बापाने केह दियो कोई बापीने केह दियो और बात चल पड़े. अब उन बापा-बापीकु पता कैसे चली? वापे अपनो माथा तो लगाओ ना! बापाकु धन्धा तो होवे नहीं बुढापाके कारण और उनको मन लगे नहीं तो कछु न कछु रंगीन कल्पना करते रहवें. वा रंगीन कल्पनान्में जो सूझे वो केह दें. बाकी ग्रंथ तो पढ़ें नहीं क्योंके आंखमें चश्मा आ गयो होवे. तो बैठे-बैठे जो फितूर दिमागमें चढ़ गई वाकु वो प्रचलित कर दें और बापा-बापीन्के भगत उन कथान्कु आगे चला देवें. ग्रंथन्सु मिलान कोई करे नहीं. व्रजरायजी केह रहे हें के ये सब बातें कहीं ग्रंथन्में तो दीख नहीं रही हें. पढ़े बिना बोले. नाड़ी देखनो आवे नहीं, ब्लडप्रेशर् मापनो आवे नहीं और इलाज़ करवे लग जायें. इन्जेक्शन् ओर ठोक दें. फिर तो आदमी मरेगो ही ना, जायगो कहां? अरे भई इलाज़ कर रहे हो तो पहले मेडीसिन्कु पढ़ो तो सही. कौनसी दवा कहां लागु होयगी? फितूरमें इन्जेक्शन् लगानो आ गयो तो लगा दो सभीकु. कोई बम्बावालको इन्जेक्शन् लगा देवे तो वा गरीब बिचारेको पेट ही फट जायगो. क्यों ऐसे उपद्रव करें पुष्टिमार्गमें अपन्? समझ नहीं आवे! पढ़ें नहीं और कछु भी बात करवे लग जायें. ''**शायरी चारा समझके हर गधे चरने लगे. उर्दु जुबां आती नहीं पर शायरी करने लगे.**'' वा तरीकेकी स्थिति अपने पुष्टिमार्गकी हे.

वाकु व्रजरायजी केह रहे हें के कई तरहके घोटाला हें और

वाकी कई लिस्ट् दी हें उनने. जा बातको कोई सोर्स नहीं हे. कोई भी बापाने केह दियो तो वो तो परम भगवदीय हते. वो बापी भी परम भगवदीया हती. पाछे उनके दो चार भगत ओर हो जायें जो या बातकु फैला दें. न ये पढ़्यो न वो पढ़्यो. फिर भी एक गुरु हे और दूसरो चेला हे. ये एक ओर माहात्म्य हे. पढ़े दोनों ही नहीं हें. न गुरु पढ़्यो हे और न चेला पढ़्यो हे. वो व्रजरायजीने या मसलेपे भारी महाभारत छेड़ी हे. या तरीकेको गैरजिम्मेदाराना काम ये प्रमाणपंथाआचार्यके मार्गमें अपनुकु फैलानो नहीं चहिये. ये केयर् लेनी बोहोत जरूरी हे.

(सेवा–कथासु पुष्टिपुरुषोत्तमको प्राकट्य)

त्यांथी केशीघाट पाउं धारिया कहि कथा तत्त्व समाधि. देखो अभी तक उनने शास्त्रको कियो. वाके बाद कथाको. कथामें वो सारी बात ला रहे हें. **"सेवायां वा कथायां वा"**(भ.व.८)के दृष्टिकोणसु. जब वा कथा और सेवा दोनोंकी साधना पूरी भई तब **हरखे ते सामा आविया श्रीगोवर्धन उद्धरण. हळीमळीने चालीयां चरणाट ज्यां निजधाम. नवरंग नागर प्रगटिया मन पूरवा बहुकाम.** वा बखत वो पुरुषोत्तम प्रकट होवे हे या सृष्टिकु ऑरगेनाईज़् करवेवालो. **''पितृ–प्रवर्तित–पथ–प्रचार–सुविचारकः. व्रजेश्वर–प्रीति–कर्ता तन्निमन्त्रण–भोजकः''** (नाम.स्तो.१२) वो ऑरगेनाईज़र् प्रकट भयो हे यहां. इतनी साधना स्वयं आचार्यचरणने करी हे. खाली बैठे–बैठे तकियापे पौढ़ें नहीं हें और समाधानीसु बीड़ा, प्रसादी माला और प्रसादको दौना नहीं बंटवावें हें. महा जहमत उठाई हे. या मार्गकी स्थापनाके लिये आचार्यचरणने हार्ड् लेबर् कियो

हे. तब **नवनागर प्रगटिया मन पूरवा बहुकाम.** यहां जाके देखो गोपालदासजी कितने सावधान हें.

(अट्ठाईस तत्त्वन्‌की संख्याको समाधान श्रीगोपालदासजीद्वारा)

तत्त्वसंख्याये कह्यां पद सार मांहे सार. हवे, काईं एक स्तुति करूं श्रीवल्लभराजकुमार. महाप्रभुजी आज्ञा करें के चौबीस तत्त्व तो प्रकृतिके हें. वो तो शुद्ध सांख्य हे पर **''सांख्यो बहुविधः प्रोक्तः तत्त्रैकः सत्प्रमाणकः अष्टाविंशतितत्त्वानां स्वरूपं यत्र वै हरिः''** (त.दी.नि.१।९३) ये अठ्ठाईस कड़ीन्‌में यालिये वर्णन कियो के वो सार मांहे सार. जहां हरिके सब फॅसेट् हें उन सबन्‌कु गिनके गणना हो रही हे. वो चौबीस तत्त्ववाली तो ग्राउन्डकी तैयारी हे और ये तो बिल्डिंग्‌को कन्स्ट्रक्शन् हे वा ग्राउन्ड्‌पे. तत्त्वसंख्या अट्ठाईस आते ही बिल्डिंग् खड़ी हो गई. अब वो खाली ग्राउन्ड् लेवल् ही नहीं रह्यो. आखी बिल्डिंग् खड़ी हो गई हे. चौबीसके ऊपर अट्ठाईस् तत्त्व क्योंके पुरुषोत्तमके, ब्रह्मके जो सारे फॅसेट्स् हें, वाकु केवल सांख्य नरेट् नहीं कर पावे. वो तो **''सांख्यो बहुविध प्रोक्तः तत्त्रैकः सत्प्रमाणकः अष्टाविंशति तत्त्वानाम् स्वरूपं यत्र वै हरिः.''**(वहीं) हरिके दृष्टिकोणसु जा बखत देखो तो वो अट्ठाईस हें और प्रकृतिके दृष्टिकोणसु देखो तो वो चौबीस हें. तो भूमिपे निरोध करनो हे करके गोपालदासजी चौबीस तत्त्व केह रहे हें. जा बखत विट्ठलनाथकु प्रकट करनो हे तो कड़ीयें **''अष्टाविंशति तत्त्वानाम् स्वरूपं यत्र वै हरिः''** अठ्ठाईसके अट्ठाईस तत्त्व आ गये. ऐसे गोपालदासजीको एप्रोच् हे सर्ग और विसर्ग लीलाको. ये अपन् देख सकें. आज काफी समय हो गयो पर अपन्‌कु जो एक टेन्टेटिव

प्रोग्राम् हे के रोज आख्यान करनो वामें अपन् पोंहोचे तो सही गुसांईजीकी कृपासु.

(वल्लभाख्यानके सर्गके २४ तत्त्व, द्योतित या वाच्य?)

तीसरे वल्लभाख्यानपे जावेके पहले एक व्यक्तिगत प्रश्न डिस्कशन्में उभर्‌यो हतो. वाकु भी स्पष्ट करनो जरूरी हे. वो प्रश्न ये हे के पहले जो सर्गलीला हे, वामें सर्गके २४ तत्त्व प्रगट किये. तो वो २४ तत्त्व क्या वाच्य हें के द्योतित हें? 'वाच्य' माने स्पोकन् या इन्डिकेटेड् हें. कोई चीज अपन् बोलके कहें. कोई चीज अपन् बोलें नहीं पर वाको कछु इन्डिकेशन् दे दें. तो सर्गोपयोगी जो २४ तत्त्व हें वो स्पोकन् हें के इन्डिकेटेड् हें? अब वा चर्चाके दरम्यान वो अच्छी बात उभरी तो वाकु डील् करनो भी जरूरी हे, अन्यथा भविष्यमें भी वो कभी अपन्कु तंग कर सके हैं. कोई भी चीज स्पोकन् भी हो सके. कोई चीज इन्डिकेटेड् भी हो सके हे.

एक बात बताऊं. यहां जैसे पुरुष लोग या बाजू बैठे हें और महिलायें या बाजू बैठी हें. अब यहां ऐसो कछु लिख्यो नहीं हे के ऐसे ऐसे बैठो. पर देखके इन्डिकेशन् ऐसो मिल रह्यो हे के जो भी यहां घुसेगो पुरुष होयगो तो वा साईड्में बैठेगो, महिला होयगी तो या बाजू बैठेगी. ऐसो कोई साईन् बोर्ड नहीं लगायो गयो हे. अनस्पोकन् हे पर इन्डिकेटेड् तो हे ना. अब समझो कोई श्रोता यहीं आके बैठ जाय टेबलपे! टेबलपे नहीं बैठनो ये वाकु निषेध करवेकी जरूरत हे. स्पोकन् हे? इन्डिकेशन् हे के मैं यहां बैठ्यो भयो हूं तो प्रवचन कैसे करूंगो यदि कोई टेबल्पे बैठ जायगो? तो कछु बातें इन्डिकेटेड् होवें हें, स्पोकन् नहीं होवें. ये डे टु डे के

व्यवहारमें होवे हे. ऐसे ही यहां सर्गलीलामें ये २४ तत्त्व इन्डिकेटेड् हें के स्पोकन् हें? यदि इन्डिकेटेड् हें तो उनको सिग्निफिकेन्स् कम हो जा रह्यो हे. स्पोकन् हे तो उनको सिग्निफिकेन्स् कछु बढ़ रह्यो हे. या सारे इश्युकी मार या बातपे पड़ रही हे के प्रथमाख्यान सर्गलीला हे के नहीं जेन्युइनली? तेरे शब्दन्में कहूं तो सर्गलीलाकी कोई वर्च्युअल् रीयालिटी तो नहीं हे. अब नहीं ऐसो सवाल पैदा होयगो मगर तेरो जो कन्फ्युजन् हतो वाकु थोड़ो ओर एन्टरटेन् करवेके लिये; ये जो पहलो आख्यान हे, क्या वो सर्गलीलाकी कोई वर्च्युअल् रीयालिटी हे?

वल्लभाख्यानमें या तरीकेको कोई शब्द नहीं हे; चौबीस संख्या, हर बखत जब भी संख्या वापरी जाय तब वाको कछु न कछु इन्डिकेशन् हे, ऐसो भी जरूरी नहीं होवे. कई बखत संख्याको कछु इन्डिकेशन् होवे भी हे. कई बखत संख्याके द्वारा कछु इन्डिकेशन् नहीं भी होवे हे. दोनों तरीकेके अपने व्यवहारमें हिसाब होवें हें. जैसे कान दो हें. क्या इन्डिकेट् कर रहे हें अपन्कु बायोलॉजिकली? आंख दो हें तो क्या बात इन्डिकेट् कर रही हें? अब कहीं भी कह्यो नहीं गयो हे के कान दो या लिये लगाये गये हें के ऐसे सुनो; आंख दो या लिये दी गई हें के या तरहसु देखो. इन्डिकेशन् मिल रह्यो हे अपन्कु के एक ही बात नहीं सुनो, दोनों बात सुनो. एक ही चीज मत देखो, दोनों चीज देखो. इन्डिकेशन् मिल रह्यो के नहीं? अपन् कहें के "नहीं नहीं हम तो स्पोकन् वर्डके अनुगामी हें." तो आंखपे कोई टॅग् तो लग्यो नहीं हे के दोनों साईड देखियो, एक साईड्में ही मत देखियो. कानपे कोई टॅग् तो

लग्यो नहीं हें के दोनों बातन्कु सुनियो. ठीक हे भई बात खतम हुई. पर दो कान दिये गये हें तो दोनों साईड्की बात अपन सुनें, लेफ्ट और राईटकी. ये प्रभेद भये हें. क्योंके बोहोत सारे जानवर जिनकु चारों साईड्को सुननो पड़े तो उनके कानके स्ट्रक्चर् भी वाई तरहके हें के वो चारों साईड्कु सुन सकें. उनकी आंखके स्ट्रक्चर् भी नेचर्ने या तरीकेके बनाये हें के उनकु चारों साईड्को दीखतो होवे हे. मनुष्यके लिये नेचर्कु ऐसो लग्यो के काफी सामर्थ्य दे दी हे और एडीशनल् सामर्थ्य दी तो न जाने क्या क्या खुराफात करेगो? तो नेचर्ने मनुष्यके लिये स्टॉप् कर दिये थोड़े फन्क्शन्. विकासके दरम्यान थोड़े बढ़ते होने चहिये हते पर थोड़ो प्लस् माईनस् हो गयो. क्योंके दूसरी कछु समझ ज्यादा दे दी ना! उतनेको ही पहले सदुपयोग करनो सीख ले तो आगेकी बढ़ती सामर्थ्य दी जा सके हे. वो सारी सामर्थ्य अभी दे दी तो न जानें क्या क्या उत्पात करेगो मनुष्य!! अकर्तुं सामर्थ्य प्रगट कर दियो के अब ऐसो नहीं करेंगे मनुष्यमें. जैसे चमगादड़कु रातमें देखवेको सामर्थ्य हे. वो सामर्थ्य नेचर्ने अपन्कु नहीं दी हे. चमगादड़कु सीटी बजाके आगेको रास्ता पता चले. अपन् सीटी बजावें तो कोई चप्पल ही मारेगो. तो बोहोत सारी सामर्थ्य अपनेमें कॅन्सल् हो गई हें. वापरें तो भी कछु न कछु लफड़ा हो जाय. नेचर्ने जानवरन्कु दिये हें अपन्कु नहीं दिये हें.

इन्डिकेशन् क्या हें, वो यदि अपन् समझ सकें तो यहां मैं एक बात समझानो चाहूंगो. जैसे मकान अपन्कु बनानो हे तो अपन्कु ईंट सीमेन्ट मट्टी रेता सलिया सब लाने पड़ेंगे, कारीगर

मजदूर बुलाने पड़ेंगे, खड्डा खोदनो पड़ेगो, जमीन लेनी पड़ेगी. ये सब रॉ मटीरियल्मकान बनावेके लिये जरूरी हें. ये पहले अपन्कु जुटाने पड़ेंगे तब मकान बन सकेगो. यदि मकानके रॉमटीरियल् अपन्ने नहीं जुटाये हें तो मकान कैसे बनेगो? जब अपन्ने रॉ–मटीरियल् जुटा लियो वाके बाद वाकु ऑरगेनाईज़् करवेवाले एक आदमीकी जरूरत पड़ेगी. तो वो विसर्ग हे. रॉ मटीरियल्जुटानो सर्ग हे. जैसे पेन्टिंग् करनी हे, तो कॅनवास् कलर् ब्रश् जुटाये, डिज़ाइन्के पॅटर्न जुटाये, वगैरह वगैरह जुटानो सर्ग हे. वाके बाद अपन्ने पेन्टिंग बनानी शुरु करी तो विसर्ग हे. जैसे कपड़ा सीनो हे तो कपड़ा डोरा सुई मशीन् कैंची सब जुटानो सर्ग हे. वा सबकु जुटावेके बाद जब अपन्ने ड्रेस् सीनो शुरु कियो तो वो विसर्ग हे. वो ड्रेस्कु सीवेके लिये कोई पुरुषकी जरूरत हे. और बोहोत सारे रॉ मटीरियल्कभी नेचर् भी सप्लाई कर दे हे; कोई भी सप्लाई कर दे हे. वाके लिये कोई एक स्पेसिफिक् पर्सन्की जरूरत नहीं हे.

हमारी टीकुकी मॅरेज् हम अहमदाबाद करवे गये हते. तो वहां एक मीटिंग बैठाई हती के व्यवस्था कैसे करनी? तो एकने कही के "केटली गधेड़ी आवशे?" मैंने कही के "मॅरेज्मां गधेड़ीनी शुं जरूर पडी?" तो उनने कही "नहीं नहीं, जमीनकु ठीक करवेके लिये मिट्टी गधेड़ी ऊपर आवे हे, वाकी बात हे." गम्भीर डिस्कशन् चल रही हती के कितनी गधेड़ी आयेंगी? मोकु नर्वसनेस् आ गई के गधेड़ीकी चर्चा यहां कहांसु आ गई? अब गधेड़ीकु अपन् पुरुष नहीं कहेंगे. "विसर्गकर्ता पुरुष गधेड़ी इति उच्यते." ये काम तो टेम्पो भी कर सकतो हतो, इन्सिडेन्टली ये काम वहां

गधेड़ी कर रही हें.

(पुष्टिसंप्रदायके सर्गको रॉ–मटीरीयल्)

यहां जो इश्यु हे के ये पुष्टिसम्प्रदायको सर्गको रॉ मटीरियल्क्या हे? वा रॉ मटीरियल्कु ऑरगेनाईज़् करवेवालो पुरुष कौन हे वो दूसरे आख्यानको विषय हे. पहले आख्यानको विषय क्या हे? रॉ मटीरियल्क्या हे? जासु पुष्टिमार्ग बन्यो. तो वो आप थोड़ो देख लोगे तो बोहोत सारी बातें स्पष्ट हो जायेंगी. वहां भागवतकी जो सर्गलीला हे वामें चौबीस तत्त्व कछु और हें. प्रकृति महदादि अहंकारादि पंचमहाभूतादि चौबीस तत्त्व हें. वहां ये रॉ मटीरियल्हें. यहां वा रॉ मटीरियल्की चर्चा नहीं हे क्योंके ये तो भागवतमें बॅकग्राउन्ड बनके आ ही गयो हे. अब वामेंसु फोकस् करके पाछो कोई दूसरी चीज, जैसे रॉ मटीरियल्को प्रोडक्ट् बनाके वा प्रोडक्ट्कु भी रॉ मटीरियल्बनाके दूसरो प्रोडक्ट् बनायो जाय हे. जैसे कोईने रुई पैदा करी. रुईमेंसु अपन्ने सूत पैदा कियो. वा सूतमेंसु फिर कपड़ा पैदा कियो. कपड़ामेंसु ड्रेस् पैदा कियो. तो रॉ मटीरियल्मेंसु प्रोडक्ट् बनाके वा प्रोडक्ट्कु फिरसु दूसरे प्रोडक्ट्के लिये रॉ मटीरियल्बना सकें हें के नहीं बना सकें हें! ऐसे भागवतमें जो रॉ मटीरियल्पैदा हो गयो हे वो तो अवेलेबल् हे. वाकु फिरसु यहां रॉ मटीरियल्तरीके कहवेकी जरूरत नहीं हे. वहां जो रॉ मटीरियल्बनायो जा रह्यो हे वो वहां बनायो भयो रॉ मटीरियल्हे, सॅकन्ड लेवल्को, थर्ड लेवल्को या जो भी लेवल् होय वो इम्पॉर्टेन्ट् नहीं हे. तो पुष्टिसम्प्रदायकु पैदा होवेको रॉ मटीरियल्क्या हतो? ये बेसिक इश्यु हे.

अपने हिन्दुस्तानमें सबसु अच्छी बात तत्त्व हे. जब कोई भी झगड़ा नहीं करनो हे तो 'तत्त्व' केह दियो तो झगड़ा खतम. अपन् वाकु नाम नहीं दे रहे हें. कछु हे सो हे. तत्त्वको सबसु पहले गोपालदासजी कैसे डिफाइन् कर रहे हें

तत्त्व दो तरीकेके हें. अक्षर और पुरुषोत्तम. देखो, शुरुआत करते ही गोपालदासजीने वो बात इन्ट्रोड्युस् कर दी हे के दो तरीकेके तत्त्व हें. जब दो तरीकेके तत्त्व हें तो द्वैतवादमें मत घुस जईयो ! ये खाली फोकस् में दो तत्त्व आ रहे हें, एक फोकस् करो तो एक तत्त्व दीख रह्यो हे और दूसरो तत्त्व फोकस् करो तो दूसरो तत्त्व दीख रह्यो हे. वैसे दोनोंके एक इन्टिग्रेटेड् होल् हे.

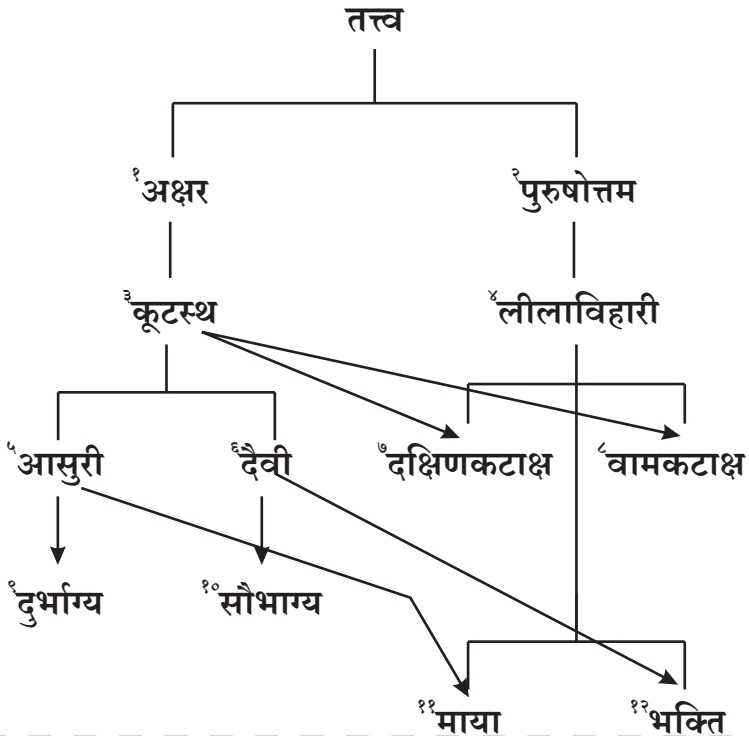

उनकु दो तरहसु तत्त्वकी तरह दीख रहे हें. वामें माया और भक्ति ये वा तत्त्वकी शक्ति हें. इनके दो एट्रीब्युट् बता रहे हें गोपालदासजी. एक क्या? अपनी समझके लिये अपन् वाकु नाम दे दें जैसे कूटस्थ और लीलाविहारी. 'लीलाविहारी' माने लीलामें विहार करवेवालो. 'कूटस्थ' माने जो विहार नहीं करे, जहां बैठ्यो भयो हे वहां ही बैठ्यो भयो हे. तो वाके दो कॅरेक्टर् हो गये. अक्षरब्रह्म कूटस्थ हे. पुरुषोत्तम लीलाविहारी हे. मतलब कूटस्थ नहीं हे. फिर वाकी दो कटाक्ष बता रहे हें. अब अपन् वाकु समझवेके लिये ऐसे केह दें के दक्षिणकटाक्ष और वामकटाक्ष. एक दायें देखनो और एक बायें देखनो. साधारणतया वामकटाक्ष स्त्रीलिंग होवे हे और दक्षिणकटाक्ष पुल्लिंग मान्यो जाय हे. तो वा कटाक्षके कारण कूटस्थमें पाछे दो जीव पैदा होवे हें. दो जीव कौनसे? आसुरी और दैवी. ये सारी सिनॉप्सिस् बता रह्यो हूं मैं पहले आख्यानकी. ये सर्ग माने रॉ मटीरियल्कैसे सप्लाई कर रहे हें. वाके बाद केह रहे हें के माया भी हे, भक्ति भी हे. दो मूरत भी हें इनकी. सो एक यहां लीन हो रह्यो हे. एक वहां लीन हो रह्यो हे. सिनोप्सिस् दीख रही हे ना? या लयके कारण पाछे एक प्रोबल्म् आ रही हे, वो प्रोब्लम् क्या आ रही हे? एक दुर्भागी हे और एक सौभागी हे. जो मायामें लीन भयो वो दुर्भागी हे. अब देखो दुर्भाग्य सौभाग्य भाग्य भगवान भक्त भक्ति ये सब एक ही धातुसु बने भये हें. जाकु अपन् रॅलिश् कर सकें वो 'भग'. जो भगके अनुकूल होय वो 'भाग्य'. जो रॅलिशेबल् नहीं होय वो 'दुर्भग'. वो दुर्भग जाकु मिल जाय वो 'दुर्भागी'. जाकु अपन् रॅलिश् नहीं कर सकते होंय, जैसे इनके दो एट्रीब्युट् हें, ऐसे इनके सौभाग्य और दुर्भाग्य घटित होवें.

अब ये बारह एट्रीब्युट् हो गये. इन सबको पाछो प्रभेद नित्यलीला और सृष्टिलीला में वाको द्विगुण करो तो कितने होंयगे! तो ये सारो मटीरियल् हे वो गोपालदासजीने बता दियो हे के ये मटीरियल् नित्यलीलामें भी अवेलेबल् हे और सृष्टिलीलामें भी अवेलेबल् हे.

नित्यलीला व्यापिवैकुण्ठमें चल रही हे. जामें टाईम् और स्पेस् की कोई सीमा नहीं हे. सृष्टिलीला टाईम् और स्पेस् की सीमामें चल रही हे. टाईम् और स्पेस् की सीमामें चल रही होवेके कारण वामें इन सबके रूप अलग–अलग आयेंगे. अपन् कहेंगे के अलग काहेकु हो गये? अरे ध्यानसु समझो के जितने भी भगवदीय हें जैसे शाकघरिया बाबा, बापा–बापी पूछते रहें के नित्यलीलामें कौनसो स्वरूप हे तुम्हारो? सृष्टिमें कौनसो स्वरूप हे? अब वो आंख मींचके बता देंगे के नित्यलीलामें तुम मक्खी हते, कोई नित्यलीलामें मच्छर हतो, कोई नित्यलीलामें कबूतर हतो, तो ऐसी बातें चलती रहें. या तरीकेको सारो नाटक चलतो रहे. वाके पीछे सिद्धान्त क्या चल रह्यो हे वाकु ध्यानसु समझो. सिद्धान्त ऐसो चल रह्यो हे **पर पोतानी व्यक्ति करेवा, सृष्टि ते द्विधा प्रकार.** वो **पोतानी व्यक्ति** वाने बोहोत तरीकेसु करी हे. तो नित्यलीलामें भी वाने स्वरूप प्रकट कियो हे. याही लिये अपने यहांकी भाव–भावनान्की पुस्तकन्में देखोगे तो हरेक चीजको कोई न कोई; जैसे चौरासी दोसो बावन वैष्णवन्की वार्तान्में उनके नित्यलीलाके रूप अलग हें. या भूतलके रूप उनके अलग हें. ऐसे वो समानान्तर चल रह्यो हे.

संस्कृतमें कहावत हे ''**तिष्ठन्मूत्रस्य गुरोः धावन्मूत्रानुवर्तिनः**'' गुरुजीकु कोई दिन खड़े-खड़े पेशाब करते देख लियो तो चेला समझ गयो के अब दौड़ते दौड़ते पेशाब करनो. ऐसे उन बड़ेन्ने कियो, उनकु देखके अपने यहां बापा-बापीयें दौड़ते दौड़ते पेशाब करते रहवें. कोईकु कबूतर बता दें. कोईकु चूहा बता दें ''नित्यलीलामें तुम चूहा हते.'' अरे भई! चूहा काहेके लिये हते! तो बोले ''नित्यलीलामें तुम चूहा हते. एक दिन तुमने स्वामिनीजीके चरणमें काट लियो वा लिये तुम भूतलपे प्रगट भये. पाछे एक दिन कुंजमें स्वामिनीजी पौढ़े भये हते और तुम वा कुंजमें चूहा बनके गये. सो स्वामिनीजीके चरणमें तुमने बटका भर लियो वाके लिये तुमकु नीचे भिजवाय दियो.'' चलो नित्यलीलाको एक भौतिकरूप आ गयो. ''**आनन्दस्य हरेर्लीला**''(त.दी.नि.३।१।३) ऐसी फॅब्रीकेटेड् कहानियें गढ़ते रहें क्योंके **पर पोतानी व्यक्ति करेवा सृष्टि ते द्विधा प्रकार.**

(सृष्टिलीला अवतारलीला और भक्तिलीला)

पर चौबीस तत्त्व अपन् समझ सकें के चौबीस तत्त्वको फ्रेम क्या हे? क्यों सर्गलीलाको ये रॉ मटीरियल्हे? ये गिवन् डेटा हतो. याके प्रोसेसिंग्की जरूरत हती. वाके लिये कोई प्रोसेसर् चहिये हतो. वाके लिये महाप्रभुजीकु प्रगट करनो, ये श्रीकृष्णने सोच्यो. **श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीडा लीला द्विज तनुधारी.** वा स्वतन्त्रक्रीड़ा पुरुषोत्तमने सोच्यो के ये जो रॉ मटीरियल्अवेलेबल् हे, वाके लिये कोई प्रोसेसर् चहिये के जासु पुष्टिसम्प्रदाय प्रगट होवे. वाके लिये लीलाद्विजतनु-धारी प्रगट कियो. वो प्रगट कियो करके वा सर्गमेंसु

विसर्गको पॅसेज् खड़ो भयो. जामें वा सर्गमेंसु विसर्ग आयेगो. एक साधारणसी बात बताऊं तुम्हारो माईन्ड् क्लीयर् करवेके लिये. श्रीमहाप्रभुजी कैसे आज्ञा करें? जहां तुम सेवा कर रहे हो, वो सिंहासन अक्षरब्रह्म हे. जो तुम्हारो ठाकुरजी हे वो पुरुषोत्तम हे. वो कहां हे? या सृष्टिलीलामें, नित्यलीलामें नहीं. जब तुम प्रभुकी भक्ति कर रहे हो तब तुम्हारो हृदय अक्षरब्रह्म हे. वा हृदयमें भक्तिके रूपमें प्रगट्यो भयो प्रभु पुरुषोत्तम हे. देखो नित्यलीलामें वाको अलग रूप हे. सृष्टिलीलामें वाको अलग रूप हे. यहां तक के भक्तिलीलामें हर चीजको अलग रूप हो जा रह्यो हे. मैंने याही लिये कल तीन तरहकी लीला बताई. ये सुबोधिनीमें महाप्रभुजीको पॅसेज् हे वापेसु मैंने बताई के तीन तरहकी प्रभुलीला हें. एक सृष्टिलीला और भागवत भी इन ही लेयर्स्में कही गई हे. एक पहले सृष्टिलीलाकी लेयर्में भागवत कही गई हे. दूसरे लेयर्में अवतारलीलाके रूपमें कही गई हे. तीसरे लेयर्में भक्तिलीलाके रूपमें कही गई हे. भागवत भक्तिसंहिताके रूपमें हे.

(विसर्गलीला माने पुष्टिसम्प्रदायको प्राकट्य)

और वापेसु एक चौथो भक्तिको सम्प्रदाय पुष्टिसम्प्रदाय महाप्रभुजीने प्रगट कियो हे. वा रॉ मटीरियल्कु प्रोसेसर्की जरूरत हती. माने **श्रीपुरुषोत्तमे वळी विचार्यु हवे प्रकार शुं करिये. म्हारी लीला अने कथा रस निरूपवा तनु धरिये.** वो प्रोसेसर्कु प्रगट कियो. वो **"पौरुषः सर्गो विसर्गः"** (भाग.पुरा.२।१०।३) वो जो फॉरमेट हे, वो तृतीय स्कन्ध और चतुर्थ स्कन्ध को जो कोरिलेशन् हे, वो यहां बोल रह्यो हे. वो चौबीस तत्त्व यहां कछु अलग आ गये हें. ये

वा रॉ मटीरियल्के लेवलके नहीं हें. रिफाईन्ड् मटीरियल् पाछे रॉ मटीरियल्बन रहे हें. वहां ये जो बन्यो हे वो रिफाईन्मेन्ट् हे. वा सृष्टिमें जो चौबीस तत्त्व हें और उन चौबीस तत्त्वन्मेंसु रिफाईन् कियो भयो ये रॉ मटीरियल्हे. ये रिफाईन्ड् हे. पाछो याकु रॉ मटीरियल्बनाके पुष्टिसम्प्रदाय प्रगट भयो हे. यासु प्रथम सर्गके बाद द्वितीय विसर्ग या संदर्भमें हे, ये बात मत भूलियो. प्रथम सर्गमें इतनो रॉ मटीरियल्बतायो. **तत्त्वसंख्याये कह्या पद सार मांहे सार. हवे काईंक स्तुति करूं श्रीवल्लभराजकुमार.** ये अपन् समझ सकें के वा फॉरमेट्कु वो स्ट्रिक्टली कैसे फॉलो कर रहे हें. वा फॉरमेट्में अपनी सारी फाईल्कु डाउन्लोड् करके एक रिजल्ट ला रहे हें. इन बातन्कु सोचें तो अपन्कु लगे नहीं के ये वल्लभाख्यान ऐसे ही फ्लुकमें नहीं लिख्यो गयो हे. मनमें गवास आ गई के तुम मक्खी हते, तुम मच्छर हते, ऐसे गवास आवेके कारण नहीं कही गई हे. सिस्टेमेटिक् इनके अन्दर कोई थॉट्प्रोसेस् चल रही हे और वा थॉट्प्रोसेस्कु उनने आउटलेट् दियो हे. खैर; इतनो जाननो सिंहावलोकनमें जरूरी हतो.

अपन्ने विसर्ग भी कल देख लियो. पुरुष कैसे प्रगट भयो वाकु समझ सकें. कल अपन्ने पुरुषके प्रगट होवेको, पुरुषके स्वरूपकु, पुरुषकु आचार्यके रूपमें प्रगट कियो हे वो सारो फॉरमेट् देख्यो. वाको प्रमाण होवेको रोल्, वाको साधन बनवेको रोल् के वो कैसे साधन बन्यो? कैसे वो प्रमाण बन रह्यो हे. वो सब भी अपन्ने कल देख्यो.

('पुरुष'को अर्थ)

एक बात जो खास वा पुरुषके बारेमें समझवेकी हे वो ये हे के पुरुष शब्द दो तरहसु अपने यहां डिफाईन् भयो हे. एक 'पुरुष' शब्द डिफाईन् भयो हे **''पुरी शेते इति पुरुषः''** ये जो चौबीस तत्त्व हें, इन चौबीस तत्त्वन्को एक शहर बन्यो. रॉ मटीरियल्के जो चौबीस तत्त्व हते, उनको एक पुर बन्यो. वा पुरमें आके जाने निवास कियो, वाको नाम 'पुरुष'. उन चौबीस तत्त्वन्सु बन्यो भयो अपनो भी ये पुर हे. यामें जो निवास करे तो अपन् भी पुरुष हें. अपने भीतर वो अन्तर्यामीके रूपमें निवास कर रह्यो हे. वा अर्थमें वो भी पुरुष हे. ऐसे तैत्तरीयोपनिषद्में पुरुषके भीतर पुरुष, पुरुषके भीतर पुरुष ऐसे कई पुरुष; पंचकोश और पंचपुरुषन् की अवधारणा प्रस्तुत करी हे. पर दूसरी एक और खूबसूरत अवधारणा पुरुषकी बोहोत अच्छी बृहदारण्यकोपनिषद् कहे हे. दूसरे धर्मकी बात करनी या बखत तो व्यर्थ हे पर जहां तक अपनो औपनिषदिक धर्म हे, वाको ये बोहोत बड़ो सेन्ट्रल् आईडिया हे, यदि यों कहूं तो चले. पुरुषके या कन्सेप्टकु यदि अपन् मिस् कर जायें तो कहीं न कहीं भारी लोचा हे. अपने यहां हिन्दुस्तानके धर्मदर्शनमें ये बात अवेलेवल् हे, जो उपनिषद् पहली बखत कहे हे.

(सृष्टिकी रचना अनेकधा)

उपनिषद् क्या केह हे? कितनी खूबसूरत बात हे. ''ये जो सारी दुनियां तुमकु दीख रही हे, सो-कॉल्ड बॉडीके रूपसु, ये पहली बॉड़ी नहीं हती पर पहले सोल् हती.'' **''आत्मैव इदं अग्र आसीत्''** (बृह.उप.१।४।१) ये पहले बॉडी नहीं हती, पहले सोल्

हती. अपन् देख सकें अच्छी तरहसु, जैसे कछुआ पैदा होवे हे तो पीठ वाकी जो बॉडी होवे हे, वो नहीं होवे हे. पीछेसु शॅल्की बॉडी डेवलप् हो जाय. बादमें बॉडी आ रही हे डेवलप् होके, पहले वो खुद कछुआ पैदा होवे फिर वाके बाद वाकी बॉडी डेवलप् होवे हे. ऐसे बोहोत सारे लार्वान्के भी ये ही सिद्धान्त हें. बोहोत जगह बायलॉजीमें कई मॉडेल् अपनाये गये हें के पहले बॉडी पैदा करो, फिर सोल् पैदा करो. पहले सोल् पैदा करो फिर बौडी पैदा करो. मल्टीपल् एक्पेरीमेन्टल् मॉडेल् बायलॉजीने यामें किये हें. वामेंसु उपनिषद् ये मॉडेल् सजेस्ट् कर रह्यो हे के पहले बॉडी नहीं हती, पहले सोल् हतो. **"आत्मैव इदं अग्र आसीत्."** जैसे अपने पैरकी चमड़ी अपने जन्मके समय बोहोत ही कोमल हती. चलनो शुरु कियो तो धीरे धीरे कठिन होके इतनी कठिन हो गई के वो सेन्सिटिविटी नहीं रही करके वो बॉडी बन गई. तो ऐसे बोहोत सारे मॉडेल् बायोलोजीमें अवेलेबल् हें के जहां अपन् देख सकें के पहले कोई चीज सोल् होवे हे, बादमें वो बॉडीमें डेवलप् हो जाय. ऐसे ही रिवर्सके मॉडेल् हें के जहां बॉडी होवे हे और वाके भीतर सोलके सोकॉल्ड् लाईफ्फन्क्शन् पीछेसु पैदा होवें हें जो पहलेसु पैदा नहीं होवें. दोनों तरहके नेचर्के पास मॉडेल् हें. **"अतएव श्रुतौ भेदाः सृष्टेः उक्ताः अनेकधाः"** (त.दी.नि.१।४०) या सृष्टिकी क्रियेशन्में अनेक प्रकारके मॉडेल् अपनाये गये हें. एक तरहको मॉडेल् ही नहीं अपनायो हे. महाप्रभुजी भी एडमिट् कर रहे हें और साईन्स् भी अब एडमिट् कर रह्यो हे मल्टीपल् थियरी ऑफ क्रियेशन्. एक मॉडेल्की नहीं. या बातकु ध्यानसु समझो के जो

क्रियेशन्की प्रोसेस् हे वहां एक बोहोत अच्छो मॉडेल् उपनिषद् प्रोपोज़् करे हे के जब पहले आत्मा हती और शरीर नहीं हतो, तब क्या भयो? तो वो केह हे के जो आत्मा हती वाने ये सोच्यो के ''कौन हे? क्या हे?'' ऐसे सोच्यो. फिर प्राइमरी सेन्सिटिविटी वामें जागी. जैसे अपन् अकेले बैठे भये होंय और अपन्कु कोई इच्छा होवे, ऐसे वाकु भयो. वाकु काश्मीर शैविज़्म् बोहोत अच्छो नाम दे हे 'स्पन्दन'. अचानक वामें कछु स्पन्दन भयो. 'स्पन्दन' माने वायब्रेशन्. अपन् बैठे भये होंय तो बैठे बैठे कंटाला आवे तो कछु हाथ-पैर हिल जाय, तो ऐसे वामें अचानक एक स्पन्दन भयो और वा स्पन्दनकी प्रोसेस्सु वाकु ये फील् भयो के मैं जितनो हूं, मैं जैसो हूं वो काफी नहीं हे. कछु और भी मोकु होनो हे. जब वाने ये सोच्यो के मोकु कछु ओर भी होनो हे, तो वाने सबसु पहलो काम क्या कियो?

(पुरुषकी परिभाषा और सृष्टिरचनामें तादात्म्यको मॉडेल्)

जहां भी पाप (द्वैतको भय) हे, कोई भी पाप अकेले आदमीको पाप हो ही नहीं सके. पाप होयगो तो कोई न कोई दोके बीचमें हो सके हे. पाप द्वैतकु सोचके चले हे. एकदम अकेलेसु माने अद्वैतमें पाप हो ही नहीं सके हे. न तो पाप और न ही वर्च्यु. तो वाने सबसु पहले ये सोच्यो के पहलो काम मेरो क्या हे? या द्वैतकी जो मोकु इच्छा भई; ''मैं कौन हूं, मैं क्या हूं, कैसे हूं;'' वामें मेरी द्वैतकी कछु इच्छा हे. वो तो पापकी इच्छा हे. वाने सबसु पहले ये काम कियो के वो जो पाप हतो, द्वैतको भय वो खतम कर दियो. ''**पाप्मानं औषत् तस्मात् पुरुषः**'' (बृह.उप.१।४।१)

वाने सबसु पहलो द्वैतके भयकु खतम कर दियो माने द्वैतको पाप मोकु नहीं चहिये.

याके बाद मॉडेल् कौनसो आयो हे? न तो द्वैतको और न अद्वैतको पर तादात्म्यको मॉडेल् आयो हे. **"स तं यो अस्मात् पूर्वो बुभूषति"**. (बृह.उप.१।४।१) वाने अपने आपकु कई तरहसु प्रगट कियो. **''एकोऽहं बहुस्याम् प्रजायेय''** (छान्दो.उप.६।२।३) वामें द्वैत भी नहीं हे और अद्वैत भी नहीं हे तादात्म्य आयो. वाके बाद उपनिषद् केह हे के आजकी तारीखमें भी तुमकु यदि ये महसूस होवे हे तो सारे पाप खतम हो गये. यदि ये महसूस नहीं हो रह्यो हे तो सारे पाप लग गये.

बोहोत ही सुन्दर कन्सेप्ट् हे के यदि तुम्हारे भीतर द्वैतको भय हे वो खतम हो जाय तो सारे पाप तुम्हारे खतम हो गये. यदि द्वैतको भय चल ही रह्यो हे तो कोई न कोई पाप तो लगेगो ही. एक बात समझो के जाकु अपन् परायो मान रहे हें वासु अपन्कु कछु न कछु डर तो लगेगो ही. वाकु बुरो नहीं लग जाय. वाको अपमान नहीं हो जाय. कहीं वो मेरो अपमान नहीं कर दे. कहीं वाको दिल नहीं दुःख जाय. कहीं मेरो दिल नहीं दुःख जाय. ये न हो जाय और वो न हो जाय. जब परायो नहीं मान रहे हें, जैसे अपन्ने अपने आपकु थप्पड़ मार दियो तो वो कोई मेरो अपमान हे? अपमान कब हे? कोई पराये हाथकी लप्पड़ मेरे गालपे पड़े तो भारी अपमान हे. पुलिसमें शिकायत करवे जाऊंगो. शारीरिक हिंसा!! अपन् जानें हें के जैनमुनि अपने माथाके सारे बाल नोंच लें हें. तो

क्या शारीरिक हिंसा हे? अरे भई खुदके बाल हें, खुद नौंच रहें हें तो वामें हिंसा कहांसु आई? कोई दूसरेके बाल नौंच लो तो? वो तो भारी झगड़ाको कारण हो जायगो. हो जायगो के नहीं?

हमारी एक भतीजी तूफान कर रही हती स्कूलमें. तो वाकु टीचर्ने खड़ी कर दी. जा पीछे खड़ी हो जा. वाके हाथमें कैंची हती तो वाने टीचर्की चोटी ही काट ली! वो टीचर् चालू क्लास्में रोवे लग गई. छात्रा रोवेके बजाय टीचर् रोवे लग गई. हिंसा हो गयी. मैं तो सोलह सत्रह बरससु आज तक अपने बाल अपने हाथसु ही काटूं. कोई हिंसा नहीं हे. अच्छे कटें के बुरे कटें. मैं कोईके पास जाऊं ही नहीं. अब यामें हिंसा हे? मेरी भतीजीने टीचर्की चोटी काट दी तो बोहोत मुश्किल हो गई. शिकायत आ गई हमारे घरमें के चोटी काट ली चालू क्लासमें! तो सारी हिंसा सारो पाप कैसे होवे हे? जब द्वैत हे. जब द्वैत ही नहीं हे तो कोई पाप नहीं हे.

पुरुषकी परिभाषा या तरहसु करी के वो या अर्थमें पुरुष हे के वाने द्वैतको पाप खतम कर दियो वाके बाद वाने सृष्टि पैदा करी. तो जो सृष्टि पैदा भई हे वामें न तो अद्वैत हे और न द्वैत ही हे. ये तो एक आईडेन्टिकल् कॅरेक्टर्स्को कॉम्बिनेशन् हे. पुरुषकी बोहोत अच्छी परिभाषा हे. पूरी दुनियाके कोई भी रिलीजियन्में इतनी अच्छी परिभाषा पुरुषकी नहीं हे. 'पुरुष' माने पर्सन्. पुरुषको मतलब मेल् (male) मत लीजियो, नहीं तो फिरसु द्वैत खड़ो हो जायगो! श्यामदासको एक चेला हरिदास हतो वाने प्रथमेश काकाजीके सामने एक दिन मेल् शोविनिज़्म्की बात छेडी. तो काकाजीने कही के

"क्या होता हे मेल् शोविनिज़्म्?" हरिदासने काकाजीकु कही के "जैसे आप बहुजीको नीचे नहीं पधारने देते हो, ऊपर बैठाये रखते हो और आप यहां नीचे बैठते हो. ये मेल्शोविनिज़्म हे." काकाजी गुस्सा हो गये कही के "गेट आउट." मेरे पास आयो. क्या करूं प्रथमेशजी गुस्सा हो गये. मैं तो खाली मेल् शोविनिज़्मको मतलब समझा रह्यो हतो. मैंने कही के "द्वैत हे या लिये गुस्सा हो गये. यदि द्वैत नहीं होतो तो गुस्सा होवेकी जरूरत ही नहीं हती." एक दिन पूछ रह्यो हतो श्यामदासके बहुजी हमकु बोहोत गुस्सेसु देखें हें. वोही द्वैत. द्वैत हर बखत कछु न कछु पाप करवा ही दे. जहां द्वैत नहीं हे वहां कोई पाप नहीं हे. पुरुषकु पर्सन् या लिये कह्यो जाय के वो द्वैतको नाश करे हे. द्वैतके भयको नाश करे हे. तादात्म्यसु अपने आपकु बढ़ावे हे. तो वो आत्मा अपने आपमें शरीर बन रह्यो हे. कछुआकी इतनी बड़ी पीठको भार कछुआकु क्यों नहीं लगे? गैंडाकी कितनी मोटी चमड़ी हे, वाको भार गैंडाकु क्यों नहीं लगे? भैंसकी कितनी मोटी चमड़ी हे, अपनी इतनी मोटी चमड़ी हो जाय तो द्वैतके कारण अपन्कु लगेगो के चमड़ीको कोई रोग हो गयो हे. स्किन् स्पेशलिस्टकु मिलो. भैंस कोई स्किन् स्पेशलिस्टकु मिले? कभी नहीं मिले. क्यों? क्योंके वाकी स्किन्की थिकनेस् जो डेवलप भई हे वाकु वो ड्युएलिटी नहीं लग रही हे. अपनी चमड़ी इतनी मोटी हो जाय तो इलाज करवावे जानो पड़ेगो. जैसे अपने पूंछ उग जाय तो कटवावे जायेंगे के नहीं? बन्दर कोई कटवावे पूंछ? क्यों नही कटवावे पूंछ? क्योंके बन्दरकु अपनेमें और अपनी पूंछमें द्वैतको भाव ही नहीं हे. अपनकु पूंछ उग जाय तो क्यों कटवावेकी इच्छा हो जायगी? कई बखत पूंछवाले बच्चायें पैदा

हो जायें तो उनकी पूंछकु सर्जिकली रिमूव् करनो पड़े. क्योंके अपनेमें अभी भी पूंछकी कोई हड्डी हे. तो कभी कभी वो एक्स्ट्रा करिकुलम् एक्टिविटी कर दे हे. तो मेरो कहवेको मतलब ये हे के ये भय लज्जा संकोच, क्यों पैदा हो रह्यो हे? जब अपन् ड्युएलिटी समझ रहे हें. अद्वैतमें कोई इश्यु नहीं हे. पर आईडेन्टिकल् कॅरेक्टर्में ये सारी प्रोब्लम् सॉल्व् हो जाय. क्योंके आईडेन्टिकल् इन्टिग्रिटीमें अद्वैत और द्वैत दोनों एक चक्रके दो सबसेट् बन जा रहे हें. एक दूसरेसु इन्टरसॅक्शन् बनाते भये.

कोई पूछेके दोसोबावन वैष्णवन्की वार्तामें श्रीगुसांईजी आज्ञा करते हें के मनसे भी किसीका अपराध नहीं करना चहिये. तो श्रीगुसांईजीके ये शब्द आपकी इस बातमें कहां स्टॅन्ड् करते हें?

ये यहां स्टॅन्ड् करता हे के जब आप 'किसीका' केह रहे हो तो अपराध हे. तो किसीका अपराध तो मनसे भी अपराध हे. 'किसीका' कहते ही ड्युएलिटी आ गई के नहीं? आप उसको किसीका समझ रहे हो और फिर उसको रुचे नहीं. जैसे मैं आपको 'किसीका' समझूं – एक उदाहरणके तौरपे बता रहा हूं बात, मैं आपको ऐसा नहीं समझूं के आप मेरा प्रवचन सुनने आये हो, किसीके प्रवचन सुननेवाले आप अचानक मेरे प्रवचन सुनने आ गये और आप सवाल कर रहे हो तो मेरा अपराध हो गया. मैं क्यों नहीं ऐसा समझ रहा हूं? क्योंके मैं आपको 'किसीका' नहीं समझ रहा हूं, आपको अपना समझ रहा हूं. जब मैं आपको अपना समझ रहा हूं और आप सवाल कर रहे हो तो मुझे खुशी होती हे. कोई

मुझसे सवाल करे, तो 'किसीका' सवाल तो मुझे भी मिर्ची लगायेगा. अपने लोगोंका सवाल, जिसको मैं अपना मान रहा हूं, उसके सवालकी मिर्ची नहीं लगेगी. कब सवालकी मिर्ची लगती हे जब वो रिमार्क् पास करे तो. पर किसकी मिर्ची लगेगी? 'किसीका', अपना नहीं हे उसकी. किसीके और अपनेमें तो फर्क हो गयो. द्वैत आ गया. अब आप दो बात तो एक साथ नहीं केह सकते. किसीको आप ऐसा मान रहे हो कि मेरा नहीं हे कछु और हे और फिर उसकी केयर् ले रहे हो, उसके पसन्द और नापसन्द की, फिर तो अपराध हो ही रहा हे ना! या तो आप उसको अपना मान रहे हो, तो ठीक हे आपको थोड़ी लिबर्टी मिल रही हे. पर जब आप उसको कछु और मान रहे हो तो उत्तरदायित्त्व फिर तो आपका हे. उसके हकमें आप कोई भी ऐसा काम नहीं करें जो आपके हकमें आपको बुरा लगता हो. व्यासजी खुद ये कहते हें के **''आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्''** जो कोई आपके साथ वर्ताव करे और वो आपको पसन्द न आता हो वैसा वर्ताव आप किसी दूसरेके साथ मत करो.

अब जैसे आपको बोहोत तेजतर्राट मिर्चीवाली चीज पसन्द हे और सामनेवालेको पसन्द नहीं हे तो? यदि वो आपको अपना लग रहा हे और वो भी आपको अपना मान रहा हे तो आज नहीं तो कल खाने लग जायगा. मैं मिरची नहीं खाता था. मेरी पत्नी बोहोत मिरची खाती थी. हमारे रोज इसीका झगड़ा चलता था "क्यों इतनी मिर्च मिला देती हो?" वो तो पीहरसे ही सीखकर आई थी कि मिरची खानेसे स्वास्थ्य रहता हे. मैं हर बखत झगड़ा करूं के भई

मिरची मत डाला करो. पर थोड़ी थोड़ी मिरची मिला दे. अब प्रपोर्शन् बढ़ते बढ़ते एक दिन अचानक विस्फोट हो गया के "अरे भई! आज तो बोहोत मिरची आ गई." तो बोली के "अरे! रोज जितनी ही तो मिलाई हे." पर एक एक चिमटी रोज बढ़ा दे. तो मुझे गुस्सा आता था पर उसे गुस्सा नहीं आता था. क्योंके वो मिरची किसीको नहीं खिलाती थी, पर खुद खाती थी. जब उसको पेटमें अल्सर् हो गया तो डॉक्टर्ने कही के "मिरची खाना बन्द." तो मैंने कही के "एक काम करो के मिरचीकी बरनीकु संडासमें फ्लश् कर दो." तो बोली "रहने दो ना, देखवेमें क्या हरकत हे, खायेंगे नहीं." मैंने कही के "तुम शुद्ध पुष्टिमार्गीय हो. सेवा नहीं करनी पर दर्शन तो कर लेने." ये मिरची कब लगती हे जब किसी दूसरेकु दो तब. वाकु मिरची लगती ही नहीं थी.

हमारे एक अंकल् थे. लाल मिरची, हरी मिरची, इतनी चटनी, वो भी खाते. एक रोज हम गये खाने, तो खाया ही नहीं जाय, हिचकी आये. मैंने कही के ''क्या हे?'' तो बोले ''खाओ.'' मैंने कही के ''अपने बसकी बात नहीं हे.'' पर उनके यहां जो रहते थे वो सब खावे लग गये. हर बखत ऐसा ही होता हे. अपने यहां सामग्रीमें जितनी शक्कर डालते हें इतनी शक्कर डालनी किसी भी रसोईके विधानमें नहीं हे. पुष्टिमार्गीयोंको एक ये भ्रमणा हो गई के ठाकुरजीकु शक्करके बिना कछु पसन्द ही नहीं आता हे, तो डाल शक्कर, डाल शक्कर. सब लोग शक्कर खावे लग गये. अब जिसमें शक्कर कम हो तो वो पुष्टिमार्गीय सामग्री ही नहीं लगती. हर बात 'किसीके' कारण पैदा होती हे. अपने कारण

कछु भी नहीं.

सो **"पुरा पाप्मानं औषत् इति पुरुषः"** जाने पापकु पहले खतम कर दियो वो 'पुरुष' हे. द्वैतमें पापको रॅफरेन्स् कैसे आयो? जैसे नारायणकु पहली बार अहं जाग्रत भयो तो वाने तादात्म्यसु अपनो पाप निवृत्त कियो.

यदि ऐसी शंका होय के पाप नॅगेटिव् टर्मिनोलोजी हे या फिर द्वैतमें स्नेह भी हो सके हे? दूसरे फॅक्टर्स भी हो सकें?

तो दो बात हें. जब भी स्नेह हो रह्यो हे, तो कहीं न कहीं वो मिश्रण हे. दोको एक मिक्स्चर् हे. "मेरो मन और वा ढोटाको एकमेक करि सान्यो. माई मेरो माधवसों मन मान्यो." वाको नाम स्नेह हे. तो कहीं न कहीं द्वैतकु कोई न कोई तरहसु डायल्युट् कियो जा रह्यो हे एक दूसरेके साथ सानके. स्नेहके लिये कछु न कछु एकत्व तो हासिल करनो ही पड़ेगो. नेचरल् लोगे तो नेचर् जैसे चलेगो, दूध-पानीके जैसो. आर्टिफिशियल् होयगो तो आर्टिफिशियल् करनो पड़ेगो. कई बखत क्या होवे, स्नेह करनो हे तो इल्युजन् भी पैदा करनो पड़े. कछु न कछु आईडेन्टिटी क्रियेट् करनी पड़ेगी स्नेह करवेके लिये. टोटल् द्वैत यदि हे और फिर कोई कहे के स्नेह हे तो कछु न कछु चीटिन्ग् हे स्नेहके नामपे. जहां एक्स्ट्रीम् द्वैत हे वहां भय शंका शक सारी की सारी अपनी मनोवृत्तियें उभर उभरके आती होवें. जहां द्वैत नहीं लग रह्यो हे, वहां फेस-वॅल्युपे जो शंकित क्रियायें हें उनपे भी शंका नहीं होवे हे.

''जाको जो बिगार कियो मोते आन ले जाओ. गारी मत दीजियो मो गरीबनीको जायो हे.'' सामने चोरी कर रह्यो हे, ''नहीं नहीं चोरी नहीं कर रह्यो हे. मो गरीबनीको जायो हे.'' मांको मन कबूल नहीं कर रह्यो हे के बेटा चोरी करे हे. क्यों? मांने अपने आपकु बच्चाके साथ आईडेन्टिफाई कियो हे तो कछु न कछु नेचरल् या आर्टिफिशियल् या इमोश्नल् या सोशियल् कोई न कोई आईडेन्टिटी बीचमें रखनी पड़ेगी यदि स्नेह करनो हे. यदि आईडेन्टिटी नहीं रख रहे हो तो स्नेह सम्भव ही नहीं हे. जब दोनोंके बीचमें द्वैत तुम मान रहे हो, वाकु बढ़ा रहे हो, उतनो ही तुम एक दूसरेके प्रति शक भय द्वेष उन सबनकु पैदा कर रहे हो. ये मूलभूत बात हे.

ये बात भगवान्पे भी लागू हो रही हे. भगवानकु जा बखत तुम ऐसो मान रहे हो के मैं अलग और भगवान् अलग तब तो भगवान् तुम्हारे पापकी गिनती करेगो ना! क्या क्या कही हती के मत करियो. फिर भी कर रहे हो तो पाप कर रहे हो. अब जब तुम पाप कर रहे हो तब वो तुम्हारेपे कोई दूसरी कटाक्ष डालेगो. जैसे मोनोपोलीमें आतो हतो ना के 'गो टू जेल.' वैसे 'गो टू हेल्' तुरत करेगो. कटाक्ष ऐसो करेगो के गो टू हेल्. क्योंके द्वैत हे. और जहां द्वैत नहीं हे, वहां भक्त क्या केह रह्यो हे के ''**स्वर्गापवर्गनरकेष्वपि तुल्यार्थदर्शिनः**'' (भाग.पुरा.६।१७।२८) तू जहां भी भिजवावे, हम तो तोकु याद करते करते वहां पोहोंच जायेंगे. तोकु याद करते करते नरकमें भी चले जायेंगे. स्वर्गमें भी पोहोंच जायेंगें. जब हम तोकु याद कर रहे हें तो हमकु स्वर्ग, नरक, मुक्ति

सु क्या फर्क पड़े! ''यहां भी आहें किया करेंगे, वहां भी नाले भरा करेंगे. जिन्हें हे तुझही से निस्बत् वो तेरी जन्नतको क्या करेंगे.'' अब वो निस्बत्की आईडेन्टिटी एस्टाब्लिश् हो गई हे तो वाकु डर नहीं लगे. मूलभूत बात ये हे.

(विसर्गपुरुष महाप्रभुजीको और पुरुषोत्तमको संबंध तादात्म्यको)

एक ये जो पुरुषको कन्सॅप्ट् हे वाने क्रियेशन्के पहले जो फियर् ऑफ् द्वैत हतो वाकु खतम करके क्रियेशन् कियो हे. गोपालदासजी या पुरुषके कन्सॅप्ट्कु निरन्तर हेमर् कर रहे हें. **ते पुरुषोत्तम प्रकटशे. पूर्ण पुरुष प्रमाणपंथा. ते पुरुषोत्तमे वळी विचार्‍यु हवे प्रकार शुं करिये.** द्वैतकु पैदा ही नहीं होने दे रहे हें. जो पुरुष पैदा हो रह्यो हे वो पुरुष भय और द्वैत के साथ पैदा नहीं हो रह्यो हे पर वो तादात्म्यकु लेके पैदा हो रह्यो हे. निरन्तर हेमर् कर करके वो बात केह रहे हें के वो पुरुषोत्तम, वो पुरुषोत्तम, वो पुरुषोत्तम. ये सेवा करवेके लिये प्रगट भयो हे, वो सेवा लेवेके लिये प्रगट भयो हे, ये पुष्टिमार्गके प्रचार करवेके लिये प्रगट हो गयो हे, वाकी इच्छा हो गई हती के पुष्टिमार्गको प्रचार होनो चहिये, द्वैतको भय हे वाकु कैसे डायल्युट् कर रहे हें गोपालदासजी! या बातपे ध्यान रखोगे ना तो ये उपनिषद्को आखो मॉडेल् हे विसर्गको. उपनिषद्ने मोडस् ऑपरेण्डी बताई हे विसर्गकी के विसर्गकु पैदा करवेमें आवश्यक सारी ड्युएलिटीके कारण जो भय हतो, वाके जो रिपर्कशन्स् हते उन सबन्कु सस्पेन्ड् करके फिर सृष्टि पैदा करी. अपने गोपालदासजी भी वापे ही निरन्तर हेमर् कर रहे हें. एक ठिकाने ही नहीं. मालाके मनकाकी तरह वो मनका घूम-घूमके आ

रह्यो हे. या बातकु देखोगे तो सेन्ट्रल् मॅसेज् क्या हे वो तुमकु ख्याल आयगो के सर्ग, पुरुषके द्वारा विसर्ग, पुरुषके द्वारा स्थान, पुरुषके द्वारा पोषण, मन्वन्तर, ईशानुकथा, निरोध सबमें वो द्वैतकु कॅन्सल् करवेकी निरन्तर हेमरिंग् चल रही हे गोपालदासजीकी. क्योंके वो **"पाप्मानम् इति औषत् इति पुरुषः."** वो पुरुषको वो वर्णन कर रहे हें. **पूर्णपुरुष प्रमाणपंथा व्याख्याता वेदांत. ग्रंथ सर्वे रसरूप कीधां पोताने सिद्धान्त.** ये पोतानो सिद्धान्त हे जो उपनिषद्को सिद्धान्त हे महाप्रभुजीको. या लिये महाप्रभुजी स्पष्ट आज्ञा करें हें के जब तुमने भगवान्कु अपनी आत्मामें नहीं देख्यो तो तुम भगवान्कु विषय तरीके ट्रीट् कर रहे हो. द्वैतमें ट्रीट् कर रहे हो. भगवान्कु देखवेके लिये सबसु पहली शर्त तुम्हारे लिये ये हे के वाकु तुम अपने भीतर पहचानो. **''आत्मानंदसमुद्रस्थं कृष्णमेव विचिन्तयेत्''** (सि.मु.१६) सेवामें ये बात बता रहे हें. ज्ञानमें नहीं बता रहे हें. इम्पोर्टेन्ट् बात ये हे के सेवा करतेमें ये बात बता रहे हें के **''आत्मानंदसमुद्रस्थं कृष्णमेव विचिन्तयेत्''** अपनी आत्मामें आनन्दविहार करते कृष्णकु यदि तुम मान्य नहीं कर पाये तो वो ही कृष्ण तुम्हारे भयको कारण हो जायगो. वो कृष्ण फिर वो पुरुष नहीं रह जायगो जाने सारे पाप खतम कर दिये हें. वो तुम्हारे पापकी काउन्टिंग करवेवालो चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट् हो जायगो. सारे पापन्के जमा–खर्चको वो टेबल् बनायेगो. जब आत्मानंद समुद्रस्थ हे, तो वो टेबल् बनाय तो भी क्या फर्क पड़े और न भी बनाय तो क्या फर्क पड़े! वो तो आत्माको आनन्द ही वा तरहसु कर रह्यो हे. पुरुषको एक ये कन्सॅप्ट् हे के जापे गोपालदासजी निरन्तर हेमरिंग् कर रहे हें. उठाके देख लो, नौ के नौ आख्याननमें वाही पुरुषको गान कर रहे हें.

थोड़ी बात भी आगे चले तो फिर ड्युएलिटी आ जाय के वो पुरुष हे. तो ये बोहोत महत्त्वपूर्ण फॅसेट् हे सर्गलीलामें भी समझवेके लिये और विसर्गलीलामें भी समझवेके लिये. अब जैसे जैसे आगे चलेगी स्थान पोषण ऊति मन्वन्तर ईशानुकथा निरोध इन सबन्में मैं बतातो रहूंगो के गोपालदासजीने या पुरुषके कन्सॅप्ट्की पॉलिसीकु कितनी स्ट्राँगली फॉलो कियो हे.

खैर, अब अपन् आजकी लीलापे आवे. ये सारे कन्सॅप्ट् नहीं समझें तो अपन् गोपालदासजीकु एप्रिशियेट् नहीं कर पायेंगे के उनने इतनी मीठी गामठी भाषामें कितने मीठे सिद्धान्त कहे हें और वाको एप्रिसियेशन् करवेके लिये ग्राउन्ड् तरीके ये सारी बातें समझनी चहियें.

प्रश्नोत्तर

प्रश्न : Is Purush (soul as per Upnishads) complete in itself then why does he have fear of duality as fear comes only when one is incomplete in itself. Since soul is a part of Purush why it should have fear in itself.

(कल आपने बतायो हतो के पुरुष पूर्ण हे. और वाने पहलेसु ही द्वैतको जो पाप हतो वासु वाको भय भी हटा दियो. पूर्ण होवेके बाद भी वाकु कछु भय हतो; यदि वो पूर्ण हे तो फिर वाकु भय क्यों भयो?)

उत्तर : मैं अरेन्ज्ड् मॅरिज्की बात नहीं कर रह्यो हूं. लव्मॅरिज्की बात कर रह्यो हूं. जहां लव्मॅरिज् होय उन विवाहन्में

भी मैंने कई बखत देख्यो हे के जा बखत लड़कीकी बिदाई होवे, वा बखत लड़की रोती होवें. अरेन्ज्ड् मॅरिज्में रोती होंय तो चलो मान्यो जा सके हे के अरेन्ज्ड् मॅरिज् हे क्या करें? माता-पिता लड़कीकु ससुरालमें डम्प् कर रहे हें तो रोनो आयगो. अब लवमॅरिज् हे वहां भी रोनो आवे विदाईके बखत, तो लव् कम्पलीट् हतो के इनकम्पलीट्, ये तो प्रश्न होवे ना? दूसरो एक और गम्भीर प्रश्न ये हो जाये के सचमुचमें (जोकमें यों कह्यो जाय के लड़की या लिये रोती भई जाय क्योंकि वो ट्रेनिंग् देती होवे हे के मैं घरमें आऊंगी तो तुमकु कैसे रोनो हे. वो कथा अलग हे. मैं वा कथाकी बात नहीं कर रह्यो हूं.) हर बखत एक बात ये होवे हे के जा बखत अपन् कम्पलीट् भी होवें हें, अपने जो भी कछु पॅराफरनेलिया हें वामें भी जा बखत अपन् कोई भी तरहको इनिशियेटिव् लेवे जायें हें वा बखत भय नहीं हे पर आवेवाले भयको भय होवे हे; पूर्ण होते भये भी और अक्सर जो कम्पलीट होवे हे वाहीकु होवे हे. जो अपूर्ण होवे हे वाकु कोई भय होवे ही नहीं हे क्योंके वाकु आवेवालो भय दिखलाई ही नहीं देतो होवे हे, भैंसकी तरह. आवेवालो भय कौनकु दिखलाई दे? जो खोपड़ी वापरतो होय. जाकु आगे जाके क्या होवेवालो हे वाको कोई विचार ही नहीं हे. बस पड़ो, कूदो और चलो. वाकु भय होवे ही नहीं हे. वो निर्भयता हे वो अज्ञानजन्य निर्भयता हे. आवश्यकता सच्ची ये हे के ज्ञानजन्य भय और अज्ञानजन्य निर्भयता, दोनों खोटी हें. ज्ञानजन्य निर्भयता होनी चहिये. और ज्ञानीकु भी अज्ञानको भय होनो ही चहिये क्योंके बोलते बखत अपन् असावधानी रखें और क्या निकल् जाये,सिर्फ ज्ञानी होवेके अपराधके कारण.

हमारे दादाजी अक्सर बात कहते "कभी भी जा विषयको प्रवचन करनो होय तो वाकु सांझकु देखे बिना वा विषयपे बोलनो नहीं. क्यों? अपन् जान रहे हें वो अच्छी बात हे. पर कौनसे बखत अज्ञान अपनो उछल जाये और क्या अपने मौंहसु निकल् जाये. या तो फिर अपनेमें इतनी निर्भयता होनी चहिये." हमारे दादाजी अक्सर ऐसे करते जब कभी ऐसो घोटाला हो जातो तो भरी सभामें कबूल करते के "अरे भाई सुनो, कल हमसु ये गल्ती हो गई. ऐसो कहनो नहीं चहिये हतो, ये हमारी मूर्खता हती, अब हम याकु सुधार रहे हें." उतनी बात कहवेकी या तो हिम्मत होय, तो फिर थोड़ो रिस्क् लेके केह सकें अपन्. जब उतनी हिम्मत नहीं होय, शर्म आती होय के इतनी जनतामें अपन् कैसे कबूल कर सकें के कल बोलवेमें गलती हो गई. तो फिर प्रिकॉशन्की जरूरत हे के बोलवेके पहले अपन्कु क्या बोलनो हे, वाको अच्छी तरहसु प्लान् आउट् कर लेनो चहिये. ज्ञानी हे वो ही याको प्लान् आउट् कर सके हे.

याही लिये शास्त्रमें ऐसे कह्यो के "**उपायं चिन्तयेत् प्राज्ञः अपायान् चापि चिन्तयेत्. अपायोपायाभिज्ञो हि कार्यस्य फलम् आप्नुयात्.**" अपन् जो काम कर रहे हें वाको उपाय क्या हे, ऐसो सोचनो ये बुद्धिमत्ताको फल हे के कैसो उपाय करें के काम सिद्ध होवे? ऐसे ही वा कार्य करवेमें क्या तकलीफ आ सकें हें, उनको भी चिन्तन करनो चहिये. और वो चिन्तन अपूर्णताके कारण नहीं हे पर चिन्तनकी पूर्णताके कारण वो भय होवे हे. जैसे अपन् द्वैत पैदा करवे जायें और अपन्ने द्वैत पैदा कर दियो पर पैदा होवेके बाद

कितने कितने लोगन्कु भय होयगो, वाकी सावधानी लेनी चहिये के नहीं? तो वो सावधानी लेवेको भय हे. वो वर्तमानको भय नहीं हे. वाकी पूर्णताकु डिस्ट्रेक्ट् करे वा तरीकेको भय नहीं हे. वाकी अपूर्णताकु इन्डिकेट् करवेवालो भय नहीं हे, वाकी पूर्णता; क्योंके जो काम करवे वो जा रह्यो हे वामें वाने अपनो पूरो कम्पलीटली माईन्ड् एप्लाई कियो हे, उपाय और अपाय दोनोंन्को और दोनोंन्कु एप्लाई कियो हे वाकेलिये वाकु जो एन्टिसिपेटेड् भय हे वाकी यहां बात हे. वर्तमान भयकी कोई बात नहीं हे जामें वाकी कोई भी प्रकारकी अपूर्णता आवे.

QQQ

वल्लभाख्यान तीसरो

(प्रमेयप्रकरण–स्थानलीला)

राग – धन्याश्री

(प्रभुश्रीविट्ठलके जन्मोत्सवमें स्वरूप और काल की विरुद्धधर्माश्रताको वर्णन)

आ पोष–मध्याह्ने नोमे श्रीनाथजी ।।
अक्काजी उर उपन्यो आनन्द ।।
आ चंद श्रीवृन्दावन तणो प्रगटियो ।।१।।
आ सौभाग्यसुंदरी मळी धवल गाए ।।
सुहाय रूडा कंठना नाद । ।
आ आल्हाद ऊपनो ते अंगो–अंग घणो ।।२।।

(देशादि पंचककी दिव्यताको निरूपण)

(देश) आ सूतिकासदन सोहामणां ।।
शोभा रूडी लहेरडे जाय ।।
आ वाजिंत्र वाजे ते समे तणां ।।३।।
(द्रव्य) आ सर्वस्वदान तेणे समें ।।
करे रे श्रीवल्लभजी उदार ।।
आ सुकुमार सुत उदयो श्रवणें सुणीं ।।४।।
(कर्ता) आ पाताळे शेषनाग रीझिया ।।
ऊपर इन्द्रादिक देव ।।
आ ततखेव सुणि निसाण बजडावीयां ।।५।।
आ सिद्ध गन्धर्व गण/गुणी अपसरा ।।

उलटियां नृत्यने नाद ।।
आ आल्हाद भर्या श्रीवल्लभजी ये मानियां ।।६।।
आ ब्रह्मा महादेव मुनि हरखिया ।।
बरखिया कुसुमसमूह ।।
आ मोह टाळयो जगतनां जीवनो ।।७।।
(मन्त्र)आ निगम साम शाखा सहस्रशु ।।
करे रे भला निर्घोष ।।
आ घोषपति भगवन्त भेटतां ।।८।।
(कर्म)आ वेदविहित कृत्य सर्वे कीधां ।।
दीधां बहु पेरें गौदान ।।
आ मानशुं स्वजन संतोषियां ।।९।।

(कीर्तिद्योतक विविधसुगन्धके वर्णनसु श्रीगुसांईजीको पञ्चविध पुरुषार्थसाधक माहात्म्य)

(१)आ कनककचोळां कुमकुमभर्यां ।।
अक्षत दूर्वा भर्या रे सुथाळ।।
आ माळ पारिजातनी महमहे ।।१०।।
(२)आ तोरण परण सहकारनां ।।
धरणीये चंदनतणां नीर ।।
आ वीर श्रीगोपीनाथ श्रीविट्ठल प्रगटियां ।।११।।
(३)आ दधि दूध घृत मधु मांडवे ।।
शेरडिये वहे रे सुगंध ।।
आ सुगंध मोह्या अलिकुल आवियां ।।१२।।

[४]आ सूत मागध साधु सर्वे मळ्या ।।
मळिया ते मांहोमांह ।।
आ उत्साह भर्यो को कोने जाणे नहीं ।।१३।।
[५]आ शुकदेव सबल आनंदिया ।।
वंदिया श्रीवल्लभजीनां चरण ।।
आ गिरिधरण श्रीभागवत म्हारूं निरखशे ।।१४।।

(श्रीगुसांईजीकी स्तुति और आशिष)

आ सकल कला कलिकालमां ।।
कल्पद्रुम प्रगटियो आज ।।
आ काज मनवांछित पूरवां ।।१५।।
आ तैलंगतिलक त्रिभुवनधणी ।।
मणि मरकत धनवान ।।
आ समान रूप निरखतां कोये नहीं ।।१६।।
आ गणक गर्गादिक आवियां ।।
भावियां दिये रे आशीष ।।
आ जगदीश श्रीवल्लभघेरे प्रगटियां ।।१७।।

(परोक्षापरोक्ष अवतारके गुणसंकीर्तनमें परमानन्दकी ही फलश्रुति)

आ धवलधन्याश्री गान जे करे ।।
उच्चरे श्रीविट्ठलजी–अवतार ।।
आ सारस्वतलीला ते जन लहे ।।१८।।
आ दासनो दास जाय वारणे ।।
रह्यो रे उत्सव जुवे ।।
आ को'एक भाग्यवंत भगवदीय ते समे ।।१९।।

(स्थानकी परिभाषा)

स्थानकी परिभाषा महाप्रभुजी क्या कर रहे हें? **"स्थितिः वैकुण्ठविजयः"** (भाग.पुरा.२।१०।४, त.दी.नि.प्र.३।५।२) ये एक परिभाषा हे. **"उत्पन्नानां तत्तन्मर्यादया पालनं स्थानम्."** (सुबो.२।१०।२) माने जा बखत क्रियेशन् भयो, रॉ मटीरियल्मेंसु कछु प्रोडक्शन् भयो, वा प्रोडक्शन्कु ऑरगेनाईज़् करवेके लिये एक पर्सन् चहिये हतो. वा पर्सन्ने वाकु प्रोपरली प्रोसेस् करके ऑरगेनाईज़्ड् कर दियो. अब वा प्रोसेस्ड् फॉर्मको प्लेसमेन्ट् भी कहीं न कहीं तो होनो चहिये. वो प्लेसमेन्ट् ही वो स्थान हे. कहां वाकु प्लेस् करनो?

कौनसी चीज कहां धरनी? जैसे घरमें अपन् सब चीज ले आये. अब पैर पौंछवेको अपन् माथाके नीचे धर दें, तकियाकु देहलीको पांवपोश बना दियो. जो आदमी वा तकियापे पैर धरे तो वो तो गुड़केगो ही. जो फर्नीचर् घरमें लाये हो तो वाकु कहां रखनो, वाकी तमीज़ तो होनी चहिये के नहीं! कहां जमानो? स्थानको मतलब हे के वाके इन्टिरियरकु कैसो डेकोरेट करनो? तुमने माल जो जमा कियो हे वाकु कहां रखनो, कहां डेकोरेट करनो? वाको प्लेसमेन्ट् स्थानलीला हे. वा स्थानलीलाको वर्णन यहां तृतीयाख्यानमें गोपालदासजी कर रहे हें. पर जो परिभाषा स्थानकी महाप्रभुजी कर रहे हें **"स्थितिः वैकुण्ठविजयः"** (वहीं) या **"तत्तद्वस्तूनां मर्यादया पालनं स्थानम्."** ये बोहोत बड़ी बॅकग्राउन्ड्की बात हे. वो दिन कहां के मियांके पैरमें जूती. अपन् वैकुण्ठकु विजय करें. और समझो के भगवान्ने वैकुण्ठकु जीत भी लियो तो

अपन्कु कैसे पता चलेगो के वैकुण्ठ जीत्यो के नहीं जीत्यो? 'वैकुण्ठ'को मतलब **"विगता कुण्ठा यस्मात्."** जामें कोई भी जातको सप्रेशन् डिप्रेशन् या फ्रस्ट्रेशन् नहीं होय वो वैकुण्ठ हे. वा वैकुण्ठपे विजय पानो माने क्रियेशन्की प्रोसेस्में कोई भी जातको डिप्रेशन्, या तरीकेको फील् नहीं होनो चहिये के करवा तो गयो पण काचु कपाई गयु.' 'काचु कपाई गयु' वो वैकुण्ठके बजाय कुण्ठा हे. जो कछु भी कियो वो ''साचु स्थपायु.'' तो **"स्थितिः वैकुण्ठविजयः."** ''काई काचु न कपायु बधु साचु स्थपायु छे.'' तो वैकुण्ठपे तुमने विजय पा ली. क्रियेशन्के कारण क्योंके सारी कुण्ठायें जहां पैदा होंगी, वोतो वाही तरहसु पैदा होंयगी के टोपी सिरके बजाय पैरपे धर लो और जूता सिरपे धर लो तो कुण्ठा तो होयगी ही. क्योंके जूतासु सिर ढकेगो नहीं और टोपी पहरके पैरसु चल नहीं सकोगे. तो वाके प्लेसमेन्ट्की खबर अपन्कु पड़नी चहिये के वो जा चीजके लिये बनी हे वहां वाकु वापरो तो तुमकु कभी डिप्रेशन् सप्रेशन् या फ्रस्ट्रेशन् नहीं होयगो.

(नाम रूप कर्म को परस्पर स्थापन)

अपन्ने या सिस्टम्के प्रोसेस्में एक बात देखी के सारी सृष्टि भगवान्के नामरूपकी क्रीड़ा हे. नामरूपकी क्रीड़ामें सबसु पहली प्लेसमेन्ट् क्या होवे?

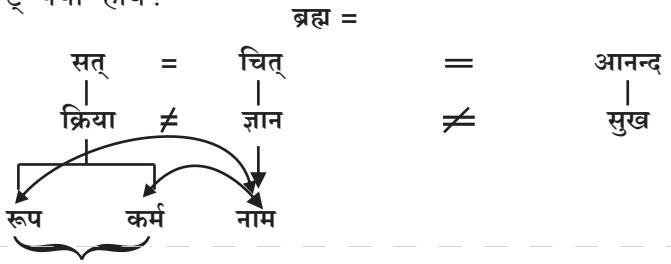

या चार्टमें देखो रूप कर्म और नाम. चिदंशमेंसु नाम पैदा भयो हे, सदंशमेंसु रूप पैदा भयो हे, और वो दोनों नाम और रूप इन्ऑपरेटिव् नहीं हे, ऑपरेटिव् हें, एक्टिव् हें. एक दूसरेके साथ इन्टरेक्ट् करवेवाले नामरूप हें. ऐसे नामरूप नहीं हें के जो फिक्स् हो गये. या लिये अपन् अच्छी तरहसु जान सकें के कोई भी नाम, जैसे माउस् एक्टिव् हे करके कम्प्युटरमें आ गयो ना! यदि नाम इनऑपरेटिव् होतो तो कम्प्युटरमें कैसे आतो? ये वर्च्युअल् रियलिटी, नाम हे करके एक्टिव् हे तो तोकु मानसीसेवामें दीखी ना. तो ऐसे ही हर नाम और हर रूप एक्टिव् मोड्में हे. पॅसिव् मोड्में नहीं हे. एक्टिव् मोड्में होवेके कारण इन्टरएक्ट् कर रहे हें. हर रूपको प्लेसमेन्ट् नाममें हो रह्यो हे और हर नामको प्लेसमेन्ट् रूपमें हो रह्यो हे. वो मैंने वहां ऐरोके द्वारा दिखायो हे. कर्म नामके साथ इन्टरेक्ट् करे और इन्टरेक्ट् करके नामकु रूपमें प्लेस् कर दे. उदाहरणके लिये Who ever might have named you as Sheetal, he has placed that name in your person. So that is placement of name and now because you think that 'I am Sheetal'. So what are you doing ? You are placing your person into that name. Suppose I say Sheetal then you will 'Yes'. So you are placing your person into that name. Is that clear?

सृष्टि पैदा होवेके लिये ये पहली प्लेस्मेन्ट् हे. यदि ये प्लेसमेन्ट् नहीं होवे तो सारी सृष्टि ठप्प हो जायगी. जैसे मॅगाब्लॉक् होवे वैसे हो जायगो. सृष्टिमें मॅगाब्लॉक् नहीं हो रह्यो हे वाको मूल कारण कहां हे के नामको रूपमें प्लेस्मेन्ट् हो रह्यो हे और रूपको नाममें प्लेसमेन्ट् हो रह्यो हे. निरन्तर वो काम काज चल

ही रह्यो हे. करके मॅगाब्लॉक् नहीं होके कहीं भी ट्रैफिक् जाम नहीं हो रह्यो हे. स्मूथली चल्यो जा रह्यो हे. जैसे संस्कृतमें बोहोत बड़े विद्वानकु प्रखर कहें हें. अब वा 'प्रखर'को मतलब गधा भी होवे हे. ''**प्रकर्षेण खर: इति प्रखर:**'' गुजरातीमें तुम्हारे यहां 'खरेखर' कहें हें. गधेड़े गधेड़े. अब वो कैसे इन्टरएक्ट् कर रह्यो हे खरेऽऽखर. वैसे खरेखरको मतलब हे मीठो/तीखो सत्य, वास्तवमें. ये कहांसु आ गयो खरेखर? हर नामको कहीं रूपमें प्लेसमेन्ट् हो रह्यो हे और हर रूपको कोई नाममें प्लेसमेन्ट् हो रह्यो हे. ये जो लगातार इन्टरएक्शन् चल रह्यो हे, इन्टरएक्शन् ही ये सारी सृष्टि हे. जा दिन ये इन्टरएक्शन् स्टोप् भयो, वा दिन मॅगाब्लॉक् हो जायगो. सबसु पहली प्लेसमेन्ट् ये नामरूपकी हे. बाह्य रूपको भीतर स्थापन और भीतर रूपको बाह्य स्थापन, ये महाप्रभुजीके भक्तिके प्रोग्राम्की प्राइमरी रिक्वायरमेन्ट् हे.

(भक्तिमें नामरूपको परस्पर स्थापन)

वो भीतरको जो स्वरूप हे वाकु बाहर सेवामें पधरायो जाय हे. वाकु भीतर स्थापित करो. बाहर जो बिराज्यो भयो स्वरूप हे वाके रूप गुण लावण्य कु अपने मनमें बसाओ. भीतरको बाहर और बाहरको भीतर. जो अवतारलीला हे वो आज तुमकु बाहर दीख नहीं रही हे. अपन् वाको कैसे प्लेसमेन्ट् करें? ठाकुरजीके सामने गाके. ''**ब्रज भयो महरिके पूत, जब यह बात सुनी. आनन्दे सब लोग गोकुल गनित गुनी.**'' (जन्माष्टमी पद) अपने भीतर जो लीला हे वाकु गाके पहले जगावें. फिर ठाकुरजीको नन्दोत्सव कर दें. भीतर जो लीला पैदा हो रही हे गावेकी प्रक्रियासु, अपने सेवाकी क्रियामें

वाको प्लेसमेन्ट्. और वो जो सेवाकी क्रिया कर रहे हें, वाकु अपन् कब कर रहे हें? जब ठाकुरजीकु अपन् झुला रहे हें तब अपन् झूलाके पद गा रहे हें. तो झुलावेके पद गावेमें जो भी कछु लीलाको बोध हो रह्यो हे वामें या क्रियाको अपन् प्लेसमेन्ट् कर रहे हें. ऐसे लगातार ये मॅगाब्लॉक् नहीं हो रह्यो हे पर इन्टरेक्टिव् मोड्में ये सारो काम हो रह्यो हे. तो ये सबसु पहली स्थानलीला हे. बाकी ओर भी सारी स्थानलीला हें, भगवान्ने ये सारी फॅसिलिटी नामरूपमें प्रोवाईड् करी हे, करके ये लीला चल पा रही हे. यदि भगवान् या स्वीच्कु ऑफ् कर दें के नामको रूपमें स्थापन और रूपको नाममें स्थापन तो स्थान सब भ्रष्ट हो जायगो.

स्थानलीलाकी पहली शर्त ये हे के **"तत्तन्मर्यादया स्थापनम्"** और खूबसूरती याकी देखो कितनी अच्छी हे के जहां मर्यादासु स्थापित हो रह्यो हे, जैसे बाहरी रूपकु तुम भीतर स्थापित कर रहे हो, वाकी एक मर्यादा हे, भावकी. वो भावकी मर्यादामें स्थापित होयगो. वस्तुकी मर्यादामें स्थापित नहीं होयगो. भीतरको जो भाव हे वाकु स्वरूपमें स्थापित कर रहे हो, वो आलम्बन विभावकी मर्यादामें स्थापित होयगो. वो भावकी मर्यादामें स्थापित नहीं होयगो.

(वस्तु क्रिया भाव में मर्यादासु ही स्थापन)

बाहरी बिराजतो भयो ठाकुर, ब्रह्म परमात्मा भगवान् कृष्ण महाप्रभुजी गुसांईजी ब्रजभक्त ब्रजलीला आदि इनमेंसु कोईको भी उदाहरणके तरीके समझ सकें. उनकु अपन् जा बखत भीतर बसा रहे हें श्रवण कीर्तन मनन की प्रोसेस्सु अपने भीतर जा बखत प्लेस् कर

रहे हें, वो प्लेसमेन्ट्के कारण उन सबकी मर्यादायें प्रगट हो रही हें. वा मर्यादाकु अपन् समझ नहीं पायेंगे तो वो बात ठाकुरजीपे लागू नहीं हो सके. एकदम स्थूल उदाहरण दऊं तो बात तुमकु समझमें आ जायगी. अपन् ठाकुरजीके अन्नकूटके दिन पद गा रहे हें. **सात दिवस गिरिवर कर धार्‌यो वासववृष्टि निवारी.** वो जो भगवान्की लीला हे, वा लीलाकु अपन् भीतर तो स्थापित कर रहे हें के मेरे ठाकुरने ये लीला करी. अब ठाकुरजीके श्रीहस्तमें एक भाटा वाटा पधराके अपन् मनोरथ नहीं करें के महाराज गिरिराज उठायो तो अब भाटा तो उठाओ!! करें? सेवामें हे एलाउड्? क्यों नहीं एलाउड् हे? यहां वो भीतर हो सके हे पर वो बाहर एलाउड् नहीं हे. बाहरकी मर्यादा बाहरके ढंगसु होयगी. वो अपनो ठाकुर बिराज्यो रहे और कीर्तन सुनतो रहे. 'आज सुरराज पायन पर्यो.' बाहर बैठ्यो भयो सुनतो रहे. बाहर जो सुन रह्यो हे वो भीतर कछु और ढंगसु हे. भीतर जो हे वो बाहर कछु और ढंगसु हे. दोनोंन्को एक दूसरेके ठिकाने प्लेसमेन्ट् वाकी मर्यादाकी डिग्निटीकु ध्यान रखते भये हे, ऐसे नहीं हे के वाकी मर्यादाकु भुलाके. और याही लिये बोहोत सारे लोगन्कु ठाकुरजीकी सेवामें बोहोत सारे सवाल पैदा होते होवें हें के मीराके पद क्यों नहीं गावें? अरे भई मीराके पद मीरा गा रही हे ''जल कर भई भस्मकी ढेरी अंग अपने लगा जा.'' अरे अपनी भस्म ठाकुरजीके श्रीअंगपे कहां चुपड़ेंगे? वाकी विरहकी जो वेदना हे, वाकी डिग्निटी कम नहीं हे. अष्टछापके भगवदीयन्के पदन्में जैसी वाकी विरहवेदनाकी डिग्निटी हे. पर वो जो बात केह रही हे वाकु अपने यहांकी सेवामें प्लेस् कहां करनो? ''जल कर भई भस्मकी ढेरी अपने अंग लगाजा.'' मेरी राखकु अपने श्रीअंगपे चुपड़

ले. ठाकुरजी कहेगो के भई मैं भैरौंजी नहीं हूं. मैं तो कृष्ण हूं. राख तो उज्जैनमें भैरौंजीकु चुपड़ी जाय स्मशानकी राख. ठाकुरजीकु नहीं चुपड़ी जाय. अच्छा ठाकुरजी रुद्र भैरों बन सके हे के नहीं? महाप्रभुजी दशम स्कन्धमें खुद आज्ञा कर रहे हें **"ब्रह्मा विष्णु रुद्रश्च भूत्वा पुनः कृष्णो अभवत्."** (सुबो.१०।२९।१) भगवान् तो रुद्र बन सके हे. अब वो लीलाकी कथा हे. अपन् वाकु रुद्र नहीं बनावेंगे. नित्यलीलामें हर चीजको, सृष्टिलीलामें हर चीजको प्लेसमेन्ट् अलग अलग तरीकेसु हे. अवतारलीलामें हर चीजको कहीं प्लेसमेन्ट् हे. अपन् ऐसो तो नहीं करेंगे के हिन्दु-मुसलमानन्को दंगा हो गयो तो रथमें आगे जैसे गणपतिजी चलें, वैसे ठाकुरजीकु रथमें बिठाके ले जाय के चलो महाभारत लड़वे चलो! अपन् करें ऐसे? क्यों नहीं करें? कारण के हर चीजको मर्यादामें स्थापन हें. अमर्याद स्थापन न वस्तुको भावमें हे और न भावको वस्तुमें हे. न अमर्याद स्थापन क्रियाको भावमें हे और न अमर्याद स्थापन भावनाको क्रियामें हे. वो **"तत्तद्वस्तूनां तत्तन्मर्यादया स्थापनं स्थानलीला."** ये रहस्य समझमें आयो! हरेक चीजकी मर्यादा, वा तरहसु वाकी डिग्निटी, वो अपन्कु समझनी पड़ेगी. ये जब अपन् समझें तब सिच्युएशन् कैसी आ रही हे.

(प्रभुके जन्मप्रकरणके तादात्म्यको मॉडेल् माने श्रीगुसांईजीको जन्मप्रकरण ''आ पोष...प्रगटियो'')

ये पूरे तृतीयाख्यानमें पहलो तो जैसे **आ पोष मध्याह्ने नोमी श्रीनाथजी अक्काजी उर उपन्यो आनन्द, आ चंद श्रीवृन्दावन तणो प्रगटियो.** अब स्थान तो इन्डिकेट् कर रहे हें के चन्द्र चरणाटमें नहीं

प्रगट्यो हे, वृन्दावनमें प्रगट्यो हे. और पौष मध्याने नौमी**में** कभी चन्द्र प्रगटे? या पौष नौमी मध्यानमें चन्द्र प्रगटे के सूर्य प्रगटे? उनकु पता हे के प्रगटे नहीं. ठीक हे चरणाटमें नहीं पर आपको प्रादुर्भाव हम वृन्दावनमें मना रहे हें. ये कौनसो प्लेसमेन्ट् हे? भावको. श्रीगुसांईजीको जन्म भयो हे चरणाटमें पर उनकु साइनेस्थेसिया हो रह्यो हे के ये तो वृन्दावनमें चन्द्रमा उग्यो हे. ऐसो क्यों और कैसे हो गयो? तो बोले के विरुद्धधर्माश्रय हे ना! पौष नौमीकी मध्यानमें ये वृन्दावनमें चन्द्रमा उग रह्यो हे. क्या गड़बड़ हो गई? अरे ये गड़बड़ ही तो याकी ब्युटी हे. यहां तुम लॉजिक् वापरने जाओगे ना, mind it, it is not virtual reality. It is more than virtual reality. Virtual reality is a too short term to explain this phenomenon. कृष्णके प्रादुर्भावमें भागवतकार स्पष्ट वहां ये केह हे के पहले वसुदेवजीके हृदयमें प्रभु प्रगटे. क्योंके वो सात्त्विक होवे हे. प्रभु सत्त्वमें प्रगट होवें हें. रज और तम में प्रभु प्रगट नहीं होवें हें. **''सत्त्वात् संजायते ज्ञानम्''** (भग.गीता.१४।१७) तो सत्त्वमें प्रगट होवें हें करके वसुदेवजीके हृदयमें प्रगटे और वसुदेवजीके हृदयमेंसु देवकीजीमें संक्रान्त भये हे भगवान्. वो अपने यहांकी ट्रांस् कन्सॅप्शन्की प्रोसेस् हे. 'कन्सॅप्शन्' माने पहले वसुदेवजीके हृदयमें कन्सीव् भयो हे और फिर वहांसु देवकीजीमें भयो हे. ये ट्रांस् कन्सॅप्शन्की प्रोसेस् वहां बताई हे के कैसे वहां कन्सीव् भयो. हृदयमेंसु देवकीजीके गर्भमें गयो हे. तो वाके कारण **अक्काजी उर उपन्यो आनन्द.** देखो पूरी कृष्णलीलाकु यहां चरितार्थ कर रहे हें. क्योंके उनकु या गुसांईजीकु **"पुरा औषत् पाप्मानम्"** भेद दिखलाई नहीं देनो चहिये. वो भेद प्रकट नहीं होनो चहिये

करके यहां वृन्दावनमें जन्म भयो हे और वहां चम्पारण्यमें उनकु नहीं देखनो हे. अक्काजीके गर्भसु सीधो उनकु वृन्दावनके चन्द्र तक पोंहोचा देनो हे. ये सारी जो कड़ियें हें, उनकी ब्युटी ये हे के देश काल कर्म कर्ता मन्त्र द्रव्य एकके बाद एक गिनायें हें के कैसे हर चीज वहां शुभ हो गई! वहां श्रीमहाप्रभुजी कृष्णजन्मके समय गिना रहे हें **''अथ सर्वगुणोपेत: काल: परमशोभनम्. यर्ह्योवाजन जन्मर्क्षं शान्तर्क्षग्रहतारकम्.. दिश: प्रसेदुर्गगनं निर्मलोडुगणोदयम्. मही मङ्गलभूयिष्ठपुरग्राम–व्रजाकरा..''** (भाग.पुरा.१०।३।१) सारे देश काल कर्ता कर्म मन्त्र द्रव्य सब एकदम शुभ हो गये हें. आखी वो की वो बात यहां ला रहे हें. क्योंके कृष्णकु गुसांईजीमें पधरानो हे. गुसांईजीकु कृष्णमें पधरानो हे. वाको नॅट् कारण पुरुषके रूपमें इनकु प्रतिष्ठित करनो हे. ड्युएलिटी इनकु नहीं देखनी हे. **''यस्य देवे परा भक्ति: यथा देवे तथा गुरौ. तस्य एते कथिता हि अर्था प्रकाशन्ते महात्मन:''** (श्वेता.उप.६।२३) वो ड्युएलिटीको जो पाप हे वाकु पहले जला दो तो वाके बाद पुरुष प्रगट हो जायगो. वो देश काल कर्म कर्ता मन्त्र द्रव्य सारेके सारे सुहामणा, वा बखत सब चीज अच्छी हो गई हें .

(श्रीगुसांईजीके प्राकट्यके कारण देश काल द्रव्य मन्त्र कर्म की दिव्यता)

तो देखो सबसु पहले काल. कालमें फेर बदल कर दियो हे. अब वो कहें के ये तो गलत बात हे. तो अपन् कहें के भाड़में गई गलत बात! वर्च्युअल् रीयलिटी हे के साईनॅस्थेसिया हे; अरे ये सारी बातें टुच्ची पड़ रही हें. ये जो प्रोसेस् हे नामको रूपमें

आधान और रूपको नाममें आधान; वामें एक रूपमें नामको आधान और नाममें या रूपको आधान – या तरीकेसु प्लेसमेन्ट् करनो हे या स्थानलीलाके तहत. ब्युटी समझमें आ रही हे ना! यासु फिर वाके पॅरेफेनिलिया जितने हें पर्सन्के देशके काल कर्ता कर्म मन्त्र द्रव्य; उन सबमें कैसलिंग् हो रही हे. जैसे चॅस्में कैसलिंग् होवे हे न! यहांको हाथी यहां आ जाये, वहांको हाथी यहां आ जाय, माने घर बदल जाये, वैसे फेर बदल कर रहें हें तुरत. पहलेमें वो काल बतायो, दूसरेमें **सुहाय रूडा कंठना नाद आहलाद ऊपन्यो अंगो अंग घणो.** या तरीकेके सॉर्ट् ऑफ् डिसप्लेसमेन्ट्में कोई गड़बड़ी भई हे? नहीं नहीं सबकु मजा आ रही हे **सुहाय रूडा कंठना नाद आहलाद ऊपन्यो अंगो अंग घणो.**

वाके बाद देश आ रह्यो हे (देश)**सूतिका सदन सोहामणुं शोभा रूडी लहेरडे जाय वाद्य वाजिंत्र ते समे तणा** वाके बाद (द्रव्य)**सर्वस्वदान तेणे समें करे रे श्रीवल्लभजी उदार. सुकुमार सुत उदयो श्रवणे सुणी.** द्रव्य आ गयो. शास्त्रमें कह्यो गयो हे के द्रव्य वोही शुभ हे जाकु तुम दे रहे हो. जाकु तुम दाबके बैठे हो वो तो सांपको द्रव्य हे. जाकु तुम दे रहे हो वो शुक्ल द्रव्य हे. तो यहां द्रव्यकी शुक्लता दिखा रहे हें. वाके बाद पीछे क्या केह रहे हें (कर्ता)**पाताळे शेषनाग रीझिया ऊपर इन्द्रादिक देव. ततखेव सुणि निशान बजडांवीया. सिद्ध गन्धर्व गण अपसरा उलटियां नृत्यनें नाद. आहलाद भर्या श्रीवल्लभजीए मानिया.** एक बात समझो के पृथ्वीके नीचे पाताल हे, पृथ्वीके ऊपर द्यु लोक हे. जो नीचेके लोक हें वो सब 'नागलोक' कहवावें, 'शेषलोक' कहवावें, जो आधार हें. ऊपरके

लोक द्युलोक हें जो देवलोक कहवावें. तो या जन्मकु बधावेवाले कौन हें? नागलोक और द्युलोक के जितने भी मन्त्र हें उनके अधिष्ठाता इतने ही तो हें. जितने भी मन्त्र हें उन सबन्के अधिष्ठाता देव ये हीं हें. कछु द्युलोकमें हें कछु नागलोकमें हें. वेदके सारे मन्त्र उठाके देख लो. सब याही फॉरमेट्में दिये भये हें के कौन मन्त्रके कौन देवता? जैसे गायत्रीके देवता अन्तरिक्षमें हें. वायुको देवता वायुलोकमें हे. कौनसो देवता कहां हे वो सारे देवतायें, जो मन्त्रके नियामक देवता हें, जिनसु मन्त्र कन्ट्रोल्में आ रहे हें, वो सब रीझि गये तो मन्त्र बिचारे कहां जायेंगे? जब देवतायें ही रीझि गये. अब ये चापलूसी हो रही हे? तो एक बात ध्यानसु समझो के चापलूसी भी हो सके हे ये यदि दूसरेकु खुश करनो हे. अब दूसरेकु खुश करवेके लिये नहीं केह रहे हें पर उनकु खुदकु मजा आ रही हे वा लिये केह रहे हें. गुसांईजीके उत्सवको उनकु खुदकु आनन्द आ रह्यो हे वाके लिये केह रहे हें. याकु चापलूसी कोई बेवकूफ ही समझ सकेगो. कोई दूसरेकु कहवेके लिये तो केह नहीं रहे हें. गुसांईजीके उत्सवको उनकु आनन्द आ रह्यो हे तो या तरहसु आनन्द आ रह्यो हे.

(कर्ता)**ब्रह्मा महादेव मुनि हरखिया बरखिया कुसुमसमूह** क्यों? **आ मोह टाळयो जगतना जीवनो.** मोह कौनसो? वोही पापको. पापकु दूर करवेवालो एक व्यक्ति ऐसो तो पैदा भयो के जो या जगत्में रहके हमकु जगदीशकु रॅलिश् करवा सके. ऐसे सिद्धान्तकु वो प्रोमोट् करेगो, वा सिद्धान्तकु एस्टाब्लिश् करेगो, वा सिद्धान्तके लिये लड़ेगो, वा सिद्धान्तके लिये स्ट्रगल् करेगो, वा सिद्धान्तके लिये ७२ बरस

लगातार यहांसु वहां फिरेगो. यहां अलग अलग कॅटेगरी भी हें. (कर्ता)**सिद्ध गन्धर्व गण अपसरा उलटियां नृत्यनें नाद, आह्लाद भर्या श्रीवल्लभजीए मानिया.** वाके बाद (मन्त्र)**निगम साम शाखा सहस्र शुं करे रे भला निर्घोष, आ घोषपति भगवन्त भेटतां.** देखो ये मन्त्र आ गयो. जब भी जन्म होवे या कोई भी शुभ प्रसंग होवे तो ब्राह्मण आके मन्त्रपाठ करे. काहेकु मन्त्रपाठ कर रहे हें? कितनी मीठी बात केह रहे हें के घोषपति आज भगवदीयन्सु मिलवे आयो हे. **घोषपति कृष्ण औषति पाप्मानम् औषति** देखो लगातार वो ही हेमरिंग चल रही हे. जो **"कस्मात् पुरुषः? यस्मात् पाप्मानम् औषत्"** वा द्वैतके पापकु वाने जला दियो. वो घोषपति भगवदीयन्कु भेंटवेके लिये आयो हे तो उनने कही के चलो खूब मन्त्र गान करो. **"शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवति अर्यमा शन्न इन्द्र बृहस्पतिः शन्नो विष्णुः उरुक्रमः."** (ऋग्.१।९०।९) खूब मन्त्र पाठ करो. यों केह रहे हें. वा मन्त्रके बाद – (कर्म)**वेदविहित कृत्य सर्वे कीधां दीधां बहु पेरे गौदान, मानसुं स्वजन संतोषिया** कर्म आ गयो के नहीं आ गयो देख लो! दिखलाई दे रह्यो हे ना. धर्मकी परिभाषा क्या हे के **"वेदप्रणिहितो धर्मः अधर्मः तद्विपर्ययः."** (भाग.पुरा.६।१।४०) तो जो भी वेदविहित कृत्य हते वो सब किये तो कर्म आ गयो. कर्म भी सुहावणो हो गयो.

वाके बाद – **आ कनक कचोळां** सु लेके **उत्साह भर्या को कोने जाणे नहीं** जो भागवतके नन्दोत्सवकी लीला हे वाकु केह रहे हें. वा लीलाकु कहवेमें वा मॉडिल्कु नहीं अपनाके अपने यहां जन्माष्टमीके दिन जो पंचामृत होवे वो पंचामृतकी बात कर रहे हे.

अपन् कैसे जन्मोत्सव मनावें? टेरा खोल्यो. तो टेरा खोलवेके लिये **''ब्रज भयो महरिके पूत''** और तुरत ठाकुरजीकु पंचामृत करावें. वो पंचामृतात्मक महोत्सव हे, देखो **दधि दूध घृत मधु मांडवे सेरडिये वहेरे सुगंध. आ सुगंध मोह्या अलिकुल आविया.** वास्तवमें दक्षिणमें और बोहोत सारे मर्यादामार्गीय मन्दिरन्में अभी भी शक्करसु ठाकुरजीको पंचामृत नहीं होवे. गन्नाके रससु ही पंचामृत होवे. शास्त्रमें भी येही लिख्यो हे.

(सेवामें भावकी महत्ता)

पर अपने यहां क्योंके सब जगह गन्ना मिले नहीं, तो गन्नाको रस लानो कहांसु? वाके सब्सटीट्युशन्में खांड पधराई गई हे. अन्यथा शास्त्रानुसार तो गन्नाके रससु ही पंचामृत होवे हे. शक्करको कहीं भी संदर्भ ही नहीं हे. पहली बार गुसांईजीने इन्ट्रोड्युस् करी क्योंके गन्ना मिले, कभी नहीं मिले तो कहांसु लानो गन्नाको रस? ये बात श्रीमहाप्रभुजीकु रजोने समझाई. जब महाप्रभुजीने घी मंगवायो, तो रजोने केह दी के ''जाओ, केह दो नहीं हे''. महाप्रभुजीने कही के ''जाके कहो के गुस्सा हो रहे हें''. तो रजोने कही के ''बिल्कुल नहीं हे.'' वाकु कहवायी ''बोहोत गुस्सा हो रहे हें''. तो बोली के ''हे ही नहीं तो कहांसु लाऊं?'' फिर पाछी सामग्री आरोगायवे गई रातकु. महाप्रभुजीकु बुरी लग गई के ये क्या चक्कर हे? घी नहीं हतो तो सामग्री बनी कैसे? रजोने कितनी बड़ी बात पूछ ली महाप्रभुजीसु के ''आपके घरमें घी नहीं हतो?'' महाप्रभुजीने कही के ''मेरे यहां हतो घी.'' ''हतो तो वो घी आपने क्यों नहीं वापर्‌यो?''

महाप्रभुजीने कही के "वो तो मेरे ठाकुरजीके लिये हतो. पिताके श्राद्धके लिये नहीं हतो." तो रजोने कही के "मेरे यहां कोई दूसरेके लिये घी हतो? आपके पिताके श्राद्धके लिये मेरे यहां घी होवेगो? जब आपके यहां आपके पिताके श्राद्धके लिये घी नहीं हे तो मेरे घरमें आपके पिताके श्राद्धके लिये घी कहांसु होयगो? क्यों नहीं वासु श्राद्ध करवायो?" बोहोत बड़ी बात कही हे. बुरी क्यों नहीं लगी महाप्रभुजीकु? क्योंके कोईने इतनी बड़ी और कड़वी बात नहीं कही जो महाप्रभुजीकी सेविकाने महाप्रभुजीकु केह दी. महाप्रभुजीकी खुदकी सेविकाने महाप्रभुजीकु कही. महाप्रभुजी बिचारे सरेन्डर् हो गये के "बात तो सच्ची हे. कोईने नहीं कही पर ये तो मेरे दिलकी ही बात हे जो कही रजोने हे." तो ये रहस्य समझो. 'किसी'ने कही होती तो बुरी लग ही जाती. शतप्रतिशत बुरी लगती के "जा तेरो त्याग कियो. अब तेरो मौंह नाहि देखुंगो." महाप्रभुजीने कही के नहीं नहीं, ठीक हे. रजोने कही के सामग्री आरोगो. महाप्रभुजीने कही के "आरोगुं कैसे? आज तो श्राद्ध कियो हे." तो वाने कही "अपने घरको मत खाओ पर मेरे घरको तो खा सको हो ना!" एकदम दरबारी नेचर्की क्षत्राणी हती हों! वापे वाने एक बोहोत मीठी बात कही हे. "यदि आप याकु गलत नहीं मानते होते तो आपने मोकों ये क्यों नहीं कहवाई के तेरो कछु बिगाड़ नहीं होयगो, भिजवा दे घी. पहले आपने गुस्सा होके मंगवाई तो मैं समझ गई के गुस्साको तो पुष्टिमार्गमें काम ही नहीं हे. यहां तो भावसु जो भी चहिये वो सब सिद्ध हे." रजोने महाप्रभुजीकु ये बात कही हे के यहां तो कोई चीजको अभाव हे ही नहीं. क्योंके

वस्तुको अभाव कहां होवे के जहां वस्तुसु सेवा की जाती होय. यहां तो भावसु सेवा करी जा रही हे. तो जो भावसु सेवा कर रह्यो हे वामें वस्तुको अभाव आयेगो कहांसु? जो भी वस्तु नहीं हे वाको भाव अपन् कर सकें प्रभुके सन्मुख. या लिये गन्नाको रस मिले न मिले बूरा तो कहीं भी मिल सके हे न! वाके भावसू पंचामृत करायो जा सके.

अब जो गोपालदासजीकु नहीं दीख रह्यो हे वाको भाव कर रहे हें गोपालदासजी, मैं ये बात समझानो चाह रह्यो हूं के यहां सायनेस्थेसिया नहीं हे, **''भावो भावनया सिद्धः साधनं नान्यदिष्यते.''** (सं.नि.८) उनके मनमें एक धारणा हे के पुरुष ऐसो प्रगट होनो चहिये कि पुष्टिसम्प्रदायकु चलावेवालो मूलपुरुषके साथ वो शरीर और त्वचा के संबंधके भेदवालो नहीं होनो चहिये. **''आत्मैव इदम् अग्र आसीत्''** ये ही पहले भी हतो और वो ही या तरहसु प्रकट भयो हे. पर्सन्की इन्टीग्रिटी रिवील् होनी चहिये. अब वो इन्टीग्रिटी चर्मचक्षुसु नहीं दीख रही हे तो भावचक्षुसु दीख रही हे. सारो देश काल कर्म कर्ता मन्त्र द्रव्य सब यहां लाके प्रस्तुत कर दियो हे. कैसे प्रस्तुत कियो? भावसु. भावसु यहां सारी चीज अवेलेवल् हे. कोई चीज नॉन्-अवेलेवल् हे ही नहीं. रजोने इतनी बड़ी बात केह दी के जहां नॉन्-अवेलेबिलिटी हे वो तो मर्यादामार्ग हे. पुष्टिमार्गमें नॉन्-अवेलेवल् जैसी चीज कोई हे ही नहीं.

महाप्रभुजीको सिद्धान्त महाप्रभुजीकु ही समझा दियो के ये आपको सिद्धान्त हे. महाप्रभुजीने कही के ठीक हे अब मैं भोजन

करूंगो, चल तू लाई हे तो. ये भावकी बात हे.

(उत्सवको प्रयोजन–तादात्म्यको फॉरमेट्)

वो भावको यहां प्लेसमेन्ट् हो रह्यो हे के प्रागट्यके बाद ठाकुरजीकु पंचामृत करावेकी प्रक्रिया हे वापे ये सारे अलिकुल मोहित होके गुंजार कर रहे हें. क्योंके दूध घी दही शहद सेरडी सबकी बोहोत ही मस्त सुगंध आ रही हे. या भावभरी सुगंधसुं मोहित सभी भावात्मक मधुप यहां भावगुंजन कर रहे हें **सुगंध मोह्या अलिकुल आविया. सूत मागध साधु सर्वे मळ्या, मळिया ते मांहोमांह. उत्साह भर्या को कोने जाणे नहीं.** वो नंदोत्सवकी बात हे पाछी. ये उत्सव जो मन्यो गुसाँईजीके प्रागट्यको वामें वो केह रहे हें के याकु रेक्टीफाई कौन करेगो? या उत्सवकु रेक्टीफाई कैसे करनो? तो केह रहे हें **शुकदेव सबळ आनंदिया वंदिया श्रीवल्लभजीनां चरण, गिरिधरण श्रीभागवत म्हारूं निरखशे.** ये उत्सव मनावेको कारण सिर्फ एक ही हे के ये आचार्यरूप पुरुष प्रकट भयो हे.

वो टी.वी. देखतो नहीं रह जाय. फेसबुक्में इन्वॉल्व् नहीं हो जाय, वो अमेरीकाके क्लबन्में चक्कर मारतो नहीं रह जाय, वो मैक्सिकन् पीज़ा बर्गरमें ही निरखतो न रह जाय, **भागवत म्हारू निरखे**, वाके लिये वो सब रीझे हें. **आ शुकदेव सबळ आनंदिया वंदिया श्रीवल्लभजीनां चरण.** उनने महाप्रभुजीके चरणन्में दण्डवत लगा दी के ऐसो पुरुष तुमने पैदा कियो हे के जो भागवत देखेगो तो आजसु वाकु दण्डवत. वो देखेगो तब देखेगो पर आजसु ही

वाकु दण्डवत के भागवत देखेगो तो सही. तुमकु ये बात समझमें नहीं आयेगी.

वाडीलाल नगीनभाई शाह हर बखत ऐसे करते के मेरे जन्मदिनपे मोकु महाप्रभुजीको एक ग्रन्थ भेंट करते. और लिखते ''चिरायुष्मान् गोस्वामी श्याममनोहर बाबाने एटला वर्ष ऊपर आ ग्रंथ भेंट.'' मैं भी उनकु जमा करतो रहतो. एक दिन अचानक गोपालने और मोहनभाईने कही के हमकु सुबोधिनी देखनी हे. मैंने कही के चलो बैठके अपन् देखें. वाडीभाईकु पता चल्यो के मेरी दी भई सुबोधिनी आज श्यामु बाबा देखेंगे तो वाडीभाईने वा जमानामें आजकी तरह मोबाईल नहीं हते, दादाजी कलकत्ता बिराज रहे हते तो उनकु ट्रंककॉल् कियो के ''आजे म्हारा जीवननो सौथी मोटो आनन्द थयो के आपना चिरायुष्मान गोस्वामी श्यामबाबाए भागवत बांचवानु शुरु कर्यु.'' दादाजीको वहांसु मोकु फोन आयो के ''क्या भयो हे बेटा.'' मैंने कही के ''कछु नहीं दादाजी, वो तो गोपाल पढ़वे आयो हतो तो सबन्ने पढ़्यो.'' तो बोले के ''अरे भई वाडीभाईको फोन आयो हतो के 'आजे म्हारा जीवननो सौथी मोटो आनन्द थयो'.'' ये अपनो भावात्मक सम्बन्धको मार्ग हे या तरीकेको. गिफ्ट देते रहे मोकु हर बरस, मेरे पास बोहोत पुस्तकें हें वाडीभाईकी दी भई. जा दिन मैंने पढ़नी शुरु करी, आज तो ट्रंककॉल्की कोई वॅल्यु नहीं हे. वा जमानामें ट्रंककॉल् एक सिरदर्द हतो. जिनकु पता होय, कितनी देर जोड़ो तब जाके कहीं जुड़े नम्बर. उनने बिचारेन्ने कलकत्ता ट्रंककॉल् कियो के ''आजे म्हारा जीवननो मोटो आनन्द थयो छे. हुं आपने बधाई मोकलाऊं छुं.

आपना चिरायुष्मान श्यामबाबाए सुबोधिनी बांचवानु शुरु कर्‌यु.'' **आ शुकदेव सबळ आनंदिया वंदिया श्रीवल्लभजीना चरण.** वहां दीक्षितजीके चरणकु उनने बधाई दी हती. यहां शुकदेवजीने महाप्रभुजीकु बधाई दे दी के **श्रीगिरिधरण भागवत म्हारू निरखशे.**

सकल कला कलिकालमां कल्पद्रुम प्रगटियो आज. काज मनवांछित पूरवा. इतने दिनन्‌की जो गिफ्ट चालू हती वो आज जाके रियलाईज़् भई. यहां तक उत्सव मनावेको प्रयोजन बतायो. क्यों ये उत्सव मननो चहिये वाको प्रयोजन बतायो. माने **''कृष्णसेवापरं वीक्ष्य दम्भादि-रहितं नरं श्रीभागवततत्त्वज्ञं भजेद् जिज्ञासुः आदरात्.''** (त.दी.नि.१।२२७) यदि पुरुष भागवततत्त्वज्ञ नहीं हे तो उत्सव मनावे लायक नहीं हे. थोड़ीसी भी आशा बंधती होय के भागवततत्त्वज्ञ हे तो उत्सव मनाओ. भागवत कथावाचक नहीं हों. भागवतकथावाचक तो सब अतत्त्वज्ञ हें. कथावाचकन्‌की बात मैं नहीं कर रह्यो हूं. भागवततत्त्वज्ञकी बात कर रह्यो हूं. ये कथावाचक तो आज ऐसे हें के भिण्डी और आलु की तरह रोडपे फिर रहे हें. यहां तत्त्वज्ञकी बात कर रह्यो हूं. **"भागवततत्त्वज्ञं भजेद् जिज्ञासुः आदरात्."** वो आचार्य **पूर्ण पुरुष प्रमाणपंथा व्याख्याता वेदान्त. ग्रंथ सर्वे रसरूप कीधां पोताने सिद्धान्त.** वा फॉरमेट्‌कु लेके ये उत्सव क्यों मन्यो, वा फॉरमेटको फुलफिलमेन्ट् हो रह्यो हे. वो या उत्सवको प्रयोजन हे.

(उत्सवनायकमें सब स्वरूपको प्रत्यय)

याके बाद **आ तैलंगतिलक त्रिभुवनधणी मणि मरकत धनवान ,**

समान रूप निरखतां कोई नहीं. गणक गर्गादिक आविया भाविया दिये रे आशिष. जगदीश श्रीवल्लभ घेरे प्रगटिया. यामें एक बात ध्यानसु देखो. प्रयोजनके बाद उत्सवनायकको वर्णन हे. यामें एक ब्युटी समझवे लायक हे के पहले विट्ठलनाथजी आ गये, फिर श्रीनाथजी आ गये, जगन्नाथजी ओर आ गये. अरे भई कहांसु आ गये? जगदीश क्यांथी आविया अहियां? अपन्कु लगे के क्या हे कछु अशृंखल विचार चल रह्यो हे, बेलगाम कोई गीत चल रहे हें? अरे भई! कोई भी बेलगाम गीत नहीं चल रहे हें, यहीं तो महाप्रभुजीने एक सिद्धान्त ब्रह्मसूत्रमें स्थापित कियो हे के जाकी तुम उपासना कर रहे हो, वाकी उपासनामें, अपने आराध्यदेवमें तुमकु सारे आराध्यदेव देखनो आनो चहिये. **''सर्ववेदान्तप्रत्ययम्''** (ब्र.सू.३।३।१)जितने भी वेदान्तके प्रत्यय हें वाकु अपने ठाकुरजीमें, अपने आराध्यमें देखो. वाकी मर्यादासु देखो. अमर्यादित होके नहीं देखो. वाकी मर्यादाकु निभाते भये, सारे वेदान्तके प्रत्ययन्को आलम्बन वाकु बनाओ करके वो विट्ठलनाथजी आ गये, श्रीनाथजी आ गये, जगन्नाथजी भी आ गये. एक रूपसु ही नहीं देखनो हे वाकु, सब रूपसु देखनो हे. जो मर्यादाको और पुष्टिको अपन् प्रभेद कर रहे हें, वा तरीकेको प्रभेदपे इनको फोकस् नहीं हे. कोईको फोकस् होय तो वाकु दीखतो होयगो पर इनको फोकस् या तरीकेको नहीं हे मर्यादा और पुष्टि के बीचमें. दोनोंन्कु क्लब् करके कॉमन् फोकस् में देख रहे हें के यहां गुसांईजीके स्वरूपमें विट्ठलनाथजी भी हें, जगदीशजी भी हें, श्रीनाथजी भी हें. सब कछु हें, सर्ववेदान्तप्रत्यावलम्बन हे.

सबसु बड़ी बात श्रीगुसांईजीने बताई हे **''यत्र एकाग्रता तत्र**

अविशेषात्'' (ब्र.सू.४।१।४) कौनकु अटॅन्ड् करनो? भीतर अटॅन्ड् करनो के बाहर अटॅन्ड् करनो? वामें क्लीयर् कट् डिक्टम् दियो हे के जहां तुम्हारो मन लगे वहां सब कछु आ गयो. जहां मन नहीं लगे तो वहां कछु भी नहीं हे. सब गायब हे. भीतरके स्वरूपमें तुम्हारो मन लगे तो भीतरके स्वरूपमें सब कछु आ गयो. बाहरके स्वरूपमें तुम्हारो मन लग गयो तो बाहरके स्वरूपमें सब कछु आ गयो. क्योंके जहां मन लग्यो वहां मनमें भरी सब बात पोहोंच जायगी. इन्टरेक्शन् दोनोंन्में बराबर स्थापित हो जायेगो. ये मन लगवेकी प्रक्रिया ही ऐसी हे के जासु मन लग्यो वो मनमें लग गयो हे. जासु मन लग्यो वो यदि मनसु नहीं लगे तो फिर वामें मन लगे नहीं. करके वो मनमें स्थापित हो गयो और मन वामें स्थापित हो गयो. या सारी प्रक्रिया बतावेके लिये ''**यत्र एकाग्रता तत्र अविशेषात्**'' (ब्र.सू.४।१।४)करके सारेको वो वेदान्तप्रत्ययन्को अवलम्बन बन जाये. जगदीशजीमें उनकु गुसांईजी नहीं दीख रहे हें, श्रीनाथजीमें उनकु गुसांईजी नहीं दीख रहे हें, विट्ठलनाथजीमें उनकु गुसांईजी नहीं दीख रहे हें पर गुसांईजीमें उनकु विट्ठलनाथजी, जगदीशजी, श्रीनाथजी सब दिखाई दे रहे हें. ''**यत्र एकाग्रता तत्र अविशेषात्**'' जहां एकाग्रता हे वहां अविशेष हे. ये ब्रह्मसूत्रभाष्यको अपनो सिद्धान्त हे आराधनाको. याही लिये शोभाबेटीजी जब दर्शनके लिये आई अन्नकूटके तब गुसांईंजीने कही के "तिहारे घर ठाकुरजी नांहि बिराजत हें? जाओ वहां." और जब वो वहां पधारीं तब उनकु अपने ठाकुरजीमें सातोंनिधिके दर्शन भये. ये सारे जो फाईन् पॉइन्ट्स् हें उनकु आज अपन् भूल गये हें. आज अपन् भूल गये हें करके अपन्पे वो मायादासीको कटाक्ष काम कर गयो हे.

भक्तिवाली सुन्दरीमें अपनो मन लीन नहीं होवें. वैसे कटाक्षसु अपन् वञ्चित हो गये हें. वाको ही ये सारो लफड़ा हे.

(दासके दासकी विशेषता ''यत्र एकाग्रता तत्र अविशेषात्'')

याके बाद **धवल धन्याश्री गान जे करे उच्चरे श्रीविट्ठलजी अवतार, सारस्वतलीला तें जन लहे. दासनों दास जाय वारणें बारणें रह्यो रे उत्सव जुवे, को'एक भाग्यवंत भगवदीय ते समे.** ये देखो महाप्रभुजीको सिद्धान्त केह रहें हें. **"गोपिकानां तथास्तेषां रात्रौ च दिवसे तथा ज्ञानं भक्तिश्च चक्रं परिवर्तते."** वापे गोपालदासजीने जाके अपने आख्यानको समअप् कर दियो हे. उनको गुणगान कैसो हे? **धवल धन्याश्री गान जे करे उच्चरे श्रीविट्ठलजी–अवतार, सारस्वतलीला तें जन लहे. दासनों दास जाय वारणें वारणें रह्यो रे उत्सव जुवे. "प्रत्यक्षे भजनं श्रेष्ठम्"**, (त.दी.नि.३।१०।१११) प्रत्यक्षमें भजन श्रेष्ठ हे. वो मॉडेल् यहांसु बतायो हे. तो ये अपन् देख सकें हें. ये सारी प्लेसमेन्ट्की बात हे. स्थान लीलाको भागवतमें वाइडर् एन्गल् हतो, पुष्टिसम्प्रदायमें स्थानलीलाको स्थापन कैसे कैसे कहां कहां करी वो गोपालदासजीकी भागवतमें स्थानलीलाको पांचवो स्कन्ध हे, जहां सब स्थान ही स्थान बताये गये हें. और वहां स्थानमें क्या क्या बातें हें वो सब बातें बताई गई हें. पर इनके मनमें **"यत्र एकाग्रता तत्र अविशेषात्"** स्थान एक ही हे. वो कौनसो स्थान? **वल्लभराजकुमार.** वा स्थानमें सब चीजन्को प्रोपरली प्लेसमेन्ट् हो गयो हे. आज अपन्ने अपने टॅन्टेटिवली प्रोग्रामके तहत जो सोच्यो हतो तीसरो आख्यान भी श्रीगुसांईजीकी कृपासु पूरो कर पाये.

QQQ

वल्लभाख्यान चौथो

(प्रमाणप्रकरण–पोषणलीला)

(राग – भूपकल्याण)

(प्रमाणप्रकरणमें पोषणरीतिको निरूपण)

ते पद वंदु श्रीवल्लभनंदजी ।।
त्रिभुवन मंगल परमानंदजी ।।
सकल जीवनो टाळयो द्वंद्वजी ।।
जगमां व्याप्यो मुख मकरंदजी ।।१।।

सुखद वंदु श्रीवल्लभ सुतनां पदांबुज सुकुमार ।।
निगमरहस्य विचार कीधो, सकलजन निस्तार ।।२।।

ब्रह्मकुल हरि अवतर्या ते टाळवा भूमि भार ।।
नाथ विट्ठल नाम निरूपम, वृन्दावन–शृंगार ।।३।।

एक रसना केम कहुं गुण, प्रगट विविध प्रकार ।।
नित्यलीला नित्यनौतन, श्रुति न पामे पार ।।४।।

सकलशास्त्र प्रमाण बोले सारमांहे सार ।।
तत्त्वमांहे तत्त्व त्रिभुवन, भक्तनो आधार ।।५।।

सर्वे अंगो–अंग रसभर्यां, रसभर्यां लोचन चार ।।
चलण–वलणे बोधव्या हृदे, भाव अनेक प्रकार ।।६।।

मुखसुगंधे मोह्या अलिसकल ते, आवी करे रे गुंजार ।।
सरसवचन उच्चारमात्रे, संशयनो परिहार ।।७।।

नाम–व्याजे प्रगट कीधो, मुक्ति–शत्रु–कार ।।
भुजदण्डपरसें भय हर्यां, एवा नाथ अमित उदार ।।८।।

(पुष्टिजीवन्‌को श्रीगुसांईजीके द्वारा स्वस्वरूपप्रबोधन और नियोग सु प्रभुसेवार्थयोजन)

स्वस्वरूप अर्थे प्रयोजिया, कृत हुता जे संसार ।।
राज–काजे जोडिया जन, उच्चावच नरनार ।।९।।

आगळ अंशे प्रगटिया ते, ग्रंथ कह्या बहुवार ।।
श्रीयशोदोत्संग–लालित, पूरण अतिसुकुमार ।।१०।।

अनेक धर्म कह्यां प्रभुजीये, निगमने अनुसार ।।
गिरिराजधरणनो ताप टाळ्यो, श्रीलक्ष्मणसुत निरधार ।।११।।

पोते ते प्रगट पोतातणो, रसतणो कर्यो रे उच्चार ।।
पोते अंगो–अंग सुखद शोभा, सदन–अंगीकार ।।१२।।

(उपसंहारमें पदसंख्यान्‌के अभिप्रायको निरूपण)

स्कंधसंख्या ए कह्यां पद, श्रीभागवत रसराज ।।
भक्तजन पदरज–प्रतापे सकल सरियां काज ।।१३।।

(लीलाको स्वरूप)

अपने विषयपे आवेसु पहले अभी तक जो अपन् देख रहे हते, वामें सर्गलीला विसर्गलीला और स्थानलीला अपन्ने देखी. कन्सेप्च्युअली यामें एक खास बात समझवेकी हे के क्रिया अपन् कोई भी करें वाकी दोनों सम्भावनायें हें. क्रियाको कोई कर्ता होवे हे वा क्रियाको कर्ता नहीं भी होवे हे. अपने भीतर भी कछु क्रियायें ऐसी चल रही हें के जिनके अपन् कर्ता नहीं हें पर क्रियायें तो चल ही रही हें. जैसे खूनको दौरा चल रह्यो हे, सांस चल रही हे, डायजेशन् चल रह्यो हे, वाके अपन् थोड़े ही कर्ता हें? कर्ता

अपन् वाके नहीं हें. वो तो अपने ऑटोनोमस् सिस्टम्सु चल रही हें. वाके अपन् कर्ता नहीं हें. कर्ता अपन् कौनके कहवावें के जाकु अपन् समझके अपनी क्रियासु प्रगट करते होंय तो वाके अपन् कर्ता कहवावें. वो कर्ता अपनी इच्छा या समझ के आधारपे या प्रयोजनके आधारपे काम कर रह्यो हे तो वाको कर्म, व्यवहार नीति धर्म वगैरह हो जायगो.

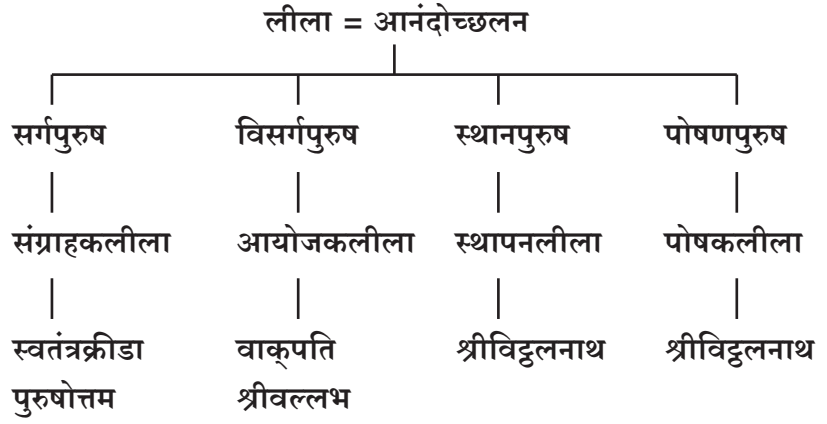

लीलाके लिये तो पहली शर्त ये हे के लीला करवेके लिये जो कर्ता हे वाके आनन्दको उच्छलन होनो चहिये. क्योंके आनन्दके उच्छलित होवेके अनुभावको नाम 'लीलाकर्ता' हे. मेरे दिलमें कछु आनन्द आ रह्यो हे, वो आनन्द छलकनो चाह रह्यो हे, वो छलकतो आनन्द जा क्रियाकु प्रकट करे हे वाको नाम 'लीला' हे. जैसे मैं अपने दिलमें कछु आनन्द अनुभव कर रह्यो हूं, वो मेरे दिलमें समा नहीं रह्यो हे; वो आनन्द बाहर छलकनो चाह रह्यो हे; बाहर छलक रह्यो हे, वो तो कोई न कोई क्रियाके रूपमें ही छलकेगो. चाहे तो वो कायिक क्रिया होय, चाहे वाचिक क्रिया

होय, साक्षात् परम्परासु चाहे कोई और तरहकी क्रिया होय, तो जो आनन्द क्रियाकी तरह छलक रह्यो हे, वा क्रियाको नाम 'लीला' कह्यो जाय. तो एक बात अपन् ध्यानसु समझ सकें के सर्गलीला विसर्गलीला स्थानलीला पोषणलीला यदि लीला हें; ऐसे ही ऊति मन्वन्तर ईशानुकथा निरोध मुक्ति ये यदि सब लीला हें तो हर लीलान्में आनन्दके उच्छलनको एक फॅक्टर् अपन्कु ट्रेस् करनो पड़ेगो. कौनसो आनन्द उच्छलित होनो चाहतो हतो, जाके कारण ये एक्शन् प्रगट भयो. जब तक आनन्दको उच्छलन अपन् नहीं देख पायेंगे, खोज नहीं पायेंगे, तब तक याको क्रियात्व कर्मत्व प्रगट होयगो पर लीलात्व प्रगट नहीं होयगो. क्योंके आनन्दको उछलनो क्रियाके रूपमें, वो चाहे वाचिक क्रिया होय, चाहे कायिक क्रिया होय, चाहे साक्षात् क्रिया होय या परम्परासु होय. आनन्दको उछाल कोई क्रियाके रूपमें होय वाको नाम 'लीला' हे. एक फॉर्म्युलावाईज् बात फिक्स्ड् समझ लो. जब ये बात अपन् माईन्ड्में सेट कर लेंगे, तो फिर ये सवाल उठे के सर्गलीलामें आनन्दको उच्छलन क्या हतो? कौनमें हतो? विसर्गलीलामें आनन्दको उच्छलन क्या हतो? कौनमें हतो? स्थानलीलामें आनन्दको उच्छलन क्या हतो और कौनमें हतो? प्रश्नकी गम्भीरता समझमें आई ना! यदि या तरहसु अपन् नहीं समझेंगे तो कहीं न कहीं लीलाकु लीला तरीके समझवेमें कछु तकलीफ होयगी. और कहीं न कहीं अपन् लीलाकु क्रिया कर्म व्यवहार नीति धर्म वगैरह समझेंगे. लीला समझवेके लिये ''बाप दाखव नहीं तो श्राद्ध करा.'' इतनी टर्मस् एण्ड कन्डीशन्स् पूरी होनी जरूरी हें. आनन्दके उच्छलनके अनुभावके रूपमें जो क्रिया प्रगट हो रही हे वाकु अपन् 'लीला' केह हें. वहां बाय् डिफॉल्ट् कछु ज्ञान

इच्छा प्रयत्न होंयगे, पर वो जो भी होंयगे वो सब चित्रके बॅकग्राउन्ड्में चले जायेंगे पर फिगर् तरीके वहां आनन्दको उच्छलन ही आयगो. बॅकग्राउन्ड्में वो नहीं होंयगे ऐसी बात नहीं हे, वामें तो बोहोत सारी चीजें हो सकें हें. वो जो बॅकग्राउन्ड्में हें उनकु अपन् उतनो फोकस् नहीं करेंगे, यदि लीला समझनी हे तो.

जैसे कोई क्राईम् करे तो इन्वेस्टिगेटिंग् टीम क्या करे हे? सबसु पहले कछु भी क्राईम भयो तो वाके पीछे प्रयोजन क्या हतो, वाकु इन्वेस्टिगेट् करे. जब तक प्रयोजन नहीं खोजें तब तक कोई भी एक्शन्को क्रिमिनल् होनो या नॉन्-क्रिमिनल् होनो, स्थापित नहीं हो सके. क्योंके क्राईम्के पीछे परपज़् एक मुख्य सिद्धान्त हे.

पर लीलाके पीछे परपज़् मुख्य सिद्धान्त नहीं हे. अब सोचो थोड़ी देर, धन्धाके पीछे परपज़्? मुख्य सिद्धान्त हे के आनन्दके उच्छलनसु भी धन्धा हो सके? दोनों तरहसु हो सके हे. जरूरी नहीं हे के क्राईम्की तरह कछु न कछु परपज़् होनो ही चहिये. आपकु लगेगो के क्राईम्में भी फिर वो फॅसिलिटी प्रोवाईड् करो के आनन्दके उच्छलनसु हमने क्राईम् कियो. नहीं करें हें ऐसी बात नहीं हे आनन्दके उच्छलनसु भी हम बोहोतसे क्राईम् करें हें. साधारणतया आनन्दके उच्छलनसु जब क्राईम् होवे हे तब वा बखत वाकु क्राईम् तरीके एटलीस्ट् अपनो दिल कबूल नहीं करतो होवे हे. दूसरे वाकु क्राईम् तरीके कबूल करते होंयगे. या लिये लीलाकी जो प्रायर् कन्डीशन् हे, वो आनन्दको उच्छलन हे. ज्ञान अज्ञान दोनोंन्मेंसु कछु भी हो सके हे. इच्छा अनिच्छा दोनोंमेंसु कछु भी

हो सके हे. इन् ए वे एफर्ट् और नॉनएफर्ट् दोनोंन्मेंसु कछु भी हो सके. वामें कोई एक चीजको होनो जरूरी नहीं हे. याही लिये कभी इच्छाकी परिभाषामें एफर्टलॅस् भी कह्यो जाय हे. कई बखत अपन् वाके एफर्ट् भी नरेट् होते भये पावें हें. कई बखत लीलाके प्रागट्यमें वामें ज्ञान नरेट् कियो जाय हे. कोई बखत ज्ञान नरेट् नहीं कियो जातो होवे, ऐसे ही इच्छाके कारण लीला प्रगट भई दिख जावे.

(लीला मेकेनीकल् नहीं पर आनंदको उच्छलन)

एक बात ध्यानसु समझो के लीलामें जब ये बात हे, तो अपन्कु प्राईमाफेसी एक बात ओर समझनी पड़ेगी के लीलाको मॅकेनिकल् होनो थोड़ो मुश्किल हे. क्योंके 'मॅकेनिकल्'को मतलब हे के जहां आनन्दको उच्छलन नहीं हे. जो काम हो रह्यो हे वो मॅकेनिकली हो रह्यो हे. मॅकेनिकली जो काम होतो होवे वामें कभी अन्डरस्टेन्डिंग् इन्वॉल्व् होती होवे, कभी अन्डरस्टेन्डिंग् इन्वॉल्व् नहीं होती होवे. मॅकेनिकल्में भी कभी एफर्ट् इन्वॉल्व् होते होवें और कभी नहीं भी इन्वॉल्व् होते होवें. पर जो मॅकेनिकल् काम हे, जो क्रियाको मॅकेनिकल् आउटपुट हे वामें आनन्दके उच्छलनको कोई शेड् हे ही नहीं, यदि वो मॅकेनिकल् हे तो. यदि वो लीला हे तो वो मॅकेनिकल् नहीं हो सके. और देखो सीधोसो मैं प्रयोग करके बताऊं. कोई भी कामकु आप रेग्युलरली कर रहे हो, वाके कारण आप वा कामके एक्स्पर्ट् हो जाओ हो. एक्स्पर्ट् होवेके कारण आपकु वामें कोई भी तरहकी प्रायर् केयर् लेवेकी जरूरत नहीं होवे हे. जब वो स्टेज् हासिल होवे, बाय् देट् टाईम् वामें अपने

आनन्दको उच्छलन समाप्त हो जाये हे. आनन्द तभी तक उच्छलित होतो होवे के जब तक अपन् वामें एक्स्पर्ट् नहीं भये हें. ये सेवाके बड़े बड़े एक्स्पर्ट् मर्यादी वैष्णव होवें तो उनकु सारी माईन्युट् डीटेल् पता होवे हे के झारीको एन्गल् यों रखनो, ऐसे रखनो, वैसे रखनो. तो जब उनकु मॅकेनिकल् हो जाय वा बखत सेवा पूरी होती होवे हे, पर उनके दिलकु टटोलके देख लो तो वहां आनन्दको उच्छलन दिखलाई नहीं देगो. जा बखत वा तरीकेकी एक्स्पर्टनेस् अपनेमें डेवलप् होवे, वा बखत तुरत आनन्दको एलीमेन्ट् एकदम डिक्लाईनिंग् मोड्में चल्यो जातो होवे हे. ये एक स्वाभाविक बात हे. ये घटना परस्पर दोस्तन्के बीचमें भी हो सके हे के दोस्तीको इज़हार अपन् मॅकेनिकली करें तो धीरे धीरेसु वामेंसु आनन्दके उच्छलनको तत्त्व डिक्लाईनिंग् मोड्में आ जावे हे. या लिये पहली शर्त ये हे के लीलाकु यदि कहीं प्रगट होनो हे, तो आनन्दके उच्छलनके अनुभाव प्रगट करवेवाली कोई क्रिया होनी चहिये. ज्ञानके साथ होयगो तो भी चलेगो और अज्ञानके साथ भी होयगो तो भी चलेगो. इच्छाके साथ होयगो तो भी चलेगो और अनिच्छाके साथ होयगो तो भी चलेगो. प्रयासके साथ होय तो भी चलेगो और प्रयासके बिना होय तो भी चलेगो. पर जाको सोर्स् आनन्दको उच्छलन नहीं हे, ऐसी कोई भी क्रिया लीला तरीके पहचानी नहीं जायगी. इतनी बात मनमें स्पष्ट जमा लो. थोड़ोसो अपन्कु या आस्पेक्ट्कु सर्गलीला विसर्गलीला स्थानलीला पोषणलीला में समझनो पड़ेगो.

(सर्गलीलामें आनंदको उच्छलन या चिंताको उच्छलन?)

गोपालदासजीके तीन आख्यान जो अपन् कर गये, या

पॅरामीटरपे अपन् देखें तो फेस्वॅल्युपे अपन्कु क्या दीख रह्यो हे के सर्गलीला जाने करी; गोपालदासजी जा तरहसु याकु समझ रहे हें, **''एणी प्रकारे सृष्टि द्विधा गुणमिश्रित चाली जाय. भक्तिमार्गी जीव स्वतन्तर केवळ भक्त न थाय''** ये आनन्दको उच्छलन हो रह्यो हे के चिंताको उच्छलन हो रह्यो हे? फेसवॅल्युपे आनन्दको उच्छलन यहां नरेट् नहीं हो रह्यो हे पर कोई चिंताको उच्छलन नरेट् हो रह्यो हे के मैंने दो कटाक्षसु दो सृष्टि पैदा करी उनमें एककु ऐसो कटाक्ष दियो हे के वो मायाकी तरफ आकर्षित हो गयो और एककु ऐसो कटाक्ष दियो हे के वो भक्तिकी तरफ आकर्षित हो गयो हे. अब बराबर क्लासिफिकेशन् कर दियो हे. वाके बाद भेलसेल हो गयो हे. वा भेलसेलकी चिन्ता हो रही हे के जब क्लासिफाई करके डिवाइड् किये तो पाछे मिक्स्ड् क्यों हो गये? चिन्ताके उच्छलनसु सर्गलीला वर्णन कर रहे हें के आनन्दके उच्छलनसु? ये एक मूलभूत प्रश्न सर्गलीलामें गोपालदासजीके सामने आवे हे. यदि सर्गलीला हे तो अपन्कु भी मनमें ये प्रश्न पैदा होनो चहिये के नहीं होनो चहिये?

(प्राथमिक दृष्टिसु चिंताको उच्छलन)

फेसवॅल्युपे जो दिखलाई दे रह्यो हे. ये जो चिन्ता हे वा चिन्ताके बारेमें भी थोड़ेसे नास्तिकवादके दृष्टिकोणसु देखें तो अपन् केह सकें के या तो ईश्वरकु अपने प्रोडक्शन्के बारेमें फुल नॉलेज् नहीं हती. जो माल प्रोड्युस् कियो हे वाकी डेस्टिनी क्या हे या वाकी कैसे युटिलिटी होयगी वाके बारेमें वाको कॅल्कुलेशन् नहीं हे और फ्ल्यूक्में वाने क्रियेट् कर दियो. और फिर अपन् कहें के काचु

कपाई गयु वैसे कछु 'काचुं कपाई गयुं', ऐसो भी लगे.

(अक्षरब्रह्मके दृष्टिकोणसु चिंताको उच्छलन नहीं हे)

पर इन सब बातन्को समाधान गोपालदासजीने बेसिक् दो बातन्के खुलासामें दियो हे. **व्यापकरूप अद्वैत ब्रह्म जे 'तेजोमय' कहेवाय. आर्यपंथ अधिकारी मुनिजन ते मांहे लय थाय. तेह थकी पुरुषोत्तम अळगा, लीला अचल विहारी.** अब यदि चिन्ता हो रही हे, दैवीसृष्टि और आसुरीसृष्टि के एक दूसरेमें मिक्स् या मर्ज हो जावेकी तो वो कौनकु हो रही हे? अक्षरब्रह्मकु हो रही हे के पुरुषोत्तमकु हो रही हे? ये अपन्कु बेसिक् सोचनो चहिये. अक्षरब्रह्मकु हो नहीं सके हे, वाको कारण क्या? क्योंके **व्यापकरूप अद्वैत ब्रह्म जे 'तेजोमय' कहेवाय. आर्यपंथ अधिकारी मुनिजन ते मांहे लय थाय.** वो तो व्यापक हे. जब अपन् केह रहे हें के व्यापक हे मतलब जो आसुरीसृष्टि हे वामें भी व्यापक हे; आसुरीसृष्टिके क्रियाकलापन्में भी व्यापक हे. जो दैवीसृष्टि हे उनमें भी वो प्रेज़ेन्ट् हे. दैवीसृष्टिके क्रियाकलापन्में भी व्यापक हे. वो जब दोनों जगह प्रेज़ेन्ट हे तो वाकु मिश्रण लगेगो ही नहीं.

मेरी सेल्फ्–अवेयरनेस् मेरे हाथमें मेरे पैरन्में मेरे पेटमें और मेरी पीठमें भी प्रेज़ेन्ट् हे. मेरी सेल्फ् अवेयरनेस् जब मेरी बॉडीके हर पार्टमें प्रेज़ेन्ट् हे, जैसे कल मैंने आपकु बतायो के मैंने एक लप्पड़ अपने गालपे मार दी वासु मोकु कोई तकलीफ हो रही हे क्या? क्यों नहीं तकलीफ हो रही हे? इन्सल्ट् फील् हो रह्यो हे क्या? ह्युमिलियेशन् हो रह्यो हे क्या? क्यों नहीं हो रह्यो हे?

क्योंके जा हाथसु मैंने लप्पड़ मारी वा हाथमें मेरी सेल्फ् अवेयरनेस् हे और जा गालपे लप्पड़ मारी वा गालमें भी सेल्फ् अवेयरनेस् हे. मैं तो अपने साथ इन्टरेक्ट् कर रह्यो हूं. कोई औरके साथ तो इन्टरेक्ट् कर नहीं रह्यो हूं. जो कल प्रश्न हतो के 'किसीका' अपराध करें तो अपराध हे ना; जब 'किसीका' हे ही नहीं तो अपराध क्या? अपने गालपे थप्पड़ मार्‌यो तो मैंने 'किसीका' अपराध क्या कियो? तो अक्षरब्रह्मके दृष्टिकोणसु तो ये चिन्ता हो नहीं सके.

(पुरुषोत्तमकी दृष्टिसु चिन्ता भी लीलात्मक)

अब रही चिन्ता ये पुरुषोत्तमके बारेमें. तो जा तरहसु पुरुषोत्तमकु डिस्क्राईब् कर रहे हें **ते थकी पुरुषोत्तम अळगा लीला अचल विहारी** वो जो भी काम कर रह्यो हे वो लीलामें ही कर रह्यो हे. अपनी लीलाके मूडमेंसु वो कभी भी चलायमान नहीं होवे हे तो यदि वो चिन्ता भी कर रह्यो हे तो कोई न कोई लीलामें ही कर रह्यो हे. या लिये फेसवॅल्युपे यद्यपि अपन्‌कु लगेगो के यहां आनन्दको उच्छलन नहीं हे. और चिन्ता भी कोई न कोई वाके आनन्दको उच्छलन हे. वालिये महाप्रभुजी आज्ञा करें हें **''चित्तोद्वेगं विधायापि हरिः यद्-यत् करिष्यति तथैव तस्य लीलेति मत्वा चिन्तां द्रुतं त्यजेत्.''** (नव.८) वो कभी खुद चिन्ता करे हे, कभी कोईमें चिन्ता पैदा करे हे, वो जब कर रह्यो हे तो लीलात्मक मूडमें कर रह्यो हे. वो आनन्दको उच्छलन वाको कभी चिंता रूपी लीलाके रूपमें भी हो सके हे, नहीं हो सके हे ऐसी बात नहीं हे. अपने यहां या बातकु रासपंचाध्यायीमें महाप्रभुजीने भली प्रकार डिस्कस्

कियो हे और ये कही के जा बखत ठाकुरजी रास खेलते खेलते छुप गये और गोपिकान्ने रोनो शुरु कियो तब गोपिकान्के मनके कोई अंधेरे कोनामें एक या तरहको भाव जाग्यो के सीताजीको जब हरण हो गयो तब रामचन्द्रजी तो एक–एक वृक्षसु पूछ–पूछके रोये हते. यहां हमकु छुपवेको चान्स् नहीं दियो और खुद छुप गये? चान्स् देते और हम छुप जाती और ठाकुरजी रोते तो और मजा आती या खेलमें के कृष्ण कैसे रो रह्यो हे!! वहांके खुलासामें महाप्रभुजीने एक ही बात बताई हे के रामकी लीला करते बख़त वहां रामको मूड थोड़ी देर रोवेको हतो. पर यहां ठाकुरजीको रोवेको मूड नहीं हे. आनन्द वा तरहसु उच्छलित होनो नहीं चाह रह्यो हे. या लिये ठाकुरजी वो एलाउ् नहीं कर रहे हें. तुमकु छुपवे नहीं दऊंगो. तुमकु यदि छुपवेकी इच्छा हे तो लो मैं छुप जाऊं. वहां महाप्रभुजीने ये खुलासा कियो हे.

(पुरुषकी संग्राहक लीला)

अपन् या बातको ध्यानसु समझ सके हें. ये जो लीलाको मूड हे, यामें सर्गलीला बताई गई हे वा सर्गलीलाकी पहली एक रिक्वायरमेन्ट् ये हे; जैसे मैंने पहले ही आपकु बतायो हतो के सर्गलीला करवेवालेकु पहले ही नाम दें. अपन् बोहोत सारे नाम दे रहे हें इन लीलान्के जो अलग अलग शेड्स् हें. जैसे कल मैंने ईंट, पत्थर, चूना, लोखनके सलिया, सीमेन्ट्, जमीन, मशीन वगैरह वगैरह की बात बताई जो मकान बनावेके लिये होवें हें. या अपन् यों समझ सकें हें के अपन्कु गार्डनिंग् करनी हे तो क्या करेंगे? जमीन पहले खोजेंगे; जमीन खोजवेके बाद वामें प्लान्ट्स् बीज सब खोजेंगे.

वो सब होवेके बाद खाद खोजेंगे. पानीसु सींचवेके लिये कोई सिस्टम् खोजेंगे चाहे वो झारीसु पिवायो जाय के पम्पसु पिवायो जाय, जैसे भी पिवायो जाय वाकु खोजेंगे. कछु मट्टीकु खोदवेको उपकरण खोजेंगे. ये संग्राह्य वस्तु हें वो खोजें तब तो जाके कछु काम हो सकेगो गार्डनिंग्को. प्रायोरिटी (base) बेसपे सारो रॉ–मटीरियल् हे जासु गार्डन् बनतो होय वो अपन्कु इकठ्ठो करनो पड़ेगो. तो पहली जो सर्गलीला हे, वाकु अपन् यों समझ सकें के वो पुरुषकी संग्राहकलीला हे. रॉ–मटीरियल्कु इकठ्ठो करवेकी. मैंने कल खिचड़ीकी भी बात बताई हती. जैसे अपन् घरमें खिचड़ी बनावें हें तो जिन–जिन चीजन्सु खिचड़ी बनती होयगी वाकु संग्रह तो करनो पड़ेगो. वाके बिना खिचड़ी कैसे बनेगी? जो रॉ–मटीरियल् अपन् इकठ्ठो करें हैं वो संग्राहक पुरुष हे. वाकी एक लीला हे. गोपालदासजीने बिल्कुल क्लीयर कट् टर्ममें जाकु अच्छी तरहसु; पुष्टिमार्गकी बात मैं नहीं कर रह्यो हूं, साकार ब्रह्मवाद अच्छी तरहसु समझमें नहीं आतो होय वो सोच नहीं सके **सपने नहीं व्यवहार.** वाकु या कन्सेप्टकु सपनेमें भी व्यवहार नहीं हो सकेगो के क्या बात केह गये. वा बातकु ध्यानसु देखो. गोपालदासजी एक बात केह रहे हें **श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीड़ा** संग्राहक कौन हे? स्वतन्त्रक्रीड़ा पुरुषोत्तम हे. जा बखत अपन् दो फ्रेज् आसपास धर रहे हें **श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीड़ा** और **लीला द्विजतनुधारी** लीला द्विजतनुधारीमें कोई तरहकी अस्वतन्त्रता आ रही हे.

(महाप्रभुजीकी लीला प्रमाण–परतन्त्र नहींके स्वतन्त्र)

ये वल्लभपंथीन्कु तो जुलाब लग जाये ऐसी बात हे. ये मैं

नहीं केह रह्यो हूं ये तो गोपालदासजी केह रहे हें. **श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीड़ा लीला द्विजतनुधारी** विसाविस् स्वतन्त्रक्रीड़ा. जो कि एक बड़ो प्रमाण हे के लीलार्थ द्विजतनुधारण करवेके बाद जो लीला होयगी वो स्वतन्त्र क्रीड़ा नहीं होयगी पर प्रमाणतन्त्रलीला होयगी. पूर्णपुरुष प्रमाणपंथा होयगो. जा तरहसु कृष्ण लीला करे हे; यदि अपन्कु गाली गलौचमें कहनो होय तो ऊधम करे हे (प्रभु), वा तरहके ऊधमकी अपेक्षा अपन् महाप्रभुजीसु नहीं रख सकें हें. चौपड़ कभी सजा दी महाप्रभुजीके सामने और पड़ पासा पौबाराह सत्रह या अठारह करते मिलें महाप्रभुजी. ऐसी स्वतन्त्रक्रीड़ा महाप्रभुजीके लिये संभव नहीं हे वो तो पुरुषोत्तमके लिये पॉसिबल् हे. क्योंके श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीड़ा हे. द्विजतनुधारण करवेके जो भी बन्धन आ रहे हें वो तो उनकु पालन करने पड़ेंगे ना! उतने अर्थमें वो स्वतन्त्रक्रीड़ा नहीं होके प्रमाणपरतन्त्रलीला हे.

अपन्कु आश्चर्य होवे के महाप्रभुजी तो साक्षात् पुरुषोत्तम हें. अरे भई साक्षात् पुरुषोत्तम हें तो वामें कौन ना पाड़े? वो साक्षात् पुरुषोत्तम हें के नहीं, इश्यु ये नहीं हे. महाप्रभुजी खुद ये आज्ञा कर रहे हें **''ब्राह्मण्यं काचिद् देवता. सा च उपनयनेन देहे समायाति''** (सुबो.२।१।३०) **''ब्राह्मण्यकर्मविरोधेन देहाद् अपयाति च.''** तो यदि ऐसो कोई काम महाप्रभुजी करें के जो ब्राह्मणलीला, द्विजतनु जो उनने धारण कियो हे वाको उलटो काम होय तो महाप्रभुजीके खुदके एडमीशन्के हिसाबसु महाप्रभुजी खुद द्विजतनु नहीं रह जायेंगे. तो लीला लीला नहीं रहके कछु और हो जायेगी. उनकु वो नियम तो बाय् कम्पल्शन् फॉलो करने पड़ेंगे जो द्विजके लिये प्रिसक्राईब् किये

भये हें. नहीं तो द्विजतनु ही नहीं रह जायगो. स्वयं महाप्रभुजी केह रहे हे द्विजतनु कितनी देर द्विजतनु हे? ब्राह्मण यदि ब्राह्मणकर्म कर रह्यो हे तो वो ब्राह्मण हे. यदि ब्राह्मणकर्म ब्राह्मणमें नहीं हे तो वामेंसु ब्राह्मण्य देवता सिधार जावें हें. जैसे हम गुसांईयें ठाकुरजीको प्रदर्शन करें, धन्धा करके कमाई करें तो वाकु शास्त्रमें कह्यो जाय के ऐसो करवेवालो ब्राह्मण नहीं हे, चाण्डाल हे. तो ब्राह्मण देवता तो सिधार गयो, हमारो अब द्विजतनु ही नहीं हे. द्विजके बेटा हो सकें.

संस्कृतमें बोहोत अच्छी एक कहावत हे के पंडितके बेटा हें मतलब मूर्ख हें. क्योंके खुद पंडित होते तो पंडितके बेटा कहवेकी जरूरत क्या हती? तो द्विजतनु होनो और द्विजसुत होनो वामें थोड़ो अन्तर हे. या रहस्यकु समझो.

लीला द्विजतनुधारीमें स्वतन्त्र नहीं हें महाप्रभुजी. जो उनने तनु धारण करी हे वा तनु धारणकी मर्यादाके अन्तर्गत वो नियमनमें बंधे भये हे और ये बात अपनकु जल्दीसु पता नहीं चले. पर अचानक महाप्रभुजीने पत्रावलम्बनके उपसंहारमें ये कही हे के **''न भयं तेन कर्तव्यं ब्राह्मणानाम् इयं गतिः. डिण्डिस्तु वादितो द्वारि विश्वेशस्य मयात्र हि. विद्वद्भिः सर्वथा श्राव्यं ते हि सन्मार्गरक्षकाः.''** (पत्रा.३८) अरे भई! तुम डरो मत. तुम भी ब्राह्मण हो और मैं भी ब्राह्मण हूं. शास्त्रचर्चामें भय काहेको? मैं ब्राह्मणकी तरह तुमकु चॅलेन्ज् दे रह्यो हूं क्योंके मैंने शास्त्र पढ़्यो हे. तुम ब्राह्मण हो तो मेरो चॅलेन्ज् स्वीकार करो. ये नगाड़ा मैंने मेरे सिद्धान्तको बजा दियो हे और वो भी विश्वेश्वर महादेवजीके दरवाजापे. न मैं डर रह्यो हूं और न

तुमसु भय एक्स्पेक्ट् कर रह्यो हूं. तो एक बात समझो के भले होंयगे पुरुषोत्तम पर उनकु ब्राह्मण्यको अभिमान कितनो ज्यादा हे? एकदम ब्राह्मणके टोन्में बोल रहे हें. ब्राह्मणकी बात केह रहे हें, ब्राह्मणन्कु चॅलेन्ज् दे रहे हें. कोई गामकु चॅलेन्ज् नहीं दे रहे हें. लीला द्विजतनुधारी होवेके कारण महाप्रभुजीने लीलार्थ वो अभिमान भी तो धारण कियो हे के नहीं कियो हे? पद उठाके देख लो. महाप्रभुजीके सारे पदन्में महाप्रभुजीके विप्र होवेकी प्रशंसा हर पदकार पहले कर रह्यो हे. महाप्रभुजीकी बधाईयां उठाके देख लो. सबमें विप्र, विप्र, विप्रकी प्रशंसा हे. क्योंके स्पष्ट ऐसे कह्यो हे के **''जन्मना जायते शूद्रः संस्कारद् द्विज उच्यते वेदाभ्यासाद् भवेद् विप्रः''** (ब्राह्मणोत्प.मा.१।१३) हरेक बच्चा जो पैदा भयो हे वो तो शूद्र ही पैदा होवे. **संस्काराद् द्विज उच्यते**. जब वाको जा वर्ण तरीकेको संस्कार होवे तब वो वा वर्णमें प्रवेश करे हे. ब्राह्मणसंस्कार कियो होय तो वो ब्राह्मण बने. **''जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते वेदाभ्यासात् भवेद् विप्रः''** और वो संस्कार करवेके बाद जा बखत वेदन्को अभ्यास करे तो वाके कारण वामें विप्रत्व आवे. अन्यथा द्विजत्व आवे विप्रत्व नहीं आवे. **''वेदाभ्यासाद् भवेद् विप्रो ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणः स्मृतः''** (अत्रि.स्मृ.१४१) ये तो आजकल कोई नहीं हे. जो ब्रह्मकु अच्छी तरहसु जाने वाकु ब्राह्मण कह्यो जाय. जो लाओ–लाओ ला–ला करे वो शास्त्रके हिसाबसु ब्राह्मण नहीं हे. वो कोई ब्राह्मणबेटा हो सके हे.

(लीला द्विजतनुधारीकी संग्राहकलीला)

लीलाको संग्राहक पुरुष कौन हे ? यदि वो अपन्कु देखनो हे

तो वाकी एक खूबसूरती देखनी पड़ेगी के कहांसु वाने रॉ-मटीरियल्को संग्रह कियो हे? कहां कियो हे? काहेसु कियो हे? और काहेके लिये कियो हे? इतनी आकांक्षायें अपन्कु पूरी करनी पड़ेंगी. अब अपन् समझ सकें के सर्गलीलामें रॉ-मटीरियल् वो दो तरहकी कटाक्षसु अवेलेबल कियो गयो हे. माने एक कटाक्षसु ऐसी सृष्टि करी के जामें जीव जो पैदा भये, वो भक्तिकी तरफ मुड़ गये. दूसरी कटाक्षसु ऐसी सृष्टि पैदा करी के जो जीव पैदा भये वो मायाकी तरफ मुड़ गये. संग्राहकने जो जीव संग्रह किये हें, वो कैसे किये हें? खुदके कटाक्षके द्वारा. दूसरेके कटाक्षके द्वारा नहीं. संग्रह करनो कहांसु हे? तो केह रहे हें के संग्रह खुदमेंसु करनो हे. खुदने जो एक रूप धारण कियो हे दैवीको और खुदने जो दूसरो रूप धारण कियो हे आसुरीको, वामेंसु दैवीजीवको पाछो संग्रह करनो हे. गीतामें भगवान् कहें हें **''दैवीसम्पद् विमोक्षाय निबन्धाय आसुरी मता:''**(भग.गीता.१६।५) या तरहसु संग्रह करनो हे. कौनकु संग्रह करनो हे, कहांसु संग्रह करनो हे? काहेसु संग्रह करनो हे? देखो यहां जाके बात पूरी साफ हो जायेगी के स्वतन्त्रक्रीड़ासु संग्रह नहीं करनो हे. यदि स्वतन्त्रक्रीड़ासु संग्रह करनो हतो तो महाप्रभुजीकी जरूरत ही नहीं हती. वाकु क्या देर लगे? जो **"एकोऽहं बहुस्यां प्रजायेय"** हे, इच्छा मात्रसु जो ब्रह्माण्ड पैदा कर सके. मछलीके टबमें दो मछली लड़ती होंय या नहीं भी लड़ती होंय, उनके बीचमें एक कांच रख दियो जाय. तो वो इधर उधर आ जा ही नहीं सकें. वाकु देर कितनी लगे संग्रह करवेमें, छांटवेमें? यदि वाकु संग्रह छुट्टे पाड़ने हें आसुरीजीवके और दैवीजीवके बीचमें एक डिवाईडर् रख दे और बात पत गई. अरे

छोटे–छोटे कॉन्ट्रेक्टर् रोड् डिवाईडर् रख दें तो आवेवाली गाड़ी आ रही हे, जावेवाली गाड़ी जा रही हे तो क्या वाकु इतनो भी ख्याल नहीं हे? पर वाकु स्वतन्त्रक्रीड़ासु नहीं करनो हे. अब क्यों नहीं करनो हे? तो कोई वाको मालिक हे क्या? स्वतन्त्रक्रीड़ा हे. अब वाकी इच्छा हो गई के लीला द्विजतनुधारी. आखो फॅसेट् देखो के सर्गलीला करवेको जो मोडस् ऑपरेन्डी हे, वाकु कितनी अच्छी तरहसु समझायो हे गोपालदासजीने के लीलाद्विजतनुधारी. वो पाछी कोई एक लीला करनो चाह रह्यो हे. मोकु अब पुष्टिजीवको स्वतन्त्रक्रीड़ामें संग्रह नहीं करनो हे, द्विजतनु धारण करके, **''कृष्णसेवा परं वीक्ष्य दम्भादिरहितं नरं श्रीभागवततत्त्वज्ञं भजेद् जिज्ञासुः आदरात्.''** (त.दी.नि.२।२२७) कोई एक ऐसो आकर्षण मेरी पर्सनालिटीमें आचार्यको प्रगट करके दिखानो हे के जा आकर्षणके कारण **मुख सुगंधे मोह्या अलिसकल ते आवी करे रे गुंजार**. स्वतन्त्रक्रीड़ासु नहीं करनो हे. ये वाक्तन्त्रलीलासु पुष्टिजीवन्को आकर्षण करनो हे. जो स्वरूपसु आकर्षण हतो, अब वाण्याकर्षण हे. वा बातकु गुसांईजीने सर्वोत्तममें बताई हे **''दयया निजमाहात्म्यं करिष्यन् प्रकटं हरिः. वाण्या यदा तदा स्वास्यं प्रादुर्भूतं चकार हि.''** (सर्वो.३) दयया; वाकु अब एक दयाकी लीला करवेकी इच्छा हो रही हे. ऐसी दया करो इनपे, इनकु मैंने एक–एक कटाक्ष दे देके इनको रोल् इनकु सौंप दियो. अब इनके साथ ऐसी लीला करो के वाणीसु कौन आ रह्यो हे? जो आ रह्यो हे वाकु बुलाओ, जो नहीं आ रह्यो हे वाकु स्वतन्त्रलीलासु बुलानो नहीं हे.

(पुरुषोत्तमकी स्वतन्त्रक्रीड़ाको प्रकार)

जैसे कंसकु जाके मार दियो. कंस केह रह्यो हतो के भई मत आओ मेरे यहां. तो बोले के नहीं आके ही मारूंगो. पूतना केह रही हती के हम तुमकु मारेंगे. तो बोले के तू क्या मारेगी चल मैं ही तोकु मार दूं. ये सब स्वतन्त्रक्रीड़ा हे. वो मारवे आई हे और भगवान्; (जाकी रही भावना जैसी. प्रभु मूरत तिन देखी तैसी) पूतनाकी भावना सच्ची क्यों नहीं कर रहे हें? अपने यहांको सिद्धान्त हे के **''यद्यद् धिया त उरुगाय विभावयन्ति तत्तद् वपुः प्रणयसे सदनुग्रहाय.''** (भाग.पुरा.३।९।११) पूतना बिचारी कितनी जेन्युइन् भावना करके आई हे! वाकु अपने मालिक कंसकु खुश करनो हे, कंसकु डर लग रह्यो हे. नमकहलाल हे बिचारी पूतना. अपने मालिककी नमकहरामी नहीं करनी हे. वाके लिये मालिक जासु डरतो होय तो वाकु खतम करनो हे. भगवान् केह रहे हें के भले तू खतम करवे आई हे पर मैं तोकु खतम कर दूंगो. ये हे स्वतन्त्रक्रीड़ा. कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं सामर्थ्य हे वामें. वो खतम होनो नहीं चाह रहे हें. जैसे रोनो नहीं चाह रहे हें, ऐसे ही कंस, पूतनाके हाथसु खतम होनो नहीं चाह रहे हें. पर व्याधके हाथसु पाछो? चल ऑलराईट्. तैंने तीर मार दियो तो वाकी चिन्ता तू क्यों करे हे? ये तो मैंने पहलेही नक्की कियो हतो के तेरे हाथसु तीर खानो हे. श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीड़ा, ये वाको स्वातन्त्र्य हे के कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं सर्व सामर्थ्य हे.

(सर्गलीलामें सर्गपुरुषकी माने महाप्रभुजीकी संग्राहकलीला या वाक्तन्त्रलीला)

वा स्वातन्त्र्यको प्रयोग या सर्गलीलामें नहीं करनो हे. या सर्गलीलामें रॉ–मटीरियल्को जासु संग्रह करनो हे; माने जो रॉ–मटीरियल् संग्रह करनो हे वा रॉ–मटीरियल्कु जासु ऑरगेनाईज़् करवानो हे, वो स्वतन्त्रक्रीड़ासु नहीं करवानो हे. **''वाण्या यदा तदा स्वास्यं प्रार्दुभूतं चकार हि.''** (सर्वो.स्तो.३) वो जो आयोजक पुरुष हे वो संग्राहकपुरुषकी लीला हे. सर्गपुरुष संग्राहक हे. रॉ–मटीरियल् भी प्रोवाईड् कर रह्यो हे. पुष्टिसृष्टिके जीव भी हें जिनको संग्रह करनो हे. कहांसु संग्रह करनो हे? चौदह लोकके ब्रह्माण्डमेंसु संग्रह करनो हे. कैसे संग्रह करनो हे? वाणीसु संग्रह करनो हे. स्वतन्त्र सामर्थ्यसु नहीं करनो हे. ये देखो वा संग्रहकी सारी आकांक्षान्की पूर्ति कैसे करी हे! ये संग्रह काहेके लिये करनो हे? पुष्टिमार्गमें तो हें ही वो, उनकु क्या पुष्टिमार्गीय बनानो हे? जो स्वतन्त्रक्रीड़ाके द्वारा सृष्टिके आदिमें पुष्टिजीव बनाये गये हें और जिनको वरण कर रख्यो हे पुष्टिमार्गकेलिये, उनकी बात नहीं हे. बात यहां उन पुष्टिजीवन्की हे के जिनको वाणीसु संग्रह करनो हे. यालिये गुसांईजी आज्ञा करें हें के **''तस्माच् छ्रीवल्लभाख्य! त्वदुदितवचनाद् अन्यथा रूपयन्ति भ्रान्ता ये ते निसर्गत्रिदशरिपुतया केवलान्धन्तमोगा:''** (वल्लभाष्टकम्–३) तुम्हारी वाणीसु जो तुमपे आकृष्ट नहीं हे, वा पुष्टिमार्गके लिये, भले वो दैवीजीव होंय वा स्वतन्त्रक्रीड़ाके फ्रेमवर्कमें, अपन्कु उनसु कैसी सावधानी बरतनी चहिये? **"भ्रान्ता ये ते निसर्गत्रिदशरिपुतया केवलान्धन्त–मोगा:"** (वहां) वो केवल अन्धतम नरकमें जावेवाले जीव हें. अपन्कु ऐसी सावधानी उनके साथ रखनी चहिये. विसर्गलीला जासु करवानी हे वाकेलिये कॉन्स्ट्रक्शन्में फेर बदलाव हो रह्यो हे. यहां स्वतन्त्रक्रीड़ाको कोई

रोल् नहीं हे. अपन् अपनी बेवकूफीसु समझें के यहां स्वतन्त्रक्रीड़ाको रोल् हे. यहां स्वतन्त्रक्रीड़ाको कछु भी रोल् नहीं हे. सारी लीला वाक्तन्त्रलीला हे. स्वतन्त्र नहीं हे. वाक्तन्त्रता भी कितनी अधिक हे. महाप्रभुजी एक ठिकाने नहीं पच्चीसन ठिकाने सौगन्ध खाके केह रहे हें **''अर्थोऽयमेव निखिलैरपि वेदवाक्यै रामायणै: सहित भारत पञ्चरात्रै:. अन्यैश्च शास्त्रवचनै: सह तत्त्वसूत्रै: निर्णीयते सहृदयं हरिणा सदैव.''** (त.दी.नि.१।१०४) **''लक्षणां नैव वक्ष्यामि न न्यूनाद् अन्यपूरणम्. आर्थिकं तु प्रवक्ष्यामि परोक्षकथनाद् ऋते.''** (सुबो.मं.६) **''ये शास्त्रार्थं कल्पयित्वा शब्दार्थं योजयन्तो महासाहसिका सद्भि: उपेक्ष्या:''** तुमने पहलेसु शास्त्रार्थकी कल्पना कर ली हे वाके हिसाबसु तुम शब्दार्थन्की कल्पना कर रहे हो. तुम तो क्रिमिनल् हो. ये सब बात क्यों केह रहे हें? क्योंके यहां जो सर्गलीला हे वो वाक्तन्त्रलीला हे. स्वतन्त्रलीला नहीं हे. कैसे संग्रह करनो हे सर्गलीलामें, कैसे विसर्गलीलाके लिये रॉ-मटीरियल्कु प्रोक्योर् करनो हे, वा सबकी प्रोसीज़र् बताई हे.

(सर्गपुरुषकी विसर्गमें आयोजकलीला)

ऐसे ही विसर्गपुरुष, आजकी तारीखमें अपन् वाकु आयोजक केह सकें, वा आयोजककी लीला हे. संग्राहकलीलामें मैंने आपकु समझा दियो के आनन्दको उच्छलन कैसे हे. वा उच्छलनकु लीला तरीके कैसे स्वीकारनो! ऐसे आयोजककी जो लीला हे माने ऑरगेनाईज़् करवेकु जो रॉ-मटीरियल् एकत्रित कियो वाकु ऑरगेनाईज़् भी तो करनो पड़ेगो ना! अन्ऑरगेनाईज़्ड् रूपमें तो कछु चलेगो नहीं. जब ऑरगेनाईज़् कर रहे हें वा बखत जो ऑरगेनाईज़र हे, जो

आयोजक हे वाकी लीलाकी मोडस् ऑपरेन्डी क्या हे? तो अपन् स्पष्ट देख सकें, जैसे एक आयोजककी तरह महाप्रभुजी खुद क्या केह रहे हें? **''अर्थं तस्य विवेचितुं न हि विभुः वैश्वानराद् वाक्पतेः अन्यः तत्र विधाय मानुषतनुं मां व्यासवत् श्रीपतिः. दत्त्वा आज्ञां च कृपावलोकनपटुः यस्माद् अतो मुदा गूढार्थं प्रकटीकरोमि बहुधा व्यासस्य विष्णोः प्रियम्.''** (सुबो.मं.५) न मोकु कछु लेनो हे और न मोकु कछु देनो हे. न मोकु नोबल् प्राईज़ लेनी हे, न मोकु शिष्यन्को गुरु बननो हे, मैं ये सब बात क्यों कर रह्यो हूं? **अर्थं तस्य विवेचितुं** ये उपनिषद् गीता ब्रह्मसूत्र भागवत, याकी विवेचनाके लिये भगवान्ने मोकु चुन्यो हे. अब मोकु मजा आ गई हे के मोकु चुन्यो हे. मोकु वो रोल् प्ले करनो चहिये. वाकी विवेचना मोकु करके बता देनी चहिये के भई याकी विवेचना ऐसी हे. या लिये महाप्रभुजी सबकु ब्रह्मसम्बन्ध नहीं देते हते, सबकु कंठी नहीं देते हते. क्योंके महाप्रभुजीकु चित्तमें न तो भ्रमणा हती के न अहंकार हतो के मैं जगद्गुरु हूं और जगत्को उद्धार करवेके लिये प्रगट भयो हूं. महाप्रभुजीको नगद सौदा ये हतो के **''मां व्यासवच्छ्रीपतिः''** मोकु यहां कोई डेलीगेशन्पे भेज्यो गयो हे के तुम मेरी वाणीको अर्थ करो. तुम वाक्पति हो. **मानुष तनुम्,** नाम विप्रतनु. मोकु विप्रतनु दिवाके उनने कही के ऑल्राईट् तुम शास्त्र पढ़ो. **''चारवेद षट् शास्त्र पढ़े महीना चारमें''**. जो आज्ञा हती वा आज्ञाकु कम्प्लीट् करवेके लिये महाप्रभुजीको कमिट्मेन्ट् कितनो ज्यादा हे? देखो, आयोजककी कमिट्मेन्ट् कितनी ज्यादा हे. वा आयोजक पुरुषकी विसर्गलीला हे. तो वो वाणीसु ही सब कछु करनो चाह रह्यो हे करके गोपालदासजी येही बात केह रहें हें के

पूर्णपुरुष प्रमाणपंथा व्याख्याता वेदान्त. ग्रंथ सर्वे रसरूप कीधां पोताने सिद्धान्त. विसर्गलीलाको पुरुष कैसे लीला कर रह्यो हे? और वा लीलाके तहत टाईम्‌मॅनेज्मेन्ट्‌को सवाल हे. सारो मसला टाईम्‌मॅनेज्मेन्ट्‌को हे. जब आपने भागवतानुक्रमणिका लिख दी, पुरुषोत्तमसहस्रनाम लिख दियो, जब आपने त्रिविधनामावली लिख दी, जब भागवततत्त्वार्थदीप निबन्ध लिख दियो, सुबोधिनी लिख दी तो भई एक बात एक तरहसु लिखो, अलग अलग काहेकु लिख रहे हो? वो लीलाको मूड्‌ उनकु कभी आ गयो के सारे शास्त्रन्‌को अर्थ खाली भगवान्‌के नाम बताके ही बता देनो हे. कभी मूड्‌ आ गयो के नहीं, नहीं; नाम बताके नहीं उनकु नमस्कार करके बता देनो हे. कभी उनको मूड आ गयो के नहीं नहीं **"शास्त्रे स्कन्धे प्रकरणे अध्याये वाक्ये पदे अक्षरे"** (त.दी.नि.३।१।२)में उनकु बांटके बतानो हे. जा तरहसु मूड आ गयो वा तरहसु बतायो ऐसो ही नहीं, खुदने बतायो वैसो ही नहीं पर अपने सेवकन्‌कु भी वैसो ही बता दियो. सूरदासजी आये तो उनकु भागवतानुक्रमणिका सुना दी. परमानन्ददासजी आये तो उनकु भी भागवतानुक्रमणिका सुना दी. कितनो क्रिमिनल्‌ वेस्टेज्‌ ऑफ्‌ टाईम्‌ हे? डू यू हेव सेन्स्‌ ऑफ टाईम्‌ मॅनेज्मेन्ट? यदि पूछें महाप्रभुजीसुं तो महाप्रभुजी क्या कहेंगे? अरे भई मैं यहां टाईम मॅनेज्मेन्ट्‌ करवेके लिये नहीं आयो हूं, लीला करवेके लिये आयो हूं. शास्त्रन्‌की व्याख्याकी लीला करवे आयो हूं. शास्त्रन्‌की व्याख्याके लिये मेरो आनन्द उच्छलित हो रह्यो हे. जा तरहसु उच्छलित हो रह्यो हे, वा तरहसु मैं व्याख्या कर रह्यो हूं.

जो भगवान्‌की लीला हे वाकु वो अपनो आउटलेट्‌ देनो चाह

रहे हें. और वो सन्तुष्ट नहीं हो रहे हें क्योंके आनन्द इतनो ज्यादा उच्छलित हो रह्यो हे के कोई एक तरहसु सन्तुष्ट नहीं भये वाकी ब्युटी हे के आखी सूक्ष्मटीका लिखी. वो सारीकी सारी खो गई. बोहोत छोटो फ्रॅग्मैन्ट मिले हे. वाके लिये रो भी नहीं रहे हें. मेरो जैसो होय तो दहाड़ मार मारके रोवे के खो गई, खो गई. पर भगवद्इच्छा हे तिरोहित भई तो भई. फिरसुं लिखनो शुरु कियो. ये कौनसो मूड हे? ये सीरियस् मूड नहीं हे, लीलाको मूड हे बस. मैं टेबल् टेनिस् ऐसे ही खेलतो हतो. सबसु कमजोर खिलाड़ी मैं. कोई मेरे साथ खेले नहीं. मैं जाके बैठ जातो. जब सब खेल चुकते और थक जाते तो मोकु बुलाते. रातके करीब साढ़ेबारह एक बजे. अब जाकु जितनी देर खेलनो होय उतनी देर खेले वो मेरे साथ. अपन एक्स्पर्ट प्लेयर् तो हते ही नहीं. पर उतनी देर बैठ्यो रहतो. मेरे लीलाको भाव हतो वामें. कोई चिन्ताकी बात नहीं हती और जासु भी खेलतो वासु हार भी जातो पाछो. वो कोई चिन्ताकी बात नहीं. हारवेको मोकु कभी दु:ख नहीं हतो और जीतवेकी न मोकु कभी अभिलाषा भई.

मेरे मनमें बस एक आनन्द हतो के टेबल् टॅनिस् खेलनी हे. लीलाको भाव कहीं भी प्रकट हो सके हे. वाकु उतनो सीरियस् लेवेकी जरूरत नहीं हे. तो एग्जॅक्ट्ली ठाकुरजीकी और महाप्रभुजीकी भी जो टेबल् टॅनिस् चल रही हे ना! तो वहां महाप्रभुजी याही आईडियासु बिराजे भये हें के कछु ड्रॉप् करनो होय तो ड्रॉप् करो पाछी फिर शुरु करेंगे. पाछी आज्ञा क्यों दी? वा आज्ञाकी तो मोकु मजा आ रही हे. एक बात सोचो. कितनी अनमॅनेजेबल् होयगी

बात? सब जगह घूमनो, सब जगह घूमवेमें इतने संदर्भ याद रखने, भेजा फ्राई हो जाये. नहीं टेन्शन् होती होय तो हो जाये के इतने सारे संदर्भ याद रखवेके के कौनने क्या कह्यो कहां कह्यो और फिर वाकु पाछो लिखवानो. वो यात्रा कोई आजकी तरह तो हती नहीं. कोई ट्रक् टॅम्पो चलती हती क्या साथमें? एक बिचारो वासुदेवदास छकड़ा चलतो हतो साथमें. वो वजन उठातो होयगो पर कितनो वजन उठा सकतो होयगो? कितने ग्रंथन्को वजन उठा सकतो होयगो? महाप्रभुजीको कितनो वजन उठातो होयगो? कछु तो लिमिटेशन् होयगी ना!

महाप्रभुजीके ग्रंथमें जा तरीकेके संदर्भ दिये गये हें, उतने सब संदर्भन्कु क्रॉस् चॅक् किये बिना! अपन् कहें के पुरुषोत्तम हते तो बाय् हार्ट् हते. बाई हार्ट् हते तो ऐसी लीला प्रकट करनो; वाकु लिखवेकी क्या जरूरत हती? परन्तु लिख रहे हें. कितनो सीरियसली लिख रहे हे?

माधव भट्ट काश्मीरीकु तीर लग गयो वापे भी यों मान रहे हें के कछु भगवल्लीला हो गई. शैयामें सुई रख दी होयगी तासु वाकु तीर लग गयो. ये एक लीलाको मूड हे. जा लीलाके मूडमें अपनो विप्रत्त्व प्रगट कर रहे हें **''न भयं तेन कर्तव्यं ब्राह्मणानाम् इयं गतिः.''** (पत्रा.३८) ब्रह्मकी गति हे. क्योंके **"वेदाभ्यासाद् भवेत् विप्रः"** वो ब्राह्मण हें या लिये. वाने जो संग्रह कियो हे वा संग्रहके आयोजककी लीला या तरीकेकी हे और वा आयोजककी लीलामें जो उनकी वाणीसु आयोजित हे वाहीकु तो वो आयोजित कर रहे

हें. जो स्वतन्त्रक्रीड़ामें आयोजित हे वाकु न तो कोई जातको आमन्त्रण हे, गूगलपे फेसबुकपे नेट सर्फिंगकी कोई भी साइटपे आमन्त्रण नहीं हे. जो उनकी वाणीसु **मुखसुगंधे अलि सकल मोह्या आवी करे रे गुंजार**. वाणी जिनकु छू रही हे बस वो आ रहे हें. **हळी मळीने चालिया चरणाट ज्यां निजधाम. नवरंग नागर प्रगटियां मन पूरवां बहु काम**. वो वाणीसु कछु हे और दूसरो वहां कछु भी प्रयास नहीं हे. आनन्दको उच्छलन क्योंके उनकु **''अन्यः तत्र विधाय मानुषतनुं मां व्यासवत् श्रीपतिः''** (वहां) स्वतन्त्रक्रीड़ा पुरुषोत्तमने एक प्रोजेक्ट सोंप्यो हे. वा प्रोजेक्ट्की उनकु मजा आ रही हे बस. एक तरहको एन्थ्युज़िआज़्म् आ गयो हे के बस मोकु या प्रोजेक्टकु पूरो करनो हे. वो आयोजककी लीला हे.

(विसर्गपुरुष/आयोजककी वाणीकी महत्ता)

वा आयोजककी लीलामें कौन संग्राह्य हें कैसे संग्राह्य हे, ये अपन्ने देख्यो के उनकी वाणीसु संग्राह्य हे. अपन्ने ये भी देख्यो के वा वाणीसु जो आ रह्यो हे; याहीलिये वार्ता पढ़ो तो स्पष्ट आवे के महाप्रभुजी गांवमें प्रवेश नहीं करते. गांवके बाहर बैठे रहते और फिर ना पाड़ते के कोईकु कहियो मत के मैं आयो हूं. क्योंके वाणीके कारण कौन आ रह्यो हे, वाहीको यहां स्वागत हे. दूसरेको स्वागत नहीं हे. अब ये जो वाणीपे इतनो भार हे वो काहेको भार हे **लीला द्विजतनु धारी**. वो लीलार्थ जो द्विजतनु धारण कियो हे वाके कारण या वाणीपे भार आ रह्यो हे. स्वतंत्रक्रीड़ा करवेवाले भगवान्को वाणीमें ऐसो कोई भार नहीं हे. कहके गये के आऊंगो पर आये ही नहीं. कोई भार ही नहीं हे. हल्की फुल्की वाणी हे.

क्योंके स्वतन्त्रक्रीड़ा हे. और यहां वाणीपे एक्स्ट्रा जोर हे क्योंके लीलार्थ वो रूप धारण कियो हे. ये आयोजककी लीला हे. वल्लभपंथीनूकु मिर्ची लग जाये, जुलाब लग जाये, सात–सात जन्म तक सुख नहीं पावें, श्राप लग जाये ऐसी बात, पर हे तो हे और गोपालदासजी वोही बात कर रहे हें.

(वाक्पति श्रीवल्लभके आनन्दके उच्छलनके कारण पुष्टिसंप्रदाय)

वाक्पति श्रीवल्लभ आयोजक हें, विसर्ग पुरुष हें. उनके आनन्दको उच्छलन हे. आनन्दके उच्छलनमें पुष्टिमार्गमेंसु पुष्टिसम्प्रदाय प्रगट भयो. विसर्ग भयो हे. वो जो पुष्टिमार्ग हतो वाकु पुष्टिसम्प्रदायके रूपमें ऑरगेनाईज़् कियो हे. पुष्टिमार्ग तो बोहोत लार्ज् स्केल्पे हतो. कितने लार्ज् स्केल्पे हतो? भागवतकु रेफर् करो तो पता चलेगी.

''ते नाधीतश्रुतिगणा नोपासितमहत्तमाः अव्रतातप्ततपसः सत्सङ्गाद् माम् उपागताः. केवलेन हि भावेन गोप्यो गावो नगा मृगाः येऽन्ये मूढधियो नागाः सिद्धा माम् ईयुः अञ्जसा.'' (भाग.पुरा. ११।१२।७–८) वो पुष्टिमार्ग हतो स्वतन्त्रक्रीड़ाको, वहां वो सब पुष्टिजीव हें और उन सबकु जो जैसो आसक्त हे वाकु वैसो पकड़ लियो हे. स्वतन्त्रक्रीड़ा होवेके कारण कोईकु एक फॉरमेट्सु नहीं पकड़्यो हे. वाकी स्वतन्त्रक्रीड़ाकी मोडस् ऑपरेन्डी हे. पर स्वतन्त्रक्रीड़ाकी मोडस् ऑपरेन्डी नहीं हे. ये मोडस् ऑपरेन्डी कैसी हे? वाणीसु पकड़वेकी हे. वो लीलात्मक उच्छलन हे उनको. उनमें कोई दूसरी सामर्थ्य नहीं होंयगी, ऐसी बात नहीं हे.

अरे आज अपन्कु इतने मन्दिर खोलने आवें हें तो क्या महाप्रभुजीकु मन्दिर खोलने नहीं आते होंयगे? ग्लोबलाईज़ेशन्के लेवल्पे अपन्कु इतनी हवेली खोलवेकी सूझ रही हें तो क्या उनकु हवेली खोलनी नहीं आती होंयगी? आती होंयगी. उनने भी पढ़्यो नहीं होयगो शास्त्र एम.बी.ए.को, तो भी जानते तो होंयगे ही!! क्यों हवेली नहीं खोली?

क्योंके उनकु जो पुष्टिको सम्प्रदाय पैदा करनो हतो वो या तरीकेको फॉल्स् इन्स्टिट्यूशन्लाईज्ड् फॉर्म् पैदा नहीं करनो हतो. पर हर घर पुष्टिसम्प्रदायमें जीवे लग जाय ऐसो सम्प्रदाय पैदा करनो हतो. कोई संस्थाके रूपमें नहीं पर व्यक्तिगत रूपमें. एप्रोच्में वहां बेसिक् अन्तर लीलाको हे. यदि आप हवेली खोल भी देते तो कौन उनकु रोक सकतो हतो? कोई रोक नहीं सकतो हतो. पर हवेली नहीं खोली. एक जो खोली वो भी दुःखी होके खोली के भगवान्की ऐसी विपरीत इच्छा लग रही हे तो क्या करें!! ''**तासों देवालयकी रीति राखनी यहां उचित हे**'' तो ऐसी उचित के आप वहांसु पधार ही गये, वहां फिर पधारे ही नहीं!! अडैल जाके बिराजे. अपन् समझ सकें हें या रहस्यकु के उनकु हवेली खोलवेमें दिलचस्पी हती ही नहीं.

(वाक्पतिकी लीलासु विरोधी धाक्पतिकी लीला)

अभी वो जन्मभूमिमें एक लेख आयो के ''लोग गलत सोच रहे हें के पुष्टिमार्गको प्रचार प्रसार नहीं हो रह्यो हे. ऑल् ओवर् वर्ल्डमें हवेली खोल खोलके पुष्टिमार्गको ग्लोबलाईज़ेशन् हो रह्यो

हे.'' वो कछु और लीला हे. वो वाक्पतिकी लीला नहीं हे, वो धाक्पतिकी लीला हे. सबकु धाक–धमकीसु हवेलीयें खुलवा देनी और फिर उनपे खोटी दादागिरि करनी. हमारे पास नहीं आओगे हवेलीमें तो स्वतन्त्रतया तुम्हारो भक्तिसु उद्धार ही नहीं होयगो. **भक्तिमार्गी जीव स्वतन्तर केवल भक्त न थाय.** वास्तवमें तो बातकु ध्यानसु समझो के पुष्टिमार्गी जीव स्वतन्तर छे. केवळ भक्त ज न थाय बीजुं बधुं थाय. पुष्टिमार्गीय जीवको स्वातन्त्र्य होय तो भक्त ज न थाय बाकी सब थाय. धन्धा करे, मठड़ी बेचे, मोहनथाल बेचे, ठाकुरजी बेचे, भक्ति बेचे, भगवान् बेचे, दक्षिणा बेचे, पोतानु सन्मान बेचे, बधु बेचे – केवल भक्त न थाय पुष्टिमार्गी. क्योंके जीव स्वतन्तर छे. अरे भई ऐसो अर्थ क्यों नहीं होवे? कारण बताओ?

यदि या वचनको प्रमाण हे तो ऐसो अर्थ भी होनो चहिये के पुष्टिमार्गी जीव स्वतन्तर केवल भक्त न थाय. **पुरुषोत्तमे वळी विचार्यु हवे प्रकार शो करिये? म्हारी सेवा अने कथा रस हवेलीमां भागवतसप्ताह करिये.** बस!! बात पती गई. क्योंके केवल भक्त थतु नथी एटले जे केवल भक्त न थाये एना माटे हवेलीमां भागवतसप्ताह करावी देवी. पुष्टिमार्गी जीव स्वतन्तर. ये अर्थ नहीं हे भई. ये लीलाकी मोडस् ऑपरेन्डी महाप्रभुजीकी नहीं हती. आपकी तो कोई दूसरे ही नेचर्की मोडस् ऑपरेन्डी हती.

(स्थापनको विवेक और अविवेक)

वाके बाद स्थानलीला; जैसे सर्गपुरुष, विसर्गपुरुष वैसे

स्थानपुरुषमें श्रीगुसांईजी आवे हें. जो उनने ऑरगेनाईज़् कियो वाको प्लेसमेन्ट् कहां कहां करनो? वाकी प्लेसिंग् कहां-कहां करनी? जैसे अपन्ने जमीन खरीद ली; प्लान्ट्स् खरीद लिये; गार्डनिंग्की सारी प्लानिंग् कर ली के कौनसे प्लान्टकु कहां लगानो, कौनके पासमें लगानो, कौनके पासमें नहीं लगानो, क्योंके अपन्कु जब ये पता नहीं होवे तो अक्सर क्या होवे के भलते प्लान्ट्के नीचे कोई भलतो प्लान्ट् लगा दो पर वो मर जातो होवे हे. इन प्लान्टन्के भी एक-दूसरेके साथ. जैसे लड़का लड़की ब्याहवें तो वाके जोड़ा मिलावें. वैसे कछु इनके जोड़ा मिलाने पड़ें. जोड़ा मिलें तो एक प्लान्ट् दूसरे प्लान्ट्कु अपने पास रखे. अन्यथा वाके कारण ही दूसरो प्लान्ट् बिचारो मर जाये.

मूल बात यामें समझवेकी हे के ब्लडग्रुप मिल्यो के ग्रह मिले के वार मिल्यो के नाम मिल्यो, ये सब तो इम्मटीरियल् हे. मूल मुद्दा ये के जहां तलक दोनोंको मेल मिले तो एक प्लान्ट् दूसरे प्लान्ट्के साथ रहवे हे, नहीं तो मर जातो होवे हे. कोई भी कारण नहीं होवे हों पर सिर्फ या कारणसु के वो या प्लान्ट्की और वा प्लान्ट्की थोड़ी ठनी भई हे या लिये वो दूसरो प्लान्ट् वाके कारण मर जाये. जो बागवानी करतो होय वाकु सेन्स् होनी चहिये के कौनसे प्लान्ट्कु कितनो पानी पिवानो चहिये. मैंने अपनी बात आप लोगन्कु बताई के केक्टस्को एग्जिबीशन् देखवे गयो और मेरे तो आनन्दको उच्छलन हो गयो और चार पांच तरहके केक्टस् उठा लायो और पुष्टिमार्गीय ढंगसु दे पानी और दे पानी, खूब पानी पिवायो. डेढ़ दो महीनामें सब केक्टस् गल-गलके खतम हो गये.

जैसे महाप्रभुजीकी बैठकजीमें झारी भरें ना! वो जल आरोगें वाके पहले दूसरी झारी तीसरी झारी. अरे ये कोई झारी पिला रहे हो? महाप्रभुजीको तो कोई पद नहीं हे अन्यथा तो इस्तीफा ही दे दे वा पदसु!

इतनी सारी झारी? लाईन लगी भई हे डेढ़सौ डेढ़सौ आदमीन्की यात्रामें के धरो झारी. अरे आदमी मर जाये इतनी झारी पी ले तो! ऐसे मेरे केक्टस् सब मर गये. पर याकु ध्यानसु समझो के याकी समझ होनी चहिये के जब अपन्ने जा प्लान्टकु स्थापित कियो हे तब वाको पोषण कैसे करनो? जो नदी किनाराके प्लान्ट् हें उनकु ज्यादा पानी चहिये. जो नदी किनारासु दूर रहवेवाले प्लान्ट् हें उनकु कम पानी चहिये. जो और दूर रहवेवाले हें उनकु और कम पानी चहिये. कछु इनडोर् प्लान्ट् होवें हें वो घरकी लाईटमें भी जीवित रहवें हें. कछु प्लान्ट् जिनकु घरमें रखो तो मर जावें हें. उनकु धूपमें बाहर रखनो ही पड़े. कछु प्लान्ट् ऐसे होवें हें के जिनकु धूपमें रखो तो मर जायें. तो वो सारी बातें स्थापना करके पोषण करवेकी जो सेन्स् हे वो पोषककी लीलामें प्रगट होनी चहिये. वो गुसांईजीने प्रगट की हे, कैसे? वो तो सब अपन् देखेंगे, वल्लभाख्यानको विषय हे. पर जाकु जहां प्लान्ट कियो हे वहां वाको पोषण स्थापन कहां करनो वो अपन्कु समझमें आनी चहिये. वो बराबर समझमें आवे तो उनको पोषण भविष्यमें हो सके हे और वो समझमें नहीं आवे तो उनको पोषण बराबर नहीं हो सकेगो. इन्डोर्को इन्डोर्में, आउट्डोर्को आउट्डोर्में, पानीवालेकु पानी ठीक पिलानो, जो पानी ज्यादा नहीं पीवे हे वाकु ज्यादा पानी नहीं

पिलानो. अपने यहांकी परिभाषामें समझनो होय तो जाकु सेवा पधरानी हे तो वाकु सेवा पधरानी, जाकु सेवा नहीं पधरानी होय तो वासों कहनो के **"तोसों सेवा नाहिं निभेगी ताते तोको अष्टाक्षर देत हों, ब्रह्मसम्बन्ध नाहि देत हों"**. पर यदि सबकु ब्रह्मसम्बन्धको पानी पिलाओगे तो नहीं मरतो होय तो मरे आदमी, क्योंके अब हम आ गयें हें ना गाममें तो ब्रह्मसम्बन्धको पानी पिलाये बिना नहीं मानेंगे. अरे मर जायगो वो बिचारो!!

ये स्वतन्त्रक्रीड़ा केवल भक्त न थाय. ये गलत बात अपनकु समझमें आ गई हे. ऐसे नहीं समझनो हे. स्थापन या तरहसु नहीं हो सके. स्थापन करनो हे **"तत्तन्मर्यादया स्थापनम्."** जाको जहां प्लेसमेन्ट् करनो हे वाको वहां प्लेसमेन्ट् होनो चहिये. वाको प्लेसमेन्ट् वाके नेचर्को विचार करके होनो चहिये. अपनी खोटी आदतन्के विचार करके नहीं. हमकु आदत पड़ गई के ब्रह्मसम्बन्ध दिये बिना तो मानेंगे नहीं. अरे भई! काहेकु दे रहो हो तुम ब्रह्मसम्बन्ध? जरूरत क्या हे? हमने ठाकुरजीकी सेवा करी हे तो दर्शन कराये बिना तो मानेंगे नहीं. ''कहत सबनसों आओ आओ. भेंट रूपया लाओ लाओ.'' ये क्या हे? यामें स्थापन नहीं हो रह्यो हे पर विस्थापन हो रह्यो हे. जिनकु महाप्रभुजीने पुष्टिसृष्टिमें आयोजित करके लेनो चाह्यो उनकु अपन् एक्स्पॅल् (बलपूर्वक दूर या सजा) कर रहे हें. कछु लीलाभास हो गयो. या लिये स्थापक पुरुषकी जो लीला हे वो श्रीविट्ठलकी हे. ये भी पाछी खुदके प्रयोजनसु होती तो बात अलग हती, गुसांईजीमें इतनो दम हे, महाप्रभुजीके पुत्र हें ना! खाली बीरबलने इतनी पूछी के आपके

घरको सालाना खर्चा कितनो? तो आपने कही के हमारे कामसु गयो. अब हम तेरे पास कभी नहीं आयेंगे. अरे तोकु हमारे घरकी चिन्ता करनी के जो उपदेश दे रहे हें वाकी चिन्ता करनी? और बीरबल वा बखत प्राईम्-मिनिस्टर् ऑफ् इन्डिया हतो हों. माईन्ड् इट्, जब प्राईम्-मिनिस्टर् ऑफ् इण्डिया गुसांईजीसू पूछ रह्यो हे के आपके घरको खर्चा कितनो और गुसांईजी कह रहे हें के भागो यहांसु! सुबह होते ही डेरा तम्बू लेके भाग गये वहांसु. रणछोड़रायकी जय कर गये. गुसांईजीकु लग्यो के ''काईं काचु कापी दीधुं छे अहियां मारी साथे. मैं समझ रह्यो हतो के बीरबल भक्त हे.'' एक पत्रमें गुसांईजीने लिख्यो हे के **''वीरवरस्य भूयसी प्रपत्तिः दृष्टा''** पर जब उनने ये देख्यो के घरको खर्चा कितनो पूछ रह्यो हे तो कही के भागो यहांसु, याकी भक्ति खतम भई. क्यों पूछ्यो? हम जा पर्पज़्सु आये हें वाके प्रश्न होवें के दूसरे दूसरे प्रश्न होवें? घर खर्चा कितनो हे? गाय कितनी हें? बजट् क्या हे तुम्हारे घरको? ढोकला कितनेमें बना रहे हो? फाफड़ा कितनेमें बना रहे हो? मठड़ी कितनेमें बन रही हे? मोहनथाल कितनेमें बन रह्यो हे? अरे तोकु क्या चिन्ता हे भई? आखो सॅटअप् बदल गयो हे.

(पोषकको लीलाभाव और लीलाभावकी महत्ता)

स्थानपुरुष हे वाकी लीलामें ये गट्स् हे के वो अपने उपरनामें नवनीतप्रियाजीकु पलना झुला सके. वाकी लीलामें ये गट्स् हे के गंगाजीके तटपे जितनी भी अपनी सम्पत्ति हती वो सब बांट दी. पब्लिक ट्रस्टसु ट्रस्ट करके वो स्कीम् नहीं बनाई के गोस्वामी श्रीविट्ठलनाथ चॅरिटेबल् ट्रस्ट् चलेगो हमारे नामपे और डोनेशन्

मांगेगे प.भ. सेठन्सूं. आप स्नान कर रहे हते और जितनी भी सम्पत्ति हती सोना चांदी सब बांट दी और खाली हाथ घर आ गये. इतनो गट्स् तो होनो चहिये! वो कब आ सके के जब लीलाभाव होय तब आवे. हर कामकु हर जिम्मेवारीकु धन्धाके एप्रोच्सु करनो और धन्धाकु भी पाछो लीलाके एप्रोच्सु करनो, दोनों पॉसिबिलिटी हें. धन्धा भी लीलाके एप्रोचसु हो सके. न कमानो न कछु खानो. बाप एक दुकान छोड़ गयो हे तो बैठे भये हें दुकानपे. माल नहीं बिक रह्यो हे तो भी बैठे हें मजासु. अखबार पढ़ रहे हें. जो माल खरीदवेवालो आयगो तो वाकु बेचेंगे. वो एक लीलाभाव हे. ऐसे बोहोत सारे धन्धा करवेवाले लोग हें जो लीलाभावसु धन्धा करें. और ऐसे बोहोत सारे धर्मवाले हें के जो धन्धाभावसु धर्म कर रहे हें. हर बातमें उनकु जमा खर्च बजट; उनको कॅल्क्युलेशन् हे के कितनो प्रोफिट् होयगो कितनो नुकसान होयगो. तो लीलाभावको एक मूल स्वरूप समझनो बोहोत जरूरी हे.

(स्थापितके मर्यादासु पोषण : पोषणलीला)

वाकेलिये स्थान माने जो आयोजित हे वाको "**तत्तन्मर्यादया स्थापनं;**" प्लेसमेन्ट् वा ठिकानेपे होनो चहिये. और वो श्रीगुसांईजीने कियो हे. और जाकु मर्यादासु स्थापित कियो हे वाकु वहां स्थापितमर्यादासु वाको पोषण करनो. पोषणको मतलब महाप्रभुजी बतावें हें के जहां वाकु स्थापित कियो हे वहां वाकी अभिवृद्धि होनी चहिये. जाकु कथाको उपदेश दियो हे, वामें कथासु वाकी भक्ति बढ़नी चहिये. जाकु शरणागतिको उपदेश दियो हे, वाको शरणागतिसु विवेक धैर्य आश्रय मजबूत होनो चहिये सृष्टिलीलाके

कॉरेस्पोन्डिंग्में. जाकु सेवाको उपदेश दियो वाकी सेवासु प्रेमासक्ति व्यसन बढ़नी चहिये. वाकी तनुवित्तजासेवन्सु मानसीसेवा तक वो पोहोंचे. वो सारी प्रोग्रामिंग् वाकी अभिवृद्धिकी होय तो पोषणलीला सच्ची लीला हे. यदि वाकी अभिवृद्धि नहीं हो रही हे तो कहीं न कहीं कछु न कछु कबाड़ा हो गयो हे. या पोषणलीलाकु आज अपन् देखवे जा रहे हैं. ये भूमिकाके रूपमें कहनो यालिये जरूरी हतो के हर जगह यामें कोई सीरियसनेस् हे, कोई ज्ञान इच्छा प्रयत्न या प्रयोजनको कोई रोल् हे. जो रोल् उनने एडोप्ट् कियो हे वा रोल्में उनकु आनन्द आ रह्यो हे. वो आनन्द उच्छलित हो रह्यो हे करके अन्डर्स्टॅन्डिंग्के डिज़ायरके एफर्ट्के सारे जो दूसरे मोटिवेशन् हें, वो नहीं हें ऐसी बात नहीं हे पर वो सब बॅकग्राउन्ड्में हें. फोरग्राउन्ड्में फीगर् तरीके जो क्रिया हो रही हे उनके भीतर आनन्दको उच्छलन हो रह्यो हे. यदि आनन्दको उच्छलन हो रह्यो हे, तो वो जो पोषण हे वो लीला हे. यदि आनन्दको उच्छलन नहीं हो रह्यो हे और पोषण करते बखत अपने केल्क्युलेशन् हो रहे हें के यदि हम इनको पोषण करेंगे तो टर्नमें ये हमारो पोषण करेंगे तो तो फिर स्वतन्त्रक्रीड़ासु भी कोई और भद्दी क्रीड़ा हो गई. ये रहस्य समझनो बोहोत जरूरी हे.

(चेष्टा और क्रिया को अन्तर)

सुबोधिनीमें आज्ञा कर रहे हें के **"अनायासेन हर्षात् क्रियमाणा चेष्टा इति लीला."** (सुबो.१।१।१७) यामें चेष्टाको मतलब उच्छलन पर कोशिश नहीं. चेष्टाको मतलब हे के जैसे अपन् कोईको भी एक्शन् करते भये वीडियो लें. क्रिकेट खेलते भये, दौड़ते भये,

साईकल् चलाते भये, खाते भये की वीडियो लें. तो वाकी हरेक फ्रेम्में चेष्टा दीख रही हे, एक्शन् नहीं दीख रह्यो हे. और वाकु जब अपन्ने मूवी बना दियो तो वो चेष्टा नहीं दीखके एक्शन् दीखे. तो चेष्टा और एक्शन् में बस इतनो ही अन्तर हे. जैसे थप्पड़ मारवेके लिये मोकु हाथ उठानो पड़ेगो. ये चेष्टा हे. अब ऐसे ही हाथ रखके कोई कहे के थप्पड़ मार दो तो थप्पड़ लगेगी कैसे? थप्पड़ मारवेके लिये हाथकु थोड़ो तो उठनो पड़ेगो ना? वो हाथ उठानो चेष्टा हे और उठे भये हाथकु फटसु मार देनो एक्शन् हे. तो हर एक्शन्को अपन् माईक्रो एनेलिसिस् करें तो वामें अलग अलग चेष्टायें हें. वाको भी अपन्ने फोटोग्राफ् पाड़ लियो तो चेष्टा दीखेगी. कछु भी पता नहीं चलेगो. यदि गालपे थप्पड़ पड़ रही हे और वाकु आपने स्टिल् फोटोग्राफ पाड़्यो तो वो कोई थप्पड़ हे के कोईने हाथ लगा रख्यो हे प्रेमसु? कैसे पता चलेगी? वो तो एक्शन्में पता चले. चेष्टामें परिणाम नहीं आवे. **"अनायासेन हर्षात् क्रियमाणा चेष्टा."** चेष्टा एक्शन् नहीं हे. चेष्टा तो खाली एक पोज़ हे. जैसे लड़वेके पहले अपन् ये पोज़ लेवे हें वो चेष्टा हे. चेष्टा अपने आपमें एक पोज़ हे. जा पोज़कु फिर एक्शन्में पूरो कियो जानो हे. व्यापार क्रियामें जाको कल्मिनेशन् होनो हे. कोई भी चेष्टाको अल्टीमेट् कल्मिनेशन् व्यापार या क्रियामें हो जाय हे. वो चेष्टा काहेसु पैदा भई हे? जैसे दोस्त आयो तो हर्षमें अपने आप हाथ उठ जाय. अब क्या पता के ये हाथ उठके करेगो क्या? करेगो क्या अपन्कु कछु पता नहीं हे.

रसिकरायजीकी बेटीके ब्याहमें मैं गयो, हम लोग वरपक्षसु

हते. बेटीजीके कन्यापक्षमें ब्रजरमणलालजी मथुरावाले बैठे भये हते. तो वरपक्षवाले आवें तो कन्यापक्षवाले सब गले मिलें ना! वो गले मिलवेके लिये आये तो मैं समझ्यो के गले मिलवे आये हें. तो उनने उठाके मोकु रख दियो, ये दिखावेके लिये के मैं जब चाहूं तुमकु कुश्तीमें पछाड़ सकूं. मैंने कही "अरे भई! ब्याह तो हो जावे दो, घरकी लड़कीको ब्याह हे." अब वो पहलवान हते सो मोकु उठा लियो. अब मैं तो समझ्यो के गले मिलवे आये पर गले नहीं मिले, आते ही उठा लियो. सबन्ने तालियां बजा दी के देख लो उठालियो ना श्याममनोहरजीकु, अब पटकवेमें कितनी देर हे! अब वो चेष्टा तो गले मिलवेकी हती और एक्शन् कछु भलतो ही हो गयो.

वा बखत बड़ी मजेदार बात भई के रसिकरायजीने विनती करी के महाराज ये सब बात आप मथुरा और बम्बई में जाके करियो. बादमें तो रासलीलाको श्लोक बोले **"बाहुप्रसारपरिरम्भकरालकोरु"** (भाग.पुरा.१०।३०।४६) वो सब करो. ब्रजेशकुमारजी भाग गये बिचारे के "अरे यार! क्या बोल रहे हो!!" एक बात ध्यानसु समझवेकी हे के चेष्टा तो कछु भी हो सके हे. मैंने अभी कार्ल सेगान्को कोटेशन् वामें दियो हे "कोईकु मारवेके लिये उठ्यो भयो पंजा या दोस्तके लिये उठ्यो भयो पंजा – वा पंजाको उठवेको जो मोडस् हे वो एक जैसो ही हे पर दोस्तके लिये वो प्रेमको इजहार होवे हे और शत्रुके लिये वो हिंसाको इजहार होवे हे." अब वो उठ्यो भयो पंजा चेष्टा हे. जब वाकु इम्प्लिमेन्ट्रेशन् होवे तब वो क्रिया या व्यापार हो जाये हे. तासों **"अनायासेन हर्षात् क्रियमाणा**

चेष्टा” लीला होवे हे.

एक बात ध्यानसु देखो यामें. मैंने बॅकग्राउन्ड् तो इन सर्ग विसर्ग स्थान के कॉन्टेक्स्ट्में समझावेको प्रयास कियो. यहां जो पुष्टिसृष्टिको पोषण करनो हे वा पोषणमें यहां कौनसी लीला वर्णित हो रही हे? भगवन्नामको भगवद्रूपको प्रदान करनो. भगवत्कर्मको उपदेश करनो. और वामें आते भये विघ्नन्कु कैसे वारण करनो माने पॉज़िटिव् साईड्में और नॅगेटिव् साईड्में, वामें कॅअर् लेनी और प्रोब्लेम्स् कैसे सॉल्व् करनी? पर्टिक्युलरली ये गुसांईजीके पोषकलीलापुरुषके कॅरियर् तरीके. उनको कॅरियर् क्या हे?

सीधी बात हे यामें **ते पद वंदु श्रीवल्लभनंदजी, त्रिभुवनमंगल परमानंदजी, सकल जीवनो टाळयो द्वंद्वजी जगमां व्याप्यो मुखमकरंदजी**. या मंगलाचरणमें त्रिभुवनमंगल हें. उनकु वंदन करनो परमानंदरूप हें वगैरह वगैरह. उनको वोही कॅरी फॉरवर्ड होतो आ रह्यो हे पुरुषोत्तमकी क्वालिटीको, **“सर्ववेदान्तप्रत्ययम्”** कु यहां आलम्बन बना रहे हें. पर एक स्पेसिफिक् बात यहां केह रहे हें के **सकल जीवनो टाळयो द्वंदजी** ये द्वंद कौनसे? कोईको व्यापार नहीं चलतो हतो तो वाकु कॅपिटल् लोन् दिवाई? ऐसो द्वंद गुसांईजीने दूर नहीं कियो. कोई सामूहिक लग्नमहोत्सव भी नहीं कियो. जो पुष्टिमार्गीय लाइफस्टाईल्कु जीवेमें जीवन्के जो भी दुःख हें, उन दुःखन्कु कैसे दूर करनो? पुष्टिमार्गीय लाइफस्टाईल्कु जीवेमें दुःखद्वन्द क्या हें? उन द्वन्दन्कु कैसे दूर करनो? और उनकु कैसे दूर कियो? **जगमां व्याप्यो मुखमकरंदजी**. सॉल्युशन् बतायो पाछो, वाक्पतिके

पुत्र हें. सो अपने मुखके मकरंदकी सुगंधसु उनने वो सॉल्युशन् देवेको प्रयास कियो हे. सो दुःखनिवर्तक और सुखप्रापक. माने कन्सोलेशन् ऐसो दियो हे के जाके कारण उनकु सुख हो रह्यो हे. या तरीकेको ये मंगलाचरण हे.

पर यामें सबसु महत्त्वपूर्ण बात जो गोपालदासजी केह रहे हें **सुखद वंदु श्रीवल्लभ सुतनां पदांबुज सुकुमार, निगमरहस्य विचार कीधो सकलजन निस्तार.** ये बोहोत महत्त्वपूर्ण बात केह रहे हें के पोषणके लिये निगमरहस्यको विचार उनने कियो.

(महाप्रभुजी और गुसांईजी में भेद लीलाको)

हमारे दादाजी गुसांईजीके बोहोत ज्यादा भक्त हते. अक्सर जोशमें आके ऐसे कहते के ''मैं प्रभुचरणको भडूची हूं.'' उनको ऐसो भाव हतो. वा विषयमें मोकु कछु ज्यादा नहीं कहनो हे. पर एक बात ध्यानसु समझो के वो प्रभुचरणके भडूची होवेके कारण दादाजीके दीमागमें एक आर्ग्युमेन्ट् घूमती रहती और वो आर्ग्युमेन्ट् ये हती के महाप्रभुजी दैवोद्धारप्रयत्नात्मा हें और गुसांईजी सर्वोद्धारप्रयत्नात्मा हें. महाप्रभुजीको नाम सर्वोत्तमजीमें दैवोद्धार आवे और गुसांईजीको नाम सर्वोद्धार आवे. और बात यहां ही नहीं रुकती हती. दादाजीके उपदेशन्में और भावन्की अभिव्यक्तिमें, बात यहां तक जाती हती के महाप्रभुजीने पठानन्कु, मुगलन्कु, अपने सेवक नहीं बनाये. गुसांईजीकी वार्तामें ये सब सेवक बने हें. तो गुसांईजीने थोड़ी अपनी रेन्ज् बढ़ाई हे. ऐसे दादाजीकु फील् होतो हतो. ऐसे दादाजी कहते ''**किरात-हूणान्ध्र-पुलिन्द-पुल्कसा आभीर-कङ्का-यवनाः खसादयः, येऽन्ये च पापा यदपाश्रयाश्रयाः शुध्यन्ति तस्मै**

प्रभविष्णवे नमः.'' (भाग.पुरा.२।४।१८) मेरो व्यक्तिगत या बारेमें विचार ये हे के या तरीकेको विभाजन करवेकी कोई आवश्यकता हे ही नहीं. क्योंके गुसांईजीने जो कछु भी कियो हे वो जो महाप्रभुजीने इन्स्ट्रक्शन् दिये हें वाकु ही इम्प्लीमेन्ट् कियो हे. कोई भी ऐसो काम नहीं कियो हे के जो महाप्रभुजीके इन्स्ट्रक्शन्स्के विरुद्ध जातो होय. महाप्रभुजीने नहीं कियो तो वामें घबरावेकी कोई बात नहीं हे. क्योंके वाकु इतनो सीरियस् नहीं लेनो चहिये. लीलाभावसु लेनो चहिये. उनने नहीं कियो पर उनके उपदेशमें स्कोप् तो हे के ''**किरात–हूणान्ध्र–पुलिन्द–पुल्कसा आभीर–कङ्का–यवनाः खसादयः**'' की टीका अपन् पढ़के देखें तो क्लीयरकट् पता चले. और महाप्रभुजीने भी जैसे माधवदासके लिये पूछी तो सबन्ने फरियाद करी के याकी वेश्यासु बोहोत आसक्ति हे. महाप्रभुजीने भी दो बखत घुड़की लगाके पूछी ''क्यों रे तू वेश्यासु आसक्त हे?'' तो वाने कही के ''हां महाराज आसक्त हूं.'' तो आपने कही के ''ले जा कंठी.'' सबन्ने कही के ''ये तो वेश्यामें आसक्त हे तो याकु कंठी दी कैसे?'' आपश्रीने कही के ''याको आसक्तिको स्वभाव हे यालिये कंठी दी हे. प्रभुकु याकी आसक्तिकु वेश्यामेंसु अपनेमें मोड़वेमें कितनी देर लगेगी?'' महाप्रभुजीकु वाकी गणना हती. अब एक बात ध्यानसु समझो के वेश्यामें यदि कोई आसक्त हे तो वो तो वैसो ही हे जैसे ''**किरात–हूणान्ध्र–पुलिन्द–पुल्कसा आभीर–कङ्का–यवनाः**'' वामें फर्क क्या पड़्यो? अपने वर्णाश्रमके जो पॅरामीटर्स हें वाके हिसाबसु सोचें तो कोई फर्क नहीं हे. तो क्यों उनने सर्वोद्धार नहीं कियो हे? महाप्रभुजीने भी सर्वोद्धार कियो हे. यदि गुसांईजीने सर्वोद्धार कियो हे तो कोई ऐसी बात नहीं करी हे

के जो महाप्रभुजीके फ्रेमवर्क्में नहीं आती होय. उनने वाहीको इम्प्लीमेन्टेशन् कियो हे. तो मैं या दृष्टिकोणसु महाप्रभुजी और गुसांईजी में भेद नहीं देखूं हूं. कई लोगन्में महाप्रभुजी गुसांईजी में भेद पाड़वेकी खोटी आदत होवे हे. मोकु तो कोई भी दृष्टिकोणसु महाप्रभुजी गुसांईजी में कोई भी भेद दिखलाई नहीं दे हे.

या तरीकेको मेरो पूर्वाग्रह हे. मेरो अपनो एक निश्चित ख्याल हे के इतनी बात तो सच हे के गुसांईजीमें थोड़ी ब्रजकी संस्कृति हती. महाप्रभुजीमें थोड़ी दक्षिणकी संस्कृति हती. वो तो जा वातावरणमें बिराजें वा वातावरणकी संस्कृति आ जानी लाजमी हे. महाप्रभुजी गाली भी दें तो ऐसी सधी सधाई गाली दें के तिलमिलावेवालो तिलमिला जाये और वाकु पता ही नहीं चले के गाली देवेवालेने गाली दी. और **''बोलन्त हेला वचनन्त गारी''** ये ब्रजको कल्चर् हे सो गुसांईजी मुंह भर–भरके गाली दें. और जहां तक मेरी अपनी चॉइस् हे मैं भी हर बखत ओपन् रहूं के जब चुभती गाली देनी होय तो चुभती गाली दऊं और जब मुंह भरके गाली देनी होय तो वो भी दऊं. अरे भई द्वेष होय तो झगड़ाकी बात हे. जाकु जो गाली देनी होय उतनी गाली दो, जितनी गाली खानी होय तो खा लो, वामें क्या घबरावेकी बात हे? तो थोड़ो ब्रजको कल्चर् मैं भी रॅलिश् करूं हूं, नहीं करूं हूं ऐसी बात नहीं हे. गुसांईजी जब गाली दें हें तो मोकु बड़ो मजा आवे हे. मोकु ऐसो नहीं लगे के गुसांईजी गाली दें हें तो वो कोई लोअर् ग्रेड्के चिन्तक हें! और महाप्रभुजी गाली नहीं दे रहे हें करके कोई हायर् ग्रेड्के थिन्कर् हें!

बोहोत सारे शास्त्री, बोहोत सारे क्रिटिक् लोग पिता-पुत्रकी स्टाईल्में भेद करें हें. पर मेरे मनमें ये सब टुच्चे भेद हें. क्योंके मैं इन दोनों बातन्कु, गाली देनो और गाली नहीं देनो, लीलाभावसु लऊं. मैं तो यहां तक कहूं के कोईकु मेरे साथ गाली खावेको कोम्पीटीशन् करनो होय तो वो भी कर ले. एक गाली मैं दऊं एक गाली वो दे. जो आखिर तक गाली देतो रहे वो जीते, चल. मोकु गाली देवेमें, लेवेमें या खावेमें कोई संकोच नहीं हे. वा बारेमें ब्रजकी कल्चर् मेरेमें एकदम प्लान्टेड् हे. पर मैं ये बात जानूं के महाप्रभुजीकी भाषा थोड़ी सोफिस्टीकेटेड् हे. गाली-गलौचवाली लॅन्ग्वेज् नहीं हे. गुसांईजीकी गाली-गलौचवाली भाषा हे. ठाकुरजी भी ब्रजके हें तो काहेकु अपन्कु ब्रजकी कल्चर् नहीं अपनानी! जहां तक वाणीको सवाल हे वाके अलावा दोनोंमें बेसिक् कोई अन्तर नहीं हे. गुसाँईजी एकदम केह दें हें और महाप्रभुजी वाकु ढाक-ढाकके कहें हें. ठीक हे ये तो अपनो-अपनो नेचर् हे. जाकु जैसो बोलनो होय वो बोले वामें मॅटर् इतनो सीरियस् मोकु नहीं लगे.

(निगमरहस्यमें रह्यो भयो द्वन्द्व)

पर **निगमरहस्य विचार कीधो** ये जो निगमको रहस्य हे, वो क्या हे? ये बात ध्यानसु समझनी या तबक्कापे बोहोत जरूरी हे. अपने यहां जबसु ब्रह्माजीके सामने भगवान्ने निगमकु प्रगट कियो, तबसु लेके गुसांईजीके काल तक कहनी तो गलत बात हे, आज-तकके कालमें अपनी दोनों तरहकी फीलिंग् निगमके बारेमें रही हे. निगम मानवेवालेन्की बात कर रह्यो हूं. निगमकु रिफ्युट् (न माननेवाले) करवेवालेन्की बात नहीं कर रह्यो हूं. या बातकु खास

ध्यानसु समझियो. जो निगमकु प्रमाण माने हें, वो भी और या लिस्ट्में निगमकु प्रगट करवेवाले ऋषि भी शामिल हें, जिनने निगम प्रगट कियो हे, ऋषियें शामिल हें इतनो ही नहीं, भगवान् खुद शामिल हें. गीतामें एक बाजु केह रहे हें के **''तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुम् इह अर्हसि''** (भग.गीता.१६।२४) एक बाजु कह रहे हें के कर्मको अक्षरब्रह्मसु प्रागट्य हे. **''कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्म अक्षर समुद्भवम्.''** (भग.गीता.३।१५) और खुद कह रहे हें के अनादिनिधिना वाणी मेरे रूपमें हे और फिर खुद ही कह रहे हें के **''निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन''** (भग.गीता.२।४५) **वेदवादरता: पार्थ:''** (भग.गीता.२।४२) खुदही वेदकु प्रोमोट् कर रहे हें, खुद ही वेदकु गाली दे रहे हें. अपने यहां ये भी रह्यो हे.

कालीदास जाने बौद्धधर्मके जबरदस्त प्रचारके बाद फिरसु अपने काव्यके दम–खमसु वैदिकधर्मकु फिरसु स्थापित कियो. कालीदासको एक बोहोत बड़ो रोल् हे, जो लोग समझें नहीं हें. कालीदासने कोई धर्मको उपदेश नहीं दियो. वाने कोई शास्त्रार्थ नहीं किये. बौद्धन्के साथ टकरायो हतो गरीब. बौद्धन्कु गाली भी तो महाप्रभुजीके स्टाईलमें दी. **''दिङनागानां पथि परिहरन् स्थूलहस्तावलेपान्''** वो दिङनाग पागल हाथीके जैसो हे. वाको रास्ता अवॉईड् करियो. वाने एक 'हस्तावलम्ब' ग्रंथ लिख्यो हतो. सो कालीदास बद्दलकु केह रह्यो हे. ''देख, तू जा रह्यो हे तो बीचमें वो दिङनागको रेसीडेन्शियल् एरिया आवे हे. वा रस्ताकु अवोईड् करियो, बाय्पास् कर जइयो. वा दिङनागकु व्यर्थमें झगड़वेकी आदत हे.'' आदमीकु

नहीं पर बद्दलकु समझा रह्यो हे के ''व्यर्थमें तोकु हाथी समझके तेरेसु झगड़ा करवे आयगो. तोकु सूंडसु मारेगो तो फायदा क्या होयगो वा रास्तामें जावेसु? समय खराब होयगो. वा रस्ताकु तू अवॉईड् करियो.'' कालीदास टकरायो हतो बौद्धन्सु. वो कथा एक अलग कथा हे. गाली भी दे तो वा तरीकेकी के हाथी कहके के बोहोत घमण्डी हें, झगड़ा करें हें. पर कालीदासको पॉज़िटिव् रोल् हे. वाने रघुवंश कुमारसंभव काव्यके द्वारा अपनी पूरी वैदिक कल्चरकु इतनो पॉप्युलराईज् कियो, इतनो प्रोमोट कियो के अपन् वाकु कवि करके डीग्रेड् करें पर सचमें अपन् वाके काव्यके कारण न जाने कितने लोग हते के जिनकु वैदिकधर्मके बारेमें एप्रिसियेशन्को भाव आयो होयगो. अपन् वैसे समझ सकें के जैसे वार्तान्के कारण आज अपनो सम्प्रदाय कितने लोगन्कु पता हे वैसे ही. जो शायद शास्त्र पढ़वेसु पॉसिबल् नहीं हतो पर कालीदासको काव्य पढ़वेसु वैदिकधर्मके प्रति उनकु एप्रीसियेशन्को भाव आयो. कालीदासको बोहोत बड़ो कॉन्ट्रीब्युशन् हे जो के लोगन्के निगाहमें नहीं हे. वा तरहसु कालीदासकु पढ़े तो सचमुचमें अपन्कु आश्चर्य आवे के वाने काव्यके माध्यमसु वैदिकधर्मके जितने भी फाईन् पॉइन्ट्स् हें उनकु कैसे इलस्ट्रेट् किये हें! अपनी लाईफस्टाईल्, एम्बीशन्, पुरुषार्थव्यवस्था क्या हे? अभी मैंने पुरुषार्थ व्यवस्थाको ग्रंथ प्रकट कियो, पर मैं एक सच्ची बात बताऊं के वाको सोर्स् कालीदास हे. वो बात सबसु पहले कालीदासकु सूझी हे. ''**शैशवे अभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयेषुणां वार्धक्ये मुनिवृत्तीनां योगेन अन्ते तनु त्यजाम्.**'' (रघु.वं.१।८) वो अपनी लाईफ्स्टाइल् हती. हर जगह कालीदासको अनुपम रोल् हे. कालीदास वेदकु इतनो प्रोमोट् कर

रह्यो हे और पाछे यों भी कहे हे के ये सुन्दर नायिका तो खूबसूरत इतनी हें के वेद पढ़ पढ़के बुद्धिजढ़ ब्रह्मा ऐसी खूबसूरतीकु पैदा नहीं कर सके. वेद पढ़वेवाले बुद्धिजढ़ होवें, ये अपन् कहें के बौद्ध लोग कहें? कोई नायिकाकी खूबसूरतीको वर्णन करते–करते वो यों कह रह्यो हे के याकी खूबसूरती ब्रह्माकी क्रियेशन् नहीं हे ब्रह्माकी कोई एक्स्ट्रा क्रियेशन् हे. क्योंके ब्रह्मा बिचारो तो वेद पढ़–पढ़के इतनो मूरख हो गयो हे के वामें अकल ही नहीं होयगी के खूबसूरती होवे क्या हे?

क्या चक्कर हे कछु समझमें नहीं आवे के हरेकको वेदके साथ झगड़ा हे. ईवन् भगवान्को झगड़ा हे तो हम कौन होवें हें. भगवान् भी ये झगड़ा कर रहे हें. जब भगवान् ऐसो झगड़ा करें तो आजकलके इतिहासकार लोग यों कहें हें ये कृष्ण बादमें भये और कृष्ण हते ही नहीं और कृष्ण तो आभीरन ग्वालन्के कोई हीरो हते. उनकु बादमें भगवान्के रूपमें प्रोमोट् कियो गयो. खुद वेदके ऋषियें वेदके बारेमें ऐसे कह रहे हें. एक बाजु कह रहे हें के ये अनादि ब्रह्म हे जो के हमारे भीतर प्रगट भयो हे. पाछे फिर निन्दा करें हें के वेद क्या हे ये तो जड़ वस्तु हे. वेदसु तो तत्त्वको ज्ञान ही नहीं हो सके. खुद ऋषियें ऐसो कह रहे हें. *अपन् जो तैत्तिरीयोपनिषद्को पाठ करें तो अच्छी तरहसु जाने हें – **''यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह''**(तैत्ति.उप.२।४।५) **''अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं''** वाणीसु तो बोल्यो ही नहीं जा सके. तो भई बोल काहेकु रहे हो?

***''ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः यः तद् न वेद स किम् ऋचा करिष्यति यः इत् तद् विदुः त इमे समासते''** (ऋक्.संहि. २।१६४।२६।३६) **''देवीं वाचम् अजनयन्त देवा ताम् विश्वरूपाः...''** (ऋक्.संहि.८।१००।१७।११)

या तरीकेको मिक्स्ड् एप्रोच्; शेक्स्पीयर् याकु ईडीपस् कॉम्पलेक्स कहे हे. अब ये ईडीपस् कॉम्प्लेक्स् अपन्कु हे के क्या हे पता नहीं चले हे.

पर मोकु लगे हे **पर पोतानी व्यक्ति करेवा सृष्टि ते द्विधा प्रकार. दैवी आसुरी बे उपजावी प्रभु मन करी विचार** सो प्रभुने भी कछु ऐसो ही विचार कियो हे के मैं तुमकु गाली दऊं और तुम मोकु गाली दो. चलो अपन् आपसमें गालीको सॅशन् करते रहें. प्रभु अपन्कु वेदमें गाली दे हें और अपन् फिर पाछी वेदकु गाली दें के ये ऐसी ऐसी बात करे हे. वेदके कर्मजड़ासुर हें. सब जगह या तरहको ईडीपस् कॉम्प्लेक्स् वेदके बारेमें कह्यो गयो हे और हर बेटाकु बापके बारेमें होवे हे. हर बेटीकु मांके बारेमें होवे हे, हर बहुकु सासके बारेमें होवे हे. जमाईयन्कु ससुरके बारेमें होवे के नहीं होवे वो थोड़ो विचार करनो चहिये, वाको सर्वे करनो चहिये. पर बाकी केसन्में तो निश्चित समझें के ये ईडीपस् कॉम्प्लेक्स् काम करतो ही होवे हे. वो वेदके साथ अपनो हे.

(भगवान्की स्वप्रकाशितता और वेदप्रकाशितता)

पर या बातकु ध्यानसु समझो के निगमरहस्य, जहां निगमने अपनो रहस्य ये बतायो हे के वा तत्त्वकु मैं पूरे तौरसु कह नहीं पा रह्यो हूं पर जो मैं कह रह्यो हूं तुम वाकु समझवेको प्रयास करो. निगम भी एक स्लॉट् ओपन् रखे हे के यामें कछु और भी रहस्य हे और यदि तुमकु समझमें आतो होय तो समझो. महाप्रभुजीने वाकेलिये एक बोहोत अच्छो सॉल्युशन् निकाल्यो हे. दो बात वेदके

बारेमें महाप्रभुजी कहें हें. बोहोत ही सिग्निफिकेन्ट् बात हे. एक बात कहें हें के ''भगवान् स्वयंप्रकाश हें''. 'स्वयंप्रकाश' माने वाकु कोई दूसरेसु इल्युमिनेट् करवेकी जरूरत नहीं हे. वो सेल्फ्इल्युमिनेट् हे. जैसे लाईट् स्वयंप्रकाश हे. लाईट्कु देखवेके लिये अपन्कु बॅट्री जोड़नी नहीं पड़े. रूमकु भीतकु या कछु औरकु देखवेकु अपन्कु बॅट्री जोड़नी पड़े. ऐसे भगवान् स्वयंप्रकाश हे. साथमें ये बात और कहें हें के वाकी स्वयंप्रकाशितता वेदसु ही प्रकाशित हे. बोहोत मीठी बात हे महाप्रभुजीकी, एक्सलेन्ट् बात हे के वाकी स्वयंप्रकाशितता स्वयंप्रकाश हे. वो वेदसु प्रकाशित हो रह्यो हे. ये बात निश्चित समझो और वेद अपन्कु प्रकाशित होवे तो अपन्कु भगवान्की स्वयंप्रकाशितता समझमें आवे. अन्यथा भगवान्तो स्वयंप्रकाश हे पर वाकी नेचर् अपन्कु समझमें नहीं आवे. निगमके रहस्यके विचारमें महाप्रभुजीको बोहोत ही सिग्निफिकेन्ट् मौलिक सूत्र हे .

ये शायद कोई दूसरे आचार्यने इतने ब्युटीफुली और पॉवरफुली एक्स्प्रेस् नहीं कियो. वो स्वयंप्रकाश हे यामें कोई दो मतकी बात नहीं हे और वाकी स्वयंप्रकाशितता पाछी वेदप्रकाशित हे. वेदप्रकाशित होवेके बाद महाप्रभुजी एक प्रोब्लम् बतावें हें के वेदसु प्रकाशित यदि वो स्वयंप्रकाशित हे तो वो स्वयंप्रकाशितता कॅन्सल् हो रही हे के नहीं? तो आप कहें के कॅन्सल् या लिये नहीं हो रही हे के शब्दात्मना वो खुद ही तो प्रकट भयो हे. वो शब्दसु जितने भी आस्पेक्ट्में प्रकाशित हो रह्यो हे उतने आस्पेक्ट्में वाकी स्वयंप्रकाशितता ही हे. वाकी स्वयंप्रकाशितता वेदसु प्रकाशित होवेके

कारण कॅन्सल् नहीं हो रही हे. महाप्रभुजी ये एक अलग ही जातको सिद्धान्त प्रपोज़् कर रहे हें. साथ-साथमें महाप्रभुजी एक बात और कहें हें के भगवान् शास्त्रैकगम्य हे. यामें महाप्रभुजी और शंकाराचार्यजी दोनों एकमत हें. शंकराचार्यजीने भी वामेंसु एक लुपहोल् निकाल्यो हे. शास्त्रैकगम्य भगवान् भी जा तरहके शास्त्र आचरण बतावे, वाकु जानवेके जो नियम बतावे हैं, यदि उन नियमनकु अपन् पालन कर लें और वा पालन करवेके बाद जा बखत अपनकु वाकी अनुभूति होवे हे वा बखत शास्त्रकु बीचमें लावेकी जरूरत नहीं हे. शास्त्रकी जरूरत तब तक ही हे के जब तक अपन्ने वाकु जानवेके लिये जो साधन शास्त्रने बताये हें, वो साधनाचरण अपन्ने कर नहीं लियो. वाके बाद वा साधनाचरणकु तुम कर लो तो वो शास्त्रसु ही वेद्य हे ऐसो नहीं हे पर स्वानुभूतिवेद्य भी हे. मैं नहीं समझूं के शांकरवेदान्तमें यासु खूबसूरत कोई और बात कही गई होय. एक्सिलेन्ट् बात हे, ब्युटीफुल् बात हे.

(निगमरहस्यको प्रकाशन महाप्रभुजीद्वारा)

महाप्रभुजी याकु थोड़ो और मॉडिफाई करके कहें हें. महाप्रभुजी कहें हें के बात ठीक हे के वेदके बिना अपनकु ब्रह्मको ज्ञान नहीं होवे हे. क्योंके **''तं तु औपनिषदं पुरुषं पृच्छामि''** माने तर्कसु याकु समझ्यो नहीं जा सके हे. **''वेदैश्च सर्वैः अहमेव वेद्य''** (भग.गीता.१५।१५) सब वेद्य मैं हूं **''मां विधत्ते अभिधत्ते मां विकल्प्य अपोह्यते त्वहम्, एतावान् सर्ववेदार्थः शब्द आस्थाय मां भिदाम्.''** (भाग.पुरा.११।२१।४३) ऐसो ही भागवत कहें हे. वा

बातकु महाप्रभुजी तहेदिलसु मानें हें. वामें फिर एक बात और जोड़ें हें के ये तो अपन्कु जाननो होय तो ये प्रोसीज़र् हे, वाकु अपन्कु प्रगट करनो होय तो वेदको मौहताज् होवेकी जरूरत नहीं हे. वाकु तुम्हारे सामने प्रगट होवेके लिये कोई वेदसु परमीशन् लेवेकी जरूरत नहीं हे के वेदकी या ऋचाके हिसाबसु मैं अपने आपकु प्रगट कर रह्यो हूं. वाकु तो जब प्रकाशित होनो होय वो हो सके हे. ये महाप्रभुजीको पुष्टिमार्गको फ्रेमवर्क हे; श्रीशंकराचार्यजीको अपनो एक फ्रेमवर्क हे वामें उनने बोहोत अच्छी बात कही हे. जैसो ज्ञानमार्गको फ्रेमवर्क हे, ऐसे महाप्रभुजीको एक पुष्टिमार्गको फ्रेमवर्क हे. वा फ्रेमवर्कमें महाप्रभुजी बड़ी मीठी बात कह रहे हें के ठीक बात हे. हम याकु इन्कार नहीं कर सकें हें. यदि अपन्कु जाननो हे तो वेदके अलावा वाकु जानवेको कोई और साधन नहीं हे. लेकिन ये सीमायें यदि हें तो अपने लिये हें वाकेलिये नहीं हें. वाकु तो जब प्रगट होनो होवे हे वो प्रकट हो जाय हे.

(गुसांईजीके द्वारा प्रमाण और स्वाचरण सु अपने भावको पोषण)

या बातकु गुसांईजीने पहली बार अकबरकु कही के "साहिब कैसे मिलें? जैसे हम तुम मिले". हमकु तुमकु मिलवे आनो होय तो बोहोत सारी ब्युरोक्रेसी तुम्हारे दरवाजापे रोक देगी. पर तुमकु यदि हमसु मिलवे आनो होय तो कोई भी ब्युरोक्रेसी दरवाजापे नहीं रोक सकेगी. वा दृष्टिकोणसु निगमको ये जो रहस्य हे के अपनी साधनासु वाकु पानो हे तो पावेमें वो बोहोत दुर्लभ हे. वाकी कृपासु वाकु मिलनो हे, तो वामें कोई दुर्लभता नहीं हे, अति सुलभ हे. ये निगमको रहस्य शास्त्रन्में कह्यो भयो हे, एक ठिकाने नहीं

हजार ठिकाने कह्यो हे, पर वाकु थियोरिटाईज्ड् करके जा खूबसूरतीसु श्रीगुसांईजीने प्रस्तुत कियो, **सकल जन निस्तार**. वो कोईने नहीं कियो. वाकु गोपालदासजी एप्रिसियेट् कर रहे हें. **सुखद वंदु श्रीवल्लभसुतनां पदाम्बुज सुकुमार. निगमरहस्य विचार कीधो सकल जननिस्तार**. माने कोई भी जन ऐसो नहीं हे – अधिकारी अनधिकारी दुरधिकारी जाके सामने प्रभुकु प्रगट होवेमें कोई जातकी तकलीफ होय. अनधिकारीकु प्रभुकु जानवेमें तकलीफ हो सके हे. दुरधिकारी कभी प्रभुको जान ही नहीं पायगो. पर प्रभुके पार्टमें वा तरीकेकी कोई भी रुकावट नहीं हे. वो जाके सामने प्रकट होनो चाहें प्रकट हो सकें हें. तो अपने लिये कर्तव्य क्या हे? गुसांईजीको सिद्धान्त एक ही हे – "यही आस अटक्यो रहे अलि गुलाबके मूल. व्हे हें बहोरि वसन्त ऋतु इन डारनिबे फूल." यदि तुम भ्रमरा हो और अभी फूल उग्यो नहीं हे, तो जाके बैठो. वाकु तो जब खिलनो होयगो तब ही खिलेगो. **निगमरहस्य विचार कीधो सकल जननिस्तार. ते पद वंदु** ये गुसांईजीको कॉन्ट्रीब्युशन् हे और या बातकु आपने प्रोग्रामवाईज़् पोषणवाईज़् इम्प्लीमेन्ट् कियो हे. थियोरेटिकली इम्प्लीमेन्ट् कियो हे. इतनो ही नहीं, दो सौ बावन वैष्णवन्की वार्ता पढ़ो तो अपन्कु पता चले के उनने अपने व्यवहारमें इम्प्लीमेन्ट् कियो हे. ऐसे निगमको रहस्य ये हे के वाकु जब मिलनो होय तो वाकेलिये कोई सीमा नहीं हे, रुकावट नहीं हे. अपन्कु मिलनो होय तो सारी रुकावटें ही रुकावटें हें. बोहोत सारे स्पीड्ब्रेकर् आयेंगे, बम्पर् आयेंगे, नो एन्ट्री आ जायगी. प्रोहिबिटेड् ज़ोन आ जायगो, साईलेन्स् ज़ोन आ जायगो. पर वाकु जहां एन्टर् होनो होय तो बम्बाकी तरह ढन ढन ढन करते जहां घुसनो होय

वहां घुस जाये. **निगमरहस्य विचार कीधों सकल जननिस्तार.**

या मंगलाचरणके बाद निगमरहस्यको जो विचार हे, अपन् समझें के गुसांईजीको कोई कोन्ट्रीब्युशन् हे जाकु नोबल् प्राईज़ मिलनी चहिये, या गलतफहमीमें मत रहियो. ये ही बात भागवतने कही हे. भागवतके बारेमें कह्यो गयो हे यालिये ही **''निगम कल्पतरोः गलितं फलं शुकमुखाद् अमृतद्रवसंयुतं पिबत भागवतं रसमालयं मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः''** (भाग.पुरा.१।१।३) भागवतने ये बात सिद्धान्तके तौरपे कही हे, भागवतने ये बात इलस्ट्रेशन्के तौरपे कही हे, अपनी कथान्सु वा बातकु इलस्ट्रेट् करके बतायो हे **''गोप्यः कामाद् भयात् कंसो द्वेषात् चैद्यादयो नृपः सम्बन्धाद् वृष्णयः स्नेहाद् यूयं भक्त्या वयं विभो''** (भाग.पुरा.७।१।३०) वाकी कथाके इलस्ट्रेशन् दिये हें, वाको सिद्धान्त बतायो हे के **''यद्-यद् धिया त उरुगाय विभायन्ति तत्-तद् वपुः प्रणयसे सदनुग्रहाय''** (भाग.पुरा.३।९।११) वाकी सारी थियरी और प्रेक्टिस् दोनोंन्सु भागवतने या बातकु समझायो हे और वो सबन्ने पहले भी पढ़ी हती पर कोईकु क्लिक् होवे और कोईकु क्लिक् नहीं होवे. गुसांईजीकु ये बात क्लिक् भई हे के **निगमरहस्य विचार कीधो** ये जो निगमरहस्य भागवतमें प्रगट भयो हे, वाकु थियरीवाईज़् और प्रेक्टिस्वाईज़् इम्प्लिमेन्ट्शन्में अपने पोषणको कोई प्रोग्राम् होनो चहिये. क्योंके पोषक लीला करवेके लिये प्रगट भये हें. उनकी अनुग्रहकी अभिवृद्धि कैसे होवे वाके लिये गुसांईजीने वो सारी बात करी और अपन् दौसोबावन वैष्णवन्की वार्तायें पढ़ें ना! तो देखो बोहोत सारे लोग आजकलके शंका कर रहे हें इन्क्लुडिंग्

गोस्वामी बालक के वार्तायें खोटी हें. हो सकें वार्तायें खोटी पर वार्ता खोटी हे के सच्ची हें, मेरे सामने इश्यु ये नहीं हे. मेरे सामने इश्यु ये हे के हर वार्ता महाप्रभुजीके सिद्धान्तकु कितने अच्छे ढंगसु समझा रही हे. खोटी भी होय तो समझा रही हे. सच्ची भी होय तो समझा रही हें. मुख्य मुद्दा ये हे के थियरीको प्रेक्टिकल् इम्प्लीमेन्ट्रेशन् कैसे करनो? याको वार्तासु ज्यादा अच्छो मेरे ज्ञानमें कोई उदाहरण हे नहीं. यालिये मैं मानूं के गुसांईजीकी जो वार्तायें हें, उनकु वा दृष्टिकोणसु जब अपन् देखें तो सिद्धान्त क्या हे वो वासु पता चले हे. सिद्धान्त समझ जाओगे तो वार्ता खोटी भी होयगी तो क्या अन्तर पड़े हे? सिद्धान्त यदि समझ गये और वार्ता यदि सच्ची हे तो और भी मजा आ गई.

अपने लिये इश्यु ये नहीं हे के वार्ता खोटी हे के सच्ची हे. जो इतिहासकारकी कथा अलग हे. उनकु खानखोद करवेकी आदत होवे हे. उनकु अपने बापकी भी पता नहीं होवे हे पर खानखोद करते रहें के हम अपने बापके हें के कोई औरके हें? वो तो एक साधारण कथा हे. इतिहासकारन्कु तो ये खानखोद करे बिना चैन नहीं पड़े. वो उनकु करवे दो. अपनो ये विषय नहीं हे. अपनो विषय तो प्रभुके साथ इन्टरएक्शन् कैसे करनो और वा इन्टरएक्शन्को प्रेक्टिकल् और थियोरिटिकल् आस्पॅक्ट् क्या हे? प्रेक्टिकल् आस्पॅक्ट् अपन्कु वार्तासु समझमें आवे और थियोरिटिकल् आस्पॅक्ट् अपन्कु गुसांईजी महाप्रभुजी के उपदेशन्सु समझमें आवे. या तरहसु अपने भावके पोषणको स्वरूप समझनो चहिये. आचरणसु उनने कैसे पोषण कियो और उपदेशसु कैसे पोषण कियो. जो

"आचनोति हि शास्त्राणि आचारे स्थापयति यस्मात् उपदिशति अन्यान् तम् आचार्यं प्रचक्षते." वाको जो फ्रेमवर्क हे वा फ्रेमवर्कके कारण गोपालदासजी कह रहे हें के **ब्रह्मकुल हरि अवतर्यां ते टाळवा भूमिभार, नाथ श्रीविट्ठल नाम निरुपम वृन्दावन शृंगार**. श्रीनाथ यामें गलतीसु जुड़्यो भयो हे यहां खाली शब्द नाथ हे. पुराने दोनों टीकाकार कह रहे हें के यहां 'श्रीनाथ' नहीं हतो. जहां भी नाथ आवे तो वहां जीभ फिसल जाय और श्रीनाथ हो जाय. ऐसो जरूरी नहीं हे के जब भी नाथ आवे तो वाके आगे श्री लगा ही देनो. पुराने दोनों टीकाकार ना पाड़ रहे हें के यहां श्री नहीं हतो. तो यहांसु **सुखद वंदू** सु लेके **चलन वलणे बोधव्या हृदे भाव अनेक प्रकार** यहां तक देखोगे तो सीधीसी बात जो महाप्रभुजीने गुरुके लक्षण बताये हें **''कृष्णसेवापरं वीक्ष्य दम्भादिरहितं नरं श्रीभागवततत्त्वज्ञं भजेद् जिज्ञासुः आदरात्''** आचार्य होवेकी कॅपेसिटीकी पॉलिसीकु उनने इम्प्लिमेन्ट् कैसे कियो, वो बता रहे हें **एक रसना केम कहूं गुण प्रगट विविध प्रकार, नित्यलीला नित्यनौतन श्रुति न पामे पार. सकल शास्त्र प्रमाण बोले सार मांहे सार, तत्त्व मांहे तत्त्व त्रिभुवन भक्तनो आधार.**

(गुसांईजीके आचार्यात्मक रूपसु भक्तिभावको पोषण)

सर्वे अंगो–अंग रस भर्या रस भर्यां लोचन चार, चलण–वलणे बोधव्यां हृदे भाव अनेक प्रकार. अब ये **लोचन चार**के लिये कोई भी टीकाकार कछु भी नहीं कह रह्यो हे पर हमारे तातजी महाराजने बड़ी अच्छी टीका करी हे. वा टीकाकु छोड़के अपन् आगे बढ़ नहीं सकें हें. तातजी महाराज कहें हें के 'लोचन चार'को मतलब चार

लोचन नहीं हे पर चार रस भरे भये हें इन लोचनन्में. **रस भर्या लोचन चार**. कहें हें के आंखमें चार तरहके रस कैसे हें? तो बोले के एक काली कीकी हे सो शृंगार रस हे. एक सफेद हे सो शांत रस हे. एक वामें लाल लाल रेखायें हें. और नेत्रन्के किरण हें वो हेमवर्ण हें. तो चार रंग तो आ गये ना! जैसे बिहारीको दोहा हे 'अमीय हलाहल रस भरे, श्वेत श्याम रतनार. जियत मरत झुक झुक परत जिहिं चितवत इकबार.' बिहारी कह रह्यो हे के आंखमें इतने रस हें के जहर भी यामें, अमृत भी हे और मद भी हे. यामें सब कछु हे; तो ऐसे भी गुसांईजीके भी नेत्रमें चारों रस भरे भये हें. स्नेहको रस भर्‌यो भयो हे काली कीकीन्में; श्वेतता शांतरसको द्योतक हे. लाल रेखा रौद्ररसको द्योतक हे और हेमवर्ण हे सो वीररसको द्योतक हे. गुसांईजी अपने नेत्रन् द्वारा चारों रसन्को उद्‌बोधन कर रहे हें. तो या चारको अन्वय रसके साथ हे. चार रसन्सु उनके लोचन भरे भये हें. चार लोचन हें ऐसे नहीं कह रहे हें. तातजी महाराजने बोहोत अच्छी बात कही, मोकु बोहोत मजा आ गई.

यामें खास देखवेकी एक बात जो हे के **अंगोअंग रस भर्या लोचन चार** में श्रीगुसांईजीके रूपको वर्णन हे.

रूपको वर्णन करवेके बाद रूपमें नामकी स्थापना; कल मैंने या लिये ये बात बताई हती के यहां कैसे रूपमें नामकी स्थापना कर रहे हें! **मुख सुगंधे मोह्या अलिसकल ते आवी करे रे गुंजार, सरसवचन उच्चारमात्रे संशयनो परिहार**. जो भी बात गुसांईजी करें हें वो बात इतनी मीठी हे के एक बार जाने सुनी वाकु दस बार

सुनवेकी इच्छा होवे. वो भ्रमराकी तरह मंडरावे लग जाये गुसांईजीके ऊपर. तो बात वहां नामात्मिका हे और वो नामात्मक रोल् जो आचार्यत्वको हे वो उनके मुखमें प्रतिष्ठापित कर रहे हें. **मुख सुगंधे मोह्या अलिसकल ते आवी करे रे गुंजार. सरसवचन उच्चारमात्रे संशयनो परिहार.** खाली कितनो कह्यो के "साहिब कैसे मिलें – जैसे हम तुम मिले." **सरसवचन उच्चारमात्रे संशयनो परिहार**. आगे ज्यादा एक्स्प्लेनेशन्की जरूरत नहीं हे. या दृष्टिकोणसु वार्ता देखोगे तो ऐसो एक नहीं, गुसांईजीके अनेकानेक उद्गार मिलेंगे. छोटीसी कोई एक बात कही और संशय खतम. संशयको वहां कोई स्कोप् ही नहीं रह गयो. **"तिहारे कियेको भोगें हें"** ज्यादा बोलवेकी जरूरत क्या हे? कोई तू तू मैं मैं करी ही नहीं. गोपालदासजी उनके कितने निकट एसोसियेट् हें वाको ये प्रमाण हे के ये जो गुसांईजीकी आदत हे, या स्टाईल् हे, वासु वो काफी परिचित हें के आप संशयको परिहार कैसे करें हें? बोहोत भाषणबाजी करवेकी जरूरत नहीं हे. एकाध बात कही और बस संशयको परिहार हो गयो. वो ज़ेनकी स्टाईल हे. एकाध कोई छोटीसी बात कही और सब धराशायी.

(नामात्मक रूपसु पोषण)

अब देखो, **"नाम–व्याजे प्रगट कीधो मुक्ति–शत्रु–कार, भुजदण्डपरसें भय हर्या एवा नाथ अमित उदार."** उनको नाम कैसो हे? **"विद् ज्ञानेन ठान् शून्यान लाति विट्ठल."** जो अज्ञानी जन हें उनके अज्ञानकु दूर करवेवाले हें, 'नाम'को मतलब ये हे. अब नामको मतलब ये हे तो नामको विवरण आ रह्यो हे. पाछे नाममें

रूपकी प्रतिष्ठा कर रहे हें के अज्ञानीन्के अज्ञानकु दूर नहीं कर रहे हें पर भुजदण्डसु उनकु पकड़के उनको भय भी दूर कर रहे हें. **भुजदण्डपरसे भय हर्या** माने कोई आदमी हार रह्यो होय तो वा बखत वाके दोनों बाहुकु पकड़ लेनो या कन्धा पकड़ लेनो और कहनो के 'क्यों डर रह्यो हे' तो वाकु जो एक सान्त्वना मिले हे ना, वा सान्त्वनाकु **भुजदण्डपरसें भय हर्‌या एवा नाथ अमित उदार.** तो ये पाछे नाममें रूपकी प्रतिष्ठा कर रहे हें. जो उनको 'विट्ठल' नाम हे वाकु इम्प्लिमेन्ट् वो कैसे कर रहे हें? खाली नामके भरोसे नहीं छोड़ रहे हें. वाकु पकड़के वाको भय दूर कर रहे हें के क्यों डरे हे! पहले वा रूपमें नामकी प्रतिष्ठा हती अब नाममें रूपकी प्रतिष्ठा कर रहे हें.

(स्वस्वरूपप्रबोधन और नियोगसु अपनो प्रभुसेवार्थ योजन)

वाके बाद **स्वस्वरूप अर्थे प्रोज्झिया कृतहुता जे संसार, राज काजे जोडिया जन उच्चावच नरनार."** ये प्रोज्झिया पाठ अशुद्ध हे क्योंके 'प्रोझन'को मतलब होवे छोड़नो. पुराने जितने भी टीकाकार हें और मैं भी अभी तक प्रोज्झिया ही पाठ करतो हतो. अब जब ये पुरानी टीकायें पढीं तब पता चल्यो के सच्चो शब्द हे **'प्रयोजिया'** वाको अपभ्रंश भयो हे. प्र्योजिया और फिर वाको भी अपभ्रंश भयो प्रयोज्झिया. प्रोजियाको प्रयोग करवेपे तो ''स्व स्वरूप अर्थे छोडिया'' ऐसो मतलब नहीं हे. प्रयोजिया माने उनकु लगाये. उनकु वहां जोड़े. उनको जो खुदको स्वरूप हे, जो खुदको नेचर् हे, वासु उनकु एफिलियेट् कियो. यहां ऐसो मतलब हे. एफिलियेशन् कियो वाके बजाय 'प्रोज्झिया' मने छोड़्यो अर्थ हो गयो हे, यहां

ऐसो घोटाला हो गयो हे. वो गामठी गुजराती हे. वाकी मिठास ही यामें हे के वो प्रयोजिया कहवेके बजाय प्ओझिया प्रयोग करें हें. **स्वस्वरूप अर्थे प्ओझिया कृतहुता जे संसार, राज काजे जोडिया जन उच्चावच नरनार. आगळ अंशे प्रगटियां ते ग्रंथ कह्या बहुवार, श्रीयशोदोत्संग–लालित पूरण अतिसुकुमार. अनेक धर्म कह्या प्रभुजीये निगमने अनुसार, गिरिराजधरणनो ताप टाळ्यो श्रीलक्ष्मणसुत निरधार. पोते ते प्रगट पोतातणो रसतणो कर्यो रे उच्चार, पोते अंगो–अंग सुखद शोभा सदन–अंगीकार. स्कंधसंख्या ए कह्या पद श्रीभागवत रसराज, भक्तजन–पदरज–प्रतापे सकल सरिया काज.** या कड़ीमें दो टीकाकार दो ढंगसु बात कर रहे हें. मैं दोनों टीकाकारन्की बात मानुं हूं.

एक टीकाकार यों कह रह्यो हे के गुसांईजीने प्रत्येक पुष्टिमार्गीय जीवके स्वरूपकु पहचानके वो क्या कर सके हे शरणागति सेवा समर्पण वा तरहसु वाकु एपोइन्ट् कियो हे. **उच्चावच नर नार.** जासु जो कुछ हो सकतो हतो वाकु वा तरहसु एपोइन्ट् कियो हे. एक टीकाकार कह रहे हैं के नहीं नहीं ऐसे नहीं. गुसांईजीकु ये बात क्लीयर् हे अपने मनमें के यदि ये पुष्टिमार्गीय जीव हे, तो जो सामाजिक सेटअप् हे, वा सेटअप्में हरेक व्यक्तिसु सेवा हो नहीं सकेगी. हरेक व्यक्तिसु स्मरण हो नहीं सकेगो. तो जासु जो हो सके वो करके फिर वाकु ये गाईडलाईन् दी के तेरे या रोल्कु तू पुष्टिमार्गमें कैसे वापर सकेगो. जैसे कोईकु राजकाजमें जुड़ा दियो. टीकाकार यों केह रहें हें के आसकरणदासजी जब मांगने आये तो उनकु कही के "नहीं नहीं, तुम अकबरके यहां नौकरी

करो." सेवा भी पधराई और अकबरके यहां नौकरी करवेके लिये भी भिजवा दियो. क्षत्रिय हते ना. लड़ाकू नेचर्के हते.

व्यर्थमें जब तक लड़ाकू नेचर् शान्त न हो जाय, तब तक सेवामें लगावेसु सेवामें लड़ाई शुरु होयगी. और वो भई. लड़वे जा रहे हैं तो वा बखत भी कढ़ी भोग धर रहे हैं. अब ठाकुरजीकु कितनी परेशानी? अपन् मानसीसेवाकी सिद्धि समझें वो बात तो बोहोत अच्छी हे. पर जब आदमीको नेचर् लड़ाकू हे तो वो वामें क्या करेगो? वो वहां लगायगो पाछो. जब तक लड़भिड़के नेचर् थोड़ी बोहोत शान्त न हो जाय तब तक वाकु लड़ाई झगड़ा करवे दो. जब बॅट्री एग्जहौस्ट् हो जाये तब शान्तिसु बैठके सेवा करियो. तो **राजकाजे जोडिया उच्चावच नर नार**. तो जाको जा काममें लगायो जा सकतो हतो वा काममें लगाके वाको पुष्टिमार्गको ओरियन्टेशन् खतम नहीं कियो, पर वाकु वा कामसु पाछे कैसे अपग्रेड् करनो, वाको प्रोग्राम् गुसांईजीके पास मौजूद हे. और वो अपन् गुसांईजीकी वार्ता चरित्र पढ़ें तो ऐसे बोहोत सारे कॅरेक्टर्सकु गुसांईजीने हॅन्डल् कियो हे. वो वार्तामें अपनेकु मिले हे. वो टीकाकार भी गलत नहीं केह रहे हें.

माने कुछ याकी बिल्कुल पुष्टिमार्गीय व्याख्या; और दूसरी वाकी व्याख्या जामें सामाजिक सेटअप् हे, वा सेटअप्कु भी अपन् अपने पुष्टिमार्गके लिये कैसे वापर सकें हें. वा तरहकी व्याख्या. तो व्यर्थमें वाकु ऐसे नहीं बतायो के तुम ऐसे करो. जाकु जहां जा तरहसु लगानो हतो वहां वाकु वा तरहसु लगा दियो. **राजकाजे**

जोडिया जन उच्चावच नर नार. मतलब गाय आयेगी तो वाकु गौशालामें बांधेगे. कुत्ता आयगो तो वाकु दरवाजापे बांधेंगे; पोपट आयेगो तो वाकु घरमें टांगेगे. ऐसो तो होयगो नहीं के गायकु घरमें रखेंगे क्योंके सर्वदेवमयी गाय हे. वो घरमें गोबर करेगी तो अपन् कहां जायेंगे? गाय आयेगी और वाको पालन करनो हे, वाकी अभिवृद्धि करनी हे तो गौशालामें ही तो करेंगे ना!

ऐसे जहां जाकी अभिवृद्धि हो सके हे वहां वाको पालन पोषण गुसांईजीने कियो. या तरीकेकी इनसाईट् गुसांईजीमें हे. और वार्ता अपन् पढ़ें तो ये अर्थ गलत नहीं लग रह्यो हे. ये बात सच्ची लग रही हे. यहां तक के गुसांईजीके पत्रमें भी ये बात अपन्कु मिले हे के मुगल अफसर् टाईम् टु टाईम् अपने घरको इन्स्पॅक्शन् करने आवें हें, तो व्यर्थमें उनके साथ झगड़ा नहीं करनो. उनकु उचित सन्मान देके विदा करो. अपन् यहां ठाकुरजीकी सेवा करवे आये हैं के झगड़ा करवेके लिये आये हें? अब अपनो उद्देश्य जब ठाकुरजीकी सेवा करवेको हे तो ये सारे छोटे-मोटे बदलाव हें, उनकु अपनी सेवाके अनुकूल कैसे बनानो वो इनसाईट् अपनेमें होनी चहिये.

गुसांईजीमें दोनो गट्स् हें के बीरबलको त्याग भी कर सकें हें और इन छोटेमोटे मुगल अफसरन्सु काहेकु माथा फोड़ी करनी? उनकु उचित सन्मान देके बातकु खतम करो. वो मुगल लोग झगड़ाके नेचर्के हें. वो झगड़ा करे बिना मानेंगे नहीं. तो गुसांईजीके जीवनचरित्रमें ऐसे बोहोतसे झगड़ा भये हें. क्योंके कल्चरल् क्लेश वा

बखत पैदा भयो हतो, वाकु अपन् देख सकें हें. वो आपके पत्रन्में आपके उपदेशन्में झलके हे. जैसे विठ्ठलदासकु नारायणदासने कोड़ा मरवाये तो वा बखत भी गुसांईजीने ये ही तो कही "अरे वैष्णव नहीं जान्यो तो मनुष्य तो समझनो चहिये हतो ना? इतनो ख्याल तो रखनो चहिये ना के मनुष्य हे." वा तरीकेकी इनसाईट् गुसांईजीके भीतर हे. आज तो पुष्टिमार्गको ऐसो भैंसनुमा उपदेश नहीं देवे हें के चलनो हे तो चलो. चाहे कोई गिरे के चाहे कोई पड़े!! अवेयरनेस्सु चलो. भैंसकी तरह बगैर देखे मत चलो. वो सारो बतायो के **राजकाजे जोडिया उच्चावच जन नर नार.**

मोकु लगे के आज बहोत विलम्ब हो गयो हे. आज बाकी को अपन् पूरो नहीं कर सकेंगे या लिये आज यहां रखें. बाकी अपन् कल देखेंगे.

(ब्रह्मकी परिभाषा : जड़की दृष्टिसु उत्पत्ति स्थिति लय और जीवकी दृष्टिसु उत्पत्ति स्थिति मुक्ति लय)

कल अपन् पोषणलीलाको आख्यान देख रहे हते. वा पोषणलीलाके आख्यानमें जो एक बात भारपूर्वक मैंने बताई हती वो ये हती के या पुष्टिसम्प्रदायके पोषणमें पहले भगवन्नाम प्रदान करनो चहिये, भगवद्रूप प्रदान करनो चहिये, भगवन्नामरूपात्मक जो भगवान् हें, उनसु सम्बन्धित जीवके जो कर्म हें वाको उपदेश करनो चहिये. वामें आते भये जो भी कछु विघ्न हें, जो भी अन्तराय हें, उनके निवारणको उपाय समझानो चहिये. बिल्कुल वोही गार्डनिंग्को मॉडेल् हे. ऑर वा मॉडेल्के हिसाबसु देखें तो अपन्ने जो स्थापित

कियो हे वाको पोषण क्या तरीकेको हे!

यामें एक बात और ध्यानसु समझवेकी ये हे, क्योंके अपन् ये भी देख रहे हें यामें के भागवत **"निगमकल्पतरोर्गलितं फलं"** (भाग.पुरा.१।१।३) हे. निगममें ब्रह्मकी या तरीकेकी नवविधलीला नहीं हे. मतभेदसु या तो त्रिविध या चतुर्विधलीला हे. 'त्रिविधलीला' माने उत्पत्ति स्थिति और लय; चतुर्विधलीलामें उत्पत्ति स्थिति मुक्ति और लय, ऐसे गिनी जाय. वाको मूल कारण ये हे के सृष्टि जो ब्रह्ममेंसु प्रगट भई हे वो वा बाजु प्राकृत जड़ सृष्टि हे और वाके साथ उत्पत्ति स्थिति और लय तीन लीला हें. वाके साथ मुक्तिलीला नहीं हे. या बाजू पुरुषकी जो जीव सृष्टि भई हे पुरुषको जो अपनो स्वरूप हे, कोई तरहसु वो स्वरूप ब्रह्मकु भी कम्पॅल् करे हे. क्योंके जब भी अपन् कोई चीज प्रगट करें, तो वा प्रगट किये भये रूपको कछु न कछु प्रगट करनेवाले कर्तापे प्रभाव पड़तो ही होवे हे. ये ऐसो हे के हर बातमें कॉमन् हे. जैसे अपने बच्चा होंवे, बच्चा भी अपन् प्रगट करें तो बच्चा होवेके बाद पहले जो अपनी लाईफस्टाईल् हती वो रह नहीं जाय. बच्चाके कारण अपनी लाईफस्टाईल्में कछु न कछु तो एकोमोडेट् करनो पड़े. उन बच्चान्कु अपन् वा तरहसु ट्रीट् नहीं कर सकें के फर्नीचर अपन्ने घरमें लाके बसा दिये और जैसे बैठनो होय वैसे बैठेंगे. वो बच्चा एलाऊ नहीं करेगो. बच्चाकी बात तो जावे दो. जानवर भी घरमें रख्यो होय तो वो भी एलाऊ नहीं करेगो. वो कछु न कछु अपने स्वरूपकी मांग तो करेगो ही. क्यों? नेचर्के कारण. कई बखत ऐसो होवे के जो कार्य अपन् पैदा करें हें वो अपन् समझेंके पैदा करवेके

कारण अपनो वापे पूरो वर्चस्व हे. पर कौनसो कार्य पैदा कियो, वाको क्या नेचर् हे, वाके कॉरस्पोडिंग् अपनो नेचर् भी थोड़ो बदल ही जातो होवे हे.

अभी सौ साल पहले इंग्लॅण्डमें एक बोहोत बड़ो दार्शनिक भयो हे ए.एन्. व्हाईटहेड्. वाने या बारेमें बोहोत अच्छी बात कही हे के गॉड्के दो तरहके नेचर् हें. प्राईमोर्डियल् नेचर् और कॉन्सीक्युएन्ट् नेचर्. प्राईमोर्डियल् नेचर्को मतलब वो कहे हे के जगत् पैदा करवेके पहले जैसो वाको नेचर् हतो. दूसरो नेचर् वो कहे हे के कॉन्सीक्युवेन्ट् नेचर् हे. जगत् पैदा करवेके कारण प्रगट भयो वो नेचर्. अब गॉड्में दो तरहके नेचर् बतानो युरोपियन् समुदायमें बोहोत ही बॉम्बास्टिक् लगतो रह्यो. वाकी अपन् रेन्ज़ देखें के कितनो बॉम्बास्टिक् लगतो हतो तो वाको शिष्य हतो बर्ट्रेन्ड रसॅल्. बर्ट्रेन्ड रसॅल् वाको शिष्य होते भये भी कहे हे के "क्या कहे हे ए.एन्. व्हाईटहेड्, कछु समझमें नहीं आवे हे. पर कछु तो केह रह्यो हे जो समझमें नहीं आवे." ए.एन्. व्हाईटहेड्ने तो ये बात सौ बरस पहले कही.

पर अपने उपनिषद् और भागवत तो ये बात न जाने कबसु केह रहे हते! मूलमें वो ब्रह्म हतो, बादमें वो परमात्मा भयो, जब वाने सृजन कियो वा बखत ब्रह्ममेंसु सृजन भयो. "**तत्सृष्टवा तदेव अनुप्राविशत्**" (तैत्ति.उप.२।६) जब वो अपने कार्यमें अनुप्रविष्ट भयो तो वो अन्तर्यामी परमात्मा हो गयो. वो वाको कॉन्सीक्युएन्ट् नेचर् हे. अपने यहां ये शब्द ये टर्मिनोलॉजी नहीं वापरी हे, पर जब

अपन् वाकु परमात्मा केह रहे हें तो अपने आप ऑटोमेटिकली वो बात आ रही हे के वो कॉन्सीक्युएन्ट् नेचर् हे, मूल नेचर् नहीं हे. मूल नेचर्, प्राईमॉर्डियल् नेचर् वाको ब्रह्म होवेको हे. कॉन्सीक्युएन्ट् नेचर् परमात्मा हे. और वो परमात्मा जब नियन्त्रण करवे लग जाय जगतकु वा एक्स्टॅन्ट् तक के कोई वाको भक्त हो जाय, कोई वाको अभक्त हो जाय. वाके कॉरेस्पोडिंग् ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान वैराग्य को जो रिस्पॉन्स् मिलनो चहिये उन रिस्पॉन्सनकु जब वो रिस्पॉन्ड् करनो शुरु करे तब वो भगवान् हो जाय. तो वो सब वाके कॉन्सीक्युएन्ट् नेचर् हें.

जहां–तक अवतारको सवाल हे अपन् समझ ही सकें हें के अवतार तो कोई न कोई सृष्टिमें पैदा भयो परमात्माको रूप हे. तो वो नेचर् तो कॉन्सीक्युएन्ट्को भी कॉन्सीक्युएन्ट् हे. सब्सीक्युएन्ट् नेचर् हे वो तो. यद्यपि ए.एन्. व्हाईट्ने ये टर्मिनोलॉजी नहीं वापरी हे पर अपन् कह सकें के ये सब गॉड्के सब्सीक्युएन्ट् नेचर् हे. अपने यहां तो हती ये बात. महाप्रभुजी भी सुबोधिनीमें याही लिये कहें हें के **''ईश्वरस्यापि इशितव्यापेक्षणात् सृष्टिः''**(सुबो.३।९।९) ईश्वरत्व ईशितव्यके कॉरेसपोन्डेन्स्में पैदा हो रह्यो हे. तो अपन् समझ सकें के वो कॉन्सीक्युएन्ट् नेचर् हे. वाको प्राईमोर्डियल् नेचर् नहीं हे. नहीं हे वाको कारण वो ब्रह्म हे. कौनको वो ईश्वर होयगो? कौन वासु ईशितव्य होयगो? कोई दूसरो होय तो वो वाको ईश्वर होय और ईशितव्य होय और वाके बाहर कछु होय तो वो कोई आत्मा होय, कोई वाको शरीर होय. कल सवाल पैदा कियो हतो के शरीर वाने भिन्न काहेकु पैदा कियो? जा बखत ब्राह्मिक एस्पॅक्ट्सु अपन्

बोल रहे हें वा बखत तो शरीरके भिन्न होवेको कोई प्रश्न नहीं हे. वाने अपनी सेल्फ् स्प्लिटिंग् या ढंगसु करी के जैसे कछुआको उदाहरण मैंने आपकु याही लिये दियो के कछुआको शॅल् और अन्दरको जो भाग हे वाकु वो स्प्लिट् करे हे. एककु हार्ड बनावे हे एककु सोफ्ट बनावे हे. तो फिर नेचरली वामें ये प्रभेद आ जाय हे. अपन्कु समझमें आवे के वो शॅल्के भीतर छुप्यो भयो हे. ये जो सी-शॅल् होवें हें उनमें भी बिल्कुल वो ही नेचर् होवे हे के अपने बाहर वो एक शॅल् पैदा करें और वाके भीतर वो दुबकके बैठें. तो अपने यहां वो कन्सॅप्ट् उपनिषद्ने फुल फ्लॅज्ड् बतायो के वाके एक नहीं पर पांच शॅल् हें. पंचकोषकी कल्पना करी हे. याके भीतर ये हे, याके भीतर ये हे, वगैरह वगैरह. सो अपन् समझ सकें के ब्रह्म परमात्मा भगवान् ''**अवतारी हरिः कृष्णः श्रीभागवत ईर्यते.**'' (त.दी.नि.१।११) इन सारे रूपन्में, रूपन्के कारण वाके नाम कितने हो जायेंगे, रूप कितने हो जायेंगे? और जब अपन् कोई भी एक रूपकु माने वाके ब्राह्मिकरूपकु या पारमात्मिकरूपकु या भागवतरूपकु या अवतारूपकु, कोईकु भी ओवर् एम्फॅसाईज़् करेंगे तो कहीं न कहीं अपन् वाके साथ अन्याय कर रहे हें. जैसे कछुआको ही एक उदाहरण ले लो तो अपन्कु समझमें आ जायगो के कछुआके शॅल्पे ही आप ज्यादा भार दो और वाके भीतरकी जो बॉडी हे वापे भार नहीं दो जो एकदम कोमल हे तो कहीं न कहीं आप कछुआको नुकसान पोहोंचाओगे. वाकी भीतरकी बॉडीपे ही ज्यादा भार दो, शॅल्पे कोई ध्यान ही नहीं दो, तो अन्तमें नुकसान कौनको होयगो? कछुआको ही होयगो. स्नेल्स, जो सी-शॅल् होवें हे, उनको भी ये ही हाल होवे हे. स्नेल्स्की भी ऐसी बॉडी और वाके भीतरको जो

बायोलॉजिकल् स्वरूप हे वो अलग हो जाय. ऑलमोस्ट् अपन्कु यदि जड़ और चेतन को रूप देखनो होय तो अपन् देख सकें हें. यद्यपि अपनी बॉडीमें नेचर्ने वा तरहकी फॅसिलिटी प्रोवाईड् नहीं करी हे के अपनी बॉडी बाहर टोटली ऐसी जड़ होय जैसी वा स्नेल्की बॉडी जड़ होवे हे और भीतर अपनी बॉडी इतनी ज्यादा डेलीकेट् होवे हे क्योंके नेचर्कु वैसो एक्स्पॅरीमेन्ट् करनो मनुष्यके बारेमें अच्छो नहीं लग्यो यासु ऐसो रख्यो. अब यामें ही वो इतने उपद्रव करे हे तो तब न जाने कितने उपद्रव करतो!! करके नेचर्ने मनुष्यके बारेमें अपनी गलती सुधार ली हें. तो मनुष्यके लेवल्पे वो सिस्टम् प्रोवाईड् नहीं करी यासु बोहोत सारे उपद्रवन्की सम्भावनायें हती. क्रीचर्के साथ बोहोतसी अच्छी अच्छी बायोलॉजिकल् फॅसिलिटी नेचर्ने क्रियेट् करी. कई सारी मनुष्यमें बढ़ा दी हें और कई सारी मनुष्यमें घटा दी हें.

जैसे आजकल मोबाईल्में एक दूसरेकु एस.एम.एस. भेजें हें जैसे ''भगवान्पे जाने विश्वास कियो उनको काम सिद्ध भयो के नहीं भयो पर जिनको काम सिद्ध नहीं भयो उनपे भगवान्ने विश्वास कियो.'' अरे भई तू सम्भाल ना, क्यों नहीं सम्भाल रह्यो हे तेरी खटपट? भगवान्कु विश्वास हे के मनुष्यकु इतनी सारी चीजें प्रोवाईड् करी हे, अकल दी हे, हाथ पैर दिये हें, वगैरह वगैरह कछु तो करे ना, के ''अजगर करे ना चाकरी पंछी करे ना काम. दास मलूका कहे गये सबके दाता राम.'' खुद क्यों नहीं करे? बोहोत सारी फॅसिलिटी जो प्रोवाईड् करी हती पाछी वापिस ले ली. चीताके जैसे अपन् दौड़ नहीं सकें, शेरकी तरह अपन् दहाड़ नहीं सकें; शेरको

एक पंजा नौसो पाउन्डको पड़े. अपनो कहां नौसो पाउन्डको पड़े? बोहोत सारी फॅसिलिटी विड्रॉ करनी पड़ें. नहीं तो न जाने क्या क्या उपद्रव करे? यदि क्रीचरकी बायोलॉजिकल् रेन्ज् देखें तो वामें ये सारे सृष्टिके मॉडेल् मौजूद हें. यासु अपन् समझ सकें हें के जो जड़ सृष्टि हे वाकु अपनो शास्त्र निरन्तर भगवान्को शरीर केह रह्यो हे. वो स्नेल्वालो ही तो मॉडेल् हे. परमात्माकु 'ब्रह्माण्डमूर्ति' कह रह्यो हे. वो भी वो ही मॉडेल् हे. वो अपन्कु समझनो चहिये. मूलमें कौनसे जातकी मॉडेलिटी हे. यामें उपनिषद्ने जो जड़के दृष्टिकोणसु ब्रह्मकी तीन डेफिनेशन् दी के जहांसु उत्पत्ति स्थिति और लय होवे वो ब्रह्म हे. जीवके दृष्टिकोणसु चार परिभाषा दी हें. **''यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति, यत्प्रयन्ति अभिसंविशन्ति''** (तैत्ति.३।१) एक फॅसिलिटी वाकी और ज्यादा प्रोवाईड् करी हे के लय तू दो तरहसु कर सके हे. तेरे व्यक्तिगत लेवल्पे और एक मास्-लेवल्को लय. तू वाके पहले भी लीन होनो चाहे; क्योंके तेरेमें सेल्फ्-अवेयरनेस् हे. तो यदि तेरी इच्छा हे के तू वासु पहले लीन होनो चाह रह्यो हे, तो तोकु मुक्तिकी फॅसिलिटी अवेलेबल् हे. जो मुक्तिकी फॅसिलिटी अवेलेबल् हे तो वाकेलिये ज्ञान कर्म भक्ति; भागवत कहे हे **''योगाः त्रयो मया प्रोक्ताः नृणां श्रेयो विधित्सया ज्ञानं कर्मं च भक्तिः च नोपायो अन्यो अस्ति कुत्रचित्''** (भाग.पुरा.११।२०।६) तीन प्रोवीजन् रख दिये हें के तुमकु यदि सृष्टिके पहले मेरेमें लीन होनो हे तो तुम आ सको हो इन तीन फॅसिलिटीन्कु वापरके. ऐसे ब्रह्मके दो तरहसु बायफरकेटेड् डेफीनेशन् उपनिषद् बतावे हे. एक जन्मस्थितिलयके दृष्टिकोणसु जड़को और दूसरो जन्मस्थितिमुक्तिलय जीवके दृष्टिकोणसु.

(ब्रह्म ही जड़जीवसृष्टिको आश्रयतत्त्व)

यामें एक सबसु बड़ी बात समझवेकी ये हे के कोई ऐसे भ्रम पैदा नहीं कर ले के क्योंके अपन् चेतन हें या लिये ब्रह्मकु अपन् सिर्फ चेतनके ही अर्थमें आधार कर्ता उपादान सोचें और जड़के अर्थमें आधार कर्ता उपादान नहीं सोचें. जन्माधार स्थित्याधार लयाधार नहीं सोचें, वाको नियन्ता नहीं सोचें. ऐसी गलती न कर जायें, वाके लिये श्रुति वाकु बांटके कहे हे के दोनों तरहसु वो होवे हे. यामें भागवतने नवविधलीलायें बताई; वामें अपन् देख सकें के याही लिये मुक्तिकु इन्कॉरपोरेट् करी हे. वो सिर्फ जड़के पॅटर्नमें आश्रयतत्त्वकी व्याख्या नहीं करे. अपन् सेफली यों समझ सकें के जाकु भागवत आश्रय कह रह्यो हे वो उपनिषद्को ब्रह्म हे. जाकु उपनिषद् ब्रह्म कह रह्यो हे वाकु भागवत आश्रय कह रह्यो हे. तो वा ब्रह्मके बारेमें भागवतने अचानक कन्सॅप्टकु एक्स्पान्ड् कियो. खाली जड़में उत्पत्ति स्थिति और लय नहीं, चेतनमें उत्पत्ति स्थिति मुक्ति और लय ही नहीं पर सर्ग विसर्ग स्थान पोषण ऊति मन्वन्तर ईशानुकथा निरोध और मुक्ति, ऐसे.

(ब्रह्मके स्वरूपकी दृष्टिसु प्रयाण संभव नहीं)

'यत्प्रयन्ति' वो प्रयाण. यद्यपि शांकरन्कु ये बात पॅलेटेबल् नहीं भई. वाको मूल कारण ये हे के उनके यहां आत्मा भी व्यापक हे और ब्रह्म भी व्यापक हे. तो व्यापकको व्यापकमें प्रयाण नहीं हो सके हे. उनकु वो तकलीफ आ रही हती के व्यापकको व्यापकमें प्रयाण कैसे होयगो? पर जितने भी वैष्णव और शैव वेदान्त हें वो सब या बारेमें एकमत हें. ब्रह्म परमात्मा व्यापक हे पर जीवात्मा

व्यापक नहीं हे. या लिये अव्यापक होवेके कारण वो प्रयाण कर सके हे. पाछे प्रोब्लम् ये आयो के वो प्रयाण ब्रह्ममें कहां कर सकेगो? ब्रह्ममें तो हे ही वो. ब्रह्ममें प्रयाण कैसे करेगो? जब अपन् ये कह रहे हें के ब्रह्म सर्वव्यापी हे. तो चाहे जीवात्मा अणु भी होय पर ब्रह्ममें प्रयाण नहीं कर सके. वा बातकु भागवतने रजिस्टर् कियो हे. तुम कोई भी दिशामें पैर उछालो पर वो उछल्यो भयो पैर जमेगो जमीनपे. **''बृहद् उपलब्धम् एतद् अवयन्ति अवशेषतया यत उदयास्तमयौ विकृतेः मृदि व अविकृतात् अत ऋषयो दधुः त्वयि मनोवचनाचरितम्. कथम् अयथा भवन्ति भुवि दत्तपदानि नृणाम्''** (भाग.पुरा.१०।८७।१५) ये तो अपन् भी समझ सकें बात. पर याके कन्सॅप्च्युअल् जस्टिफिकेशन्के तौरपे भागवतने परमात्मा समझायो, उपनिषद्ने भी समझायो, और ईवन् गीतामें भगवान्ने भी समझायो.

(लीलामें प्रयाण और प्रयाणके प्रकार)

अब जब अपन् भगवान् कह रहे हें, जब परमात्मा कह रहे हें, तब देखो कितने तरीकेके प्रयाण पैदा कर रहे हें. अन्तर्मुखी प्रयाण, ऊर्ध्वमुखी प्रयाण, प्रयाणके डायमेन्शन्स्में एक अन्तर्मुखी प्रयाण हे **''पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वयंभूः तस्मात् पराक्पश्यति न अन्तरात्मन्, कश्चिद् धीरः प्रत्यगात्मानम् ऐक्षद् आवृत्तचक्षुम् अमृतत्वम् इच्छन्.''** (कठोप.२।१।१) वो बाहर प्रयाण नहीं करे, भीतर प्रयाण करे. अन्तर्मुखी प्रयाण भी हो सके हे. आजकल जैसे विपश्यनामें जो मॅथड् अपनाई जाय हे वो अन्तर्मुखी प्रयाणकी मॅथड् अपनाई जाय. आपकी अपनी सेल्फ् अवेयरनेस्कु बाहरकी तरफ जावे देवेके बजाय, वेस्ट् होवेके बजाय वाकु अन्तर्मुखी बनाके इन्वेस्ट् करो

अपनी सेल्फ् अवेयरनेस्में. विपश्यनाकी टॅक्नीक्को नटशॅल् ये हे. ये अपने दृष्टिकोणसु हे उनको दृष्टिकोण दूसरो हे. ऐसे ऊर्ध्वमुखी प्रयाण भी हो सके हे. वेदने भी या बातकु कह्यो हे. संहिताने भी या बातकु कह्यो हे. गीता भागवत भी कहें हें के सालोक्य सार्ष्टि सामीप्य सायुज्य सारूप्य ये सारे ऊर्ध्वमुख प्रयाण हें और वा तरीकेके ऊर्ध्वमुख प्रयाण अपने यहां भी माने गये हें. वो अपन् देख सकें हें. **सेवायां फलत्रयम् : अलौकिकसामर्थ्य सायुज्य पर अन्तमें वैकुण्ठादि लोकन्में सेवोपयोगी देहकी प्राप्ति.** (सेवाफल) ये ऊर्ध्वमुख प्रयाण हें. ये अर्न्तमुख प्रयाण नहीं हें.

(सेवाफलके सन्दर्भमें सायुज्य माने अन्तर्मुखी प्रयाण)

एक अन्य प्रयाणको मॉडेल् बतायो हे अन्तर्मुखको. वो सायुज्यको हे. ग्यारह बारह टीकाकार सब अलग अलग बोल रहे हें, उनमें ये प्रकार फिट नहीं होतो होयगो, उन टीकाकारसु माफी मांग लेंगे फुरसतमें के आपके यहां ये फिट नहीं हो रह्यो हे. महाप्रभुजीने जा तरहसु अलौकिकसामर्थ्य सायुज्य और सेवोपयोगीदेह की व्याख्या तृतीय स्कन्धमें करी हे, वा दृष्टिकोणसु देखें तो अपने यहां सायुज्य अन्तर्मुखी प्रयाण हे. डायमेन्शन् बदल रह्यो हे प्रयाणको परमात्माकी तरफ. जो सब जगह अवेलेबल् हे वाकी तरफ तुम कैसे मुड़ोगे, इश्यु ये हे.

एक और प्रयाण ऐसो हे जो न तो ऊर्ध्वमुख हे और न अन्तर्मुख हे पर अपने समानान्तर हे आंखके लेवल्पे. जैसे दोस्त दोस्तके पास जावे हे. वा तरीकेको प्रयाण हे. तो जा बखत अपन्ने

भगवान्कु अपने दोस्त तरीके, जो भी कछु उनके साथ व्यवहार होय; कोई भी फॉरमेट् हो सके हे, दोस्त-दोस्तको, पति-पत्नीको, पिता-पुत्रको, माता-पिता-संततिको, मालिक-सेवकको हो सके हे, वगैरह वगैरह; कई तरहके अपन् मॉडेल् खड़े कर सके हें. यहां मॉडेल्को इश्यु नहीं हे पर जैसे दो व्यक्ति एक दूसरेके तरफ प्रयाण करें. क्योंके भगवान् स्पष्ट गीतामें आज्ञा कर रहे हें के ''**अव्यक्तं व्यक्तिम् आपन्नं मन्यन्ते माम् अबुद्धयः, परं भावम् अजानन्तो मम अव्ययम् अनुत्तमम्.**'' (भग.गीता.७।२४) भई तुम व्यक्त हो या लिये मैं भी तुम्हारे सामने व्यक्त भयो. फिर भी तुम जिद पकड़के बैठो के ''नहीं नहीं आप तो अव्यक्त ही हो!!'' बुद्धिहीन हो समझ नहीं पाये. मेरे सामर्थ्यकी और मेरे स्वरूपकी जो कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं सामर्थ्य हे, स्वतन्त्रइच्छा होवेके कारण, वाकु तुम समझ नहीं पाये हो. **''मन्यन्ते माम् अबुद्धयः''** करके वो मॉडेल् भी तीसरो डायमेन्शन् आई लेवल्के प्रयाणको भी बतायो गयो हे. ऑलमोस्ट् अपन् दुनियामें मरवेके अलावा जितने प्रयाण करें हैं वो सब आईलेवल्के प्रयाण हें. जैसे यहांसु दिल्ली चॅन्नई कलकत्ता या अहमदाबाद जा रहे हो, वो सब आईलेवल्के प्रयाण हें. जहां भी जा रहे हो वो तुम्हारे आईलेवल्पे हे. थोड़ो पहाड़ भी चढ़ रहे हो तो वो पहाड़ भी चढ़वेके बाद तुम्हारे आई लेवल्पे आ जाय हे. समुद्रमें यदि तुम स्कूबा-डाईविंग् कर रहे हो तो भीतर जावेके बाद अन्डर-वॉटर् आई लेवल् आ जाय. वो हमेशा आई लेवल्को प्रयाण हे. या बातकु ध्यानसु समझो. प्रयाणन्के मॉडेल्में आई लेवल्को मॉडेल् एक अलग प्रकारको मॉडेल् हे. अन्तर्मुख मॉडेल् ऊर्ध्वमुख मॉडेल् और आईलेवल्को मॉडेल् ऐसे ये तीन डायमेन्शन् हें.

(ऊर्ध्वमुख प्रयाण, अन्तर्मुख प्रयाण और समानान्तर प्रयाण)

ऊर्ध्वमुख प्रयाण ये के जहां भी अपन् सोच रहे हें के केलाशमें जा रहे हें, वैकुण्ठमें जा रहे हें, गोलोकमें जा रहे हें तो वो अपन् योंही तो सोचें के केलाशमें वैकुण्ठमें गौलोकमें हेवनमें बहिश्तमें; ये सब कोई यहां थोड़े ही हें! ये ऊर्ध्वमुख प्रयाण हो गयो ना! अन्तर्मुख प्रयाणको मतलब क्या के अपन् बाहर नहीं निकल रहे हें, अपनी हकीकतके बाहरी शॅल्के भीतर जा रहे हें, रिट्रीट् करके. अपन् बाहर निकलवेके बजाय भीतर जा रहे हें. भीतरमें अपनी जो भी कछु सच्चाई हे जो बाहर प्रगट नहीं हो रही हे वाके भीतर प्रयाण कर रहे हें. जैसे कबीर कहे हे के "मोको बन्दा तू क्या खोजे मैं तो तेरे पास हूं. पानी बिच मीन पियासी, मोहे सुन सुन आवे हांसी." तुम तुम्हारे भीतर जो पानी हे वाकु तुम नहीं देख रहे हो और बाहरके पानीकु तुम नहीं खोज रहे हो, तरस रहे हो. वो अर्न्तमुख प्रयाण. आईलेवल्को प्रयाण क्या? जैसे व्यक्ति व्यक्तिसु मिले हे. अन्तर्मुख प्रयाणमें व्यक्तिवालो मॉडेल् खतम हो जाय. तुम्हारे व्यक्तित्वके भीतर तुमकु घुसनो पड़ेगो. वा व्यक्तित्वकु तुम निभा नहीं पाओगे. ऐसे ही ऊर्ध्वमुख प्रयाणमें भी तुम्हारे व्यक्तित्वकु तुमकु छोड़नो पड़ेगो. रामनामसत् होवे तभी तो ऊर्ध्वमुख प्रयाण होवे, वाके बिना कैसे होयगो? ये सारी प्रयाणन्की कठिनाईयां हें. और जो आईलेवल्को प्रयाण हे वो अवतारी श्रीकृष्ण **"भागवत इति ईर्यते."** वो अवतारलीलाके प्रति प्रयाण हे. ऐसो बतायो गयो हे. करके अवतारलीलाकु अपने यहां दोनों तरहसु ट्रीट् कर्‌यो गयो हे. अपने यहां धर्मस्थापन, अधर्मवारण, दुष्टन्को निबर्हण, साधुन्को परित्राण, भक्ति, मुक्ति, इन सब फन्क्शन्में

अवतारलीलाकु मान्य कियो गयो हे. अवतारलीलाको खाली एक ही फन्क्शन् नहीं हे. वो जा भक्तकु भगवान्, जा तरहसु, जा फन्क्शन्सु आईलेवल्पे देखनो अच्छो लगे वा तरहसु भगवान् वाके साथ इन्टरएक्ट् करे हे. माने धर्मस्थापन, अधर्म निवारण, दुष्टनिबर्हण, साधुपरित्राण, भक्ति या मुक्ति, इन सब लेवल्पे अपन् देखें के सब अवतारन्में भागवतने वर्णित कियो के नहीं कियो पर कमसु कम कृष्णलीलामें ये सारे फॅसेट् दशम स्कन्धमें एक एक आख्यानसु स्पष्ट करके समझायें हें के यहां ऐसो भयो. चैद्य जो हे उनके चरणमें घुस गयो. **''जहुर्गुणमय देहं सद्यः प्रक्षीणबन्धनाः''** (भाग.पुरा.१०।२६।११) में अन्तर्गृहगता जो भगवान्में लीन हो गई. कोई लीन हो गयो. कोई मिल गयो. कोईकु मार दियो. कोईकु तार दियो. जितने भी वाके फॉरमेट् हें वो सब अलग-अलग आख्यायन्में इलस्ट्रेटेड् हें. ये अपन् समझ सकें वहां. ये सारे भगवान्के आईलेवल्के प्रयाण हें. आई टु आई अपन् वाकु देखें हें. ए.एन्. व्हाईटहेडके शब्दन्में कहनो होय तो क्योंके जीव या तरहसु पैदा भयो हे करके या तरीकेके कॉन्सीक्युएन्ट् नेचर् वो भी अपनो प्रगट करे हे, अपने शब्दन्में कहनो होय तो **''ईश्वरस्य इशितव्यापेक्षणात् सृष्टिः''** (वहीं) वामें ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान वैराग्य जो भी गुणधर्म हें, वो रिलेटिव् हें. यासु जाकी रिलेटिवीटीसु वो गुण आ रहे हें वो व्यक्ति वाही तरहसु वाकु एप्रोच करेगो ना!

तो ये तीन या चार लेवल् हें उन लेवल्कु इन नौ लेवल्सु या ये जो नौ आस्पॅक्ट् हें, उनसु कैसे को-ओर्डिनेट् करनो? वाकी बोहोत सारी तो नहीं पर कछु विधायें भागवतके शिविरमें अपन्ने

पहलेसु ही देखी हती. दो सर्ग हें, छः स्थिति हें और दो लयकी लीलायें हें. दूसरो भी एक मॉडेल् बतायो हतो वो भी मैंने डिस्कस् कियो हतो.

(सर्ग विसर्ग स्थान लीला प्रमेयको लक्षण हे कारणकी प्रधानताके कारण)

एक और मॉडेल् महाप्रभुजी बोहोत इन्ट्रेस्टिंग् यहां प्रोपोज़ करें हें और वो मॉडेल् यहां समझवेमें थोड़ो उपकारी होयगो. क्योंके अपन् जब ये भागवतको और वल्लभाख्यानको पॅरेललिज़्म् देख रहे हें वा बखत वो मॉडेल् थोड़ो इन्ट्रेस्टिंग् और रिमार्केबल् हे. महाप्रभुजी एक बात कहें हें, **"सर्गादिषु प्रमेयं लक्षणं कारणप्राधान्यात्."** (सुबो.२।१०।२) जो सर्गादि लीलायें हें वामें प्रमेयको प्रतिपादन करनो हे क्योंके वहां तुम्हारो ध्यान कारणपे केन्द्रित करनो हे. तुमकु कारण समझमें आवे. यदि कारण समझमें नहीं आयो तो सर्गादिमें कछु न कछु लफड़ा होयगो. सर्गादि लीलाकी प्राइमरी रिक्वायरमेन्ट् ये हे के तुम कारण समझो के क्या हे? कौनसे कारणसु ये चीज पैदा भई? कोईको भी सर्ग समझनो हे तो सबसु मुख्य बात 'कारण' हे. कारणको नेचर् क्या हे? तो यामें क्या कह रहे हें के जो सर्गादि लीलायें हें, वामें जो कछु समझानो चाह रहे हें वो प्रमेय समझानो चाह रहे हें. याको एक एपिस्टिमॉलॉजिकल् एप्रोच हे. ये मॅटाफिजिकल् एप्रोच् नहीं हे. या कन्सॅप्ट्की ब्युटी ये हे. 'एपिस्टिमॉलॉजिकल् एप्रोच' माने कोई चीजकी अपनी अन्डरस्टॅन्डिंग्के दृष्टिकोणसु एनॅलेसिस् करनी. कोई प्रक्रियाकु अपन् समझ कैसे रहे हें, वा एन्गल्सु वा चीजकी व्याख्या करनी वाकु 'एपिस्टिमॉलॉजिकल् एप्रोच्' कहें हें. 'मॅटाफिजिकल्

एप्रोच'को मतलब क्या के समझ आती होय के नहीं आती होय, तत्त्व क्या हे?

'एपिस्टिमॉलॉजिकल् एप्रोच्' माने तत्त्व चाहे कछु भी होय पर अपन् वाकु कैसे समझ रहे हें, वाकु तो समझो. दो प्रभेद हें. माने दीख क्या रह्यो हे और देख क्या रहे हो? वाको प्रभेद. दीख क्या रह्यो हे ये मॅटाफिजिकल् एप्रोच् हे. देख क्या रहे हो ये एपिस्टिमॉलोजिकल् एप्रोच् हे. तुम सुन क्या रहे हो ये एपिस्टिमॉलोजिकल् एप्रोच् हे और सुनाई क्या दे रह्यो हे ये मॅटाफिजिकल् एप्रोच् हे. कैसे सुनाई दे रह्यो हे. दोनोंन्में थोड़ोसो अन्तर हे. या बाजु के वा बाजु? पूरी पृथ्वीमें उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव दोनों पृथ्वीके दो हिस्सा हें. वा तरफ चले गये तो उत्तर ध्रुव हे और या तरफ चले गये तो दक्षिण ध्रुव हे. ऐसे अपन् वा तरफ गये तो तुमकु क्या दीख रह्यो हे? या तरफ तुम क्या देख रहे हो या तरहसु दोनों एप्रोचन्में फर्क आवे.

तो ये मॅटाफिजिकल् एप्रोच् नहीं हे, एपिस्टिमॉलोजिकल् एप्रोच् हे. सर्गादि लीलामें प्रमेयको लक्षण करनो हे. प्रमेयपे तुम्हारो कछु ध्यान दिलवानो हे के जो तुम समझ रहे हो वो कौनसे प्रमाणको प्रमेय हे. वाके अलावा भी कछु हो सके वो. नहीं हो सके ऐसी बात नहीं हे. वाको स्कोप् ओपन् रख्यो हे. वो क्या हे, इश्यु ये नहीं हे पर वाकु अपन् समझ कैसे रहे हें, इश्यु ये हे.

या लिये महाप्रभुजी आज्ञा करें हें के सर्गादि लीलान्में कारणकी प्रधानता होवेके कारण प्रमेयको वर्णन हे. बोहोत ही सटीक्

बात महाप्रभुजीने यहां खुलासा करके कही हे. वाके बाद महाप्रभुजी यामें क्लबिंग् कैसे कर रहे हें वो देखवे लायक फिनोमिना हे. सर्ग विसर्ग और स्थान; ये सब प्रमेयको लक्षण हे, कारणकी प्रधानताके कारण. अपन्ने सर्गलीलामें कारणकु देख्यो, **श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीडा**; विसर्गमें अपन्ने महाप्रभुजीकु विसर्ग पुरुष तरीके देख्यो. ये कारण भी प्रमेयके रूपमें आयो हे. स्थानमें कल अपन्ने गुसांईजीकु स्थापकके रूपमें देख्यो. अपन्कु ऐसे लगे के ये श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीडामेंसु महाप्रभुजी भये और महाप्रभुजीमेंसु फिर गुसांईजी प्रगट भये. यदि महाप्रभुजीकी एनेलॅसिस् देखें तो एकदम स्पष्ट हो रह्यो हे के तीनों प्रमेय हें.

माने अपन्कु पुष्टिसम्प्रदायमें इनकु कौनसे तरहसु समझनो हे के ये तीनों प्रमेय हें? **"कारणप्राधान्यात्."** अलग ढंगसु एप्रोच् करवेपे वाही चीजको कछु दूसरे ढंगको आनन्द आवे हे. अगर कोई चीजकु हॉरिज़ोन्टल् रूपमें देखो के वर्टिकल् रूपमें देखो तो चीज तो वही हे पर थोड़ो अन्दाज तो बदले हे. शेप् तो बदले ही हे. एप्रोच् अलग होते ही वाकी शेप् बदल जाय, वाकी साईज़ बदल जाय, वाकी एपीयरेन्स् बदल जाय. तो यहां एपिस्टिमॉलोजिकल् एप्रोचसु इनकु क्लासिफाई करते ही इनसु लीलाको सीन् बदल रह्यो हे और वा बदले भये सीन्में अपन्कु ये समझमें आ रह्यो हे के एक स्वतन्त्रक्रीडा पुरुषोत्तम हे, एक प्रमाणपंथा पुरुषोत्तम हे और एक प्रमाणपंथा पुरुषोत्तममेंसु प्रगट भयो स्थापक पुरुषोत्तम माने **"पितृप्रवर्तितपथप्रचार सुविचारक"** (नामरत्नाख्य.१२) पुरुषोत्तम हे. ऐसे तीन तरहके प्रमेय हें या पुष्टिसम्प्रदायमें. ये एप्रोच्की एक नई

शैली हे. याकु हार्ड एण्ड फास्ट् कम्पार्टमॅन्टलाईज़ेशन् करके मत समझियो. महाप्रभुजी आज्ञा कर रहे हें के ''**प्रमेयं हरिरेवैक:**'' (त.दी.नि.२।८४) वा दृष्टिकोणसु नहीं देखवेको हे. पर वाको मजा लेवेके लिये वा दृष्टिकोणसु भी देख्यो जा सके हे.

(पोषण ऊति मन्वन्तर लीला : प्रमाणलीला)

वाके बाद महाप्रभुजी कहें हें के पुष्टिके ऑनवर्ड् जितनी भी लीलायें प्रमेयलीला नहीं हें पर प्रमाणलीला हें. आज अपने पुष्टिमार्गीयन्की मति कितनी भ्रष्ट हे? पुष्टिकु अपन् प्रमेय समझ रहे हें. महाप्रभुजी स्पष्ट या बातकु कह रहे हें के नहीं नहीं पुष्ट्यादि लीला तो सब प्रमाणलीला हें.

वो क्या हे वासु तुमकु समझ नहीं आयगो. तुम्हारे पास वाकु जानवेको साधन क्या हे? वो पुष्टि कर रह्यो हे तो तुम वाकु जान पा रहे हो. तो तुम्हारे पास जो एपिस्टिमॉलोजिकल् एप्रोच् हे, वो तुमकु अपने लेवल्पे समझमें आयेगो. एकदम याकु चालू खाताकी भाषामें कहूं तो ऐसे कह सकूं के ''हम उसीको खुदा समझते हें जो मुसीबतमें काम आये.'' अपनी रिक्वायरमेन्ट् क्या हे वाकु समझवेकी, वो तो अपने कैसे मॉडेल् हें वासु ही समझेंगे. वाकु समझवेके लिये अपने पास ये सारे मॉडेल् हें. पुष्टि कर रह्यो हे तो या तरहसु समझमें आ रह्यो हे. पुष्टि नहीं कर रह्यो हे तो वो प्रमेय तो रहेगो के नहीं रहेगो? समझो के वो तुमपे पुष्टि नहीं करे तो क्या वो प्रमेय नहीं हे. प्रमेय तो हे. पर तुमकु समझ कैसे आयगो? जैसे तुमपे पुष्टि करी, तुम्हारे साथ वो कैसे इन्टरएक्ट् कर

रह्यो हे? वासु तुमकु समझमें आयगो

सेम्युअल् बॅकेट्को एक ड्रामा मोकु याद आ गयो. वाके ड्रामामें बड़े खूबसूरत तीन अंक हें. उन तीन अंकन्में कोई भी कथा नई नहीं हे. वो की वोही कथा हे. वो के वोही पात्र हें. मॉर् और लॅस् वो के वोही डायलॉग् हें. फिर भी ड्रामाके तीन अंक हें. और तीन अंकन्में हर बखत स्टार्ट भी एकही ढंगसु होवे हे, बीच और एण्ड भी वाही ढंगको हे. ड्रामा भी खतम हो जाय वाके साथ. वाकी सबसु बड़ी खूबसूरती ये हे के वहां ड्रामामें बैठे भये दो हीरो हें वो पहलो अपने दोस्तसु बात कर रह्यो हे. 'गोदो' शब्द वाने वापर्‌यो हे. वास्तवमें 'गोदो'को मतलब गॉड् भी हो सके हे और सब चीज हो सके हे. पूंजीवाद समाजवाद कम्युनिस्टवाद सॅक्युलरिज़्म् डेमोक्रेसी धर्म वगैरह सब हो सके हे. गोदोकु वो वहां क्लॅरिफाई नहीं कर रह्यो हे के गोदो क्या बला हे! साउन्ड ऐसो क्रियेट कियो के जैसे गॉड् होय. वो पेड़के नीचे गोदोकी बाट देख रहे हें. केह रहे हें के बुलायो हे गोदोने तो आज तो जरूर मिलवे आयगो. वो बैठके बातचीत कर रहे हें गोदोके बारेमें अपने अपने फितूरसु. ऐसो होयगो, ऐसो होयगो, मिलेंगे तब सब खुलासा हो जायगो. अचानक एक आदमी आवे हे और कहें हे के ''गोदोने कहवायो हे के आज वो बोहोत बिज़ी हे सो वो आज नहीं आ सकेगो पर कल आयगो.'' तो उनने कही के ''कल जो आयो हतो वो कौन हतो?'' बोल्यो के ''पता नहीं.'' तो पूछ्यो के ''कितने आदमी हें गोदोके पास?'' बोल्यो ''पता नहीं. मोकु मैं हूं ये पता हे.'' हर जो दावेदार हे इन सब वादन्के धर्मके सॅक्युलरिज़्म्के उनकु

दूसरे क्या हें वो पता नहीं हे. बस खुदकी पता हे. वो कल जो सवाल आ गयो हतो के **भक्तिमार्गी जीव स्वतन्तर केवळ भक्त न थाय**. हमारे अलावा भगवान्के पास पोहोंचवेको तुम्हारे पास कोई साधन नहीं हे. वो गोदोको मॅसेन्जर् ये ही मॅसेज् देवे हें के मेरे अलावा वहां कोई हे ही नहीं. तो पूछ्यो के ''कल जो आयो हतो वो भी तो ऐसे ही केह रह्यो हतो.'' तो कही के ''वाने ऐसे क्यों कही वो मोकु पता नहीं हे. मोकु इतनी पता हे के मेरे अलावा कोई वाके पास नहीं हे.'' तो पूछ्यो के ''कल तो आयगो?'' तो कही के ''हां कल जरूर आयगो.'' फर्स्ट एक्ट्में वो चल्यो जाय. दूसरे एक्ट्में भी ये ही हे. थर्ड एक्ट्में भी ये ही हे और ड्रामा पूरो हो जाय.

मतलब ड्रामा पूरो नहीं हो रह्यो हे. ड्रामा स्टेज्पे पूरो भयो हे पर वास्तविकतामें वो ड्रामा न जाने कबसु चल रह्यो हे और न जाने कब तक चलेगो! गोदो आवे नहीं हे पर आदमी प्रतीक्षा कर रह्यो हे. वेटिंग् फॉर् गोदो. एक्सेलेन्ट् ड्रामा हे. गोदोकु यद्यपि क्लीयर् नहीं कियो गयो हे पर अपन् मान लें के वो गॉड् हे. बात ध्यानसु समझवेकी यामें ये हे के हर व्यक्तिको भगवान्के बारेमें जो कन्सॅप्ट् हे वोही तो हे. अच्छा वामें ये और पूछें हें के ''अच्छा ये तो बता दो मिलवेसु पहले के वो क्रूर हे के दयावान् हे?'' तो वो मॅसेन्जर् कहें हे के ''वैसे तो बोहोत गुस्सैल हे पर बोहोत दोस्ताना नेचर्को भी हे. कोईकु पता नहीं हे के क्या हे और क्या नहीं हे!'' माने गुस्सा हे तो मारेगो, दोस्ताना हे तो तारेगो, ये भी कछु पता नहीं हे. जितने भी मॅसेन्जर् आवें वो एक ही बात कहें हें

के वैसे तो बोहोत क्रोधी हे पर इतनो तो मैं जानूं हूं के वो मेरे साथ बोहोत ही मित्रतावालो हे. जो आदमी इन्तजार कर रहे हें वो कभी भी आश्वस्त नहीं हो सकें के वो जब आयगो तो दोस्ताना तरीकेसु बिहेव् करेगो के दुश्मनाईके तौरपे बिहेव् करेगो? और वो बाट देख रहे हें. याकु 'एब्सर्ड ड्रामा' कह्यो जाय. ये लाईफ्की एब्सर्डनेस् हे. वो बेकेट्को मॅसेज् हे के लाईफ् एक एबसर्ड् फिनोमिना हे. अब जो भी पता चल रह्यो हे वो अपने अनुभवसु ही तो पता चलेगो जो के मॅसेन्जर् केह रह्यो हे के मेरे साथ तो बोहोत दोस्ताना बिहेव् करे हे पर गुस्सैल भी बोहोत हे. अब ये कैसे पता चलेगो के अपने साथ वो कैसे बिहेव् करेगो? वो तो बैठे भये हें बिचारे. कल भी बैठे भये हते, आज भी बैठे भये हें और कल भी बैठेंगे. एककालिक प्रतीक्षा नहीं हे पर ये त्रैकालिक प्रतीक्षा हे. या छोटेसे ड्रामामें अपन् समझ सकें के वाने बोहोत सिग्निफिकेन्ट् बातें केह दी हें पर अपन् साथ-साथमें ये भी समझ सकें हें के अपनी भी तो ऐसी लिमिटेशन्स् हें. वो ये के यदि अपन्कु भगवान्कु समझनो हे तो समझवेके लिये प्रमाण तरीके जो लीलायें हो रही हें, वो कौनसी हें? या बातकु ध्यानसु समझो के जा बखत अपन् सर्ग विसर्ग स्थान लीलाकी बात कर रहे हें तो लॉजिक्वालेन्कु ये पता चले के सर्गके कारण हमकु वाको कारण समझमें आयो. अरे जब तुम हते ही नहीं तो तुमकु पता कैसे चलेगो के क्या हतो? वो वेटिंग् करवेवालेन्की सिच्युएशन् हे हों! तुमने तो देख्यो नहीं हे. कोई आके केह रह्यो हे के वाने पैदा कियो. तुमने अपने् आपकु पैदा होते भये देख्यो? कोई अपने आपकु पैदा होते भये तो देख नहीं रह्यो हे तो वो जो सर्गलीला हे वो प्रमाण नहीं हे. वो तो

तुमकु प्रमेय मानके चलनी पड़ेगी. पर प्रमाणता कहांसु प्रगट होयगी. तुम वाकु कैसे समझ पाओगे ? वो जा तरहसु तुमसु इन्टरएक्ट् करे वा इन्टरएक्शन्के कारण वाकु समझवेके लिये तुम्हारी बुद्धि कछु तैयार होयगी. वो पोषणलीलाके ऑनवर्ड महाप्रभुजी केह रहे हें के ये प्रमाणलीला हे. कितनी खूबसूरत एनेलॅसिस् हे महाप्रभुजीकी!

(ईशानुकथा निरोध मुक्ति लीला : ज्योतिरूपा लीला)

"ईशाकथादिषु." और ईशानुकथा निरोध और मुक्ति ये तीन कथायें हें वाकेलिये तो आप कह रहे हें के वो एनलाइट्निंग् कथा हें. ज्योतिरूपाकी कथायें हें. 'ज्योतिरूपा' माने एस्ट्रॉलॉजी नहीं. अपनी अन्डरस्टॅन्डिंग् वा तरहसु हो गई, एनलाइट्निंग् एकम्पलिश् हो गई. माने ये प्रमाण हतो. ये तीन लीलायें माने पोषण ऊति मन्वन्तर ये प्रमाण लीलायें हें. ईशानुकथा निरोध और मुक्ति वो एक नहीं तो दूसरे लेवल्पे एनलाईटनिंग् हे, वो वाकी लीलायें हें. हमकु समझमें आयो के वो फिनोमिना क्या हे? इन सब लीलान्कु इवेल्युऐट् करवेको ये एक टोटली डिफरेन्ट् एप्रोच् हे. और ये जो मॉडेल् हे, ये अपन् यहां भी एप्लाई करें. मेरी इच्छा ये हे के नवाख्यानकी नवविध लीलायें हें उनमें सर्ग विसर्ग और स्थान कु अपन् प्रमेयलीला समझें. पोषण ऊति मन्वन्तर के स्थानापन्न चार पांच छः आख्यानकी जो लीलायें हें, उनकु अपन् प्रमाणलीला समझें. जो प्रमेय सिद्ध भयो वाके साथ तुम कैसे इन्टरएक्ट् करोगे और वो तुमारे साथ कैसे इन्टरएक्ट् करेगो? वाके इन्टरएक्शन्के प्रमाणकी लीलायें हें. और वाके बाद जो एनलाईटनिंग्की तीन लीलायें हें, ईशानुकथा निरोध और मुक्ति. माने सात आठ और नवें आख्यानमें

एनलाईटन्मेंट् हो गयो. यासु नवाख्यानको एक बोहोत ही सुन्दर व्यु अपने सामने प्रगट होवे हे.

(पुष्टिसाम्प्रदायिक स्थानलीला माने गुसांईजीकी प्रमेयरूपता)

आज जापे अपन्कु आगे बढ़नो हे वामें कल जो मैं केह नहीं पायो समयकी कमताईशके कारण; वामें **मुखसुगन्धे मोह्या अलिसकल ते आवी करे रे गुंजार. सरस वचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार.** कल मैंने थोड़ीसी आपकु हिन्ट् दी हती. महाप्रभुजीकी और गुसांईजीकी भाषामें थोड़ो अन्तर हे. कल मैंने ये बात भी बताई हती के महाप्रभुजी ब्रजके कल्चर्की गाली नहीं दे हें. छुपी छुपाई गालियां दे हें. जो जाने वोही समझ सके, हरेककु तो पता भी नहीं चलेगो के गाली दे गये. गुसांईजी थोड़े ब्रजके कल्चर्की गाली दें हें. गाली देनी हे तो बिन्दास गाली दे दी. माने एक ठिकाने भक्ति और वैराग्य कु कम्पेयर् करते समय तो इतनी विचित्र बात कहे हें के "हम तुमकु कमल सूंघवानो चाह रहे हते. तुमने कही के 'नहीं नहीं हमकु तो वैराग्य हे' ठीक हे मत सूंघो कमल. पड़े रहो जाके गटरकी बास ले रहे हो!" ये कैसी गाली दे दी हे! पूरे ब्रजके ठाठकी गाली हे. "हम तो तुमकु कमल सूंघानो चाह रहे हें के भई सूंघो तो कमल." पर उनने कही "नहीं नहीं हम तो विरक्त और त्यागी हें, कमल नहीं सूघेंगे. अन्यथा तो हमकु अनुराग हो जायगो." "ठीक हे हमने छोड़ दियो मत सूंघो कमल पर पड़े तो तुम जाके गटरमें ही और वाकी बास ले रहे हो." ऐसी गाली अपन् महाप्रभुजीसु एक्स्पॅक्ट् नहीं कर सकें. ये तो गुसांईजीको ब्रजको ठाठ हे एकदम. कोईकु धूमधड़ाकासु गाली दे दें हें. ये सारी

स्टाईल् गुसांईजीके लेखनमें हे. वार्ता-साहित्य पढ़ें तो बोहोत ही सुन्दर स्टाईल् हे. छोटे-छोटे एक-एक वाक्य और सामनेवालेको संशय खतम. बोलवेमें गुसांईजीकी स्टाईल् या तरहकी नहीं हे. जैसे सात स्वरूपन्को अन्नकूट कियो. वामें गुसांईजीको एक छोटोसो वाक्य हे ''लौकिकता बढ़ जायगी, करनो होय तो करो'' **सरस वचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार**. ज्यादा बोले ही नहीं. इतनी कही के ''करनो होय तो करो अन्नकूट, पर लौकिकता बढ़ जायगी.'' अपने बेटीजी दर्शन करवे आ गये अपने ठाकुरजीकु छोड़के तो आपने खाली इतनी ही पूछी के ''तेरे घर कोई और बिराजे हे जो तू यहां दर्शन करवे आई? मैं नहीं कह रह्यो हतो के लौकिकता बढ़ जायगी. देखो बढ़ गई.'' **सरस वचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार**. वार्तामें यदि अपन् गुसांईजीके छोटे-छोटे वचन सोर्ट-आउट् करें तो वो कितने खूबसूरत हें के देखते ही बन आवे. अपन्कु थ्रिलिंग् अनुभव होवे के कितनी बड़ी बात कितने छोटेसे शब्दन्में वाक्यन्में आपने केह दी हे. कृष्णदासजीकु कह दियो ''तिहारे कियेको फल पावत हें.'' गिरिधरजीने उनकु अरेस्ट् करवा दियो, वा प्रसंगमें कछु ज्यादा नहीं बोले. बस इतनो ही बोले के ''कृष्णदास जब आयेंगे तब पानी लऊंगो.'' अरे भई जो इतनी तकलीफ दे रह्यो हे वाके लिये ऐसो क्यों? **सरस वचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार**. उनकी जो कॉलोकियल् (बोलचालकी) भाषा हे वामें गुसांईजीकी टोटली डिफरेन्ट् स्टाईल् वार्तामें प्रगट भई हे. वो महाप्रभुजीकी कल्चर् गुसांईजीके बोलवेमें हे पर लिखवेमें नहीं हे. वामें ब्रजकी कल्चर् हे. ये महाप्रभुजीकी बोलवेकी स्टाईल् हे. जब बोलते होंयगे तो महाप्रभुजीकी स्टाईल्में बोलते होंयगे पर जब लिखें

तब ब्रजकी स्टाईल्में लिखें हें. ''बोलन्त हेला वचनन्त गाली.''

तो अपन् समझ सकें हें के गोपालदासजी जो ये बात कह रहे हें के **सरस वचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार.** ज्यादा एक्स्प्लेनेशन् देवेकी जरूरत नहीं हे. अरे वहां देखो ना, नारायणदासकु विट्ठलदासके लिये कितनी छोटीसी बात कही ''अरे वैष्णव नहीं जान्यो पर जीव तो जान्यो होतो.'' तो कितनी बड़ी बात कह गये! नारायणदासने कही के मैंने वैष्णव नहीं जान्यो. तो गुसांईजीने क्या कही ''कहा भयो जो वैष्णव नहीं जान्यो. मनुष्य तो जान्यो होतो.'' कितनी बड़ी बात कह दी गुसांईजीने. वो कुंजड़ीको प्रश्न आयो तो वामें भी अपन् देख सकें. ''झारी छू जायगी तो नई आयेगी. प्राण गये तो कहांसु आयेंगे! **सरस वचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार.** ये गुसांईजीकी बोलवेकी स्टाईल् हे और गोपालदासजी वाकु एप्रीसियेट् कर रहे हें. कितनी नजदीकीसु उनने वाकु फील् कियो हे और अपने तहेदिलसु वाकु एप्रीसियेट् कर रहे हें. या लिये या गोपालदासजीकी पंक्तिमें अपन् पोषणके प्रमाणको प्रोग्राम् देख रहे हें. मैंने महाप्रभुजीको कन्सॅप्ट् या लिये इन्ट्रोड्युस् कियो के कैसे वो प्रमेयके प्रमाण होवेको मॉडेल् रिवील् होवे हे! वा बातकु दिखावेके लिये. या बातकु देखो गोपालदासजीने यामें एक बड़ी ही रिमार्केबल् बात कही हे, **मुखसुगंधे मोह्या अलिसकल ते, आवी करे रे गुंजार. सरस वचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार.** यामें एक वचनकी सरसता हे जो बोल रहे हें और एक संशयवारकता हे. सरसताके कारण स्नेह पैदा होवे हे. कोईके भी सरस वचन स्नेह पैदा करवेवाले होवें हें. और संशयवारकताके कारण अज्ञानके निवारक होवें हें. वो

सुनवेवालेके दिलमें एक ऐसी प्रोग्रामिंग् खड़ी कर दे रहे हें के भक्ति जो माहात्म्यज्ञानपूर्वक सुदृढ़ सर्वतोधिक स्नेह हे वाको मूड एक वामें थोड़ोसो तैयार हो जाय सुनवेके साथ ही.

सरस वचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार. भई एक आदमी कैसे बोल रह्यो हे? स्नेहसु ऐसी बात नहीं कर रह्यो हे के जो झूठी होय और सच्ची बात भी ऐसी नहीं कह रह्यो हे के जो कड़वी होय! **"सत्यं ब्रूयात् प्रियं बूयात्."** वा तरहको प्रेम और सत्य के कोम्बिनेशन्में बोलवेकी जो छटा हे वा छटासु जो सुनवेवालो हे वाकु गुसांईजी कौनसी तरहके प्रमाण हें, ये कन्वे हो जायगो. नेट् रिज़ल्ट वाके दिलमें स्नेह भी पैदा होयगो, ज्ञान भी पैदा होयगो. वाकी बुद्धिमें संशयपरिहारसु ज्ञान भी पैदा भयो, हृदयमें स्नेह भी पैदा भयो. वाको भक्ति करवेके लिये एक मूड् बनेगो और वो फिर गुसांईजीको यहां प्रमेयरूप नहीं रहके प्रमाणरूप हो गयो. जो महाप्रभुजी आज्ञा करें हें के पुष्ट्यादिककी जो लीलायें हें वो प्रमेयरूप लीलायें नहीं हें पर प्रमाणरूप लीलायें हें. वो अपन् देखें तो यहां बोहोत खूबसूरतीसु गोपालदासजी वा मॉडेल्कु एकोमोडेट् कर रहे हें. **नाम–ब्याजे प्रगट कीधो मुक्ति–शत्रुकार. भुजदण्डपरसें भय हर्या एवा नाथ अमित उदार.**

शरदबाबाने सेमिनार् करी वामें एक मुखर्जीकु बुलाये. बोहोत बड़े विद्वान. मुखर्जीने आते ही पहलो सवाल मोसु ये कियो के "गोस्वामी तुम्हारे एक्स्पॅक्टेशन् क्या हें मोकु इन्वाईट् करवेमें? क्या तुम ये चाह रहे हो के तुम्हारी जो भी कछु फिलोसफी या एप्रोच् हे

वाकी हम प्रशंसा करें? अथवा हम क्रिटिसाईज़् करें तो वाकु तुम सहन करवेके लिये तैयार हो के नहीं?" पोइन्ट् ब्लॅन्क् उनने ये सवाल कियो के "तुम चाह क्या रहे हो हमसु?" वा बखत मैंने उनकु एक बात कही के "देखो हमारो जो भी फिलोसोफिकल् एप्रोच् हे वाकी यदि प्रशंसा करवानी होय तो हमारे पास हजारन् लोग हें. कोईके सामने कोई भी बालक सच्ची झूठी बात बोले तो 'लालजी जीत्या'की झांझ तो बज ही जाय. तो ऐसे श्रोता तो हमारे पास पहलेसु ही मौजूद हें. तो हम अपनी प्रशंसा करवावेके लिये आपकु नहीं बुला रहे हें. प्लीज् माईन्ड इट्. हमकु ये नहीं पता हे के हमारे सिद्धान्त या फिलोसिफिकल् एप्रोच कु क्रिटिसाईज़् कोई कैसे कर सके हे! क्योंके जहां लालजी जीत्याको वातावरण होय तो वहां वाक्य पूरो नहीं होय और झांझ बज जाय पहलेसु ही के लालजी जीत्या तो हमकु कैसे पता चले के हमारे बोलवेमें क्या गलती हे, क्या गडबड हे? तो मैं सिन्सीयरली ये चाहूं के हमारे बोलवेमें जो कछु गलती दिखलाई देती होय वाकु हमारे सामने रखो. हमकु अच्छो लगेगो." गोपालदासजी गुसांईजीकी प्रशंसा करें तो कोई भी आदमी खपायेगो के लालजी जीत्या हो रह्यो हे.

(प्रमाणलीला : गुसांईजीको रोल्–मॉडेल् भक्तिके लिये)

नाभादासजीने भक्तमाल लिखी हे. वा बखतके उनके जमानाके जितने भी भक्त भये उन सबकी एक एनसाइक्लोपीडिया हे. कई तरहकी भक्तमाल हें. वो टाईम् टु टाइम् अपडेटेड् भी होती रही हें. मराठीमें भी लिखी गई हें. गुजरातीमें हें, हिन्दीमें हें. वासु पहले छेली भक्तमाल भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजीने लिखी हे जो अपने पुष्टिमार्गीय हते.

वामें सम्प्रदायकु विषय बनाके नहीं, पर कोई भी सम्प्रदायके, कोई भी धर्मके जो भक्त भये हें उनकी शॉर्ट इन्ट्रोडक्शन् भक्तमालमें दियो गयो हे. वा भक्तमालमें गुसांईजीके लिये ये कह्यो गयो हे गुसांईजी जा बखत गोकुलमें ठाकुरजीकी सेवा करते हते तो उनके साथ रहवेवालेनकु मुक्तिकी आकांक्षा खतम हो गई हती क्योंके सब ऐसे फील् करते हते के हम मुक्त हें. ये लालजी जीत्या नहीं हे हों!

ऐसे गोपालस्तुति करके श्रीनाथजीकी स्तुति हे. चैतन्य सम्प्रदायके बोहोत बड़े विद्वान भये हें उनने स्तुति की हे. स्पष्ट वा गोपालस्तुतिमें कहे हें के गुसांईजी जा बखत श्रीनाथजीकी सेवा करते हते वाके कारण श्रीनाथजी जाड़े-पाड़े हो गये. अब कैसे जाड़े-पाड़े हो गये वो तो भगवान् जाने. वो कहें हें के इतने लाड़ लड़ायें हें गुसांईजीने श्रीनाथजीके के श्रीनाथजी हृष्ट-पुष्ट हो गये. वो अपन् नहीं कह रहे हें. वो चैतन्यसम्प्रदायके हें वो लोग जो के महाप्रभुजीकु निरन्तर गाली दे रहे हें. चैतन्यसम्प्रदायके लोग तबसु लेके अब तक अपनकु निरन्तर गाली दे हें. अब पता नहीं के गुसांईजीकी क्या पकड़ हे के वो कबूल कर रहे हें के आपने श्रीनाथजीकु तो ऐसो लाड़ लड़ायो के श्रीनाथजी हृष्टपुष्ट हो गये वा लाड़के कारण. तो अपन् समझ सकें हें के वो एक माहोल हतो वा माहोलसु वो प्रमाण बने हते. भक्ति करनी होय तो कैसे वाको सच्चो स्वरूप जाननो वाको प्रमाण क्या? तो वाके एक रोल् मॉडेल् गुसांईजी हैं के भक्ति ऐसी करनी. प्रमाणको मतलब क्या? रोल् मॉडेल् होनो कोईको. तो उनने अपने आपमें एक रोल् मॉडेल् एस्टाब्लिश् कियो के ऐसो होनो चहिये भक्तकु. प्रमेयलीला नहीं हे

पर प्रमाणलीला हे. वासु देखो ये आख्यान कैसे ढंगसु टॅली हो रह्यो हे. **नामब्याजे प्रकट कीधो मुक्ति–शत्रुकार. भुजदण्डपरसे भय हर्या एवा नाथ अमित उदार. स्वस्वरूपार्थे प्र्योजिया कृत हुता जे संसार. राजकाजे जोडिया जन उच्चावच नरनार.**

('राज'को अर्थ)

हमारे एक बड़े स्नेही हें गौंडलमें बकुल भाई. उनने आज मोकु एक एस.एम.एस. भेज्यो और उनने कही के 'राज'को मतलब प्रिय हे. मैं एक बात बताऊं के गुजरातीमें प्रियकु 'राज' कह्यो जाय हे वासु अपन्कु ऐसो कन्फ्युजन् होवे के राजको मतलब प्रिय हे. शादीमें गवे न के 'जोड़े रहेजो राज.' वामें 'राज' आवे पर वो प्रियके अर्थमें नहीं हे माईन्ड् इट्. प्रियकु 'राज' या लिये कह्यो जाय हे के वो प्रिय होवेके कारण अपने दिलपे राज कर रह्यो हे. वा लिये वाकु 'राज' कह्यो जाय हे. प्रिय होवेके अर्थमें नहीं पर राजा होवेके अर्थमें ही. गुजरातीको शब्दकोष तुम चॅक् कर लीजो, राजको अर्थ प्रिय नहीं हे, राजको अर्थ गुजरातीमें भी राजा ही बतायो गयो हे. तो प्रियकु राजा या लिये नहीं कह्यो जाय के राजा प्रिय होवे हे. पर वो राजा हे या लिये के वो प्रिय हे. वो राज्य कर रह्यो हे अपने दिलपे वा लिये वो राजा हे. सो **राजकाजे जोडिया जन उच्चावच नरनार.** प्रियमें जोड़ियो ये मतलब मत लीजियो; बकुलभाईकु मैंने फोन करके भी बताई हती ये बात. पर फिरसु बकुलभाई सुनें यालिये उनकु कहनो चाह रह्यो हूं, ये क्लॅरिफिकेशन् करनो चाह रह्यो हूं के राजको मतलब प्रिय नहीं हे पर प्रियकु 'राज' कह्यो जाय हे. अपन् ऐसे बोहोत सारे प्रयोग

करते होवें. जैसे बम्बईमें गुण्डान्कु 'दादा' कह्यो जाय. तो दादाको मतलब गुण्डा नहीं हे पर वो बड़ो भाई जैसो अपन्पे हुकम चलावे, ऐसे गुण्डायें भी हुकम चलावें, या अर्थमें. पर दादाको मतलब गुण्डा नहीं होवे. ये बात समझ लेनी चहिये. सो **राजकाजे जोडिया जन उच्चावच नरनार.** या तरीकेके प्रयोगमें 'राज' शब्द प्रियके अर्थमें क्यों नहीं लेनो? वाको एक कारण ध्यानसु समझो के जब अपन् कोई अपने प्रियकु एड्रेस् करके बोलते होंय तब वाकु 'राज' कहेंगे. जब थर्ड पर्सन्के लिये बोल्यो जा रह्यो हे तब राजको अर्थ प्रिय करोगे तो वो अर्थ नहीं हे यहां. अपन् सामने जब कोईकु प्रिय कह रहे हें तो वाकु राज कहें हें. जैसे वार्तामें आपकु निरन्तर मिलेगो गुसांईजीकु 'राज' कह रहे हें. तो वो प्रियके अर्थमें नहीं हे पर मेरे दिलपे आप राज करो हो या लिये राज. तो जो भी या नेचर्के राजायें हें, वामें **जन उच्चावच नरनार** – अब यामें कौनसे राजा? टीकाकारन्ने दो अर्थ किये हें. जैसे आसकरणदासजीकु गुसांईजीने अकबरके पास नौकरी करवेकी कही. और भी कछु जो गुसांईजीके समधी हते, उनकु भी गुसांईजीने लगवा दिये हते नौकरीपे अकबरके यहां. तो उनकु यहां नहीं रखनो हतो तो वहां लगा दियो. वो जोड़े नहीं हते ऐसी बात नहीं हे. पर जिनकु जहां लगाये वहांके अर्थमें या राजाकु लेनो के और कोई दूसरे अर्थमें लेनो? वामें अपनो निकष क्या होयगो? **स्वस्वरूपार्थे प्र्योजिया कृत हुता जे संसार.** यहां आके वो सारी चाबी खुल जा रही हे. जो संसारमें रचे पचे हते, उनको जो सच्चो स्वरूप हतो वा सच्चे स्वरूपके लिये उनकु प्रयोजित कियो. उनकु एपॉइन्ट् कियो. तो **स्वस्वरूपार्थे प्र्योजिया** ये तो सहज हो सके. कोई गिलिन्डर् होय तो वाकु गिलिन्डर्के यहां

लगा दें. कोई सीधो होय तो वाकु सीधे कामपे लगा देनो. कोई झगड़ालु होवे तो वाकु झगड़ाके कामपे लगा देनो. कोई प्रेमी होय तो वाकु वैसे कामपे लगा देनो. ये तो अपन् समझ सकें के **स्वस्वरूपार्थे प्त्योजिया** पर अकेले यासु निर्णय नहीं होयगो. ये इन कॉन्ट्रास्ट् विद् **कृत हुता जे संसार.** संसारके विसाविस् माने संसारको जो स्वरूप हे; **''स्वरूपस्थो यदा जीवः कृतार्थः स निगद्यते.''** (बा.बो.७) वा स्वरूपमें याकु लेनो पड़ेगो. क्योंके कृत हुता जे संसारके कॉन्ट्रास्टमें **स्वस्वरूपार्थे प्त्योजिया** केह रहे हें. तो फिर ऐसो लगे हे प्राईमाफेसी राजको मतलब यहां ठाकुरजी हें. व्यक्तिकु जा तरहसु ठाकुरजीकी सेवा; क्योंके सभी **उच्चावच नर नार** होवे. हर व्यक्ति एक तरहकी सेवा नहीं कर सके.

(गुसांईजीके सरसवचनसु पुष्टिजीवन्की स्थितिके अनुरूप पालन)

आज जो अपन्ने पुष्टिमार्गमें कबाड़ा चलायो हे के सबकु मर्याद लेनी, सबकु कुआको पानी, सबकु ये करनो वो करनो, ऐसे नहीं. **उच्चावच नरनार** जा तरहसु वो सेवा कर सके. जो सेवाप्रणालीमें सेट्–अप् महाप्रभुजीने खड़ो कियो हे के जो अव्यावृत्त हे वो सेवा करे; जो व्यावृत्त हे वो या तो कथा करे. कथा नहीं करे तो परिचर्या करे और जब परिचर्या करे; जाके लिये अपने यहां 'परचारगी' शब्द प्रयोगमें लायो गयो; ये परचारगी कर रह्यो हे सेवा नहीं कर रह्यो हे. तो परचारगी करनो भी अन्तमें उच्चावच सेवा ही तो हे. एक उच्च सेवा और अवच सेवा. ऊंची और नीची सेवा. सब तरहकी सेवा अन्तमें सेवा ही हें. तो **राजकाजे जोडिया जन उच्चावच नरनार.** उनकु उनके ग्रेड्के हिसाबसु जो कर सकते

हते वा काममें लगायो. अपन् वाको उदाहरण समझ सकें.

वार्तामें आवे हे ना! एक वैष्णव खूब पाठ करतो पर गुसांईजी कभी नहीं बोले. पर एकदिन गिरिराजजीकी तरहटीमें वाकु ये भावना जगी के यहांके कांटा-कंकड़ सब दूर कर दें. सांझकु ठाकुरजी पधारते होंयगे. तो वा दिन गुसांईजी वासु बोले. तो वाकी धीरज खूट गई. सो वाने पूछी के आज तक आप बोले नहीं तो आज बोले कैसे? तो आपने कही ''अभी तक तू तेरो चिन्तन करतो हतो आज तैंने ठाकुरजीको चिन्तन कियो. या लिये तोसु बोल्यो.'' **सरसवचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार.** मैं बोलुं तो कब बोलुं ये उनने खुलासा कर दियो, वाकी ये शर्त हे. जब तू तेरी सोच रह्यो हतो, पाठ कर रह्यो हतो तो अच्छी बात हे, कोई बुरी बात नहीं हे, पर **स्वस्वरूपार्थे प्र्योजिया कृत हुता जे संसार. राजकाजे जोडिया,** देखो कैसे जोड़े, **जन उच्चावच नरनार.** कोई ऐसी जरूरत नहीं हे. बस वाके मनमें ये भावना जगी के ठाकुरजी गाय चरायके यहांसु पधारेंगे तो कंकड़-पत्थर नहीं चुभने चहियें चरणमें, वहां थोड़ी सफाई कर दी, तो गुसांईजीने बोलके **सरस वचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार** कर दियो. ये गुसांईजीकी स्टाईल् हे जो वार्तामें इतनी बिखरी भई हे. यदि अपन् देखें तो अपनकु थ्रिलिंग् लगे के आप कैसे टॅकल् कर रहे हें हर कॉम्प्लीकेटेड् मॅटरकु! वेश्याकु कह दी के ''हां हां तू रजस्वलामें सेवा कर.'' फिर सबनकु कही के ''तुम याकी नकल मत करियो.'' **सरसवचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार.** वेश्याकु बुलाके पूछी के ''तू ऐसे उपद्रव क्यों करे हे?'' वाने कही के ''मैं क्या करूं? मेरे यहां कोई सेवा करवे नहीं

आवे.'' तो वाकु कही के ''तू करियो.'' बाकी सबन्कु ना पाड़ी के ''तुम याकी नकल मति करियो.'' ज्यादा लफड़ाकी जरूरत नहीं हे.

अब देखो यामें संदेहवारकता भी प्रकट हो रही हे और स्नेहजनकता भी प्रकट हो रही हे करके जो भी गुसांईजीकी बात सुन रह्यो हे, वाके दिलको, दिमागको एक ऐसो मूड बन रह्यो हे के जो भक्तिके लायक होवे. जा मूडमें भक्ति एकोमोडेट् की जा सके. ऐसो कठोर मूड बना देनो के जामें भक्ति बिचारी एकोमोडेट् ही नहीं हो सके, आवे तो भक्ति घबराती होवे के कहां फंस गई!! कहां ट्रॅप् हो गई, बचाओ, बचाओ, बचाओ. माने भक्ति पाछी ये कहे के **भक्तिमार्गी जीव स्वतन्तर केवळ भक्त न थाय.** मोकु बचाओ, मोकु बचाओ, मैं कहां फंस गई? तो या तरहको इन वचनन्को अर्थ नहीं हे.

(गुसांईजीकी प्रमाणरूपा पोषणलीला)

आपके वचन बोलवेकी एक छटा हती. वा छटापे जब अपन् ध्यान देवें तब अपन्कु स्पष्ट लगे के ये महाप्रभुजीने जो प्रमाणकी बात करी हे के पुष्ट्यादिके ऑनवर्ड प्रमाणलीला हे. तो कैसे वो जता रहे हें, अपनो सिद्धान्त क्या हे, अपनी प्रॅक्टिस् क्या हे, अपन् कौनके साथ इन्टरएक्ट् कर रहे हें. इन बातन्कु गुसांईजी प्रमाणन्सु जता रहे हें. वाही तरहसु **आगळ अंशे प्रगटिया ते ग्रंथ कह्या बहुवार. श्रीयशोदोत्संग–लालित पूरण अतिसुकुमार.** यामें टीकाकारन्में बोहोत मतभेद हे. इन मतभेदन्की चर्चा करें तो याको अन्त ही नहीं आयगो. अपन् थोड़ो सरस वचन गुसांईजीको सुन लें. गुसांईजीने

एक बोहोत ही सरस वचन उच्चार कर दियो हे. वो अपने संशयको परिहार करवेके लिये बोहोत हे. **''जहां भी कोई भी भक्त सकाम भक्ति कर रह्यो हे तो वो पुरुषोत्तम पर्यवसायिनी नहीं हे, वो विभूतिपर्यवसायिनी हे.''** कामना होनी चहिये के नहीं होनी चहिये ये तुम्हारो हेडेक् हे. पर गुसांईजी जो अपनो पोषक पुरुष हे, वाने एक वचन साफ कह दियो हे के **"जो सकाम भक्ति हे, वो भक्ति हे के नहीं हे वो सब बादमें सोचतो रहियो फुरसतसुं."** एक सरस वचन उच्चार इतनो हे के वो पुरुषोत्तमपर्यवसायिनी नहीं हे पर विभूतिपर्यवसायिनी हे. तब ये प्रोब्लम् आई के फिर पुरुषोत्तम पर्यवसायिनी कौनसी तरहकी भक्ति होवे? ये सब मैं वार्तान्मेंसु बता रह्यो हूं. गुसांईजीके ग्रन्थन्की बात बता रह्यो हूं. गुसांईजी आज्ञा करें हें वहां **''श्रीवल्लभाचार्यमते फलं तत्प्राकट्यम् अत्र अव्यभिचारिहेतुः प्रेमैव''** (वै.वे.२५२ वा.१.प्र.५) ये सरस वचन हे. ये मैं क्यों बता रह्यो हूं श्लोक आपकु? गुसांईजीकी प्रमाणरूपता समझावेके लिये. ऐसे मत समझियो के डायग्रेशन् कर रह्यो हूं. वाको प्रगट होनो फल हे. वाको अव्यभिचारी हेतु माने कभी जामें मटकाबाजी नहीं करनी पड़े. जुआ नहीं खेलनो पड़े, ऐसी. वामें नवधाभक्तिको विनियोग हे.

(अखिल साधनन्को भगवत्सेवार्थ विनियोग)

और वा नवधाभक्तिमें जितने भी साधन तुम्हारे होंय, लौकिक वैदिक सबको नवधाभक्तिमें विनियोग हे. **"तत्र उपयोगः अखिल साधनानाम्."** सो उच्चावच नरनारकी मोडस् ऑपरेन्डी क्या हे? ये गुसांईजीने यामें बतायी हे. कोई ठाकुरजीकी सेवा प्रेमसु करेगो; कोई

प्रेमसु नहीं करेगो तो नवधाभक्तिसु करेगो, उच्चावच नरनार; कोई वो नवधाभक्ति करवेके लिये भी समय नहीं निकाल पा रह्यो हे तो जो वो घरमें काम कर रह्यो हे वो नवधाभक्तिमेंसु एक भक्ति कर रहे हें, उनमेंसु उनकी परिचर्या कर रह्यो हे, **"तत्रोपयोग: अखिलसाधनानाम्"** माने **"लौकिकानां वैदिकानां तत्र उपयोग:";** या तरहसु परिवारकु प्लान् करो. ये ओछाबाल जयगोपालकी बात नहीं हे हों. फॅमिली प्लानिंग्को एक वो मॉडेल् हे और फॅमिली प्लानिंग्को एक ये मॉडेल् हे. नागजीभट्टकी वार्तामें ये आयो हे. **''श्रीवल्लभाचार्यमते फलं तत्प्राकट्यम् अत्र अव्यभिचारिहेतु: प्रेमैव, तत्र उपयुक्ता नवधोक्तभक्ति: तत्र उपयोगो अखिलसाधनानाम्. य: कुर्यात् सुन्दराक्षीणां भवने लास्यनर्तने, तासां भावनया नित्यं स हि सर्वफलानुभाक्."**(वहीं)

ये उनको प्रमेयतत्त्व कैसो हे, वाको अनुभव करवेके लिये अपन्कु वाके साथ कौनसी तरहसु इन्टरएक्ट् करनो. अब अपन् हरेकसु कहें के प्रेम करो. वो नहीं कर पायगो. हरेकसु कहें के नवधाभक्ति करो. नहीं कर पायगो. नवधाभक्ति नहीं कर पायगो पर जो लोग घरमें नवधाभक्ति कर रहे हें उनकी नवधाभक्ति बराबर मेन्टेन् होवे, वा मेन्टेनेन्स्के लिये यदि वो उनकी सहायता कर रह्यो हे, परचारगी कर रह्यो हे, अखिल साधन जो वाके पास मौजूद हें, वाकु भी **राजकाजे जोडिया जन उच्चावच नरनार.** ये मॉडेल् गुसांईजीको गोपालदासजी समझानो चाह रहे हें.

स्वस्वरूपार्थे प्र्योजिया मैं स्वस्वरूपको अर्थ ये ले रह्यो हूं

के तुम कमा रहे हो तुम्हारो पेट भरवेके लिये. यदि तुम पुष्टिभक्त हो तो तुमकु ये महसूस होनो चहिये के मैं अपनो पेट भरवेके लिये नहीं कमा रह्यो हूं. तो फिर सवाल आयगो के काहेके लिये कमा रहे हो? भगवत्सेवाके लिये कमा रहे हो. भगवत्सेवा तो तुम कर ही नहीं पा रहे हो. कैसे वाकु एकोमोडेट् करोगे? जा बखत महाप्रभुजी आज्ञा ये कर रहे हें के **''सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिप:, स्वस्यायमेव धर्मोहि नान्य: क्वापि कदाचन.''** (चतु.१) अपनो विसर्गलीलाकारी पुरुष हे वो तो पूर्णपुरुष प्रमाणपंथा हे, वाने विसर्ग तो कर दियो, अब प्लेसमेन्ट् कहां करनी? भजनकु कौनसी जगह, कौनसे ठिकाने प्लेस् करनो? कौनसे व्यक्तिसु कौनसे ढंगसु घरमें भजन निभेगो? वामें कैसो भजन प्लेस् करनो, कैसे भजनके लिये वाकु घरमें प्लेस् करनो, वो जो इनसाईट् हे, वो गुसांईजीने बताई हे के नहीं बताई हे? **''तत्र उपयोग: अखिलसाधनानाम्''** कोई भी साधन लाओ, लड़नो, मरनो, मारनो, झगड़नो, जीनो, मरनो सब साधनन्को वामें उपयोग करो. वाको ऑर्डर्, वाकी हियरार्की बता रहे हें. ऑर्डर् क्या हे? प्रभुप्राकट्यजनकप्रेम, वो प्रेम प्रकट होयगो सेवाकथात्मक भजनसु; वा सेवाकथात्मक भजनमें नवधाभक्ति; अखिल जो साधन हें तुम्हारे, माने लौकिक वैदिक उनको विनियोग यामें करनो. ये भीतको पत्थर हे. या दुनियामें जा साधनन्सु तुम जी रहे हो, वो स्वस्वरूपार्थे प्त्योजिया. गुजरातीमें एक बोहोत अच्छी कहावत हे, **निशानचूक माफ पण नहीं माफ ते नीचुं निशान.** निशान तो अपनो सच्चो रखो. अपनो निशान यहां रखो, चाहे कुछ भी कर रहे हो. जा तरहसु महाप्रभुजीकी बताई भई पुष्टिभक्तिकु उनने **स्वस्वरूपार्थे प्त्योजिया कृत हुता जे संसार.**

(अपनो स्वस्वरूप पोर्सुवा हे माने प्रभुके लिये होनो)

मैं ये दूसरे व्याख्याकारन्‌की टीका नहीं कर रह्यो हूं; उनने अलग–अलग अर्थ किये हें; उन अर्थन्‌के बारेमें मोकु ऑब्जेक्शन्‌ भी नहीं हे. अच्छी लग रही हें वो व्याख्यायें भी. पर मोकु ये लग रह्यो हे के यहां तो गोपालदासजी ये ही बात कहनी चाहे हें के जो संसारमें रचे पचे हें, उनकी कछु सीमायें भी हें के यामेंसु क्या कर पायेंगे और क्या नहीं कर पायेंगे? जो उनकी सीमायें हें के ये कर पायेंगे और ये नहीं कर पायेंगे तो जो कर पायेंगे वो करवेके कारण उनको स्वरूप तो समझानो के नहीं? जब उनकु अपन्‌ स्वरूप समझायेंगे के तुम्हारो स्वरूप देखो ये हे. माने राजकाजमें तुम जोड़े गये हो. अब कौनसे ग्रेड्‌पे तुम जोड़े गये हो, वा ग्रेड्‌पे तुम सेवा शुरु करो. जा भी ग्रेड्‌पे तुम सेवा शुरु कर सकते हो वा पुष्टिके राजाकी वा ग्रेड्‌पे तुम सेवा शुरु करो. याको देखो एक ऑर्डर्‌ बतायो हे.

या श्लोकपे कोईने इतने विस्तारसु प्रवचन या व्याख्या करी मिले नहीं हे, पर या कलीकी एक एक पत्तीकु खोलके देखें तो बोहोत मल्टी डायमेन्श्नल्‌ साईट्‌ यामें मिलेगी के ऑर्डरिंग्‌ क्या होनी चहिये. ''**सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिपः, स्वस्यायमेव धर्मोहि नान्यः क्वापि कदाचन्‌.**'' याकी ऑर्डरिंग्‌ कैसी होनी चहिये. वो महाप्रभुजीने इशारा तो दियो हे के ''**अव्यावृत्तो भजेत्‌ कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः, व्यावृत्तोऽपि हरौ चित्तं श्रवणादौ न्यसेत्‌ सदा. ततः प्रेम तथा आसक्तिः व्यसनं च यदा भवेत्‌.**'' (भ.व.२–३) वामें भी फिर ''**बाधसम्भावनायान्तु नैकान्ते वास इष्यते, हरिस्तु सर्वतो रक्षां**

करिष्यति न संशयः.'' (भ.व.१०) **''विक्षेपाद् अथवा अशक्त्या प्रतिबन्धादपि क्वचित्, अत्याग्रहप्रवेशे वा परपीडादिसम्भवे.''** (पूजा त्यक्तव्या) **"तीर्थपर्यटनं श्रेष्ठं सर्वेषां वर्णिनां तथा."** (त.दी.नि. २।२५०-२५१) सेवा जब नहीं करो तो तीर्थयात्रा करो. तीर्थयात्रा नहीं करो तो शरणागति करो. बोहोत सारे ऑर्डर् समझायें हें महाप्रभुजीने. एक छोटेसे **सरसवचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार.** वो सारी महाप्रभुजीकी बिखरी भई वाणीन्के आधारपे **संशयनो परिहार.** गुसांईजीने कैसे कियो हे! ऑर्डर् देखो, **स्वस्वरूपार्थे प्र्योजिया कृत हुता जे संसार**. समझा दियो के तुम्हारो स्वरूप पुष्टिजीव होवेको हे. तुम्हारो वरण पुष्टिजीव तरीके हे. वा वरणकु तुम समझ जाओ. एक बखत तुमकु 'आंसुवा' समझमें आतो होय के नहीं पर 'पोर्सुवा' कॅरेक्टर् तुम्हारो क्या हे, उतनो जो समझमें आवे तो ये सारो ऑर्डर् समझमें आ जायगो. कोई तकलीफकी बात नहीं हे. बेसिक् इश्यु ये हे के तुम अपन्कु आंसुवा मानके चल रहे हो तो वाको कोई सॉल्युशन् नहीं हे. स्वस्वरूपकु समझो. वो स्वस्वरूप क्या हे पुष्टिमार्गके दृष्टिकोणसु **राजकाजे जोडिया जन उच्चावच नरनार.** वो तुम्हारो पुष्टिमार्गीय स्वरूप हे. ये मोकु समझमें आ रह्यो हे या तरहसु यदि अपन् इन कड़ीन्की व्याख्या समझें तो समझमें आवे के पोषणलीला प्रमाणलीला कैसे हे?

(श्रीगोपालदासजीके निर्धारको आधार श्रीलक्ष्मणसुतको निर्धार)

गुसांईजी कौनसे लेवल्पे हर बातकु समझानो चाह रहे हें! एक और बात यामें जो खास ध्यानमें दवेकी हे. **आगळ अंशे प्रगटिया ते ग्रंथ कह्या बहु बार. श्रीयशोदोत्संग-लालित पूरण अतिसुकुमार.**

अनेक धर्म कह्या प्रभुजीये निगमने अनुसार. गिरिराजधरणनो ताप टाळ्यो श्रीलक्ष्मण सुत निरधार. ये अपन्कु समझ नहीं आवे के वास्तवमें गोपालदासजी क्या कहनो चाह रहे हें.

यदि याकु समझनो होय तो लक्ष्मणसुत महाप्रभुजी क्या कह रहे हें वो समझो तो गोपालदासजी क्या कह रहे हें वो तुरत समझमें आ जाय. अब ये टीका हे के वो भाष्य हे या ये भाष्य हे और वो टीका हे, वाकु जावे दो. जो भी होय सो होय, अपन्कु समझनो ये हे के याकु समझनो कैसे? कौनसे पॅराफ्रेज़िंग्सु समझनो? वामें महाप्रभुजीको एक वचन आप देखो **''श्रीमद्भागवतं समस्तनिगमन्यायैकतत्त्वात्मकं''** (त.दी.नि. ३।१२।३९) श्रीभागवत कैसो हे? **"समस्त निगमन्यायैकतत्त्वात्मकं"** और वा वेदके ऊपर उत्तरमीमांसाके रूपमें जो भी कछु न्याय विचार्‌यो गयो हे, लॉजिक् करी गई हे, उनको एकत्रीकृत रूप भागवत हे. माने या बाजु श्रुतीन्को वा बाजु ब्रह्मसूत्रको, बीचमें गीता आ ही गई. क्योंके **''वेदाः श्रीकृष्णवाक्यानि व्याससूत्राणि''** (त.दी.नि.१।७) या बाजु ये ले लिये तो **"समस्त निगमन्यायैकतत्त्वात्मकं नानाभ्रान्ति-तमःकपाटपिहितं सन्तुष्टये सर्वथा नाभूद्."** (वहीं) वो तत्त्व हतो वो अनेक तरहकी भ्रान्तिकी तिजोरीमें तालाबन्द हतो. महाप्रभुजी कह रहे हें के अनेक तरहकी भ्रान्तिसु जो अंधकार पैदा होवे कोई डार्क रूममें वो तत्त्व रख्यो भयो हतो. वाने मोकु सन्तुष्ट नहीं कियो. वाको डिस्सॅटिसिफॅक्शन् महाप्रभुजी बता रहे हें. ये जो समस्त निगमन्यायैकतत्त्वात्मक भागवत हे, ये भ्रान्तिके सेफ्-डिपोजिट्में रख्यो भयो हतो. जामें लाईट् स्वीच् ऑन् भी नहीं होती होवें. जामें चाबी

घुसायें तो अपने तालेमें चाबी घुसे ही नहीं. कोई औरके तालेमें चाबी घुस जाय वा अन्धकारके कारण. तो महाप्रभुजी आज्ञा करे हें के ये मोकु सन्तोष नहीं दे रह्यो हतो. महाप्रभुजी कह रहे हें के तो फिर करनो क्या? वाके लिये आप केह रहे हें **"नाभूद् इति अवगत्य निश्चितपदैः"** (त.दी.नि.३।१२।१३९) ''मैंने एक उपाय कियो के कछु तो निर्णय लेनो ही पड़ेगो. वाके लिये वो भ्रान्तियें वो अंधकार दूर हो जाय, तो एकदम डिटरमाइनिंग् टर्मिनोलॉजीके साथ मैंने वाके ऊपर तत्त्वार्थदीपनिबन्ध लिख दियो हे. वा दीपसु उजाला हो जायगो. वा दीपसु तुम सेफडिपोज़िटकु खोलके भागवतके अर्थकु पहचान सको हो. सब कछु कर सको हो.'' ये महाप्रभुजी कह रहे हें.

अब जब अपन् या श्लोककु देखें तो महाप्रभुजीकी जो फीलिंग्स् हें, ये तो वर्बलाईज् हो गई हें, कई बखत वर्बलाईज् नहीं भी होवे हें, वा फीलिंग्सु ''**निश्चितपदैः उद्दीप्तदीपाकृतिं श्रीमद्भागवतप्रदीपम् अधुना चक्रे मुदा वल्लभः**'' (वहीं) यों केह रहे हें. ''मैंने ये मजा लेवेके लिये कियो हे. वो तत्त्व अंधेरामें पड़्यो रहे वो बात मोकु पच नहीं रही हती.''

ये **आगळ अंशे प्रगटिया ग्रंथ कह्या बहु बार.** कौनसे? **"श्रीमद्भागवतं समस्तनिगमन्यायैकतत्त्वात्मकं", श्रीयशोदोत्संगलालित पूरण अतिसुकुमार** वो यशोदोत्संगलालित वेदमें गीतामें ब्रह्मसूत्रमें नहीं हे, पर भागवतमें हे. **अनेक धर्म कह्या प्रभुजीये निगमने अनुसार. गिरिराजधरणनो ताप टाळ्यो श्रीलक्ष्मणसुत निरधार.** वो वार्ता मैंने

आपकु सुनाई के "अरे भई अभी तक तो तू तेरी ही सोच रह्यो हतो, ठाकुरजीकी नहीं सोच रह्यो हतो. आज तैंने ये सोची के ठाकुरजी गाय चरायके आयेंगे" अब कोई गॅरेन्टी हे के वाने जा रूटपे कंकड़-पत्थर साफ किये वापे ही गाय चरायके आयेंगे? अरे भई तेरेमें भाव वैसो हे के नहीं, सवाल ये हे? गिरिराजधरके ताप टालवेको तेरेमें भाव हे के नहीं? सवाल ये नहीं हे कि हमारो भाव तो नहीं हे पर हम तो खाली मनोरथी हें. मनोरथको मतलब क्या? पैसा दे देंगे और कोई जाके सफाई कर देगो. हम पैसा जमा करा देंगे, छप्पनभोग तुम धरा दो. एक झाड़ूवालेकु बुलाके दे दिये के ले हजार रुपया महीना. तरहटीमें सफाई कर दीजियो. वो मनोरथी नहीं हें हों. गिरिराजधरको ताप टलवायो, टाल्यो नहीं, ऐसो हो जायगो. अरे भई गिरिराजधरको ताप टाल्यो हे टलवायो नहीं कोई औरसु. चढ़जा बेटा सूलीपे खुदा भला करेगा. पैसा दे दिये के रोज साफ कर दीजियो और महीनाके पैसा हमसु ले जाईयो. "**तत्सिद्ध्यै तनुवित्तजा.**" (सि.मु.१) हम आजकल टलवावें. हमारे ठाकुरजीकु या बखत फलानी सामग्री अरोगावेकी इच्छा हो रही हे. तो तुम मनोरथ करो. गिरिराजधरको ताप तुम टाल रहे हो के टलवा रहे हो? पुष्टिमार्गके फॉलोईंग् अललल टप्पू हे ना, या लिये टलवा रहे हो. थोड़ी समझमें आती होती के महाप्रभुजीको सिद्धान्त क्या हे तो टलवाते नहीं तापकु, स्वयं टालते. या 'अललल टप्पू'कु समझो? जो साफ नहीं बोलतो होय, 'लललल' जो करतो होय, वाकु 'अलल-टप्पू' कहें हें. अब बहुतायत अललल टप्पू हे वाके लिये ताप टलवा रहे हें. लेकिन ताप खुद टाले के टलवावे? **श्रीगिरिराजधरनो ताप टाळ्यो श्रीलक्ष्मणसुत निरधार.** तो यामें एक

प्रमाणको प्रोग्राम् गोपालदासजी बता रहे हें.

(तत्त्वमीमांसाकी और ज्ञानमीमांसाकी दृष्टिसु प्रमाणलीलाको निरूपण)

और यदि वो कमोबेशी आप सबकु पता ही हे, पर को–रिलेट् करवेके लिये या दृष्टिकोणसु पाछो वा ग्राफ्कु एक बखत रेफर कर लें.

१. प्रभुप्राकटयजनकप्रेम
२. सेवाकथाभजन
३. नवधाभक्ति
४. अखिलसाधन

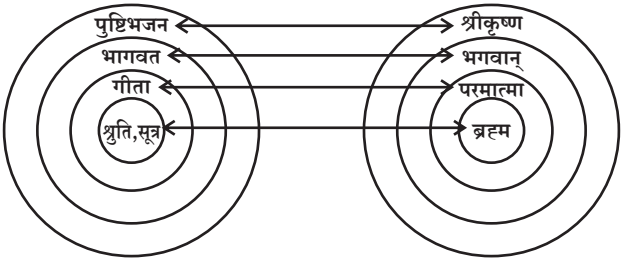

देखो याही लिये ही मैंने आपकु शुरुआतमें ही एक बात बताई हती के कछु मॅटाफिजिकल् हे और कछु एपिस्टमोलोजिकल् हे. कछुकु अपन् मॅटाफिजिकली सोच रहे हें और कछुकु एपिस्टमोलोजिकली सोच रहे हें. लक्षणमें भी वोही बात बताई मैंने आपकु. वा दृष्टिकोणसु देखो याको कॉरेस्पॉन्डेन्स् कैसो हे? और ये जो कृष्ण हे ये याको मॅटाफिज़िक्स् और एपिस्टमोलोजिकल्को कॉरेस्पॉन्डेन्स् हे. ब्रह्मकु श्रुति और ब्रह्मसूत्र सु समझनो हे. परमात्माकु गीतासु समझनो हे. भगवान्कु भागवतसु समझनो हे. पर जो श्रीकृष्ण अपन्के मांथे पधरायो हे वाकु पुष्टिभजनसु समझनो हे. **श्रीयशोदोत्संगलालित पूरण अतिसुकुमार.** वामें कोई एक डेलिकेसी

तुमकु वापरनी हे. वो डेलीकेसी कौनसी हे? वो पुष्टिभजनकी डेलिकेसी हे के जा डेलिकेसीकु नहीं निभावेसु वो भजन विभूतिपरक हो जायगो. गुसांईजीके अनुसार ये सारी रेन्ज् विभूतिकी हें. विभूतियां भगवान्की सब यहां आ जायेंगी. अरे भई विभूति कोई गाली नहीं हे हों.

'विभूति' माने भगवान्की पॉवर्. तुम पॉवरफुल्कु भज रहे हो के पॉवर्कु भज रहे हो. तो जब तुम पॉवरकु भज रहे हो के भगवान् तो एक पॉवर् हे तो तुम भगवान्कु एक संदेश दे रहे हो के "हे भगवान् आपकी वैसे तो कोई आवश्यकता नहीं हे पर हमकु तुम्हारी ये पॉवर् चहिये. हमकु यासु मतलब नहीं हे के तुम पॉवरफुल् हो के नहीं? पर हमकु पॉवर् दे दो जासु के हम पॉवरफुल् बन जायें." तो तुम विभूतिको भजन कर रहे हो. विभूतिके भजनमें तुम्हारो एप्रोच् या तरीकेको सकाम हे के जो पॉवर् आपके पास हे वामेंसु थोड़ो पॉवर् हमकु भी दे दो. वो विभूतिभजन एक अलग भजन हे. यशोदोत्संगलालितकी जो सुकुमारता हे, पुष्टिके एकदम अपर् लेवल्पे आके वो प्रमाणसु जान्यो जा रह्यो हे. यालिये महाप्रभुजी आज्ञा करें हें के **"सर्वमेवहि भगवान् करोति परं भजनं विना किमपि न करोति."** (सुबो.३।३२।३२) कौनसो भगवान् भजनं विना न करोति? क्या ये ब्रह्मको स्वभाव हे? अरे वा ब्रह्मकु तुम्हारे भजनकी चिन्ता ही नहीं हे. वो तो तुम्हारे जैसे दस पैदा कर रह्यो हे. **"यो वा अनन्तस्य गुणाः अनन्ताः"** (भाग.पुरा.११।४।२) ब्रह्मकु तुम्हारे भजनकी चिन्ता नहीं हे. अरे तुम्हारो ही नहीं कोईके भी भजनकी चिन्ता नहीं हे वाकु. अपन् बोलें तो मुखरतादोष होवे

पर गोपीजनन्के भजनकी ब्रह्मकु चिन्ता नहीं हे जो के पुष्टिभक्तिकी सबसु ऊंची ऊंचाईपे हें. उनकी भी वाकु चिन्ता नहीं हे.

रही बात परमात्माकी. एक बात ध्यानसु समझो. परमात्माकु भी तुम्हारे भजनकी आवश्यकता नहीं हे क्योंके परमात्मा खुद तुम्हारो भजन कर रह्यो हे. परमात्माकु तुम्हारे भजनकी जरूरत नहीं हे. परमात्मा तुम्हारो भजन क्यों कर रह्यो हे? क्योंके परमात्मा तुम्हारे भीतर बैठ्यो भयो ड्राईवर् हे. तुमकु खड्डामें जानो होय तो यस् सर् करके वहां पोहोंचा दे हे. तुमकु पहाड़ चढ़नो होय तो यस् सर् कहके पोहोंचा दे हे वहां. परमात्माकु असित 'अरसिक साक्षी' कहे हे. परमात्मा खतरनाक प्रिंसिपल् हे. वाकु अपनो रस नहीं आ रह्यो हे. अपन्की तकलीफ क्या हे वो परमात्मा थोड़े ही बॉदर् करे! तेरी तकलीफ तू जान. तोकु कहां जानो हे चल! जहां भी जानो हे मैं हाजिर हूं तोकु ले जावेके लिये. घाटपेसु गाड़ी उतर रही हती. ड्राईवर्ने कही के ''ब्रेक् फेल् हो गयो हे.'' तो सवारने कही ''ब्रेक् फेल् हो गयो तो होवे दो कोई चिन्ताकी बात नहीं हे कॅश् पेमेन्ट कर, छुटकारा होय तेरो मेरो.'' अरे! जब ब्रेक् फेल् हो गयो तो वामें कॅश् पेमेन्ट् करके छुटकारा करवेकी बात कहां आयेगी! ये तो तू भी खाड़ामें जायगो और मैं भी जाऊंगो. पेमेन्ट् करे तो भी और नहीं करे तो भी. परमात्मा वा तरीकेको डायनेमो हे. जहां भी तुमकु जानो होय तो पोहोंचा दे तुमकु. संसारमें जानो होय तो संसारमें पोहोंचा दे, मुक्तिमें जानो होय तो मुक्तिमें पोहोंचा दे. भक्तिमें जानो होय तो भक्तिमें पोहोंचा दे. युद्धमें जानो होय तो युद्धमें पोहोंचा दे. जहां जानो होय वहां पोहोंचाने तैयार हे. वो तो तुम्हारी सेवा कर

रह्यो हे. वाकु तुम्हारी सेवाकी जरूरत नहीं हे. वाकी सेवा करोगे तो वाकु ही कहनो पड़ेगो के भई खुदकी सेवा कर.

वो कैसी घटना? इन कूरियर् सर्विस्वालेन्के लिये जब सरकारने नोटिस् निकाली के तुम्हारो ये व्यापार गैरकानूनी हे तो वा नोटिस्कु कूरियर् सर्विस्वालेन्सु ही भिजवायो क्योंके पोस्ट्ऑफिस्पे सरकारकु भी विश्वास नहीं हतो के नोटिस् पोहोंचेगी के नहीं पोहोंचेगी? ऐसे परमात्माको भजन करनो होय तो पाछे परमात्माकु ही इनवोक् करनो पड़ेगो के भई कछु कर. बॅट्री चार्ज कर जासु कछु भजन कर सकें. तो वो काहेकु तुम्हारी बॅट्री चार्ज करेगो? वो वाके बिना ही करेगो. यासु परमात्माकु तुम्हारे भजनकी जरूरत नहीं हे.

अब रही बात भागवतकी, भगवान्की. भगवान् तो ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान वैराग्य वालो हे वाकु काहेकु तुम्हारे भजनकी जरूरत हे? न तुम्हारेमें ऐश्वर्य हे, न वीर्य हे, न यश हे, न श्री हे, न ज्ञान हे और न वैराग्य हे; या लिये ही तो तुम जीव बने. तो जो ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान वैराग्य वालो हे वाकु तुम्हारे भजनकी जरूरत क्यों पड़ेगी? तुम्हारो भक्त होनो वाके भगवान् होनेपे भी, तत्त्वतः, निर्भर हो सके हे. कोई भगवान् होय तो कोई भक्त हो सके. ऐसे ही कोई भक्त होय तो कोई भगवान् हो सके.

यदि भगवान् तुम्हारे साथ अपनो सम्बन्ध बनानो चाहे, भक्त और भगवान् के रूपमें तब तुम वाके भक्त हो सको हो. जब तुम भक्त बने तब वो भगवान् तुम्हारे लिये बनेगो. यदि भगवान् ये

सम्बन्ध नहीं बनानो चाहे हे जीवके साथ तो क्या तुम सोच सको हो के वाकु जीवके भजनकी जरूरत हे? कोईके ऊपर कृपा करवेके लिये वाकु भजनकी जरूरत हे. लेकिन वाकु अपने लिये भजनकी जरूरत हे, अपेक्षा ऐसी नहीं हे. वाकु याकी जरूरत काहेकु पड़ेगी? यदि वो भगवान् हे तो वाकु भजनकी क्या जरूरत हे? भगवान् और भक्त शब्द एक-दूसरेके ऊपर निर्भर हें. लेकिन व्यक्तिगत रूपमें यदि भगवान्, भगवान् हे, जो के ऐश्वर्यादिसु भर्‌यो भयो हे वाकु अपने भजनकी जरूरत क्या हे? वो भी उन जीवन्‌सु जो ऐश्वर्यादि गुणनसु रहित हें, उनके साथ निभा कैसे सकेगो? ऐसे फिनोमिनाके साथ वो तभी निभा सके हे जब के वो कोईके ऊपर अपनी कृपा बरसानो चाहे हे. ऐसी स्थितिमें वो कोईकु अपनो भजन करनो एलाउ करेगो और जब वो कोईकु अपनो भजन करवेकी कृपा कर रह्यो हे वा स्थितिमें वो वाके लिये भगवान् होयगो और वो वा भगवान्‌के लिये भक्त होयगो. वा परिस्थितिमें ये दोनों एक दूसरेके ऊपर निर्भर हें.

और ये श्रीकृष्ण, पर्टिक्युलरली, यशोदोत्संगलालित तो कोई अलग ही फिनोमिना हे, बोहोत ही डेलीकेट् फिनोमिना हे. दूसरे शब्दन्‌में कहूं तो यशोदाजीने जाकी आदत बिगाड़ रखी हें. तुम्हारी गुजरातीमें जाकु 'मावड़ियो' कहें हें, वैसे यशोदाजीने श्रीकृष्णकु मावड़ियो बना रख्यो हे. अब आदत बिगड़े भये श्रीकृष्णकु यदि तुम ठीक तरहसु टॅकल् नहीं करोगे तो झगड़ा हो जायगो. जितने भी मावड़िया होवें वो बिचारे बोहोत डेलीकेट् होवें. उनकी पत्नीयें समझ नहीं पाती होवें. उनकु माँने वा तरहसु लालन-पालन कियो होवे

वाके कारण बिचारे मावड़िया हो जायें. मावड़िया होवेके बाद वो कोईसु भी निभा नहीं पावें. वो वातावरण उनकु नहीं मिले तो उनकु वा चीजकी कमी खले हे. यासु हर घरमें सास–बहुको ये ही झगड़ा चले के वो मावड़ियो हे. अब यशोदाजीने वाकु मावड़ियो बना दियो तो अपन् क्या कर सकें! अब तुमकु वाकु लाड़ लड़ानो हे तो मानके चलो के वो मावड़ियो हे. वा यशोदोत्संगलालितकी आदतें तो बिगड़ी भई हें. वाके साथ तुमकु निभानो हे. **पूरण अति सुकुमार** जितने भी मावड़िया होवें बड़े सुकुमार होवें. उनमें वो पौरुषत्व होवे ही नहीं हे. स्त्रीगूढ़भावात्मा होवे हें सब. तो अपनो ठाकुर भी वैसो ही स्त्रीगूढ़भावात्मा यशोदोत्संगलालित हे. वा गोदीमें लालन–पालन किये भये व्यक्तिकु तुम वा तरहसु टॅकल् नहीं करोगे तो वो तुम्हारे साथ निभा नहीं पायगो, प्रोब्लम् ये हे.

(पोषककी प्रमाणलीला)

ये प्रमाण गुसांईजीने अपन्कु बतायो के ''**श्रीवल्लभाचार्यमते फलं तत्प्राक्ट्यम् अत्र अव्यभिचारिहेतुः प्रेमैव तत्र उपयोगः अखिलसाधनानाम्**'' वो जो सारी बातें हें उनकु बाहर रखो. वहां जाते जाते या मावड़ियाके लिये सिर्फ एक प्रेम ही जरूरी हे, औरकी जरूरत नहीं हे. ''**प्रेम्णोअन्यत् साधनं लोके नास्ति मुख्यं परं महद्. श्रीभागवतम् एव अत्र परं तस्य साधनम्.**'' (त.दी.नि.२।३२६) ये प्रमाणकी जो स्कीम् हती वा कृष्णकु, यशोदोत्संगलालितकु समझवेकी, वाकु टॅकल् करवेकी, वो गुसांईजीने अपन्कु कैसे ढंगसु समझाई हे. ये पोषणलीलाके तहत या बातकु अपन् अच्छी तरहसु समझ सकें हें. इन आधारपे गुसांईजीको ये आख्यान कैसे

प्रमाणलीला हे वो अपन् समझ सकें के कैसे यहां गोपालदासजीने प्रमाणलीला दर्शायी हे.

(श्रीवल्लभाचार्यमते फलं तत्प्राकट्यम्)

वास्तवमें ये दर्शायी हे वाके लिये कितनी सावधानीसु कह रहे हें. **स्कन्धसंख्याए कह्या पद श्रीभागवतरसराज. भक्तजन–पदरज–प्रतापे सकल सरिया काज.** ये उपसंहारके रूपमें कन्क्ल्युड् करते बखत श्रीभागवतरसराज. अब देखो ये सब कारणकोटिमें गये. प्रमेयमें गयी ये सारी बातें क्योंके **ग्रंथ कह्या बहु बार**. महाप्रभुजीके पहले जो ग्रंथ कहे भये हें वो हें. वो अपने कृष्णके ही कोई कोई आस्पॅक्ट्कु डील् कर रहे हें पर कृष्णके कौनसे आस्पॅक्ट्कु डील कर रहे हें वो तो समझनो पड़ेगो ना! वो जा आस्पॅक्ट्कु डील् कर रहे हें जैसे श्रुति सूत्र गीता भागवत, वो कृष्णके कौनसे एस्पॅक्ट्कु डील् कर रहे हें, वो सब एस्पॅक्ट्स् कृष्णके हें हें और हें ही. वामें कोई इन्कारकी बात नहीं हे. पर अपने पुष्टिसम्प्रदायके प्रमेयकु समझनो होय तो **"श्रीवल्लभाचार्यमते फलं तत्प्राकट्यम्"** एक ठाकुर अपने घरमें बसाओ, ''नन्दनन्दन कर घरको ठाकुर आप व्हे रहे चेरो.'' वो सेवा–कथात्मक भजनसु वाकी प्रमेयरूपता तुमकु समझमें आयेगी. अन्यथा तुमकु समझमें नहीं आयेगी. ये पोषणलीलाके अन्तर्गत गोपालदासजी अपन्कु बतानो चाहें हें. ये पोषणलीलाको फॉरमेट् हे. **"स्थितानां अभिवृद्धिः पोषणम्"** (सुबो.२।१०।१) अभी तुमकु पुष्टिमार्गमें ले लियो पर वामें आगे बढ़ावेके लिये जो जरूरत हें वो गुसांईजीने अपनेकु समझाई हें. उन सबकु पोषणलीलाके तहत या तरहसु समझनो चहिये.

मोकु लगे के आज पंचमाख्यानकु शुरु नहीं करें तो अच्छो हे. क्योंके हो नहीं सकेगो. कोईकु प्रश्न करनो होय तो कर सके हे.

(अभिवृद्धिके लिये पोषणकी महत्ता)

कल कछु बातें मैंने बताई हती. खास करके **स्वस्वरूपार्थे प्र्योजिया कृत हुता जे संसार. राजकाजे जोडिया जन उच्चावच नरनार. आगळ अंशे प्रगटिया ते ग्रंथ कह्या बहुवार. श्रीयशोदोत्संगलालित पूरण अतिसुकुमार. अनेक धर्म कह्या प्रभुजीये निगमने अनुसार. गिरिराजधरणनो ताप टाळ्यो श्रीलक्ष्मणसुत निरधार.** ये पोषणलीला हे और पोषणमें यदि कमजोर रह जायेंगे तो कमजोरी अपन्कु आगे तक तंग करेगी. अपन् पोषणकु बराबर रेलिश् कर लें के पोषण कैसे हे? पोषणके बाद ऊति मन्वन्तर में जहां अपन्कु **"पुष्टानाम् आचारः ऊति."** (सुबो.२।१०।१) वो आचारकु निभावेमें कोई जातकी तकलीफ होय और वाके पहले पुष्ट हो जायें ना. अक्सर ऐसे कह्यो जाय के बच्चा मांको दूध पी ले तो वामें वॅक्सीनेशन् लियो होय ऐसी सामर्थ्य आ जाय हे रोगको सामना करवेकी. मांको दूध नहीं पीये तो अपोषित बालक बीमारीन्सु लड़वेमें थोड़ो कमजोर रहे हे. मांके दूधमें वो पोषण रह्यो भयो होवे हे सो वाको पान अपन् अच्छी तरहसु कर लें, जो गुसांईजी करनो चाह रहे हें और गोपालदासजी करवानो चाह रहे हें. बाकी आगे जैसे निभेगो वैसे निभायेंगे. नहीं निभेगो तो भगवद्इच्छा.

(पुष्टिजीवन्के स्वस्वरूपकी योग्यतानुरूप निगमानुसार ही अनेकधर्म)

यामें सबसु पहली बात, **अनेक धर्म कह्या प्रभुजीये निगमने**

अनुसार. फेस्–वॅल्युपे अपन्कु ऐसो लगे के अनेक धर्म कह्या माने कोईकु कछु केह दियो, कोईकु कछु केह दियो. क्योंके वो अनेकता ऐसी कोई फ्रेम्वर्कमें नहीं बांधी हे. हो सके हे के वाको ऐसो अपन्कु इम्प्लीकेशन् लगे के हर बखत जो भी करनो होय, जैसे एक प्रसिद्ध श्रुति हे **''श्रुतिः विभिन्ना स्मृतयो विभिन्ना नैको मुनिः यस्य वचः प्रमाणं धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां''** ये श्रुतियें स्मृतियें कछु और केह रही हें, मुनियें सब अलग–अलग बात केह रहे हें, कौनकु मानें कौनकु नहीं मानें. धर्मको रहस्य तो छुप्यो भयो हे. जैसे गडरिया प्रवाह चले के जवा दोने नौका किनारे किनारे. वा तरहके अनेक धर्म कहें के नहीं कहें, ये एक बेसिक् इश्यु हे? ये कौनसे जातके अनेक धर्म हें? और साथ साथ **स्वस्वरूपार्थे प्र्योजिया** यामें 'स्व'को टीकाकार अलग अलग अर्थ ले रहे हें. जो अर्थ मोकु पसन्द आयो मैं वाकी बात कर रह्यो हूं. अभी या बारातको बॅण्डबाजावालो मैं हूं. मैं गीत गा रह्यो हूं, जो धुन मोकु पसन्द आ रही हे वो बजा रह्यो हूं. दूसरे बॅण्डवालेन्ने दूसरे ट्युन् बजाये हें, अपनी अपनी तैयारीके हिसाबसु. यामें मोकु जो धुन आ रही हे वो धुन मैं बजा रह्यो हूं. यामें घबरावेकी जरा भी जरूरत नहीं हे. दूसरे भी अर्थ नहीं हो सकें, ऐसी बात नहीं हे पर वो धुन मोकु नहीं आ रही हें. यासु मैं नहीं बजा रह्यो हूं, बस इतनीसी बात हे.

मोकु यामें कछु दूसरी बात समझमें आ रही हे. वा 'स्व' को कैसो स्वरूप हे और वाके कैसे स्वरूपके अर्थमें जीवन्कु प्रयोजित किये. 'प्रयोजित' किये माने एपोइन्ट् किये या लगाये. वा तरहसु

एपोइन्ट् करवेके बाद भी कैसे वाकी फ्रेम्वर्क राजकाजमें जोड़वेकी हती? क्योंके आज तो अपन्ने गवर्नेन्स्की तीन मॅथड् बता दी हें एग्ज़ीक्युटिव् जुडिशियरी और लेजिस्लेटिव्. वामें जो जुड़े भये हें वामें भी अपन् यों नहीं समझ सकें के जितने सरकारी नौकर हें, वो सब लेजिस्लेटिव्में हें वो सब एम.एल.ए. या एम.पी. ही होंयगे. अरे वहां पार्लामेन्ट्में भी जो ऊधम करें हें उनकु काढ़वेवालो मार्शल् होवे हे. उनके यहां वॉचमॅन् भी होवे हे. कोई तो रॅकोर्ड रखवेवालो भी होवे हे. कोई साउन्ड सिस्टम्कु गवर्न करवेवालो भी होवे हे. खाली एक लेजिस्लेटिव्सु जुड़ी भई कितनी जॉब्स् हें, ये अपन् देखें तो अपन्कु पता चले. सायमल्टेनियसली अपन् एग्ज़ीक्युटिव्कु भी देखें तो वासु भी जुड़ी भई कितनी जॉब्स् हें. इनकी हियरार्कीको तो कोई पार ही नहीं हे, नीचे क्लर्कसु लेके ऊपर प्राईम्-मिनिस्टर् या प्रेसीडेन्ट् तक जावें तो कितनी बड़ी हियरार्की हे. वामें मल्टीपल् लेयर्स् हें. देशकु चलावेके लिये एग्ज़ीक्युटिव्की फौज होवे हे. वैसे ही जो जुडियशरी हे वामें भी कोई एक लेवल् नहीं हे. कलॅक्टर्सु लेके सुप्रीम् कोर्टकी बॅन्च् (सात जजन्की) वामें मल्टीपल् लेवल् हें. वहां भी रजिस्ट्रार होवे हे. सरकारी वकील होवे हे. फिर सोलीसिटर् जनरल् होवे हे. वहां भी बड़ी भारी हियरार्की हे. वहां भी रॅकोर्ड रखवेवालो होवे हे. सब कछु वहां भी होवे हे. तो अपन् समझ सकें हें के जहां भी राज करनो हे वामें कितने तरहके लोग कितने तरहसु प्रयोजित हो सकेंगे. वाकी कोई एक वॅरायटी तो नहीं हो सके. ये तो अपने वा राजाके काजमें जोड़नो हे तो ये सब तो वाके भी कई मल्टीलेवल् हो सकेंगे और वा तरीकेको स्वरूप उनको पहचाननो बहोत जरुरी हे. क्योंके सबसु बड़ी बात गवर्नेन्स्की ये हे

के जा बखत तुम जाकु एपोइन्ट् कर रहे हो, वामें कोई रिज़र्वेशन् कोटा वापर रहे हो के कोई क्वॉलिफिकेशन् वापर रहे हो?

(कृपा भी प्रमाणरूपा)

रिज़र्वेशन् कोटा वापर रहे हो तो ऐसो भी आ सके हे के कई बखत कमीटीयें बैठें हें, वो खुदके विरुद्ध भी कोईने शिकायत करी होय तो वापे भी सिग्नेचर् कर देती होवें हें. रिज़र्वेशन् कोटामें आवेवाले पढ़े-लिखें तो होवें ही नहीं हें. कोईसु भी पढ़वा लियो होवे हे. क्योंके पढ़ाईमें भी रिज़र्वेशन् कोटा और प्रमोशन्में भी रिज़र्वेशन् कोटा और फिर एपोइन्ट्मेन्ट्में भी रिजर्वेशन् कोटा. तो आदमी काहेकु पढ़ेगो? ''पढ़ पढ़ पोथी जग मुआ और पंडित भया न कोय. रिज़र्वेशन् कोटा जो पढ़े सो रिजर्व पंडित होय.'' तो वा तरीकेको कोई रिज़र्वेशन् कोटा यहां हे के नहीं? वा बातमें गोपालदासजी बता रहे हें के **स्वस्वरूपार्थे प्र्योजिया** माने जाकी जो स्वरूपयोग्यता हती वाकी वा स्वरूपयोग्यताके अनुसार **राजकाजे जोडिया जन उच्चावच नरनार.** वो अनेक धर्म माने जवा दोने नौका किनारे किनारे, जा तरहसु नौका जा रही हे वा तरहसु जावे दो. ऐसो मोकु अर्थ नहीं लगे हे. क्योंके शुरुआतमें प्रतिज्ञामें ही अपन्ने एक बात कह दी हे के **पूर्णपुरुष प्रमाणपंथा व्याख्याता वेदान्त. ग्रन्थ सर्वे रसरूप कीधां पोताने सिद्धान्त.** ये पूर्णपुरुष प्रमाणपंथा हे. प्रमाणपंथा होवेके कारण याकी कृपाकु जो प्रगट कर रह्यो हे, वाकु भी अपन्ने कल देख लियो के प्रमाणकी ही कोई एक वॅरायटी हे. सर्गलीलाके जो तीन चॅप्टर् हें वो प्रमेयलीला हें. और जहांसु पोषणलीला प्रगट हो रही हे वहांसु तो प्रमाणलीला प्रगट हो रही

हे. जा तरहसु अपन् वाके साथ इन्ट्रएक्ट् कर रहे हें तो वो वाकी कृपा भी कोई न कोई तरहकी प्रमाणरूपा हे. अप्रमाणिकी कृपा नहीं हे. वाको सीधोसो एक उपाय अपन् सोच सकें हें के महाप्रभुजी स्वयं ये आज्ञा कर रहे हें के बीजभाव होय तो भक्ति दृढ़ होय, नहीं तो भक्ति ही दृढ़ नहीं होवे हे. वार्तामें भी अपन् देखें तो अपन्कु पता चले के कोईकु ब्रह्मसम्बन्ध दे रहे हें, कोईकु ब्रह्मसम्बन्ध नहीं दे रहे हें. कोईकु कंठी दे रहे हें, कोईकु कंठी नहीं दे रहे हें. अभी किशनगढ़में वार्ता भई वामें ये सारी वॅरायटी डिस्कस् करी हती. तो क्यों उनकु ये हेज़िटेशन् हे? काहेको हेज़िटेशन् हे? साक्षात् पुरुषोत्तम हें, कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं समर्थ हें. स्वतन्त्रक्रीड़ा होंय तो करनो चहिये. जो पुष्टिजीव नहीं हें वाकु पुष्टिजीव बनावेके लिये सक्षम हें के नहीं पुरुषोत्तम!! यदि वास्तवमें पुरुषोत्तम हें तो सक्षम होनो ही चहिये और सक्षम नहीं हे तो कबूल करो के नहीं हें पुरुषोत्तम!

गोपालदासजी यहां केह रहे हें के सक्षम हें के नहीं हें ये तो सॅकेन्डरी इश्यु हे. उनने ये प्रमाणपंथाको स्वरूप धारण कियो हे. प्रमाणपंथा स्वरूप धारण किये होवेके कारण कृपा भी कर रहे हें तो वो प्रामाणिक कृपा हे, प्रमाणसिद्ध कृपा हे. ऐसी आड़ी टेढ़ी कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं सामर्थ्यवाली कृपा प्रमाणपंथा पुरुष होवेके कारण नहीं कर रहे हें और वा कृपाके द्वारा जा बखत विसर्गलीला प्रगट भई हे वा विसर्गलीलाके अन्तर्गत जो प्रगट भये हें उनकु उनकी मर्यादासु स्थापन करनो. तो उनकी मर्यादा कहांसु प्रगट होयगी? यदि कृपा अमर्याद हे तो जो पैदा भये हें उनकी मर्यादा कहांसु आयेगी?

जैसे अपन्ने एक कोट बनायो. वा कोटकी कोई एक स्वरूपमर्यादा हे. वाकु बांहन्में तो पहर्‌च्यो जा सके हे पर टांगन्में पहरे तो? वा कोटकु टांगमें पहर भी लो, घुस भी जायें कोटकी बांहन्में टांग तो थोड़ो आगे लटकेगो, पीछे घुसेगो नहीं, उन सबको उपाय क्या? पहर्यो तो जा सके हे, नहीं पहर्‌च्यो जा सके ऐसी बात नहीं हे. **"उत्पन्नानां तत्तन्मर्यादया"** (सुबो.२।१०।१) जो उत्पन्न भयो हे जा तरहकी मर्यादासु प्रगट भयो हे वा तरहकी मर्यादासु वाकु स्थापित करनो, ये इश्यु हे.

(विसर्गपुरुष और स्थापकपुरुष : प्रमाणपंथा पुरुष)

अपन् ऐसे कैसे केह सकें के कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं सामर्थ्यको यहां प्रयोग हो रह्यो हे. बेसिक् इश्यु समझमें आयो ना. वो सामर्थ्यको यहां प्रयोग नहीं हे. यहां प्रमाणपंथासामर्थ्यको प्रयोग हे और वो महाप्रभुजी और गुसांईजी दोनोंन्ने जीयो हे अपने जीवनमें. कोईकु सेवक नहीं बनायो हे. बात खतम. हमारे दादाजी जैसे हां–हां करते रहते वैसे महाप्रभुजी हां हां कर देते. हमारे दादाजीको ऐसो सिद्धान्त हतो के कोई भलतो आशीर्वाद मांगे तो हां हां कर देते. पता ही नहीं चले के आशीर्वाद दे रहें हें के नहीं दे रहे हें. जब उनकु लगतो के ये आशीर्वाद देवे लायक हे तो वाकु बुलाके माथापे हाथ रखके वाके माथाकु झुकाके बड़ी देर तक आशीर्वाद देते. पता नहीं क्या क्या मनमें बोलते होंयगे! और जैसे ही उनकु फील् होतो के कछु गड़बड़ हे तो हां हां हां करते रहें पता ही नहीं चले के आशीर्वाद दियो के नहीं दियो. हां हां में क्या कह रहे हें वो अपन्कु पता नहीं चले. ऐसे ही महाप्रभुजीभी हां हां

करके; वो प्रभुदासकी वार्तामें हमने विस्तारसु याकु बतायो के कैसे हां हां करते रहते महाप्रभुजी. तो ये क्यों करते हते? **प्रमाणपंथा व्याख्याता वेदान्त**. कोई उनको एक कमिटमेन्ट् हतो जा कमिटमेन्ट्के कारणसु कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं समर्थ होवेके बाबजूद भी वा प्रमाणकी सामर्थ्यको प्रयोग नहीं करके; वा प्रमाणपंथाकी सामर्थ्यके प्रयोगमें भी उनने ये अपनी सामर्थ्य प्रगट करी के साधारणतया जब प्रमाणसामर्थ्य प्रगट करें तब नीरस हो जाय और **पूर्णपुरुष प्रमाणपंथा व्याख्याता वेदान्त. ग्रन्थ सर्वे रसरूप कीधां पोताने सिद्धान्त.** प्रमाणसामर्थ्यसु भी प्रगट किये हें उनमें भी रसरूपता पाछी मेइन्टेन् करी हे. जैसे उनने मेइन्टेन् करी वैसे गुसांईजीने मेइन्ट्रेन् करी **सरसवचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार.** जो गुसांईजीकु सुनवेवालो हे, वाको माईन्डसेट् सरसवचनके उच्चारसु ऐसो प्रेमात्मक बना दें और सन्देहवारकवचनसु वाकु अन्डरस्टॅन्डिंग्वालो बना दें. ठाकुरजीकी भक्ति करवेके लिये श्रवणसु वो क्वॉलिफाईड् कॅन्डिडेट् हो जाय.

ये विसर्गपुरुष और स्थापकपुरुष दोनोंन्के पुष्टिसम्प्रदायको जो विशेष सर्ग और विशेष स्थापन की मोडस् ऑपरेन्डी या तरहसु बताई हे. वा स्थितिमें **अनेक धर्म कह्या प्रभुजीये** में अपन् ये नहीं ले सकें के जो जच गयो सोई हम करेंगे. वाकु अपन्कु डायग्नाइज् करनो पड़ेगो. जो भी ट्रीटमेन्ट् करनी हे, वो विदाउट् डायग्नाइसिस् नहीं होयगी. पहले वाकु डायग्नाइज़् करो फिर वाको को-रिलेशन् खोजो. कौनसी दवा या तरहके सिम्प्टम्स्में लागू होयगी? कौनसी तरहकी ट्रीटमेन्ट् या तरीकेके सिम्प्टम्स्पे लागू होयगी? वा तरहसु वाकी ट्रीटमेन्ट् करो तो प्रमाणपंथा हे अन्यथा नीमहकीम खतराये

जान हे. तो ये बात यहां प्रगट हो रही होय तो यामें अपन्कु ये भी देखनो पड़ेगो **स्वस्वरूपार्थे प्र्योजिया कृत हुता ते संसार. अनेक धर्म कह्यां प्रभुजीये निगमने अनुसार.** विसाविस् (वाके बाद) **राजकाजे जोडिया जन उच्चावच नरनार.** और फिर अल्टीमेटली **गिरिराजधरणनो ताप टाळ्यो श्रीलक्ष्मणसुत निरधार.** यासु क्या कहनो चाह रहे हें? कौनसी तरहके पोषणकी ये प्लानिंग् हे? कछु तो पोषणकी प्लानिंग्की चर्चा यहां हो रही हे. कैसे वा पोषणकु प्लान् आउट कियो हे? वो अपन्कु देखनो बोहोत जरूरी हे और ऐसे ही आगे बढ़ गये तो अपन् शायद अपुष्ट रह जायेंगे. या लिये मैं कछु अपनी बात शेयर् करनो चाह रह्यो हूं.

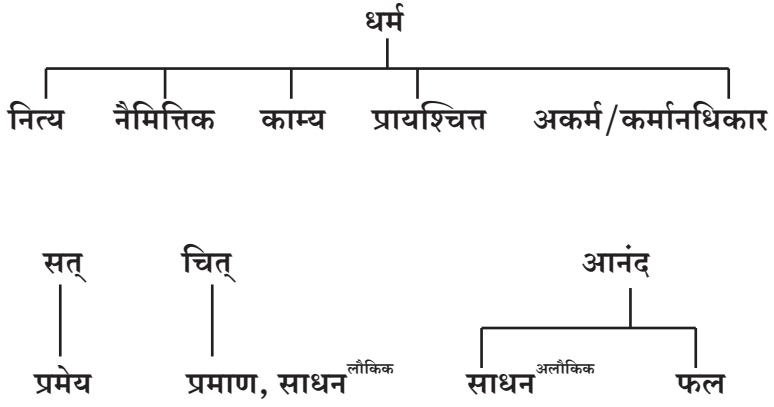

(अनेक धर्म : धर्मकी विविधता नहीं पर धर्मकी सिस्टेमॅटिक् हियरार्की)

सबसु पहले अनेक धर्मकी बातमें खास बात समझवेकी हे के ये धर्मकी विविधताकी बात नहीं हे. ये धर्मके सिस्टेमॅटिक् हियरार्कीकी बात हे. विविधता एक अलग चीज हे. 'विविधता'को मतलब क्या? बोहोत सारे विकल्प हें अपने पास. ये करो, वो करो

और दाईनो घोड़ो रमतो जमतो छुट्टो. जैसे मैं अक्सर एक उदाहरण दऊं के एक जगह बोहोत विस्तृत सेवाको प्रकार हतो. मैं जब उनके घरपे गयो तो उनने बोहोत ही दैन्यपूर्वक मोकु विनती करी के कोई गलती होय सेवामें तो बताओ? अब इतनो विस्तृत प्रकार तो मैं ही नहीं करतो होऊं तो उनकु गलती कैसे बताऊं? मैंने कही के नहीं बोहोत ही अच्छो और सुन्दर प्रकार हे. फिर भी बोले के कछु तो गलती होयगी? मैंने कही कोई गलती दीख ही नहीं रही हे तो बताऊं कैसे? तो उनने बतायो के हमारे पिताजी ऐसी आज्ञा कर गये के जो बालक आवे, जा बखत जो आज्ञा करे वा बखत वो उनके सामने पूरी कर देनी. वो जाय तब फिर वैसो ही करनो जैसे करो हो. **अनेक धर्म कह्या प्रभुजीये निगमने अनुसार.** हर बालककी कोई भी आज्ञाको उल्लंघन करनो नहीं और बालकें कोई युनीफोर्म आज्ञा करे नहीं. तो कौनसे बालकको अपमान करनो वाकी आज्ञा नहीं मानके? तो उनके पिताजी उनकु समझा गये के अपने ऐसो क्रम करनो के जो बालक आवे जो आज्ञा दे वाके सामने वो काम करनो. वो जाय वाके बाद जो अपन् करते होंय वैसो करनो. ये भी एक अनेक धर्मको प्रकार हे हों. अनेक प्रकार या तरीकेको भी हो सके हे. उनके पिताजीने अच्छो बतायो हतो.

चार्ली चॅपलिन्की एक फिल्ममें ऐसो ही होवे के वहांके बॉर्डर्पे एक रेस्टोरॉ होवे हे. कभी या बाजु एलाईड् फोर्स आवे कभी वा बाजु नाज़ीन्की फोर्स आवे. वा बिचारे रेस्टोरॉवालेकी तकलीफ ये के बॉर्डर्पे होवेसु वाकी फोटो टांगे तो ये गुस्सा हो जाये और दूसरेकी फोटो टांगे तो वो पहलोवालो गुस्सा हो जाये.

अब बॉर्डर्पे होवेके कारण कभी या पारके सैनिक घुसें कभी वा पारके सैनिक घुसें. वाने एक लड़का रख दियो के कौनसे सैनिक आ रहे हें उनकु बाहर देखतो रह. एक ही चित्रमें आगे पीछे दोनोंन्के हते. जो आवे लड़का वाकु इशारा कर दे और जो सैनिक आवें वाकी तरफको फोटो ऊपर कर दे. वो सैनिक चले जायें तो पाछे फिर दूसरी सेनाके चित्र जो आवें वो लग जायें.

हमकु पटनामें भी ऐसो ही रहस्य मिल्यो. पटना हम गये तो वहां जो बैठक सम्भाल रहे हते उनने कही के यहां तो मॅनेज्मेन्ट् ऐसे आज्ञा करे हे के झारीके दस रुपया लेने, वाके इतने रुपया लेने, वाके इतने रुपया लेने. वो हमकु फावे नहीं हे. हमने क्या कियो के ना भी नहीं पाड़ सकें क्योंके उनके द्वारा हम एपोइन्ट्ेड् हें. हमने एक उपाय रख्यो हे के वो जब आवें तो वो सब पाटिया सीधे कर दें. वो जब चले जायें तो उनकु उल्टो कर दें. अब पटनामें ज्यादा वैष्णव हें नहीं और ऐसे पाटिया टांगो तो कोई वैष्णव फिर आवे ही नहीं वहां. **अनेक धर्म कह्या प्रभुजीये निगमने अनुसार. गिरिराजधरणनो ताप टाळ्यो श्रीलक्ष्मणसुत निरधार.** वा तरीकेको मॅथड् नहीं. हाजीपुरकी बैठकजीकी कथा हे ये. वहां हमने प्रत्यक्ष ये देख्यो चार्ली चॅपलिन्की जैसी कॉमेडी.

अपने धर्ममें ऐसी कॉमेडी होती रहे हे. प्राय: हर धर्ममें या तरहकी कॉमेडी होवें ही हें. धर्म जितनो गम्भीर हे उतनो ही वामें हंसाई भी हे. ये जो अनेक धर्म हें, ये या तरीकेके हेफेज़र्ड अन्-कॉन्स्टिट्ुशनल् या एकदम केयोटिक् अनेक धर्म नहीं हें.

(सिस्टेमॅटिक् हियरार्कीके अनेक धर्म)

ये कोई सिस्टॅमॅटिक् हियरार्कीके अनेक धर्म हें. और वो सिस्टम् क्या हे धर्मकी? वा बातकु समझो तो बोहोत सारी बातन्को खुलासा हो जायगो. इतनी वॅरायटी धर्मकी मानी जायें हें. कछु नित्यधर्म होवे हे. कछु नैमित्तिकधर्म होवे हे. कछु काम्यधर्म होवे हे. कछु प्रायश्चित्तधर्म होवे हे. कछु अकर्मात्मकधर्म होवे हे. कछु कर्मानधिकारधर्म होवे हे. ये वा सिस्टम्की पूरी हियरार्की हे और जिनकु या बातको ज्ञान नहीं होवे वो फिर अक्सर इधर–उधरकी करते होवें. नित्यकर्मको यद्यपि ये पॅटर्न अपने यहांकी सेवाप्रणाली या भक्तिप्रणालीमें कहीं बतायो नहीं गयो हे पर ध्यानसु देखो तो पता चलेगो के नित्यसेवा उत्सवसेवा ऋतुसेवा मनोरथसेवा अन्तरङ्गसेवा बाह्यसेवा; और टीकाकारन्ने तो अन्तरङ्गतर अन्तरङ्गतम बहिरङ्गतर बहिरङ्गतम उतनी और वाकी हियरार्की भी समझाई हे और वाके कॉरेस्पॉन्डिंग् कछु सेवा नित्य हे, कछु सेवा नैमित्तिक हे. 'नित्य'को मतलब जो कम्पलसरी होय, जो नित्य की जाती होवे. जितनो मिनिमम् रोज अपन्कु करनो हे वो नित्य हे.

(उदाहरणमें देहसेवामें कर्मन्की अनेकता)

जैसे देहकी नित्यसेवा क्या हे? रोज सोनो रोज खानो रोज कछु थोड़ो चलनो–फिरनो, ये देहकी नित्य सेवा हे. वो तुम नहीं करोगे तो तुम जीवन जी ही नहीं सकोगे अच्छी तरहसु. फिर वाके बाद कछु नैमित्तिकसेवा आवे. गरमी पड़े तो पंखा वापर लो. ठण्डी पड़े तो गरम कपड़ा वापर लो. ये सब नैमित्तिकसेवा हे. बरसात आ गई तो छतरी वापर लो. ये देहकी नैमित्तिकसेवायें हें. कोई निमित्त

आके खड़ो हो गयो हे तो वाके लिये अपन्कु ये सेवा करनी पड़े हे. रातकु चलनो हे तो बॅट्री लेके चलो. दिनमें चलनो हे तो उजाला हे ही. नित्यसेवा नैमित्तिकसेवा नित्यकर्म नैमित्तिककर्म, उतनो ही आदमी करे तो मॅकेनिकल् हो जायगो. कछु तो काम्यकर्म करतो ही होवे हे. काम्यकर्म कैसे? रोज दाल शाक रोटी भात खा रहे हें. अब रविवार आ गयो, कोई छुट्टी आ गई तो ढोकला बन रहे हें, फाफड़ा बन रहे हें. देहकी सेवामें ये सब काम्यकर्म हे. सुबहसु ही पूछ लें के आज क्या बन रह्यो हे? आज ये बन रह्यो हे तो वो काम्यकर्म हो गयो. अब काम्यकर्ममें पाछो ज्यादा खवा गयो, पेट खराब हो गयो तो प्रायश्चित्त कर रहे हें के ईनो-फ्रूटसॉल्ट् ले रहे हें. ऐसिडिटी हो गई तो डायजीन् या जॅल्युसिल् ले रहे हें. वो सब देहकी प्रायश्चित्तसेवा हे. कछु गड़बड़ हो गयी तो वा देहकी प्रायश्चित्त सेवा कर रहे हें. ऐसे देहमें भी सब तरहकी सेवा अपन्कु करनी पड़े. पर वाको कोई उपाय ही नहीं हे. जो प्रायश्चित्त नहीं करे तो शास्त्र वाकु कहे के तुम कर्म मत करो. एक तो तुमने गलत काम कियो और गलत काम करवेके बाद आवश्यकता ये हती के प्रायश्चित्त करो. जो तुम प्रायश्चित्त भी नहीं कर रहे हो, तो बन्द करो कर्म करनो.

(कर्मको अनधिकार भी सत्कर्म)

''विक्षेपादथवा अशक्त्या प्रतिबन्धादपि क्वचिद् अत्याग्रहप्रवेशे परपीडादिसम्भवे. तत्र सेवा त्यक्तव्या.'' (त.दी.नि.२।२५०) कर्मानधिकार. वो कर्मानधिकार भी कर्मरूप हे. ऐसो मत समझियो के कर्मानधिकार कर्म नहीं हे क्योंके कर्मानधिकार होवेपे तुम सेवा

कर रहे हो तो वो दुष्कर्म हे. और कर्मानधिकार होवेपे तुम यदि कर्म नहीं कर रहे हो तो वो सत्कर्म हे. जैसे अपन् ए.के. ४७ लेके समाजमें नहीं घूम रहे हें तो वो सत्कर्म हे अपनो. यदि अपन् घूम रहे हैं तो दुष्कर्म हे. कर्म कछु नहीं करनो भी कर्म हे. **''कर्मणि अकर्म यः पश्येद् अकर्मणि च कर्म यः, स बुद्धिमान् मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत्.''** (भग.गीता.४।१८) ऐसे भगवान् आज्ञा करें हें. अपनो ये ख्याल हे के कर्म नहीं कर रहे हें तो कर्म कहांसु हो गयो? पर ये नहीं भूलनो चहिये के कर्म नहीं करनो भी एक कर्म ही हे. जैसे तुमकु कोईको इलाज करनो नहीं आ रह्यो हे और तुम इलाज नहीं कर रहे हो तो ये कितनो बड़ो उपकार कर रहे हो वापे! तुमकु इलाज करनो आवे नहीं और तुमने इलाज करनो शुरु कर दियो बिचारे कोईको. वो तुमकु तो ठीक हे के जोश आ गयो इलाज करवेको पर वा गरीबके क्या हाल होंयगे ये तो सोचो जरा! तुमकु पढ़ानो नहीं आ रह्यो हे और तुम पढ़ा रहे हो तो वा पढ़वेवालेके क्या हाल होयगें वो तो सोचो जरा! तो वो कर्म नहीं करनो भी एक कर्म हे. जो विषय नहीं आवे वाको नहीं पढ़ानो वो भी एक कर्म हे. जो सेवा करवेपे लफड़ा होतो होय, विक्षेप अशक्ति प्रतिबन्ध अत्याग्रहप्रवेश परपीड़ा होती होय, वा स्थितिमें सेवा नहीं करनो भगवत्सेवा ही हे माईन्ड इट्. भगवत्सेवाकी ही वो एक वॅरायटी हे. वा स्थितिमें तुम भगवत्सेवा कर रहे हो तो वो भगवत्सेवा नहीं हे, भगवान्के ऊपर गुजार्‌च्यो जातो एक त्रास हे.

हमारे दादाजीको उदाहरण दऊं, बड़ो मस्त हे. उनके पैरमें कॅन्सर्के कारण अक्सर पस भरी रहती. अब वैष्णव सुबह सुबह

आवें चरणस्पर्श करवे; या बाजु मंगलाआरतीके दर्शन खुले होंय और या बाजु दादाजी चरणस्पर्शन देवे बैठे होंय. अब सब अलग-अलग तरहसु चरणस्पर्श करते तो उनकु तकलीफ होती पैरन्में यासू बारीमेंसु ही निशान साधके रखते. उनने वॅरायटी बनाई हती के ये चरणस्पर्श करे हे, ये चरणदंश करे हे, ये चरणपेषण करे हे, वा हिसाबसु अपने पैरकु सेट् करते रहते. चरणदंश करवेवालेकु ये पैर आगे कर दियो, चरणपेषण करनेवालेकु दूसरो पैर आगे कर दियो, जो चरणस्पर्श करे तो दोनों पैर रखे. उनके एक पैरमें पस भर्‍यो रहतो हतो. अब कोई दंश कर जाये तो उनके तो घंटाभर पैर दूखे! तो एडजस्टमेन्ट् करनो पड़तो हतो. सबकी क्लासिफिकेशन् कर रखी हती. **स्वस्वरूपार्थे प्र्‍योजिया कृत हुता जे संसार. अनेकधर्म कह्या प्रभुजीये निगमने अनुसार.** उनकु पता हती के कोई कैसे करे हे चरणस्पर्श. कोई पूरे पैरकु ही पीस देतो होवे. कोई नाखून ही चुभा देवे हे. कोई चरणप्रहस्त करे. कोई फट हाथ मारके ही चल्यो जाय. तो उनके घावमें लग जाये तो घंटा भर दूखे. सब स्वरूपकी वॅरायटी करके क्लासिफाई करके बारीमें देखते के कौन आ रह्यो हे!

ऐसे जब सब जीवके साथ रहनो हे तो कई तरहकी सेटिन्ग करनी पड़े और कोई उपाय ही नहीं हे वाको. तो कोई स्थितिमें कर्म नहीं करनो भी एक कर्म हे. वाकु अपन् निन्दाके अर्थमें समझें हें. वो अपनी हर बखत कोईमें गलती देखवेकी दृष्टिको दोष हे. अब वाकी गलतीकी ओर नहीं देखके वाकु पॉज़िटिव् सेन्स्में लो. वो फॉल्ट् फाइन्डिंग्की बात नहीं हे. जो व्यक्ति जा कामकु करवेके लिये कॅपेबल् नहीं हे या फिट नहीं हे वासु वो काम नहीं लेनो. ये

वा व्यक्तिकी भी सुरक्षा हे और सबकी सुरक्षा हे. **''तोसु सेवा नाहिं निभेगी. तातें तोकु ब्रह्मसम्बन्ध नहीं देत हों.''** ये ठाकुरजीकी भी सुरक्षा हे और जीवकी भी सुरक्षा हे. क्यों? **''भक्त्यभावेतु तीरस्थो यथा दुष्टैः स्वकर्मभिः अन्यथाभावम् आपन्नः तस्मात् स्थानात् च नश्यति.''** (सि.मु.२०) भक्ति करवेके कारण वाको नाश होयगो. वो नाश नहीं करनो होय तो केसकु डायोग्नाईज़् करनो चहिये हर बखत. डायग्नोसिस् किये बिना ट्रीटमेन्ट् शुरु नहीं करनो चहिये. अनेक धर्मकी बात या ऑर्डर्में कही गई बात हे और वामें एक सिस्टेमॅटिक् हियरार्की हे. वा हियरार्कीकु समझोगे तो अनेक धर्मन्की अनेकताको नेचर् समझमें आयेगो. पहलो पॉइन्ट् ये हे.

प्रश्न : आपने बतायो के कर्म नहीं करनो वो भी एक कर्म हे. वो धर्म समझमें आयो लेकिन वो कर्म नहीं कर रह्यो हे तो वो एटीट्युड् नहीं लग रह्यो हे. क्योंके ए.के. ४७ नहीं लियो तो वो अपनो धर्म हे. लेकिन कर्म नहीं कर रहे तो कछु कर नहीं रहे. वो एक एटीट्युड् रहेगो ना, वो कर्म कैसे कह्यो जायगो?

उत्तर : वो ही तो मैं समझा रह्यो हूं के वा लेवल्पे भी राजकाजमें जोड़्यो जा सके हे के नहीं जोड़्यो जा सके हे? वो जो जोड़्यो जा सके हे और वो जो काम नहीं कर रह्यो हे वो कर्म नहीं करके वो सेवा कर रह्यो हे. देखो, बोहोत सारे घरन्में एकदम जो बूढ़े-बुढ़ियां होवें उनसु अपन् कहें के भई घरको काम मत करो. क्योंके करेंगे तो गिरेंगे, हड्डी टूटेगी और अपन्कु उनको इलाज करवानो पड़ेगो. तो अपन् उनकु क्या कहें के आप बैठे

रहो. बैठे रहो तुम घरमें, वासु घरमें हस्च्यो भस्च्यो लगे के नहीं लगे घर? बच्चान्को मन लगे के नहीं लगे दादा-दादीके पास. अब अपन् उनकु कहें के "नहीं नहीं, तुम भी घरमें रह रहो हो तो झाड़ू काढ़ो, तुम अपने कपड़ा धोओ, तुम अपने बर्तन धोओ." धोयेंगे बिचारे पर धोते-धोते गिरे और हाड़कायें टूटे तो उनको इलाज भी तुमकु करवानो पड़ेगो ना. घर चलावेवालेपे जबरदस्तीको खर्चा पड़ेगो. वो खर्चा कौन झेलेगो? वो बैठे रहें खाली तो क्या वो सेवा नहीं कर रहे हें? या तरीकेके डोकरा-डोकरीयें चले जायें ना तब अपन्कु पता चले के घर कितनो सुनसान हो जाये! घर भूतकी तरह काटवेकु दौड़े अपन्कु. अब उनको सबसु बड़ो कर्म ये हे के वो कछु कर्म नहीं कर रहे हें. यदि वो कोई और कर्म करेंगे तो दुःखको पार नहीं रह जायगो. रोज चलते-चलते हाड़कायें टूटेंगे. रोज कछु न कछु बीमारियें होंयगी. झगड़ायें होंयगे सो अलग. क्योंके उनकी आदत कछु पुरानी होंयगी. तुम कछु नये ढंगसु करवानो चाहते होओगे. रोजकी मारामारी, रोजकी महाभारत! वो कछु नहीं कर रहे हें तो वामें शान्ति हे. वा शान्तिके रक्षक वो डोकरा-डोकरी हें. खाली बैठे हें. "**कर्मणि अकर्म यः पश्येद् अकर्मणि च कर्म यः, स बुद्धिमान् मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत्.**" भगवान् गीतामें कह रहे हें. कर्ममें जो अकर्म देख रह्यो हे, अकर्ममें जो कर्मकु देख रह्यो हे वो बुद्धिमान हे. तुमने खाली भैंसकी तरह समझ्यो के कर्म करो. समझमें आये के नहीं आये बस करो, अरे कछु तो करो! कितनो कर सकूं हूं? अरे भई! मार ही दोगे क्या करते करते? कछु करवेकी जरूरत नहीं हे. कछु मत करो, शान्तिसु बैठो. "तुम तसल्ली न दो सिर्फ बैठे रहो, वक्त मेरा ये मरनेका

टल जायेगा.'' खाली बैठे रहवेसु काम कछु हो जाये. वो चलने–फिरने लगें तो काम बिगड़ जाये. एक्स्ट्रा बर्डन् क्रियेट् हो जातो होवे हे. अकर्ममें भी कछु कर्म हो जातो होवे हे.

गुसांईजीने महाप्रभुजीने ये सारे फॉरमेट्में या सेवाकु कैसे इम्प्लिमेंट् कियो हे, कैसे इनकॉरपोरेट् कियो हे, वो इनसाईट् अपन्कु समझानो चाह रहे हें गोपालदासजी. **अनेक धर्म कह्या प्रभुजीये निगमने अनुसार** और उन अनेक धर्मन्सु **गिरिराजधरणनो ताप टाळ्यो श्रीलक्ष्मणसुत निरधार.** वो बात समझानो चाह रहे हें गोपालदासजी. या तरीकेको जो सेट्–अप् होयगो ना, जाकी सेवा करनो चाह रहे हें वाकी तकलीफको पार नहीं रह जायगो और यदि या तरीकेसु सेवा कर रहे हें तो वाकी सब तकलीफ मिट जायेंगी और वाकु सुख मिलेगो. गिरिराजधरणको ताप टलेगो. अनेक धर्मको भीतरी अर्थ समझो. ऐसो केयोटिक् अर्थ मत समझो के जो आप कह रहे हो सो हम करवे तैयार हें. वो कहो तो वो करें वा तरहको सिद्धान्त नहीं हे.

प्रश्न : महाप्रभुजी गुसांईजी कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं सर्व सामर्थ्यवान हें तो ये सामर्थ्य भी प्रयोगमें ला सकते हते. पर या स्टेज्के ऊपर उनने ये कृपा प्रयोगमें नहीं लाई. ?

उत्तर : Now listen to me. He definitely showered his grace upon Gopaldasji. We can not doubt it. What sort of grace? Did he forcefully took him to perform Seva of Thakurji? He simply showed him what the principles are ?

What a Child can do? Baba Baba Black Sheep.. Yes Sir Yes Sir three bags full. one for my master... that is all. Matter finished. He made him capable of singing. तो क्या ये प्रमाणपंथके अन्तर्गत नहीं आवे हे? क्या तुम याकु डिनाई कर सको हो? वोही मैं बतावे जा रह्यो हूं. क्योंके पोषणको प्रकार हे. याकु सिस्टमॅटिक् समझोगे तो सारी बात समझमें आयेगी अन्यथा कन्फ्युज्ड् हो जाओगे.

(महाप्रभुके द्वारा कर्तव्योपदेशमें रह्यो भयो तात्त्विक सातत्य)

मैंने अपने प्रवचनके पहले दिनमें ही एक बात बताई हती और आप सब लोग कृपाशील होओगे मोपे तो आपकु याद होयगी. नहीं कृपाशील होओगे और भूल भी गये होओगे तो भी कोई बात नहीं. फिरसु याद दिवा दऊं. ये बात मैंने बताई हती के अपने यहांको नास्तिक होय के आस्तिक, ईश्वरवादी होय के अनीश्वरवादी; कर्मी ज्ञानी भक्त होय, भोगवादी के त्यागवादी; कोई भी धर्मकी साधना ऐसी नहीं बताई गई हे के जा धर्मसाधनाके पीछे कोई मॅटाफिज़िकल् एप्रोच् न होय. चार्वाकके लेवल्सु लेके; चार्वाकने यदि ये बात बताई हे के **"यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्, ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्. भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः."** जब तक जीयो तब तक मौज मारो. काहेकु धर्मके लफड़ामें पड़ रहे हो! क्योंके देह यदि खतम हो गयो तो पाछो मिलवेवालो नहीं हे. यासु जब तक जीयो तब तक मौज मारके जीयो. ये धर्मोपदेश कर रह्यो हे चार्वाक. या धर्मोपदेशके पीछे चार्वाककी एक पूरी मॅटाफिज़िक्स् काम कर रही हे. ईश्वर नहीं हे, आत्मा नहीं हे, सारी सृष्टि जल तेज वायु सु पैदा भई हे. ईवन् आकाश भी नहीं हे के जहां तुम्हारी

आत्मा जा सके. इतनी सिस्टमॅटिक् मॅटाफिज़िक्स् वाकी काम कर रही हे. अनुमान कोई प्रमाण नहीं हे. जो दीख रह्यो हे वो ही प्रमाण हे. ये वाकी एथिस्टमॉलॉजी हे. तो अपने यहांको कोई भी कर्तव्योपदेश ऐसो नहीं हे के जा कर्तव्योपदेशके पीछे वाको कोई मॅटाफिज़िकल् या एपिस्टमॉलोजिकल् एप्रोच् नहीं होय. ये तो एकदम ग्राउन्ड् लेवल्की बात हे. महाप्रभुजी तक याकु खींच जाओ. महाप्रभुजी भी जब ये बात कह रहे हें के भक्ति करो, भक्ति करो तो वाके पीछे **"अतस्तु ब्रह्मवादेन कृष्णे बुद्धिः विधीयताम्"** (सि.मु.१२) कह रहे हें. तो कोई उनको मॅटाफिज़िकल् प्रि–सपोज़ीशन् हे. उनकी जो एपिस्टमोलॉजी हे जासु उनने मनमें वो मॅटाफिज़िकल् प्रि–सपोज़ीशन् दृढ़ कियो हे और वा दृढ़ करवेके बाद वो कोई कर्तव्योपदेश कर रहे हें. ये बात मैंने अपने प्रवचनके पहले दिन शायद इन शब्दन्में नहीं पर कोई दूसरे शब्दन्में समझाई हती और आप लोगन्को ऐहसान होयगो मेरेपे यदि मेरी बातन्कु याद करके रखो तो. मैं वो बात कहनो चाह रह्यो हूं. सो एक बात देखो, महाप्रभुजीकी कन्सिस्टॅन्सी या बारेमें कितनी मीठी हे. वो कोईने नहीं बताई हे. यद्यपि सबने कन्सिस्टॅन्सी रखी जरूर हे. पर महाप्रभुजीकी कन्सिस्टॅन्सीमें माने मॅटाफिज़िकल् एपिस्टमॉलोजिकल् और जो धार्मिक उपदेश हें वाकी कन्सिस्टॅन्सीमें जो मिठास हे वाकु फील् करके देखो.

(तत्त्व और प्रमाणप्रमेयसाधनफल की सिस्टम् या संहति)

अपन् सब जानें हें के महाप्रभुजी ब्रह्मकु सच्चिदानंद कह रहे हें. या तरीकेकी मॅटाफिजिकल् कन्सिस्टॅन्सी हे. सच्चिदानंदको जो

सत् हे वो प्रमेय हे. सच्चिदानंदको जो चित् हे वो प्रमाण हे और वो साधन भी हे. जो वाको आनन्दांश वाको साधन बने वो अलौकिकसाधन हे, वो अपने पास अवेलेबल् नहीं हें. आनन्दांश फल भी हे. बोहोत खूबसूरतीसु महाप्रभुजीने इन तीन अंशन्कु सिन्क्रोनाईज़् कियो हे. या प्रमेय प्रमाण साधन फल की जो सिस्टम् हे वो सिस्टम् उनके ब्रह्मको जो मॅटाफिज़िकल् कन्सॅप्ट हे वासु कैसे सिन्क्रोनाईज़् हो रह्यो हे. ये प्लेसमेन्ट् हे. प्रमाण प्रमेय साधन फल की महाप्रभुजीके द्वारा की गई प्लेसमेन्ट् हे के या तरहसु याको प्लेसमेन्ट् करो. यामें मिठास हे एक. अपन्कु कोई भी चीज बाहरसु लानी नहीं पड़ रही हे. न तो प्रमाण, न प्रमेय, न साधन, न फल. जो भी कछु हे अपनो लोकल् प्रोडक्ट हे. इम्पोर्ट करवेकी कोई जरूरत नहीं हे. सब चीज मॉजूद हे अपने पास. अपने ब्रह्ममें हर चीज मॉजूद हे करके जब भी ब्रह्मकी मीमांसा करेंगे तो प्रमाण प्रमेय साधन फल. जब भी लीलाकी मीसांसा करेंगे तो प्रमाण प्रमेय साधन फल; क्योंके वो मॉजूद हे. ये उनकी एक सिस्टम् हे.

(लौकिक साधन)

वा सिस्टम्के कारण महाप्रभुजी एक बात अपन्कु बतानो चाह रहे हें; क्योंके तुम कछु भी साधन करोगे तो तुम्हारी चेतनाके जो फन्क्शन् हें ज्ञान इच्छा प्रयत्न, वाहीसु तो करोगे ना! वो दिन कहां के मियांके पैरमें जूती के अपन् आनन्दसु कोई साधना करें!! या तो ज्ञानसु करेंगे या कछु इच्छासु करेंगे या प्रयत्नसु करेंगे. तो अपन् जो कछु भी साधन करेंगे, लौकिक साधन, वो अपने ज्ञान, अपनी इच्छा, अपने प्रयत्नसु ही तो करेंगे. जैसे सेवा भी करेंगे ठाकुरजीकी

तो वो कब करेंगे? अपन्कु समझमें आयगी तो करेंगे, नहीं समझमें आई तो कैसे करेंगे? समझमें आई पर इच्छा नहीं हो रही हे तो कैसे करेंगे? इच्छा हो रही हे पर अपने पास प्रयत्नकी सामर्थ्य नहीं हे तो कैसे करेंगे? तो अपनो ज्ञान, अपनी इच्छा, अपने प्रयत्न सु जब अपन्कु कोई साधन करनो हे तो वो लौकिक हो जायगो.

(अलौकिक साधन या कृपात्मक अवान्तरव्यापार)

वाकु कछु करवानो हे, तो वो तो कोई ज्ञान इच्छा प्रयत्न के आधारपे नहीं करायगो; वो तो आनन्दके उच्छलनसु करवायगो. वो जो साधन हे वो चाहे कृपात्मक होय, चाहे द्वेषात्मक होय, चाहे स्नेहात्मक होय, चाहे हत्यात्मक होय, जीवनप्रदानात्मक होय, वो तो आनन्दके उच्छलनसु कर रह्यो हे. मूलभूत अन्तर वहां आ रह्यो हे. याके लिये वाके जो साधन हें वो लौकिक नहीं हें पर वो तो अलौकिक साधन हें. और याही लिये महाप्रभुजीकी या प्रिसपोज़ीशन्कु हरिरायजी केह रहे हें **''फलं वा साधनं वा यत्र पुष्टिमार्गः स कथ्यते.''** (पुष्टिमार्गलक्षणानि.१)

वो फल ही वहां साधन बन रह्यो हे. जब वो साधनभावसु तुम्हारेसु इन्ट्रएक्ट् कर रह्यो हे. क्योंके तुम अपनी इच्छा प्रयत्न सु वा साधनकु एडोप्ट् नहीं कर रहे हो. वो कोई अपने आनन्दको आउटलेट् तुम्हारी क्रियामें, तुम्हारे कर्ममें, तुम्हारे ज्ञानमें, तुम्हारी इच्छामें, तुम्हारे प्रयत्नमें या तरीकेको दे रह्यो हे. यासु वो अलौकिक साधन बन जावे हे. लौकिक साधन नहीं हे. वाकु 'बीजभाव' कह दियो हे, 'कृपा' कह दी हे, सब तरहको

'अवान्तर-व्यापार' कह दियो हे. प्रमेयरत्नार्णवकार वाकु अवान्तर-व्यापार मान रहे हें. माने अपनो ज्ञान इच्छा प्रयत्न वाकी कृपाको अवान्तर-व्यापार हे. 'अवान्तर-व्यापार' कहवेको मतलब क्या? ये तुम्हारो व्यापार नहीं हे ये वाको अलौकिक-व्यापार हे. कोई लौकिक-व्यापार ही नहीं हे. ये सेटअप् हे महाप्रभुजीको पुष्टिमार्गके लिये. क्यों ये सेट-अप् हे? क्योंके महाप्रभुजीको मन कहीं कबूल कर गयो हे या बातकु के ब्रह्म सच्चिदानंद हे. जो भी कछु कन्सॅप्ट् अपन्कु डिराईव् करनो हे प्रमाणको, प्रमेयको, साधनको, फलको, वो वाके सच्चिदानंदमेंसु डिराईव् करनो हे. कहीं बाहरसु इम्पोर्ट नहीं करनो हे. होमोजीनियस् हे साधन. लोकल् प्रोडक्ट हे. ब्रह्मके ब्राह्मिक परस्पॅक्टिव्में जो मॉजूद हे वाकु तुमकु फिरसु साधनकी तरह यूज़् करनो हे.

(अनेक धर्मन्की सिस्टम्)

इतनो के जो हवा वातावरणमें मॉजूद हे वाकु सिर्फ तुमकु अपनी नाकमें लेनी हे. हवा पैदा नहीं करनी हे. जो अनाज दुनियामें पैदा हो रह्यो हे वाकु सिर्फ तुमकु खानो हे. अनाज पैदा करनो नहीं हे. जो पानी दुनियामें हे, वो पानी तुमकु वापरनो हे. जो जमीन तुमकु अवेलेबल् हे वा जमीनपे तुमकु चलनो हे. जो प्रकाश तुमकु अवेलेबल् हे वा प्रकाशसु तुमकु देखनो हे. वा लाईट्कु तुमकु पैदा करवेकी जरूरत नहीं हे. क्योंके तुम पैदा भी करोगे लाईट् तो वा लाईट्के अंशरूपसु तुम लाईट्कु पैदा कर पाओगे. स्वतन्त्ररूपसु लाईट अपनेसु तो पैदा होनेसु(हो नहीं) रही. जो रॉ-मॅटीरियल् मौजूद हे वामेंसु ही अपन् कछु पैदा करेंगे. प्रमाण प्रमेय साधन फल. वाके

यहां जो सिस्टम् मौजूद हे वामेंसु ही पैदा करेंगे. ब्रह्मने अपन्कु ये सिस्टम् प्रोवाईड् करी हे के मैं कैसे सच्चिदानंदमें प्रमेय हूं, कैसे प्रमाण हूं, कैसे साधन हूं और कैसे फल हूं. या बातकु पहले अच्छी तरहसु मनमें जमा लो तो तुमकु **अनेक धर्म कह्या प्रभुजीये निगमने अनुसार** कौनसी बात कहांसु डिराईव् हो रही हे और वा बातके कारण कौनसो तरहको अपनो स्वरूप, अपन्कु वो समझानो चाह रहे हें. कहांसु आ रह्यो हे पहले पहचानो याकु.

प्रश्न : यामें लौकिक साधन अने अलौकिक साधन को भेद कैसे समझमें आवे?

(लौकिकसाधनको विवेक)

उत्तर : एसो हे के जो खावेको खुराक दुनियामें मौजूद हतो; अपने मनुष्यकी बात तो भूल ही जाओ, दूसरे जानवरन्की बात कर रह्यो हूं. दुनियामें खावेकी खुराक खाली एक प्रकारकी ही नहीं, वॅजीटेरियन्, नॉन-वेजीटेरियन्, यामें भी खूबसारी वॅरायटीवालो, इन सारी खुराकन्कु कन्ज़्युम करवेके लिये; अपन्कु लगे हे के अपनी समझ हे पर हरेक जानवर एक दूसरेकु देखके समझे हे. उदाहरणके लिये गीदड़कु कोई भी दिन ऐसी समझ नहीं आवे हे के हाथीकु खानो हे मोकु. शेर मार दे और वो खातो होय, बचे भयेकु गीदड़ खावेके लिये पोहोंच जाये हे. कुत्ता भी पोहोंच जायें हें हाथीकु खावेके लिये.

बोहोत सारी परीक्षायें पुराने जमानामें आयुर्वेदमें होती हतीं, तक्षशिलामें, वामें ऐसो कह्यो जाय हे के फाइनल् डिग्री कब दी

जाती हती के याकु दो-पांच मीलको रेडियस् दियो जातो हतो के यामें जाओ, याको चक्कर मारो और कोई ऐसी वनस्पतिकु खोजके लाओ के जाको कोई मेडीसिनल् प्रयोग न होतो होय. जब कोई लातो तो डिग्री मिलती. क्योंके आयुर्वेदमें ये पढ़ावेमें आतो हतो के जानवर कई प्लान्ट्स्कु कई जड़ीबूटीन्कु खाके अपनो रोग दूर करें हें. अब अपन् लेबोरेटरीमें प्रयोग करते होवें हें. आयुर्वेद प्रकृतिकी लेबोरेटरीमें ऐसे प्रयोग करके देखते हते. या प्रकारसु परीक्षा लेते हते. आखिरमें ये कहांसु समझमें आई के कौनेसे रोगकी कौनसी दवाई हे? जो कछु भी मौजूद हे वाको कोई दूसरो इस्तमाल कर रह्यो हे. जो कोई इस्तमाल नहीं करतो होय तो अपनी हिम्मत ही नहीं पड़े के खावेकी हे के नहीं? और जाकु अपन् कभी भी नहीं खावें वाकु कोईकु खाते भये देख लें तो भले अपन्कु खावेकी इच्छा होयके नहीं होय पर इतनो तो समझमें आ ही जाये के याकु भी खायो तो जा सके हे.

(शास्त्रप्रमाणमूलक साधन ही अलौकिक)

दक्षिण अमरीकामें पेसिफिक् टापूमें अलबत्ता कीड़ा, लारवान्कु ऐसे खायो जाय हे के जैसे रसगुल्ला या लीची खाई जाय हे. ये लोग मरें नहीं हें. ये लोग कैसे खा लें हें? क्योंके कोईने कोईकु खाते हुये देख्यो होयगो यासु उनकु ऐसो लग्यो के याकु भी खायो जा सके हे. यदि तुमने नहीं देख्यो होय के ये खायो जा सके हे के नहीं तो तुम्हारे खावेकी इच्छा होयगी? क्यों नहीं इच्छा होवे हे? हरेक बखत अपनी समझ याही प्रकारसु काम करे हे. यदि गुरुने समझायी भी होय तो गुरुने भी तो कहीं न कहींसु समझी होयगी ना! अब सच्ची के खोटी

जहांसु समझी तो ये भी समझा रह्यो हे. अब अपन् समझें के गुरु समझा रह्यो हे तो गुरुके कोई बड़े सींग उग गये. यदि गुरु अपने बड़े सींगन्सु बता रह्यो हे तो वो गोस्वामी हे पर **पूर्णपुरुष प्रमाणपंथा** तो नहीं हे ना? याके लिये सर्वनिर्णयनिबन्धमें महाप्रभुजी आज्ञा करें हें के जो उपदेश दे रह्यो हे **"अन्यथा मनसि अन्यद् विधाय अन्यथा करणे (उपदेशे) न फलसिद्धिः."** (त.दी.नि.प्र.२।२२७) प्रमाणके अनुसार उपदेश दे तो गुरु हे. मनगढ़न्त कछु भी बोल दे तो वाको नाम गुरु नहीं हे. सर्वनिर्णयग्रन्थमें क्लीयर कट् आज्ञा हे गुरुके लिये ''प्रमाणमूलक सेवोपदेश पुरुषार्थपर्यवसायी.'' कल्पनामूलक पुरुषार्थपर्यवसायी नहीं होवे. **पूर्णपुरुष प्रमाणपंथा व्याख्याता वेदान्त.** यदि शास्त्रानुसार कर रहे हो तो चाहे वो कोईने कही होय वो अलौकिक हे. यदि शास्त्रानुसार नहीं हे तो वो चाहे कोईने भी कही होय वो लौकिक हे. जाने-अनजाने तुम्हारी टिकट जा भी कम्पार्टमेन्ट्में रिजर्व् भयी होय, वामें तुम चढ़ गये तो वो प्रामाणिक हे. जाने-अनजाने जा कम्पार्टमेन्ट्में तुम्हारी टिकट रिजर्व नहीं भई होय और तुम वामें चढ़ गये तो कन्डक्टर् क्या करेगो? अब ये तो तुम्हें नक्की करनो पड़ेगो के फिर क्या करनो? जाने-अनजाने चढ़े तो. लेकिन अनजाने भी चढ़े पर ठीक कम्पार्टमेन्ट्में चढ़े तो? **"अज्ञानादथवा ज्ञानात् कृतात्मनिवेदनं, यैः कृष्णसात्कृतप्राणैः तेषां का परिदेवना."** (नव.४) जान-बूझके गलत प्रकारसु करायो हे तो जो करायो हे वो ही खोटो हे ना? मुद्दा ये हे.

(प्रमाण-प्रमेयको कॉरस्पॉन्डन्स् या परस्परता)

तो एक आस्पॅक्ट् खास समझवेको हे. कल मैंने आपकु

एपिस्टमॉलोजिकल् सर्कल् और मॅटाफिजिकल् सर्कल् बताये हते. आज अपन् उन दोनों सर्कलकु साधनके सर्कलसु और फलके सर्कलसु सप्लीमेन्ट् करेंगे. जासु के अपन्कु क्लीयरकट् पिक्चर् समझमें आवे के **स्वस्वरूपार्थे प्र्योजिया** और **अनेक धर्म कह्या प्रभुजीये** ये कौनसे जातकी एक हियरार्की सिस्टम् हे. कल तो मैंने आपकु ये बात बता दी हती. अब ये स्वतन्त्रक्रीड़ा पुरुषोत्तमकी सृष्टिकी बात नहीं हे. पूर्णपुरुष प्रमाणपंथाकी सृष्टिकी बात आ रही हे. पूर्णपुरुष प्रमाणपंथाकी बात अपन् यहां ये समझ सकें के वाक्पतिकी वाणी. ये अपनो एपिस्टमॉलोजिकल् सर्कल् हे. प्रमेयके सर्कल्में कल अपन्ने देख्यो हतो. या वाक्पतिकी वाणीकु अपन् यशोदोत्संगलालितसु कॉरस्पोन्ड् करें. श्रीयशोदोत्संगलालित माने घरको ठाकुर. वासु वाकी कॉरस्पोन्डेन्स् देखो. प्रमाण प्रमेय को म्युच्युअल् कॉरस्पोन्डेन्स् या ढंगको हे. माने ब्रह्म हे तो श्रुतिसूत्रसु समझनो पड़ेगो. परमात्माको एस्पॅक्ट् गीतासु समझनो पड़ेगो. भगवान्वालो आस्पॅक्ट् भागवतसु समझनो पड़ेगो. यशोदोत्संगलालित कहो चाहे घरको ठाकुर कहो वा आस्पॅक्ट्कु कैसे डील् करनो, वो या प्रमाणपंथापुरुषकी वाणीसु समझनो पड़ेगो के याकु कैसे डील् करनो जासु वाको ताप दूर हो जाये. **गिरिराजधरणनो ताप टाळ्यो श्रीलक्ष्मणसुत निर्धार** ये बात समझो के वाको ताप टालवेको यहां इश्यु हे, वाको यहां प्रोग्राम हे.

(ब्रह्मको साधनरूप कॉरस्पॉन्डन्स् : ब्रह्मतादात्म्यबोधरूप शरणागतिको साधन)

ये साधनको जो सर्कल् हे वामें देखो, ब्रह्मके कॉरस्पॉन्डिंग्

ब्रह्मतादात्म्यबोधके अलावा अपन् क्या कर सकें हें? जब भी तुम अपने आपकु ब्रह्मके तरीकेसु सोचोगे तो फिर करवे–धरवेको कछु भी नहीं रह गयो. क्यों? आखिरमें अपन् एक अंश ही तो हें वा ब्रह्मके. अपन् वा रेलके डब्बा हें के जो इंजनके साथ लगे होवेके कारण इंजनके साथ घिसटे जा रहे हें. उनकु कहां मौका हे अलगसु चलवेको? उनकु चलवेको मौका नहीं हे. तो ब्रह्मतादात्म्यबोधके अलावा यहां तो कछु भी साधन नहीं हो सके. महाप्रभुजी सेवाफलमें केह रहे हें. थोड़ो और एडवान्स्ड् स्टेज्पे जाके महाप्रभुजी नवरत्नमें केह रहे हें **''चित्तोद्वेगं विधायापि हरिर्यद्यत् करिष्यति, तथैव तस्य लीलेति मत्वा चिन्तां द्रुतं त्यजेत्.''** (नव.८) अकर्मकी बात समझा रहे हें. यदि तुम्हारो कर्म बराबर नहीं हो रह्यो हे, तो दम मत तोड़ दो. शरणागतिकी भावना करो. शरणागति अपन् बेसिकली कंठी लेनो समझें हें महाराजसु. वो तो वाको खाली एक बाह्य रूप हे. इन्सिग्निफिकेन्ट् रूप हे. वाको मोस्ट सिग्नीफिकेन्ट् रूप तो ये हे के भगवान्की शरणमें मैं हूं. ये कायावाणीमनसु अपन्कु ऑटोसजेशन् देते आनो चहिये. वो कंठी ले ली और ये सजेशन् देनो भूल गये तो शरणागति; ठीक हे के ठप्पा लग गयो हे पर वो डॉक्युमेन्ट् वॅलिड् नहीं हे बोहोत. माने डॉक्युमेन्ट् क्रियेट् कर दियो हे पर वा डॉक्युमेन्ट्को रजिस्ट्रेशन् भयो नहीं हे.

(परमात्माको साधनरूप कॉरस्पॉन्डन्स् : शरणागति और अनौपाधिकरति)

ब्रह्मके बाद जो परमात्मा आ रह्यो हे. याहीलिये या परमात्माके लेवल्पे शरणागति और अनौपाधिक रति कह दोगे तो और अच्छी हो जायेगी बात. ये एक साधना आ रही हे. या

साधनामें अपन् समझ सकें के सचमुचमें महाप्रभुजीने अनेक धर्मके अन्तर्गत ये बात भी बताई हे के तुमसु वा शरणागतिको भाव भी मेइन्ट्रेन नहीं होतो होय तो वाणीसु अपने आपकु ऑटोसजेशन् दो **''श्रीकृष्ण:शरणं मम, श्रीकृष्ण: शरणं मम''** वो तो एकदम ग्राउन्ड् लेवल्की बात हे वो अपन् देख सके हें के महाप्रभुजीने कितने ऑप्शन्स्को विचार करवेके बाद आखिरमें एक थॅरापी बताई हे. और परमात्मा क्योंके **"ईश्वर: सर्वभूतानां हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति, भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया. तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत. तत्प्रसादात् परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्."** (भग.गीता.१८।६१-६२) तो शरणागतिसुं तुमकु एक स्थान मिल रह्यो हे ब्रह्मके सिस्टम्में. पर जब तुम वासु फाईट् कर रहे हो तब तुमकु वो स्थान नहीं मिल रह्यो हे, तुम डिस्टर्ब् हो रहे हो क्योंके तुम्हारो अहंकार डिस्टर्ब् कर रह्यो हे. **"ईश्वरो अहम् अहं भोगी सिद्धो अहं बलवान् सुखी, आढ्यो अभिजनवान् अस्मि को अन्यो अस्ति सदृशो मया. यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इति अज्ञानविमोहिता:."** (भग.गीता.१६।१४-१५) भगवान् गीतामें आज्ञा करें हें के जो मायाविमोहित हें वो मोकु प्रपन्न नहीं हो रहे हें. जो मायामोहित नहीं हें वो तो प्रपन्न होवे हें. **"न मां दुष्कृतिनो मूढा: प्रपद्यन्ते नराधमा:"** (भग.गीता.७।१५) अधम नर प्रपन्न नहीं हो रहे हें तो अधमता उनकी क्या बातकी हे? **"मायया अपहृतज्ञाना आसुरं भावम् आश्रिता:"** (भग.गीता.७।१५) ये भगवान् गीतामें कह रहे हें के परमात्माके साथ इन्ट्रएक्शन्के अनेक धर्मन्मेंसु एक धर्म ये आ रह्यो हे के यदि तुम वाकु परमात्मा समझ रहे हो और तुम वाके

साथ मॅनेज् नहीं कर पा रहे हो तो हो जाओ शरणागत. **"मामेव ये प्रपद्यन्ते मायाम् एतां तरन्ति ते."** (भग.गीता.७।१४) ये एक सिस्टम् अनेक धर्मके अन्तर्गत समझायी गयी हे. महाप्रभुजीने निरन्तर कृष्णाश्रयमें नवरत्नमें विवेकधैर्याश्रयमें पंचपद्यानिमें सर्वत्र या प्रोब्लम्कु टॅकल् कियो हे के तोसु ये नहीं हो रह्यो हे तो ये कर. अपने आपकु इतनो तो समझा पा रहें हें के नहीं? वामें भी पाछी कॉम्प्रोमाईज़् बताई हे. कौनसी? यदि तुम नहीं कर पा रहे हो तो इतनो तो शुरु करो खुदकु समझानो. खुदकु कहनो शुरु करो के **श्रीकृष्णः शरणं मम, श्रीकृष्णः शरणं मम, श्रीकृष्णः शरणं मम;** तो भी बात बनेगी. धीरे धीरे वो वाणीसुं मनमें जायगी, मनमेंसु व्यवहारमें आयेगी. **"वदद्भिरेवं सततं स्थेयमित्येव मे मति."** ये ऑटोसजेशन्की बात हे.

(भगवान्को साधनरूप कॉरस्पॉन्डन्स् : नवधाभक्तिरूप साधन)

वाके बाद साधन, यहां देखो भगवद्भक्ति आ रही हे. ये भक्ति क्या हे? **"बीजदार्ढ्यप्रकारस्तु गृहे स्थित्वा स्वधर्मतः, अव्यावृत्तो भजेत् कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः."** (भ.व.२) पूजा और श्रवणादिभि. यद्यपि टीकाकार यामें बड़े उलझ गये हें और पुष्टिमार्गमें वा उलझनके कारण पूरे दो सम्प्रदाय बन गये हैं. पर अपन् याकु सिम्प्लीफाई करके देखें तो एक सीधोसो वाको एक रूप समझमें आवे हे और वा उलझनको एक सीधोसो उपाय ये हे के अपने यहांकी सेवाप्रणालीमें पूजाप्रणाली इन्कॉर्पोरेट् की गई हे के नहीं करी गई हे? करी गई हे. अपने यहांकी सेवाप्रणालीमें जैसे कल मैंने आपकु बतायो के गुसांईजीने **''श्रीवल्लभाचार्यमते फलं तत्प्राकट्यम् अत्र अव्यभिचारिहेतुः, प्रेमैव**

नवधोक्तभक्तिः तत्र उपयोगो अखिलसाधनानाम्.'' (वहीं) नवधा-भक्ति इन्कॉर्पोरेट् की हे के नहीं? नवधा-भक्ति इन्कॉर्पोरेट करी इतनो ही नहीं **"गृहे स्थित्वा स्वधर्मतः"** (भ.व.२) जो तुम्हारो धर्म हे वामें **"यावद् देहो अयं देहाभिमानः तावद् वर्णाश्रमधर्म एव स्वधर्मः भगवद्धर्मादयो अपि विधर्माः परधर्माः वा"** (सुबो.३।१८।२) वो सारे ऑप्शन्स् वहां महाप्रभुजीने सजेस्ट् किये हें. वो भगवद्भक्तिके पार्ट तरीके वहां आ रहे हें.

(भगवान्की दृष्टिसु साधनमर्यादा न कि ब्रह्मकी दृष्टिसु)

वो वहां ब्रह्मज्ञान तरीके नहीं आ रहे हें. क्योंके यदि मैं वर्णाश्रमधर्मको पालन नहीं कर पा रह्यो हूं तो ब्रह्मको कहा बिगड़्यो? यदि समझो के मैं शूद्राचारकु पाल रह्यो हूं तो ब्रह्मको कहा बिगड़्यो? ब्रह्मको चरण शूद्र हे तो मैं वाके चरणमें बैठ्यो हूं. वो तो दास्यभावकी पराकाष्टा हो गई प्रभुके चरणमें बैठूं. मैं अपनो वर्णाश्रमधर्म नहीं पालके शूद्रकी तरहसु जी रह्यो हूं तो ब्रह्मको कहा बिगड़ रह्यो हे? ब्रह्मके साथ मेरे रेसीप्रोकेशन्में कहा बिगड़ रह्यो हे? कछु भी नहीं. **"ब्राह्मणो अस्य मुखम् आसीत् बाहू राजन्यः कृतः, ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत."** (तैत्ति.आर. ३।१३।२) वाके चरणमें बैठयो भयो हूं. वासु ज्यादा बडी सिद्धि क्या और चहिये, देवदुर्लभ सिद्धि हे. ज्यादासु ज्यादा क्या होयगो? यदि वर्णाश्रमधर्म नहीं पाल रहे हें तो शूद्र हो गये. शूद्र हो गये तो वाके चरणमें हें. बाहर कहां जायेंगे? ब्रह्मको कछु नहीं बिगड़ रह्यो हे. तुम यदि रेसीप्रोकेट् नहीं कर पा रहे हो, भक्तिके जो डुज़् और डुनॉटस् हें, उनमें जो अंगतया बताये गये हें वर्णाश्रमधर्म और

नवधाभक्ति, उनकु यदि तुम कॉप्-अप् नहीं कर पा रहे हो तो शास्त्र क्या कहेगो? शूद्र. जैसे शास्त्र कहे हें तीन पीढ़ी तक जाने अपनी ब्राह्मणवृत्ति नहीं अपनाई तो वो जो वृत्ति कर रह्यो हे वो वो ही हे. माने क्षत्रियकी वृत्ति कर रह्यो हे तो वो ब्राह्मण नहीं रहके वो क्षत्रिय हो गयो. हवेलीके धन्धाकी बनियाकी वृत्ति कर रह्यो हे तो वो बनिया हो गयो. यदि वो ठाकुरजीकु बेच रह्यो हे तो वो चाण्डाल हो गयो, शूद्रसु भी गयो बीत्यो. जो तुम काम कर रहे हो वो तुम्हारो वर्ण हे. वर्णसु काम नहीं हे. बात एकदम साफ हे. समझो के तुम चाण्डाल हो गये तो ब्रह्मके साथ रेसीप्रोकेशन्में क्या खराबी आई?

वेदमें बोहोत ही खूबसूरत बात कही गई हे के जा बखत आदमी सो जाय हे वा बखत वाकी चेतना न ब्राह्मण रह जाय और न चाण्डाल रह जाय. वा बखत वो ब्रह्मकी चेतनासु युनीफाईड् हो जाय. ये ज्ञानकी बात नहीं हे. जागे तो फिर वो ब्राह्मण और चाण्डाल हो जाय. सोतो रहे तो फ्रीज़ कर दियो वाकु. **"स्वं ह्यपीता भवति."** (छान्दो.६।८।१) जब अपनी प्रियाकु चौंट जायें तो सारी दुनियाकु भूल जायें, ऐसे ही नींदमें तुम ब्रह्मकु चौंट जा रहे हो. ऐसे तुम सारी दुनियाकु भूल गये के तुम ब्राह्मण हो के तुम चाण्डाल हो; आदमी हो के हेवान हो; वा समय तुम सब एकाकार हो गये. ये शास्त्र कहे हे. वाकु लफड़ा क्या हे? वाकु तो कोई लफड़ा हे ही नहीं. यदि अपन् ज्यादासु ज्यादा चाण्डाल हो गये ना तो वाकु क्या लफड़ा हे? वो तो तुमकु रातकु भेंट ही रह्यो हे. शास्त्र यों कहे हे के सो जावेके बाद ब्राह्मण न ब्राह्मण हे, न

चाण्डाल चाण्डाल हे, न राजा राजा हे, सब एकाकार हो जा रहे हें. एकीकृत हो जा रहे हें. ये सारो जागवेपे लफड़ा पैदा हो रह्यो हे. जागते ही वो अलार्म बजे ना! धन्धावालेकु धन्धाको अलार्म बज जाये; वो मुन्नाभाईको क्या गाना हतो ''सुबह हो गई चाचू. घड़ीके कांटे भागे और सूरज चाचू जागे.'' बिल्कुल वोही बात हे सुबह हो गई. फिर मुन्नाभाईकु कामपे तो लगनो ही पड़े ना! कौनकी पाकिट मारनी, कौनके खीसामें हाथ डालनो, कौनकु बेवकूफ बनानो, कौनकु डॉक्टर्को दवाखाना दिखानो. घड़ीके कांटे भागे तुरत. वो साधनाको रहस्य समझो. तो सारो साधनाको जो रहस्य हे वो सुबह जगवेपे शुरु हो रह्यो हे. ''चंदा मामू सो गये, सूरज चाचू जागे.'' प्रिंसिपल् वो ही हे. वो घड़ीके कांटे भागे और ब्राह्मण ब्राह्मण हो जाये, बनिया बनिया हो जाये. डॉक्टर् डॉक्टर् हो जाये, कुत्ता कुत्ता हो जाये. सोयो भयो कुत्ता भी शेरके बराबर हे और सोयो भयो शेर भी कुत्ताके बराबर हे. सोते बखत क्या पता चले के शेर हे के कुत्ता हे! कछु फर्क पड़े? सोये भये शेर और कुत्ता में फर्क क्या हे? जागवेके बाद तो बोहोत फर्क हे. तो ब्रह्मकु कोई लफड़ा नहीं हे. ब्रह्मकु कछु भी तकलीफ नहीं हे या बारेकी, या बातकु अच्छी तरहसु समझो. तकलीफ कहांसु पैदा हो रही हे? जा तरीकेको अपन्ने भगवान्के साथ रेसीप्रोकेट् करवेको प्रोग्राम् बनायो हे वामें लफड़ा हो रह्यो हे. यदि तुमकु यहां प्लेस् कर दियो जाय, ये कहके के आज तुम ये करो अथवा ये करो; कल याके लिये आईयो, आजके लिये धांधल मत करो. आजके लिये यदि तुम धांधल कर रहे हो तो महाप्रभुजी फिर हां हां ही करेंगे ब्रह्मसम्बन्ध देवेके लिये!! (दीक्षितजी महाराजश्री वाली हां हां) फिर पीछेसु जाके

कहेंगे के आ गयो ना तू छोड़के मर्यादामें. हें हें करते रहे महाप्रभुजी पर ब्रह्मसम्बन्ध नहीं करायो. कोई पीछे पड़ जाये तो क्या करे कोई? तो ये वाको सेट्-अप् हे.

(श्रीकृष्णको साधनरूप कॉरस्पॉन्डन्स् : पुष्टिभक्ति या पुष्टिप्रपत्ति)

पर जहां यशोदोत्संगलालितकी बात आ रही हे वहां पुष्टिभक्ति पुष्टिप्रपत्ति को रोल् आ रह्यो हे. अब साधक यामें क्या कर सके हे? साधक जो कर सके हे वो साधना हे. जो साधना नहीं कर सके वो साधक नहीं हे. ये कॉरेस्पॉन्डिंग् हे वाही तरहसु; अनेक धर्म यहां प्रगट हो रहे हें. जब अपन् स्वरूपकी बात कर रहे हें तो अपनकु ये सोचनो पड़ेगो के कौनसी एपिस्टमोलोजीके कारण, एपिस्टमोलोजिकल् तुम्हारे बायस्के कारण तुमकु कौनसो प्रमेय बुद्धिमें पॅलेटेबल् लग रह्यो हे. कौनसो प्रमेय तुमकु पॅलेटेबल् नहीं लग रह्यो हे. नहीं लग रह्यो हे तो वाको वो साधन बताओगे तो तुम दुःखी होओगे और गिरिराजधरन भी दुःखी होयगो. जाकु वो पॅलेटेबल् हे, अपने स्वरूपकी अवेयरनेस् वाकी या ढंगकी हे; जैसे मोकु अवेयरनेस् हे के मैं पुष्टिसम्प्रदायको हूं. मेरो वाक्पतिके द्वारा वरण भयो हे, मैं वाक्पतिकी वाणीसु कमिटेड् हूं. तो मोकु अपने स्वरूपको प्रबंध हो जायेगो.

(प्रमादके कारण प्रकट होती अपनी पोपटरूपता)

जैसे मैंने आपकु बात बताई के अमेरीकासु एक बहन आयी. मोसु कही के "आपके प्रवचन ऑन् लाईन्पे नियमितरूपसु सुनूं." बोहोत अच्छी बात हे. बोली के "आपके प्रवचन सुने बिना आनंद ही नहीं आवे." बोहोत अच्छी बात हे. फिर बोली के "ये

ठाकुरजीके लिये सामग्री लाई हूं.'' मैंने कही के ''प्रवचन सुनो हो ना ऑन्-लाईन्पे?'' बोली ''हां हां. पर ये तो आपकु अंगीकार करनो ही पड़ेगो.'' धन्य हो. **''चित्तोद्वेगं विधायापि हरिर्यद्यत् करिष्यति, तथैव तस्य लीलेति मत्वा चिन्तां द्रुतं त्यजेत्.''** (नव.८) मैंने कही के ''आप एक काम करो के ये कोईकु बांट दो.'' तो वाने कही के ''अब हम कौनकु बांटवे जायें. अब आप ही बांट दो.'' मतलब नहीं समझमें आवे आदमीकु तो क्या कर्‌यो जाय? कैसे समझे आदमी? ऑन्-लाईन्पे रोज प्रवचन सुन रहे हें, प्रवचन सुने बिना मजा नहीं आ रही हे, पाछे वाकु या ही बातको आग्रह हे के ये तो आपके ठाकुरजीके लिये खास अमेरीकासु सामग्री लेके आई हूं. अब तुम सुनो क्या हो? कान हे के कुआ हे? पानी डाले जाओ पर पता ही नहीं पड़े के पानी कहां जा रह्यो हे!! पाछी सामग्री तैयार अमेरीकासु, सामग्री मेड् इन् यू.एस.ए. ये तो ठीक हे के बर्गर् पीत्झा नहीं लायी! क्या क्या धरनो, कहां कहां धरनो. नहीं समझमें आवे क्योंके स्वस्वरूपकी अवेयरनेस् नहीं हे. अपने स्वरूपकी अवेयरनेस् होय तो सुने आदमी, बोले भी, नहीं बोले ऐसो नहीं बोले भी आदमी; जैसे पोपटकु जयश्रीकृष्ण सिखा दो तो जयश्रीकृष्ण बोलेगो. पर वाकु न तो 'जय' पता हे, न 'श्री' पता हे और न 'कृष्ण' पता हे. बोले सब पोपट. ऐसे बोले भी सुने भी पर नहीं समझे तो नहीं समझे आदमी. तो वाके स्वरूपकु समझनो पड़ेगो और कैसे महाप्रभुजी और गुसांईजी वाके स्वरूपकु समझते हते!

(स्वस्वरूपके अनुरूप अनेक धर्मन्को प्रवर्तन)

ये बात मैंने कल आपकु बतायी के जैसे वेश्याने कही के

भई मेरे यहां कौन सेवा करवे आयगो? वाकु कही के अच्छा तू अटकावमें सेवा कर. दूसरेनकु बुलाके कही के तुम याकी कॉपी मत करियो. **उच्चावच नरनार.** ये जो वेरियेशन् हे उनकु समझ रहे हें के राजकाजमें जोड़वेके लिये वाके क्या लिमिटेशन्स् हें, या लिमिटेशन् नहीं हें. जो धनिक हतो वाकी मेंडमेंसु कुत्ता गुजस्यो वाकु कही के तेरो चौका छू गयो. जो गरीब हतो वाकु कही के तेरो कछु नहीं छुयो. तू जा, रसोई भोग धर. ये ''जवा दोने नौका किनारे किनारे'' नहीं हे. वामें एक पूरी सिस्टम् काम कर रही हे. एक सिस्टमॅटिक् हियरार्की काम कर रही हे के कौनको स्वरूप क्या हे? वाके स्वरूपकी अवेयरनेस् क्या हे? वा स्वरूपकी अवेयरनेस्के साथ वाकु कौनसो धर्म बतानो? वो धर्म बतावेसु गिरिराजधरनको भी ताप टल सके हे और याको भी ताप टल सके हे. यदि वाको स्वरूप नहीं बतायो तो गिरिराजधर तो परेशान सो तो परेशान पर अपन् ज्यादा परेशान हो जायेंगे. क्योंके अपन् अपनी फोड़ नहीं पाते होवें हें. वो तो अपनी कैसे भी फोड़ ले पर अपन् अपनी फोड़ नहीं पाते होवें.

अपनी लिमिटेशन् ये हे. या लिये कल मैंने आपकु बताई के बच्चा छीछी करे तो तुरत मरे भये चूहेकी तरह लटकाके पड़ौसमें छोड़ आवें के ''तुम्हारे बच्चेने छी छी करी हे जरा संभाल लेना.'' ऐसे ही मां मरी नहीं और ठाकुरजीकु पधराके हवेलीमें जाओ. क्यों तुम्हारो ठाकुरजी तुमकु अपनो नहीं लग रह्यो हे? अवेयरनेस् नहीं हे. मांने हीराकी अंगूठी छोड़ी होय तो वाकु हवेलीमें पधरावे कोई? हम लोग तो बैठे भये हें, लाओ लाओ लाओ. एक लाओगे तो

दो मांगेगे. वो कोई नहीं पधरावे. ठाकुरजीकु तुरत पधराय आवें. मां जैसी सेवा तो अपनेसु होवे नहीं हे. क्योंके ठाकुरजी अपने लगें ही नहीं हें. हीराकी अंगूठी मां मर गई तो भी अपनी ही लगे हे भले डिज़ाइन् पुराने फॅशन्की होवे. खूबसूरती वाकी ये हे. ये लफड़ा हे. तो हरेककी अवेयरनेस्में बोहोत अंतर हे. और जाकी जो अवेयरनेस् नहीं हे वाकु अपन् वो धर्म बतायेंगे वो दु:खी ज्यादा होयगो; प्रभुके परिश्रमकी बात तो बादकी बात हे, पहले वो दु:खी हो जायगो. वाके कारण सम्प्रदाय कितनो नष्ट होयगो? ये तो जरा सोचो! **"स्वस्वरूपार्थे प्र्योजिया कृत हुता जे संसार."** वो जा लेवल्पे हे, कोईकु कुछ केह दियो, कोईकु ब्रह्मसम्बन्धको मंत्र लिखके पधरा दियो और कही के याकु भोग धरके लीजियो. थियोरिटिकली बातकु सोचो. सरकारी नौकरीमें हे, ठाकुरजीकी सेवा कब करेगो? कैसे करेगो? वाकु कैसे राजकाजमें जोड़वेको ओरियेन्ट्रेशन् बनानो, वाकु वो रिमाइन्डर् तो रहेगो ना के ये सब कछु जो मेरो हे, ये सरकारी नौकरी भी ठाकुरकु समर्पित हे. जाकु महाप्रभुजी कह रहे हें के **"सर्वं समर्पितं भक्त्या कृतार्थोसि सुखी भव."** (अन्त:करण.८) जबरदस्ती वाकु सेवा नहीं बताई हे. कोईकु अष्टाक्षर जपवेकी कह दी. वार्ता पढ़ोगे तो पता चलेगो के एककु कह दी के ब्रजकी यात्रा कर. महाप्रभुजीने बतायो हे के तीर्थ कर. **"तीर्थपर्यटनं श्रेष्ठं सर्वेषां वर्णिनां तथा, यज्ञा: तीर्थानि च पुन: समानि हरिणा कृता:"** (त.दी.नि.२।२४७-२४८) कोई भी वर्णको होय, ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र उनके लिये तीर्थ और यज्ञ बराबरकी सामर्थ्यके हें. कौनकु क्या बतानो? ये समझे बिना वी.आई.पी. टेन्ट् बनाके यात्रामें ले जानो अपन् धर्म समझे हें.

(सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डितः)

समझे बिना सबकु सेवाके मनोरथें करवाने, समझे बिना सबकु भागवतकथामें लगा देनो. अरे भई! सत्यानाश हो जायगो. वाको स्वरूप समझो क्या हे. वा स्वरूपके अन्तर्गत वो कौनसी तरहके राजकाजमें जुड़ सके हे. कौनसी हियरार्की के वो एम.पी. बनेगो के मार्शल् बनेगो के वॉचमॅन् बनेगो, ब्युरोक्रेसीमें के जुडिशियरीमें जज् बनेगो के रजिस्ट्रार् बनेगो के सरकारी वकील बनेगो. लेजिस्लेटिव्में वो क्या बनेगो ब्युरोक्रेट् बनेगो? वो भी कौनसी ग्रेड्में बनेगो? ये सारो सेन्स् अपन्कु हे नहीं और जबरदस्ती अपन् भरती कर रहे हें भलते ही ठिकाने और फिर अपन् रोवें के हमारी कोई सुने नहीं हे. अरे भई सुनेगो कहांसु? भरती कौनने की वाकी? फिर अपन् फेस्बुक्पे रोवें के अब हमारो कोई सुन नहीं रह्यो हे. तो भई कोई सुनेगो काहेकु? तुमने भरती काहेकु की वाकी? अब बोहोत परिश्रम हो रह्यो हे ठाकुरजीकु. परिश्रम तो होयगो ही. क्योंके तुमने राजकाजमें नहीं जोड़्यो हे. जो आयो वाकु कोटा सिस्टम्सु जोड़ दियो हे. खुदकु नहीं पता हे के वो क्या हे? वाकु नहीं पता हे के वो क्या हे? अब वो तो कछु भी करेगो काम.

पंचतन्त्रमें एक बोहोत अच्छी कहानी आवे हे. तीन बेवकूफ बालकन्कु गुरुजीने कह दियो के तुम बोहोत पढ़ लिये, अब यहांसु जाओ. तो जैसे ही गुरुजीके आश्रमसु बाहर निकले तो अचानक चौराहा आ गयो. अब उनने कह्यो के या बारेमें गुरुजीने क्या बतायो हतो? तो एककु याद आई के जब चार रस्ता आ जायें तो **"महाजनो यतो गतः स्वतः."** 'महाजन' वहां आदर्श पुरुष हे और

'महाजन'को अर्थ बनिया भी होवे हे. तो जहां बनिया जा रह्यो हतो वाके पीछे-पीछे ये भी चल दिये. बड़ी देर बनियाके पीछे चले. बनिया अपने घरमें घुस गयो. बालकन्ने कही के अब कहां जानो? उन्होंने कही करो कन्सल्ट् के गुरुजी क्या पढ़ा रहे हते. तो उन्हें याद आई के **"धर्मस्य त्वरिता गति."** धर्म बोहोत तेज चले. तो एक ऊंट तेज चलके जा रह्यो हतो तो उनने कही के शायद ये ही धर्म होयगो. पकड़ो याकी टांग. वाकी टांग पकड़के सब लटक गये. ऊंटने लात मारी सो जाके तालाबमें गिरे. तो उन्होंने कही के ये क्या हो गयो? अपन्ने धर्म पकड्यो और तालाबमें कैसे गिर गये? अधर्म तो पकड्यो नहीं. गुरुजीने तो कही हती के **"धर्मस्य त्वरिता गति."** तो उनने कही भूल जाओ बात. **"सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डित:"** तो जो पूरो डूब रह्यो हे वाकी गर्दन काटके वाके सामने रख दो. अब नहीं समझें तो पंचतन्त्रकी ऐसी ही कथायें प्रकट होवें हें. फिर अपन् रोवें तो वाको फायदा क्या?

(सहजता या स्वभाव के अनुरूप ही धर्मनिर्धार)

तो या तरहसु स्वस्वरूप वाकु समझानो पड़ेगो. केवल हिदायत ही काम नहीं आवे. जब भी अपन् कछु हिदायत दें तो वा हिदायतके मिस्-इन्ट्रप्रिटेशन् या तरीकेके हो सकें हें. या लिये अपन्ने ये साधक या साधन के जो स्वरूप हें उनकी अवेयरनेस् कहां की हे? जैसे सारी बॉडी अपनी हे. माथासु लेके पैर तक. पर हर जगहकी चमड़ीकी सेन्सिटीविटी अलग-अलग होवे हे. बालकी कछु अलग हे. हाथकी कछु अलग हे. हथेलीकी कछु अलग हे. हथेलीके ऊपरके भागकी कछु अलग हे. पैरकी कछु अलग हे.

आंखके भीतरकी सेन्सिटीविटी बिल्कुल अलग हे. कानके भीतरकी सेन्सिटीविटी कछु अलग हे. कानके भीतर कछु करो तो तकलीफ हो जाये हे. पर वोही एक्शन् कानके बाहर करो तो तकलीफ नहीं होवे हे. क्यों? वो कोई अलग चमड़ी हे? वोकी वोही चमड़ी हे. आंखके भीतर भी वोही चमड़ी हे. कोई दूसरी चमड़ी नहीं हे. पर हर जगहकी चमड़ीकी सेन्सिटीविटी अलग-अलग हे. वाकी सेल्फ-अवेयरनेस् कौनसी चीजको टच स्वीकार करे हे, कौनसी चीजको टच स्वीकार नहीं करे हे; जैसे साबुन शरीरमें लगाके नहा लें तो चमड़ीकु कोई आपत्ति नहीं होवे हे. पर वोही साबुन आंखमें लग जाये तो मजा आ जायगी! क्यों मजा आवे? क्योंके आंखकी चमड़ी वाकु स्वीकारे नहीं हे. आंख कहे के मोकु या तरीकेकी सफाई नहीं चहिये. करो या साबुनसु और जगहकी सफाई पर मोकु तो बख्शो. आंखकी सफाई साबुनसु नहीं हो सके. आंखकी सफाईके लिये आंख जाकु स्वीकारती होय वासु आंखकी सफाई हो सके हे. हर चीजकी अलग-अलग सेन्सिटीविटी होवे हे. बॉडीके हर पार्टकी सेन्सिटीविटी कितनी अलग हे वाकु तुम खाली मापके देखोगे तो पता चलेगो. जैसे कोई अपने पेटपे हाथ लगावे तो गुलगुली होयगी. यदि माथेपे हाथ लगावे तो गुलगुली नहीं होयगी. गुलगुली हर जगह नहीं होवे. शरीरके कछु पार्टस् ऐसे हें के जहां अपन् करें तो गुलगुली होवे बाकी हर जगह गुलगुली नहीं होवे. हर जगहकी सेन्सिटीविटी अलग हे. ऐसे ये पूरी बॉडी हे. वाकु कहां क्या चुभ रह्यो हे, कहां क्या गुलगुली पैदा हो रही हे, कहां कहां सुखद हो रह्यो हे, कहां क्या दुःखद हो रह्यो हे, वो **स्वस्वरूपार्थे प्र्योजिया कृत हुता ते संसार. राजकाजे** जहां जो कछु कर सकतो होय, जैसे

अपन्कु दांत साफ करनो होय तो अपन् ब्रश करें पर आंख साफ करवेमें तो ब्रश नहीं करेंगे. कभी ब्रशसु आंख साफ होयगी? आंख ही साफ हो जायेगी!! दांत साफ हो रहे हें तो आंख क्यों साफ नहीं हो सके? अरे भई! नहीं होवे हे. जो शरीरकु स्वीकार्य हे वाके लिये तुम्हारी कैसी अवेयरनेस् हे, वा स्वरूपकी तुमकु क्या अवेयरनेस् हे? तुमकु खुदकी कैसी अवेयरनेस् हे. उन दोनोंन्कु जब तक अपन्ने को-रिलेट् नहीं कियो तो वाके पहले धर्मको निर्धारण नहीं हो सके हे.

(परब्रह्म श्रीकृष्णके स्वरूपके या वाके विविध पदभूतके अनुरूप अनेकधर्म)

कृष्णकु अपन् यशोदोत्संगलालित कह रहे हें, वाकु अपन्ने घरको ठाकुरजी मान्यो, ब्रह्म नहीं मान्यो. तो वो अवेयरनेस् तुम वाके बारेमें नहीं वापर सकोगे. क्योंके वाक्पतिकी वाणीके अनुसार वाको एक आस्पॅक्ट् खण्डित हो रह्यो हे. वाके परमात्मा होवेको जो आस्पॅक्ट् हे वो तुमकु अपनी अवेयरनेस्में महसूस नहीं हो रह्यो हे और तुमने सेवा शुरु करी तो वो तो या तरीकेको शरीर हे वाकु कहीं चुभ रह्यो हे कहीं गुलगुली हो रही हे कहीं सुख हो रह्यो हे, कहीं दु:ख हो रह्यो हे, कहीं हाथ लगाते ही रोयगो, कहीं हाथ लगाते ही हंसेगो. अभी यू-ट्युब्में मैंने वा बखत दिखायो हतो के मां खुर्राटा ले रही हे और बच्चा रो रह्यो हे. अरे! मां खुर्राटा लेवे और बच्चा रोवे? पर रोवे हे. बच्चाकु पता नहीं चल रह्यो हे के ये हो क्या रह्यो हे लफड़ा? तो या बातकु समझो के हरेकको जो स्वस्वरूप हे वाकु वाकी अवेयरनेस् हे और जब अपन् कोईके साथ

इन्ट्रएक्ट् कर रहे हें तो वहां तुम्हारी सिर्फ सेल्फ–अवेयरनेस् ही काम नहीं आयेगी पर जाके साथ इन्ट्रएक्ट् कर रहे हो वाकी अवेयरनेस् क्या हे और तुम्हारी अवेयरनेस् के जोड़ा मिल रहे हें के नहीं मिल रहे हें? नहीं मिल रहे हें तो **"तोसों सेवा नाहिं निभेगी तासु तोको ब्रह्मसम्बन्ध नाहिं देत."** सिद्धान्त ये हे. ये फॉरमेट् हे और या फॉरमेट्के कारण **अनेक धर्म कह्या प्रभुजीये निगमने अनुसार.** या मल्टीलेवल्पे अनेक धर्म प्रभुजीने कहे हें. याके लिये अपने यहां जो प्रेमात्मिका सेवा हे वाको एक मीठो परस्पॅक्टिव् देखो. वामें क्या कह रहे हें? **"सेवायां लौकिकी युक्तिः स्नेहस्तत्र नियामकः."** (स्वमार्गीयशरण–समर्पण–सेवादिनिरूपण.४८) अब जब लौकिकी रीति केह रहे हें तो लौकिकी रीतिमें घण्टा कब बजावें, शंख कब बजावें, पंजामृतसु कब स्नान करावें. बच्चाकु कराओ एक दिन पंचामृतस्नान. भाग जायगो बच्चा पास ही नहीं आयगो तुम्हारे. आरती उतारो बच्चाके सामने घण्टा बजाके तो बच्चा रोयगो के मैंने क्या गुनाह कर दियो जो ऐसो कर्‌यो जा रह्यो हे? स्कूल् आ गई के स्कूल चली गई क्यों व्यर्थमें घण्टा बजा रहे हो? क्योंके वो यशोदोत्संगलालित ही नहीं हे पर भगवान् भी हे. भगवान्की सेवामें नित्यमें लौकिकी रीति हे और जब–जब निमित्त खड़ो हो रह्यो हे वाकु भगवान् तरीके रेकोग्नाईज़् करवेको, तब–तब वाके सामने वाकु भगवान्के तरीके ट्रीट् करो. तब वो सन्तुष्ट होयगो नहीं तो वो सन्तुष्ट नहीं होयगो.

अनेक धर्म कह्या प्रभुजीये निगमने अनुसार. गिरिराजधरणनो ताप टाळ्यो लक्ष्मणसुत निर्धार. अब तुम घण्टा भी बजा रहे हो,

शंख भी बजा रहे हो, माला भी धरा रहे हो, तुलसी भी समर्प रहे हो, शंखोदक भी कर रहे हो, सब पूजाको तामझाम कर रहे हो. सारे उत्सव माने **"पूजया श्रवणादिभि:"** (भ.व.२) भगवान् होवेके वाके स्वरूपके आस्पॅक्ट्में तुम ये सारे काम कर रहे हो पर यदि तुमकु परमात्मरति नहीं हे, शरणागतिके भावसु नहीं कर रहे हो, आत्मरतिके भावसु नहीं कर रहे हो, तो वो सारो कर्मकाण्ड हो जायगो. जब कर्मकाण्ड हो जायगो तो ठाकुरजी लात मारें हें के "वाको नहीं अंगीकार करूं, जा." वो तुमकु देनो कैसे हे? देखो अब ये बड़ी जटिल अवेयरनेस् हे वाकी. यहां वो मावड़िया नहीं हे, समझियों. कल मैंने आपकु मावड़ियाकी बात बताई हती. यहां वो मावड़िया नहीं रह्यो, वो श्रीवल्लभोत्संगलालित, श्रीविट्ठलोत्संग-लालित हे के जाकी कछु जरूरतें हें. और वाकी जरूरतके हिसाबसु जो के यशोदाकु पता भी नहीं हतो के भगवान् हे के नहीं, यशोदाकु पता भी नहीं हतो के ये परमात्मा हे भी के नहीं, यशोदाकु पता भी नहीं हतो जब वाकु भगवान्पनो दिखायो तो वाने भूतप्रेतबाधा समझी. पर वाकी क्यों निभ गई? क्योंके वो लीला पुरुषोत्तमकी स्वतन्त्रक्रीड़ा हती. वहां वो पुरुषोत्तम स्वतन्त्रलीला कर रह्यो हतो, सो वहां उनने खुद वाकु निभा लियो. यहां स्वतन्त्रक्रीड़ा हे नहीं, प्रमाणपंथाक्रीड़ा हे. प्रमाणपंथाक्रीड़ा होवेसु प्रमाणसु जो जो वाके पहलु हें उन पहलुन्मेंसु वाको स्वरूप तुमकु समझनो पड़ेगो और साथ साथ तुम्हारो स्वरूप क्या हे, वाकु वो रिस्पॉन्स् दे सके के नहीं दे सके हे. जब तुम्हारे दोनोंके जोड़ा मिलान हो जायें तब ही वा सेवाको क्रम आ सके, नहीं तो आ ही नहीं सके. करोगे तो दु:खी होओगे.

एक सामान्य बात समझो. वार्ताको हर बखत मैं एक उदाहरण दऊं हूं के जब वा डोकरीने बालभावसु सेवा करी तो ठाकुरजीने कही के बिल्लीको डर लगे. वा डोकरीने कही के जब राक्षस मारे तब डर क्यों नहीं लग्यो? तब ठाकुरजीने कही भाड़में जा. अब मोकु कोई डर नहीं हे. नक्की तुमकु करनो हे. वाके तो मल्टीपल् फॅसेट्स् हें. कौनसे फॅसेट्की सेवा तुमकु करनी हे? वाके भगवान् होवेके फॅसेट्की तुमकु सेवा करनी हे जा फॅसेटसु वाने राक्षस मारे तो वाकु तुम्हारी सेवाकी गरज नहीं हे. माइन्ड इट. तुम्हारी सेवाकी गरज वाकु कब हे? जब तुम वाकु यशोदोत्संगलालित समझ रहे हो. तब वाकु डर लग रह्यो हे. भगवान् होवेकी कॅपेसिटीमें वाकु डर लगे नहीं और वो शिकायत भी नहीं करेगो के मोकु डर लग रह्यो हे. ये वाकी एक अलग कॅपेसिटी हे और ये वाको एक अलग स्वरूप हे. वाके कॉरस्पॉन्डिंग् तुम्हारो स्वरूप हे के नहीं? तुम्हारो स्वरूप हे, वो वाकु रेसिप्रोकेट् कर रह्यो हे तो तुम वा एक्स्टेन्ट् तक जाओ अन्यथा वा एक्स्टेन्ट् तक जावेकी कोई जरूरत नहीं हे. **अनेक धर्म कह्या प्रभुजीये निगमने अनुसार.**

(श्रीलक्ष्मणसुतनिर्धारके अनुरूप साधना होयेंगी तो गिरिराजधरणको ताप टलेगो)

ये जो ब्रह्मज्ञान हे; क्यों ब्रह्मज्ञान? अल्टीमेटली तुम्हारे भीतर वो नित्य हे. ये नैमित्तिक हे. परमात्माकी जो रति हे वो सारी कामनान्को मूल हे. क्योंके महाप्रभुजी एक बात समझावें यदि अपन्कु कामनायें हें **''न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति. न वा अरे भार्यायाः कामाय भार्या प्रिया भवति. न वा अरे पुत्रस्य कामाय पुत्रो प्रियो भवति. आत्मनस्तु कामाय पुत्रो प्रियो भवति.**

आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति.'' (बृह.उप.२।४।५) अपनी आत्मरति डायनेमाकी तरह काम कर रही हे. जो अपनो काम्यकर्म हे, जा बखत तुम महाप्रभुजीके हिसाबसु ये कामना कर रहे हो के मोकु भगवत्सेवा करनी हे, वा बखत तुम्हारी वो कामना आत्मरतिसु प्रेरित हे तो तो सेवा अच्छी तरहसु होयगी. पर यदि तुम्हारी कामना ही ये कह रही हे के धन्धा अच्छो चले, शादी हो जाये, दुकान लग जाये वगैरह तो वो आत्मरतिकी कामना नहीं हे, वो तो विषयरतिकी कामना हे. आत्मरति आत्मकामनामूलक नहीं होके विषय-मूलक रति हे. वो विषयरतिमूलक कामना होवेके कारण वो जो पारमात्मिक आस्पॅक्टको रेसिप्रोकेशन् तुम्हारे साथ निभेगो नहीं. यासु वो कहें हे के भई मत करो. क्योंके यदि तुम निरन्तर सेवा कर रहे हो और वामें उन कामनान्के कारण विक्षेप हो रह्यो हे तो **''विग्रहकर्षितानि इन्द्रियाणि विक्षेपं जनयन्ति.''** (त.दी.नि.प्र.२।२४७) जबरदस्ती लगामकु तान-तानके घोड़ाकु चलाओगे तब घोड़ा तुमकु अपनेपे ढोयगो नहीं पर नीचे पटकेगो. ऐसे ही ये भक्ति तुमकु नीचे पटकेगी, जब तुम वाकु जबरदस्ती घोड़ा समझके हंटर् मारके चला रहे हो. हंटर् मारके भगवद्भक्ति चल नहीं सके हे. अरे हंटर मारके जब घोड़ा नहीं चले तो भक्ति कहांसु चलेगी! या बातकु समझो. सर्कस्को शेर भी कभी जोरको हंटर् लग जाये तो मारवेवालेकु खा जाये. वो उतनी देर ही हंटर्कु सहन करे जितनी देर वाकु बचपनसु आदत डाल रखी होवे. वाकु पता हे के मोकु कितनो सहन करनो हे, कितनो मोकु सहन नहीं करनो हे. जा बखत डोकरीने कही के तैंने मोकु जिवायो तो शेर सर्कस्मेंसू भाग गयो. नदारद हो गयो. गुजरातीमें कहें ना के पूंछड़ी उठावीने भागी गयो. ठाकुरजी भग गये

वहांसु. अरे तू कौनकु कह रही हे के जिवायो? तो वो अपन्कु समझनो पड़ेगो के या प्रमेयके जो प्रभेद हें वामें तुमकु कौनसे आस्पॅक्ट्की अवेयरनेस् हे? वाके कॉरसपोन्डिंग् कैसी अवेयरनेस् हे? जैसे आप कह रहे हो के मोकु नहीं पता हे, गुरुने बतायो. तो बीमारकु कब पता होवे हे के कौनसी दवा हे और कौनसो रोग हे? ये जिम्मेदारी कौनकी हे? डॉक्टर्की. वो बराबर डायग्नाईज़् करे, बाकायदा वाको मेडिकल् चेकअप् करे और वाके बाद कोई दवाई बतावे. ऐसो तो नहीं के जो भी कोई आवे वाकु बगैर चेकअप् करे और एक ही दवाई बतातो जाये? दांत दूख रह्यो हे तो दांत ही निकाल लियो. आंख दूख रही हे तो आंख ही निकाल लो. अरे भई! कल दिल दूखेगो तो दिल ही निकाल लोगे क्या? या इलाजको कब तक सामना करनो आदमीकु? तो वो अनेक धर्म वा दृष्टिकोणसु कहे गये हें **अनेक धर्म कह्या प्रभुजीये निगमने अनुसार.** वा तरहसु जब सेवा करेंगे तो **गिरिराजधरणनो ताप टाळ्यो श्रीलक्ष्मणसुत निर्धार.**

(फलको ब्राह्मिकस्वरूप : स्वरूप या लीला में स्थिति)

या सिस्टम्के तहत जब अपन् देखें तो कछु फलकी बात बताई हे. ब्रह्मके मूलमें दो भेद हें. एक तो लीला और दूसरो स्वरूप. दूसरो कोई वामें भेद ही नहीं हे. एक भेद हे **"एकोऽहं"** दूसरो भेद हे **"बहुस्यां"** बहुस्यां वाको लीलाभेद हे और एकोऽहं वाको स्वरूपाभेद हे. ब्रह्मके इनरमोस्ट् सर्कल्में या तो लीला हे या तो स्वरूप हे. ब्रह्मकी तरफ तुम प्रयाण ही नहीं कर सको क्योंके तुम ब्रह्ममें ही तो हो. तुम जो कछु हो ब्रह्म ही हो. ब्रह्मकी तरफ

प्रयाण थियोरिटिकली सम्भव नहीं हे. जैसे अपन् बम्बईसु दिल्ली जा सकें पर क्या पृथ्वीसु पृथ्वीपे आ सकें? जहां भी हें वहां पृथ्वीपे ही हें. ऐसे ब्रह्ममेंसु बाहर निकल्यो नहीं जा सके और वैसे ही ब्रह्म तक जायो भी नहीं जा सके हे. ब्रह्ममेंसु बाहर निकलें तो ब्रह्म तक जावें ना! अब या तो तुम वाकी लीलाके पार्ट हो या फिर वाके स्वरूपके पार्ट हो. मतलब जा बखत तुम संसारमें हो तो वा बखत वाकी लीलाके पार्ट हो. जा बखत मुक्त हो वा बखत वाके स्वरूपके पार्ट हो. जब तुम लीलाके पार्ट हो तब तो तुम या तो संसारमें हो या फिर भक्तिमें हो. स्वरूपके पार्ट हो तो मुक्त हो. और तो कछु हे ही नहीं.

(फलको पारमात्मिक स्वरूप : अन्तर्मुखी प्रयाण)

पर परमात्माकी तरफ अन्तर्मुख प्रयाण हो सके हे. **''पराञ्चि खानि व्यतृणो स्वयंभूः तस्मात् पराक् पश्यति नान्तरात्मन्. कश्चिद् धीरः प्रत्यगात्मानम् ऐच्छद् आवृत्त चक्षुः अमृतत्वम् इच्छन्.''** (कठोप.२।१।१) इन्ट्रोस्पॅक्शन्के प्रोसेस्सु तुम अपने भीतर उतने ही जा सको हो के जितने भीतर तुमकु परमात्मा मिल सके. ये विपश्यनावाले इन्ट्रोस्पॅक्शन्के लेवल्सु अपने भीतरकी यात्रा करावें पर वेदान्त आत्माके भी भीतर रहे भये परमात्मा तक अपन्कु अन्तर्मुखी यात्रा करावे, प्रयाण करावे हे. और परमात्माके बाद भगवान्में सालोक्यादि सारी मुक्तिन्के प्रकार आ रहे हें. परमात्मामें क्या सालोक्य मुक्ति होयगी? परमात्मा तो तुमकु लोक बनाके बैठ्यो भयो हे. परमात्मा तुम्हारे आत्मलोकमें हे. यदि आत्मा तुम्हारो देहलोक हे तो वाके भीतर परमात्मा रह रह्यो हे. तो परमात्माके

साथ सालोक्य नहीं हो सके. परमात्माके साथ सारूप्य नहीं हो सके क्योंके यदि तुम आत्मा हो तो तुम परमात्मा हो ही नहीं सको. सामीप्य पहलेसु ही हे पर हे वो पता कौनकु चल रही हे? **''सहैव सन्तं न विजानन्ति देवाः इन्द्रस्य आत्मानं बहुधा चरन्तम्''** (तैत्ति.आर.३।११।५) वो तुम्हारे भीतर बैठ्यो भयो हे और तुमकु पता ही नहीं हे के वो भीतर बैठ्यो भयो हे. तो वाके पास तुम पोहोंचोगे कैसे?

(फलको भागवती स्वरूप : सालोक्यादि ऊर्ध्वमुख प्रयाण)

ये सालोक्य सार्ष्टि सामीप्य सारूप्य एकत्व वगैरह जितने भी फॉरमेट् हें वाकेलिये वो भगवान्के साथ कही जाती बात हें. अब चाहे वो शिवके साथ होय, विष्णुके साथ होय, देवीके साथ होय, गणपतिके साथ होय, अल्लाहके साथ होय, गॉडके साथ होय के यहोबाके साथ होय, कोई न कोई भगवान्को रूप हे वाके साथ एसोसियेटेड् ये कल्पनायें हें. सालोक्य सार्ष्टि सामीप्य सारूप्य सायुज्य करके वो ऊर्ध्वमुख प्रयाण हे; जो मैंने कल बतायो हतो. डायमेन्शन्वाईज़् वो तुम्हारो ऊपरकी तरफ एप्रोच् हे, आईलेवल्को एप्रोच् नहीं हे.

(फलको कार्ष्ण स्वरूप : अलौकिकसामर्थ्यरूप समानान्तरप्रयाण)

और ये जो यशोदोत्संगलालित हे, वो तुम्हारे आईलेवल्की एप्रोच्में हे. आईलेवल्को जो एप्रोच् हे वामें महाप्रभुजी तुमकु ये समझा रहे हें अलौकिकसामर्थ्य; तुम भले आज वाकु धातु पत्थर कागज़ की हकीकत समझते होओ और ये ही हकीकत शायद

तुम्हारे लिये वर्च्युअल् रियालिटी होय, रियालिटी नहीं होय! वाकु ब्रह्म भगवान् परमात्मा माननो शायद तुम्हारी साईनेस्थेसिया होय! साईनेस्थॅटिक् अनुभव होय के तुम देख रहे हो पत्थर धातु कागज़ कु और तुम कल्पना कर रहे हो के वो गोलोकको नायक हे या वैकुण्ठ-नायक हे के केलाशको शिवजी हे और व्रजको रसिया हे. अरे भई! अब रसिया के वसिया जो भी कछु होय, वो तुमकु समझमें आ रह्यो हे के नहीं के ये तुम्हारो साईनेस्थीसिया हे? ये इश्यु हे. अब आपने जैसे कही के गुरुजीने कह दियो हे तो कर रहे हें कोल्हुके बैलकी तरह सेवा. जैसे कोल्हुके बैलकु बांध दे तो वो घूमतो ही रहे, घूमतो ही रहे. वो तिलको तेल निकल जाये तब भी घूमतो ही रहे. अब वाकु घुमा दियो तो वो गरीब जाये कहां? कंटाला निकालवेके लिये भी घूमें ना. ऐसे अपन्कु कछु काम नहीं हे और कंटाला आ रह्यो हे तो कर रहे हें सेवा. लगे भये हें कोल्हुके बैलकी तरह. ये तो सहज सम्भव हे. पर सवाल ये हे के यदि अपन्कु परमात्मरति हे? अब हे तो हे नहीं हे तो नहीं हे. थोड़ो नंगो होनो पड़ेगो यामें. एक दूसरेकु ठगवेसु काम नहीं चलेगो. थोड़ीसी दिलकी नंगाई लानी पड़ेगी के हे के नहीं? हे तो याकु तुम कोप-अप् कर सकोगे और नहीं हे तो कोप-अप् नहीं हो पाओगे. कहीं न कहीं अपने साथ कछु फ्रॉड् हो गयो हे.

(भक्तिको मूल आत्मरतिमें)

महाप्रभुजीने ये शर्त पहले लगा दी हे के मूर्तिपूजन क्यों करनो हे? **"साकार व्यापकत्वात् च मन्त्रस्यापि विधानतः"** (त.दी.नि.२।२२९) साकार व्यापकत्वसु ब्रह्म लाये और **"मन्त्रस्यापि विधानतः"** सु

भगवान् लाये और यामें सारी आत्मरति काम कर रही हे. भगवान्ने आत्मरति सबकु बांटी हे, **"यत्रैव प्रिणाति तत्रैव सुखम् अनुभवति"** (सुबो.२।२।६) माने **"यत्र न प्रिणाति तत्र सुखं न अनुभवति."** ये जो सेट्-अप् महाप्रभुजीने बतायो हे के भक्तिमें भी तुम्हारो प्रेमको मूल हे.

(कृष्णकी प्रियता पुष्टिप्रेरित आत्मरतिमें)

बेवकूफ लोग निरन्तर क्या सोच रहे हें सुनोगे तो पानी पानी हो जाओगे. क्या सोचें हें के **राधा-अधरसुधा विना हरिने बीजु ते कांई नव भावे"** और पानी पानी हो जायें. राधाको स्वरूप क्या हे वो तो समझे नहीं तुम! राधा वाकी आत्मरति हे. महाप्रभुजीने ये एकदम दो टूक खुलासा करके रख्यो हे. विषयरति नहीं हे राधा. **राधाअधरसुधा विना हरिने बीजु काईं नव भावे** और तुम व्यर्थमें पानी-पानी हो रहे हो जैसे ब्लु फिल्म् देखके होते होवें. वहां वो बात ही नहीं हे. वहां महाप्रभुजी जो बात समझानो चाह रहे हें के वाकु आत्मरतिके अलावा कोई चीज नहीं भावे हे और जब यशोदाजीने उनकु भोग अरोगवेके लिये कही वो यशोदाभक्ति हे. **मातानुं मन रंजवा व्हालो आरोग्या बहु स्वादे;** वो मॅनेज् कर रह्यो हे के वाकु आत्मरतिके अलावा कछु भी नहीं चहिये. पर यदि तुम कछु पुष्टिप्रेरित भक्तिसु दे रहे हो **"तदहं भक्त्युपहृतम् अश्नामि प्रयतात्मनः, पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति."** (भग.गीता.९।२६) अपनकु व्यर्थमें पानी छूट रह्यो हे के आहा! **राधाअधर सुधा विना हरिने बीजु कांई नव भावे** अरे काहेकु पानी छोड़ रहे हो भाई! राधाको स्वरूप क्या बतायो हे महाप्रभुजीने वाकु

तो देखो? राधा आत्मरति हे. एक शास्त्र नहीं सारे शास्त्र, मल्टीपल पुराण या बातकु कह रहे हें के राधा वाकी आत्मरति हे और वो आत्मरति साकार बनके बाहर प्रकट भई हे और वा आत्मरति राधाके अलावा वाकु और कछु अच्छो नहीं लग रह्यो हे. आत्मरतिके अलावा नहीं भी अच्छो लगतो होय.

(भक्तिको सृजन भगवान्)

पर वाके साथ एक भक्ति सुन्दरी ऐसी हे के जाकी कानीसु यदि वाकु कछु ऑफर् कियो जाय तो **"तदहं भक्त्युपहृतम् अश्नामि प्रयतात्मनः,"** (भग.गीता.९।२६) वो **मातानुं मन रंजवा;** क्योंके ऐसी पुष्टिप्रेरित भक्ति वाकी मां बनके आवे हे. मां बनके क्यों आवे हे; **"त्वं भावयोगपरिभावितहृत्सरोज आस्से श्रुतेक्षितपथो ननु नाथ पुंसाम्, यद्यद्धिया त उरुगाय विभायन्ति तत्तद्वपुः प्रणयसे सदनुग्रहाय."** (भाग.पुरा.३।९।११) वा यशोदाकी भक्तिमें सामर्थ्य हे के भगवान्कु पैदा करे. वाके लिये मैं या संदर्भमें कह रह्यो हतो के भक्ति भगवान्कु पैदा करे हे. न के परमात्मा या ब्रह्म. क्योंके परमात्मा या ब्रह्म के बारेमें तो तुम वा ब्रह्म और परमात्मा की आत्मरतिके प्रोडक्ट् हो. लेकिन जब आत्मरति डिवोशन्में परिवर्तित हो जाये हे तब तुम एक भगवान्कु पैदा कर सको हो. याके लिये भगवान् हमारी क्रियेशन् हे हम भगवान्की क्रियेशन् नहीं हें. हम परमात्माकी क्रियेशन् हें या ब्रह्मकी क्रियेशन् हें. क्योंके हम ब्रह्म परमात्मा के पार्ट एण्ड पार्शल् हें.

(अनेकधर्मसु पोषणलीला)

ये **स्वस्वरूपार्थे प्ल्योझिया कृत हुता जे संसार.** माने उनकी

अवेयरनेस् कहांकी हे? ये सारो इश्यु हे. कौनसे आस्पॅक्टमें उनकी अवेयरनेस् हे? जा तरहकी उनकी अवेयरनेस् हे वा तरीकेकी अवेयरनेस्में ये ओरियन्ट्रेशन् वाकु सिखाओ के कोई भी लेवल्पे तुम्हारी अवेयरनेस् काम करती होवे वाकु तुम ब्रह्मकी लीला और स्वरूप को पार्ट कैसे बना सको हो. वा ब्रह्मकी लीला और स्वरूप में तुम कैसे ओरियेन्ट्रेड् हो सको हो. ये **अनेक धर्म कह्या प्रभुजीये निगमने अनुसार. गिरिराजधरणनो ताप टाळ्यो श्रीलक्ष्मणसुत निर्धार.** ये पोषणकी लीलासु कैसे अपने पोषक आचार्यने पुष्टिजीवको पोषण कियो हे वाकी एक मॅथोडोलोजी हे. जाकु गोपालदासजी अपन्कु समझा रहे हें. ये छोटी-छोटी कड़ियें हें पर इनमें जो बात कहनो चाह रहे हें वो अपन्कु समझनी पड़ेगी. नहीं समझेंगे तो अपन् गोपालदासजीके साथ अन्याय करेगें और आखिरमें वो अन्याय होयगो गुसांईजीके साथ.

(गुसांईजीके द्वारा ''योऽन्तः प्रविश्य वाचम्'' गोपालदासजीमें)

यदि ये वार्ता सत्य हे के गुसांईजीकी कृपासु गोपालदासजीने ये वल्लभाख्यान गायो हे. जब गोपालदासजीके साथ अपन् अन्याय कर रहे हें तो वो गुसांईजीके साथ ही अन्याय कर रहे हें. या तो कबूल करो के गुसांईजीकी कृपासु नहीं गायो हे! पर अपन् समझ सकें हें के वल्लभाख्यानकी एक कड़ी बांचके देखें तो लगे के सात बरसको रूपालगांवको बच्चा कभी इतनो नहीं सोच सके. थियोरिटिकली ये सम्भव नहीं हे. ये कोई भीतरसु बोले **''योऽन्तः प्रविश्य मम वाचम् इमां प्रसुप्तां संजीवयति अखिलशक्तिधरः स्वधाम्ना.''** (भाग.पुरा.४।९।६) वैसे भीतरसु कोई और बोल रह्यो

हे. जो बोल रह्यो हे वाके साथ अन्याय नहीं होवे, वाके लिये अपन्कु गोपालदासजीको पूरो सेट्–अप् समझनो पड़ेगो. वो भाषा क्या वापर रहे हें, उनको भाव क्या हे, उनकी अन्डरस्टॅन्डिंग्की डेप्थ् क्या हे, वो समझे बिना अपन् खोटे–खोटे इन्ट्र्प्रिटेशन् करेंगे तो ठीक हे. तुम पानी पानी होते रहो. पर वामें गोपालदासजीको कछु लेनो देनो नहीं हे. वो अपनी प्रोब्लम् हे, वो गोपालदासजीकी प्रोब्लम नहीं हे. वो पुष्टिमार्गकी प्रोब्लम् नहीं हे. अपन्कु एक बार तो समझनो पड़ेगो जहां–तक पुष्टिसिद्धान्तको सवाल हे, गोपालदासजीके द्वारा वर्णित कियो गयो वामें.

(भक्तिकी तात्त्विक और साधनात्मक अखंडता)

या बातकु कहके वो कह रहे हें, **स्कंधसंख्याए कह्यां पद श्रीभागवत रसराज** ये कहांसु डिराइव् कियो हे? ये सब देखो. याही लिये भागवतने ये बात एक लेवल्पे नहीं, मल्टीपल् लेवल्पे क्लीयर् करी हे के जो रासपंचाध्यायी हे वो **"आत्मारामोऽपि अरीरमत्"** (भाग.पुरा.१०।२९।४२) हे.

सर्गकी लीलामें भागवतने ये खुलासा कर दियो हे के ये वाको रतिरास हे. आखी सृष्टि वाको रतिरास हे. अपन् समझें हें के गोपिकान्के साथ नाचनो रास हे. दशम स्कन्धमें वो गोपिकान्के साथ नाच्यो हे पर सारी सृष्टिमें रासको नायक वो ही हे. सारी सृष्टि वाके इर्दगिर्द नाच रही हे क्योंके वो सबके भीतर बैठ्यो भयो परमात्मा वाही तरहसु सबके साथ बैठ्यो भयो हे और मल्टीपल् लेवल्पे बैठ्यो भयो हे. रासके वृत्तके भीतर भी बैठ्यो भयो हे और

गोपीन्के कन्धापे भी हाथ डालके बैठ्यो भयो हे. नीचे ग्राउन्ड् बनके भी बैठ्यो भयो हे.

वो या तरीकेको फिनोमिना हे जाकु अपने वाक्पतिने प्रपोज़ कियो हे. वामेंसु अपन्कु अपनो स्वरूप, वाको स्वरूप; याही लिये सिद्धान्त-मुक्तावलीमें श्रीगुसांईजीने ये बात स्पष्ट करी हे के खुदको स्वरूप, भगवत्स्वरूप और भक्तिस्वरूप, तीनों स्वरूपन्की अवेयरनेस्के साथ सेवा करनी हे. जब इन तीनों स्वरूपन्की अवेयरनेस्में कहीं फ्लक्च्युएशन् हे तो कहीं न कहीं कछु न कछु लफड़ा होयगो, होयगो और होयगो. वो केयर् मरीज नहीं लेगो, ये केयर तो डॉक्टर्कु लेनी चहिये. या डॉक्टर्ने ली हे. पर वाके नामपे चलवेवाले दूसरे डॉक्टर् नहीं लेवें तो वो बिचारो क्या करे? अस्तपताल तो खुल गयो. डॉक्टरें सब कोटा सिस्टम्सु भरती हो गये हें. कोटा सिस्टम्सु भरती भये डॉक्टर्न्कु कैसे ट्रीटमेन्ट् करनी, कौनकी ट्रीटमेन्ट् करनी, ये ही नहीं पता हे. फिर तो कछु भी बीमारीको कछु भी नतीजा आ सके ना! प्रॉब्लेम् यहां हो गई हे के कोटा सिस्टम् हो गई हे. ये रिज़र्व कोटा हे. या कोटामें तो इतने डॉक्टर्न्कु एडमिट् करनो ही पड़ेगो. जितने बालक पैदा होवें, उतनी हवेली तो खोलनी ही पड़ेंगी. उतनी उतनी हॉस्पिटल् खुल रही हें, वो सब कोटा सिस्टम् हें. वो सब डॉक्टरें हो रहे हें उनकु खुदकु ही नहीं पता हे के हमारो क्या रोग हे और उनको क्या रोग हे? महाप्रभुजीके हॉस्पिटल्की थॅरापीकी सिस्टम् क्या हे? प्रॉब्लेम् ये हे. **स्वस्वरूपार्थे प्र्योझिया कृत हुता जे संसार. राजकाजे जोडिया जन उच्चावच नरनार.** या हियरार्कीमें वाकु कहां सेट करनो, कहां वाको

प्लेसमेन्ट् करनो, ये इश्यु समझा रहे हें. **ग्रंथ सर्वे रसरूप कीधां पोताने सिद्धान्त.** वामें **सरसवचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार.** ये सिस्टम् गोपालदासजी बतानो चाह रहे हें. वो कोई दूसरी भलती–भलती सिस्टम् बतानो नहीं चाह रहे हें. ये अपन्कु खास समझनो चहिये.

मैं समझूं के अपन् एक दिन ही नहीं दो दिन पिछड़ गये हें. पर ठीक हे पोषणलीलामें ये बात समझनी बोहोत जरूरी हे. अन्यथा तो ब्लन्डर् हो सके हे. पिछड़ गये तो कोई बात नहीं पर पोषणलीलामें बोहोत पुष्ट होवेकी आवश्यकता हे.

प्रश्नोत्तर

प्रश्न : या डिस्कशन्सु ये पता चल्यो के भागवत कॉरोस्पॉन्ड्स टु भगवान्. पुष्टिभजन कॉरोस्पॉन्ड् टु श्रीकृष्ण. अपने यहां तो भागवतकु नामात्मक कृष्ण कहें हें. ईवन् वार्तामें भी जहां श्रीकृष्णकी सेवा नहीं होती हती वहां महाप्रभुजीने भागवतजीकु भोग धरके लेवेकी कही हे. तो याकु याके साथ कैसे को–रिलेट् करनो?

उत्तर : अरे महाप्रभुजी तो यहां तक कहें हें के यदि तुम दैवीजीव हो और तुमसु सेवा नहीं निभती होय तो तुम परमात्माकी शरणमें जाओ. येही बात भगवान्ने गीतामें भी कही हे. और महाप्रभुजी तो यहां तलक कहें हें के यदि तुम शरणमें भी नहीं जा सको हो तो चुपचाप बैठो. प्रभुकी लीला मानो के ब्रह्मकी ऐसी भी एक लीला हे. महाप्रभुजी तो यहां तक तैयार हे जीवकु कोप्–अप्

करवेकु तासों ये चुपचाप बैठवेको जो महाप्रभुजीको उपदेश हे ये **राजकाजे जोडिया जन उच्चावच नरनार**. तुम यदि नहीं जा सकते हो तो यहां बैठो. अतएव गोपालदाजसी कह रहे हें ना के **अनेक धर्म कह्या प्रभुजीये निगमने अनुसार. गिरिराजधरणनो ताप टाळ्यो श्रीलक्ष्मणसुत निरधार**. याको मतलब क्या? इन धर्मन्मेंसु कौनसे कृष्णके आस्पॅक्ट्के साथ तुम इन्टरएक्ट् कर सको हो. बी इन इन्टरएक्शन् विद् कृष्ण बट् नॉट् नेसेसॅरिली ऑलवेज् के तुम याकु गोदीमें लेके बैठ सको. मैं एक बात हरेक बखत कहतो होऊं हूं. पड़ोसीको कोई प्यारो दीखवेवालो छोकरा होय ना, तो वाकु प्यार करनो, वाकु खिलानो अच्छो लगे हे पर वाकी छीछी साफ करनी अच्छी नहीं लगे हे. वाकु अछूतकी तरह उठाके वाकी मांके पास ले जावें हें के याको जरा पोतड़ा बदल दो. ये अपन्कु अच्छो नहीं लगे हे. अरे भई! जब तुम वाकु खिलावेकेलिये लाये हो तो वाकु साफ क्यों नहीं करो हो, वाकु क्यों नहीं धोओ हो? अतएव छोकरा प्यारो हे, वापे प्यार भी आ रह्यो हे, पर वाके प्यारेपन्कु अपने भीतरके प्यारके थर्मामीटरसु माप सकें हें? वो प्यार कब तक रहवे हे के जब तक वो सूसू या छीछी नहीं करे हे. सूसू छीछी करे तो मरे चूहेकु जैसे उठावें हें वैसे वा बच्चाकु उठाके वाकी मांके पास ले जावें हें. हरेकके साथ अपन् अच्छी रीतिन्सु इन्टरएक्ट् तो नहीं कर सकें हें ना. याकी मांकु वाकी सूग क्यों नहीं आवे हे? अपन्कु क्यों सूग आवे हे? कहीं न कहीं प्यारो लगे हे पर अपनो नहीं लगे हे. यामें तो बोहोत अन्तर पड़ गयो. कोईको प्यारो लगनो और कोईको अपनो लगनो; दोनोंमें बोहोत अन्तर हे. प्यारो भी नहीं लगतो होय पर अपनो होय तो वो तो अपनो हे ही, हे ही और हे

ही. और बोहोत ही प्यारो लगतो होय पर अपनो नहीं लगतो होय तो फिर तो वाकी मांके पास ले जानो ही पड़े हे. प्रोब्लम् यहां आके खड़ी होवे हे. महाप्रभुजी यासु ही कहें हें के स्नेह करवेकी तुम गलत जल्दबाजी मत करो. पहले तुम वाकु अपनो तो मानो. **"श्रीकृष्णः शरणं मम"** तो मानो. मेरो हे श्रीकृष्ण पहले ये तो मानो. स्नेह नहीं भयो तो कोई बात नहीं, चलेगो. **राजकाजे जोडिया जन उच्चावच नरनार.** यदि तुम मेरो हे करके मानोगे तो फिर तुम्हारी वो केयर् ले लेगो और तुम वाकी केयर् ले लोगे. लेकिन जब तुम याकु मेरो हे ऐसो नहीं मानो और खोटो प्यार करवे जाओगे, मनोरथी बन जाओगे सेवाके. ये सारे मनोरथी पुष्टिमार्गमें, ऐसे ही होवें हें. इनके अन्दर बोहोत प्यार प्रकट होवे हे. ठाकुरजीके दर्शनके बगैर रह्यो नहीं जाय हे. हिंडोला झूलें, पलना झूलें, अपन्कु कहां ऐसे दर्शन मिलेंगे? अरे दुष्ट! एक दिन सेवा तो कर अपने–आप अपने घरमें. तो कह देगो के पहले मां करती हती पर अब कुआके जलकी अपरस निभे नहीं हे यासु सेवा नहीं करें हें. यासू ग्वालमंडलीमें ठाकुरजी पधरा दिये. बिल्कुल वो ही मॉडेल् जैसे पड़ौसीके बच्चाकु मरे चूहाकी तरह उठाके वाकी मांके पास ले जायें हें, वैसे ही ठाकुरजीकु उठाके ग्वालमंडलीमें पधरा दे हें. तुमने अपनो तो नहीं गिन्यो. प्यारो समझ्यो पर अपनो मान्यो? स्वस्थ सम्बन्धके लिये प्राइमरी शर्त प्यारो मानवेकी हे के मेरो मानवेकी हे? प्राइमरी जरूरत, यदि प्यारो भी नहीं लगतो होय पर अपनो लगतो होय के मेरो हे, तो बस बात पूरी हो गई. हर चीजकी हर तरहसु हर सम्बन्धकी केयर् ले ली जायगी. प्यारेपनमें कहीं धोखो हो सके हे. लेकिन मेरेपनमें धोखो नहीं हो सके हे.

तुम अपने आपकु धोखा नहीं दे सको हो. तुम दूसरेकु तो धोखा दे सको हो पर अपने आपकु नहीं. जाकु तुम अपनो मान रहे हो के वो मेरो हे तो बस बात वहीं पूरी हो जा रही हे.

मैंने एक एस.एम.एस.में पढ़्यो हतो : मेरो तुम्हारो लव अब बिल्कुल खात्मेंपे आ गयो हे. लड़का बिचारो घबरा गयो के क्या भयो? दूसरो एस.एम.एस आयो के ये तुम्हारे लिये नहीं हतो दूसरेन्के लिये हतो. अब कहां जानो? अरे भई! प्यारो लगवेमें ये लोचा होवे हे 'मेरो' लगवेमें ये लोचा नहीं होवे हे.

प्रश्न : आपने सर्ग विसर्ग स्थान वगैरह लीलान्कु समझायो हे. वाके बाद पोषणलीलाकु भी समझायो हे. यामें जब महाप्रभुजीने षोडशग्रन्थकी रचना कर दी और अपने जीवन्को पोषण कियो तो यामें अब गुसांईजीकी इतनी महत्ता क्यों बताई जा रही हे?

उत्तर : ''गोविन्दा आला रे'' में क्या होवे हे? जो हांडीकु पहले तोड़े और वामेंसु निकाले रिवार्डकु. ये निकालवेवालो कौन और याकु खावेवालो कौन? जितनी ऊंची ये मटकी होवे वाकु उतनो ही ऊपर चढ़के जानो पड़े और जब वो हांडीकु तोड़े हे तो क्या वाने ही हांडी तोड़ी? अरे भई जिनके ऊपर चढ़के वाने हांडी तोड़ी उनको क्या कोई रोल् नहीं हतो? हतो पर नाम तो ऊपर चढ़के जाने तोड़ी वाको ही होयगो ना! ऐसे ही जब महाप्रभुजीने सब कछु स्थापन कियो और गुसांईजीने जब वाको विस्तार कियो और समझायो तो वामें पोषण कौन कर रह्यो हे? गुसांईजी.

प्रश्न : मेरा प्रश्न हे के **"अनेक धर्म कह्यां प्रभुजीये निगमने अनुसार."** निगमको मतलब क्या? 'निगम'को मतलब वेद. अगर कोई गोस्वामी बालक जो महाप्रभुजीने शर्त रखी हे **"कृष्णसेवा परं वीक्ष्य दम्भादिरहितं नरं श्रीभागवततत्वज्ञं भजेत् जिज्ञासुः आदरात्"** (वहीं) उसके विपरीत भागवतकथा करता हो, मन्दिर चलाता हो, यदि ऐसे किसी बालकसे किसीने ब्रह्मसम्बन्ध लिया हो; तो क्या ऐसे ब्रह्मसम्बन्धको सही समझना? ऐसी स्थितिमें यदि कोई महाप्रभुजीके अनुसार कोई भगवत्सेवा करना चाहता हो तो क्या उसे ब्रह्मसम्बन्ध दुबारा लेना पड़ेगा?

उत्तर : देखो बात ऐसी हे. बोहोत सारे लव्–मॅरेज्में डायवोर्स हो जायें जो के पूरी तरहसु समझके किये गये होवें हें. बोहोत सारे अरेन्ज्ड मॅरेज्में पीछेसु ख्याल आवे के नहीं, नहीं, यासु नहीं करनो चहिये हतो वासु करनो चहिये हतो. वो शादी तो हमकु जबरदस्ती करनी पड़ी हती. एक बखत स्काईलॅब् गिरवेवाली हती. तो हमारे किशन्गढ़में कोई गांवमें ऐसे ही कोईकी जबरदस्ती शादी कर दी हती. वाकु जब ये पता चली के स्काईलॅब् गिरवेवाली हे तो वाने कही बोहोत हो चुक्यो अब तो दुनियां खतम ही होवेवाली हे तो वो अपने पतिकु छोड़के अपने दोस्तके पास चली गई. स्काईलॅब् तो पड़ी नहीं. पीछेसु सब छापान्में छप गई बात. ऐसो घोटाला भयो.

अब यामें न तो कोई अरेन्ज्ड् मॅरेज्को सवाल हे. न कोई लव्मॅरेज्को सवाल हे. मॅरेज्को सॉल्युशन् तो एक ही हे. निभी तो

निभी नहीं निभी तो नहीं निभी!! अब ये जैसे पतिपत्नीमें होवे हे वैसे ही गुरुशिष्यमें भी होवे हे. निभी तो निभी नहीं निभी तो नहीं निभी. अब कोई भी निभे के नहीं निभे पर सिद्धान्त तो एक हे के महाप्रभुजी ही गुरु हें. जासु निभ रही हे तो भी महाप्रभुजी ही गुरु हें और जासु नहीं निभ रही हे तो भी महाप्रभुजी ही अपनो गुरु हे. **"एतन्मार्गीय गुरुत्वं स्वस्मिन् एव नियछन्त आहु तदभावे स्वयं वाऽपि मूर्तिं कृत्वा हरेः क्वचित्."** (त.दी.नि.आव.भं.२।२२८) कोई भी अवस्थामें निभ रही हे और नहीं निभ रही हे तो गुरु तो श्रीमहाप्रभुजी हें और श्रीमहाप्रभुजी ही हें. निभ रही हे तो अच्छी बात हे. अरेन्ज्ड्मॅरेज् भी निभ जायगी. नहीं निभ रही हे तो लव्मॅरेज् भी नहीं निभेगी. तो वामें ये सारे क्राईटेरिया मोकु बोहोत गम्भीर नहीं लग रहे हें.

प्रश्न : ब्रह्म परमात्मा भगवान् एक ही तत्त्वके अलग अलग पासायें हें जो आपने प्रमेयमें समझायो. पर वहां ये समझायो के ब्रह्म लीला स्वरूप, परमात्मा अंतर अभिमुख, भगवान् सायुज्यादि. ये तो समझमें आयो लेकिन यामें ब्रह्ममें कोई कम्पार्टमेन्ट् नहीं हे. तो याकु किस प्रकार समझनो?

उत्तर : ब्रह्ममें ब्रह्मके स्वरूपसु कम्पार्टमेन्ट् नहीं हें. लेकिन जब ब्रह्म लीला करे हे तब ब्रह्म कम्पार्टमेन्ट् खड़े करे हे. पृथ्वीकी भौगोलिक दृष्टिकोणसु कोई भी कम्पार्टमेन्ट् नहीं हे. पर राजनीतिकी लीला जब शुरु होय तब हिन्दुस्तान पाकिस्तान बंगलादेश चाईना वगैरह बोहोत सारे देश खड़े हो जायें हें. जिनमें वीज़ा और पासपोर्ट

दोनोंन्की जरूरत पड़े हे. बिल्कुल याही प्रकार ब्रह्मके स्वरूपमें कोई कम्पार्टमेन्ट् नहीं हे. पर लीलामें जो कम्पार्टमेन्ट् होवे हें तो वाके कारण वीज़ा और पासपोर्ट् दोनोंकी जरूरत पड़े हे. क्योंके कोई ज्ञानमार्गकी यात्रा होयगी, कोई कर्ममार्गकी यात्रा होयगी, कोई भक्तिमार्गकी यात्रा होयगी, कोई प्रवाहमार्गकी यात्रा होयगी, कोई अध:पातकी यात्रा होयगी. तो यामें बोहोत सारी राजनीतिकी सीमायें खड़ी हो गई हें. और लीलामें ऐसी सब राजनीतिकी सीमायें तो हें ही. जाकु हम मना नहीं कर सके हें. यदि अपन् याकु ब्रह्मकी माया न मानते होंय तो. ब्रह्मकी लीलासु ये सारे कम्पार्टमेन्ट् खड़े भये हें. ये सब कम्पार्टमेन्ट् तो हें ही. भले ब्रह्ममें मूलत: नहीं भी होंय पर लीलाके कारण ये सारे कम्पार्टमेन्ट् ब्रह्म में तो हें. जैसे पृथ्वीमें कम्पार्टमेन्ट् नहीं हें. पर राजनीतिके कारण विभिन्न देशन्के ये सारे कम्पार्टमेन्ट् खड़े भये हें. अब इन कम्पार्टमेन्ट्में जीये बिना अपनो छुटकारा हे ही नहीं.

प्रश्न : If Thakurji and Krishna of Gita says "why do you believe in Devi and Devtas? Am I not capable enough to fulfill your material desires? Does Krishna fulfill material desires in Pushtimarg?

उत्तर : ऐसो हे के ठाकुरजी बोहोत सारी बातें गीतामें कौनकु केह रहे हें, कछु अपन्कु पता नहीं चले क्योंके जैसे-जैसे अर्जुन सवाल करतो गयो हे वैसे वैसे ठाकुरजी वाकु जवाब देते गये. एकाध दो अपवादकु छोड़के वामें कोई क्लेरिफिकेशन् न तो अर्जुनने मांग्यो और न ठाकुरजीने या बातको खुलासा गीतामें कर्‌यो के "ये

बात जो मैं केह रह्यो हूं वो पर्टिक्युलरली तेरेलिये केह रह्यो हूं के तेने जो सवाल कियो वाके जबाबमें केह रह्यो हूं.” गीतामें जो कछु कह्यो हे वा सबकु अपने बारेमें ही जवाब मानके चलें, तो जब अर्जुनके बारेमें सारे जवाब नहीं हे तो अपने बारेमें सब जवाब कैसे हो सकें? जो इमीजियेट् उनकु सुन रह्यो हे, सब जवाब वा अर्जुनके बारेमें भी नहीं हें, तो अपन् यों सोचें के अपने बारेमें गीतामेंसु एक वचन ले लियो और हम सोचें के ये अपन्कु जबाब दियो हे.

हमारे बड़े मन्दिरमें कनीकाकाके पास एक धीरूभाई धमपछाड़ आते हते. रोज सुबह पैर दाबते. प्रभु कछु आज्ञा हो जाये, प्रभु कछु आज्ञा हो जाये. कनीकाका दो चार पांच गालियां दे देते वाकु. वो वाके अक्षर गिनतो और वापे मटका लगातो. वो मटका आ भी जातो हतो या नहीं आतो हतो ये नहीं पता हे! पर धीरूभाई रोज आतो हतो. ऐसे अक्षर गिनके मटका लगानो होय तो अपन् लगा सकें हें. अब क्या पता के अक्षरके हिसाबसु मटकामें एकको दस होयगो के एक हे वो भी जायगो. तो जरूरी नहीं हे के अपन् गीताकी हरेक बातकु अपने बारेमें मानके चलें.

आश्रयको पद गान करके आजको सत्र समापन करें.

QQQ

वल्लभाख्यान पांचवों

(प्रमाणप्रकरण–ऊति लीला)

(राग सामेरी)

(मंगलाचरण)

श्रीविट्ठल सुखकारी ।।
नामे निष्पाप थाय नरनारी ।।
दुर्गति सकल निवारी ।।
प्रगट्या श्रीब्रजपति रासबिहारी ।।१।।

(असद्वासनाके वारण और सद्वासनाके पोषणको प्रकार)

मायिक–मत जेणे खण्ड्यो ।।
भक्तिमारग जेणे बहुपेरे मंड्यो ।।
उत्पथजन सर्वे दण्ड्यो ।।
मूरख हेतु कुशब्द वितंड्यो ।।२।।

वदन–सुधाकर–जोते ।।
वचन सरस रसरास उद्योते।।
नव–जलघन–वपु पोते ।।
भक्ति सरस कीधां प्रभु हो ते ।।३।।

भक्तिपक्ष दृढ़ कीधो ।।
वचनसुधारस जन श्रुति पीधो ।।
अर्थ सकल तेनो सीधो ।।
ते लीलामाहें ताणीने लीधो ।।४।।

।। ढाळ ।।

(श्रीविट्ठलनाथजीको श्रुत्यादिके परम तात्पर्यरूप आविष्कारको पंचविधपुरुषार्थसाधनपनो)

जे लीलामां अंगीकार करियो रे, तेनो सकल ताप निस्तरियो रे।।
जेने विट्ठलनाथ विचारे रे, तेनें प्रकट पदारथ चारे रे।।५।।
उपरांत भजनफल आपे रे, व्रजमण्डल स्थिर करी स्थापे रे ।।
तेने देवमुनि सर्वे गाये रे, ते तो सर्व उपरान्त सुहाये रे ।।६।।

(श्रीवल्लभविट्ठलप्रवर्तितसम्प्रदायकी भगवदात्मरतिरूप नित्यलीलाप्रवेश संपादकतासु कालादिसर्वातीतता)

तेने काल–कर्म नव बांधे रे, यम ते शिर धनुष न साधे रे।।
एवो मारग श्रीवल्लभवरनो रे ज्यां नहीं प्रवेश विधि–हरनो रे।।७।।
ज्यां नित्यरास बहुपेरे रे, मध्य नायक निरतत घेरे रे।।
ज्यां रत्नजटित तट सरिता रे, नवपल्लव भूमि हरिता रे ।।८।।
ज्यां रत्नधातु गिरिराजे रे, वाजिंत्र विविध पेरे वाजे रे।।
ज्यां युवती–यूथ बहुमाये रे, श्रीजी श्यामलवर्ण सुहाये रे।।९।।

(प्रभुचरणमें भगवदनुभावप्रदर्शनप्रार्थना)

एणी पेरे श्रीगुसांईजीने जाणो रे, जाणी अहर्निश गाई बखाणो रे ।।
ते जीव जाति होय कोय रे, तेने तत्क्षण सर्वे सुख होय रे।।१०।।
सेवक जन दास तमारो रे, तेने रूपवियोग निवारो रे।।११।।

(प्रमेय होय तो प्रमाणकी जरूरत)

कल पोषणलीलाके अन्तर्गत पोषणकी प्रणाली वास्तवमें

आचार्योंचित माने प्रमाणपंथाकी प्रणाली हे वो अपन्ने देखी और सबसु बड़ी बात वामें मैंने आपकु ये बताई हती के जो शुरुआतके तीन सर्ग हें वो प्रमेयलीलाके हें और पोषण ऊति और मन्वन्तरलीला के जो सर्ग हें वो प्रमाणके सर्ग हें. प्रमाण या अर्थमें के जा बखत ये सर्गके विविध प्रकार होवें हें वा बखत अपन् हें नहीं. जब अपन् हें ही नहीं तो अपन् जान कैसे पायेंगे के वो क्या हे? वो तो कोई अपन्कु बतावे तो ही पता पड़े. सर्ग अपनो हो जाय, अपन् प्रकट हो जायें और फिर अपन् इन्टरएक्ट् करें तब पता पड़े और वा बखत पता नहीं पड़े तो जो भी कछु सर्गके कालकी तीन लीला हें, वो प्रमेयलीला हें. जा बखत अपन् प्रकट हो गये तो वो भी वा रूपसु प्रकट हो गयो जाके साथ वो इन्टरएक्ट् कर सके. वा बखत प्रमाणकी जरूरत पड़े.

वास्तवमें देखो वाको स्वरूप कैसो हे? जैसे अपन् रस्तापे चलते होंय. कोई अपन्कु हेला पाड़े. अपन् पीछे मुड़के देखें के कौन बुला रह्यो हे? क्यों बुला रह्यो हे? वो अपन् क्यों करें हें? प्रमाणके लिये के भई क्यों बुला रह्यो हे? समझो अपन् ही नहीं होय और वहां कोई हेला पाड़ रह्यो होय. पाड़तो रहे वहां क्या फर्क पड़े! कोई अपने लिये भी करतो होय तो अपन्कु वामें फर्क क्या पड़ सके? अपन्कु तो वो प्रमेयरूपमें ही प्रकट होयगो. कोई अपन्कु कहे के भई तुमकु यहां कोई हेला पाड़ रह्यो हतो वाकु देख लीजियो. मैंने कईबार आपकु अपने पड़ोसकी बड़ी मजाकिया बात बताई हे. हमारे पड़ोसमें कोई नगीनभाई नगीनभाई करतो हतो. एऽऽऽऽ नगीनभाईऽऽऽऽऽऽऽ. तीन बखत, चार बखत, पांच बखत अरे

भई कितनी बखत! मैंने भी जोरसु कह दी के एऽऽऽऽऽऽनथीऽऽऽऽऽऽ. अब नगीनभाई बोले के "कौन केह रह्यो हे के मैं नहीं हूं." तो मैंने कही के "जब वाने हेला पाड्यो तो तुम बोले क्यों नहीं?" अब कोई हेला पाड़े नगीनभाईकु तो वो नगीनभाई होय तो बोले ना! वाकु गुस्सा आतो होय तो आवे. गुस्सा होनो वाको अधिकार हे, वो तो मैं भी मानूं. अब हे के नहीं हे नगीनभाई, ये बात कहवेवाले तुम कौन? अपने वचन प्रमाण नहीं हो सकें. अपन् नहीं होंय और वाकु कोई हेला पाड़तो होय तो वाको प्रमाण अपन्कु पता नहीं चले के अपन्कु काहेकु हेला पाड़ रह्यो हे, क्यों हेला पाड़ रह्यो हे? यदि अपन् हें तो तुरत प्रमाणव्यापार करें के कौन हे, कौन बुला रह्यो हे, क्यों बुला रह्यो हे? क्या कारण हे? अपन् फिर पूछे तो सकें के क्या कारण हे, क्यों बुला रह्यो हे? तो ये प्रमाणव्यापार हे.

(नामदीक्षासु स्वस्वरूपार्थे प्रयोजितकी डिसिप्लिन्)

त्रिविध पुरुष प्रकट भयो हे, वाने अपनेकु प्रकट कियो हे और वाके बाद वो बुला रह्यो हें के नहीं बुला रह्यो हें? यदि वो बुला रहे हें तो वाकी बुलावेकी टॅक्नीक् बुलावेकी प्रणाली क्या हे? मैंने आपकु बताई के वो पहले वाकु पहचाने हें के ये पुष्टिजीव हे, वाकु नाम दे हें. प्रभुको रूप नाम दे हें. आजकल वो सब प्रणाली हट गई हें. पर ये पुरानी एक डिसिप्लिन् हती के सबसु पहले वाकु प्रभुको नाम देनो. प्रभुको नाम देवेको मतलब क्या? अक्सर अपन् नामदीक्षाको मतलब ये समझते होंय के **"श्रीकृष्णः शरणं मम"** बोलनो. अपने सम्प्रदायमें वो प्रणाली कॅन्सल् हो गई हे! अभी भी

हरेकृष्णवाले जैन मुसलमान स्वामीनारायणवाले, ये सब उनके सम्प्रदायमें दीक्षित होवें, उनकु एक भगवान्को नाम देवें हें. जैसे दामोदरदास, कृष्णदास. उन सबकु कोई भगवान्के नाम दिये गये हें. पहले उनकु भगवान्को नाम दियो जाय. वाके बाद फिर वा भगवान्के नामके कारण उनमें वो सेल्फ-अवेयरनेस् जगे. देखो ये सजेशन्को एक प्रकार है. वाकु सजेस्ट् कियो जाय के तेरो स्वरूप तू या तरहसु पहचान. याही लिये वाकु 'द्विजन्मा' कहते हते. तेरो ये दूसरो जन्म हे. नामदीक्षाको अपन्ने एक ही अर्थ समझ्यो के अष्टाक्षरदीक्षा. अष्टाक्षरदीक्षा भी नामदीक्षा हे क्योंके श्रीकृष्णको नाम अपन्कु दियो जा रह्यो हे. पर वाके कॉरस्पॉन्डिंग् अपन्कु स्वस्वरूपार्थ भी प्रयोजित करवेकी एक पुरानी डिसिप्लिन् हती जामें एक भगवन्नाम दियो जातो. वा भगवन्नामके दानसु हममें वा तरीकेकी सेल्फ-अवेयरनेस् आती. वा सेल्फ-अवेयरनेस्के कारण वाकु रिस्पॉन्स् देवेकी इच्छा होती के कोई मोकु बुला रह्यो हे. तो वाकु ''तू कौन हे'' कमसुकम ये पूछवेकी तो इच्छा होवे ना!

क्योंके भक्तिसुन्दरी भी बुला सके हे और मायादासी भी बुला सके हे. कौन बुला रह्यो हे ये तो अपन्कु मालूम होनो चहिये ना! वो नाम देके वामें सेल्फ-अवेयरनेस् जगाई जाती के भक्तिसुन्दरी बुलाती होय तो रिस्पॉन्स् देनो और मायादासी बुलाती होय तो समझनो के बुलावे हे लेकिन अपन् यों तो कह नहीं सकें के ''मैं नहीं हूं''. वो एक प्रणाली हती नामकी और नामकी प्रणालीसु वाकु रूपको दान दियो जातो. जाके टोकन्में कंठी दीक्षा ये सब हती. या प्रणालीसु वाके भीतर समझायो जातो **सरसवचन उच्चार**

मात्रे संशयनो परिहार. ये प्रक्रियासु स्वस्वरूपार्थ वाकु प्रयोजित कियो जातो हतो. ये सारी बातें अपन्ने पोषणके प्रकारमें देखीं.

(उपनिषद्में निरूपित उत्पत्ति महाप्रभुजीके मतसु तीन तरहसु; कारणत: कार्यत: और आधारत:)

वामें एक बात ये कही के **स्कंधसंख्या ए कह्यां पद श्रीभागवत रसराज. भक्त–जन–पद–रज–प्रतापे सकल सरियां काज.** यामें कछु टीकाकार क्योंके यहां बारह कड़ियां गाई गई हें, यासु एक एक कड़ीमें सर्ग विसर्ग स्थान पोषण ऊति मन्वन्तर ईशानुकथा निरोध मुक्ति और आश्रय खोजें हें. मोकु वो लगे हे के ज्यादती हे या आख्यानके साथ. बिना ज्यादती किये वैसो अर्थ यहां निकल नहीं सके हे.

जब गोपालदासजी ये केह रहे हें के **स्कन्धसंख्या ए कह्यां** वासु वो बारहके बारह स्कन्ध या आख्यानमें होनो आवश्यक नहीं हे, ये दो कारणसु होनो मोकु अभिप्रेत नहीं हे. पहलो के सारो आख्यान भागवतकी पॅराफ्रेज़िंग् हे. वाकु यहां इतने छोटेमें क्यों कन्फाईन् करनो! फिर बारह कड़ियां कही हें वा कारणसु सारी भागवतके बारह स्कन्धनकु यहां कन्फाईन् करें के इनमें सर्ग कहां हे, विसर्ग कहां हे? इनकु देखें तो वो टॅली नहीं हो रह्यो हे. कछु खींचतान करके निकालो जा सके हे, ऐसो नहीं हे के नहीं निकाल्यो जा सके, पर टॅली नहीं हो रह्यो हे. पॉइन्ट् टु पॉइन्ट् वामें एग्रीमेन्ट् नहीं दीखे हे. या लिया ये बात मोकु बोहोत मान्य नहीं हे पर इतनी बात निश्चित हे के जब वो कहें हें **स्कन्धसंख्या ए कह्यां**

पद श्रीभागवत रसराज तो वामें एक बात तो निश्चित इन्डीकेट् करनो चाह रहे हें के यहां बारहकी संख्यामें द्वादश आदित्य भी हें, द्वादश महीना भी हें, द्वादशांग पुरुष भी हे. उन सबकु यहां रेफर् नहीं करके भागवतके बारह संख्याकु यहां क्यों रेफर कियो गयो हे? तो कछु इन्टेन्शन् गोपालदासजीको ऐसो लगे हे के यहां भागवतको कछु न कछु खयाल या कल्पना या विचार प्रगट हो रह्यो हे के या चतुर्थाख्यानके साथ भागवतको कछु नजदीकी सम्बन्ध देखनो चाह रहे हें और वो नजदीकी सम्बन्ध क्या हे?

जब सब अपनी अपनी पीपुड़ी बजावें तो मैं भी अपनी पीपुड़ी बजा रह्यो हूं. अब वो कितनी प्रमाण हे और कितनी अप्रमाण हे वो तो श्रीगुसांईजी जानें या गोपालदासजी जानें. पर मोकु यामें अपनी पीपुड़ी बजावेकी इच्छा यालिये हो रही हे के महाप्रभुजीने सुबोधिनीमें एक बातको खुलासा कियो हे और वामें आप ये आज्ञा करें हें के ये जो सर्गादि तीन लीला हें, उनकु देखवेको एक नजरिया ये हे के उपनिषद्की उत्पत्तिलीलाकी ये तीन वेरायटी हें. उपनिषद्में ब्रह्मके फन्क्शन्के रूपमें जाकु उत्पत्ति स्थिति और लय के ब्रेक-अप् दिये हें, जाकु अपन् ब्रह्मा विष्णु और शिव केह सकें. ब्रह्मालीला विष्णुलीला और शिवलीला, वाके समानान्तर यामें उत्पत्तिके तीन क्लासीफिकेशन् किये हें, वामें फिर सर्ग विसर्ग और स्थान. उनमें महाप्रभुजी यों देख रहे हें के उत्पत्ति भागवतकार यहां तीन तरहसु बतानो चाह रहे हें. कारणतः कार्यतः और आधारतः. यामें देखवेकी एक खूबसूरती हे यद्यपि मोकु रिवर्समें जानो पड़ रह्यो हे पर पोषण जब पूरो करनो हे तो पूरो ही करनो चहिये.

ऑलमोस्ट् वेदान्तके जो तीन प्रमुख सम्प्रदाय क्लब् कर दिये हें. वेदान्तके तीन सम्प्रदाय कौनसे हें? एक वेदान्तको सम्प्रदाय ऐसो हे जो ब्रह्मकु सृष्टिके सिर्फ आधार माने हे, कारण और कार्य नहीं माने हे. जाकी पाछी दो वॅरायटी हें. एक आकाशाधार और दूसरी विवर्तोपादान की, विज्ञानभिक्षु और शंकराचार्य. ये दो वॅरायटी हें आधारवादी वेदान्तकी.

एक और वेदान्त हे जो यों माने हें के नहीं नहीं! जैसे कारण नित्य हे वैसे कार्य भी नित्य हे. याके लिये ब्रह्मने सिर्फ जो सूक्ष्म हे वाकु स्थूल बना दियो हे. बाकी कछु और नहीं कियो हे. या अर्थमें वाकु 'कारण' कह्यो जा रह्यो हे. या अर्थमें नहीं के सचमुचमें ब्रह्म जगत्को कारण हे. क्योंके जगत् अपने आपमें ऐसी अनित्यता क्षणभंगुरता और कछु कछु गड़बड़ी लिये भयो हे, तो ब्रह्म याको कारण हो ही नहीं सके हे. मतलब अपन् दुःखी हें, दुःखी हें पैदा होते, खतम होते भये; यदि अपने माजना ये हें के अपन् अज्ञानी हें, बोहोत पापी हें, दुष्ट हें वगैरह वगैरह जितनी भी नकारात्मक बातें यामें जोड़नी होंय तो जोड़ सकें हें, वो सब अपन् हें याके कारण ब्रह्म याको कारण हो ही नहीं सके हे. पहले अपन् सूक्ष्म हते तब शुद्ध हते. जब स्थूल भये तो गड़बड़ घोटाला हो गयो. जैसे बच्चा छोटो होय तो शान्त बैठ्यो रहे. बड़ो होते ही सब तूफान शुरु करे, ऐसे अपन् हें. वो कार्यतः ही उत्पत्ति मान रहे हें, कारणतः उत्पत्ति नहीं मान रहे हें. ये तीसरी स्कूल् हे वेदान्तकी. और चौथी स्कूल्में भी बोहोत सारे वेदान्ती हें. कुल मिलाके बारह तरहके वेदान्त हें. अब मॅथेमेटिकली यहां इनकु सेट् नहीं कर सकें

क्योंके या तरहसु इनकु डेवलप् नहीं कियो गयो हे पर फ्री-स्टाईल्में डेवलप् भये हें करके अपन् कोई वैसो मॅथेमेटिकल् फॉर्म्युला नहीं बैठा सकें के चार तीन बारह तो चार चार एक एककु एलॉट् करो. वो हिसाब यहां काम नहीं आयगो पर बारह तरहके वेदान्त हें. ये कछु ओरिजिनालिटी लिये भये वेदान्त हें, आजकलकी तरहके चालू खाताके वेदान्त नहीं हें. ये प्राचीन सिस्टेमेटिक् बारह तरीकेके वेदान्त हें उनकु अपन् या तरहसु हिसाबके तरीकेसु सेट् नहीं कर सकें. पर सॉर्ट-आउट् करें तो अपन्कु पता चले के कोई या साईड्के वेदान्ती हें, कोई वा साईड्के वेदान्ती हें.

(कारणत: उत्पत्ति : श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीड़ा
कार्यत: उत्पत्ति : लीला द्विजतनुधारी
आधारत: उत्पत्ति : स्थानलीला)

उनमें कारणत: उत्पत्तिके वेदान्ती अपन् हें. कारणत: उत्पत्तिके वेदान्ती होवेके बाद भी अपने महाप्रभुजीके मतकी ब्युटी या बातकी हे के कारणत: उत्पन्न होवेके कारण अपन् यों नहीं मान रहे हें के अपन कार्यत: नहीं हें अथवा अपन् आधारत: नहीं हें. महाप्रभुजीकी सिस्टम् एक तरहकी मल्टीडायमेन्शनल् हे के वो कोई भी वेदान्तकी सिस्टम्कु अपने भीतर इन्कोर्पोरेट् कर सके हे. वो अपने भीतर कहीं न कहीं अपने कोई भी खातामें जमा करके बता सके हे के या तरहको वेदान्त हमारे यहां या खातामें जमा हो सके हे. कार्यत: आधारत: तो और भी कई लोग मान रहे हें पर महाप्रभुजीको मूलत: भेद या जोर कारणत: उत्पत्तिपे ज्यादा हे.

क्योंके कारणत: उत्पत्ति अपन् समझेंगे तो अपन्कु ये पता

चलेगी के ये जगत् ब्रह्मात्मक हे. यदि कारणत: उत्पन्न नहीं समझें, जैसे सोनामेंसु गहना बन्यो. यामें थोड़ो भी संदेह आयो तो गहनाकी कीमत कछु न कछु तो घटेगी क्योंके अपन्कु लगेगो के कौनसी धातु मिलाके गहना बना दियो. पॉलिश् सोनाकी कर दी हे. अब गहना बन्यो कछु औरसु हे और वापे गोल्ड-प्लेटिंग् कर दी हे, ऐसो भी तो हो सके ना! ऐसो भी हो सके के गोल्ड होवे ही नहीं, खाली गोल्ड जैसी कोई मॅटल्की होवे. ऐसी मॅटल् भी मिले हे. अपन्कु निश्चय ही नहीं होवे? तो अपन्कु जगत्की जो कीमत निधार्रित करनी हे. जगत्की कीमत क्या हे?

(जगत्की कीमत भजनके लिये)

महाप्रभुजीके मतमें जगत्की बोहोत बड़ी कीमत हे. जगत्की कीमत ये हे के **''भगवानेव हि फलं स यथाविर्भवेद् भुवि.''** (पु.प्र.म.१७) भगवान् भूतलपे प्रकट होके अपन्कु अनुभव दे सके हे, ये जगत्की अपने यहां कीमत हे. एक वॅल्यु सिस्टम् हे. वो वॅल्यु डिप्राईव् करी जा रही हती. वाके लिये महाप्रभुजी शाउटिंग् कर रहे हें **''प्रपंचमेव मिथ्या इति उक्त्वा शुद्धं भजनं वारयन्ति.''** (त.दी.नि.प्र.१।२३) **''यथाकथञ्चित् कृष्णस्य भजनं वारयन्ति हि.''** (त.दी.नि.१।१५) अरे भई! प्रपंचकु मिथ्या कहके भजनको स्कोप्, भजनकी इन्टीग्रिटी और भजनके प्रति हमारो एक ग्लोरिफाईड् एप्रोच् हे, वाकु तुम डिस्टर्ब् कर रहे हो. **"प्रपंचमेव मिथ्या इति उक्त्वा शुद्धं भजनं वारयन्ति." ''यथाकथञ्चित् कृष्णस्य भजनं वारयन्ति हि.'' "अयमेव महामोहो हीदमेव प्रतारणम्."** (त.दी.नि.१।१५) अब यदि भजनको चान्स् कम हो रह्यो हे तो वामें फिर महाप्रभुजीकु

गुस्सा आवे. गुस्सा जब आवे तब आप यों केह हें के ''फिर तो जगत् हे ही नहीं. करो शास्त्रार्थ. तुम केह रहे हो के हे. मैं केह रह्यो हूं के ये जगत् हे ही नहीं! ऐसे जगत्को होनो के जा जगत्में भजनकी पॉसिबिलिटी नहीं होय, वा जगत्को नहीं होनो ही अच्छो.'' ये वॅल्यु हे. कोई वा तालिबानकी तरह जगत्कु डायनामाईट्सु उड़ा देवेके लिये नहीं केह रहे हें. पर जगत्की वॅल्यु महाप्रभुजी क्या समझ रहे हें, ये महाप्रभुजी बतानो चाह रहे हें के जगत् हे. जगत्की वॅल्यु ये हे के वा ब्रह्मरूपी सोनाको गढ़्यो भयो ये गहना हे. यामें गढाई एडीशन्ल् फॅक्टर् हे. वो जो स्वरूपमें दिखाई नहीं दे रह्यो हतो, वामें एडीशन्ल् चार्म् वा गड़ाईके बाद प्रकट भयो हे. तो जगत्की वॅल्यु ये हे. महाप्रभुजी या बातकु बोल नहीं दे हें पर अपन् उनकी बातको पूरो अन्दाज लगावें, उनकी बातकी वॅल्यु निकालें तो स्पष्ट समझमें आवे के जगत्की वॅल्यु ब्रह्मकी वॅल्युसु थोड़ी ज्यादा ही हे, कम नहीं हे. क्योंके वो तो बिना गढ़्यो हे, अनगढ़ हे और ये तो गढ़्यो भयो ब्रह्म हे. गड़ाईको मूल्य भी थोड़ो जुड़ेगो. ये महाप्रभुजीकी जगत्के इवेल्युएशन् करवेकी एक नीति हे. जरा भी कोई ऐसो वैसो कहे तो महाप्रभुजीकु बोहोत डिस्टर्बेन्स् होवे. **''प्रपंचो मिथ्येति उक्त्वा शुद्धं भजनं वारयन्ति. अयमेव महामोहो हीदमेव प्रतारणम्. यत् कृष्णं न भजेत् प्राज्ञः शास्त्राभ्यासपरः कृती''** (वहीं) ये वॅल्यु खण्डित न हो जाय, वाके लिये महाप्रभुजी केसरिया करवे तैयार हें. आओ चलो मारामारी करनी हे तो करो, कितनी करनी हे मेरे साथ? **पत्रावलम्बे पंडित जीत्या मायिक मत्त–मातंग. श्रीकृष्ण पूर्णब्रह्म स्थाप्या जेना रूप कोटि अनंग.** ये सारो झगड़ा वा लिये कर रहे हें के जगत्की एडेड्

वॅल्युकु कोई कम या डीवेल्युएशन् न करे, वाकी थोड़ी इन्क्रीज़्ड् वॅल्यु हे. वो अनगढ़ हे ये गढ़्यो भयो हे. वा वॅल्युकु तुम क्यों नहीं एप्रिशियेट् कर पा रहे हो! एकदम चालू भाषामें कहनो होय, हिन्दीमें कहनो होय तो ''मुर्गी जानसे गई और मियांको स्वाद नहीं?'' अरे भई ! वो ब्रह्म जो नित्य अनादि व्यापक हे वो तुम्हारे लिये रूपमें प्रकट हो गयो, अनित्य बन गयो, सादि बन गयो, सान्त बन गयो, वाने अपनो कितनो जोर लगायो हे और तुम वाकु एप्रिशियेट् ही नहीं कर रहे हो. कैसे तरहकी तुम्हारी सॅन्सिटीविटी हे? जब वाने इतनो जोर लगाके अपने स्वभावके विरुद्ध अन्यथाकर्तुं सामर्थ्यसु ऐसो जगत् प्रकट कियो हे. क्योंके सनातन नित्य तत्त्व कालिकी अनित्यता प्रकट करतो होय तो अपन् भी वाकु प्रकट पायेंगे अन्यथा ये ''**हरेरपि हरिः यदि**'' को सिद्धान्त हे! अब वाकी निन्दा करनी के वाकु एप्रिशियेट् करनो? ये जगत्की वॅल्यु हे. जगत्की वॅल्यु होवेके कारण ही महाप्रभुजी ये बात कहें हें के मेरो पहलो सिद्धान्त कारणतः उत्पत्ति हे. **श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीडा** वो कारणतः उत्पत्तिको सिद्धान्त हे. और **लीला द्विजतनुधारी** ये पुष्टिमार्गमें कार्यतः उत्पत्ति हे. वाके बाद स्थानलीलामें आधारतः उत्पत्तिको वर्णन हे. वामें जो उत्पन्न भयो वाकु आधार कौन दे रह्यो हे? जो भी चीज अपन् उत्पन्न करें वाकु कोई न कोई आधार तो देनो पड़ेगो के ये चीज पैदा करी. जैसे रसगुल्ला भी बनायो तो वाकु कहां रखेंगे? कोई भी चीज बनाई खावेकी तो वाकु जमीनपे तो नहीं रखेंगे ना! यदि वाकु खावेमें रुचि पैदा करवेके लिये रखनो हे तो वाकु वा आइटम्के अनुसार ही रखनो पड़ेगो. यदि तरल पदार्थ हे तो कटोरामें रखनो पड़ेगो, यदि ठोस

पदार्थ हे तो थालीमें रखनो पड़ेगो. गौ–ग्रासकी तरह अपन् डम्प करें तो वहां ऐसो भी नहीं हो सकेगो. वाकु तो थोड़ी सजावटसु रखनो पड़ेगो. ये जो आधार हे वो कौन करेगो? महाप्रभुजी उत्पत्ति तीन तरहसु केह रहे हें कारणत: कार्यत: और आधारत:.

(प्रमाणलीला : स्थिति)

इन तीन तरहकी उत्पत्तिलीलामें कारणत:को रोल् प्रधान होवेके कारण वो सब प्रमेय हे क्योंके वा बखत अपन् हें नहीं तो अपन्कु क्या पता के क्या कर रह्यो हे? अपनी मां पत्नी बहन या कोई भीतरिया ही रसोई बना रह्यो हे तो प्रमेय हे. अपन्कु क्या पता के वाने क्या मिर्च मसाला एकत्र कियो हे, कैसे बनायो हे? प्रमाण कहांसु शुरु हो रह्यो हे? जब अपनी थालीमें पिरोस्यो जाय तबसु प्रमाण प्रकट हो रह्यो हे. जहां और जब वो बना रह्यो हे वहां तो अपन् मौजूद ही नहीं हें. पता ही नहीं के क्या कर रहे हें और क्या नहीं कर रहे हें! अपन्कु क्या पता चले? वो सब प्रमेयलीला हे. जब अपनी थालीमें पिरोस्यो जाय तबसु प्रमाणव्यापार शुरु हे. देख रहे हें वो प्रमाणव्यापार हे. हाथमें उठा रहे हें वो क्रियाव्यापार हे. जीभपे रख रहे हें वो प्रमाणव्यापार हे. ये प्रमाणव्यापार यहांसु शुरु हो रह्यो हे.

पोषणलीला शुरु हो रही हे, यामें महाप्रभुजीने अचानक एक खुलासा और कियो हे के प्रमाणलीला हे इतनो ही नहीं पर यहां जो लीलाको प्रभेद आ रह्यो हे, वो जैसे उत्पत्ति, कारणत: कार्यत: और आधारत: हे.

(उपनिषद्में निरूपित स्थिति, महाप्रभुजीके मतसु तीन तरह : पोषण विलास और धर्म)

ऐसे स्थितिके लिये महाप्रभुजी केह रहे हे पोषणत: विलासत: और धर्मत: हो रही हे. कोई चीजकी जो भी स्थिति हे वाकु मेन्टेन् करनो है. अब वाकु मेन्टेन् कैसे करेंगे? वाकी प्रोसीजर् क्या हे? सबसु पहले जाकु पैदा कियो हे वाको पोषण करनो पड़ेगो. पोषण नहीं करोगे तो वो खतम हो जायगो. जब बच्चाकु दूध पिवायो नहीं, बच्चाकु खवायो नहीं, पेड़की अपन्ने प्रॉपर् केयर् ली नहीं, तो पेड़ खतम हो जायगो. बीज बोवेसु ही पेड़ पैदा नहीं होयगो. बीजकी रक्षा करवेसु पेड़ बड़ो होयगो. तो स्थितिकी पहली शर्त हे पोषण. जिनकु पैदा कियो हे उनकी हिफाज़त करो, उनकी केयर् लो. सबसु पहली लीला पोषण हे.

(स्नेहसु विलास और वाकी महत्ता)

दूसरी लीला विलास हे और तीसरी लीला धर्म हे. चाहे बच्चा होय, पेड़ होय, जानवर होय, उनको पोषण करके उनके साथ अपन् इन्टरएक्टिव् मोड्में नहीं रहें तो अल्टीमेटली वो बच्चायें जा दिन जवान होवें वा दिन अपन्कु वृद्धाश्रममें भरती कर देवें हें. क्योंके अपन्ने उनके साथ इन्टरएक्टिव् मोड्में कोई विलास तो कियो नहीं हे उनकु बस इतनी पता चले के यह कोई व्यवस्था हे हमकु प्रोवाईडेड् जो हमकु मेन्टेन् कर रही हे. जा दिन हम सेल्फ-मेन्टेन्ड् हो जायें वा दिन इनकु वृद्धाश्रममें विदा करो. अब हमकु इनकु मेन्टेन् करवेकी क्या जरूरत हे? इनकी युटिलिटी क्या? एक बात सच हे के जैसे ही अपन् सेल्फमेन्टेन्ड् भये, वाके बाद जाने मेन्टेन् कियो वाकी युटिलिटी डिक्लाईन होनी शुरु हो जाय. जब कोईकी

युटिलिटी डिक्लाईनिंग् ट्रेन्ड्पे जावे वा बखत अपन्कु ये समझमें आनो के इनकु मेन्टेन् करनो; अब वो चाहे पेड़ होय, जानवर होय, कुत्ता होय, पोपट होय, गाय होय, बच्चा होय, पत्नी होय, पति होय, भाई होय चाहे कोई भी होय, ये पोषणमें रह्यो भयो एक नॅगेटिव् एस्पेक्ट् हे. अपन्कु रिडन्डेन्ट् (अनावश्यक) लगे. तो वा रिडन्डेन्सीकु एवोइड् करवेके लिये सबसु पहली प्रोसीजर् क्या होनी चहिये के जाकु अपन् मेन्टेन् कर रहे हें वाके साथ विलासके इन्टरएक्शन्में हर बखत इन्वोल्व् रहें तो वाको और अपनो स्नेह खण्डित नहीं होवे हे. अब वाकु युटिलिटीके आधारपे निभावेकी अपनी इच्छा नहीं होयगी पर स्नेहके आधारपे निभावेकी इच्छा होयगी. जैसे पारसी बाबान्कु अपनी कार अपनी पत्नीसु ज्यादा प्यारी लगती होवे हे. वाको मूल कारण क्या? वाके साथ वो विलास करें के "मेरी कार अच्छी कार हे." उनकु ये लगे. अपनी पत्नी उतनी अच्छी नहीं लगती होवे हे. विलासके मूडमें अपन् जा बखत भी व्यवहार करें वा बखत दोनों बाजुमें कछु न कछु स्नेह प्रकट होतो होवे हे.

अब वा स्नेहके कारण तो वाकु मेन्टेन् करवेकी युटिलिटी समझमें आयेगी. पर युटिलिटीके कारण स्नेह कोई विरलेकु ही पैदा हो सके हे क्योंके खास फेज़्पे जाके, हर चीजकी युटिलिटी कछु न कछु खतम तो होती ही होवे हे. जा बखत जा जन्क्चरपे युटिलिटी खतम भई, जैसे बच्चा मांकी अपेक्षा कब तक करे? जब तक वो खुद नहीं चल सके. जैसे ही चलनो शुरु करे तो बच्चाकी पहली इच्छा क्या होवे के मोकु गोदीमेंसु उतारो, मोकु चलवे दो.

जो बच्चा गोदमें आवेके लिये जिद करतो होवे, वो बच्चा गोदीमेंसु उतरवेके लिये जिद करवे लगे. जो बच्चा घरमें रहवेके लिये जिद करतो होय, वो बच्चा घरमेंसु बाहर जावेके लिये जिद करवे लग जाय. खाली बच्चाकी ही बात नहीं कर रह्यो हूं. कुत्ताकी भी बात ऐसी ही हे. ये कुत्ताकु जो घुमावे ले जायें, उनकु जैसे ही घरसु बाहर ले जायें तो कुत्ता उनकु घसीटतो होवे. वो कुत्ताके पीछे पीछे घिसटते होवें. हरेककी ये ही बात हे. कुत्ता और बच्चा भी वो पॉलिसी एडोप्ट् करे. पति भी करे हे, पत्नी भी करे हे, भाई भी करे हे, दोस्त भी करे हे, ब्रह्म भी करे हे और जीव भी करे हे.

ये एक सिस्टम् हे. वा सिस्टम्में यदि तुमने पीटनो शुरु कर दियो कुत्ताकु के जरा भी आगे खींचे तो फट मारो, तो कुत्ताकु तुम्हारे प्रति स्नेह खतम हो जायगो. हर व्यक्ति जाकु अपन् मेन्टेन् कर रहे हें, वाके साथ विलास करेंगे तो वो भी अपने साथ विलासके मूडमें रहेगो. जब परस्पर विलासको मूड होयगो तब मेन्टिनेन्स् अच्छो होयगो.

(विलासमें खेलवेको भाव)

जहां परस्पर कम्पल्शन्को मूड् आयो तो वहां कोई भी वा कम्पल्शन्की लिमिट्में रहनो नहीं चाहेगो. खुद मनुष्य अपने कम्पल्शन्में जो नेचर्के कम्पल्शन्में जीनो नहीं चाहे हे. यदि मनुष्यमें नेचर्के जो कम्पल्शन् हते वामें मनुष्य जीनो चाहतो होतो तो क्यों नाव बनातो, क्यों सबमरीन् बनातो, क्यों एयरोप्लेन् बनातो, क्यों कार बनातो, क्यों साईकल् बनातो? मनुष्यकु पता हे के ये स्पीड् मैं

अपनी बॉडीके नेचरसु एक्वायर् नहीं कर सकूं. या कम्पल्शन्कु जो मेरी बॉडी मोकु कम्पेल् कर रही हे के तू इतनी जल्दी जा नहीं सके हे, तू पानीके भीतर घुस नहीं सके हे, पानीमें तू सुरक्षित तैर नहीं सके हे, आकाशमें तू उड़ नहीं सके. बॉडीके कम्पल्शन् हें, कोई बापके कम्पल्शन् नहीं हें. मेरी बॉडी मोकु कम्पेल् कर रही हे. वा कम्पल्शन्सु यदि मैं छटकनो नहीं चाहतो हतो तो ये सारे इन्स्ट्रूमेन्ट् काहेकु करतो. क्यों मैं टॅलिस्कोप् बनातो? क्यों मैं माइक्रोस्कोप् बनातो? क्यों मैं ये सारी चीजें बनातो? क्योंके जो मेरी बॉडीके कम्पल्शन् हते, वामेंसु मैं भी छटकनो चाहूं. ऐसे चाहे वैसे. हर बखत ये ही बात हे. जैसे ही आदमीकु ये क्लिक् होवे हे के अच्छा! ये मेरो कम्पल्शन् हे तो कैसे मैं यामेंसु बाहर आऊं? तुरत वाकी पहली इच्छा या तरीकेकी होवे. जहां भी कम्पल्शन् शुरु भयो वहां ये इच्छा होवे हे. वा बखत कोई रोकवेवालो फॅक्टर् विलास हे. 'विलास' माने प्लेफुल् मूड्, खेलवेको मूड्. तुम कोईकु भी खेलवेके लिये दो घंटा रोको ना, तो कोई भी नहीं मानेगो के कम्पल्शन् हे. बच्चा छः छः घंटा खेलते रहें, कभी उनकु लगे के कोई कम्पल्शन् हे? अपन् कहें के दो मिनट बैठो यहां. यमुनाष्टकको पाठ करो. सर्वदा सर्वभावेनको पाठ करो, तो बिचारेकु त्रास त्रास हो जायगी. ये क्या लफड़ा हो गयो? कौनसे पापकी सजा मिली? क्यों? क्योंके विलास नहीं लग रह्यो हे. पहली आवश्यकता हे के जो काम अपन् कर रहे हें, जा कामकु अपन् मेन्टेन् कर रहे हें, वामें कछु विलास प्रकट होनो चहिये.

(विलासको अर्थ)

अपन् कोई अच्छो काम करें तो वाकी अपने चेहरापे कछु

कान्ति आती होवे. और विशेषेण जो लास हे, जासु अंग्रेजीको लस्टर् बन्यो हे, वो विलास हे. जा बखत अपन् कोई ऐसो काम कर रहे हें के जो जबरदस्ती अपन्सु करायो जाय हे. मुर्दानगी चेहरासु अपन् वो काम करें हें. वाके कारण अपने चेहराकी कान्ति उड़ जाती होवे हे. याको नाम 'त्रास' हे. कोई ऐसो काम करनो के जाके कारण अपने चेहरापे कोई कान्ति दीखे. देखवेके साथ ही अपन्कु पता चले के या कामकु ये एन्जॉय् कर रह्यो हे के नहीं?

हम जहां पुस्तक छपवावे जाते तो वहां ऐसो ही होतो. वाकु संस्कृतको बोहोत कंटाला आतो. जैसे ही हम पोहोंचते तो उबासी लेके कहतो के "आओ आओ बैठो, यमुनाकष्टम्की आज फाईल् तैयार करी हे." अरे भई! यमुनाकष्टकम् नहीं यमुनाष्टकम्. वाके दिलमें रही होती बातकु वो ऐसे प्रकट करतो. मैं कहतो "भई! यमुनाकष्टकम् नहीं यमुनाष्टकम्की फाईल्." क्योंके वो विलास प्रकट नहीं हो रह्यो हे. जब अपन्कु कोई कम्पॅल् करेगो तो वो यमुनाष्टकम्के बजाये यमुनाकष्टम् हो जाय और वोही विलाससु अपन् यमुनाष्टक बोलें तो नींद आती होय तो भी उड़ जाय. सारो रहस्य या बातको हे. कष्टम् और अष्टकम् में बस इतनो ही फेर हे के अपन् यदि विलाससु केह रहे हें तो अष्टकम् हे और कम्पल्शन्सु केह रहे हें तो कष्टकम् हे. भले वो यमुनाजी होंय के ठाकुरजी होंय, होंयगे परमानन्दस्वरूप, यदि अपन्कु कम्पॅल् कियो गयो तो अष्टकं कष्टम् हो जाय.

जाको स्थापन कियो हे वा स्थापनमें पोषण करके वाकु

सॅल्फ्-सपोर्टेड् बनायो हे. व्यवस्था सॅल्फ्-सपोर्टेड् बना रही हे. सॅल्फ्-सपोर्टेड् बनावेके बाद वाके साथ यदि विलास करनो भूल गये तो चाहे ठाकुरजी हें, पत्नी हे, पति हे बच्चा हे, कुत्ता हे, दोस्त हे, क्लाईन्ट हे, पेड़ हे, पौधा हे, भैंस होय, थोड़ो विलास वाके साथ होनो चहिये. ये यूनिवर्सल् प्रिंसिपल् हे, माईन्ड-इट्. जब विलास हे तो वाकु तुम्हारे प्रति सेन्स्-ऑफ् एफिलियेशन् आयगो और जहां मेन्टेनन्स् माइनस् विलास हे तो वो बाट ही देखते होंय के कौनसे दिन छटकें? और वा दिन वो छटक जायें.

भागवतकारकी कितनी गहरी दृष्टि हे जो अपन् समझें नहीं हें. भागवतकार ये समझावें और ये ही नहीं महाप्रभुजी भी ये बात समझावें के स्थितिको जो पक्ष हे, वामें सिर्फ पोषण ही नहीं हे, विलास भी एक प्रोमिनेन्ट् रोल् अदा करे हे. यदि विलास नहीं हे तो कछु न कछु तो गड़बड़ घोटाला होयगो, होयगो और होयगो ही.

देखो मैं अपनी बात बताऊं. बड़ी मजेदार बात हे. मेरी सबसु बड़ी बेटी ढब्बु, वाके लिये मेरी ये इच्छा के मेरी बेटी हे तो स्ट्रोंग् बने. वाके साथ मैं ऐसो ही खेल खेलतो. 'थ' माने थप्पड़. 'च' माने चूंटिया. 'म' माने मुक्का. सब मारतो हों. जोर-जोरसु और वो हंसती रहती. वाकु रोनो ही नहीं आतो. मैंने एक्सपॅरीमेंट् करके देख्यो. जोरको भी थप्पड़ मारतो तो हंसती रहती. काका मोसु खेलें हें. हंसती रहती. क्यों? इतनी स्ट्रोंग् ट्रीटमेन्ट् भी विलासके साथ करी. वा ढब्बुकी समस्या ये हती के कभी गुस्सा होके कोठड़ीमें

ठूंस देतो तो फिर रोती के "काका समझ नहीं रहे हें. मोकु डर कितनो लग रह्यो हे? अरे कोई तो सुनो मेरी बात. कहां गये सब लोग?" ये वाको पनिशमेन्ट् या कम्पल्शन् हतो.

(परस्पर विलासात्मकभावसु स्थिति)

हर चीजकु, जाकु या तरहसु अपन् मेन्टेन् कर रहे हें वाके साथ अपने पास विलासको कुछ टाईम्-टेबल् होनो चहिये. यदि विलासको टाईम्-टेबल् नहीं हे तुम्हारे पास तो समझ लो के जा दिन वो सेल्फ-सपोर्टेड् हो गयो वा दिन वो तुमकु वृद्धाश्रम भेज ही देगो. तुम वा बखत गुड् फॉर् नथिंग् लगोगे क्योंके तुमने वाके साथ विलास तो कियो नहीं हे. मेन्टेन् कियो खाली वाकु. वा मेन्टेनेन्स्कु वाने अपनो प्रिविलेज् समझ्यो हे. जाकु तुम मेन्टेन् करो वा हर मेन्टिनेन्स्के साथ यह लफड़ा रह्यो भयो हे. अपन् कोईकु भी मेन्टेन् करें वाकु वो अपनो प्रिविलेज् ही समझे हे के मेरेमें ही कछु खासियत हे. वाकु ये समझ ही नहीं आवे के मेरी कछु खासियत नहीं हे पर उनकी कछु खासियत हे. अब जैसे सरकारकी सिस्टम् अपने लिये रेलवे मेन्टेन् कर रही हे. रेल् थोड़ी भी लेट् होवे तो पत्थर फैंकेगे, हल्ला मचायेंगे, क्यों? यात्री वाकु अपनो प्रिविलेज् माने हे. ऐसे नहीं माने के उनको कोई उपकार हे. जो चीज मेन्टेन् हो रही हे रेग्युलरली, वामें अपन्कु प्रिविलेज् लगतो होवे हे. प्रिविलेज् लगतो होवे हे करके वामें अपन्कु थॅन्कफुलनेस् आनी चहिये. कभी रेलवे सिस्टम्के प्रति थॅन्कफुलनेस् आवे? क्यों नहीं आवे? अपन्कु प्रिविलेज् लगे के अपन् सिटिज़न हें. रेलवेकी फॅसिलिटी प्रोवाईड् होनी चहिये. युरोप अमरीका घूमके आ जायें तो

यहां आके निन्दा और करें के वहांकी ट्रेन्की फॅसिलिटी बोहोत अच्छी हे, यहांकी तो बोहोत ही खराब हे, लालुशाही हे. अरे भई! जो भी सिस्टम् हे वामें अपन्कु थॅन्कफुल् होनो चहिये के नहीं? कारण के जो भी चीज प्रोवाईड् हो जाय वामें लगावकी कमी हो जाय हे.

हम बालकन्की भी ये ही दशा हे. जो हमकु मेन्टेन् करवेमें वैष्णवन्ने एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी एफर्ट्स् किये, वाके लिये हमारेमें थॅन्कफुलनॅस् नहीं आई, वाकु हम प्रिविलेज् समझ बैठे हें. अब ये प्रिविलेज् होवेके कारण हमकु यों लगे के जो भी तुम कर रहे हो वामें हमारो प्रिविलेज् हे. वा प्रिवलेज्के कारण हम यों आज्ञा करें के हम तो **स्वतन्त्र क्रीड़ा** हें. हम जो चाहें सो करें. तुम **केवल भक्त न थाओ,** हमारे स्वातन्त्र्यकु भुगतते रहो. जो भी हम स्वतन्त्रतासु करें वाकु मानो. वो क्या हे के मेन्टेन् करवेमें कोईको भी प्रिवलेज् पैदा करवेको एक प्रोग्राम् होवे हे. हर मेन्टेनेन्स्की वो साईड् इफॅक्ट् ही होवे हे. कहीं भी जाके देख लो. युनिवर्सल् फिनोमिना हे ये. पर जा बखत पोषणके अलावा विलासको रूप होवे वहां स्नेहसम्बन्ध खण्डित नहीं होवेके कारण या तरीकेको विकृत स्वरूप पैदा नहीं होवे हे. दोनोंको परस्पर एक दूसरेके प्रति **''देवान् भावयता अनेन ते देवा भावयन्तु वः, परस्परं भावयन्तः श्रेयः परम् अवाप्स्यथ.''** (भग.गीता.३।११) जैसी एक सिस्टम् पैदा होवे हे. जैसे अपन् ठाकुरजीकु मेन्टेन् कर रहे हें, वैसे **''भर्ता सन् म्रियमाणो बिभर्ति''** (तैत्ति.आर.३।१४।१) ये जो बात बताई हे वो या बातके लिये के विलासात्मक मिच्युअल् मेन्टेनेन्स् होनो चहिये.

जब विलासात्मक मिच्युअल् मेन्टेनेन्स् हे तो फिर अपने आपमें मिच्युअल् अटॅचमेन्ट् डेवलप् होयगो. कभी तुमकु डिटॅच् होवेकी जरूरत नहीं पड़ेगी. अब स्थितिको जो सेकन्ड फेज़ हे वाकु महाप्रभुजी केह रहे हें के पोषकके बाद विलास बोहोत प्राईम् फॅक्टर् हे.

(विलाससु धर्मबोध)

पर बोहोत ज्यादा विलास करो तो आदमी बदमाश गिलिन्डर् हो जाय. विलासके साथ वाके भीतर कर्तव्यकी भी अवेयरनेस् जगानी चहिये. स्थितिको विलास वा ढंगको होनो चहिये जामें कर्तव्यबोध होनो चहिये. वामें कर्तव्यको बोध ही खो जाय तो वैसो विलास भी घातक हो सके हे. विलास हमेशा ऐसो होनो चहिये के जामें साथ साथ अपनी अवेयरनेस् ऑफ् ड्यूटी भी पनपती रहे के ये हमारे साथ विलास हो रह्यो हे, हम ये विलास याके साथ कर रहे हें, याके कॅारस्पॉन्डिंग् हमारो कर्तव्य क्या हे? धर्म क्या हे करके स्थितिके महाप्रभुजी तीन पहलु माने हें.

(उत्पत्त्यादिकी उपनिषद् भागवत और वल्लभाख्यान की एकवाक्यता)

स्थितिके लिये मैं समझुं के कितनो युनिवर्सल् प्रिंसिपल् हे पर ऐसी एनेलेसिस् आज-तक मोकु कोई भी साहित्यमें नहीं मिली. हो सके होयगी पर मेरी निगाहमें नहीं आई अभी तक. महाप्रभुजीके अलावा या तरहसु मेन्टेनेन्स्के तीन चॅप्टर् बनाने और ऐसे तीन चॅप्टरन्में मेन्टेनेन्स् करनी चहिये तो वो सही मेन्टेनेन्स् हे. अन्यथा मेन्टेनेन्स् तो कर रहे हो पर वाकी वर्दीनेस् गायब हो गई. तीन

तरहके मेन्टेनेन्स्में; चाहे भगवान् जीवकु मेन्टेन् करे, चाहे जीव भगवान्कु मेन्टेन् करे, चाहे पति-पत्नी एक दूसरेकु मेन्टेन् करें, माता-पिता एक दूसरेकु मेन्टेन् करें, दोस्त दोस्तकु मेन्टेन् करें, जामें ये तीन मेन्टेनेन्स्के मोड् नहीं हें, वामें कछु न कछु लफड़ा होयगो, होयगो और होयगो ही. वो भाव महाप्रभुजी जगानो चाह रहे हें.

जो स्थानलीला उपनिषद्ने कही हे वाके ये तीन कम्पार्टमेन्ट् महाप्रभुजी बना रहे हें के ये स्थानकी जो लीला हे वो या तरहसु तीन कम्पार्टमेन्ट्में होयगी. और वो भागवतने समझायी हे करके गोपालदासजी **स्कंधसंख्या ए कह्यां श्रीभागवत रसराज.** क्योंके उपनिषद् या बातकु नहीं केह पायो हे, उपनिषद् ज्ञानकी मुद्रामें बोल रह्यो हे. **''यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति, यत्प्रयन्ति अभिसंविशन्ति तद् विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्मेति.''** (तैत्ति.उप. ३।१) पर भागवत केवल ज्ञानमुद्रामें नहीं बोल रही हे पर ज्ञानके साथ वो **सरसवचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार** भी कर रही हे. यदि **''येन जातानि जीवन्ति,''** यदि कोईकु जीवित रखनो हे तो वाकु जीवित रखवेकी अपने पास मोडस् ऑपरेन्डी क्या होनी चहिये? वाको पोषण करो, वाके साथ विलास करो और वाके साथ ऐसो विलास मत करो के वाकु सेन्स् ऑफ ड्युटी पैदा ही नहीं होवे. वो अपनी सेन्स् ऑफ् ड्युटीसु गाफिल हो जाय. ऐसे ढंगसु वाके साथ विलास करो के वाकु अपनी सेन्स् ऑफ ड्युटीकी अवेयरनेस् निरन्तर बनी रहे. तो तो तुमने वाकु सच्चो मेन्टेन् कियो. नहीं तो गाम वाकु गाली देगो पर जिम्मेदारी तो तुम्हारी हती वो. जा चीजकु अपन्ने या तरहसु मेन्टेन् नहीं करी वामें कछु न कछु

तो खराबी बदमाशी पैदा होंयगी, होंयगी और होंयगी ही. गाम सब वाकु गाली देगो पर जिम्मेदारी कौनकी हे?

ये बात भागवतने अपन्कु समझाई हे के मेन्टेनेन्स्को रस या ढंगको हे. प्रमेय हे, कारणतः, कार्यतः और आधारतः वासु तो माहात्म्य समझ आ रह्यो हे. वो बारह सिस्टम् वेदान्तने पहलेसु ही प्रपोज़् कर दिये हें. ये बोहोत ही रिच् सिस्टम् हे. उनमेंसु अपनो भी एक सिस्टम् हे. पर ये सिस्टम् (स्थिति) **"यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति"** (वहीं) जी रहे हें उनके जीवेको तरीका क्या होनो चहिये? तो केह रहे हें के पोषण विलास और धर्म. अब जो ये तीन लीला शुरु हो रही हें, जाके कॉरेस्पॉन्डिंग्में चौथो पांचमों और छटो आख्यान आयेंगे.

यहां पोषण कियो हे, यहां विलास कियो हे और आगे जाके धर्म समझा रहे हें. या तरीकेके पोषणसु, या तरीकेके विलाससु, अपनी ड्युटीसु गाफिल नहीं हो जानो चहिये. तुमकु अपनो कर्तव्य पता होनो चहिये. बोहोत ही सुन्दर कन्सॅप्ट् हे. मैं नहीं समझूं के महाप्रभुजीके अलावा कोई औरकु क्लिक् भयो होय! वाके लिये मोकु लग रह्यो हे के गोपालदासजी भी केह रहे हें के **स्कंधसंख्या ए कह्यां श्रीभागवत रसराज. भक्तजन-पदरज-प्रतापे सकल सरियां काज.** इतनो थोड़ो पोषणको और आगे आवेवाली जो तीन लीला हें वाके तहत ये समझनो जरूरी हतो.

(कर्मकी विलासरूपता)

अब ये जो विलास हे वो कैसे वर्णन कर रहे हें? देखो या

साईड्में भागवतके एन्गल्सु वो ऊति हे. ''**ऊतय: कर्मवासना:**'' (भाग.पुरा.२।१०।४) और महाप्रभुजी वाकी एक तरहकी समानान्तर सिस्टम् बता रहे हें, वामें वो विलास हे. अब वाकु इन दो एन्गल्सु देखो. हरेककी कछु कर्मवासनायें हें. कर्म अच्छे बुरे भी हो सकें हें. और कछु उन कर्मवासनान्के तहत कियो जातो अलग–अलग खेलवेको प्रकार हे. कर्मवासना कहते ही अपने मनमें ये ख्याल आ जाय के बोहोत कठोर कोई बात आ गई. वा कर्मको कछु न कछु प्रमाण होवे हे, ''कर्मप्रधान विश्व करि राखा. जो जस करहि सो तस फल चाखा.'' ऐसे वा कर्मको फल तो चाखनो ही पड़ेगो. अरे भई वो तो चाखेंगे. अब मिर्ची काटी हे तो वाको टेस्ट् तो जीभपे धरके लेंगे ही. वामें कोई आपत्तिकी बात नहीं हे. पर सवाल यहां ये नहीं हे, वा टेस्ट्कु विलासके रूपमें लेंगे के रोते भये लेंगे? कर्म करेंगे तो विलासके रूपमें करेंगे या रोते भये करेंगे? अन्डर्–कम्पल्शन् जाकु कानूनकी भाषामें अंडर् ड्युरेस् (जोर जबरदस्तीसु) कह्यो जाय. वाको फल हेल्प्लेस्नेस्की तरह भुगतेंगे के या एन्गल्सु भुगतेंगे के हां! ये कर्म कियो तो वाको फल भुगत रहें हें, वामें क्या हे? वाकी मजा लेंगे.

जैसे सबसु अच्छो उदाहरण गांधीजीको चम्पारण्यको हे. अंग्रेजन्ने प्रोहीबिशन् लागु कियो के तुम चम्पारण्यमें नहीं आ सको. गांधीजीने कही के हम तो घुसेंगे. गांधीजीकु पकड़के जेलमें बैठा दियो गयो. जज्के सामने खड़ो कियो. जज्ने कही के ''मोहनलाल कर्मचन्दजी तुम एडवोकेट् हो, तुमकु पता होनो चहिये के तुम्हारी एन्ट्री यहां प्रोहीबिटेड् हती.'' गांधीजीने कही के ''पता हे.'' जज्ने

कही के "तो भी तुम एन्टर् भये?" गांधीजीने कही के "हां तो भी एन्टर् भये." जज्ने कही "क्यों एन्टर भये यदि कानून पता हे तो?" तो उनने कही "जैसे तुम्हारो कानून हे वैसो और भी कोई कानूनको फ्रेमवर्क हे. वा कानूनके फ्रेमवर्कके तहत एन्टर् भयो हूं. तुम्हारे कानूनके अनुसार मैंने गुनाह कियो हे तो वाको दण्ड यदि तुम मोकु नहीं दे रहे हो तो तुम गुनहगार हो, मैं गुनहगार नहीं हूं." ये विलास हे. जज्ने कही के "भागो यहांसु. केस् डिस्मिस्." या प्रकारके विलासीकु कौन अरेस्ट् करेगो? जो जज्कु केह रह्यो हे के तुम मोकु दण्ड दो. अपन् क्या करें के जाते ही रोवे लग जायें के गलतीसु एन्टर् हो गये हते. हमकु पता ही नहीं हतो. पाटिया पढ़्यो नहीं, टाईम्में मोकु नोटिस् मिली नहीं हती. अरे मिली हती के नहीं मिली हती पर तुमकु सब पता हती. तुम दण्ड दो ना! जैसे वो दण्ड नहीं पर रिवार्ड हो गयो. गांधीजीने कही के "तुम दण्ड दो. तुम्हारे कायदाके मुताबिक मैंने गुनाह कियो हे तो वाको दण्ड यदि तुम मोकु नहीं दे रहे हो तो मैं गुनहगार नहीं हूं पर तुम गुनहगार हो. क्योंके तुम्हारे कायदाकु तोड़के कोई दूसरो कायदा मोकु मान्य हे, वाके तहत एन्टर् भयो हूं. दो मोकु सजा." ये विलास हे. कर्म करवेको भी विलास हे और कर्मफलको भी विलास हे. विलास एक प्रोग्राम् हे जो मेन्टेनेन्स्में प्रकट होनो चहिये. वा विलाससु अपन्ने कोई कृत्य कियो हे; कानूनकु ब्रेक् करनो के कानूनकु मेन्टेन् करनो? वाके विसाविस् गांधीजीकी कोई एक विलासकी दृष्टि हे. गांधीजीकी बोहोत लोग बड़ाई करें. कई तरहकी उनकी प्रशंसाकी बातें हें. कई तरहकी निन्दाकी बातें हें. पर ये बात गांधीजीकी मोकु लीलात्मक लगे हे. जाके भीतर लीलाभाव ठूंसठूंसके भर्यो होय, वा व्यक्तिमें

ये बात कहवेकी सामर्थ्य होवे हे. ये शुद्ध लीलाभाव हे. वाको आनन्द प्रकट हो रह्यो हे. गिल्टी फील् नहीं हो रही हे. ब्रिटिश कानूनके सामने टेबल् टर्न कर दे रह्यो हे. सारी बात जज्पे डाल दी. ये लीलाभाव हे. ये लीलाभावकी बुद्धि हे. अपने कर्ममें, अपनी कृतिमें ये विलासको प्राकट्य हे. ये जहां प्रकट होवे वहां मेन्टेनेन्स्में गड़बड़ नहीं होवे. जहां यामें लफड़ा होवे वहां फिर सारी गड़बड़की परम्परायें चालू होवें.

(विलासकी संगति वल्लभाख्यानमें)

वो विलास हे करके गोपालदासजी कह रहे हें के **श्रीविठ्ठल सुखकारी, नामे निष्पाप थाय नरनारी. दुर्गति सकल निवारी, प्रकट्या श्रीव्रजपति रासविहारी.** विलास वो कैसे इन्डिकेट् कर रहे हें! वो यहां समझमें आवे हे के **श्रीविट्ठल सुखकारी** विलासमें कभी दुःख होवे ही नहीं. विनाशमें दुःख होवे, विलासमें काहेको दुःख होवे? **दुर्गति सकल निवारी**. दुर्गति कौनकी होवे? दुर्गति वाकी होवे जो विलास नहीं करतो होय. जो विलास कर रह्यो हे, वाकु तो स्वर्ग अपवर्ग नरक इत्यादि सब बराबर हें. वाकी दुर्गति कैसे हो सके? हो कैसे सके मेरी दुर्गति! दुर्गति तो वाकी होवे जो बोहोत सीरियस् नेचर्में कर्म करतो होय के या कर्ममें ये फल हे, वा कर्ममें वो फल हे. ये बराबर भयो और ये बराबर नहीं भयो. अब ये बराबर कर्म नहीं भयो तो याके कारण मेरी दुर्गति हो गई. अब वाके रोना रोओ और फिर डिप्रेशन्, फिर वाको रिपर्कशन्, फिर वाके सेडेटिव् ड्रग्स्. फिर पड़े भये हें के बोहोत कर्म खराब कर दिये. ऐसो हो गयो, वैसो हो गयो. फिर वाकी ऑटोबायोग्राफी लिखो के हमारे जीवनके

वा चॅप्टर्में वा तरहसु गल्ती हो गई. सो तुम दु:खी और आवेवाली प्रजाकु और दु:खी कर जाओ.

फिर तो दुर्गतिकी परम्परा चले हे. खुदकी तो दुर्गति भई पर ऑटोबायोग्राफी लिखके दूसरेकी भी दुर्गति कर दें. पर यहां **दुर्गति सकल निवारी**. सारी दुर्गति दूर कर दी. क्यों? क्योंके जो कछु काम कियो हे, **''एष उ एव एनं साधु कर्म कारयति तं यम् एभ्यो लोकेभ्य: ऊर्ध्वम् उन्निनीषते, एष उ एव एनम् असाधु कर्म कारयति तं यम् अधो निनीषते''** (कौषि.उप.३।८) वो भी कछु विलास कर रह्यो हे. अपन् भी कछु विलास कर रहे हैं. बॉल्कु स्मेश् कियो तो भी खेल हे और स्मेश् नहीं कर पाये, ड्रॉप् हो गयो तो कोई बात नहीं. ये सब तो खेलको हिस्सा हे.

यदि बॉल तुम्हारे हाथसु ड्रॉप् हो गई तो क्या ये खेलको हिस्सा नहीं हे! तुमने पाछो रिटर्न स्मेश् कर दियो तो वो भी पाछो गेम्को हिस्सा ही हे. रिटर्न नहीं हो पायो, नेट्में फंस गयो, ड्रॉप् हो गयो, वो सब भी पार्ट ऑफ् गेम् हे. एक बखत जब विलासके मूडमें तुम आ रहे हो, तब तुम स्मेश् कर पा रहे हो के नहीं कर पा रहे हो, तब भी वो विलास ही प्रकट हो रह्यो हे. ये एक सिस्टम् समझा रहे हें.

(परार्थ अनुमानकी पद्धतिसु श्रीगुसांईजीकी विलास कारिताकी संगति)

यामें सबसु पहली जो कड़ी हे **श्रीविट्ठल सुखकारी, नामे निष्पाप थाय नरनारी. दुर्गति सकल निवारी, प्रकट्या श्रीव्रजपति**

रासविहारी. ये प्रतिज्ञा करी हे. जैसे आर्ग्युमेन्ट्में अपन् कोई प्रपोज़ीशन् देवें, फिर वाके जस्टिफिकेशन् देवें. ऐसे ये प्रतिज्ञा करी हे के ये विट्ठल उल्लासकारी हे. सुखकारीके बजाय वा शब्दकु रिप्लेस् करो **श्रीविट्ठल उल्लासकारी नामे निष्पाप थाये नरनारी.** क्योंके उल्लासकारी हे तो पापको प्रश्न नहीं हे. जब पाप ही नहीं हे तो दुर्गतिको कोई प्रश्न ही नहीं हे. दुर्गति भी नहीं हे, पाप भी नहीं हे, तो उनकु लग्यो के कोई रासविहारी हे. सारे रस यहां प्रकट हो रहे हें जिनमें विहार हो रह्यो हे.

(परार्थ अनुमानके पांच अवयव [१]प्रतिज्ञा [२]हेतु [३]उदाहरण [४]उपनय [५]निगमन)

प्रकट्या श्रीव्रजपति रासविहारी. ये प्रतिज्ञा हे, प्रपोज़ीशन् हे. जैसे [१]''पहाड़पे आग हे''. ये प्रतिज्ञा हे. वाकु अपन् जस्टिफाई कैसे करें? [२]''क्योंके धुंआ दीख रह्यो है.'' वो वाको हेतु हे जस्टिफाई करवेकु. अपन्कु आग तो नहीं दीख रही हे, दीख रह्यो हे धुंआ. पर वा धुंआसु अपन् जस्टिफाई करें अपनी प्रपोज़ीशन्कु, माने अपनी अन्डरस्टॅन्डिंग्सु के यहांसु धुंआ निकल रह्यो हे तो यहां आग भी होनी चहिये. अपनी अन्डरस्टॅन्डिंग्के जस्टिफिकेशन्में फिर सारी बातें आवें. जैसे [३]''जहां धुंआ होवे हे वहां आग होवे हे ये हमने और भी कई ठिकाने देख्यो हे.'' ये वाको जस्टिफिकेशन् हे. माने तुम फॅक्ट्कु टॅली कर रहे हो. फॅक्ट्कु टॅली करनो भी जस्टिफिकेशन् हे और कन्क्ल्युड् करनो भी जस्टिफिकेशन् हे. [५]''यासु पहाड़पे आग होनी चहिये'' [४]''क्योंके यहां(पहाड़पे) धुंआ हे.'' ये प्रपोज़ीशन्के ट्रिपल् जस्टिफिकेशन् हे. पहलो प्रपोज़ीशन् क्या? क्योंके यहां धुंआ दीख रह्यो हे. दूसरो जस्टिफिकेशन् क्या? क्योंके हमने देख्यो हे के

जहां-जहां धुंआ होवे हे वहां-वहां आग होवे हे. तीसरो कन्क्ल्युजन् क्या? क्योंके यहां धुंआ दीख रही हे यासु यहां आग होनी चहिये. ये जस्टिफाई कर दियो.

(विलासकारिताकी सिद्धि)

अपनी अन्डरस्टेन्डिंग्में ट्रिपल् जस्टिफिकेशन्की जो प्रोसेस् हे, वामें पहली प्रपोज़ीशन्कु प्रतिज्ञा कह्यो जाय. वाके बाद हेतु आ रहे हें. ये या तरीकेको **विट्ठल सुखकारी** 'सुखकारी' माने विलासकारी क्यों हे? अब प्रतिज्ञामें तो ये बात केह रहे हें के [१]**''श्रीविट्ठलसुखकारी नामे निष्पाप थाये नरनारी. दुर्गति सकल निवारी. प्रकट्या व्रजपति रासविहारी.''** वाकी विलासकारिताकु जस्टिफाई कर रहे हें. [२]**''मायिकमत जेणे खण्ड्यो''**(असद्वासनाकी निवृत्तिको हेतु) **"प्रपंचो मिथ्या (मायिक) इति उक्त्वा शुद्धं भजनं वारयन्ति."** (त.दी.नि.प्र.१।२३) महाप्रभुजी पहलेसु ही केह रहे हें के भजन करेंगे कैसे यदि जगत् मिथ्या होय तो और मिथ्या जगत्में अपन्ने भजन कियो भी तो भजन भी मिथ्या हो जायगो! और जाकु भज रहे हें वो भी मिथ्या हो जायगो. तुम भी मिथ्या, वो भी मिथ्या और भजन भी मिथ्या. वा तरहके मिथ्या भजनकी जस्टिफिकेशन् क्या? भजन करनो क्यों, यदि सब मिथ्या ही हे तो? जब तुम कन्विन्स्ड् हो के जाकु भज रहे हो वो भी मिथ्या हे, जब तुम कन्विन्स्ड् हो के तुम भी मिथ्या हो या नहीं हो, सम्भावना तो दो ही हें और जो तुम भजन कर रहे हो वो मिथ्या हे, तो व्यर्थमें समय क्यों खराब करनो? पहलो जस्टिफिकेशन् दुर्गतिको वारण कैसे कियो? **मायिक मत जेणे खण्ड्यो– "प्रपंचो मिथ्या मायिक इति**

उक्त्वा शुद्धं भजनं वारयन्ति.” याकु गोपालदासजी क्या कह रहे हें? [२]**‘‘भक्तिमारग जेणे बहु पेरे मण्ड्यो.’’** (सद्वासनाकी अभिवृद्धिको दूसरो हेतु. पुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीड़ामें प्रभुने सबकी दुर्गति निवारी ये [३]उदाहरण) एक तरहसु नहीं. मल्टी डायमेन्शन्में भक्तिमारगकु उनने शृंगारित कियो हे. वो तो अपन् पद देखें तो पता चले. शृंगार सामग्री वस्त्र मनोरथें तो गुसांईजीके, सेवाकी जो भी कछु अपने यहां खूबसूरती हे; आज जबरदस्ती कराई जा रही हे करके वो विलास प्रकट नहीं हो रह्यो हे, लेकिन यदि हमारे हृदयमें वैसो भक्तिभाव होय तो इतनी रिच् वॅरायटी हे. अभी यहां सुखधाममें देखो एक माला महाप्रभुजीने धरी हे, मोकु बताओ मर्यादामार्गमें कोई बनावे ऐसी माला? ये पुष्टिमार्गकी वॅरायटी हे. तुम मालाकु देखके पहचान सको के ये पुष्टिमार्गकी माला हे. मयार्दामार्गकी मालाकु देखके पहचान जाओगे के ये मर्यादामार्गकी माला हे. पुष्टिमार्गके वस्त्रकु देखके पहचान सको के ये पुष्टिमार्गके ठाकुरके वस्त्र हें. पुष्टिमार्गके ठाकुरजीके शृंगार देखके तुम पहचान सको के ये पुष्टिमार्गीय शृंगार हें. पुष्टिमार्गके ठाकुरजीके बिराजवेकी छटाकु देखके ही तुम पहचान सको हो के हां! ये पुष्टिमार्गीय स्टाईल्में बिराज्यो भयो ठाकुर हे. मर्यादामार्गीय एक अलग स्टाईल् हे. हरेक चीजमें श्रीगुसांईजीने **बहुपेरे मण्ड्यो**. एक तरहसु नहीं. इतनी तरहसु वाकु मण्डित कियो हे.

अपने यहांकी कीर्तनकी जो स्टाईल् हे वो एक युनीक् स्टाईल हे. दुनियांमें सब लोग भजन गा रहे हें, भजनकी पांच छः वॅरायटी हें. तुमकु शायद ख्याल नहीं होयगो. भजनकी एक रेडियो वॅरायटी

हे, एक फिल्मी स्टाईल् हे भजन गावेकी, एक कव्वालीन्की कॉपी करके भजन करवेकी वॅरायटी हे, जो अपने यहां रीसेन्टली शुरु भई हे. ''म्हारा घरमां बिराजतां श्रीनाथजी'', वो कव्वाली स्टाईल्को भजन हे. ऐसे कई तरहके भजनकी वॅरायटी हें. एक भागवतकथामें चालू खाताके आज-कल भजन शुरु भये हें. पर अपने यहांकी कीर्तनकी भजनकी जो पारम्परिक वॅरायटी हे वाकी रिचनेस् कितनी हे वाके लिये एक उदाहरण दऊं तो तुमारे दिमागमें बिल्कुल साफ हो जायगो. पंडित जसराजजीकु पंडित रविशंकरजीने अमरीकामें टोन्टिंग् करी ''अरे जसराज आज-कल तुम क्या भजन-वजन गाने लग गये क्लासिकल् गानेवाले होके?'' पंडितजीकु भी थोड़ी बुरी लगी. वो बिचारे अपने यहांके पद गावें. उनने कही के दादा ''आप जो बजा रहे हो और हम जो गा रहे हें वो दो खूंटीको गाना हे और ये भजन हें वो चार खूंटीको गाना हे. इतनो आप समझ लो.'' रविशंकरजी चुप हो गये. फेस्पे जसराजजीने ये बात रविशंकरजीकु कही. रविशंकरजी फिर एक बात भी नहीं बोले. बातकु समझो के कछु तो गाम्भीर्य हे यामें.

अपन् उनकी कॉपी कर रहे हें पर दुनिया उनके भजनकी कॉपी करनो चाह रही हे. वो वॅरायटी अपने पोषकने प्रोवाईड् करी हे. या बातकु प्रोमोट् कियो हे. इतनी वॅरायटी हें. अब ऐतिहासिक फॅक्ट् हे या नहीं या बारेमें तो मैं बोहोत ऑथोरिटीके साथ नहीं कह सकूं. वो पुरुषोत्तम हते, प्रभुके अवतार हें. वो आस्पॅक्ट् जावे दो. ऐसो मैं नहीं कह रह्यो हूं. मैं सिर्फ इतिहासके दृष्टिकोणसु बात केह रह्यो हूं. महाप्रभुजी संगीतके अच्छे जानकार हते के नहीं

वाकी जानकारी कमसुकम मोकु अच्छी नहीं हे पर गुसांईजी गीतसंगीतसागर हें. या बातकी अच्छी जानकारी हे. क्योंके महाप्रभुजीने खुद गुसांईजीकु टोक्यो हतो के वीणा बजा-बजाके तुम्हारी अंगुलियें कठोर हो जायें तो ठाकुरजीकु परिश्रम होयगो. तो वीणा मत बजाओ. उनने वीणा बजानी छोड़ दी. वीणा बजानी छोड़ी पर वीणा बजवानी नहीं छोड़ी. कौनसे एन्गल् तक के तानसेनकु अफीम खाये बिना कीर्तन नहीं आतो हतो तो गुसांईजीने कही "अफीम खाके अच्छे कीर्तन होते होंय तो अफीम खाके कीर्तन करो. तुमसु अच्छे कीर्तन नहीं हो रहे हें अफीम खाये बिना तो कोई चिन्ताकी बात नहीं हे. थोड़ी अफीम खा लो."

नशाकु प्रमोट् करनो अच्छी बात नहीं हे. नशा करनो बुरी बात हे के अच्छी बात हे, वामें भगवान्के साथ जब अपन्कु विलास करनो हे तो प्राईम् इश्यु ये हे के अच्छो गानो कैसो? जो आदमी जैसे अच्छो गा सके हे वैसे ही तो गायगो. वो बात गुसांईजीने हर जगह मेन्टेन् करी हे. जब श्रीनाथजीकी पाग रंगवेकु भेजी और रंगारी मुंहसु कुल्ला कर रह्यो हतो तो वो लौटके आ गयो के "अरे रे रे सब अनाचार हो गयो, अपरस छू गई, ये हो गयो, वो हो गयो." तब आपने कही के "मैंने तोकु पाग रंगवावे भेज्यो हतो के वो पाग रंगे कैसे हे वो देखवे भेज्यो हतो? वो जैसे भी रंगतो होय वैसे तू पाग रंगवाके ला, श्रीनाथजीकु धरानी हे." ये विलासको मूड् हे.

वो कैसे ढंगसु स्थापना कर रहे हें, कौन तरहसु वो

पुष्टिमार्गको विलास प्रकट कर रहे हें. ये सारे गुसांईजीके विलासके मूड हें. "झारी छू जायगी तो नई आयेगी पर कुंजरीके प्राण गये तो कहां ते आयेंगे? पिला दो झारीसु जल." उनके आचारके हिसाबसु सोनाकी झारी निश्चित ही छु गई होयगी. नई आई भी होयगी. वो विलासको मूड हे. पलना नहीं मिल्यो तो खुदके उपरनामें नवनीतप्रियाजीकु झुला दियो. ये खेलको मूड कितनो स्ट्रोंग होयगो! अन्यथा माथा पकड़के बैठते के आज कोई मनोरथी ही नहीं आयो जो पलनाको ही मनोरथ कर देतो. आज पलना सिद्ध नहीं भयो हे तो ठाकुरजीकु पलना झुलायें तो झुलायें कैसे? और हमारे पुष्टिप्रभु तो बोहोत ही कोमल स्वभावके हें. हीरे पन्ने मोती वगैरहके झूला पलनाके बगैर झूलें तो झूलें कैसे? अरे भई! शरम नहीं आवे ऐसी बात करते? विलासको मूड हे के नहीं? विलासको मूड हे के विनाशको मूड हे तुम्हारो?

गुसांईजीको विलासको मूड हतो यासु कही के चलो खेल शुरु करो. खेलनो ही तो हे. पलना नहीं हे तो उपरना ही सही. कैसे खेलनो वो बच्चान्कु तुरत समझमें आ जाय. बड़ेन्कु समझमें नहीं आवे. बड़ेन्को माईन्ड् थोड़ो ठस्स हो जातो होवे हे, विलास खो जावेके कारण. क्योंके उनने जो नियम रट लिये होवें, उन नियमन्में उनकु जो दो चार बार लप्पड़ें पड़ीं होवें, वाके कारण उनकु इतनी घबराहट हो जाय के नहीं यहां तो बस ऐसे ही होयगो. विलासको मूड नहीं रहे. बच्चान्में विलासको मूड होवे विलासको मूड् मेन्टेनन्स्को सबसु खूबसूरतमें खूबसूरत पहलु हे. और कैसे निरन्तर गुसांईजी वाकु या तरहसु मॅनेज् करते रहें हें. सिर्फ एक दिन भूल

जाओ और सारी बातें. सिर्फ या दृष्टिकोणसु वार्ता पढ़ो के गुसांईजीके इन्स्ट्रक्शन्स्में उनने कैसे कैसे विलास करवायो हे अपने भक्तन्कु ठाकुरजीके साथ. कौन कौनसे उनने विलासके इन्स्ट्रक्शन्स् दिये, थोड़ोसो सॉर्ट-आउट् करो वार्तान्कु. फॅब्युलस् रेन्ज् मिलेगी. ये देखो यहां ऐसे विलास करवा दियो, वो देखो वहां वैसे विलास करवा दियो. वा वेश्याकु ठाकुरजीके साथ विलास करती कर दी. अपनी अपनी रेन्ज्में जैसे भी ठाकुरजीके साथ विलास कर सकते हो तो करो. जो खेल सकते होओ वो खेल खेलो. मेन्टेनन्स्में ये विलासको तरीका हे. ये वो तरीका नहीं हे जामें आदमी कम्पल्शन्के कारण दम तोड़ दे. या लिये वो केह रहे हें के **मायिक मत जेणे खण्ड्यो. पुष्टिमारग जेणे बहुपेरे मण्ड्यो.** माने चारके आठ शृंगार कर दिये. मैं तो अक्सर एक बात कहूं जो मोकु सबसु ज्यादा खूबसूरत लगे. अपने यहांके वस्त्रके जो साइकल् हें, उन सायकलन्कु सीजन्के साथ; अब तो खैर क्लाईमेट् बदल रही हे तो लफड़ा खड़ो हो रह्यो हे, उन वस्त्रन्कु धरावेकी साइकल्कु ऑब्सर्व करो तो कितनो अपार विलास प्रकट हो रह्यो हे! इतनो विलास कहां प्रकट हो सके? कोईकु पता ही नहीं हे. सात दिन सात रंग सात वस्त्र ऐसे शृंगार करे भये ठाकुरजीके दर्शन बोहोत जगह करवेकु अपनकु मिलेंगे. गुसांईजीने हर चीजकु ऋतुके साथ, उत्सवके साथ, कैसे ढंगसु जोड़ी हे, कैसो विलास प्रकट कियो हे सेवामें. यदि सेवामें कोई जबरदस्ती करोगे तो वो त्रास हो जायगो. पर जबरदस्ती नहीं करके वाके भीतर रह्यो भयो जो गुसांईजीको धड़कतो दिल सुनोगे के उनको दिल कैसे धड़क रह्यो हे ठाकुरजीके लिये, तब तुमकु विलास प्रकट होयगो. जबरदस्तीके तहत लोगे तो त्रास उत्पन्न

होयगो. ठाकुरजीकी सेवाके लिये जो गुसांईजीको दिल धड़क रह्यो हे वो तुम देखोगे तो कितनो विलास प्रकट होवे!

खूबसूरतीकी बात देखो के गुसांईजीके अन्य घरन्में हे के नहीं मोकु अच्छी तरहसु पता नहीं हे, पर हमारे यहां ऐसो हे के गुसांईजीके उत्सवके दिन न तो किनखाब आवे, न तो जरीको आवे, रेशमकी सलवट करके आवे, जाकु चुन्नट कहें. रेशममें चुन्नट करके वामें एक डिज़ाइन् दीखे. आपकी फॅन्टास्टिक् चॉइस् हे. गुसांईजीके उत्सवके दिन चुन्नटवालो केशरी रेशम देखें तो अपन्कु लगे के कितनी आर्टिस्टिक् निगाह हती गुसांईजीकी.

एक साधारण बात देखो आपकु समझाऊं. आज-कल खाता बदल रह्यो हे, अपन्कु ख्याल नहीं आ रह्यो हे के कैसे धीरे-धीरे पॅटर्न रहते भये सब्स्टॅन्स् सरक जातो होवे हे. जो अपनी हवेलीन्में भयो और सब जगह हो रह्यो हे. पॅटर्न मेन्टेन् कर रहे हें और सब्स्टॅन्स् सरक जा रह्यो हे. पर अपनी पुरानी, जाकु अपन् पुष्टिमार्गीय स्कूल कह सकें, वामें हमेशा जब भी बॅक्ग्राउन्ड् बनाई जाय, तो पीले और नीले रंगकु मिलाके हरे रंगकी बनाई जाय. वाको गुसांईजीने जस्टिफिकेशन् दियो हे के स्वामिनीजी और ठाकुरजी साथ बिराजें, तो उनकी जो शेड् हे, वो एक ग्रीनिश् रंग पैदा करे और वो हमेशा अपने बॅक्ग्राउन्ड् तरीके काम करे, चाहे जो भी चित्र बनाओ. ब्लु और येल्लो के मिक्स्चर्सु जो ग्रीन् पैदा होवे वो अपने यहां पुष्टिमार्गीय पेन्टिंग्के बॅक्ग्राउन्ड्की ग्रामर् हती. बॅकग्राउन्ड्में श्रीकृष्ण होनो चहिये ग्रीनिश्. ब्लु यलो नहीं होनो

चहिये. ''जा तनकी झांई परे श्याम हरित दुति होय.'' वो अपनी ग्रामर् हती पेन्टिंगकी. अपनी कोई भी पुरानी पेन्टिंग देखो, सबमें इनवेरियेबली ये ही रहस्य मिलेगो.

अपन् समझें के वो मोनोटोनी हो गई. अरे मोनोटोनी काहेकी भई? अपने कृष्णकी और राधाकी टिन्टको कॉम्बिनेशन् हे वामें मोनोटोनीको सवाल कहां आ रह्यो हे! जाकु मोनोटोनी लगती होय वो ना देखे. अपनी तो बॅक्ग्राउन्ड् ये ही हे. हर छोटी-छोटी बात जो अपने यहां पैदा भई हें, वामें कितनी डेप्थ् हे. **बहु पेरे भक्तिमारग जेणे मण्ड्यो**. तुम खाली पेन्टिंग् देखो तो तुम्हारो भक्तिमार्ग मण्डित हो रह्यो हे. और ब्युटी ये हे के ये ग्रीन् मौहमेडनवालो ग्रीन् नहीं है. मौहमेडनको ग्रीन् वाही पीरियड्में इन्डियामें आयो हे जा पीरियड्में गुसांईजीने या ग्रीन्को इन्स्पिरेशन् दियो हे. वो ग्रीन् दूसरो हे. कभी पाकिस्तानी झण्डा उठाके देख लो. वो दूसरो ग्रीन् हे. ये ग्रीन् नहीं हे. ये ग्रीन् अपनो पुष्टिमार्गीय ग्रीन् हे. अपने ग्रीन्की ब्युटी हे. क्योंके ब्लु और येलो के बराबर प्रपोर्शन्में पैदा हो रह्यो हे. निरन्तर या लिये श्रीगुसांईजी केह रहे हें श्री और कृष्ण को संयोगानुभव. **''एतासांतु अधुनैव बहिः संगमो अभिलषितः''** (सुबो.टिप्प.१०।४४।२९) **''बहिः प्राकट्यमेव भगवतो अभीष्टं तदैव ईश्वरवादः अन्यदा तु शून्यवादः.''** (सुबो.टिप्प. १०।२६।० उप.७) श्री और कृष्ण के संयोगको जो कलर् हे वो कलर् निरन्तर अपनी आंख देखनो चाहे हे और वो पेन्टिंग् देखें तो अपन्कु मॅसेज् कन्वे होवे. ये सब इन्स्पीरेशन् कौनके हें? **भक्तिमारग जेणे बहु पेरे मण्ड्यो.**

(उत्पथजनको दंड श्रीगुसांईजीके द्वारा)

उत्पथजन सर्वे दण्ड्यो. माने जो मार्गपे चल नहीं रहे हते, उनकी खूब भर्तस्ना (निंदा) करी. यद्यपि हमारे दादाजी यहां कछु और अर्थ लेवें हें. दादाजीकी टीका यहां हे. आगे भी हे षष्टाख्यानपे. दादाजीकी अपनी एक अलग मस्ती हती. हमारे दादाजी भी एक महाविभूति हते. वा मस्तीकी मैं चर्चा नहीं कर रह्यो हूं. पर देखो श्रीगुसांईजीकी इतनी हिम्मत हे पुष्टिमार्गपे चलवेवालेकु कहवेकी के "**गजराजस्थितो नहि रासभमपि उररी कुरुते**" वार्तामें आवे के हाथीकी सवारी करके गधाकी सवारी करवेको मन करे? अरे शरम आ रही हे के नहीं तुमकु? उत्पथजन मार्ग छोड़के जरा आड़ो–टेड़ो जातो तो वाकु गुसांईजी कैसी डपट लगाते होंयगे, वो ब्रजके ठाठ हें, वो अपन्कु दिखाई दे हें. जो उत्पथजन हो रहे हें तो उनकु टोकवेकी फ्रेन्कनॅस् कहो चाहे ब्लन्टनॅस् कहो, चाहे ब्रजको ठाठ कहो, जो भी कहो वो गुसांईजीमें परिपूर्ण हे. कोई लाग लपेट नहीं. कोईकु छोड़्यो नहीं है. यदुनाथजीकु स्पष्ट कह दियो के "तुम बड़े महाराज हो!! तुम ठाकुरजीमें भेद कर रहे हो." उत्पथ जहां जावे हे वहां वाकु टोकवेकी एक ट्रेमेन्डस् पॉवर हे गुसांईजीकी. काहेके लिये? विलासके कारण तुम धर्म अपनो भूल नहीं जाओ. वो स्थितिकी जो मर्यादा हे, वाके लिये वो हमेशा तैयार हें के जरा भी डायग्रेशन् भयो तो वाकु टोक दे हें. मार्ग छोड़के डायवर्जन्में जानो! **उत्पथजन सर्वे दण्ड्यो.** गुसांईजीके चरित्रकी छोटी–छोटी बात बता रह्यो हूं. गुसांईजी अपने ससुरालमें जमाईकी तरह पधारते. विष्णुदासजी उनके साथ गये. विष्णुदासजी कोई मूरख नहीं हते. भयंकर पंडित हते. जिनके लिये सेवाफल लिख्यो. उनने कही के

गुसांईजी प्रसाद ले रहे हें तो हम भी प्रसाद लेंगे. गुसांईजीने उनकु टोक दियो के "भई ! मैं तो जमाई होवेकी कॅपेसिटीमें ले रह्यो हूं. तुम प्रसाद लेवे यहां क्यों आ गये?" उनने कही के "आप आरोगो तो हम भी आ गये." ये महाप्रभुजीके सेवक हें, ना पाड़ दी.

खोटो अर्थ पुष्टिमार्गमें लोगन्ने समझ लियो. उनने कहवे लगे कि "ये तो हमारे विवाहसम्बन्धी हें. हमारे इनके बीचमें रुपयाको आदान-प्रदान चल सके हे. तुम हमारो रुपया खावे आये?" तो क्या विष्णुदासजी गुसांईजीके यहां प्रसाद नहीं लेते हते? लेते हते तो गुरुद्रव्य भयो के नहीं? अपन्ने ऐसो खोटो अर्थ ले लियो के लालाजी सब भ्रष्ट हें, उनको खानो नहीं. अरे भई वहां ये मतलब नहीं हतो. पर जहां गुसांईजी जायें वहां प्रसाद लेवे पोहोंच जानो वो एक जातकी उत्पथता हे. विष्णुदासजीकु भी कहवेकी उनमें गट्स् हे के भई मैं यहां जमाईके तरीके खावे आयो हूं. महाप्रसाद लेवे तुम क्यों आ गये? वैष्णवन्की प्रोब्लम् ये हे के हम संडासमें जायें तो वहां भी चरणस्पर्श करवे आ जायें. उनकु समझ ही नहीं पड़े, कहीं भी चरणस्पर्श कर ले. क्या लफड़ा हे ये? ये एक जातको वैष्णवन्में मॅकेनिकिल् एक्शन् पैदा हो गयो हे के महाराज दीख्यो नहीं कर चरणस्पर्श और धर भेंट. चाहे संडासमें चाहे कहीं भी जातो होय महाराज.

मेरे साथ एक ऐसो लफड़ा भयो. बोहोत बड़ी एक स्कॉलर् मेरे साथ बैठी भई हती एक मॅरेज्में. वासु बात करवेमें मोकु बोहोत अच्छी इन्फोर्मेशन् मिल रही हती. तो हम दोनों बाजुमें बैठके बात

कर रहे हते. वैष्णवन्ने देख्यो तो चरणस्पर्श करवे आ गये. मोकु भेंट वाकु भेंट वाके चरणस्पर्श मेरे चरणस्पर्श. थोड़ी देर बाद वो बोली के महाराजजी मोकु कछु ये लोग गलत समझ रहे हें. मैंने कही लगे तो मोकु भी ऐसो ही हे. कोई पूछे नहीं. बाजुमें बैठी तो वाके चरणस्पर्श, दो रुपया वाके भेंट, दो रुपया मोकु भेंट. पांच रुपया वाकु पांच रुपया मोकु. तो वो भागी वहांसु के महाराजके बाजुमें बैठवेमें खतरा हे. कोई भी कछु गलत इन्टरप्रिटेशन् कर लें. सोचो तो सही, पूछो तो सही के कौन हे? कछु भी नहीं पर बस एक मॅकेनिकल् रिफ्लेक्शन्, दीख्यो क्यों कोई महाराज के साथ बैठी दीखी क्यों कोई महाराजके बगलमें बैठी; कर चरणस्पर्श; गधेड़ी भी बैठी होय तो कर चरणस्पर्श. ये क्या लफड़ा हे, खोपड़ी काम नहीं करे. वो बेचारी इतनी नर्वस् हो गई के वाके चेहराके परेशानीके भाव; बोहोत ही बड़ी रिस्पेक्टेबल् स्कॉलर्, जासु बात करवेपे मोकु लग रह्यो हतो के मोकु इन्फॉर्मेशन् मिल रही हे पर वा बेचारीकु इतनो नर्वस् कर दियो के वो बैठ ही नहीं पाई बाजुमें. मैंने भी कही के जावे दो कौन बात करे यहां. कछु भी मिस-इन्टर्प्रिटेशन् हो जाय. बाजुमें क्यों बैठी? बाजुमें बैठी और सबन्कु लगे के **राधा-अधर-सुधा विना पियुने बीजुं ते कांई नव भावेजी**. एक ही धन्धा. कोई दूसरो धन्धा ही नहीं. धर भेंट.

कहां भेंट धरनी, कहां नहीं धरनी, कहां चरणस्पर्श करवे, कहां नहीं करने. युनीवर्सिटीमें मोकु कही के "आपकु पवित्रा धरा दें?" मैंने कही के "अरे भई! युनीवर्सिटीमें मैं लॅक्चर् देवेके लिये आयो हूं के पवित्रा धरावे आयो हूं?" वो बोले के "हमकु ऐसो

लाभ कहां मिलेगो पवित्राबारसमें पवित्रा धरावेको!'' अब फिर यहां भेंट धरो, फिर मिश्री खाओ. अरे भई ''जो बेचते थे दवाये दिल वो दुकान उठाके चले गये.'' ऐसे पांच-दस पुष्टिमार्गीय महाराज युनिवर्सिटीमें पोहोंच जायें तो युनिवर्सिटी बन्द!! क्योंके फिर तो लाईन् लग जायगी दर्शनार्थीन्की. आज महाराजश्री पवित्राबारसकी भेंट-मिश्री युनिवर्सिटीमें आरोगेंगे. ये कोई विलास हे, ये तो कोई त्रास हे, कछु समझ ही नहीं पड़े अपन्कु. अजब गजब पॅटर्नपे अपनो पुष्टिमार्ग चले हे. अपन्कु खबर ही नहीं पड़े के कहां जा रह्यो हे ये? ''बहती हवा सा था वो कहांसे आया था वो कहां गया, उसे ढूंढो.'' वा गानाके जैसी स्थिति हे ये. **मायिक-मत जेणे खण्ड्यो. भक्तिमारग जेणे बहुपेरे मण्ड्यो. उत्पथजन सर्वे दण्ड्यो. मूरख हेतु कुशब्द वितण्ड्यो.**

हमारे दादाजीकु या वितण्ड्योमेंसु मूड आ गयो. **'वितण्ड्यो'** पे दादाजीने पूरी कॉमेन्ट्री लिखी हे. मजेदार कॉमेन्ट्री हे.

(अभक्ति कर्मयोग ज्ञानयोग की असद्वासनाको विस्थापन और भक्तिकी सद्वासनाको स्थापन)

यामें गोपालदासजीकी जो ऊति हे वामें असद्वासनाको वारण कैसे करें हें, ये समझानो चाह रहे हें. क्योंके ऊतिमें असद्वासनाको वारण, सद्वासनाको वर्धापन. माने असद्वासनाकु घटानो और सद्वासनाकु बढ़ानो. ये प्रोग्राम् हे तो यामें ऊतिके तहत दूसरी जो कड़ी हे **मायिक-मत जेणे खण्ड्यो. भक्तिमारग जेणे बहुपेरे मण्ड्यो.** भक्तिमार्गपेसु जो उत्पथ हो रहे हें, उनकु **सर्वे दण्ड्यो. मूरख हेतु**

कुशब्द वितण्ड्यो. वाके बाद सद्वासना कैसे पैदा कर रहे हें? **वदन–सुधाकर–जोते वचन–सरस रसरास उद्योते, नव–जलघन–वपु पोते भक्ति सरस कीधां प्रभु होते.** सबको माईन्ड ऐसो भक्तिमय कर दियो, ये सद्वासना स्थापित करी. **भक्तिपक्ष दृढ कीधो वचन सुधारस जन श्रुति पीधो, अर्थ सकल जेनो सीधो ते लीला माहें ताणीने लीधो.** यामें टीकाकारन्ने बोहोत अलग अलग अर्थ किये हें.

(''भक्तिपक्ष...जेनो सीधो''को श्रीव्रजरायजीके द्वारा कियो गयो अर्थ)

जैसे व्रजरायजी क्या केह रहे हें? **"वचनमेव सुधा तस्य यः पानं कृतवान."** (वल्लभा.भावदी.५।४) गुसांईजीके जो वचन हें वो ही अमृतके जैसे हें. जिनने उनको पान कियो, उनमें **"तस्मिन् महन्मुखरिता मधुभिच्चरित्र–पीयूष–शेष–सरितः परितः स्रवन्ति."** (भाग.पुरा.४।२९।४०) या महापुरुषकी वाणीसु मुखरित जो भगवान्के गुण हें, वो जिनने एक बखत सुन लिये वो खुद भी वा तरहसु गावे लग गये. श्रवणको जो परिणाम हे वो आनो तो चहिये के नहीं? श्रवणको परिणाम क्या हे? जैसे कोई फिल्मी गाना तुमकु अच्छो लगे, वाकु तुम गुनगुनावे लगो हो के नहीं? गुसांईजीकी वाणी तुमकु अच्छी लगी तो तुम्हारे भीतर वाकी गुनगुनाहट पैदा होनी चहिये. वो बोलवेमें मजा आनी चहिये अपन्कु. नहीं तो जब अपन् वा वाणीकु गुनगुना नहीं रहे हें मतलब तब तुम ऊपरी मनसु कबूल कर रहे हो के अच्छी लगी पर सचमुचमें अच्छी नहीं लगी.

मतलब पोषण भयो हे तुम्हारो वा वाणीसु पर विलास तुम्हारे भीतर प्रकट नहीं भयो. वा वाणीमें तुम्हारी तन्मयता ऐसी हो जाय के तुमकु दूसरी वाणीकी भूख नहीं रह जाय, दूसरी वाणीकी प्यास

नहीं रह जाय, दूसरी कोई वाणीको शोक नहीं रह जाय, दूसरी कोई वाणीको मोह नहीं रह जाय, दूसरी कोई बात सुनवेकी इच्छा ही नहीं रह जाय. ये **अर्थ सकल तेनो सीधो – "तस्य सकलो अर्थः सिद्धो अभूद् यस्य लीलायाम् अंगीकारः"** (वल्लभा.भावदी.५।४) या तरीकेके विलासलीलामें जाको अंगीकार कियो हे ऊतिलीलामें वो बता रहे हें.

(श्रीव्रजाभरणजीको मत ''हरेरपि हरिः यदि'': परस्परनिर्भयतापे भक्तिकी कथा)

व्रजाभरणजी क्या कह रहे हें, 'हरिको हरि भयो'. जब तुमकु ये बात पता चले **"हरेरपि हरिः यदि"** (सुबो.कारि.१०।१८। ११।२६) वाकु रिफर् कर रहे हें व्रजाभरणजी. भक्तिको सच्चो स्वरूप क्या हे? भक्तिको सच्चो स्वरूप ये हे के वो तुम्हारे लिये हरि हे और तुम वाकेलिये हरि बनो. अब देखो हरिको हरि बने, वाके कई तरहके मॉडेल् हें. एक मॉडेल् नहीं हे.

हरिको हरि बनवेको सबसु पहलो मॉडेल् ये हे; मैंने आपकु भागवत शिविरमें समझायो हतो के जामें वेदमें ऋषि अग्निकु यों कह रह्यो हे के मैं तोसु पैदा भयो हूं और मैं तोकुं पैदा कर रह्यो हूं. तू मेरो हे और मैं तेरो हूं. जैसे जब अपन् ठाकुरजीकु पुष्ट कर रहे हें तो अपन् ठाकुरजीकु पैदा कर रहे हें. अब जिनकु रोनो होय वो रोते रहें के ठाकुरजी पैदा नहीं होवें. अरे भई! वो उनके लिये नहीं पैदा होते होंयगे, या लिये वो रोते रहें, अपन् जब ठाकुरजीकु; पैदा करनो ये उर्दुको शब्द हे, अपने यहां वाके लिये बॉम्बास्टिक् शब्द

हे प्राकट्य. 'प्राकट्य'को मतलब पैदा करनो. वाके लिये अपन्ने एक बॉम्बास्टिक् शब्द गढ़्यो जासु वो डीसेन्ट् लगे, इन्डीसेन्ट् नहीं लगे, कोईकु गलत खयाल नहीं आ जाय के ये क्या कह रहें हें.

वो ही जैसे श्री१०८, श्री१००८ वगैरह कई तरहके खड़े हो जायें ना! वैसे ही अपन्ने एक बॉम्बास्टिक् शब्द खड़ो कर दियो के प्राक्ट्योत्सव हे हमारे यहां. 'प्राक्ट्योत्सव'को मतलब अपन् वाकु पैदा कर रहे हें. वाने अपन्कु पैदा कियो. अपन् वाकु पैदा कर रहे हें. वो अपनो पालक हे और अपन् वाके पालक हें. वो अपनेमें निरुद्ध हे और अपन् वामें निरुद्ध हें. भागवतकी निरोधलीलाको जो कॅरेक्टर हे वो या ढंगको कॅरेक्टर् हे के भगवान् पहले कृपाके मोड्में तुम्हारेमें निरुद्ध भयो हे, वाकेलिये तुम भगवान्में निरुद्ध हो जाओ. वा लीलाके मूडमें वाकी पॅराफ्रेज़िंग् प्रमाणपंथा महाप्रभुजीने कैसे करी? जा बखत तुम ठाकुरजीकु अपने घरमें पधरा रहे हो, वा बखत ऐसे मत सोचो के ठाकुरजीकी सेवा करवेके लिये तुम उनकु पधरा रहे हो, या सेवाके कर्ता तुम हो. तुम ऐसे सोचो के ठाकुरजी तुम्हारी सेवा लेवेके लिये तुम्हारे घरमें पधार्‌यो हे. खुद निरुद्ध होवेके लिये पधार्‌यो हे. जो खुद निरुद्ध होवेके लिये पधार्‌यो हे वामें अब तुम कैसे निरुद्ध होओगे?

तो तुम्हारी अहंतासु जितनी भी जुड़ी भई वस्तु हें वाकु तुम वामें लगाओगे तो वा प्रक्रियासु तुम निरुद्ध होओगे. वो एक प्रक्रिया प्रमाणपंथाने बताई. लीलामें ऐसो हतो के वो पैदा हो गयो, वाके जा तरहके मूड् हते, इर्‌रिस्पॅक्टिव् ऑफ् मूड् वा तरीकेके मूड कॅप्चर्

करके अपनेमें निरुद्ध कर लियो. माने कोईकु काम चहिये हतो तो कान्त बन गयो, कोईकु वात्सल्य चहिये हतो तो वत्सल बन गयो, कोईकु सखा चहिये हतो तो सखा बन गयो; कोईकु गुरु चहिये हतो तो गुरु बन गयो, वाकु शिष्य बना लियो. कोईकु शिष्य चहिये हतो तो शिष्य बन गयो. छट्ठे स्कन्धमें वाने सारे मॅथड् एडोप्ट् कर लिये हें. यहां वो सारी मॅथड्स् ब्लन्टली एडोप्ट् करवेकी नहीं हें.

एक डीसेन्सीके साथ एडोप्ट् करनी हे जामें भक्तिकी लीला डिस्टर्ब नहीं होवे, वा तरीकेकी **प्रमाणपंथा** सब बात प्रकट करनी हे और वाके तहत वो कैसे प्रकट होयगो? तो पहले अपन् सोचें के पहले मेरे घरमें ठाकुर पधार्‌यो तो वाने साधननिरोध कियो. अब मेरे लिये या दुनियांमें या ठाकुरके अलावा कोई दूसरो साधन नहीं हे. साधन काहेको?

पेट भरवेको नहीं, खुदकी ख्याति बढ़ावेको नहीं, खुदको गुरुपन बढ़ावेको नहीं, खुदकी प.भ. भगवदीयता दिखावेको नहीं. ठाकुरमें मैं कैसे निरुद्ध होऊं वाको साधन मैं नहीं हूं, वाको साधन ठाकुर हे और वो मेरे यहां पधार्‌यो तो अब मैं कैसे निरुद्ध होऊं? जा दिन वामें मेरो निरोध हो गयो, वा दिन वामें फलनिरोध हो गयो. ठाकुरको पधारनो तो अभी साधननिरोध हे और मेरो ठाकुरमें निरुद्ध हो जानो, माने मेरो टोटली वामें एफिलियेटेड् हो जानो ये फलनिरोध हे.

ये प्रमाणपंथाके निरोधकी शेड् हे और लीलापंथाकी शेड् याके

बॅकग्राउन्ड्में काम कर रही हे. यहां फिगर् तरीके प्रमाणपंथाकी शेड ये हे के तुम अपने घरमें ''नंदनंदन कर घरको ठाकुर आपुन होय रहो चेरो'' वो एक भक्तिपंथाको शेड् हे. याहीलिये एक पदमें राधाजीके लिये मैंने शब्द रखे हें के ''कर्मयोग और ज्ञानयोग की भक्तिपंथ हर लीनी बाधा. जय जय जय जय श्रीराधा.'' मैंने राधाष्टमीके दिन ये पद लिख्यो हें. कर्मयोग और ज्ञानयोग एक स्पीड् ब्रेकर् हते वाकु राधाजीने हर लियो हे. वो जब तक अपने यहां नहीं आयो तब तक अपन् सब ट्राई करेंगे. कर्मयोग भी ट्राई कर लेंगे, ज्ञानयोग भी ट्राई कर लेंगे पर जब वो खुद आ गयो, तब अपन् यों कहें के हम कर्मयोग ट्राई कर रहे हें, ज्ञानयोग ट्राई कर रहे हें. यदि मैं ठाकुरजी होऊं तो पूछुंगो के मैं क्या यहां तेरे बापको श्राद्ध करवेके लिये आयो हूं? जब मैं तेरे घरमें आयो हूं तो काहेके लिये आयो हूं? मैं तो तोसु मिलवे आयो और तू कर्मयोग ज्ञानयोगमें लग गयो!

जब वो अपने घरमें आ गयो तब कर्मयोग ज्ञानयोग सब बाधा हे. आवेके लिये बाधा नहीं हे. आवेके लिये तो वोही मार्ग हे. पर जब वो आ गयो माने एकदम शुद्ध गुजरातीमें मैं तुमकु कहूं शादी करके बहुकु घरमें लाये. घरमें बहु लावेके बाद पुस्तक पढ़नी के दाम्पत्यजीवन सुखी कैसे बनानो? पहले अध्यायमें क्या लिख्यो हे, दूसरे अध्यायमें क्या लिख्यो हे? दसवों अध्याय आवे तब तक दस दिन बीत जायें. वो पाछी पीहर भग जाय.

अरे भई! बात करे बहुसु के पुस्तक पढ़े के दाम्पत्यजीवन सुखी कैसे बनानो? वा बखत पुस्तक पढ़वेकी नहीं होवे पर वासु

बात करवेकी होवे हे. तो अपन् नववधुकु घरमें ले आये और बैठके बड़ी गम्भीरतासु चश्मा चढ़ाके टेबल्-लॅम्प्के नीचे पढ़ रहे हें दाम्पत्यजीवन कैसे सुखी होवे? अरे धूल पड़े तुमपे. ''कर्मयोग पुनि ज्ञानयोग भक्तिपंथ हर लीनी बाधा. जय जय जय जय श्रीराधा''. ये राधा जो वाकी आत्मरति अपने भीतर प्रकट होवे तब अपन्कु ये भाव स्फुरित होयगो के जब वो आ गयो तो वाके साथ आत्मरमणकी आवश्यकता हे. आत्मतया वाके साथ रमणकी आवश्यकता हे. या बखत कर्मयोग ज्ञानयोग की आवश्यकता नहीं हे. फुरसतमें अनौसरमें कौन ना पाड़े करवेकी! पर जा बखत वो सामने बैठ्यो भयो हे, वा बखत अपन् कर्मयोग ज्ञानयोग की चिंता कर रहे हें, मतलब पाछे वो पीहर जायगो !

यालिये वो केह रहे हें ''**हरेरपि हरिः यदि**'' हरिको हरि होनो वाके कई मॉडेल् हें. हरि अपनो उत्पादक हे. अपन् हरिके उत्पादक होवें. हरि अपनो पालक हे अपन् हरिके पालक होवें. हरिपे अपन् निर्भर हें हरिकु अपनेपे निर्भर करें. कौनसी हद तक? के ''गज्जनधावनकु पान लेवे क्यों भेज्यो? वो नहीं आयगो तो मैं नहीं आरोगुंगो.'' उतनो निर्भर. तो क्या महाप्रभुजीकु और महालक्ष्मीजीकु स्नेह नहीं हतो नवनीतप्रियाजीसु? पर हरि वापे निर्भर हो गयो. गज्जनधावन आवे तो मैं खाऊं, नहीं तो नहीं खाऊं. मूड् नहीं हे खावेको, मैं नहीं खाऊंगो. ये निर्भरता प्रकट होनी चहिये.

आजके पुष्टिमार्गकी सबसु बड़ी ट्रेजेडी ये हे के जो ठाकुर जा वैष्णवके घरमें बिराज रह्यो हे वा ठाकुर और वैष्णव के बीचमें

निर्भरता प्रकट करवेके लिये न तो कोई गाईड्लाईन् हे, न कोई प्रोग्राम् हे, न कोई इन्स्पिरेशन् हे. सिर्फ एक ही प्रोग्राम् अपने यहां चल रह्यो हे के आओ और हमारे ठाकुरजीपे निर्भर रहो, जासु वो तुम्हारेपे निर्भर रहे. भई! जो तुम्हारे ठाकुरजीपे हम निर्भर रहें तो हमारो ठाकुरजी क्या करेगो! ''घरनां छोकरां घंटी चाटे पाडोसीने आटो'' या तो कबूल करो के तुमने वाकु ठाकुरजी नहीं पधराये हें! यदि ठाकुरजी पधराये हें, तो वो ठाकुरजी नवनीतप्रियाजीकी तरह गज्जनधावनकी बाट देख रह्यो हे. तुम्हारे घरमें बिराजतो ठाकुरजी तुम्हारी बाट देख रह्यो हे और तुम क्या कर रहे हो? हवेलीन्में भटक रहे हो के आज तो छप्पनभोगको मनोरथ हे. आज तो हिंडोलाको मनोरथ हे. पर अपने ठाकुरजीको क्या? परस्परनिर्भरता खतम हो गई. ठाकुरजीकु भी ये मॅसेज् कब तक नहीं मिलेगो के ये मेरेपे निर्भर नहीं हे. अपनी भक्तिकी अर्जकु सॅटिस्फाई करवेके लिये कछु दूसरेपे निर्भर हे. जब तुम दूसरेपे निर्भर हो तो वाकु यदि ये मॅसेज् कन्वे हो गयो, वा दिन वो तुमपर निर्भर नहीं होयगो.

ये तो माता-पिता और बच्चान् में भी ऐसी कथा हे. बच्चाकु यदि ये कन्वे हो जाय के मेरी रिक्वायरमेंट्के लिये मोकु मातापितापे निर्भर नहीं रहनो हे, मातापिताकु ये कन्वे हो जाय के हमकु बच्चापे निर्भर नहीं रहनो हे, वाके बाद स्नेह कितने दिन चलेगो? अनिर्भर होते ही प्रेमकी कथा समाप्त हो जाय. परस्परनिर्भरतापे प्रेमकी कथा चल रही हे. या रहस्यकु मत भूलो. पति-पत्नी यदि एक दूसरेपे निर्भर नहीं हें, तो उनको दाम्पत्य खतम, खतम और खतम. जब तक एक दूसरेपे निर्भर हें तब तक

उनको दाम्पत्य हे. हर जगह वोही स्थिति हे. परस्परनिर्भरता मुख्य रहस्य हे याको और पुष्टिमार्गमें अपन्ने बड़ी क्रूरतासु खतम करी हे, जो श्रीगुसांईजीने बोहोत ही केयरफुली जमाई हती के तुम अपने घरमें ठाकुरजीके साथ विलास करो. ठाकुरजी अपने विलासके लिये तुमपे निर्भर हे. तुम अपने विलासके लिये तुम्हारे ठाकुरजीपे निर्भर रहो. तुम दोनोंन्के बीचमें जा बखत विलास चल रह्यो हे, लीलाको, सेवाको, कथाको वा बखत तक पुष्टिसम्प्रदायको पोषण हो रह्यो हे. वा बखत तुम्हारी भक्तिकी सद्वासनामें वृद्धि हो रही हे. अभक्ति और कर्मयोग ज्ञानयोग की असद्वासनायें सबसाईड् सबड्च्यु हो गई हें.

ये पुष्टिसम्प्रदायको उनको मेन्टेनेन्स्को प्रकार ये हतो. वाकु अपन्कु समझनो चहिये, यदि अपन् गोपालदासजीकु समझनो चाहें तो बोहोत जरूरी हे. वो बात उनने बताई. **"हरेरपि हरिः यदि"** यदि वो **ताणीने लीधो** हे.

(भक्तिमें असद्वासनाको उदाहरण)

ब्रजाभरणजी केह रहे हें **लीला** नित्यतामें अपने मार्गबलसु ही आकर्षण करें **'ताणीने लीधो'** माने खेंचके लीने. जबरदस्ती वाकु या बातको एहसास करवायो हे के तोकु तेरो विलास घरमें जाके मिलेगो. सत्यभामा बेटीजी याके उदाहरण हें के ''तिहारे घर और कोऊ बिराजत हे? जाओ दर्शन करो''. जब उनने अपने ठाकुरजीके दर्शन किये तो सातों निधीन्के दर्शन अपने ठाकुरजीमें भये. वहां सत्यभामा बेटीजीकु अनुभव भयो. या तरीकेके उत्सव करवेसु

भक्तिमें दिव्यताकी बजाय लौकिकता बढ़ रही हे. गुसांईजीने कही के ''मैं पहलेही कहतो हतो के देखो लौकिकता बढ़ रही हे और मेरे ही घरमें लौकिकता घुस गई के नहीं घुस गई?'' कन्फर्म् कियो पाछो गांधीजीकी तरह के बढ़ गई. ये ब्युटी हे गुसांईजीकी के ये और केह रहे हें के ''क्या करूं? भगवद्इच्छा कछु विपरीत लग रही हे. कोई दूसरेके घरमें ऐसी लीला नहीं होके मेरे ही घरमें ऐसी लीला प्रकट भई.'' पाछी गुसांईजीकी वो लीलात्मिका दृष्टि देखवे लायक हे विसा-विस् **उत्पथजन दण्ड्यो**की, उनके **सरसवचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार**की जो उनकी टेक्नीक् हे, वो भी उनने कितनी खूबसूरतीसु मेन्टेन् करी हे.

(''जे लीलामांहे...श्रीविट्ठलनाथ विचारे'': गुसांईजीके द्वारा भक्तिलीलामें अंगीकार)

तो ये **जे लीला मांहे अंगीकार करियो रे तेनो सकल ताप निस्तरियो रे, जेने श्रीविठ्ठलनाथ विचारे रे तेने प्रकट पदारथ चारे रे. उपरान्त भजनफल आपे रे, व्रजमण्डल स्थिर करि स्थापे रे, तेने देवमुनि सर्वे गाये रे ते सर्व उपरान्त सुहाये रे.** यामें कौनसी लीला? सृष्टिलीलामें गुसांईजी अंगीकार करेंगे तुम्हारो? यदि तुम वाकईमें पुष्टिलीलाके जीव हो तो सृष्टिलीलामें कौनने अंगीकार कियो हे? **श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीडा**ने तुम्हारो अंगीकार कियो हे. सृष्टिलीलामें नहीं. ये सम्प्रदायमें जो भगवान्के साथ भक्तिलीला चल रही हे, वा लीलामें गुसांईजीने जाको अंगीकार कियो, **तेनो सकल ताप निस्तरियो रे.** अपन्कु फितूर वोही सूझे. लीला माने कौनसी लीला? **राधा-अधर-सुधा बिना बीजु कांई नव भावे जी.** अरे भई वोही एक

लीला हे क्या? दूसरी दस लीला हे के नहीं? तो क्या मॅराथन् कॉम्पीटीशन् करनी है किसिंग्की? दूसरी और कोई लीलायें क्यों नहीं? हमारे दिमाग या तरहसु बन्द हो गये हें. गोपालदासजी जो लीला बतानो चाह रहे हें वो भक्तिकी लीला हे. याहीलिये मैंने पहले अपने चार्टमें बता दियो के एक सृष्टिलीला हे, एक अवतारलीला हे और एक भक्तिलीला हे. या भक्तिलीलामें जाको अंगीकार कियो, **जे लीला माहें अंगीकार करियो रे, तेनो सकल ताप निस्तरियो रे. जेने श्रीविठ्ठलनाथ विचारे** अपन् रुक्मिणीकी वार्तामें देख सकें हें के वो गंगा किनारेपे रहते भये गंगास्नान करवे नहीं गई और जब उनने कही के रुक्मिणीने गंगा पाई तो गुसांईजीने कही के **''ऐसे नहीं''. सरसवचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार. ''गंगाकु रुक्मिणी मिली हे''**. रुक्मिणी क्या गंगा पायेगी? जाने अपने घरमें अपने ठाकुरकु इतनो लाड़ लड़ायो के गंगा किनारे रहते भये भी जाकु गंगास्नान नहीं सूझ्यो वो रुक्मिणी क्या गंगा पायेगी? गंगाकु रुक्मिणी मिली हे. रुक्मिणीकु गंगा नहीं मिली हे. **सरसवचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार** तुमकु समझ आती होय तो! नहीं समझमें आती होय तो नहीं समझमें आयगी.

(भक्तिलीलाके विरोधीभाव)

फिर तुम तो वोही बात कहोगे गंगाके किनारे जितनी भी हवेली हें उनके दर्शन करके जरा गंगास्नान भी कर आवें. अन्यथा गंगास्नानको लाभ कहां मिलेगो? गंगाजीको स्नान हवेलीके दर्शन और प्रसाद को भी लाभ मिलेगो. वो बिचारे गुसांईजीके सरसवचन सब निरस हो जायें. निरसवचन उच्चार मात्रे संशयनो आविष्कार हो

जाय. क्योंके गंगाके किनारे ऐसे दर्शनको लाभ कहां मिलेगो? छ:ह छ:ह हवेली, गंगाजीको स्नान, चलो; आजनो लाभ लीजियेने काले कौने दिठी छे. ये कथा नहीं हे भई! गुसांईजी तो ये समझानो चाह रहे हें **जे लीला माहें अंगीकार करियो रे, तेनो सकल ताप निस्तरियो रे. जेने श्रीविठ्ठलनाथ विचारे रे.**

(भक्तिकी पुरुषार्थरूपता अथवा सद्वासनाकी अभिवृद्धि)

तेने प्रकट पदारथ चारे रे. अब यामें देखो **तेने प्रकट पदारथ चारे, उपरान्त भजनफल आपे रे** ये भागवतकी स्कीम् हे. चार पुरुषार्थ ये भागवतके पहलेकी व्यवस्था हती. भागवतने पहली बार ये इन्ट्रोड्युस् कियो के चार नहीं पर पांच पुरुषार्थ हें. भक्ति अपने आपमें एक स्वतन्त्र पुरुषार्थ हे और भक्तिरूपी पुरुषार्थकु यदि अर्थपुरुषार्थके अन्तर्गत करके कर्यो जाय तो वो भक्तिपुरुषार्थ नहीं होके अर्थपुरुषार्थ हे. भक्ति यदि काम पुरुषार्थके अन्तर्गत करी जाय तो वो भक्तिपुरुषार्थ नहीं होके कामपुरुषार्थ ही हे. भक्ति जो धर्मपुरुषार्थके अन्तर्गत करी जाय तो वो भक्ति नहीं होके धर्मपुरुषार्थ ही हे और भक्ति जो मोक्ष पुरुषार्थके अन्तर्गत करी जाय तो वो भक्ति नहीं होके मोक्षपुरुषार्थ ही हे पर भक्तिके अन्तर्गत यदि ये चार पुरुषार्थ किये जायें तो वो चार पुरुषार्थ नहीं होके वो चारोंके चार पुरुषार्थ भक्ति हें. माने पैसा कमानो भी भक्ति हे. ड्युटीपे जानो भी भक्ति है. जीवनमें अपने जो भी छोटेमोटे सेटिस्फॅक्शन् हें वो भी भक्ति हें और डिटेचमेन्ट् भी भक्ति हे. भक्तिके अन्तर्गत यदि कर रहे हो तो सब कछु भक्ति ही हे और भक्तिकु जाके अन्तर्गत कर रहे हो, भक्ति फिर वहां वैसी बन जाय हे.

भक्ति फिर मौहम्मद साहब और ऊंट चरावेवालेकी जैसी एडजस्टमेन्ट्की सिस्टम् हे. मौहम्मद साहबकु गांवमें जानो हतो. तो उनने ऊंट चरावेवालेकु कही के इतनी दूरी पैदल चलके कैसे काट सकें? तो मौहम्मद साहबने कही के चल अपन् नक्की कर लें. थोड़ी देर तू ऊंटपे बैठियो, मैं पैदल चलूंगो. थोड़ी देर मैं ऊंटपे बैठूंगो तू पैदल चलियो. तो कभी मौहम्मद साहब ऊंटपे बैठते हते तो कभी वो ऊंट चलावेवालो बैठतो हतो. भक्तिमें वा तरीकेकी एडजस्टमेन्ट् हे. माने पंचम पुरुषार्थ होवेकी भी एडजस्टमेन्ट् हे और चार पुरुषार्थके अन्तर्गत एडजस्ट् होवेकी भी वामें सामर्थ्य हे. वा तरीकेकी फ्लेक्सिबिलिटी भक्तिमें हे.

(भक्तिकी अपुरुषार्थता अथवा असद्वासनाकी अभिवृद्धि)

वा फ्लेक्सिबिलिटीकु भक्तिको गौरव नहीं समझके भक्तिको कोई एक्सप्लौइटेशन् करे. कृष्णमें ये फॅसिलिटी हे के पाण्डवन्के यहां आये भये अतिथिन्के पैर धोवे. वाकु कृष्णको गौरव नहीं समझके जब भी कोई गॅस्ट् आवें तो जस्ट् डायल् कृष्णनम्बर् के आज पांच मेहमान आयेंगे तो पैर धोवेके लिये आ जईयो! तो वो एक्सप्लौइटेशन् हो गयो.

वाकी लीला हे, वासु तुमने वाकु गौरवान्वित नहीं कियो, वाकु तुमने एक्सप्लौइट् करवेको एक षडयन्त्र खड़ो कर दियो. ऐसे ठाकुरजी होंय या भक्त ही होंय, उनकु गौरवान्वित करनो या एडजस्ट्मेन्ट्की पोटेन्शियालिटीके कारण अथवा उनको एक्सप्लौइटेशन् करनो? जलमें ये खूबसूरत पोटेन्शियालिटी हे के वो खुद अपने

आपमें भी बह सके हे और हवामें भी फैल सके हे, जमीनके भीतर भी रह सके हे, जमीनके ऊपर भी रह सके हे. जलमें हे वो पोटेन्शियालिटी. अब वा पोटेन्शियालिटीकु जलमें गौरवान्वित करनो, जलकी डिग्निटी मेन्टेन् करनी के जलकु पॉल्युट् करनो? ईकोलॉजिकली दोनों तरहके व्यवहार जलके साथ हो सकें हें, नहीं हो सकें ऐसी बात नहीं हे. जल बिचारो कभी ना नहीं पाड़ेगो. अपन् हरिद्वार जावें तो देखें के वहां शव गंगाजीमें बहावें, टूटी-फूटी ट्युब्-लाईट् गंगाजीमें बहावें, जो आयो हाथमें तो दे गंगाजीमें. गंगाजी नहीं भई वो घरमें कचरा डालवेको डब्बा हो गयो! अब गंगाजी वाकु बहाके ले जायें अन्यथा करें तो करें क्या? वा गंगाजीमें वा तरहकी सामर्थ्य हे, पोटेन्शियालिटी हे करके बहा ले जाय. बहा जाय करके अपन् वाकु वोलेन्टरीली प्रोग्राम् करके या तरहके प्रयोगमें लावें ये बात बुरी हे.

अभी आज ही सुरेशबाबाने एक बोहोत अच्छो शेर मोकु भेज्यो. मोकु भी वामें मजा आ गई. मैंने वाकी एक गजल ही बना दी हे. थोड़ी तुमकु सुनाऊंगो तो खयाल आयगो. वामें ये ही इश्यु हे. सुरेशबाबा कह रहे हें ''गुल होना ही गुनाह एक बन जाये ना कभी. बेदिलसे उसे पेश जब करने लगे सभी.'' फूल होनो जीवनमें एक सबसु बड़ो अपराध हो जायगो. फूल जैसी चीज तुम प्रेमसु नहीं देके एक फॉरमेलिटीमें दे रहे हो. अरे फूल जैसी चीज प्रेमसु दी जाय के फॉरमेलिटीसु दी जाय? जब लोगन्कु ये रहस्य पता चल्यो के फूल तुम प्रेमसु नहीं देके फॉरमेलिटीमें दे रहे हो, वाके बाद क्या होयगो के फूलको गुलदस्ता देवेवालेन्की एजेन्सी

खड़ी हो जायेंगी. जैसे हवेली खड़ी हो गई और वो पाछो प्रमोट् करें वाकु के तुम्हारे यहां वाईफ्को जन्मदिन होय तो हमारे यहां गुलदस्ता तैयार हे. तुमकु देवेकी भी जरूरत नहीं हे. खाली नाम पता और तारीख लिखा दो. गुलदस्ता पोहोंचावेवाले हम हें. अरे भई मेरी वाईफके जन्मदिनपे गुलदस्ता तू क्यों पोहोंचावे? वो एजेन्सी खड़ी हो जायें, ऐसे हे. एजेन्सी खड़ी होते ही बिचारे फूलकु डालीपेसु औसतन जितनो तोड़्यो जाय वासु वो लोग आठ गुना ज्यादा तोड़ें धन्धाकु प्रोमोट करवेके लिये. माने धन्धाकु प्रोमोट करवेके लिये पेड़ बिचारेकु पेड़ नहीं रहवे दें क्योंके वो तो एजेन्सी हे ना. वा फूलको गुनाह क्या हतो के वो फूल हे. बोहोत अच्छी बात कही सुरेशबाबाने ''गुल होना ही गुनाह एक बन जाये ना कभी.'' आवश्यकताके बिना तुमने फॉरमेलिटीमें एक दूसरेकु फूल देनो शुरु कियो. वाको परिणाम क्या आयगो के लोगन्कु ये रहस्य जैसे ही पता चलेगो तो तुरत एजेन्सी खुलेगी. शादी होय तो वामें गुलदस्ता, जन्मदिनको गुलदस्ता अलग, मरवेपे मृतशरीरपे रखवेको गुलदस्ता अलग, झाड़ा हो गयो होय तो वाको गुलदस्ता अलग, अरे यार! क्या बात हे! इतनो सारो फूल तुम पेड़पेसु तोड़ लोगे तो बिचारो पेड़ जीयेगो कैसे? ये तो सोचो! बिल्कुल वोही परिस्थिति पुष्टिमार्गमें भयी. ठाकुरजीको और भक्तिको गुल होनो जब अपन् बेदिलीसु कर रहे हें, वो ही उनको गुनाह हो गयो.

मैंने भी एक गजल अभी कारमें ही बना दी, वो भी सुनाऊं आपकु. ये सारी पुष्टिमार्गकी रामायण हे. ''लो पूछते हैं हमसे वो रस्मे राज़े इश्क. उनका ये ही सवाल ना मारे मुझे अभी. ये तौर

जमानेका परेशान है न कौन. मिलता न हो उसे यहां चाहते सभी.'' वो हमसे पूछ रहे हें के स्नेहके रहस्यके नियम क्या हें वो बताओ. अरे यार! स्नेह करवेवालेकु पूछनो पड़े के हमकु स्नेह कैसे करनो? वाकी मॅथोडोलॉजी समझाओ. वो मॅथोडोलॉजी समझके वामें एम.बी.ए. होके सी.ए. होके फिर स्नेह करेंगे. डिप्लोमा होल्डर् होके, डिग्री लेके फिर स्नेह करेंगे! ऐसे कोई प्रेम होयगो? वो बात मैं कह रह्यो हूं के ''लो पूछते हैं हमसे वो रस्मे राज़े इश्क. उनका ये ही सवाल ना मारे मुझे अभी. उनको ये पूछनो ही मोकु अभी खतम न कर दे!'' क्योंके जब तुम ऐसे पूछ रहे हो के ये रस्म सिखलाओ मतलब बात तो साफ हो गई के स्नेह हे नहीं तुमकु. हम सीखेंगे स्नेह करनो तब डिग्री डिप्लोमा होल्ड् करेंगे, वाके बाद स्नेह करेंगे. माने आजकी तारीखमें तो खाता क्लीयर् हो गयो के स्नेह नहीं हे. खाता ज़ीरो हे. मैंने वामें और जोड़ दियो हे. ''ये तौर जमानेका परेशान है न कौन.'' सारे जमानेको ये ही तौर चल रह्यो हे. 'तौर' माने तौर-तरीका. ''मिलता न हो उसे यहां चाहते सभी.'' जो नहीं मिल्यो वाकी यहां सब चाहना कर रहे हें. घरमें ठाकुर बैठ्यो हे वाकी कोईकु चाहना नहीं हे. वहां तुमकु झापट मारी जाय तो तुमकु लगे ओहो कितनो बड़ो भाग्य के यहां झापट पड़ी. एक एक झापट खाते खाते सारे पाप खतम हो जायें! ''श्रीवल्लभ सुखकारी नामे झापट खाये नरनारी. दुर्गति सकल निवारी प्रकट्यो श्रीव्रजपति हवेलीबिहारी.'' ये समझ ही नहीं आवे. कैसी सद्वासना उनने बढ़ाई, कैसे असद्वासना गुसांईजीने निवृत्त करी. अपन्ने उन सद्असद्वासनान्को क्या क्या लफड़ा कियो. वो सारी कथा ये ही हे के जो नहीं मिले वाकी चाहना हे. जो घरमें आ गयो तो चाहना खतम.

(तादात्म्यके कारण निर्भयरमण)

जेने श्रीविट्ठलनाथ विचारे रे, तेने प्रकट पदारथ चारे रे. उपरान्त भजन आपे रे, व्रजमण्डल स्थिर करि स्थापे रे. महाप्रभुजीने स्वतन्त्र क्रीड़ा पुरुषोत्तमकी सृष्टिकी लीलामें एक खुलासा कर रख्यो हे. वो फन्डामेन्टल् खुलासा ये के प्राईमरी रिक्वायरमेन्ट् न निर्भयताकी हे, न अरमणात्मिका अनिर्भयताकी और सभयरमणकी भी नहीं हे. प्राइमरी रिक्वायरमेन्ट् हे निर्भयरमणकी. यदि भगवान् अपने अलावा कोई सृष्टि पैदा करते तो थोड़ो तो भगवान् भी वासु थोड़ो तो डरेंगे और भक्त भी भगवान्सु थोड़ो डरेगो. क्योंके अलग हे ना! यदि भगवान् अपने अलावा कोई सृष्टि पैदा ही नहीं करेंगे तो भगवान् रमण ही नहीं कर सकेंगे पूरे तरीकेसु. वाके लिये भगवान्ने अपनेमेंसु अपन्कु रिक्लाउन् कियो, अपन्कु रिमॉडेल् कियो. या प्रोसेस्सु ये सृष्टि प्रकट भई हे. जामें न तो पूरो पूरो भेद हे, न पूरो पूरो अभेद हे. केवल तादात्म्य हे. या तादात्म्यके कारण निर्भयरमण पॉसिबल् होवे हे. वो मैंने कल परसों आपकु ये बात बताई के जब भी दूसरो अपन्कु लप्पड़ मारे तब अपन्कु अपमान महसूस होवे हे, ह्युमिलिएशन् फील् होवे हे. अपन्ने अपने गालपे थप्पड़ मार्यो तो अपमान महसूस होवे हे? क्यों नहीं होवे? क्योंके अपन्कु अपने हाथ और अपने गालमें तादात्म्य पता हे के गाल भी मेरो हे और हाथ भी मेरो हे. दूसरेके हाथमें अपन्कु वो भाव नहीं जगे के ये मेरो हाथ हे. दूसरेको हाथ लग रह्यो हे करके वाकी थप्पड़ बुरी लगे हे. वोही मैंने अपनी ढब्बूके उदाहरणसु बतायो के ढब्बूके मनमें एक बखत विश्वास पैदा कर दियो के अपन् खेल खेल रहे हें. 'थ' माने थप्पड़, 'घ' माने घूंसा, 'च' माने चूंटिया और वो हंसती हती हा हा. ये ढब्बूजीको ढब्बात्मक

माहात्म्य हतो. वो हंसती हंसती थप्पड़ खाती, चूंटिया भरवाती, धक्का मारतो, धक्कामें लुढ़क जाती और फिर बैठ जाती के 'ध' माने धक्का. कॉन्फिडेन्स् आनो चहिये सामनेवालेकु के ये इन्टरएक्शन् हे वो रमणात्मक हे पर भयात्मक नहीं हे. तो मार भी सहन करवेकु तैयार हो जाय. जा बखत रमणात्मक नहीं हे और भयात्मक हे, वा बखत प्रशंसामें भी थोड़ो लफड़ा लगे के ''नमन नमनमें फेर हे बहुत नमे नादान. दगाबाज दूना नमे, चीता चोर कमान'' तो नमनमें भी पाछो कछु न कछु भय पैदा हो जाय के करनो क्या चाह रह्यो हे! ये पोषणकी आवश्यकता हे. गुसांईजीने व्यवस्था कैसे पैदा करी वाकु वो बता रहे हें के निर्भय रमण कियो. निर्भय रमणको प्लेस् कौनसो हे? **व्रजमंडल स्थिर करि स्थापे रे. तेने देवमुनि सर्वे गाये रे, ते सर्व उपरान्त सुहाये.** ये रमण **तेने काल–कर्म नव बांधेरे यम ते सिर धनुष न साधे रे. एहवो मारग श्रीवल्लभ वरनो रे, ज्यां नहीं प्रवेश विधि हरनो रे** ये निर्भयता. निर्भयरमणकी मोडस् ऑपरेन्डी सृष्टिकी लीलामें प्रकट हो रही हे. वो अवतारलीलामें भी प्रकट करी. महाप्रभुजी निरन्तर रासपंचाध्यायीमें और ग्रंथन्में ये ही बात बता रहे हें के इन व्रजभक्तन्कु भगवान्ने निर्भय कैसे किये अपने साथ क्रीड़ा करवेमें के तुम डरो मत. भय उनको कैसे निवृत्त कियो. वोही मॉडेल् अवतारलीलामें प्रकट भयो. वो ही मॉडेल् गुसांईजी महाप्रभुजी अपनी सेवात्मिका भजनात्मिका लीलामें इन्ट्रोड्युस् करनो चाह रहे हें के तुम निर्भय होके अपने ठाकुरको लाड़ लड़ाओ. डरवेकी कोई जरूरत नहीं हे. ठाकुर तुम्हारो हे, तुम ठाकुरके हो. वा तरहकी निर्भयतासु तुम भगवान्को भजन करो. या तरहसु तुम भजनको भय मत रखो के महाराजकु बीचमें नहीं लायेंगे तो हमसु अपराध हो जायगो.

(सभयात्मक और अरमणात्मक वृत्ति)

महाराजसु अपराध नहीं होयगो का? महाराज कोई सोनाको बन्यो हे और तुम क्या कथीरके बने हो? जैसे तुम हो वैसो महाराज हे. जैसो महाराज हे वैसे तुम हो. कैसे तुमने ऐसो सोच लियो के जा बखत तुम ठाकुरजीके लाड़ लड़ा रहे हो वा बखत तुम महाराजकु बीचमें नहीं लाओगे तो अपराध हो जायगो? यासु सेवा करवेको रिस्क लेनो ही नहीं क्योंके सेवामें अपराध हो जायगो! अपराध हो जायगो तो ये ठाकुर करेगो क्या? जिन–जिनने अपराध कियो उनको क्या कियो ठाकुरजीने? ज्यादासु ज्यादा मारके मुक्ति दे दी. ये अच्छी बात हे ना. तुम डरो हो तो मुक्ति देनो पहलो फर्ज हे. जो इतनो डरतो होय तो वाकु दुनियांमें जीनो ही नहीं चहिये! प्रभुसु विनती करो के भगवान् हमकु मुक्त करो. ये दुनिया तो भयकी हे. ''ये दुनिया ये महेफिल मेरे कामकी नहीं.'' जहां तुमकु इतनो डर लगतो होय के ये अपराध हो जायगो, छींकेंगे तो अपराध हो जायगो, खासेंगे तो अपराध हो जायगो, बोलेंगे तो अपराध हो जायगो. अरे! जाओ ना भई मुक्ति लेके खतम करो दास्तां. कोई अपराध नहीं होयगो मुक्ति मिल गई तो सारी प्रोब्लम् सॉल्व् हो जायगी. मुक्तिकी आवश्यकता नहीं हे. आवश्यकता हे अपने ठाकुरके साथ निर्भय रमणकी. वो निर्भय रमण तुमकु तुम्हारे ठाकुरके साथ तुम्हारे घरमें मिलेगो. जहां कोई भय नहीं हे. **तेने काल–कर्म नव बांधे रे यम ते सिर धनुष न साधे रे.** कोई भी जनताकी भीड़ तुमकु दर्शन खोलवेके लिये मजबूर नहीं करेगी. कोई भी मनोरथी तुमकु ये नहीं कहेगो के ठाकुरजी तुम्हारे नहीं हें क्योंके तुमने मनोरथके पैसा तो हमसु लिये हें, याके लिये याको पब्लिक्ट्रस्ट् करो. घरमें ठाकुरजीकी सेवा करोगे तो कोई सेठियाके बापकी ताकत हे के

तुम्हारे ठाकुरजीको पब्लिक्ट्रस्ट् करे!! तुम्हारे बहुजीको पब्लिक्ट्रस्ट् नहीं कियो, तुम्हारे बालकन्को पब्लिक्ट्रस्ट् नहीं कियो, तो तुमने तुम्हारे ठाकुरजीको कैसे पब्लिक्ट्रस्ट् कियो? क्योंके तुमने ठाकुरजीके साथ निर्भय रमणको प्रोग्राम् फॉलो नहीं कियो. कछु न कछु भयको और अरमणको प्रोग्राम् फॉलो कियो. हम खुद रमण नहीं करेंगे. एजेन्सीकु कहेंगे के हमारी वाईफके जन्मदिनपे वाकु गुलदस्ता भिजवा दे. कहीं वो गुलदस्ता लावेवालेके साथ भाग न जाय, मोकु ये डर लग रह्यो हे. हर बर्थडेपे वोही लातो होयगो तो थोड़े दिनमें स्नेह हो जायगो तो भाग जायगी एक दिन. तुम घर बैठे रह जाओगे. याही लिये बोहोत सारे ठाकुरजी भग गये. क्योंके जिनकु तुमने सेवामनोरथकी एजेन्सी सोंपी उनके इनके बीचमें लफड़ा हो गयो कछु. वो लफड़ा नहीं होय वाके लिये बर्थडेको गुलदस्ता ऐजेन्सीके थ्रू मत भिजवाओ, अपने हाथसु खुद दो वाके हाथमें.

(सेवामें प्रेमसहित निर्भयरमणकी आवश्यकता)

भुजदण्डे भय हर्त्या एवा नाथ अमित उदार. ठाकुरजीको भुज परसके कहो के आज तेरो जन्मदिन हे. हम ये गुलदस्ता तेरे लिये लायें हें. ये माला हम तोकु पहरावे आये हें देखो गुसांईजी श्रीनाथजीके लिये माला खुद ला रहे हें, फूल खुद ला रहे हें, फूल खुद पोह रहे हें, खुद धरा रहे हें. वासु कॉन्फिडेन्स् आयगो वामें. अरे भई ये मोकु माला पहरा रह्यो हे, एजेन्सी नहीं पहरा रही हे तो काहेकु मैं वा एजेन्सीकी चिन्ता करूं? रोज एजेन्सीको आदमी गुलदस्ता लेके आयेगो, कोई अच्छो होयगो तो वाके साथ एक दिन वो भाग जायगी क्योंके तुमतो ला नहीं रहे हो. वो दे रह्यो हे हर बर्थडे पे. वॅडिंग् एनिवर्सरीको गुलदस्ता भी वो ही दे रह्यो हे पाछो.

बर्थडेकु दे जाय तो चलो बाप होयगो, भाई होयगो. पर वॅडिंग् एनिवर्सरीको गुलदस्ता भी वो ही एजेन्सीवालो पोहोंचा रह्यो हे. ये लफड़ा क्या हे, कभी तो सोचो, कभी तो अकलको परदा खोलो. भगवान्की दी भई घास नहीं खा रहे हो, अनाज खा रहे हो. अरे एजेन्सीसु कोई सेवा होवे हे? एजेन्सीसु सेवा नहीं होवे. सेवा तो दिलको प्रेम होवे. वा प्रेममें असद्वासना निवृत्त होनी चहिये. तुममें और तुम्हारे ठाकुरजीके बीचमें निर्भय रमण होनो चहिये. वो निर्भय रमण होयगो तब ठाकुरजी तुमपे निर्भर होयगो. और निर्भय रमण होयगो तो तुम ठाकुरजीपे निर्भर होओगे.

(गुसांईजीकी सुखकारिता)

एहवो मारग श्रीवल्लभवरनो रे, ज्यां नहीं प्रवेश विधि– हरनो रे. ज्यां नित्यरास बहुपेरें रे, मध्य नायक निरतत घेरे रे. जब नित्यरास प्रकट होयगो तब होयगो. तुम्हारे घरमें वो नित्यरास अभी प्रकट हो सके हे. **ज्यां रत्नजटित तट सरिता रे, नवपल्लव भूमि हरिता रे.. ज्यां रत्नधातु गिरिराजे रे** कहां हे ये रत्नधातु गिरिराज? जहां तुम अपने ठाकुरजीकी सेवा कर रहे हो, जा सिंहासनपे बिराज रह्यो हे वो, वहां रत्नधातु गिरिराज प्रकट हो जा रह्यो हे. **वाजिंत्र विविध पेरे वाजे रे. ज्यां युवति–यूथ बहुमाये रे. श्रीजी श्यामलवर्ण सुहाये रे.**

मैं अपनी बातपे फिर लौटके आ रह्यो हूं. प्रतिज्ञा, प्रतिज्ञाके हेतु क्या हते? सद्वासना और असद्वासना दूर करी; वाको जस्टिफिकेशन् जैसे पहाड़पे आग हे क्योंके धुंआ हे. गुसांईजी जो हें **'विठ्ठलसुखकारी नामे निष्पाप थाये नरनारी. दुर्गति सकल निवारी.**

[२]**प्रगट्या श्रीव्रजपति रासविहारी.** ये प्रतिज्ञा करी वाको हेतु क्या दियो? [३]सद्वासना और [४]असद्वासना दूर करें हें. वो दूर करवेके बाद वाको जस्टिफिकेशन् जाकु अपने यहां एनोलॉजी कहें हें, वो क्या दे रहे हें [५]**व्रजमंडल स्थिर करि स्थापे.** जा व्रजमंडलमें कोई भय नहीं हतो और जा व्रजमंडलमें नित्यरमण चल रह्यो हतो. वा तरहसु यदि तुम विठ्ठलनाथके द्वारा अंगीकार होनो चाहोगे तो तुम्हारे यहां भी वो नित्यरमण हो सकेगो. जैसे हमने देख्यो हे के जहां–जहां धुंआ हती वहां–वहां आग हती. यहां धुंआ दीख रही हे, भले आग नहीं दीख रही हे, पर वा जगह तक पोहोंचेंगे तो आग दीखेगी क्योंके अभी धुंआ दीख रही हे. ''देखके दिल जांसे उठता है. ये धुंआसा कहांसे उठता है?'' इतनो तो देखो के ये धुंआ कहांसु उठ रह्यो हे? ये जहांसु धुंआ उठ रह्यो हे वहां कछु न कछु तो आग लगी भई होयगी स्नेहकी. वो जो स्नेहकी आग जल रही हे वाको ये धुंआ हे.

(गुरुभजनको हेतु सेवापर होवेके लिये)

वाको फाईनल् जस्टिफिकेशन् समझा रहे हें **एणीपेरे श्रीगुसांईजीने जाणों रे, जाणी अहर्निश गाई बखाणो रे. जे जीव जात होय कोय रे, तेने तत्क्षण सरवे सुख होय रे. सेवक जन दास तमारो रे, तेनो रूपवियोग निवारो रे.** अपन् ये समझें हें के रूपवियोग गुसांईजीको हो रह्यो हे. महाप्रभुजीने एक बात बताई हे ''**कृष्णसेवापरं वीक्ष्य दम्भादिरहितं नरं. श्रीभागवततत्त्वज्ञं भजेद् जिज्ञासुः आदरात्**'' (त.दी.दि.२।२२७) तो पहलो, जो गुरुभजन कर रहे हें, वामें वा तरहकी प्रोग्रामिंग् हो जानी चहिये के वो ठाकुरजीके

भजनके लिये तैयार हो जाय. तब तो वो गुरुभजन सार्थक हे. **''यो हि गुरुः सेवाम् उपदेक्ष्यति स स्वयं चेत् ताम् उत्तमां जानीयात् तदा कथं न स्वयं कुर्याद्! इति सेवापरएव गुरुः''** (त.दी.नि.प्र.२।२२७) तो वो कृष्णसेवापर गुरु होनो चहिये. वाके लिये वो कह रहे हें के अभी वो ठाकुरजी दीख नहीं रहे हें तुम दीख रहे हो. तो मेरे भीतर वो सारी प्रोग्रामिंग् डाउनलोड् करो के जा प्रोग्रामिंग्के डाउनलोड् हो जावेके कारण मोकु वा रूपके दर्शन होवे लग जायें. **सेवकजन दास तमारो रे. तेनो रूपवियोग निवारो रे.** ये तुम्हारे माध्यमसु मोकु वा रूपके दर्शन हो जायें. वो बात केह रहे हें.

यद्यपि हमारे दादाजी संयोग परमफलवादी हें यासुं वो यहां संयोग और विप्रयोग को इश्यु उठा रहे हें. मैं या बातकु नहीं मानूं हूं के यहां संयोग या विप्रयोग के झगड़ाको कोई इश्यु हे. मैं यहां सिर्फ इतनी ही बात देख रह्यो हूं के गुसांईजीकु वो सर्वात्मभावसु भजनो चाह रहे हें. जाके लिये श्रीमहाप्रभुजीने **''कृष्णसेवापरं वीक्ष्य दम्भादिरहितं नरं. श्रीभागवतत्त्वज्ञं भजेद् जिज्ञासुः आदरात्''** आज्ञा दी हे गुरुकी थोड़े समयके लिये, जब तक तुम सेवाके लिये तैयार न हो जाओ तब तक तुम गुरुको सर्वात्मभावसु भजन करो और वो गुरु ऐसो होनो चहिये के वो तुमकु सेवापरक कर दे.

ये गुसांईजीके विलासको तरीका हे. या तरहसु श्रीगुसांईजी विलास कर रहे हें करके गोपालदासजीको हृदय इच्छुक भयो हे के **सेवकजन दास तमारो रे, तेने रूपवियोग निवारो रे.** ये गोपालदासजीकी विलासलीला ऊतिलीला अपन्ने देखी.

QQQ

वल्लभाख्यान छट्ठो

(प्रमाणलीला–मन्वन्तरलीला)

(राग परज)

(पुष्टिसम्प्रदायमें व्रजाधिपके भजनरूप धर्मके अधिकरणभूत व्रजमंडल स्थापनके लिये गुरुकु प्रार्थना)

सगुण सनेही सामळा वाला अहर्निश दरशन् आपोजी।
परम सुख देवाने काजे व्रजमण्डल स्थिर करि स्थापो जी।।१।।

(भगवद् लीला और कथा की हृदयमें स्थिरस्थापनाके लिये सर्वात्मना गुरुको आश्रय)

श्रीवल्लभकुंवर कोडामणा तमारूं नाम निरन्तर लीजे जी।।
रूप–सुधारस–माधुरी ते लोचन भरि–भरि पीजे जी।।२।।

(वात्सल्यसंयोगरसकी भावना)

ते पद क्यारे देखिशुं जे गोधन पूंठे धाये जी।।
ब्रजसुन्दरी–मुख–सुख पामीने वारंवार अघाये जी।।३।।

(गोपीन्को स्वबाह्यशृंगाररसात्मक विप्रयोगमें और गोपन्को सख्य–रसात्मकबाह्यसंयोगकी आंतरभावना)

दिवसे सहु श्यामा मळी, रसरूप तणो यश गाय जी।।
गोपमंडळी मध्य देखीने वारंवार सुख थाये जी।।४।।
वासरनिर्वाह एम करे...

(गोकुलस्थ गोपन् और गोपीन् के सख्यशृंगारसंयोगकी लीलाभावना)

...सखी सायंकाळे पेखे जी।।
अलक मुख खुररज लागी ते, कमल भ्रमर विशेखे जी।।५।।

गोपबालक मंडली मध्ये रंग अनेक उपजावे जी।।
मत्त–गजगति–मलपतां ते श्रीगोकुलमां आवे जी।।६।।
लोचनभृंग पीये घणुं ते प्रकट मुखमकरंद जी।।
कमलपत्र शी आंखड़ी ते जोई–जोई टाळ्यो द्वन्द्व जी।।७।।
जोतां तृप्ति न उपजे प्रभु अधर सुधारस पाये जी।।
भुजलता भीडी भामिनी त्यारे दिवस ताप बुझाये जी।।८।।

(वात्सल्यभावमें माता यशोदाकु जो स्वसुतके दर्शनलालनसंयोगसुख भयो वाकी भावना)

पूरणसुख दई गोष्ठ मां, प्रभु आघेरा पाऊं धारे।
जसोदोजी ले भामणां सुतनें राई–लूण उतारे जी।।९।।
वस्त्रांचल मुख रज पोंछीने रूप सकल निहारे जी।।
उभी थाय रोमावली कर कोमळ अंग संभारे जी।।१०।।
करी पेरे पेरे वारणा सुतने सदनमां पधरावे जी।।

(अपने घरमें क्रियारूपभक्तिको भजन और प्रमाणरूपभक्ति यदि अशक्य होय तो वाकी परिचर्या भी परम्परासु शक्य हो, वैसी भावनाको निरूपण)

सुन्दरी गृहकारज मिषे वळी निरखवाने आवे जी।।११।।
उष्णोदक सोंधो मेळीने अली अंग अगाळ करावे जी।।
अंगवस्त्र करी स्वच्छ वपुने पाछे तेल लगावे जी।।१२।।
अनेक सुगन्ध वसन ने भूषन, फूल अंबोडे फावे जी।।

(वाकी सन्तुष्टि आत्मरति होवे फिरभी भक्तिरूपा रतिसु अन्यथाकर्तुं समर्थ होवेसु अपनी संतुष्टि प्रकट करे)

ठणठणतो वालो लाडक डो ते भोजनशाळायें आवे जी।।१३।।
राधा–अधर–सुधा बिना, पीयुने बीजु काईं नव भावे जी।।
प्रात: पधारे ने निशाये आवे वालो प्रीति नवी उपजावे जी।।१४।।
मातानूं मन रंजवा वालो आरोग्या बहू स्वादें जी।।
सुगंध बीडी कर धरीने उठ्या नूपुरने नादे जी ।।१५।।
सकल ब्रजमां पोढिया वालो विविध रससुखदान जी।।

(उपसंहारमें ऐसी स्वतन्त्रलीला हृदयमें निरुद्ध होवेकी प्रमाणपंथा स्थापकपुरुषके समक्ष याचना)

ए लीला म्हारे मन वसो ते भक्त मांगे मान जी।।१६।।
श्रीविट्ठल द्विजरूप तमारी, लीला एणी पेरे झाझी जी।।
ओळवे केम चालशे जे प्रीत अमशू बाझी जी।।१७।।

(कर्मके कारण कायिकादिमें पैदा होती वासनाके प्रकार)

कल अपन्ने ऊति और ऊतिके विसाविस् विलास देख्यो ये दोनों ऊति और विलास प्रमाणके चॅप्टर्में आये हें. ऐसो कहनो तो मुश्किल हे के प्रमाणके चॅप्टर्में ऊति आयो के ऊतिके चॅप्टर्में विलास आयो के विलासके चॅप्टर्में ऊति आयो क्योंके वो दोनों बराबर ही हें. पर जो मुख्य प्रकरण हे वो प्रमाणको प्रकरण हे. प्रमाणके प्रकरणमें अध्यायके रूपमें ये ऊति और विलास आये हें. **"ऊतय: कर्मवासना:"** (भाग.पुरा.१०।२।४) जो भी कछु अपन् कर्म करें हें उन कर्मन्के अच्छे या बुरे इम्प्रेशन् अपन् इकट्ठे करें हें वो ऊति हे. कोई भी अच्छो काम करें वाको एक इम्प्रेशन् अपनेपे आ जाय. बुरो काम करें तो वाकी भी एक इम्प्रेशन् आ जाय.

जैसे देखो अपन् अभी तक प्रचलित धुनमें वल्लभाख्यान गाते हते तो वाकी अपनेपे इम्प्रेशन् हती ना! जा रागमें गोपालदासजीने लिखे हें वा रागमें गावेमें थोड़ी मुश्किल अपन्कु होवे हे. हारमोनियम् रखनो पड़े. क्यों? क्योंके वासना उनकी अपने दिमागमें बैठी भई हे और वा वासनाके कारण जब अपन् या रागमें गावे जायें तो अपनो गला और दिमाग वा रागमें वासनाके कारण सरक जाय. याको अच्छाई या बुराई सु बोहोत महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं हे. पर जो भी कर्म अपन् करें हें वाकी अपने भीतर हॅबीच्युअल् वासना पैदा हो जाय. जैसे एक बात अपन् समझ सकें के बचपनमें अपन् कभी साईकल् चलाते होंय और फिर छोड़ दें. वाके बाद कभी साईकल्पे बैठो तो थोड़ी देर डिस्कम्फर्ट् फील् होवे पर क्योंके अपने पैरन्कु वासना होवे पॅडलिंग् करवेकी तो थोड़ी देरमें सेट् हो जायें और साईकल् ठीक तरहसु चलवे लग जाय. कर्म अच्छो हे के बुरो हे वो कोई दूसरे संदर्भमें होवे हे पर मुख्य बात ये हे के जो कछु भी कर्म अपन् करें हें, अपने भीतर जहांसु वो कर्म परफॉर्म् हो रह्यो हे, वहां वाकी कछु इम्प्रेशन् रहे हे बिल्कुल वाही तरहसु जैसे समुद्रमें कोई नाव चली जाय तो वाकी लकीरसी रह जाय. जा ढंगसु गई वाको फोटो देखते होओगे तो वाके पीछे एक लकीरसी रह जाय पानीमें. समुद्रमेंसु वो नाव तो चली गई पर वाकी वासना थोड़ी देर बनी रहे हे. समुद्र थोड़ी देर रिटेन् करे क्योंके समुद्रको हलचलवालो पानी हे तो थोड़ी देर सही पर रिटेन् तो करे. पर अपन् सड़कपे देख सकें के बोहोत जोरसु कोई गाड़ीकु ब्रेक् लगावे और टायर् आगे तक घिसते हुये जायें तो गाड़ीके टायर्के निशान वासनाके रूपमें सड़कपे उभर आवें हें.

हर जगह कछु भी एक्शन् होवे, अच्छो या बुरो वाकी कछु वासना अपन् कॅरी करते होवें. 'वासना' शब्द आजकल बोलचालकी भाषामें बोहोत खराब लगे हे पर संस्कृत भाषामें वासना इतने खराब अर्थकी बात नहीं हे. 'वासना'को मतलब इम्प्रेशन्. सत्कर्मकी सद्वासना होवे; असत्कर्मकी असद्वासना होवे. ऑलमोस्ट् जैसे के अपन्ने कोई पाउडर् या स्प्रे लगा लियो तो वाकी वासना अपनी बॉडीमें अपन् कॅरी करते होवें. गुजरातीमें जाकु 'वास' कहें जासु 'सुवास' और 'दुर्वास' शब्द बन्यो हे. वो एग्ज़ेक्टली वासनाके अर्थमें हे. जो अपन्ने कछु काम कियो हे, वाकी इम्प्रेशन् अपन् कॅरी करें हें. कोई चीज अपन् बोलें भी तो अपन्कु पता नहीं चले. अपन् बोलके भूल जायें. पर बोली भई चीजकी वासना अपनी बुद्धि और वाणी में रह जाय. दूसरी बखत बोलें तो अच्छी तरहसु बोली जा सके हे वा वासनाके कारण. पहली बखत बोलवेमें तकलीफ होती होवे. जैसे ताल कोई गानी हे, एक बखत अपन् ताल दिये बिना गावें तो अचानक गावेमें अपन्कु तकलीफ होवे. एक बखत आप ताल देके गा लो तो वो तालकी वासना हाथमें रह जायगी. जब दूसरी तीसरी चौथी बखत गायेंगे तो वासना इन्टेन्सीफाई होके अपन्कु फिर सोचनो नहीं पड़े. अपने आप वो ताल चलती रहे. ये सब वासनाके प्रकार हें.

वासनाको मतलब कछु आड़ो टेड़ो मत समझो, गुजराती–हिन्दीवालो. क्योंके हिन्दी–गुजरातीमें 'वासना' शब्दने कछु दूसरे ठिकाने यात्रा कर ली हे. 'वासना'को मतलब शुद्ध इम्प्रेशन् हे. जो भी कछु काम करो वाकी वासना अपनी कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय

अंत:करण और देह भी कॅरी करे. जैसे सीधीसी बात बताऊं के अपन् ठण्डीके दिनमें सूखे क्लाईमेट्में गये होंय और तेलकी मालिश कर लें और वो तेल नहावेके बाद अपन् धो लें पर तेलमालिशकी वो चिकनाई थोड़ीसी शरीरमें बोलती रहे. रोज खाली साबुन्सु माथा धोओ और तेल लगाके माथा धोओ. रोज साबुन्सु माथा धोओगे तो बाल कड़क हो जायेंगे. तेल लगाके माथा धोओगे तो साबुन् बालमेंसु तेलकु निकाल देगो पर तेलके कारण बालकी नरमाई वासनाके रूपमें बाल कायम रखे हे. ये सारे वासनाके प्रकार हें.

इनमें कोई बुरो अर्थ वासनाको सोचवेकी जरूरत नहीं हे. हर चीज इम्प्रेशन् कॅरी करती होवे हें. अक्सर आपने देख्यो होयगो, जा सीढ़ीसु अपन चढ़ें और जा रेलिंग्पे अपन् हाथ धरके आवें, वहांसु यात्रीन्के पैरन्की चढ़वेकी वासना और यात्रीन्के हाथके घसीटवेकी वासना रेलिंग्पे आ जाती होवे हे. जहांसु सब उतरते चढ़ते होवें वहां पत्थर भी थोड़ो घिस जातो होवे हे, थोड़ो झुक जातो होवे हे. ये सब वासनान्के प्रकार हें.

(प्रमेयकी पोषण विलास और धर्म रूप पारस्परिकताके कारण प्रमाणलीला या स्थितिलीला)

इनमें सदसद्को इतनो महत्त्व नहीं हे. सदसद्वासनासु जुड़ी भई बात नहीं हे, कर्मसु जुड़ी बात हे. सत्कर्म होयगो तो वाकी वासना भी सत् होयगी और असत्कर्म होयगो तो वाकी वासना भी असत् होयगी. तो **"ऊतय: कर्मवासना:"** वाके दो भेद बताये हते सद् और असद् वो अपन्ने कल डिस्कस् किये. वामें गुसांईजी सदसद्वासनाकु

कैसे हॅन्डल् करें हें माने अपने मनके दृष्टिकोणसु, विचारके दृष्टिकोणसु, व्यवहारके दृष्टिकोणसु और भक्तिके दृष्टिकोणसु, ये चारों दृष्टिकोण अपन्ने देखे हते. **मायिक–मत जेणे खण्ड्यो. भक्तिमारग जेणे बहुपेरे मण्ड्यो.** विचारके दृष्टिकोणसु **सरसवचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार.** वो बुद्धिके दृष्टिकोणसु; ऐसे ही भक्तिके लिये वाकु तैयार कर रहे हें. सकल पुरुषार्थ वाको जहां सिद्ध कर रहे हें माने **उपरांत भजन फल आपे.** ये सब गुसांईजी पुष्टिजीवन्की वासनान्कु हॅन्डल् कर रहे हें. ये अपन्ने प्रोग्राम्के तहत देख्यो. ये हॅन्डलिंग् विलास हे. यामें त्रासके लिये वासना पैदा नहीं करी हे. विलाससु सारे सदसत्कर्मकु हॅन्डल् कियो हे. यासु वामें पोषणके बाद वाको अभिवृद्धिवालो स्वरूप आयो हे के जो पोषित है वाकी अभिवृद्धि भी होनी चहिये. वो अभिवृद्धिके प्रकार ये हें. वा वृद्धिके प्रकार होवेके कारण गुसांईजीको जो प्रमेयरूप हे, वाकु जानवेको अपन्कु प्रमाण मिले हें. जैसे कोई दयालु हे के नहीं? कोई क्रोधी हे के नहीं? कोई स्नेही हे के नहीं, अपन्कु प्रमाण कैसे मिले? अपन्कु स्नेहसु देखे, स्नेहसु बोले तो वाको स्नेहसु देखनो, स्नेहसु बोलनो, स्नेहसु अपने साथ बरतनो, वो स्नेही हे के नहीं वाको प्रमाण बन जाय प्रमेयको. कोई क्रोधी हे के नहीं? जब भी छेड़ो तो घासलेटमें जैसे दियासलाई लगी होय ऐसो बोलतो होय तो अपन्कु समझमें आ जाय के ये व्यक्ति क्रोधी हे प्रमेयरूपमें. वाको प्रमाण अपने पास क्या हे? के जब भी बोले तो ऐसे ही बोले के जैसे घासलेटमें कोईने दियासलाई लगा दी होय! वाको बोलनो वा तरहसु देखनो वा तरहसु बरतनो सब प्रमाण बन जावे. गुसांईजीकी ये जो हॅन्डलिंग् हे वो आपके स्थापनाको रूप

होवेको जो प्रमेय हे वाकेलिये लीला प्रमाण बन रही हे. उनने जिन चीजन्को स्थापन कियो हे वा स्थापन करवेके बाद वाकु निग्लेक्ट् नहीं करें हें पर अच्छी तरहसु वाकु हॅन्डल् भी करें हें. वो विलास हे और वा विलासके कारण अपन्कु गुसांईजीको कॅरेक्टर् क्या हे, स्वरूप क्या हे, वो समझ आ रह्यो हे. वाके लिये ये प्रमाणको प्रकरण बन रह्यो हे. माने पोषण भी प्रमाणको प्रकरण बन रह्यो हे. जैसे एक साधारण बात समझो के मां बच्चाकु दूध पिवावे तो बच्चाकु मांके प्रति लगाव हो जाय. समझो मां दूध पिवाती ही नहीं होय, कोई और धाय वगैरह दूध पियाती होय, तो बच्चा धायसु अटॅच् हो जाय क्योंके वाके पोषणको प्रमाण दूध पीनो-पिलानो हे. जो दूध पिला रही हे वाकु वो पोषक माने. प्रमाणसु प्रमेयको ज्ञान होवे. पोषकता रूपी जो प्रमेय हे वाको ज्ञान पोषण रूपी प्रमाणसु होयगो. अभिवर्धक रूपी जो प्रमेय हे वाके द्वारा की जाती अभिवर्धनकी लीलाको ज्ञान अपने विलाससु करे तो होवे.

थोड़ो मेरे माईन्ड्में डायग्रेशन् आ रह्यो हे वाकेलिये बता रह्यो हूँ, शेयर् करवेके लिये सिर्फ. यामुनाचार्य बोहोत अच्छो कहें हें के ब्रह्मके तीनों एक्स्प्रेशन् हें. ब्रह्माजी विष्णु और शिव. पर **''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिः भवति भारत अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदा आत्मानं सृजाम्यहम्. परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृतां धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे.''** (भग.गीता.४।७) अवतार कौन ले? तीनों ही भगवान्के स्वरूप हें और उनमें भेद नहीं करनो ऐसो भी शास्त्र कहे हे. पर वो कहें हें के हमारो पोषण कौन करे हे? हमारे साथ विलास कौन करे हे? जब जब हमकु कछु

समझानो होय; धर्म संस्थापनार्थाय समझावे आवे कौन हे? अवतार तो ये ही ले हे, दूसरे तो अवतार लें नहीं हें. ऊपर बैठे भये सारे काम करते होंयगे, मॅनेज्मेन्ट् अच्छी हे उनकी. पर विलास करवे कौन आवे? यामुनाचार्य कहें हें के विलास करवे जो आवे, वाके कारण हमकु कछु तो अटॅच्मेन्ट् होयगो के नहीं होयगो? ऊपर बैठे बैठे मॅनेज्मेन्ट् करे वो तो हम अपनी प्रिवलेज् समझें हें. हमारे साथ हमारे लेवल्पे उतरके हमारे साथ थोड़ो विलसतो होय. कभी वाराह बन जाय, कभी मीन बन जाय, कभी कच्छप बन जाय, कभी परशुराम बन जाय, कभी राम बन जाय, कभी बुद्ध बन जाय, कभी कल्कि बन जाय, कभी कृष्ण बन जाय. विलास कौन करे हमारे साथ आके. जो विलास करे वो हमारी मॅनेज्मेन्ट् कर रह्यो हे. विष्णुकी ये लीला स्थापनको पार्ट् हे.

वो कैसे मेन्टेन् कर रह्यो हे? वाकी लीलाको पार्ट् हे के अवतार भी लेनो पड़े समय समयपे. कोई तकलीफ हे तो वाकी हे. वाकी हे तो अपनी भी हे क्योंके अपन्कु भी डांट खानी पड़े. अपन् भी वाके साथ लड़ाई करें तो मारे भी हे पाछो. वो ड्युटी भी तो समझावे के **''धर्म संस्थापनार्थाय परित्राणाय च साधूनां विनाशाय च दुष्कृतां सम्भवामि युगे युगे''** (वहीं) दोनों ही काम तो करे वो. प्यार भी करे, खेले भी हे, लप्पड़ भी मारे, ड्युटी भी समझावे, विलास भी करे और धर्म भी समझावे. **''धर्म संस्थापनार्थाय''** या एन्गल्सु वो कहें हें के हम क्या करें? ब्रह्मके सब स्वरूप हें पर हमकु ये पसन्द आ रह्यो हे तो वामें हम क्या करें. क्योंके हमारे साथ इन्टरएक्ट् कौन कर रह्यो हे? ब्रह्मको

कौनसो रूप हमारे साथ इन्टरएक्ट् कर रह्यो हे?

जो इन्टरएक्ट् करे हे और वा इन्टरएक्शन्के मोड्में वाको पोषण, वाको विलास और वाको धर्म प्रकट होतो होय तो वो स्थितिको सच्चो पूरो स्वरूप हे. स्थापनको फुल फ्लेज्ड् स्वरूप हे. वो वाके प्रमेयकु प्रायोरिटीके बेस्पे समझवेकु अपने लिये प्रमाण बने हे, दूसरेके प्रमेयकु पोस्टपोन् करें के फुरसतसु देखेंगे. क्यों देखेंगे फुरसतसु? क्योंके वाकु ये काम करवेके लिये वो कैसे एसिस्ट् कर रहे हें, वो अपन् देखेंगे फुरसतसु. वो कोईकी असिस्टेन्स् लेके काम करतो होय तो अपन्कु क्या आपत्ति हे! पर अपनो काम कौन कर रह्यो हे? जैसे बच्चाकु मां खवाती होय; आजकल तो सब मांयें कमावे जा रही हें, पुराने जमानामें मां कमावे तो नहीं जाती हती, कमाके तो बाप लातो हतो. जो कमाके लावे वो तो घरमें जमा करावे. बच्चा ये ही समझे के मां खवा रही हे. बच्चाकी अपनी समझ हे. बच्चा समझे के मेरी केयर् मां ज्यादा ले रही हे. मांकी केयर् बाप लेतो होयगो. वो तो उन दोनोंको अफेयर् हे. यामें मैं क्या करूं? वाकु तो ये ही समझमें आवे के मेरी केयर् तो मां ही ले रही हे. और कोई परिवारमें मां केयर् नहीं लेती होय और बाप केयर् लेतो होय तो बच्चायें बिल्कुल मांकी तरह बापकु चाहवे लग जाते होवें. ये और लफड़ा हे के थोड़ोसो बापने मांसु वो जॉब् छीनके इनिशियेटिव् लेके बच्चाकी केयर् लेनी शुरू कर दी तो सारे बच्चायें मावड़ियाके बजाय बापड़िया हो जायें. ये परिवारकी बिल्कुल सिद्ध समस्या हे. तो ये समझनो चहिये के अभिवृद्धिके प्रकारमें प्रमाणलीला कैसे बने हे? वा प्रमाणलीलाके अन्तर्गत अपन्ने अभिवर्धन पोषण विलास और धर्म देख्यो.

(भागवतके सद्धर्मके कॅनवास्पे पुष्टिभक्तिसम्प्रदायके सदाचारको चित्र)

"पुष्टानाम् आचार: ऊति:" और **"सदाचारो मन्वन्तरम्"** (सुबो.२।१०।१) अथवा **"मन्वन्तराणि सद्धर्म:"** (भाग.पुरा.२।१०।४) अब वो जो स्वतन्त्रक्रीड़ा पुरुषोत्तम हे भागवतमें वाको सद्धर्म या सदाचार बोहोत ही व्यापक रूप लिये भये हें क्योंके वाको पालनको जो एरिया है, आजकी भाषामें कहें तो पालनकी वाकी ज्युरिस्डिक्शन् बोहोत ही बड़ी हे. मतलब देव दानव मानव पशु पक्षी सब तरहके जीव, सब तरहके प्रकृतिके फोर्सेस्, काल कर्म स्वभाव, उन सब एरियामें वाकु देखवेको तामझाम हे. अपन् नॅचरली समझ सकें हें के वहां जो धर्मको स्वरूप हे, वो तो बोहोत बड़े कॅन्वास्पे छायो भयो हे.

इतने बड़े कॅन्वास्की पुष्टिमार्गमें जरूरत नहीं हे. यहां तो छोटोसो चित्र बनानो हे. जब छोटोसो चित्र बनानो हे तो फिरसु फोकस् करनो पड़ेगो. वामेंसु फोकस् करके अपन्कु जितनो सद्धर्म लेनो हे, उतनेमें ही फोकस् करके गोपालदासजी दिखा रहे हें. वो बड़ो कॅन्वास् जामें सद्धर्म दीख रहे हें वो सब बॅक्ग्राउन्ड्में हें. जैसे सर्गलीलामें हें, विसर्गलीलामें हें, स्थानलीलामें हें, पोषणलीलामें हें; ऐसे ही ऊतिमें हें, ऐसे ही मन्वन्तरमें वो बॅक्ग्राउन्ड्में तो हें ही. एक्च्युअली वो बॅक्ग्राउन्ड्में हें वाके लिये मैंने प्रमाण प्रमेय साधन फल के चार सर्कल्की बात समझाई हती के जहांसु अपन् आ रहे हें, वहांसु पहले भी वो सर्कल् तो हें ही और वो सर्कल् हें करके अपन् उनकु भूल तो नहीं सकें हें. क्योंके बॅक्ग्राउन्ड्मेंसु या फिगर्कु (प्रमाण-प्रमेय-साधन-फल) निकाल दोगे तो फिगर्को सिग्निफिकेन्स्

पूरो खतम हो जायगो. जैसे रोड्पे कोईके कट्-आउट् लगावें वो पता ही नहीं चले के कितनो बड़ो हे सचमुचमें! क्या पता पड़े कौनसी बॅक्ग्राउन्ड्में छोटो हे या बड़ो हे. बोहोत बड़ो कट्-आउट लगा दें रोड्के बॅक्ग्राउन्ड्में. क्योंके रोड् इतनो बड़ो हे. पर सचमुचमें वा फिगर्की पर्सनालिटीको बॅक्ग्राउन्ड् हे, वो तो वामें दीखती नहीं होवे. बॅक्ग्राउन्ड्में यहां फोकस् नहीं कर रहे हें. वाकु ध्यानमें नहीं रखोगे तो भी घोटाला हे और क्योंके बॅक्ग्राउन्ड्में उनकु देखनो हे करके फोकस् वहां कर दोगे तब भी घोटाला हे. देखवेको जो बॅलेन्स् हे वो इनके साथ अपन्कु रेसिप्रोकेशन्में वापरनो आनो चहिये तब अपनो सद्धर्म होयगो. नहीं तो अपन् भी कहीं असद्वासनामें घुस जायेंगे. सदसद्वासनाको या तरीकेको थोड़ो डेलीकेट् बॅलेन्स् हे.

(अपने माथे बिराजते ठाकुर परमतत्त्व ही हे)

जैसे अपन् गुसांईजीकु ही चॅक् करें तो अपन्कु टोटली झूठी बात और टोटली सच्ची बात गुसांईजीने आज्ञा करी हे. गुसांईजी क्या आज्ञा करें? **''जानीतं परमं तत्त्वं यशोदोत्संगलालितं तद् अन्यद् इति ये प्राहु आसुरान् अहो बुधाः.''** (अणु.भा.४।४।२२) टोटली झूठी बात हे. क्योंके बोहोत सारे लोगन्कु यशोदोत्संगलालित परमतत्त्व हे के नहीं, ये पता ही नहीं हे. पता नहीं हे करके वो दूसरेकु मान रहे हें. वा दूसरेकु मान रहे हें करके महाप्रभुजी भी केह रहे हें **''अतः शिवश्च विष्णुश्च जगतो हितकारकौ.''** (बा.बो.११) तो यदि **जगतो हितकारकौ** होंय तो **''तदाश्रयतदीयत्वबुद्धयै किञ्चित् समाचरेत्. स्वधर्मम् अनुतिष्ठन् वै भारद्वैगुण्यम् अन्यथा.''** (बा.बो.१९) तो वो

आसुर कैसे हो सकेंगे? **''दैवी सम्पद् विमोक्षाय''** (भग.गीता.१६।५) स्वतो मोक्ष भी उनको मान्यो हे तो परतो मोक्ष भी उनको मान्यो हें महाप्रभुजीने!! यदि आसुरी हें तो उनको विमोक्ष नहीं होनो चहिये. **''निबन्धाय आसुरी मता''** (वहीं) वो बड़े फोकस्में बात सच्ची हे. अपन्ने जब नवनीतप्रियाजीकु अपनो मान्यो हे तो बस **"तद् इति ये प्राहु आसुरान् अहो बुधा:"** केयर् ऐसी लेनी जैसे आसुरके साथ केयर् लेनी. वो आसुर हें के नहीं हें ये इश्यु नहीं हे. पर अपने ठाकुरजीकी सेवामें अपन् लगे भये हें वासु अलग जो कोई परम तत्त्व कहतो होय तो वो अपने लिये आसुरी जैसो भयो. अब अपन् कहें के वो तो खाली गुसांईजीके लिये, क्योंके नवनीतप्रियाजी उनके सेव्य हें तो बात उन तक ही कन्फाईन्ड् हती तो ऐसे थोड़े ही होयगो! ऐसे नहीं होयगो. क्योंके ध्यानसु समझो के गुसांईजीके सात बालकन्में कोईने ही नवनीतप्रियाजीकी सेवा मांगी. सब बालकन्ने नवनीतप्रियाजीकी सेवा नहीं मांगी. कोईकु गोकुलचन्द्रमाजी पसन्द आये, कोईकु गोकुलनाथजी पसन्द आ गये, कोईकु मदनमोहनजी पसन्द आ गये तो वो क्या सब आसुर हते? ऐसे उल्टो नहीं सोचनो. यदि अपन् जाके गुसांईजीकु पूछेंगे तो वो क्या आज्ञा करेंगे के जो ठाकुर मैंने तुमकु पधरायो, वाके अलावा तुमकु कोई समझातो होय, उलटी पट्टी पढ़ातो होय के कोई अन्य परमतत्त्व हे तो वाकु **"आसुरान् तान् अहो बुधा:"** उनकु तुम असुर समझ लो. मोडस् ऑपरेन्डी वा तरीकेकी हे. अन्यथा ये गुसांईजीको वचन टोटली झूठो और टोटली सच्चो हे. पर कौनसे अर्थमें झूठो हे और कौनसे अर्थमें सच्चो हे वो तो अपनकु देखनो पड़ेगो.

और एक बात ध्यानसु समझो. स्वयं पुष्टिमार्गके साहित्यमें श्रीनाथजीकु और श्रीनवनीतप्रियाजीकु अलग मान्यो हे के एक हें? श्रीनाथजीकु कहीं भी 'यशोदोत्संगलालित' नहीं कहें हें और नवनीतप्रियाजीकु 'यशोदोत्संगलालित' कहें हें. तो तदन्यद् भये के नहीं? पर ये सब इश्यु सोचवेके नहीं हें यहां. सोचवेको इश्यु ये हे के मैंने जाकु अपनो सेव्य मान्यो हे, वासु अन्य मोकु कोई परम तत्त्व समझातो होय के हवेलीमें बिराजतो ठाकुरही परम तत्त्व हे, तुम्हारे यहां तो ऐसे ही दो-चार वोल्ट्को हे, दस वोल्टको **"तद् अन्यद् इति ये प्राहु आसुरान्"** या तथ्यकु समझो. ये बात सच्ची होय तो स्वयं महाप्रभुजी गुसांईजी झगड़ पड़ेंगे आपसमें और खुद गुसांईजीको एप्रोच् भी खुदसु टकरावे लग जायगो. शब्द तो एकदम साफ हें. तो अन्यकी रेन्ज् क्या? अब यदि अपन् यों कहें के अन्यकी रेन्ज्में ये सब नहीं आ रहे हें. जब ये सब नहीं आ रहे हें तो वैष्णवन्के ठाकुरजी क्यों आयेंगे? ये ठाकुरजी भी तो कोई न कोई बखत वैष्णवन्के घरन्में बिराज रहे हते. दो-चार ठाकुरजीकु छोड़ दो. एक श्रीगोकुलनाथजी और दूसरे श्रीमदनमोहनजी. बाकी तो सारेके सारे ठाकुरजी वैष्णवन्के घरन्में ही बिराज रहे हते. खुदके घरमें ही बिराजते ठाकुरजी परम तत्त्व होंय और वैष्णवन्के घरमें बिराजते ठाकुरजी परम तत्त्व नहीं होंय, तो ये सब ठाकुरजीकु परम तत्त्व मानवेवाले असुर हो जायेंगे. ऐसे थोड़े ही होयगो!! ये सोचवेके तरीका गलत हें. इन तरीकान्में नहीं सोचनो चहिये. याकु सोचवेको सच्चो तरीका कुछ और हे.

(ठाकुरजीके दृष्टिकोणसु सदसद्वासनाको नियमन)

सद्वासनाकी बात मैं समझा रह्यो हू. सद्वासनाकु गवर्न् कैसे

करनी? टॅकल् कैसे करनी? इश्यु ये हे के जो अपने माथे बिराज रह्यो **"तदन्यद् इति ये प्राहु"** वासु अन्य बतावेवालेकु आसुर समझो. वो आसुर हें के नहीं ये तुम्हारो सिरदर्द नहीं हे. पर तुमकु उनके साथ केयर् वा तरीकेकी लेनी चहिये के ये हमारे लिये भगवान्के द्वारा भेजे गये कोई आसुरी रूप हें जासु के हम मिस्–गाईड् हो जायें. वो तो भगवान् खुद भी मिस्–गाईड् करवेके लिये आसुरी रूप धारण करें. भगवान् बुद्धने भी तो कियो हे. हम कोईकी निन्दा थोड़े ही कर रहे हें! मिस्–गाईड् करवेके लिये तो भगवान् बुद्ध भी आसुरी रूप धारण कर लें. कोई बापा, कोई बापी, कोई गो.बा., कोई पू.पा. भी कर सके, वामें कोई चिन्ताकी बात नहीं हे पर जब **"तद् अन्यद् इति ये प्राहु आसुरान् तान् अहो बुधाः"** तुम्हारे माथे बिराजते ठाकुरजीसु अलग कोई परम तत्त्व हे, ऐसो कोई तुमकु समझातो होय, तो वाकु आसुर ही समझनो. मनकी डायरीमें ये लिख लो.

जैसे हमारे दादाजी बारीमेंसु देखते रहते के चरणस्पर्श करवेवालो आयो के चरणदंश करवेवालो आयो के चरणपेषण करवेवालो आयो, ऐसे देख लेनो के कौन आ रह्यो हे? जो आ रह्यो हे वाके हिसाबसु **"अधिकारी पांखे नहीं कोणे उच्चार"** ये पॉलिसी वामें समझनी चहिये. घबरावेकी जरूरत नहीं हे. कोई भी रूपमें आ सके. ''फिराक अक्सर बदल कर भेष, मिलता यहां काफिर. कभी हम जान लेते हैं कभी पहचान लेते हैं. बहुत पहलेसे उन कदमोंकी आहट जान लेते हैं. तुझे ऐ ज़िन्दगी हम दूरसे पहचान लेते हैं.'' खुदकी बात समझनी चहिये. वो कदमकी आहट होते ही

अपन्कु दादाजीकी तरह अलर्ट् हो जानो चहिये के आई कदमकी आहट. ''तुझे ऐ ज़िन्दगी हम दूरसे पहचान लेते हैं. बोहोत पहलेसे उन कदमोंकी आहट जान लेते हैं. क्योंके फिराक अक्सर बदल कर भेष मिलता है यहां काफिर.'' काफिर वेष बदलके मिले तो पता ही नहीं चले. याहीलिये सत्संगनिर्णय श्रीहरिरायजीने लिख्यो और येही इन्स्ट्रक्शन् दे रहे हें के चाहे बापा बापी गो.बा. गो.बे. होय सबको सत्संग करवेको पॅरामीटर् क्या हे? वो श्रीहरिरायजीने सत्संगनिर्णयमें अच्छी तरहसु बतायो हे, वाकु पढ़ लीजियो. वाको मूल कारण क्या? अपन्कु अपनी वासनाकु मॅनेज् कैसे करनो? ऐसे नहीं हें के अपन् कोईके साथ इन्टरएक्ट् नहीं करेंगे. अपन् गुफामें बैठके तो पुष्टिमार्गको अनुसरण कर नहीं सकें हें. समाजमें रहके पुष्टिमार्गको अनुसरण करनो हे. जब समाजमें रहके पुष्टिमार्गको अनुसरण करनो हे तो समाजमें सबके साथ इन्टरएक्शन्में इन्वोल्व् होनो ही पड़ेगो. इन्टरएक्शन्में इन्वोल्व् होनो एक अलग कथा हे और पहचाने बिना **मिश्रित चाली जाय** वामें मिश्रित हो जानो दूसरी कथा हे

क्योंके जब अपन् मिश्रित हो जा रहे हें तो महाप्रभुजीके गुसांईजीके प्राकट्यको प्रयोजन फॉल्सीफाई हो जाय और अपन् मिश्रित नहीं हो रहे हें, बिना मिश्रणके भी चल रहे हें. मतलब जैसे रोड्पे अपन् चल रहे हें तो अपने आप चल रहे हें. तुम अपने चलो हम अपने चलें फिर कोई चिन्ताकी बात नहीं हे. रोड् तो सबके लिये एक ही हे ना! बिना वजह टकरा रहे हो कोईसु या कोई तुमसु टकरा रह्यो हे तो कछु पाकिट मारवेको चक्कर हो सके हे. चेन् छीनवेको चक्कर होयगो. अरे भई! जरूरत क्या हे व्यर्थमें

टकरावेकी! इश्यु यामें सद्वासनाकु कैसे हॅन्डल् करनो और असद्वासनान्सु कैसे बचनो, ये ऊति कर्मवासनामें बतायो और वा तरहसु अपन् अपनी सद्वासनान्कु बराबर हॅन्डल् करें, अच्छी तरहसु हॅन्डल् करें. यामें देखो सद्वासना और असद्वासना कु हॅन्डल् करवेकी मॅथड् एक ही हे. अपने ऐसो अंहकार नहीं रखनो के अपनी सारी सद्वासनान्कु हॅन्डल् अपन् ही कर सकेंगे. अपने साथी भी कर सकेंगे. व्यर्थमें ऐसो निरपेक्षभाव भी नहीं रखनो के जाके जो कर्म होंय वो भुगतेगो, अपन्कु कोईकी चिन्ता नहीं करनी. क्योंके अपन् तो अपनी ही सोचेंगे. ऐसे नहीं हे. ये खुद एक असद्वासना हे के हम तो अपनी सोचेंगे, दूसरेकी काहेकु सोचें. वो भी एक असद्वासना हे क्योंके जब अपन् सबके साथ रह रहे हें तो सबके साथ चलो, साथ बोलो, एक दूसरेके मनकु अच्छी तरहसु पहचानो के वो क्या चाह रह्यो हे. **"संगच्छध्वं संवदध्वं संनो मनांसि जानतां देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते"** (ऋक्.सं.८।८।४८) देवतायें साथ चलके, साथ बोलके, एक दूसरेके मनकु अच्छी तरहसु पहचानके फिर क्या करते? जो हिस्सा जाको हे वाकु वो दो, मेरो हिस्सा क्या हे वो मोकु दो. कितनी मजेदार बात वेद कहे हे, **"देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते"** पुराने सब देव अपने आपकु ऐसे ही मॅनेज् करते हते. वो ऐसे नहीं करते हते के हम कोईके साथ नहीं चलेंगे, हम कोईके साथ बोलेंगे नहीं. अब बोल रहे हें और चल रहे हें तो ऐसे भी नहीं के वाके मनको क्या हे वो ताड़ेंगे नहीं. ताड़ो. जरूर ताड़ो. जाके साथ चल रहे हो, जाके साथ बोल रहे हो, वामें लफड़ा क्या हे वो ताड़ो. क्योंके वो नहीं ताड़ोगे तो अपनी उपासनान्कु अच्छी तरहसु मॅनेज् नहीं कर पाओगे.

तो **"देवा भागं यथा पूर्वं सञ्जानाना उपासते"** वो देवतान्की पॉलिसी हमेशा खेलवेकी; क्योंके मैंने आपकु बतायो के 'देव'को मतलब हे जो दिवि क्रीडा विजिगीषा मोद मद स्वप्न कांति गति में परायण होवे, वो देव हे. तो उनके खेलवेको जो तरीका हे वामें ये बात बाय् डिफॉल्ट् आ रही हती के जब खेलते हते तो जीतनो भी चाहते हते, राइवलरी भी करते हते, पर जो जाको भाग हे वो वाके पास जानो चहिये.

याहीलिये 'भक्तिजीवन'में श्रीगुसांईजीने बोहोत मीठी बात कही हे वो मैंने आपकु बताई. वो हे के "पुष्टिमार्गके बोहोत सारे दीक्षित व्यक्ति बोहोत ही उच्छृंखल व्यवहार कर रहे हें तो वाको क्या?" गुसांईजी वहां ये ही आज्ञा कर रहे हें के "उनकु आसुर समझो." **"आसुरान् तान् अहो बुधाः"** अब पुष्टिमार्गमें आ गये तो आसुर कैसे हो सकें हें?

वो एक अलग कथा हे. वो मॅटाफिज़िकल् एप्रोच्की कथा हे. मॅटाफिज़िकल् एप्रोच् एक अलग कथा हे और सोशियल् केयर् एक अलग हे. अपने पुष्टिसम्प्रदायकी केयर् ले रहे हें वो एक अलग हे. मॅटाफिज़िकल् केयर् एक अलग हे. मॅटाफिज़िकल् सिस्टम्में कौन देव हे, कौन असुर हे, वो वा स्वतन्त्रक्रीड़ा पुरुषोत्तमको अफेयर् हे. अपनो अफेयर् नहीं हे. पुष्टिसम्प्रदायमें कौन असुर हे, कौन असुर नहीं हे, वो बोहोत नॅरो फोकस्में करी जाती बात हे. जो अपन्कु अपने या मार्गसु पदच्युत् कर रह्यो हे वो असुर हे. वा पुष्टिमार्गकी व्यापक बॅक्ग्राउन्ड्में वो असुर नहीं भी होय, पर या पुष्टिसम्प्रदायकी

छोटीसी बॅक्ग्राउन्ड्में वाको रोल् असुरताको आ रह्यो हे. करके उनकु यहां 'आसुर' कह्यो हे. गुसांईजीने खुद उनकु वहां 'आसुर' कह्यो हे. पर साथमें ये भी बता रहे हें के तालीबान बनके अपन् उनको गला काटवे नहीं जायें करके गुसांईजी एक आज्ञा और करें हें **"भ्रान्तः चेद् भवति प्रायः स 'प्रावाहिक' उच्यते तस्मात् प्रावाहिकि भक्तिः न कर्तव्या कदाचन, विचारोऽत्र न कर्तव्यः श्रीमदिच्छा बलीयसी, लोकसंबंध–सदृशी जायते रुचिः, भक्तैः चिन्ता न कर्तव्या श्रीमदिच्छा यतोऽचला.**" (भ.जी.७–९) वो आसुर हें तो वाकी चिन्ता तुम मत करो. तुम अपनी चिन्ता करो. क्योंके प्रभु वा तरहसु कछु लीला करनो चाहतो होयगो! याकेलिये वाकी चिन्ता तुम मत करो. वो आसुर हें समझके चिन्ता छोड़ो. आसुर हें वाकी चिन्ता मत करो." देखो दोनों बातन्में बोहोत फर्क आ गयो. **सरसवचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार** हो जाय. वो आसुर हें ये बात चिन्ता करवेके लिये नहीं हे. वो आसुर हें वो तुम अपनी लाईफ्–स्टाईल्में चिन्ता छोड़वेके लिये उपयोगमें लाओ. अन्यथा तुम हर बखत ऐसे कहोगे के बड़े बड़े आसुर हें तो फिर हम क्या? ये तो फिर चिन्ताको विषय हो गयो. **"गजा यत्र पलायन्ते मशकानान्तु का कथा!"** जहां हाथी भागते होवें वहां मच्छर नहीं भागेंगे वाकी गॅरेण्टी क्या? अरे भई! भाग जायगो हाथी जब वाकी सूंडमें चेंटी चढ़े. मच्छर भी सूंडवालो होवे हे पर मच्छरकी सूंडमें चेंटी चढ़ ही नहीं सके तो मच्छर काहेकु भागेगो?

सामान्य कथा ऐसी हे के **"गजा यत्र पलायन्ते मशकानान्तु का कथा!"** अरे भई! चेंटी वाकी सूंडमें नहीं घुस रही या लिये नहीं

भाग रह्यो हे, बैठ्यो रेहनो चहिये दमखमसु. मच्छर भये तो क्या भयो? ऐसो कॉन्फिडेन्स् होनो चहिये. ये कॉन्फिडेन्स् मर्यादामार्गीयकु होनो चहिये, ये कॉन्फिडेन्स् पुष्टिमार्गीयकु होनो चहिये. सच बात तो यहां तक हे के यदि अपन्कु भगवान्की स्वतन्त्रक्रीड़ापे विश्वास पूरो-पूरो हे तो ये कॉन्फिडेन्स् प्रवाहमार्गीयकु भी होनो चहिये.

अपन् देख सकें के उन असुरन्ने देवतान्सु कॉम्प्रोमाईज़् नहीं करी. वृत्रने कॉम्प्रोमाईज़् नहीं करी ये जानते भये भी के मेरो भगवान् दूसरेके फेवर्में हे. ये जानते भये बलिने कॉम्प्रोमाईज़् नहीं करी के मेरो आराध्य भगवान् उनके फेवर्में हे. अब फेवर्में हे तो हे वामें क्या करें हम? लड़ाई ठन गई हे तो ठनी भई हे. ये ब्युटी हे. भगवान् उनके फेवर्में हे या लिये वाकु भगवान् नहीं मान्यो ऐसी बात नहीं हे. जो देवतान्को फेवर् ले रह्यो हे, वा भगवान्कु भगवान् भी मान्यो और लड़ाई भी ठानी हे. ठीक हे, तुम्हारे फेवर्में हें तो देवताकु तो और भी ताकत आनी चहिये मोसु लड़वेकी. इन्द्रकु ऐसी झाड़ लगाई वृत्रने के ''पोदड़ा हे के मांको जायो हे?'' इतनी हिम्मत होनी चहिये प्रवाहमार्गके भी अनुसरण करवेमें यदि अपन् स्वतन्त्रक्रीड़ा पुरुषोत्तमकी मानते होंय. जहां नॅरो फोकस् हो रह्यो हे, वहां ये सब चिन्तायें करवेकी जरूरत नहीं हे. वहां अपनो बोहोत नॅरो फोकस् हे. वा नेरो फोकस्में अपन्कु इतनो ही सोचनो चहिये के अपन् जा मार्गपे चल रहे हें, वापेसु जो भी अपन्कु विमुख कर रह्यो हे, हम तुमकु आसुर तरीके ट्रीट करेंगे. तुम आसुर हो के नहीं हमकु क्या पता? पॉलिसी समझमें आई ना? वासना सद्वासना और असद्वासना कु हॅन्डल् करवेकी पॉलिसी ये

बतानी चाह रहे हें. वो ठाकुरजीके संदर्भमें भी बताई हे, सत्संगीके संदर्भमें भी ये ही बताई हे.

(सत्संगके दृष्टिकोणसु सदसद्वासनाको नियमन)

जहां भी सत्संगकी बात आई हे वहां हर बखत ये ही इश्यु सामने आयो हे के सत्संगमें अपन्कु पॉलिसी ऐसी ही रखनी चहिये के जासु अपनी सद्वासना बढ़े और असद्वासना घटे. वाही लिये रामदास मीराकु छोड़के क्यों आ गये? मीरा तो कृष्णभक्त हे. बल्कि कृष्णके विरहकी मूर्तिरूपा मीरा हे. जा कृष्णविरहकी दीक्षा अपन् अपने ब्रह्मसम्बन्धमें दे रहे हें वा विरहकी मूर्तिरूपा मीरा हे. हे तो हे पर रामदासकु उनके पथसु विमुख करती होय तो वाको त्याग कियो. कोई कृष्णभक्त हे तो वो मेरो थोड़े ही सिरदर्द हे. तू हे के नहीं ये मेरो सिरदर्द नहीं हे पर मेरो हॅडेक् ये हे के मैंने जो पथ चुन्यो हे वा पथसु मोकु विमुख नहीं होनो हे. याको नाम 'निष्ठा' हे. ये विषय श्रद्धा और विश्वास को नहीं हे. ये निष्ठाको विषय हे. जब अपन्ने अपनी वासनाके अनुसार कोई धर्मको निर्धारण कियो **''कर्मनिष्ठा तदा ज्ञेया यदा चित्तं प्रसीदति. ज्ञाननिष्ठा तदा ज्ञेया सर्वज्ञो हि यदा भवेत्. भक्तिनिष्ठा तदा ज्ञेया यदा कृष्णः प्रसीदति.''** (त.दी.नि.१।१७) वो भक्तिनिष्ठाको इश्यु हे. जहां वासनाके बाद धर्मको इश्यु आ रह्यो हे वो बिना निष्ठावालो धर्म एज़ गुड् एज़ नो धर्म. निष्ठासहित धर्म ही धर्म हे. श्रद्धा तो इनिशियली सबमें चहियेगी. सोवेमें जगवेमें खावेमें मरवेमें सबमें श्रद्धा चहियेगी. श्रद्धाको इश्यु मेजर् नहीं, बोहोत ही माइनर् इश्यु हे. क्योंके श्रद्धा तो तुम्हारे दिलमें रह्यो भयो एक एडवेन्चर् हे. जा चीजकु तुम पूरी तरहसु

नहीं जान रहे हो, जा चीजकी पूरी अवेयरनेस् तुम्हारे पास नहीं हे, वाके बारेमें तुम्हारेमें जो स्वीकृतिको एडवेन्चर्को भाव हे वो श्रद्धा हे. जाकु तुमने अच्छी तरहसु जान लियो हे, वाके जानवेके बाद श्रद्धा इश्यु नहीं हे. अब इश्यु निष्ठाको हे. या लिये महाप्रभुजी आज्ञा करें हें **''निष्ठाभावे फलं तस्माद् नास्त्येवेति विनिश्चयः. निष्ठा च साधनैरेव न मनोरथवार्तया.''** (त.दी.नि.१।१८) मनोरथ वार्तासु बैठके गप्प मारवेसु निष्ठा नहीं होवे हे, मनोरथ करवेसु निष्ठा पैदा नहीं होवे हे, निष्ठा तो जो बात तुमकु धर्म तरीके स्वीकार्य हे **''यो हि गुरुः कृष्णसेवाम् उपदेक्ष्यति स स्वयं चेत् ताम् उत्तमां जानीयात् तदा कथं न स्वयं कुर्यादिति सेवापर एव गुरुः''** (त.दी.नि.प्र.२।२२७) यहां महाप्रभुजी निष्ठाकी बात कर रहे हें. कृष्णसेवोपदेश करता हे, कृष्णसेवोपदेशकी तत्त्वज्ञता हे, सब कछु है पर वामें निष्ठा हे के नहीं? वाकु श्रद्धा भी हो सके पर निष्ठा हे के नहीं हे, या बातकु तो चॅक् करो!

अभी कोईने प्रश्न कियो के हमकु कैसे पता चले के क्या करनो? अरे भई! पता ऐसे ही लगानो के जा बातको उपदेश कर रह्यो हे वामें वाकी निष्ठा हे के नहीं? वाकी वामें निष्ठा नहीं हे, श्रद्धा हो सके वाकी वामें अपन् इन्कार नहीं करें. कछु बापा बापी की तरह, कछु गो.बा. गो.बे. की तरह एक्ट् करतो होयगो तो विश्वास भी वामें होयगो. वो सब सॅकन्ड्री इश्यु हें. धर्म निर्धारणमें प्राइमरी इश्यु **''निष्ठाभावे फलं तस्माद् नास्त्येवेति विनिश्चयः. निष्ठा च साधनैरेव न मनोरथवार्तया.''** 'निष्ठा'को मतलब हे कमिटमेन्ट्. जो तुम केह रहे हो वासु तुम कमिटेड हो के नहीं? तुम मर्डर्की

बात कर रहे हो तो तुम कमिटेड् क्रिमिनल् हो तो अच्छी तरहसु समझ्यो जा सके. कमिटेड् सत्य भी नहीं बोलतो होय तो पता कैसे लगे अपन्कु के क्या बोल रह्यो हे? सत्य कब बोल रह्यो हे और झूठ कब बोल रह्यो हे. इश्यु ये नहीं हे के वो सच बोल रह्यो हे के झूठ बोल रह्यो हे पर वाकी कमिटमेन्ट् क्या हे? कमिटमेन्टसु वा व्यक्तिको पता चले. वहांसु वाकी वासनान्कु अपन् हॅन्डल् कर सकें. कमिटमेन्ट् कैसे हें. कोई कोईके मनमें तो देख नहीं सके, कोई कोईके अन्तर्मनकी जान नहीं सके, पर थोड़े दिन भी साथ रहो तो वाके कमिटमेन्ट् कैसे हें वो पता चल जाये. साथ भी नहीं रहें, दूरमें भी पता चल जाये के कमिटमेन्ट् हे के नहीं? वाके लिये कोई बोहोत बड़ी माइक्रोस्कोप् या टेलिस्कोप् लावेकी जरूरत नहीं हे, खाली अपनी आंख खुली रखवेकी जरूरत हे के जो बात ये केह रह्यो हे वासु ये कमिटेड् हे के नहीं!

कमिटेड् हे तो अपन्में वो सद्वासनान्कु बढ़ावेवालो होयगो. खुद ही अन्कमिटेड् हे, अपन् वाके साथ सत्संग भी करेंगे ना, बात सच्ची भी कहतो होयगो, जरूरी नहीं हे के बात झूठी कहे, पर वो कहीं न कहीं, क्योंके खुद नॉन्-कमिटेड् हे, वो अल्टीमेटली अपन्कु भी नॉन्-कमिटेड् बना देगो सत्संग कराके. यामें केयर् लेवेकी बात हे वो या बातकी हे, ये बड़े फ्रेमकी बात नहीं हे. देखो मैं फिरसु रिमाईन्ड् करा रह्यो हूं, वो स्वतन्त्रक्रीड़ामें याको पिक्चर् बॅक्ग्राउन्ड्में कछु अलग हे और यहां जो अपन्ने एक फोकस् कियो हे वा धर्मके प्रति वाकी निष्ठा हे के नहीं? वा धर्मके प्रति कमिटेड् हे तो वा धर्मके लिये वाको सत्संग कियो जा सके.

वा धर्मके प्रति जो कमिटेड् नहीं होय वाको वा धर्मकु बढ़ावेके लिये, अभिवर्धनके लिये वाको सत्संग नहीं करनो चहिये. याही लिये श्रीहरिरायजीकु पढ़ोगे तो शिक्षापत्रमें यहां तक कहें हें के बोहोत शुद्धाद्वैत छांटतो होय तो वाको भी संग दु:संग हे. क्यों? शुद्धाद्वैत तो महाप्रभुजीने कह्यो हे. जो शुद्धाद्वैत महाप्रभुजीने कह्यो वाकु कहवेवालो दु:संगी कैसे होयगो?

भई कमिटेड् हे के नहीं? महाप्रभुजीने शुद्धाद्वैतको कन्क्ल्युज़न् क्या लियो हे, **"अतस्तु ब्रह्मवादेन कृष्णे बुद्धिः विधीयताम्."** (सि.मु.११) ब्रह्मवादको कन्क्ल्युज़न् **"कृष्णे बुद्धिः विधीयताम्"**कु नहीं लेके कछु और अलग चीजन्में अपनी बुद्धिकु लगातो होय तो वो ब्रह्मवादी होयगो, अपन् कैसे इन्कार कर सकें के वो ब्रह्मवादी नहीं हे, अपन् कैसे इन्कार कर सकें के वो विद्वान नहीं हे, अपन् कैसे इन्कार कर सकें के वो सदाचारी नहीं हे? कोईको सदाचारी होनो, कोईको विद्वान होनो, कोईको ब्रह्मवादी होनो, ये पॅरामीटर् नहीं हें क्योंके तुम क्या करनो चाह रहे हो? वामें तुम पहले अपने कमिटमेन्ट्कु देखो. वा तरीकेको वा धर्मके प्रति वाको कमिटमेन्ट् हे तो तुम्हारी सद्वासना बढ़ेगी और वा धर्मके प्रति वाको कमिटमेन्ट् नहीं हे तो तुम्हारी असद्वासना बढ़ जायगी. बड़े फ्रेम्में नहीं, आसुरके फ्रेम्में. जैसे मैंने आपकु याही लिये **"आसुरान् तान् अहो बुधाः"** नवनीतप्रियाजीके दृष्टिकोणसु भी समझायो और पुष्टिमार्गमें जो हें उनके दृष्टिकोणसु गुसांईजी दोनोंन्कु आसुर केह रहे हें. क्यों केह रहे हें या बातकु ध्यानसु समझो. यदि तुमने विदाउट् कमिटमेन्ट् या अन्कमिटेड् कोई बात करी हे तो वो तुमकु कहीं न कहीं

मिस्–गाईड् करेगी. इश्यु या तरीकेको हे.

(सद्वासना भी अनियंत्रित होवेपे असद्धर्मको रूप लेवे)

यद्यपि गुसांईजीने कहीं नहीं कही हे पर महाप्रभुजीने खुलके या बातकु कही हे के **"ज्ञानमार्गो भ्रान्तिमूलः तस्मात् कृष्णं भजेद् बुधः"** अब ज्ञानमार्ग यदि भ्रान्तिज्ञानमूल हे तो वा परिभाषाको क्या होयगो के **"माहात्म्यज्ञानपूर्वस्तु सुदृढः सर्वतोधिकस्नेहो भक्तिः."** माने **"भ्रान्तिमूलः सुदृढः सर्वतोधिकस्नेहो भक्तिः"** हो सके हे! सवाल ये नहीं हे. ज्ञानमार्गमें जो कमिटेड् हे, वाकु महाप्रभुजी स्पष्ट आज्ञा कर रहे हें के मुक्ति मिलेगी. ब्रह्मको सायुज्य मिलेगो. या विषयको बोहोत खुलासासु भागवत तो दो कदम आगे बढ़के और केह रही हे के ज्ञान और भक्ति दोनों मेरे बारेमें होंय तो निर्गुण हें. दोनों बराबर हें. मेरो ज्ञान और मेरी भक्ति के बारेमें कोई ज्ञान या कोई भक्ति हे तो ज्ञान भी निर्गुण हे और वो भक्ति भी निर्गुण हे. उनको एक ही अर्थ हे यहां तक भागवतकार केह रहे हें. **"द्वयोरपि एक एव अर्थः"** (भाग.पुरा.३।३२।३२) दो अर्थ नहीं हें. जब एक अर्थ हे तो फिर ज्ञानमार्ग भ्रान्तिमूलक कैसे हो सकेगो? सवाल ये नहीं हे पर सवाल ये हे के तुमने ज्ञानमार्ग चुन्यो हे तो भक्ति भी असद्वासना पैदा करेगी. यदि तुमने भक्ति चुनी हे तो ज्ञानमार्ग भी असद्वासना पैदा करेगो. डेलीकेसी समझमें आई ना इश्युकी?

तुमने क्या चुन्यो है, पहले ये तो नक्की करो! वासु तुम वासनान्कु मॅनेज् कर सकोगे. जब वासनायें वॅल्मॅनेज्ड् होंयगी तभी धर्मको अनुष्ठान हो सके. वासनायें यदि अन्–मॅनेज्ड् रहीं, अन्–

मॅनेज्ड् वासना भले सद्वासना भी होय ना, वो कहीं न कहीं अधर्मको कारण बनती होवे हे. पुष्टिमार्गकी बल्क् ऑफ् द् प्रोब्लेम्, ठाकुरजीको निरन्तर सुख विचारवेकी वासना, ठाकुरजीके दर्शन करवेकी वासना, झांकी करवेकी वासना, अच्छी बातें हें, कोई बुरी बात नहीं हे. कोई बेवकूफ ही याकी निन्दा करेगो. पर ये अनमॅनेज्ड् होनेके कारण विकराल रूप ले चुकी हें. इनको मॅनेज्मेन्ट् जो बतायो हे. वा तरहसु अपन् नहीं कर पाये सो सद्वासना भी कहीं न कहीं अधर्मको कारण बन गयी. जैसे गुब्बाराकु अपन् ऊंचे उड़ा दें तो वो गुब्बारा एक ऊंचाई तक ऊपर जावे और वाके बाद वो फूट जावे हे. अपन्कु पता होनो चहिये के गुब्बाराकु उड़ानो हे तो कौनसी ऊंचाईपे वाकु जावे ही नहीं देनो तब तो तुम मॅनेज् कर रहे हो गुब्बाराकु. और डोबाकी तरह बस ढील छोड़ते ही जा रहे हो तो एक ऊंचाईपे पोहोंचते ही वो गुब्बारा फूट जातो होवे हे. ये रहस्य हे वा अन्मॅनेज्ड् वासनाको. मैं वासना नॅगेटिव् सेन्स्में नहीं केह रह्यो हूं, पॉज़िटिव् सेन्स्में केह रह्यो हूं. वर्च्युअस् सेन्स्में केह रह्यो हूं. वर्च्युअस् वासनाकी ये गति होवे हे. हर बखत अपन्कु या बातकी केयर् लेनी बोहोत जरूरी हे के अपनी निष्ठा अपनी वासनाके आधारपे चॅक् करनी चहिये.

जब अपन् निष्ठाकु चॅक् करें और जब वाको धर्मके साथ योजन करें हें, तब वो सद्धर्म होवे हे. नहीं तो धर्म भी असद्धर्म हो सके हे. जैसे यमुनाजीकु दूध चढ़ानो, गिरिराजजीकु दूध चढ़ानो, अन्मॅनेजेबल् सद्वासना बढ़ा ली, दूध नहीं हे तो यूरिया चढ़ा रहे हो तुम. जोश आ गयो के दूध चढ़ाओ. उतनी गायें नहीं हें व्रजमें

जितनो दूध अपन् चढ़ा रहे हें. अकल तो वापरे के नहीं आदमी! जब इतनी गायें हें ही नहीं व्रजमें तो तुम इतनो दूध चढ़ा कहांसु रहे हो! लावेवालो ला कहांसु रह्यो हे? एक सद्वासना अन्मॅनेजेबली इन्स्टिगेट्ड् हो गई हे. वा इन्स्टिगेशन्के कारण **गिरिराजधरणनो ताप टाळ्यो** के बजाय गिरिराजधरणनो ताप बाढ़्यो हो गयो हे.

तुमकु कोई यूरियासु नहवावे तो तुम्हारे क्या हाल होंयगे? तुमकु पता हे अच्छी तरहसु के यमुनाजी बह नहीं रहीं हें. दिल्लीकी गटर बह रही हे. सवालाख कमल चढ़ाओ. अरे वो पहलेसु ही पॉल्युटेड् हे तो वामें सवालाख कमल और चढ़ा दोगे तो ज्यादा पॉल्युशन् बढ़ जायगो, सड़ जायगो जल. अरे भई! एक व्यक्ति जो खुदको कमल चढ़ा रह्यो हे वो सफिशियेन्ट् हे. एजेन्सी खोलके हमने सवालाख कमल चढ़ावेको मनोरथ कियो हे. आज सुरभीकुण्डमें गोविन्दकुण्डमें, कोई कुण्डकी इतनी ताकत नहीं हे के कमलकी सड़ी भई इतनी पत्तीन्कु वो ट्रांसफॉर्म कर सके! कमल चढ़ावेके कारण कुण्डें सड़ जायेंगे. स्नानयात्राको जल कभी घरमें रखके देखो. चार दिन पांच दिन छः दिन अन्तमें वो अपनो स्वरूप बदल देगो. वामें अपन्ने कोई गलत चीज डाली नहीं हे, फूल ही फूल डाले हें, केसर डाली हे, सड़ क्यों जा रह्यो हे? क्योंके वो पानीकी जो मात्रा हे, वो फूलन्के मकरंदकु कितनी देर अपनेमें बिना सड़े रख सके हे, वाकी भी एक सीमा होवे हे. बेकारमें वाकु बढ़ाओ, बढ़ाओ तो वामें गटर्के जैसी बास आवे लग जाय. प्रयोग करके देख लीजियो.

क्यों आवे? क्योंके तुमने अन्‌मॅनेज्ड्‌ वासना बढ़ाई. एक्च्युअली अपने यहां पुराने जमानामें स्नानयात्राके ताजे जलसु मट्‌टीके पेड़ा बना लेते और फिर इतने दिन स्नानयात्राको जल चले नहीं तो कोई नुकसानकी बात नहीं. वा स्नानयात्राके जलकु मट्‌टीके पेड़ामें मिलाके रखते और वो मट्‌टी अपन्‌ लेते. वो स्नानयात्राको जल अपन्‌कु बारह महीना मिलतो. ये जो अपन्‌ चरणामृत लेवें वाको मूल (ओरिजिन्‌) ये हे. वो पेड़ा अपन्‌ अपनी शुद्धिके लिये लेते बारह महीना चरणामृतके तरीके. क्यों? वाकी मॅनेज्‌मेन्ट्‌की प्रोसीजर्‌ ये हे सद्‌वासनाकी. ये सब आड़ी टेढ़ी बात नहीं बता रह्‌यो हूँ. ये सारे मॅनेजमेन्ट्‌के प्रकार हें. ठाकुरजीके स्नानको प्रसादी जल फेंक्यो भी नहीं जाय, यदि डालनो ही हे तो तुलसीक्यारामें वाकु पिवानो चहिये. फेंक्यो भी नहीं और इतने बखत रहे भी नहीं तो वाकु मॅनेज्‌ करो. जल सड़े भी नहीं जासु जलमें तुमकु कोई अभाव आवे. वा स्नानयात्राके जलकु बारह महीना लेवेको तुम्हारो जो एक सहज मनोरथ हे के प्रभुने या जलमें स्नान कियो हे, याकु मैं बारह महीना लऊं. ये एक सिस्टम्‌ हती सद्‌वासनाकु बढ़ावेकी.

वामेंसु असद्‌वासना भी बढ़ जाय के स्नानयात्राके जलकु मट्‌टीमें मिलावेके इतने रुपया, वाके पेड़ा बांधवेके इतने रुपया, पेड़ा बेचवेके इतने रुपया, अपराध कौनको भयो? वो गुल होनो ही अपराध हो गयो. ''गुल होना ही गुनाह न बन जायेगा कभी.'' अरे इतनी सुन्दर बात, महाप्रभुजी क्या केह रहे हें **"श्रम–जलाणुभि: सकल–गात्रजै: संगम:"** (यमु.८) वो सिहरन होवे अपनकु पेड़ा लेवेपे के जा जलमें ठाकुरजीने स्नानविहार कियो हे, वो अपन्‌कु

बारह महीना अवेलेबल् होनो चहिये. वो पुष्टिमार्गमें कितनो अच्छो खिल्यो भयो गुल हे, ''वो गुल होना ही गुनाह न बन जाये कभी. गर बेदिलीसे पेश करने लगे सभी'' ये स्थिति हो गई हे. माने स्नानयात्राको जल भरवेमें न्यौछावर, वाकु मट्टीमें मिलावेकी न्यौछावर, वाकु पेड़ा बांधवेकी न्यौछावर, इतनी न्यौछावर लेवेके बाद भी संतोष नहीं. वाके बाद पेड़ा बेचवेकी और न्यौछावर. अब बाकी कितनो रह्यो? तुम्हारे मौहड़ामें डालवेकी न्यौछावर और लो. इन्-डायरेक्ट् टॅक्स् (जैसो) के ये एक पेड़ा च्युंटी च्युंटी करके कितने बखत मौहड़ामें डाल्यो जा सके हे, वाको सर्विस् टॅक्स् एडीशनल्!

यों अन्-मॅनेज्ड् सद्वासनामेंसु ही सारो अधर्म निकले हे. बरसन, जितने भी गुसांई बालक हते वो अपनेपे आक्षेप सहन करते हते के गुसांई बालक मूर्ख हें, या डरके मारे भागवतसप्ताहमें बिचारे भाग नहीं लें. व्रजरायजी ऐसे विद्वान के एक वल्लभाख्यानकी कड़ी बोलो तो दस भागवतके वचन क्वोट् करें; ऐसे-ऐसे विद्वान बालक भी भागवतसप्ताहमें भाग नहीं लेते. भागवतकथाकारने नेहलेपे देहला क्या चला दियो? वैष्णवन्कु पकड़्यो. कौनने? पुष्टिमार्गीयन्ने नहीं हों. गैर-पुष्टिमार्गीयन्ने के तुम्हारे बाप मर गये तो उनको वैकुण्ठ पोहोंचानो हे के नहीं? अब ये सद्वासना बढ़ गई मां-बापकु वैकुण्ठ पोहोंचावेकी. **''स्थितिः वैकुण्ठविजयः.''** (भाग.पुरा.१०।२।४) उनकु पोहोंचावेके लिये भागवतसप्ताह करो. अब वो वासना बढ़ी. अपने कर्मन्सु जायगो के नहीं जायगो वैकुण्ठमें! वामें मैं क्या करूं? मेरो बाप हे, मेरी मां हे, मोकु आदरणीय हे, अब वो वैकुण्ठमें

जाय के नरकमें जाय; इतनो विश्वास अपनेमें क्यों नहीं होनो चहिये? दूखती नस दबा दी. घरमें साथ रहवेके कारण अपन्कु भी पता होवे के कछु न कछु गिलिन्डरी तो मां-बापने भी करी ही होवे. भले होंय बापुजी. पर कछु न कछु एक्स्ट्रा कॅरिकुलम् एक्टिविटी तो करते ही हते, अपन्ने तो देखी ही हे. तो अपन्कु पूरो विश्वास भी नहीं होय के फिर मरवेके बाद कहां गये होंयगे? करो भागवतसप्ताह; करके भागवतसप्ताह शुरु हो गई. वामेंसु एक पूरो बारह महिनाको धन्धा फलफूल गयो. वा फलफूलवेके कारण वैष्णवन्को झुंडको झुंड वहां टर्न हो गयो. आज ये हालत हो गई के गोस्वामी बालकें जिनकु महाप्रभुजी ये आज्ञा करते हते के यामें एक महान दोष हे के भागवतको कमाईके लिये उपयोग नहीं होनो चहिये पर महाप्रभुजीकी खुदकी औलाद भागवतकु कमाईके तरह उपयोग करवे लग गई. ये हे अन्-मॅनेज्ड् सद्वासनाको चमत्कार! बोहोत सारे सम्प्रदायके भागवत वक्ता ऐसे हें के जो नहीं ले हें पैसा और महाप्रभुजीकी औलाद भागवतको पैसा ले रही हे! अपन् क्या केह रहे हें, हें तो महाप्रभुजीके वंशज ही. बालक सब ब्रह्म जानिये. अरे बालक दारू पिलाये या पिलवाये तो पीओगे क्या? दारु तो थोड़ी अशुद्ध हे पर ये भागवतकथा पैसाके लिये कहनी तो महान अशुद्ध हे. यामें अन्-मॅनेज्ड् सद्वासना बढ़ गई.

(सदसद्वासनाकी योगरूपता)

जा बखत सद्वासना होय या असद्वासना होय वाकु जब आउट् ऑफ् प्रपोर्शन् बढ़ावें हें, वा लेवल् तक वाकु इन्स्टिगेट् करें हें के जा लेवल्पे वो अपनेसु मॅनेजेबल् नहीं रह जाती होंय तो वो

गुब्बाराकी तरह फूट जाती होवे हे, एक निश्चित ऊंचाईपे जावेके बाद. ये नॅचरल् फोर्स हे. कोई भी चीज जब व्यर्थमें इन्स्टिगेट् करी जाय हे तो **"सर्वे रोगा: हि जायन्ते वेगोदीरणधारणात्."** जो आवेग तुम्हारेमें नॅचरली नहीं हे वाकु तुम यदि बढ़ाओगे तो कोई न कोई रोग खड़ो हो ही जायगो. जो आवेग जा बखत पैदा होवे हे वाकु वा बखत कोई तरहसु दबाओ तो वाकु दबावेके कारण ही वो कोई रोग खड़ो कर देगो. बोहोत सारे डॉक्टर् या बातकु कबूल करते होंयगे के अपन् बोहोत पेशाब रोकें तो वाके कारण पथरी पैदा होवे. सिटी लाईफ्की ये प्रॉब्लेम् हे के अपन् कहां पेशाब करें! अब गैरजरूरी रोकें वाके कारण भीतर क्रिस्टल् बनते होंय. वो स्टोन् बनके पाछे ब्लॉक् करवे लग जाय. **"सर्वे रोगा: हि जायन्ते वेगोदीरणधारणात्."** हर बातको ये ही प्रिंसिपल् हे. वो चाहे शारीरिक मानसिक नैतिक धार्मिक होंय, जो आवेग अपने आ रहे हें, उनकु अन्-नॅचरली दबानो या जो आवेग आ रहे हें उनकु अन्-नॅचरली इन्स्टिगेट् करनो, वासु ही सारे रोग पैदा होवें हें. उन आवेगन्को मॅनेज्मेन्ट् क्या हे? सद्वासना और असद्वासना सु तुम कर सको हो वा तरहसु तुम करो, वा तरहसु तुम वाकु आउट्लेट् दो, जब तुम वाकु वा तरहसु मॅनेज्ड् आउटलेट् दे रहे हो, तो वो कोई रोगको कारण नहीं बनके योग बन जायगो. **"युक्ताहार-विहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु युक्त-स्वप्नावबोधस्य योगो भवति दु:खहा."** (भग.गीता.६।१७) जब तुम्हारे सोवेमें जागवेमें खावेमें और मलविसर्जनमें युक्तता हे तो सारे दु:खको निवारण करनेवालो योग हो जायगो और जा बखत अयुक्तता भई माने अन्नॅचरल्

इन्स्टिगेशन् अथवा अन्नॅचरल् सप्रेशन्, वो दोनों रोगके कारण बनें हें. ये सद्वासना या असद्वासना मेंसु ऊतिके जो रेसिड्च्युअल् हें, उनमें ऊतिके अध्यायमें तो अपन्ने ये बात देखी के सद्वासनाकु प्रमोट् करनी चहिये, असद्वासनाकु सप्रेस् करनी चहिये. पर पाछो वाको लेवल् समझनो चहिये.

(निष्ठाकी महत्ता और धर्मरूपता)

लेवल् कैसो समझनो चहिये के अपने लिये वामेंसु क्या धर्म हे? जो धर्म हे वाकु अपन्कु निष्ठासु करनो चहिये. मेरी सद्वासना मोकु कहती होयगी के ये भी कर ले वो भी कर ले, पर सब करवे जाऊंगो तो कछु भी नहीं हो सकेगो ना! करनो क्या चहिये? जा धर्मसु मैं कमिट् हो सकतो होऊं, जा धर्मकी मेरेमें निष्ठा पनप सकती होय, वो धर्म मोकु पकड़नो चहिये. बाकी धर्म तो पचास हें. एक धर्मकु पूछवे जाओगे, सौ धर्म मिलेंगे के ये भी करनो चहिये, वो भी करनो चहिये. पर भई कमिटमेन्ट् तुम कितनेके साथ निभा रहे हो? यदि तुम कमिटमेन्ट् नहीं निभा सक रहे हो, जब तुम्हारी निष्ठा वा धर्ममें तुम पैदा नहीं कर सक रहे हो, तो एक बात समझ जाओ के **"निष्ठाभावे फलं तस्माद् नास्त्येवेति विनिश्चय:"** (वहीं) वो धर्म सच्चो भी होयगो पर तुम्हारे लिये धर्म नहीं हे. तुम्हारे लिये वो अधर्म या परधर्म हे. क्योंके निष्ठाविहीन धर्म जब तुमने कोई कियो तो वो तुम्हारे लिये धर्म नहीं रह गयो. निष्ठाके साथ जब तुमने कोई धर्म कियो तो वो तुम्हारे लिये धर्म हे. ये ही सद्धर्मपालनकी मोडस् ऑपरेन्डी हे. या तरीकेकी समझ जो धर्मके मार्गपे अग्रसर होनो चाहे वाकु समझानी

चहिये. भई तुम्हारी निष्ठा कहां प्रकट हो रही हे.

जैसे परेकु जब श्रीनाथजीने आज्ञा करी के ये भोजन कम हो रह्यो हे तब परेने जाके झगड़ा कियो के जो परे मोकु दियो हे वाकी एक पातल और दो. गुसांईजीकी तरफसु एन.ओ.सी. मिल गई के हां दे दो पातल. एक परेकी और एक परेभैयाकी, दो पातल. अब वो श्रीनाथजीको प्रसाद हे पाछो. अब परेभैया और श्रीनाथजी एक हें के अलग हें? वा परेकु श्रीनाथजीकी पड़ी नहीं हे. निष्ठा वाकी कहां हे? वाकी निष्ठा श्रीनाथजीके प्रति नहीं हे. वाकी निष्ठा अपने परेभैयाके प्रति हे. मेरे परेभैयाको पेट नहीं भर रह्यो यासु दो पातल दो. गुसांईजीने कही हां याकु दो पातल दे दो. याके परेभैयाको पेट नहीं भरे. वो वहां कमिटेड् हे. वाकु वार्ता कितने अच्छे ढंगसु समझा रही हे. ब्रजसु सूरत तककी यात्रा परेभैयाके साथ कैसे वाने कर ली वो मिरेकल् हे. वाको कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं सामर्थ्य हे.

या बातकु ध्यानसु समझो के निष्ठा कैसे पॉज़िटिव् रोल् अदा करे हे. या कारणसु महाप्रभुजी निबन्धमें निष्ठापे इतनो भार दे रहे हें क्योंके जो सेन्स् ऑफ ड्युटी हे, विलास एक अलग फॅसेट् हे पालनको पर ऐसो विलास कोईके साथ करनो के जा विलासके कारण वाको सेन्स् ऑफ ड्युटीको लॉस् हो जाये, विज़न् वाको खो जाये, वो विलास वाके मर्डर्सु ज्यादा बुरी बात हे. मर्डर् थोड़ी अच्छी बात होयगी पर ये तो वाके मर्डर्सु भी ज्यादा बुरी बात हे क्योंके रिब-रिबके मरेगो वो आदमी. या लिये विलास सदा ऐसो

होनो चहिये के जो विलास तो होवे पर एट् द् सेईम् टाईम् सेन्स् ऑफ् ड्युटी, सेन्स् ऑफ् अवेयरनेस् वामें पनपावे. ड्युटीकी अवेयरनेस् पनपेगी वाको पॅरामीटर क्या हे? वा धर्मकु वो निष्ठासु कर पा रह्यो हे के नहीं.

श्रद्धाकी बात नहीं हे. विश्वासकी तो बोहोत आगेकी कथा हे. विश्वासकी कथा कब आयगी? जब बरसन वो साधना करेगो और वाकु वामें इतनो कॉन्फिडेन्स् आ जाय के जैसे अपने घरके बॅडरूम्में अपन् सोते होंय और अंधेरा होय तो भी अपन्कु बाथ्रूम्में जानो होय तो अपन् बिना रोशन्ीके जा सकें हें कोईसु टकराये बिना. क्यों? क्योंके रोज चलवेको अपन्कु विश्वास हो गयो हे. याको नाम विश्वास हे. वो तो रोज करेंगे तब होयगो. एक दिनमें विश्वास थोड़े ही होयगो! एक दिनमें जाकु विश्वास हो जाय ना वो तो अन्धविश्वास हे. वो आंखको विश्वास नहीं हे. और जाकु रोज करवेके कारण विश्वास पैदा भयो हे वो आंखको विश्वास हे, जाकु महाप्रभुजी विवेकधैर्याश्रयमें केह रहे हें "**अविश्वासो न कर्तव्यः सर्वथा बाधकस्तु सः**" (वि.धै.आ.१५) अश्रद्धा न कर्तव्यः नहीं केह रहे हें. कोई लोग डबल् माईन्डेड् होवें हें. काम भी करते जायें और अविश्वास भी करते जायें. या तो करो ही मत काम, यदि तुमकु अच्छो नहीं लग रह्यो हे. जस्ट् लीव इट्. काम छोड़ें नहीं. मैं ऐसे बोहोत कॅरेक्टरन्कु जानु हूं. उनकु पचास बखत कहूं के भई देखो! गिरिराजजीमें दूध नहीं युरिया हे. वो जावें ही गिरिराजजी. पाछे वोही चढ़ावें युरिया. पाछे आके रोवें के बोहोत दुर्गन्ध आवे हे वहां. माने विश्वास भी नहीं हे और करनो भी हे. महाप्रभुजी कहते

होय के **"अविश्वासो न कर्तव्यः सर्वथा बाधकस्तु सः"** होयगो बाधक, हमारे लिये तो गाड़ी ऐसे ही चल रही हे. कोईमें भी विश्वास नहीं हे.

मनुष्यके बिहेवियर्की ये एक युनीक् प्रॉब्लेम् हे. लगातार अपन् अविश्वास भी करते जायें और काम भी पाछो वो ही करते जायें के जामें अपन्कु विश्वास नहीं हे. कोई गधा कुत्ता ऐसो नहीं करे. ये मनुष्यकी खास मोनोपोली हे. विश्वास नहीं फिर भी काम करनो. काम करनो फिर भी विश्वास नहीं करनो. वो एक युनीक् कॅरेक्टर् होवे और पुष्टिमार्गमें एकके ठिकाने निन्यानवे मिलें, ये एक मजेदार बात और हे प्रभुकी लीलाकी. यहां जहां धर्मके अनुष्ठानकी बात आ रही हे, वहां श्रद्धाकी बात पुरानी हो गई. वो गोविन्दा ''आलारे आला''की तरह श्रद्धा वा ग्राउन्ड्पे खड़ी भई हे. मटका तक वो पोहोंचेगो नहीं. विश्वास तो जा दिन मटका फूटेगो वा दिन पैदा होयगो. वासु पहले तो पैदा होवेवालो नहीं हे. पर मटका तक पोहोंचवेके लिये जो पिरामिड् अपन् बना रहे हें, वा पिरामिड बनावेमें चढ़वेवालेकी निष्ठा होनी चहिये. **"निष्ठा च साधनैरेव न मनोरथवार्तया."** (वहीं) वो फॉरमेशन् बढ़तो जा रह्यो हे और अपन् देख रहे हें के पहले वापे चढ़ें फिर दूसरे वापे चढ़ें फिर तीसरे वापे चढ़ें. अरे! तुम देखते ही रह जाओगे और वो मटका फोड़ देगो. यदि तुमकु मटका फोड़नो हे गोविन्दा आलाको तो शुरु करो निष्ठा. **"निष्ठा च साधनैरेव न मनोरथवार्तया."** वो धर्मको मुख्य रूप हे. स्थितिको, स्थापनको जो क्लाईमॅक्स् हे वो यामें हे **"स्वधर्माचरणं शक्त्या विधर्मात् च निवर्तनम्"** (त.दी.नि.२।२३८) ये जो **"स्वधर्मम्**

अनुतिष्ठन् वै भारद्वैगुण्यम् अन्यथा" (बा.बो.१९) जो तुम्हारो धर्म हे, जामें तुम कमिटेड् हो, वाकु तुम इम्प्लिमेन्ट् करो. जब तुम इम्प्लिमेन्ट् करोगे तब तुम अपनी सत्ताकु मॅनेज् कर रहे हो. जब तुम वाकु इम्प्लिमेन्ट् नहीं कर रहे हो, तो तुम अपनी स्थितिकु डिसरप्ट् कर रहे हो. तुम स्थित होओगे.

पेड़ कैसे करे? वाकु देखो. पेड़ निरन्तर ये काम करे हे के जहां भी उग जाये वहांसु अपनी डालीकु प्रकाश आतो होय वा तरफ शूट करे. जड़कु कौनसी तरफ शूट करे? जहांसु पानी आतो होय. वाकु पता हे के मेरी स्थितिके लिये कौनसे धर्ममें मोकु निष्ठा रखनी चहिये. मैंने बोहोत बार बोनसाईके पेड़न्पे प्रयोग करके देखें हें. वो या तरफ मुड़े तो वा पेड़के कुंडाकु दूसरी तरफ मोड़ दो. वो पेड़ क्या करे के मुड़ी भई डालीकु पाछे फिर प्रकाशकी तरफ कर दे. तो अपन्कु डालीकु मोड़वेकी जरूरत नहीं पड़े. डाली अपने आप प्रकाशकी तरफ मुड़ जाय. अब तुम वाके कुंडाकु फिर मोड़ दो. डालीकु पता हे के कोई आसुरीजीव आ गयो हे के जो प्रकाश नहीं लेवे दे रह्यो हे. वो डाली क्या उपद्रव करे के वो फिर मुड़के प्रकाशकी और चली जाय. वाकु पता हे, वाकु अपने धर्मकी निष्ठा हे के मोकु प्रकाश लेनो ही हे. मोकु पानी पीनो ही हे. तो जैसे वेणुगीतमें कहें हें के **"धन्यास्तु मूढमतयोऽपि हरिण्य एता या नन्दनन्दनम् उपात्तविचित्रवेषम्"** (भाग.पुरा.१०।१८।११) ऐसे धन्य हें ये वृक्ष के इनकी निष्ठा अपनेसु बोहोत ज्यादा क्लीयर् और वॅल्डिफाईन्ड् हे.

अपनी निष्ठा कैसी हे? अपन्कु कहां क्या लेनो हे, वामें

विश्वास हे नहीं, पर सब जगह लेते जायें तो वामें फूड्पॉईज़न् हो जाय. निष्ठाको धर्मके अनुष्ठानमें कितनो बड़ो रोल् हे, वो अपन्कु समझनो चहिये के धर्मके कारण आती भई आसुरता और दिव्यता हे. स्वतन्त्रक्रीड़ा पुरुषोत्तमकी जो वाईड् एंगल्सु दिखायी देती आसुरता और दिव्यता हे वो वाके बॅक्ग्राउन्ड्में ये हे एकदम फोर्ग्राउन्ड्में, फोकस्में दिखलाई देती आसुरता और दिव्यता हे. याकु वासु कन्फ्युज़् नहीं करनो और वाकु यासु कन्फ्युज़् नहीं करनो.

(धर्ममें सदसद्वासनाको रोल् और वाकी व्यवस्थाको विचार)

दो बात अपन्कु अलग-अलग समझनी पड़ेंगी. क्योंके वहां जो आउट् ऑफ् फोकस् हे वो बोहोत सारी आसुरताके प्रकार हें और बोहोत सारी दिव्यताके प्रकार हें. वो सारे अपन् अपना नहीं सकें हें. नहीं अपना सकें हें करके जो धर्मको लेवल् आ रह्यो हे स्थितिके लिये वा बखत अपन्कु स्पेसिफाईड् एक धर्मकु पकड़नो हे. "**तदन्यद् इति ये प्राहुः आसुरान् तान् अहो बुधाः**" याकु कन्फ्युज़् मत करियो. एक परिवारमें मैंने ब्रह्मसम्बन्ध दियो हतो. वा परिवारमें ठाकुरजी भी मैंने पधराये हते. सारो परिवार हिलमिलके सेवा कर रह्यो हतो. वा परिवारको बच्चा जो कॉलेज्में जा रह्यो हतो वाने एक दिन पिताकु केह दी के ठाकुरजीके बर्तन मांजवेकी सेवा मोसु नहीं होयगी, मोकु कॉलेज् जानो हे. बापने निर्णय कियो के ये आसुर हे. अब दोनों झगड़ते मेरे पास आये. बाप बोल्यो के ये आसुरी हो गयो हे. यामें आसुरावेश आ गयो हे. मैंने कही के "अरे भई! कैसे आसुरावेश हो गयो? सेवा कर रह्यो हे के नहीं

कर रह्यो हे?" बाप बोल्यो के "सेवा तो कर रह्यो हे पर बर्तन मांजवेकी क्यों ना पाड़ी? यासु आसुरावेश हो गयो हे." कल तो कोई कीर्तन करवेकी ना पाड़ दे तो आसुरावेश; सेवाकी कोई भी बातकी ना पाड़ दे तो वासु आसुरावेश, इन पॅरामीटर्पे यदि अपन् आसुरावेशकु देखेंगे तो वाकी सच्ची मॅनेजमेन्ट् कैसे होयगी?

जैसे हमारे बड़े तातजी रणछोड़लालजीकी बोहोत सुन्दर वार्ता आवे हे. राजभोगकी पूरी सेवा पोहोंचवेके बाद ठाकुरजीके बर्तन मांजवेकी पूरी सेवा खुद हाथसु पोहोंचते. रोजको नियम हतो. वो उनकी निष्ठा हती. ठाकुरजीके प्रसादी बर्तनन्कु मांजे बिना वो आरोगवे नहीं पधारते. कांकरोलीवाले गिरधारीजी महाराजकी भेंट भई. दोनोंन्में बोहोत खूबसूरत चर्चा भयी. गिरधारीजी महाराज जिनके १२० वचनामृत हें, उनने कही के "ये काम बर्तन मांजवेको क्यों करो हो? जलघडियासु क्यों नहीं करवाओ हो?" हमारे तातजीने कही के "ये सबसु अच्छी सेवा हे." उनने कही के "हम तो ये काम नहीं करें. क्योंके हाथ कड़क हो जायें तो ठाकुरजीको शृंगार धरावेमें परिश्रम होवे." देखो दोनोंकी अलग-अलग निष्ठा हें. कौन सच्चो कौन झूठो? कैसे डिसाईड् करोगे? अपनी अपनी जगह दोनों ही सच्चे हें. गिरधारीजी महाराजकु लग रह्यो हें के या तरह बर्तन मांजवेसु हाथ कड़क हो जायें. आजकल तो बोहोत सारे विम् ब्रश् वगैरह आ गये हें पर पुराने जमानामें वा तरीकेके ब्रश् और विम् हते नहीं. जो भी बर्तन मांजतो वाके हाथ रफ् हो ही जाते, इतनो ही नहीं नख भी बिगड़ जाते, ये भी एक फॅक्ट् हे. वा जमानामें ये कितनो उपद्रव होतो होयगो! ये अपन् समझ सकें हें. वाके बाबजूद

भी उनको एक भाव हतो के ठाकुरजीकी ये सेवा करवेसु अपन्कु सेवा करवेको अहंकार नहीं आवे.

नहीं तो क्या हे के छोटी सेवा छोटेन्कु दो, बड़ी सेवा अपन् करो. फिर तो वाको संदेश अपन्कु भी ऐसो जावे के अपन् बड़े सेवक हें और वो छोटे सेवक हें. ठाकुरजीके सुखके विचारसु ऐसी सेवा कोईसु अपन् करवा सकते होंय तो करवा लेनी. ये बात गुसांईजीने भी स्पष्ट करी हे. **"जलादिसेवानिर्वाहः सेवकैः कार्यः"** फिर गुसांईजी अपनेकु मॉडिफाई करें हें. **"तदपि नातिश्रमेण मत्स्वामिनः कोमलस्वभावात्"** कोईको लहु पीके जलकी सेवा मत करवाओ. सेवकसु करवा लो क्योंके मेरो स्वामी कोमल स्वभावको हे. ये डेलिकेसी हे, ये **सरसवचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार** धर्मसंस्थापनमें गुसांईजीकी जो टेक्नीक् हे, वामें उनकी निष्ठा देखवे लायक हे के कोईकी निष्ठाकु कैसे पनपानो! जो जा धर्मकु कर सक रह्यो हे वाकी वा निष्ठाकु पनपानो. वा निष्ठाकु पनपावेके कारण वाकी सद्वासनाकु और असद्वासनाकु प्रॉपरली मॅनेज् करनो. अन्-नेसेसरीली कोई सद्वासना या कोई असद्वासना कु न तो इन्स्टिगेट् करनो और न तो सप्रेस् करनी. ये धर्मको मूलतत्त्व हे जो अपन् नहीं समझें तो महान् उपद्रव होतो ही होवे हे. एक नहीं तो दूसरी रीतिसु, क्योंके जहां-तक सद्वासना और असद्वासना को सवाल हे, वो बाय् डिफॉल्ट् अपनेमें आयेंगी. पर जहां-तक उनके मॅनेज्मेन्ट्को सवाल हे वो बाय् डिफॉल्ट् नहीं आ रही हें. वो अपने कोई एक ठिकानेकी तरफ अन्धविश्वासके कारण पैदा हो जाय के हां अन्धविश्वास हो गयो. अपन् जान नहीं रहे हें पूरी सच्चाई और

अपन्कु बस एक अन्धविश्वास हो जाय के बस याकु करते रहो. याकु करते रहोगे तो बेड़ा पार हो जायगो. पर भई बेड़ापार नहीं होयगो डूब जाओगे. असद्वासनाके कारण नहीं, पर जा सद्वासनाकु तुम खिला नहीं सको वा सद्वासनाके प्रमोशन्के कारण.

नहीं तो क्या कारण हतो के सबकु सेवा नहीं पधराई? क्यों कोईकु शरणागतिके मार्गमें रखते? क्यों कोईकु कथाके मार्गमें रखते? क्यों कोईकु तीर्थयात्रामें रख्यो? क्यों कोईकु मर्यादामार्गमें रख्यो? क्योंके पुष्टिमार्गको जो भाव हे, जो सद्वासना हे वाकु अन्-नॅसेसरी इन्स्टिगेट् करनो और मर्यादामार्ग या प्रवाहमार्ग के जो फोकस् या धर्मके जामें असद्वासनायें हें उनकु अन्-नॅसेसरी सप्रेस् करनो, वो दोनों घातक हो सकें हें. या लिये गोपालदासजी केह रहे हें के **अनेक धर्म कह्यां प्रभुजीए निगमने अनुसार. गिरिराजधरणनो ताप टाळ्यो श्रीवल्लभसुत निर्धार.** सद्वासनाकु और असद्वासनाकु थर्मामीटर्सु अपन्कु चॅक् करनो चहिये. बोहोत सारी असद्वासनायें होंयगी.

बच्चायें कैसे मॅनेज् करें? अपन् बड़ेन्की बात करें. बच्चान्की बात देखो. बच्चान्में एक असद्वासना अभी युनिफॉर्मली अवेलेबल् हे. कॉलेज् जानो तो पढ़नो नहीं. मटरगश्ती करनी. परीक्षा आती होय तो डेढ़ महीना दो महीना विषयकी चटनी पीसवे लग जानो. ये बच्चान्की एक असद्वासना हे. एक सद्वासना भी बच्चान्की हे. अपन् कहें वो विषयकु नहीं चुनें. या तो उनके यारदोस्त चुन रहे हें या उनकु कोईने बता दियो के ये लाईन् लोगे तो तुम्हारो बोहोत

अच्छो विकास होयगो. ऐसे ऐसे कारणन्सु उनकु विषयकु पढ़वेकी सद्वासना जागे. वाकेलिये बापसु डोनेशन्, ये लफड़ा वो लफड़ा, कर-कराके भी वो अपनी सद्वासनाकु इम्प्लिमेन्ट् करते होवें. मां-बापके स्थानपे अपन् क्या करें, उनकी सद्वासना या असद्वासना कु बराबर मॅनेज् नहीं करें. वो बात उनपे छोड़ दें और निरन्तर उनपे प्रेशर् बनाये रखें के रिजल्ट् क्यों कम आयो, परसेन्टेज् क्यों कम आयो? अरे भई! बच्चा हे के कोई क्रिमिनल् हे! वाके साथ वाही तरहसु ट्रीट् करें जैसे अपराधके कटघरामें खड़ो भयो कोई क्रिमिनल् होय! नम्बर् कम क्यों आये? कहां घूमतो फिरे हे? पढ़े क्यों नहीं हे? वो बिचारो नहीं गिल्ट् फील् करतो होयगो तो करवे लगेगो. अब तुमने वा बखत वा वासनाकु अच्छी तरहसु सोच समझके मॅनेज् नहीं करी और वाकी वासनान्कु जब तुमने छुट्टो दौर दियो तब तो तुमने ये परसेन्टेज्को सवाल सोच्यो नहीं! अब वाकी परीक्षाके पेपर्के परसेन्टेज्की चिन्ता तुम कर रहे हो. तो बच्चाको नेट्-रिजल्ट् क्या होवे के वामें गिल्ट्-कॉम्प्लेक्स् डेवलप् होयगो. ये बच्चायें सुसाइड् क्यों करें हें? वाको मूल कारण के उनके ऊपर सायकॉलॉजिकल् प्रेशर् इतनो आ जाय. कुत्तासु ज्यादा मां-बाप हाउ-हाउ करते होवें. परसेन्टेज् क्यों कम आयो? परसेन्टेज् क्यों कम आयो? अरे भई! तुमने वाकी वासनाकु तो मॅनेज् कियो नहीं! फिर परसेन्टेज् कैसे मॅनेज् होयगो? ये सब बात मैं धर्मकी ही समझा रह्यो हूं. धर्ममें सद्वासनाको, असद्वासनाको रोल् क्या हे? कैसे वाकु अपन् प्रॉपरली मॅनेज् करें तो अपन् अपनो धर्म समझ सकें. **''स्वधर्मम् अनुतिष्ठन् वै भारद्वैगुण्यम् अन्यथा.''** वा रोल्कु अपन् स्वीकार कर सकें, वा तरहसु अपन् प्लानिंग् कर सकें. अपनी

स्थितिकी प्लानिंग् अपन् या तरहसु कर सकें वाको बेसिक् रोल् ये हे. या तो तुम वाकु वा बखत मॅनेज् करो. यदि मॅनेज् नहीं कर रहे हो तो वाकु अन्-नॅसेसरी क्रिमिनल् प्रूव् करवेसु बच्चाकु कोई फायदा नहीं हे. निरन्तर हाउ हाउ हाउ करोगे तो नेट् रिज़ल्ट्में बच्चा क्या समझे के मैं क्रिमिनल् हूँ. और जब आदमी अपन्कु क्रिमिनल् समझ जाय तो फिर अपने भीतर बाय् डिफॉल्ट् एक ऐसी सिस्टम् भरी भई हे के कोई भी आदमी तुम्हारी निगाहमें क्रिमिनल् हे तो वो मानेगो के हां तुम्हारी निगाहमें मैं क्रिमिनल् हूँ पर वाके मनमें कछु न कछु जस्टिफिकेशन् तो होवे ही हे के ये क्राईम् मैंने क्यों कियो!

यासु वो खुदकु भीतरसु क्रिमिनल् नहीं मानतो होवे हे. जा बखत वो या मुकामपे पहोंच जाय वा बखत वो वाकईमें क्रिमिनल् हो जातो होवे हे क्योंके वो भीतरसु कन्विन्स्ड् होवे हे के मैं क्रिमिनल् नहीं हूँ और वाकु ये पता हे के सब मोकु क्रिमिनल् मान रहे हें. वा बखत वो धुडंग क्रिमिनल् हो जाये. माने उचक्का वा बखत पक्को चोर हो जाये. उचक्का और चोर को जो अन्तर हे वो इतनो ही हे के उचक्का बिचारो चोरी नहीं करे. पड़्यो भयो माल मिले तो उठा ले, वाकु वो छोड़े नहीं. जो भी मिले वाकु जेबमें डाल ले. चोर क्या करे? तुम्हारी आंख चुराके कोई न कोई ढंगसु पड़्यो होय के नहीं पड़्यो होय, तिजोरीमें भी रख्यो होय तो चोरी करे. वो उचक्कासु एक स्टेप् आगे. और वासु आगे एक और स्टेप् डकैतको. छुरा मारके लूटे. तो उचक्का चोर और डकैत. ये जो तीन स्टेज् हें अपने यहां असद्वासनान्की, अपन् बच्चान्कु वहां

पोहोंचाते होवें. वो पहले उचक्काके मूडमें पढ़ते होवें के मां-बाप वा तरफ हें तो अपन् मौज मारो. फिर उनकु लग जाय के मां-बाप अपन्कु क्रिमिनल् ही मान रहे हें तो फिर वो चोरी करके पढ़ें. मां-बापकु बेवकूफ बनावें के हम स्कूल् कॉलेज् जा रहे हें. पर स्कूल् या कॉलेज् में कछु और ही काम करते होवें. वो चोरी करें फिर. और कोई ज्यादा काम कियो तो डकेती करें.

(पर्यावरणको सद्धर्म)

यदि तुम यहां मॅनेज् नहीं कर पाये तो वहां आगे मॅनेज् होनी ही नहीं हे. वो असम्भव सी बात हे. मॅनेज्मेन्ट्को पॉईन्ट् अपन्कु समझनो पड़ेगो के सद्वासना और असद्वासना सु जब तुम अपनी निष्ठाकु मॅनेज् करोगे वा बखत कोई भी कर्तव्य तुम्हारे लिये धर्म तरीके प्रस्थापित होयगो. जब कोई कर्तव्य धर्म तरीके प्रस्थापित भयो वो तुम्हारी हस्तीको, तुम्हारी सत्ताको अभिवर्धन करवेवालो होयगो. वो तुमकु डिप्रेस् करवेवालो नहीं होयगो. वो सचमुचमें तुम्हारो हॅल्दी अभिवर्धन होयगो. जैसे एक वृक्षकी अपन् अच्छी तरहसु केयर् लेते होंय वाको अपने आप नॅचरल् कोर्समें अभिवर्धन होवे हे. वा तरहसु वो धर्मको निर्वाह करेगो. वृक्ष करे हे धर्मको निर्वाह ये मैंने बतायो. वाकु पता हे के मेरी निष्ठा क्या हे? मोकु लाईट् चहिये, मोकु पानी चहिये; वो ये दोनों चीज अपने आपमें प्रोवाईड् कर सके हे. आर्टिफिशियली अपन् नहीं उगाते होंय तो वृक्षके पास और भी बोहोत सारी टॅक्नीक् होवें हें वो खादके लिये पशु-पक्षीन्कु बुलावे अपने पास, इशारा कर करके के आओ मेरे पास, बैठो यहां, मोकु खाद चहिये. अब जब अपन् ये बात आर्टिफिशियली इन्डोर् प्लान्ट्में

करें तो वा बिचारेके पास वो फॅसिलिटी तो अवेलेबल् होवे नहीं, क्योंके अपने यहां घुसे तो अपन् घुसवे नहीं दें. वृक्ष भी समझ जाये के पता नहीं कौनसे ससुरालमें हूँ के पीहरमें हूं. वो वृक्ष फ्रस्ट्रेट् होतो रहे. पर वा बखत वो अपनेसु एक्स्पॅक्ट् करे के जो केयर् वो खुदकी नहीं ले पा रह्यो हे, वो केयर मट्टी बदलवेकी, खाद डालवेकी वो सब फिर अपन्कु लेनी पड़े. वाकी मट्टीकु अपन्कु हिलानो पड़े, वामें खाद डालनो पड़े. नहीं तो पेड़ इतने चतुर हें के जानवरन्कु चूहाकु याकु-वाकु बुलाके मट्टी भी खुदवा लें अपनी, खाद भी डलवा लें, सबन्कु इन्वाईट् कर लें वो. उनकु कछु लेनो देनो नहीं हे.

वृक्षकु फल उगे तो वासु वाको क्या फायदा हे? वृक्षकु ये बात पता हे के फल उगाउगों तो पेड़पे पक्षी आयगो, आयगो तो बैठेगो, जब बैठेगो तो कछु खायगो और कछु खायगो तो खाद पैदा होयगी. जब खाद पैदा होयगी तो मेरे लिये अभिवर्धनको धर्म सिद्ध होयगो. याही लिये जब अपन् घरमें पेड़ उगावें तो जल्दीसु फल नहीं दे. वाकु आर्टिफिशियल् कॅमिकल् खाद दो तो कहे के पता नहीं क्या कर रहे हें ये लोग मेरे साथ? वो इन्स्टिगेशन् वेगोदीरणधारणकी प्रक्रियासु. नहीं तो नॅचरल् कोर्स्में तो ऋतु आवे तो हर वृक्ष अपनो फूल दे दे. ऋतु आवे तो हर वृक्ष अपनो फल दे क्योंके वाकु अपने स्वधर्ममें निष्ठा हे. अपन्ने स्वधर्मकी निष्ठा खो दी, सद्वासना और असद्वासना के अन्-नॅचरल् इन्स्टिगेशन्के कारण. यासु स्वधर्माचरण निष्ठाविहीन होवेके कारण अपने आपसु वो सुव्यवस्थित नहीं होवे हे. धर्माचरण व्यवस्थित नहीं होवे या

लिये अपनो अस्तित्व वॅल्मॅनेज्ड् होवेके बजाय मिस्मॅनेज्ड् हो जाय. जब मिस्मॅनेज्ड् हो जाय तो स्थापनलीलाके बाद स्थापनसु लेके मन्वन्तर तककी जो लीला हे, वामें सारे फल्क्च्युएशन् आ जाते होवें हें. या जनरल् फ्रेम्में मैंने आपकु भागवतके तहत ही नहीं, पूरी ईकोलॉजीके तहत ये लीलाको पर्सपॅक्टिव् क्या हे ये बतानो चाह्यो हे. ईकोलॉजीसु लेके भागवत तककी, स्वतन्त्रक्रीड़ा पुरुषोत्तमसु लेके या पर्टिकुलर् ऑस्पॅक्ट् तक फोकस् करके बतायी.

(संप्रदायको सदाचार और वाको अर्थ)

अब सम्प्रदायमें वो ही जनरल् प्रिंसिपल् काम कर रहे हें, दूसरे प्रिंसिपल् काम नहीं कर रहे हें. पर यहां वो सारी बातें नहीं आयेंगी. यहां ये बात नहीं आयगी के चूहाकु बुलाओ, कौआकु बुलाओ. ''चूं चूं करती आई चिड़िया मोर भी आया, चूहा भी आया, बंदर भी आया.'' वो सब इश्यु यहां नहीं हे. यहां कछु दूसरो इश्यु हे. यहां जो धर्म मान रहे हें, वो धर्म ये हे के स्मरण और भजन ये अपनो धर्म हे. वा धर्ममें अपन्कु अपनी सद्वासना कैसे बढ़ानी, इनमें कैसे एडीशन् करनो, वा धर्मकी विरोधी जो अपनी असद्वासनायें हें उनकु कैसे घटानी, इनमें कैसे सब्सट्रॅक्शन् करनो, ये फोकस्ड् पिक्चर्में बतानो चाह रहे हें. अपन् याकु कछु दूसरे एन्गल्सु देखें हें. पर जो याके स्थापनाके बाद धर्म तरीके, मन्वन्तर तरीके षष्ठाख्यानके रोल्कु वा एन्गल्सु देखोगे तो बात मेरी समझमें आयगी.

जैसे या प्रकरणकी व्याख्यामें ''**सदाचारो हि मन्वन्तरः**''

(सुबो.१०।२।१) 'मन्वन्तर'को मतलब सदाचार हे. सदाचारको मतलब आचरण होनो ही सिर्फ अच्छी बात नहीं हे, आचरणको सत् होनो, अच्छो होनो. सदाचार शब्दकी दो तरहसु व्याख्या हो सके. **"सताम् आचार: सदाचार:; संस्चासौ आचारश्च सदाचार:;"** जब अपनी अकल काम नहीं कर रही होय तो **"सताम् आचार: सदाचार:"** पॅरामीटर् हे. जब अपन् समझ गये होंय, अपनी अकल काम करवे लग जाय तो **"संस्चासौ आचारश्च सदाचार:,"** ये हे. जैसे शास्त्रमें कहें हें के **"श्रुति: स्मृति: सदाचार: स्वस्य च प्रियम् आत्मन: धर्मस्थानानि एतानि."** (याज्ञ.स्मृ.१।७)अपनी अकल काम करती होय तो श्रुतिस्मृतिसु जो आचार सिद्ध हे वो सदाचार हे. पर अपनी अकल काम नहीं करती होय तो जैसे हमकु अपनो केस् प्लीड् करनो नहीं आतो होय तो वकील एन्गेज् करनो पड़े. अपन्कु अपनो स्वास्थ्य ठीक रखनो नहीं आतो होय तो डॉक्टर्कु कन्सल्ट् करनो पड़े. एग्ज़ेक्टली वैसे अपने आचारकु गवर्न करनो नहीं आतो होय, तो सद् जो मॉडेल् हें उनकु अपन्कु रेफर् करनो पड़ेगो. अपन्कु शास्त्रकु समझमें आ रह्यो हे तो **"संस्चासौ आचारश्च सदाचार:."** तो दोनों ही अर्थ वाके सच्चे हें.

(धर्मकु 'सद्' विशेषण क्यों?)

संदर्भके बदलवेपे उनको अर्थ बदलतो होवे हे. सदाचार धर्म हे और सद्धर्म हे. अब खूबसूरती देखो **"मन्वन्तराणि सद्धर्म:."** धर्ममें सद् और असद् हो सके? अपन् तो क्या सोचेंगे? अपनो सोचवेको तरीका क्या हे? के जो असत्कर्म हे वो अधर्म हे. जो

सत्कर्म हे वो धर्म हे. भागवत कैसे डिफाईन् करे हे? **"मन्वन्तराणि सद्धर्मः"** धर्म होनो सिर्फ जरूरी नहीं हे वाको सत् होनो भी जरूरी हे. बाय् डिफॉल्ट् तो वो सत् होयगो. जो भी सत्कर्म हे, जो भी सद्वासनासु कियो जा रह्यो हे, वो धर्म हे पर वो सद्धर्म कब होयगो? जब तुम वाकु निष्ठापूर्वक निभा सकते होओ, नहीं तो तुम्हारे लिये वो सद्धर्म नहीं हे. कोईके लिये धर्म हो सके हे. जाकु महाप्रभुजी कह रहे हें **''निष्ठाभावे फलं तस्मात्''** (त.दी.नि.१।१८) तो निष्ठाभावमें धर्म फल नहीं देवे तो क्या धर्म निष्फल हे? नहीं. तुमने जो इनिशियेटिव् लियो हे वो निष्फल हे. धर्म निष्फल नहीं हे. अब क्योंके तुमने गलत इनिशियेटिव् लियो करके तुम्हारे धर्मको भी जो एक्शन् हे वो निष्फल हो गयो. वाको कारण क्या? क्योंके इनिशियेटिव् तुमने गलत लियो. वहां धर्मकु 'सद्' विशेषणकी जरूरत पड़े हे. अन्यथा बाय् डिफॉल्ट् जो सद्वासनासु कियो जातो सत्कर्म ही तो धर्म हे. जो असद्वासनासु कियो जातो असत्कर्म अधर्म हे. वा धर्मकु सद्विशेषणकी क्या जरूरत हे? धर्मकु जा बखत 'सद्' विशेषण लगायो जा रह्यो हे, वो या अर्थमें के तुमकु स्वस्वरूप अर्थकी अवेयरनेस् होनी चहिये. **स्वस्वरूपार्थे प्र्योझिया कृत हुता जे संसार** क्योंके तुम्हारो जो स्वरूप हे, वाके अनुसार तुमने धर्म पकड़्यो तो वो तुम्हारे लिये सद्धर्म हो जायगो. तुम्हारो जो स्वरूप हे वाके अनुसार तुमने यदि धर्मनिर्धारण नहीं कियो तो वोही बात धर्म होते भये भी वो अधर्म परधर्म या विधर्म हो जायगी. तुम्हारे लिये वो सद्धर्म नहीं रह्यो. तुम्हारे लिये वो असद्धर्म हो गयो. या अर्थमें गुसांईजी केह रहे हें **"आसुरान् तान्**

अहो बुधा:" क्योंके वो धर्म तो कर रहे हें, धर्म नहीं कर रहे हें ऐसी बात नहीं हे. वार्ता पढ़ोगे तो वामें छूटसु 'आसुरी' शब्दकी गाली आई हे, उन लोगन्के लिये जो बिचारे धार्मिक हते. अपन्कु लगे के वार्ता बोहोत ही नॅरो माईन्डेड् हे. बोहोत ही सॅक्टोरियल् हे. बायस्ड् ओपिनियन् हे. पर वो न तो नॅरो माईन्डेड् हे, न वो सेक्टोरियल् हे, न वाकी ओपिनियन् बायस्ड् हे. वो सिर्फ अपने सेक्ट्कु प्रमोट् करनो चाहे. ये सारो गलत मूल्यांकन हे.

(धर्मकी असद्रूपता)

सच्ची बात ये हे के तुमकु ये पता होनो चहिये के आंख दूख रही हे तो आंखके डॉक्टर्के पास, कान दूख रह्यो हे तो कानके डॉक्टर्के पास, पेट दूख रह्यो हे तो पेटके डॉक्टर्के पास जानो चहिये. वा ढंगसु इलाज करवानो चहिये. पेट दूख रह्यो हे और आंखके डॉक्टर्के पास जाके कह रहे हो के जरा देखियो तो आंख. तो तुम आंखकु दिखाके पेटके दर्दकु कहांसु मिटा सकोगे? पेटको दर्द कैसे मिटेगो? बोले हमने या डॉक्टर्की ख्याति बोहोत ही सुन रखी हे. अरे भई! ख्याति यहां क्या काम आयगी? दूख तो तुम्हारो पेट रह्यो हे और आंखके विशेषज्ञकु कन्सल्ट् कर रहे हो! कारण वामें डॉक्टर्की पॉप्युलेरिटीको हे. अरे भई! यहां पॉप्युलेरिटी क्या काम आयगी? तुम्हारे लिये वाकी बड़ाई क्या कामकी? तुम्हारो रोग क्या हे तुमने नक्की तो कियो नहीं. ये असद्धर्म हे. अब समझो के वो डॉक्टर् सच्चो होय तो तुमकु कहेगो के भई पेटके डॉक्टर्के पास जाओ. मेरे पास काहेके लिये आये? अब डॉक्टर् भी असद्वासनासु प्रेरित होयगो तो गोलियें देतो रहगो. लेते रहो

गोलियां. ऐसे क्लाईन्ट्कु कौन छोड़ेगो? ऐसो बेवकूफ मिलेगो कौन? दूखे पेट और आई स्पेशलिस्ट्कु कन्सल्ट करे? ऐसे बेवकूफ मिलें तो उनकु छोड़नो भी तो गुनाह हे. धन्धा करते होंय तो ऐसे बेवकूफकु छोड़नो गुनाह हे.

अपनी बात बताऊं. मकरसंक्रान्तिपे प्रयागस्नानकु जानो हतो. इन्दिराबेटीजी मथुरेशजी ने मोसु कही के "हम जा रहे हें तो आप भी वहां आ जइयो." मैंने कही के "ठीक हे आ जाऊंगो." वहां पोहोंच्यो तो मैं लेट् हो गयो हतो. मोकु उनके मुकामपे जानो ही नहीं मिल्यो. ट्रेन्में ही बैठ्यो भयो हतो तो कन्डक्टर्ने कही के "क्या त्रिवेणी संगम स्नान करना हें?" तो मैंने कही के "हां." वाने कही के "उतर जाओ यहां. यहीं नीचे हे." मैंने कही के चलो उतरो. उतरके इन्दिराबेटीजी मथुरेशजी के मुकामपे गयो. वहां वो मिले नहीं, वो नहावे चले गये हते. मैंने सोची के बाट देखवेमें फायदा क्या? अपन् तो त्रिवेणी-संगम स्नान करवे आये हें तो मैंने स्नान कर कराके सोच्यो के अब क्या करनो? मैंने सोची के अलाहाबाद पैदल घूमो. शाम तक पैदल घूमतो रह्यो, देखतो रह्यो अलाहाबाद. जब दिन भर खायो नहीं, कछु पीयो नहीं तो कछु तो इच्छा होवे खावे-पीवेकी. मैंने कही के चलो एक बार और देख लें. आये होंय तो कछु खा पी लें. उनके पास तो व्यवस्था होयगी. अपन् तो ऐसे ही पोहोंच गये हते. ऐसे आठ-नो बजे होंयगे तो दोनों बहन भाई खा रहे हते तो मैं भी पोहोंच गयो. तो उन्होंने कही के "अरे! आओ आओ, हम तो आप हीकी बाट देख रहे हते." मैंने कही "मैं भी आपकु खोज-खोजके परेशान हो गयो हूं."

उनने कही के "बैठो." मैंने कही के "वाहीके लिये तो आयो हूँ यहां और तो काहेकु आतो?" वाके बाद कछु बातन्में लग गये और याद नहीं रही के जानो भी हे. तो अचानक याद आई के दस बजे तो आखिरी ट्रेन् छूटेगी. मैं नीचे उतर्‌यो. रिक्शावालो खड़्यो हतो. मैंने कही के "भई! स्टेशन् पोहोंचा दो." तो वाने कही के "नहीं पोहोंचायेंगे." मैंने कही "अरे भई! पोहोंचा दो स्टेशन्पे." वो फिर बोल्यो के "हम आपसे कह रहे हें के नहीं पोहोंचायेंगे." मैंने कही के "दो चार रुपया ज्यादा ले लेना पोहोंचा दो." वाने कही के "पक्के पांच रुपया लेंगे." मैंने कही के गाड़ी छूट जाये तो वाके बजाय पांच रुपया देनो क्या खोटो? मैंने कही के "पांच रुपया ले लेना." बैठायो, गलीमें मुड़्यो और वहीं स्टेशन् हतो. "लाओ पांच रुपया." मैंने कही के "ये तो आपने ठग लिया." तो वाने कही के "आपकु नहीं ठगें तो कौनकु ठगेंगे. जल्दी नहीं मिलें आपके जैसे यात्री!! बड़ी मुश्किलसे मिलते हें." तेरी बात सच्ची भई! ले पांच रुपया! वो तो रिक्शामें वाने पॅडलिंग् करी वासु पहले मैं पैदल चलके पोहोंच सकतो हतो स्टेशन्. वा गलीमें यों ही मुड़के स्टेशन् हतो. पता नहीं हतो करके असद्वासना प्रबल हो गई. पैदल चलके जायेंगे तो न जाने कब पोहोंचेंगे; कहां पोहोंचेंगे, ट्रेन् छूटेगी और फिर कहां रातकु मथुरेशजीके पास जानो. वा बखत मोकु बराबर याद हे के डेढ़ मील रिक्शा चलावे तो रिक्षावालो आठ आना लेतो हतो. पर ये तो गलीके बाहर निकलते ही स्टेशन् आ गयो. डेढ़ मील छोड़ एक फर्लांग भी पूरो होयगो के नहीं! पर वाने बात सच्ची कही "बाबूजी आपसे नहीं लेंगे तो किससे लेंगे? हम

तो कह रहे हते के नहीं जायेंगे पर आपने कही के चलो, चलो, चलो तो चलो. हमने कह दी के पांच रुपया लेंगे.'' मैंने कही ''हां भई ले लो पांच रुपया. ये तुम्हारो ही हे. जब मैं इतनो बेवकूफ होऊं तो ये पांच रुपया मैं डिज़र्व नहीं करूं, याके हकदार तो तुम हो.'' जब बेवकूफ हें तो देनो चहिये.

(धर्मकी सद्रूपता : सद्वासनामें निष्ठा)

पर बात समझो. एक बखत बेवकूफ होनो बुरी बात नहीं हे. दूसरी बखत तो अकल चलनी चहिये के नहीं? वो दूसरी बखत भी वोही छप्पनभोगको आ गयो और चले जा रहे हें दर्शन करवे. अरे पासमें मुड़ जाओ तो घरमें तुम्हारे ठाकुरजीकु छप्पनभोगके दुगने ११२ भोग धर सको, इतने पास मुड़ो तो. पर रिक्शावालेकु पूछनो छप्पनभोग और वो पाछे रुपया ले ले. घरमें तुमकु रुपया देवेकी भी जरूरत नहीं हे. खोपड़ी खाली भभका भारी. सद्वासनाके बजाय असद्वासना अन्-नॅसेसरी इन्स्टिगेट् हो गई के धर्म अपनो अपनेसु मॅनेज् नहीं होवे. इश्यु ये है.

या लिये **सगुण सनेही शामळा व्हाला अहर्निश दरशन आपो जी. परम सुख देवाने काजे व्रजमण्डळ स्थिर करि स्थापो जी.** ये प्रार्थना काहे बातकी हे? यदि ये असारवामें प्रार्थना कर रहे हें तो गुसांईजीकु क्या कहनो चहिये? ''आवते बरस ब्रजयात्रा उठाउंगो. एक वी.आई.पी टॅन्ट्में तू भी अपनो नाम लिखवा लीजो. व्रजमण्डल तो स्थापित ही हे. जमा कराने हें तो अभीसु जमा करा दे पैसा वी.आई.पी टेन्ट्के.'' ऐसो नहीं कह्यो. **सगुण सनेही शामळा व्हाला**

अहर्निश दरशन आपो जी. परम सुख देवाने काजे व्रजमण्डळ स्थिर करि स्थापो जी. ये ब्रजमण्डल मैं जहां हूँ, वहां स्थिर हो जानो चहिये. यामें जो पॅराडोक्स् हे, वो ब्युटी देखो के जो अस्थिर होय वाको नाम 'व्रज' हे. **"व्रजति इति व्रज:"** कौनसे गांवकु व्रज कह्यो जाय? जो गांव कोई एक फिक्स्ड् एरियामें लोकेटेड् न होय. ये ग्वालायें क्या करें? जा मैदानमें घास ज्यादा उगती होय, अपनी सारी गायनकु लेके गांवके सहित वा मैदानमें जाके अपनो डेरा तम्बू डाल लें, वो व्रज वहां बस जाये. गाय जब तक वहां घास चरें तब तक वो वा मैदानमें ही रहें. जब वा मैदानकी घास चर लें तो वाकु छोड़के दूसरे मैदानमें चलें जायें. वो जब तक वहां चरें तब तक पाछी पहलेवाले मैदानमें घास उग जाती होवे. ऐसे वो एकोमोडेट् करें हें. घूमतो भयो गांव वाको नाम 'व्रज'. वो घूमतो होयगो कोई एक फ्रेमवर्कमें. सोसायटीके फ्रेमवर्कमें घूमतो भयो गांव होयगो. वो शायद घूमतो भयो गांव द्वापरलीलामें होयगो. पर गोपालदासजी केह रहे हें **"व्रजमण्डल स्थिर करि स्थापो जी."** यहां वाकु स्थिर कर दो. **सगुण सनेही शामळा व्हाला अहर्निश दरशन आपोजी. परम सुख देवाने काजे व्रजमण्डळ स्थिर करि स्थापो जी."** वो व्रजमण्डल मेरे हृदयमें स्थिर होनो चहिये. मेरे हृदयमेंसु व्रजमण्डल फिरनो नहीं चहिये.

काश्मीरके भक्तकवि परमानंदजु भये उनने बोहोत अच्छी बात कही. जैसे अपने यहां परमानंददासजी भये हें वैसे काश्मीरमें भी एक परमानंदजु भये हें. उनने या बातकु बोहोत अच्छी तरह एम्फेटिकली कही हे, **"गोकुल म्यौन हृदै ततिचूरय घूर्यवान्. व्याप्ति विमर्श देवता**

बगवानो.” ये मेरो हृदय गोकुल बन जानो चहिये और वा गोकुलमें ग्वालिया तू है. यामें तू घूम. जहां जितने भी मेरे हृदयके एरियामें तोकु गाय चरानी होंय उतने एरियामें तू व्याप्त होके गाय चरा. ऐसो तू भगवान् बन. जासु मोकु पता चले के मेरे हृदयके लेफ्ट् कोनामें हे, मेरे राईट् कोनामें हे. अभी बॉटम्में हे, अभी टॉप्में हे. वाको विमर्श मोकु होतो रहनो चहिये. ऐसे नहीं के अनजानमें रातकु चरा जाय. **“व्याप्ति विमर्श देवता”** वो देवता रूपी भगवान् तू हे. ऐसे कहें हें काश्मीरके परमानंदजु. ये **व्रजमण्डळ स्थिर करि स्थापो जी** को एक फॉरमेट् हे. वा व्रजमण्डलकु स्थिर करवेकी जरूरत क्या हे? ऐसो कौन कर सकेगो? वामें अस्थिरता कहां हे? आज अपन् जाकु चौरासी कोस केह रहे हें वो कोई अस्थिर नहीं हे. वो तो स्थिर हे. और वा बखत जो गांव घूमतो रहतो हतो, वो अब कोई घूम नहीं रह्यो हे जाकु स्थिर करवेकी जरूरत हे! कौनसे व्रजमण्डलकु स्थिर करवेकी बात हे? ये सद्वासनाके प्रमोशन्की बात हे. धर्मको अनुष्ठान करवेके लिये मेरेमें ये सद्वासना प्रमोटेड् होनी चहिये. मेरो हृदय जहां व्रजाधिपकु भजनो चाहे वहां मेरो व्रजाधिप मेरे हृदयकु व्रज बनाके वामें विहार कर सकेगो. **“नमामि हृदये शेषे लीला–क्षीराब्धि–शायिनं लक्ष्मी–सहस्र–लीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम्.”** (सुबो.का.१०।१।१) मेरे हृदयमें व्रजमण्डल स्थिर होनो चहिये तो तो सद्वासनामें मेरी निष्ठा पनप सकेगी, नहीं तो मेरी सद्वासनायें अन्–मॅनेज् हो जायेंगी. क्योंके जब व्रज ही नहीं होयगो तो व्रजाधिप लाऊंगो कहांसु? पहले व्रज तो होनो चहिये जहां व्रजाधिपको मन लगे. मेरो हृदय व्रज जैसो बन जाय. काहेसु बनेगो? इन सद्वासनान्सु. उन सद्वासनान्के कारण मेरो हृदय जा बखत व्रज

बनेगो, अब वो बड़े फ्रेमवाली सद्वासना नहीं, जो अपन्ने ऊतिके आख्यानमें देखी. वा सद्वासनासु मेरो हृदय व्रज बनेगो, वा ब्रजमें वाकु गाय चरावेमें मजा जरूर आयगो. मेरे हृदयकु व्रज बना जहां गाय चरावेकु वाको मन ललचावे. ये बात सजेस्ट् कर रहे हें.

(स्मरणभजनरूप सदाचारकी संगति षष्ठाख्यानमें)

सगुण सनेही शामळा व्हाला अहर्निश दरशन आपो जी. परम सुख देवाने काजे व्रजमण्डळ स्थिर करि स्थापो जी.. श्रीवल्लभकुंवर कोडामणां तमारूं नाम निरंतर लीजे जी. रूप–सुधारस–माधुरी ते लोचन भरी–भरी पीजे जी. ये दो कड़ियन्कु वा मूड्में गायो हे. जैसे शास्त्रमें कह्यो हे कोई भी कर्मके आदिमें, कोई भी कर्मके समापनमें कौनकु नमस्कार करनो? **"कर्मादौ कर्ममध्ये च तथा कर्मोपसंहृतौ त्रयश्च एते सदा वन्द्याः वेदान्तो गुरुः ईश्वरः"** वेदान्त गुरु और ईश्वर कु वंदन करनो चहिये. वा मूड्में ये कर रहे हें. याके कारण बोहोतसे लोगन्कु ये भ्रमणा हो जावे हे के ये आख्यान गुसांईजीके लिये गायो गयो हे. खाली मंगलाचरणमें गुसांईजीकु गायो हे और तुरत गोपालदासजी स्विच् ओवर् हो जा रहे हें. उनने हिन्ट् दे दी गुसांईजीकु. एकदम क्लीयर् कट् शब्दन्में व्रजमण्डल स्थिर करि स्थापोजी कहके हिन्ट् दे दी. वाके बाद क्या कह रहे हें **ते पद क्यारे देखिशुं जे गोधन पूठें धाये जी.** ये लीलाको स्मरण माने मेरो हृदय ऐसो व्रजमण्डल बने के वा व्रजमण्डलमें जब भी मैं प्रभुको स्मरण करूं, तो सुबहसु लेके शामतककी लीला मेरे हृदयमें निरन्तर स्फुरित होनी चहिये. वाको ये आख्यान षष्ठाख्यान हे. क्योंके **स्मरणं** पहलो हे, **भजनं** बादमें हे. सेवामें भी अपन् महाप्रभुजी गुसांईजी कु

वंदन करके पहले स्मरण करें, वाके बाद फिर सेवा शुरु करें. सेवाके अन्तमें भी महाप्रभुजी गुसांईजी यमुनाजी गिरिराजजी कु वंदन करें. **"त्रयश्चैते सदा वन्द्याः वेदान्तो गुरुः ईश्वरः."** ये वंदन गुसांईजीके लिये नहीं गा रहे हें. गा रहे हें वो के मेरो हृदय ऐसो व्रज बनें के जामें वा ग्वालकु अपनी गाय चरावेमें, दौड़ा-दौड़ी करवेकी इच्छा हो जाय के अच्छा यहां गाय चराऊं. **''गोकुल म्यौन हृदै ततिचूरूय घूर्यवान्. व्याप्ति विमर्श देवता बगवानो.''** हृदयके कोना-कोनामें घूमके वाकु अपनी गाय चरायवेमें मजा आ जाय, मूड् आ जाय, ऐसो मेरो हृदय सद्वासनावालो हो जाय. **सगुण सनेही शामळा व्हाला अहर्निश दरशन आपो जी.** वो प्रार्थना करवेको और नाम लेवेको फल मिल गयो, ये बात गोपालदाजसी केह रहे हें. जबरदस्ती याकु गुसांईजीपे घटावेकी कोई आवश्यकता नहीं हे. वो जब घटानो होयगो तब खुद गोपालदासजी उपसंहारमें घटाके कहेंगे पाछो. वाके पहले याकु गुसांईजीपे घटावेकी कोई आवश्यकता नहीं हे. ये पूरो आख्यान भगवत्स्मरण, और सुबहसु लेके शाम तककी लीलाको स्मरण उनके हृदयमें स्थिर होवे. लीलास्मरण उनके हृदयमें स्थिर होवे, तो स्मरण स्थिर होयगो तो जाकु याद कर रहे हें वो भी स्थिर हो जायगो.

(प्रभुकी आन्तरबाह्य विद्यमानताके कारण स्थिरता)

क्यों स्थिर होयगो, वाको कारण समझो. क्योंके अपने मनमें कोईको स्मरण स्थिर होवे तो वाको अपने मनमें स्थिर होनो जरूरी नहीं हे क्योंके जाको स्मरण करें वो हृदयके बाहर विद्यमान होवे, आन्तरिक नहीं हे. पर प्रभुकी पर्सनलिटी तो ऐसी नहीं हे के वो

खाली बाह्य होय और आन्तर नहीं होय या आन्तर होय और बाह्य नहीं होय. वो तो बाह्याभ्यान्तर सर्वत्र हे. याहीलिये भाष्यकारने खुलासा कर दियो हे के **"यत्रैकाग्रता तत्राविशेषात्"** (ब्र.सू.४।१।११) भीतर ही तुमकु अनुभव हो रह्यो हे तो भी तुमकु वोही मजा हे और बाहर अनुभव हो रह्यो हे, तो भी वोही मजा हे. यामें कोई संयोग या विप्रयोग को झगड़ा हे ही नहीं. भाष्यकार स्पष्ट या बातकु कह रहे हें के **"यत्रैकाग्रता"** क्योंके बाहर प्रकट नहीं हो रह्यो हे और भीतर तुमकु एकाग्रता हे तो बाहरसु अविशेष हे. क्यों अविशेष हे? वाको कारण समझो. यदि अपन् यों मान रहे हें के भीतर वो नहीं हे तो कितनी बात कॅन्सल् हो रही हें? वो ब्रह्म नहीं हे. वो परमात्मा नहीं हे. वो भगवान् नहीं हे. महज एक कृष्ण हे. तो कृष्ण माइनस् ब्रह्म परमात्मा भगवान् अपने यहां भजनीय नहीं हे. वो तो विभूति हे. कृष्ण भजनीय कब हे? कृष्णको ये फिगर् हे, वाके पीछे एक लेयर् भगवान्की होय, ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान वैराग्य की होय. वाके पीछे दूसरी लेयर् वाके **"सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिः ज्ञानम् अपोहनं च."** (भग.गीता.१५।१५) की होय, **"ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया."** (भग.गीता.१८।६१) वा परमात्माकी होय और वा परमात्माके होवेके पीछे वा कृष्णके बॅक्ग्राउन्ड्में ब्रह्म भी बोलतो होय तब कृष्ण पुरुषोत्तम हे. **"यस्मात् क्षरम् अतीतो अहम् अक्षरादपि चोत्तमः. अतो अस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः."** (भग.गीता.१५।१८) तब वामें पुरुषोत्तमता आ रही हे. वो बॅक्ग्राउन्ड् हटा दी तो कृष्णको फिगर् बाय् इटसेल्फ् पुरुषोत्तम नहीं हो सके हे. क्योंके पुरुषोत्तम

होवेके लिये क्षराक्षरसु अतीत और उत्तम होनो ही हे. क्षराक्षर यदि बॅकग्राउन्ड्में नहीं दीख रही हें तो वो कृष्णाकार कैसे पुरुषोत्तम होयगो? मूल वो कारण हतो करके ठाकुरजीकी सेवा पधराते बखत भी महाप्रभुजीने सावधानीसु ये बात कही के **"साकार-व्यापकत्वात् च मन्त्रस्यापि विधानत:"** (त.दी.नि.२।२२९) वो आकृति वहां पूजनीय नहीं हे. वहां आकृति और तत्त्व दोनोंकी पूजा हे और तत्त्व व्यापक हे. तत्त्व आन्तरबाह्य सर्वत्र हे. जो तत्त्व आन्तरबाह्य सर्वत्र हे वाकी आकृतिकी पूजा हे. वो आकृतिकी जैसे बाह्यपूजा हे ऐसे वा आकृतिको मजा अपन् भीतर भी ले सकें हें.

(सदसद्वासनाको बिनजरूरी इन्स्टिगेशन् असद्धर्मको मूल)

जैसे भीतर ले सकें हें ऐसे भीतर ही लेनो, वो असद्वासना या सद्वासना को गैरजरूरी इन्स्टिगेशन् ही हे. याकु खुलो रखो. वाकु यदि बाहर मिलनो होय तो वाकु बाहर मिलवेके लिये तुम एपोइन्टमेन्ट् ले लो. भीतर मिलनो होय तो वाकु भीतर मिलवेके लिये तुम एपोइन्टमेन्ट् ले लो. वो जहां एपोइन्टमेन्ट् देतो होय वहां तुमकु वासु मिलवेकी तैयारी होनी चहिये. **"यत्र एकाग्रता तत्र अविशेषात्"** (ब्र.सू.४।१।११) तुम यों जिद्द करो के हम भीतर नहीं मिलेंगे हम तो बाहर ही मिलेंगे या बाहर नहीं मिलेंगे भीतर ही मिलेंगे तो तुम अपनी टर्म डिक्टेट् कर रहे हो. वो प्रभु जब उन टर्म् या डिक्टेशन् कु सहन करेगो तो करेगो, अन्यथा **"स्कन्ध आरूह्यताम् इति"** (भाग.पुरा.१०।३०।३९) करके गायब हो जायगो. जब गोपीजनन्ने यों कही के हमकु चलवेकी इच्छा नहीं हे. तुमकु ले चलनो होय तो गोदीमें उठाके ले चलो. आपने कही के पेड़पे लटको तो उठा लऊंगो गोदीमें. वो पेड़पे लटकी तो वहांसु गायब

हो गये. वो लटकती ही रह गई. **"स्कन्धम् आरूह्यताम् इति."** वो तो लटकाके भग जायगो. फिर भले तुम गाते रहो के "म्हारुं मन मोह्युं रे गिरिधरलालजीने लटके." गिरिधरलालजीने लटके नहीं ते लटकावीने गयो तमने. एनो लटको एवो छे के तमने लटकावीने भागी जशे कोई डाळना ऊपर. पछी रड़ता रहो. वाकु टर्म डिक्टेट् करवेके लिये एक हैसियत होनी चहिये. वो हैसियत कब आयगी, जब इतनो विलास हो गयो होय, जब इतनो पोषण हो गयो होय, उतनी धर्मनिष्ठा तुमने प्रकट कर दी होय, तब वो भी प्रकट कर देगो के ऑल्राइट् जैसे तुम केह रहे हो वैसे मैं करवे तैयार हूँ पर वाके पहले तुम टर्म डिक्टेट् करो तो कहे के अच्छा पेड़पे लटको मैं अभी उठाऊं तुमकु गोदीमें. वो लटकाके छोड़के भाग जाय. तो ये वाके अलग-अलग लटका हें.

(पुष्टिसंप्रदायमें सद्धर्म : लीलानुसंधानसहित सेवा)

व्रजमें प्रकट भयो यहांसु लेके; अपनकु ध्यान नहीं आ रह्यो हे पर सारी भगवल्लीलाको अनुसंधान अपनो फोकस् सद्धर्म हे. दूसरे शब्दनमें याको संदेश समझवेको प्रयास करो. भगवत्सेवा कभी भगवल्लीलानुसंधानरहित नहीं होनी चहिये. भगवल्लीलानुसंधानरहित भगवत्सेवाकी कृति तुमने करी तो तुमने क्रियाकी कोई सद्वासनाकु गैरजरूरी इन्स्टिगेट् कियो हे. वा इन्स्टिगेशनके कारण या तो तुमकु वो सेवाको एक्स्पर्ट बना देगी और फिर तुमकु वाको भारी पंडित बनाके अहंकारी बना देगी. वो अहंकारी बनवेके कारण फिर अन्तमें तुम सबपे दादागिरी करवे लगोगे. "ये सेवा ऐसे नहीं वैसे होवे हे. वो सेवा वैसे नहीं ऐसे होवे हे." अंतमें वा दादागिरीके कारण तुम

खुद दु:खी होओगे. न वामें भगवत्सुख रह जायगो, न तुम्हारो सुख रह जायगो और न तुम्हारे परिवारको या तुम्हारे सत्संगीन्कु सुख रह जायगो. क्योंके तुम्हारी सेवाकी जो दक्षता हे वो केवल दादागिरी करवेके लिये रह गई. ऐसे होय वैसे नहीं होय. सेवा करवेके पहले सबसु पहली रिक्वायरमेन्ट् सेवाकी नहीं, लीलानुसंधानकी हे. या सेवाकु मोकु जो कछु भी समझनो हे, वाकु मैं अपने कर्मसु कर रह्यो हूं, वो इनिशियेटिव् मोकु पहले लेनो पड़ेगो. वाके बॅकग्राउन्ड्में मेरे भीतर लीलाको अनुसंधान रहनो चहिये. लीलानुसंधानरहित सेवा अपने यहां कृति हो सके हे पर भक्ति नहीं हो सके हे, प्रॉब्लम् ये हे. "**सेवाकृतिः गुरोः आज्ञा बाधनं वा हरीच्छया**" (नव.७) जो महाप्रभुजी केह रहे हें के कृतिके रूपमें गुरुकी आज्ञा ठीक हे थोड़ी जरूरी हे. पर **"बाधनं वा हरीच्छया"** वो बाध कौनसो होयगो? लीलया. या बातकु लोग नहीं समझें. **"बाधनं वा हरीच्छया"** गुरुकी आज्ञाको बाध कहांसु होयगो? सेवा गुरुकी आज्ञाके हिसाबसु करी जाती कृति हे, वाके बॅकग्राउन्ड्में जो लीला बोल रही हे वो लीलानुसंधान रहेगो तो वामें बाधकी सामर्थ्य हे. लीलानुसंधानरहित कृतिसु तुम सेवा कर रहे हो तो गुरु आज्ञाको बाध हे. लीलानुसंधानसहित यदि तुम कछु कर रहे हो **"बाधनं वा हरीच्छया"** तो तुमकु महाप्रभुजी खुद आश्वासन दे रहे हें के **"अतः सेवापरं चित्तं विधाय स्थीयतां सुखम्."** (नव.७) यदि वा प्रोग्राम्में कोई तकलीफ हो रही हे तो महाप्रभुजी वाकु कैसे रीशेप् कर रहे हें? **"उद्वेगं विधायपि हरिः यद्यत् करिष्यति. तथैव तस्य लीलेति मत्वा चिन्तां द्रुतं त्यजेत्."** (नव.८) पाछी लीलाके बॅकग्राउन्ड्में आओ. जब सेवामें तुम कोप्-अप् नहीं कर पा रहे हो,

जामें घड़ीके पेन्डुलम् जैसी मूवमेन्ट् हे, जो अपनी कृति, अपनी कृतिको बोध, जाकु अपन् अंग्रेजीमें 'ऑट्' कहें हें, ये ऑट् को बोध कृति हे. लीलानुसंधान ऑट् नहीं हे. सेवामें वो तो तुम्हारी सद्वासना हे, जासु तुम कमिटेड् हो. यदि कमिटेड हो; याही लिये वहां स्पष्ट आज्ञा करे हें के जा बखत तुम सेवामें लीलानुसंधानरहित कृति कर रहे हो **"तदा न आधिदैविकी."** (सेवाफल.वि.६) वो सेवा आधिदैविक नहीं होके आधिभौतिक हो जाये हे. वाकु कैसे मॅनेज् करनो? लीलानुसंधान करके. अपने यहां अष्टछाप वगैरह भगवदीयन्ने पद गाये. ऑलराईट् यदि तुम तुम्हारी तरफसु लीलानुसंधान नहीं जगा सकते होओ, तो हम तुमकु सहायता प्रदान कर रहे हें. ये पद गाओ. ये पद थोड़ी देर गुनगुनाओगे तो लीलानुसंधान तुम्हारो हो जायगो. जो कृति तुम कर रहे हो वो कृतिमें सहज छलना संभव हे के तुम्हारो अहंकार तुमकु छल रह्यो होय, 'ऑट्'के कारण के मैं प.भ. हूं, मैं बापा हूं, मैं बापी हूं, मैं गो.बा. हूं, मैं गो.बे. हूं; यालिये दिखानी पड़ेगी सेवा, तो वो तुम्हारो अहंकार तुमकु छलतो होयगो. जब भी लीलानुसंधान करोगे तो अहंकार छलनो बन्द कर देगो क्योंके तुमकु पता चलेगो के ये सेवा मूलमें तुम नहीं कर रहे हो, ये तो वाकी लीला हे. वा लीलामें तुम खाली पार्टिसिपेट् कर रहे हो. तुमकु इतनो एलाउ कियो हे के अच्छा मैं खेल रह्यो हूं. तोकु भी खेलनो होय तो आ जा. लीलानुसंधान तुमकु ये संदेश दे रह्यो हे.

ऑट् क्या संदेश दे रह्यो हे? **"ईश्वरो अहम् अहं भोगी सिद्धो अहं बलवान् सुखी. आढ्यो अभिजनवान् अस्मि को अन्यो**

अस्ति सदृशो मया. यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इति अज्ञानविमोहिता:.” (भग.गीता.१६।१४-१५) भगवान् लड्डू दे रहे हें के **“इति अज्ञानविमोहिता:”** जब तुम्हारी कृतिको उत्स यामें हे तो तुम अज्ञानविमोहित हो. तुमकु भ्रमणा हो रही हे के तुम ज्ञानसु सेवा कर रहे हो. पर तुम ज्ञानसु सेवा नहीं कर रहे हो. क्योंके सेवा अहंकारसु पैदा नहीं होयगी. सेवा तो एक नये अहंकारकु पैदा करवेकी नई शैली हो जायगी. एक नये अहंकारकु पैदा करवेकी एक प्रक्रिया सेवा बन जायेगी. वो अहंकारसु पैदा नहीं होनी चहिये सेवा पर सेवा अपने भीतर एक नये अहंकारकी क्लाउनिंग् करे हे के अभी तक ये जो मेरो अहंकार हतो के ‘‘मैं ये हूं, मैं वो हूं’’, वो अपन्कु नहीं होके अपन्कु ये लगे के मैं भगवान्की लीलामें पार्टिसिपेट् कर रह्यो हूँ. वा तरीकेके अहंकारकु पाछो री-मॉडेल् करवेकी प्रक्रिया सेवा हे और वा प्रक्रियामें यदि सेवा भई तो वो लीलानुसंधानके बिना तो होयगी नहीं.

माने जब तुम अपने या अहंकारकु जैसे; एकदम कॉन्क्रीट् उदाहरणसु समझाऊं के जा बखत अपन् ठाकुरजीकु जगा रहे हें, वा बखत मैं जगा रह्यो हूँ के यशोदाजी जगा रही हें? अपने जगावेके अहंकारकु यशोदाजीके जगावेकी क्रियामें डायल्युट् करनो नहीं आयो तो वो अपने अहंकारसु की जाती सेवा होयगी. मंगलभोग धरते बखत मैं मंगलभोग धर रह्यो हूँ के ठाकुरजी यशोदाजीसु झगड़ा करके अपनो सुबहको प्रातराशन् मांग रहे हें? अंग्रेजीमें जाकु ब्रेक्फास्ट् कहें हें. ठाकुरजी झगड़ा करके प्रातराशन् मांग रहे हें; ये जब तुमकु गाके समझमें आतो होयगो तब तुमकु समझमें आयगो के

यामें मैं क्या कर रह्यो हूं. वो तो ठाकुरजी मांग रहे हें यशोदाजीसु, वाको अनुभाव मैं प्रकट कर रह्यो हूं. मांग मोसु नहीं रहे हें, धर मैं नहीं रह्यो हूं, धर यशोदाजी रही हें, मैं तो वो कैसे मांग रहे हते और कैसे धर रहे हते, वाको एक खाली अनुभाव प्रकट कर रह्यो हूँ. तुम्हारो सेवा करवेको अहंकार हे वो यशोदाजीके अहंकारमें जाके मर्ज हो जायगो.

जब तुम ठाकुरजीके सामने गैंद छड़ी चौगान धर रहे हो वा बखत तुम ठाकुरजीकी सजावट कर रहे हो, तो अहंकार बूस्ट् हो रह्यो हे. **"ईश्वरो अहम् अहं भोगी"** (भग.गीता.१६।१४) ठाकुरजीकी सजावट कौन करेगो, मैं नहीं करूंगो तो. "**यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य**." (भग.गीता.१६।१५) पर जा बखत तुमकु ये लगेगो के ठाकुरजी वनमें अपने गोप सखान्के साथ लीला कर रहे हें वा लीलाकी जो सजावट हती वाको तो मैं खाली यहां एक अनुभाव प्रकट कर रह्यो हूं क्योंके मैं वा लीलाको एक हिस्सा हूं. मोकु वा लीलामें एन्ट्री मिली हे. तुम्हारो प्रभुके साथ जो सख्यभाव हे वो उनके साथमें मिल रह्यो हे. ऐसे तुम्हारे दास्यभावको अहंकार, तुम्हारे वात्सल्यभावको अहंकार, तुम्हारे स्नेहभावको अहंकार, तुम्हारे समर्पणके भावको अहंकार, उनके जो रोल् हें वामें वो मर्ज अर्थात् दाल-भातकी तरह सन जाय तब लीलानुसंधान बनेगो. यदि वामें मर्ज नहीं हो पा रह्यो हे तो लीलानुसंधान नहीं हो रह्यो हे. वो तो तुम्हारी कृतिको अनुसंधान हो रह्यो हे. वाके लिये प्रक्रियाके तौरपे एक लीलाके अनुसंधानकी प्रक्रिया श्रीमहाप्रभुजीने तो अपने कोई मौखिक उपदेशमें प्रकट करी होयगी पर लिखित रूपमें पहले

श्रीगोपीनाथजीने प्रकट करी, फिर गुसांईजीने प्रकट करी, वाके बाद श्रीगोकुलनाथजीने प्रकट करी. वाके बाद श्रीहरिरायजीने और फिर श्रीद्वारकेशजीने श्रीव्रजरायजीने प्रकट करी; इन सब बालकन्ने और भगवदीयन्ने वा तरीकेकी प्रक्रियायें प्रकट करी. वाही तरहसु गोपालदासजीने भी यहां प्रकट करी. वो समझा रहे हें के सेवाको प्रकार अपनो लीलानुसंधानरहित नहीं होनो चहिये. वो अपनो पुष्टिमार्गमें सद्धर्म हे. अपनी वासनाकु जो ऊतिके चॅप्टर्सु कॅरी फॉरवर्ड् हो रही हे, वाकु मॅनेज् या ढंगसु करनो हे के वाकु लीलानुसंधानसहित बनाओ तो तुम्हारी सद्वासना सेवा करवेकी, भक्ति करवेकी हॅल्दी रहेगी. लीलानुसंधानरहित भक्तिकी सद्वासना हे वो कहीं न कहीं तुमकु ले डूबेगी.

(भजन धर्मथी हीन)

कोई भी अहंकारपूर्ण भक्तिके कारण तो तुम मरोगे क्योंके लीलानुसंधानसहित तो हे नहीं. अन्तमें ''जिस जगहसे ले चला था राहवर. हम वहीं आये हें फिर घूमके'' अब बोलो क्या करोगे? क्योंके यहांसे ही तो आगे बढ़ावेको प्रोग्राम् हतो. तुम पाछे वहां आके खड़े होके पूछ रहे हो के अब कहां जायें? ये चक्कर मारके तुम पाछे आये तो वहीं ना! मालूम पड़ी कहां? **कर्मजड आसुर अन्यउपासक भजनधर्मथी हीन.** वा भावमें तुम फिरसु प्रतिष्ठित हो गये. जहांसु ये सर्ग सृष्टि प्रकट भई हती **एणी पेरे सृष्टि द्विधा गुणमिश्रित चाली जाय. भक्तिमार्गी जीव स्वतन्त्र केवळ भक्त न थाय.** वहांसु तुम्हारी यात्रा बढ़ाके यहां तक लाये और तुम पाछे वोई कर्म जड़ आसुर हो गये. अब अपन् समझ रहे हें के सेवा कर रहे हें, वस्तुतः कर्मजड़ आसुर नहीं हें. यज्ञ करवेवाले कर्मजड़

आसुर हें, पूजा करवेवाले कर्मजड़ आसुर हें, तीर्थ करवेवाले कर्मजड़ आसुर हें. तो महाप्रभुजीने भी तो तीर्थ कियो के नहीं? महाप्रभुजी प्रकटे सेवासु के सौ सोमयागसु? शान्तिसु विचारो. गुसांईजीने श्रीगिरिधरजीने श्रीगोविन्दरायजीने सोमयाग किये के नहीं. ईवन् श्रीगोकुलनाथजीने सोमयाग किये हें जो एकदम प्रमेयवादी पुष्टिमार्गीय हें, उनने भी सोमयाग किये हें. ये सब कर्मजड़ हते? ये कोई भी कर्मजड़ नहीं हते. उनने अपनी सद्वासनाकु प्रपोर्शनेटली मॅनेज् कियो हतो. यदि अपन् मॅनेज् नहीं करेंगे तो सेवाके कारण भी अपने कर्मजड़ हो सकवेके उतने ही चान्सेस् हें के जितने चान्सेस् वहांसु अपन्कु आगे बढ़ावेके लिये सर्गलीलाकु प्रकट कियो हतो पुष्टिसम्प्रदायमें.

(भावात्मक लीलानुसंधानसु निरोधकी कामना)

या लिये गोपालदासजी केह रहे हें **ते पद क्यारे देखशुं जे गोधन पूठें धाये जी.** लीलामें कौनसी दृष्टि, वर्च्युअल् रियालिटी, **ते पद क्यारे देखिशुं** वर्च्युअल् रूपमें, साइनेस्थेसियाके रूपमें, डे ड्रीमिंग्के रूपमें, **ते पद क्यारे देखिशुं जे गोधन पूठें धाये जी.** कोई भी रूपमें नहीं पर भावदृष्टिसु लीलानुसंधानकी दृष्टिसु. लीलानुसंधान अपने भीतर इतनो बढ़नो चहिये के वो गोधनके पीछे दौड़तो भयो भगवान् अपन्कु लीलानुसंधानकी अनुभूतिमें फील् होवे लगे. वो बात केह रहे हें यहां. ये बात नहीं केह रहे हें वर्च्युअल रियालिटी कर दो. एक डिजिटल्में एनीमेशन् प्रोग्राम् कर दो. एक श्रीनाथजी हाथमें लकड़ी लेके गाय चराय रहे हें. वो वर्च्युअल् रियालिटीकी बात यहां नहीं हे. ना यहां कोई साइनेस्थेसियाकी या डे-ड्रीमिंग्की बात हे. ये हॅल्युसिनेशन्की भी बात नहीं हे. जा भावसु वाको स्वरूप भावित

हे, वा भावकी बात हे. **ते पद क्यारे देखिशुं जे गोधन पूठें धायेजी. व्रजसुन्दरी–मुख–सुख पामीने वारंवार अघायेजी.** निरोधलक्षणमें महाप्रभुजी केह रहे हें के **''यच्च दुःखं यशोदाया नन्दादीनां च गोकुले. गोपिकानान्तु यद् दुःखं तद् दुःखं स्यान्मम् क्वचित्. गोकुले गोपिकानां च सर्वेषां व्रजवासिनाम्. यत् सुखं समभूत् तन्मे भगवान् किं विधास्यति''** (नि.ल.१) या तरहसु लीलानुसंधानकी आवश्यकता ला रहे हें. महाप्रभुजी निरोधमें मांग रहे हें. मांग नहीं रहे हें पर मांगनो चहिये यों अपन्कु सजेशन् दे रहे हें. खुदकु तो यों केह रहे हें के **''अहं निरुद्धो रोधेन निरोधपदवीं गतः. निरुद्धानान्तु रोधाय निरोधं वर्णयामि ते.''** (नि.ल.१०) मैं तुमकु बता रह्यो हूँ के अपन्कु या तरीकेको लीलानुसंधान सेवा करतेमें होनो चहिये. सेवा शुरु करनो बोहोत अच्छी बात हे. सद्वासनाके द्वारा अनुष्ठित धर्म हे. पर लीलानुसंधान वामें होनो ये वाकु सद्धर्म बनायगो, नहीं तो वो सेवा शायद तो सद्धर्म नहीं रह जायगी यदि लीलानुसंधानसहित नहीं भई होय तो. अपन् अपने ढंगसु वा भक्तिके खाताकु ऑडिट् करेंगे तो शायद वामें डॅबिट् ज्यादा दीखेगी, क्रॅडिट्के बजाय. जब लीलानुसंधानसहित होयगी तो वामें डॅबिट् कम हो जायगी और कामके अनुसंधानकी, लाभपूजाके अनुसंधानकी.

(श्रीगोपालदासजी और श्रीगुसांईजी को सेवामें व्रजलीलाको अनुसंधान)

वो केह रहे हें **दिवस सर्वे श्यामा मळी, रसरूप तणो यश गाये जी... वासर निर्वाह एम करे सखी सायंकाले पेखे जी. अलक मुख खुररज लागी ते, कमल भ्रमर विसेखे जी.** देखो ये भी युगलगीतवाली बात हे. वेणुगीत और युगलगीत की कॉमन् थीम् भी ये ही हे. जो

गोपिकान्को कृष्णके प्रति भाव हे, वाके लिये वो स्ट्राईव् कर रहे हें. जबरदस्ती याकु गुसांईजीकी तरफ मोड़नो, वाकी कोई आवश्यकता नहीं हे. प्रश्न ये नहीं हे के गुसांईजी पुरुषोत्तम हें के नहीं. होंय तो क्या और नहीं होंय तो क्या! जो पुष्टिमार्गको जीव हे, वाकु गुसांईजी या तरीकेको सद्धर्म उपदेश करते हते. वाको सबसु बड़ो प्रमाण; देखो एक बोहोत सुन्दर बताऊं आपकु. मंगलार्तिकी आर्याकी वार्तामें स्पष्ट लिख्यो हे के परमानन्ददासजी गोकुल आये. अब गुसांईजीको नियम ये हतो के नवनीतप्रियाजीकी सेवा किये बिना वहां श्रीनाथजीकी सेवा करवे नहीं पधारते. अपने घरके ठाकुरजीकी सेवा करके, क्योंके वो बाय्-डिफॉल्ट् उनके माथे बिराजते ठाकुरजी हते और श्रीनाथजी हस्तगत किये गये ठाकुरजी हते. अपने ठाकुरजीकी सेवासु पोहोंचके वहां पधारते. यासु उनकु कभी श्रीनाथजीके मंगलाको अवसर नहीं मिलतो हतो. देखो पाछी फिरसु प्रॉब्लेम् ये हे के वर्च्युअल् रियालिटी हे, साइनेस्थेसिया हे, हॅल्युसिनेशन् हे, क्या हे? गुसांईजीने परमानन्ददासजीकु बुलायो और कही के "मैं ठाकुरजी नवनीतप्रियाजीकु जगा रह्यो हूँ तो तुम ब्रजलीलाके पद गाओ". परमानन्ददासजी कन्फ्युज्ड् हो गये के पद कैसे गाऊं सुबह सुबह? गुसांईजीने कही के "कोई चिन्ताकी बात नहीं हे. मैं तुमकु एक पद बनाके दऊं. जामें सारी व्रजलीला ठौंस दऊं." मंगलाको ऐसो पद के जामें प्रमाण प्रमेय साधन और फल चारों लीला क्लब् कर दी गुसांईजीने. **"मंगलं-मंगलं व्रजभुवि मंगलम्. मंगलम् इह श्रीनंद-यशोदा-नाम सुकीर्तनम् एतद्-रुचिरोत्संग -सुलालित-पालित-रूपम्."** (मं.आ.आ.१) प्रमाण प्रमेय साधन और फल चारों लीलाकु क्लब् करके मंगलार्ति-आर्या बनाई. सुबह

ठाकुरजीकी ये मंगलार्ति उतार दो तो चारों लीलान्को अनुसंधान हो जाये. लीलानुसंधान हो गयो. यही तो कृष्णसेवामें सुबह हो जानो हे. ठाकुरजीकु जगा रहे हो, जगाके जो मंगल आरती होवे वो तुम्हारी सेवाकी मंगलरूपता प्रमाण प्रमेय साधन फल चारों लीलान्के अनुसंधानसु प्रकट होयगी.

परमानंददासजीकु कही के अच्छा एक काम करियो जब भी श्रीनाथजीमें जगायवेके पद तुम गाओ तो ये गाईयो. ये पद श्रीनाथजीके सम्मुख गा दीजो वहां. मैं पोहोंच पाउं के नहीं पर नाम्ना वहां पोहोंच्यो, कीर्तनलीलासु वहां पोहोंच्यो और कृतिलीलासु नवनीतप्रियाजीमें आ जाऊं. दोनों जगहमें हाजिर हें गुसांईजी. आज भी अपने घरके ठाकुरकु जगावेके बाद अपन् मंगलार्तिकार्या गातें होय तो गुसांईजीकी **''त्वं जय सततं गोवर्धनधर! पालय निजदासान्''** बिनती अपनेमें वो दास्यभाव प्रकट करेगी जासु अपने सेव्य ठाकुरमें प्रमाण प्रमेय साधन फल लीलान्के अनुभाव प्रकट करवेको सेव्य ठाकुर अनुरोध! भूलेचुके भी जा दिन स्वीकार लेगो वा दिन अपनो निरोध चारों लीलान्में सिद्ध हो जायेगो. गोपियें जब ठाकुरजी मथुरा द्वारका पधार गये तो वहां नहीं गई. आज-कल इंग्लॅण्ड् अमरीका सु लोग यहां आ रहे हें, तो वहां मथुरा जावेमें कौनसो जोर लगतो हतो! कोई वीज़ा या पासपोर्ट की जरूरत पड़ती हती क्या? गई क्यों नहीं? क्योंके चारों लीलावालो व्रजमण्डल उनके हृदयमें स्थिर स्थापित हतो और वामें व्रजलीलाविहारी विहार कर रह्यो हतो. **''यत्र एकाग्रता तत्र अविशेषात्.''** भक्तकु उतनो आत्मविश्वास होनो चहिये.

(भक्तिमें आत्मविश्वासको रोल्)

मैं अक्सर एक बात कहतो रहूं. यदि तुमकु आत्मविश्वास नहीं हे तो भगवद्विश्वास भी नहीं हो पायगो. क्योंके भगवान् प्रकट भी हो जाये तुम्हारे सामने तो तुमकु आत्मविश्वास नहीं होयगो और तुमकु लगेगो के मेरे सामने प्रकट भयो हे के कोई औरके सामने? मोकु देखवेके लिये प्रकट भयो हे के कोई औरकु देखवेके लिये प्रकट भयो हे? आत्मविश्वास नहीं हे तो भगवान्के प्रकट होवेको फायदा क्या? सबसु पहली जरूरत तुमकु आत्मविश्वासकी हे. वो आत्मविश्वास तुमकु भक्तिमें होनो चहिये. मैं भक्ति कर रह्यो हूँ और मोकु लीलानुसंधान हे, वो आत्मविश्वास जब तुमकु खुदपे होयगो तभी भगवान्में भी विश्वास आयगो.

९९ प्रतिशत पति-पत्नीके झगड़ा आत्मविश्वासकी कमीके कारण होते होवें हें. पत्नीकु खुदपे भरोसा नहीं होवे यासु वाकु पतिपे भरोसा नहीं आवे. पतिकु खुदपे भरोसा नहीं होवे करके पत्नीपे विश्वास नहीं आवे. अरे भई! सेल्फ्-कॉन्फिडेन्स् खुद तो पहले पैदा करो! जब खुदपे भरोसा आयगो तो दूसरेपे भी अपने आप भरोसा होवे लगेगो. अपनेपे ही कॉन्फिडेन्स् नहीं हे, अपन् ही अपनेकु डांवाडोल लगते होंय के हमारे ही मांजना ऐसे हें तो वहां न जाने क्या होंयगे? गुजरातीमें एक बात कही जाय हे 'विचारवायु'. वो विचारवायु घूमवे लग जाये खोपड़ीमें क्योंके अपन्कु खुदपे विश्वास नहीं हे. ऐसे जब खुदपे विश्वास नहीं हे तो प्रभुपे भी विश्वास नहीं जगेगो. अपने घरमें अपने आधीन बिराजते ठाकुरपे भरोसा नहीं यासु हवेलीन्के ठाकुरजीके भरोसा रखवेकु

भटके. पर घरमें साथ रेहवेवालीपे भरोसा नहीं और बारीमेंसु पड़ौसके घरमें दीखवेवालीपे भरोसा करने लगें. आत्मविश्वासकी अपने भीतर कमी होवेके कारण! सबसु प्राईम् जरूरत अपन्कु आत्मविश्वासकी हे. आत्मविश्वास होयगो तो भक्तिपे विश्वास आयगो. भक्तिपे विश्वास आयगो तो वा भक्तिके कारण लीलानुभूतिपे विश्वास आयगो. लीलानुभूतिपे विश्वास आयगो तो लीलाविहार करवेवालेपे विश्वास आयगो और यहां आत्मविश्वास ही नदारद हे.

अब वो सारी लीला प्रकट भी कर दे तो अपन् देख सकें हें के हिरण्यकशिपुके सामने खंभा फाड़के प्रकट भये. फिर भी तलवार चलातो भयो मारा-मारी करवे और गयो. अरे भई! मारा-मारीकी क्या जरूरत हे? वाकु उठाके गोदीमें रखके दो मिनट्में चीरके रख दियो. एक बखत तो वाकु विश्वास ही नहीं आयो के प्रकट भयो. क्यों विश्वास नहीं आयो? खम्भा फाड़के प्रकट भयो तो विश्वास आनो चहिये के नहीं? कोईने ऐसे कही जो सोना माथेके नीचे छुपाके सोवे, सोनाकु जो तकियामें छुपाके रखतो होय, तो वाको अविश्वास कितनो होनो चहिये? वो तो कॅरेक्टर् ही हे ना अविश्वासको. एक तो सोना कमायो, कोई बुरी बात नहीं करी, अच्छो काम कियो. अब अविश्वास कितनो? सोनाकु दिन-रात माथेके नीचे रखके ही सोवे. उतनो जो अविश्वासी होय, वाके सामने भगवान् भी प्रकट होय तो तलवार चलाते जानो पड़ेगो. एक्च्युअल् डॅमोन्स्ट्रेशन् दे दियो, खम्भा फाड़के प्रकट हो गयो. सोना जो कमायो हे वो भी पाछे तकियाके नीचे रखे तो नींद आवे. नहीं तो नींद नहीं आवे. सोतो होय और कोई उठाके ले जाये तो?

आजकल अपन् ऐसे ही करें ना! ट्रेन्में अक्सर देखूं के जूता अपने तकियाके नीचे रखके सोवें लोग. बोहोत मजा आवे देख-देखके के कैसे उपानहकशिपु हें ये लोग. अपनेमें आत्मविश्वास नहीं हे. अपन् यहां सो गये और कोई जूता उठाके ले जाय तो सेफेस्ट् जगह कौनसी? तकियाके नीचे. हिरण्यकशिपुकी तरह जूताकु तकिया बनाके सोवें आदमी रेल्में. फिर नाक बोलती होय एकदम खुर्रखुर्र. क्योंके जूता तकियाके नीचे हे ना! रेल्में ऐसे ऐसे बोहोत मजा आवें. ऐसे यात्रीन्के जब दर्शन होंय तो मोकु भी लगे के हां **"भिद्यते हृदय ग्रन्थिः छिद्यन्ते सर्वसंशयाः क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे"** (मुण्ड.उप.२।२।८) इतनो इतनो सामान, ए.सी. और जूता तकियाके नीचे. अद्भुत दृश्य होवे. आज आदमीकु कितनो अविश्वास हो गयो हे!

अब या आदमीकु कहें के भगवान्पे विश्वास कर तो कैसे विश्वास कर पायगो? या अविश्वास भरी मानसिकतामें कोईकु अपन् कहें के तू भगवान्पे विश्वास कर तो बोहोत ही मुश्किल हे. वास्तवमें तो असम्भवकी संभावना ज्यादा हे.

(नित्यलीलाकी अनुसंधानकी याचना)

भगवान्पे विश्वास करवेके लिये **वासर निर्वाह एम करे सखी सायंकाले पेखे जी. अलक मुख खुररज लागी ते कमल भ्रमर विसेखें जी.** यहांसु लेके देखो के **करी पेरे पेरे वारणा सुतने सदनमां पधरावेजी.** माँने शुरुआतमें घरमेंसु ठाकुरजीकी वृन्दावनमें विदाईकी और पाछी घरमें अगुवाई करी. वाके बाद **सुन्दरी गृहकारज मिषे वळी निरखवाने आवेजी.** वा पदमें बतायो हे के ''मिस ही मिस

आवत गोकुलकी नारी. दीपक ले चली बाटमें बड़ो करदारि. फेर ब्यारको देत गारि मिस ही मिस आवे गोकुलकी नारी.'' **सुन्दरी गृहकारज मिषे वळी निरखवाने आवेजी.** वहां तक एक युनिट् बताई हे. वाके बाद फिर शामकी सेवाको लीलानुसंधान कर रहे हें. **उष्णोदक सोंधो भेळीने अंग अगोळ करावे जी.** इतनो सारो अनुसंधान करवेके बाद शयनकी सेवाको अनुसंधान कर रहे हें. **सकल व्रजमां पोढिया व्हालो विविध रस सुखदान जी. ए लीला म्हारे मन वसो ते भक्त मांगे मान जी.**

गुसांईजीकु ये बात गोपालदासजी केह रहे हें के ये लीला मेरे मनमें बसनी चहिये तो तो मैं जो भी सेवा करूंगो, वो सेवा मेरे अहंकारसु पैदा भई न होके लीलाकी डिरेक्टरीमें खुली भई एक फाइल्की तरह होयगी. सेवाकी जो अपनी फाइल् हे, वो लीलाकी डिरेक्टरीमें खुलनी चहिये. अपने क्षुद्र अहंबोधसु पैदा होती कृतिकी डिरेक्टरीमें नहीं. मैं कम्प्युटर्की बात केह रह्यो हूँ. वाकी लीलाकी डिरेक्टरीमें अपनी सेवाकी फाइल् खुलनी चहिये. यदि ऐसो भयो तो तुम्हारी सेवा तुरत लीलात्मक हो जायगी. यदि अपनी सेवाकी डिरेक्टरीमें वाकी लीलाकी फाईल् खुली तो वो लीला तुम्हारी वा सेवाको एक प्रकार कहवायगो.

मैं एक बखत कीर्तनमंडलीमें कहीं गयो हतो तो झांझ बजती जा रही हती और वे लोग आपसमें बात कर रहे हते "दस रुपया मांगे हे पांच दे दीजो. झिकझिकझिक'' कीर्तन भी करते जा रहे हें और झांझ भी बजती जा रही हे. घबराके मैंने कही के झगड़ा क्या

हो गयो? वो कीर्तन गावेके पाछे पांच और दसके झगड़ा. झांझ जोर जोरसु बजा रहे हते, कीर्तन नहीं गा रहे हते. डिस्ट्रीब्युशन् ऑफ जॉब; कोई आदमी खाली झांझ बजा रहे हें, अपन्कु उन्माद आ जाये, इतनी जोरदार झांझपे. वो मेरे बाजुमें बैठ्यो हतो वासु मैं सुन रह्यो हतो के दस रुपया मांगे हे, पांच दीजियो चलेगो. मैंने सोच्यो के ये क्या चल रह्यो हे कीर्तनमें? कीर्तन तो कछु और चल रह्यो हे, गावेवाले कछु और गा रहे हें. झांझियालोग कछु और डिस्कस् कर रहे हें. अद्भुत लीला हे प्रभुकी! डिवीज़न् ऑफ् लेबर् हो जाये, क्योंके लीलानुसंधान अपन्कु होवे नहीं हे भगवल्लीलाके कीर्तनमें भी!

गोपालदासजी केह रहे हें के यदि आपने मोकु अपनो मान्यो तो मोकु आदर दो, मान दो. कौनसो आदर, कौनसो मान? मैं आपको सेवक हूँ वो मान मोकु दो. **श्रीविट्ठल द्विजरूप तमारी, लीला एणी पेरे झाझी जी. ओळव्ये केम चालशे ते प्रीत अमशु बाझी जी.** मैंने आपसु प्रीति करी के आपने मोसु प्रीति करी? कौनने पूछ्यो के गोमतीको वर तो सागर होनो चहिये! ''मैंने कही के मैं गोमतीको वर हूँ तो मोकु सागर बनाओ?'' कही कौनने? आपने कही के गोमतीको वर सागर होनो चहिये. आपने अपनो हावभाव प्रकट कर दियो मेरे बारेमें. **सरसवचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार.** मेरे संशयको परिहार कर दियो के मैं गोमतीको वर हूं, मैं सागर हूं. वो भक्तिको सागर मेरेमें लहरानो चहिये, वो लीलाको सागर मेरेमें लहरानो चहिये. वो मान मोकु दो आप. अब ये मांगवेमें बात **''प्रार्थिते वा ततः किं स्यात् स्वाम्यभिप्रायसंशयात्''**(वि.धै.आ.२)

विवेकधैर्याश्रयसु ऊपर उठ गई. ये कथाभक्तिकी हो गई यासु मोकु जो शेर बोहोत प्रिय लगे हे वो मोकु याद आवे या गोपालदासजीके प्रसंगमें ''इतने शायिस्ताए-आदाबे-मौहब्बत न बनो. शौके दीदार अगर है तो तकाजा भी करो.'' मौहब्बतकी जो अदब हे, जो डिसीप्लिन् हे, वा डिसीप्लिन्के ऐसे मोड़ा-मोड़ी मत बन जाओ के कछु मांगनो ही नहीं. यदि दर्शनकी इच्छा हो रही हे, तो मांग लो के भई दर्शन क्यों नहीं दे रहे हो. यदि तुमकु ये लीलादर्शन करवेकी इच्छा हो रही हे, शौके दीदार हे; गोपालदासजी एक मीठो तकाजा कर रहे हें, शायिस्ताए आदाब नहीं बन रहे हें. वो कहें हें के आपने मोकु अपनो मान्यो हे, आपने मोकु ये डिग्निटी प्रोवाईड् करी हे के मैं गोमतीको वर सागर हूं तो अब मेरे हृदयमें लीलाको सागर लहरानो चहिये.

सद्वासनाके प्रमोशन्के बारेमें कमिटमेन्ट् मांग रहे हें, ये जो कमिटमेन्ट् मांग रहे हें वो सद्धर्म हे और वो सद्धर्मको निरूपण करतो भयो ये आख्यान होवेके कारण ये अपने भागवतके साथ पैरेलल् जाती भई मन्वन्तरलीला हे. क्योंके ''**मन्वन्तराणि सद्धर्म**'' गुसांईजीकु उनको सद्धर्म याद दिवा रहे हें के **ओळवे केम चालशे** महाराज; आप अपनी सद्वासना प्रकट करो. असद्वासना मत प्रकट करो के गोमतीको वर बना दियो फिरभी लीलाभक्तिको सागर मेरेमें नहीं लहराये! थोड़ी आपके भीतर सद्वासना प्रकट करो और थोड़ी ये सद्वासना मेरे भीतर प्रकट करो के जब भी मैं सेवा करवे जाऊं तो ठाकुरजीकी नित्यलीलाके अनुसंधानसु मेरो हृदय कभी भी रहित नहीं होवे. **ये भक्त मांगे मानजी**.

(भक्तिकी साधनामें लीलाको दृष्टिकोण)

जो अपन्ने प्रकरण विभाग देखे हते वामें तीन प्रमेयलीला, तीन प्रमाणलीला और दूसरी तीन ज्योतिर्लीला हें. माने इलिम्युनेशन्. मतलब क्या के प्रमेय तो पूर्वसिद्ध होवे हे. यदि पूर्वसिद्ध होवे तो प्रमाणकी प्रवृत्ति कैसे होयगी? याकी एपिस्टमोलोजिकल् प्रि-सपोज़ीशन् देखो कैसे हे? यदि प्रमेय पूर्वसिद्ध नहीं होय, तो प्रमाण प्रवृत्त कहां होयगो? साधन और प्रमाण को बेसिकली यदि कोई अन्तर हे तो ये ही अन्तर हे के साध्य पूर्वसिद्ध नहीं होवे और साधन प्रवृत्त होके वा साध्यकु सिद्ध कर दे. जैसे पहले घड़ा सिद्ध नहीं हे. कुम्हार अपने ऐसे उपाय करे. वो मट्टी लावे, वाकु चक्कापे धरे और फिर वा मट्टीको घड़ा बना दे. जो साधन हें घड़ा बनावेके उनसु वो घड़ा बना दे. घड़ा पूर्वसिद्ध नहीं हे करके वो अपने साधन रूपी उपायन्सु घड़ाकु बना दे. तो साधनन्के लिये तो लगभग ये नियम हे. अपने यहां नि:साधनताको मार्ग हे वा बातकु भूलियो मत. पर 'प्रायोवाद' जाकु अपन् कहें हें वो ऐसो हे के साधन ऐसो होय के जाके साधनाचरणमें मजा आवे. जहां भी साधनसाध्य पूर्वसिद्ध होय तो वो या तो अपने साधनाके अहंकारकु चोट पोहोंचातो होवे हे क्योंके बिरलो व्यक्ति ही ऐसो होवे हे के साध्यके पूर्वसिद्ध होवेके बाबजूद भी साधन करे! कोई युरोपके बोहोत बड़े पियानिस्ट्को ये वाक्य हे. वो कहे हे के यदि ''मैं एक दिन पियानो नहीं बजाऊं तो मेरी अंगुलीन्कु कछु होवे हे. छ: दिन पियानो नहीं बजाऊं तो मेरे दिलकु भी कछु फील् होवे हे. दो महीना तीन महीना पियानो नहीं बजाऊं तो मेरे ऑडियेन्सकु भी फील् होयगो.'' अच्छो पियानिस्ट् हे फिर भी वाकी फीलिंग् या

तरीकेकी हें. पियानो सिद्धसाध्य हे फिर साधना जरूरी नहीं हे के पर्फॉरमेन्स् होनो चहिये. अभी भी प्राय: जितने भी टॉप् ग्रेड् कलाकार हें, संगीतकार हें, पेन्टर् हें, स्कल्पचर् हें, उनके पास मॉर् और् लॅस् जो वो परफॉर्मेन्स्में दिखाते होवें हें, वो उनके माईन्ड्में या दिलमें रेडीमेड् होवे ही हे. फिर भी वो साधना करते होवें.

गीतामें भगवान् जा तरहसु केह रहे हें **''मा कर्मफल हेतु: भू: मा ते संङ्गो अस्तु अकर्मणि.''** (भग.गीता.२।४७) वो तो एक कर्मकी प्रेरणाके लिये केह रहे हें. पर जहां कर्मको फल सिद्ध हे वाके बाद भी कर्म करनो ! वो लीलात्मक मूड् हे. वो क्रियात्मक मूड् नहीं हे. जो कछु सिद्ध हे, सिद्ध हे तो क्या भयो! क्या फर्क पड़्यो! प्रश्न अपने साध्यकु सिद्ध करवेको थोड़े ही हे. श्रीमहाप्रभुजी आज्ञा करें हें **''कृष्णसेवा सदा कार्या मानसी सा परा मता चेत: तत्प्रवणं सेवा तत्सिद्धयै तनुवित्तजा.''** (सि.मु.२) अब यदि मानसीसेवा सिद्ध हो गई तो क्या सेवा छोड़ देनी? चित्त भगवत्प्रवण हो गयो तो क्या सेवा छोड़ देनी? क्योंके जो परिणाम हे वो नहीं पैदा भयो तब तक करनो. जैसे बच्चायें करें के परीक्षाको परिणाम आ गयो तो वाके बाद खोटी पुस्तक पढ़के टाईम क्यों वेस्ट करनो? वो पुस्तकें फिर सॅकन्ड् हॅन्ड्में निकाल दी जायें. क्योंके उनको लगाव पुस्तकसु हे नहीं. पुस्तक उनपे थोपी गई हे. पुस्तकसु लगाव होतो तो ऐसो नहीं होतो.

एक सच्ची बात बताऊं के जब मैं पढ़नो नहीं जानतो हतो, सात आठ बरसको हतो, वा बखत जो पुस्तक मैंने खरीदी वो अभी

तक मेरे पास हें. पढ़वेको कछु भी नहीं हे पर मन ही नहीं चले निकालवेको. जा पुस्तकको पढ़्यो वाको निकालनी कैसे? दिल खुद ना पाड़े के ऐसो नहीं करनो. मरवेके बाद उनको जो होय पर जीते जी तो ये पुस्तकें फाड़वेकी हिम्मत नहीं पड़े. जा पुस्तकको मैंने एक्वायर् करी. बच्चान्को ये भावना क्यों नहीं जगे? वाको कारण हे के बच्चान्ने स्नेहवश एक्वायर् नहीं करी हें जबरदस्ती उनके माथेपे थोपी गई हें पुस्तकें. मेरे भी माथेपे ऐसी कई पुस्तकें थोपी भई आवें, वो मैं पस्तीमें काढ़ दऊं. जबरदस्ती थोपे तो क्या करनो? पढ़ें और फिर वाको निकाल दें पस्तीमें. पर जा पुस्तकको मैं हासिल करूं, यहां-तक के कई पुस्तकें हासिल करवेके बाद अच्छी नहीं लगें. कई पुस्तकें बुरी भी लगती होंय तो उनपे गाली भी लिख दऊं के लेखक मूर्ख हे. वाने मेरे मनमें ये भाव तो जगायो. फिर भी ऐसी पुस्तकको रखूं भी हूँ. वो सिद्धसाध्यको भी जो अपन् प्रेमसु हासिल करें तो वाको फेंकवेको दिल नहीं करे. साधना करते रहो, ये लीलाभाव हे. पर जहां लीलाभाव नहीं हे, जहां व्यवहारको भाव हे, अपने कर्मको भाव हे, सकामभाव हे, वहां काम पूरो होते ही सबसु पहले ये ही होवे. जैसे छापा अपन् पढ़ें तो वो पस्तीमें चले जायें. जैसे जीवको कह्यो हे के लखचौरासीको फेरा हे, वैसे छापा बिचारेको लखचौरासीको फेरा चलतो ही रहे. प्रेस्मेंसु अपने यहां आवे, अपने यहांसु पस्तीमें जावे, वहांसु फिर दूसरेके यहां जावे हे. न जाने कहां कहां जातो होयगो? छापा बिचारो फेरामें फंस्यो ही रहे. पर जैसे वा छापामें भी मोको कोई कटिंग् अच्छी लगे तो वाको भी मैं संग्रह करके रखूं. मेरे पास वो कटिंग् बोहोत हती करके जिन-जिनने मोसु आर्ग्युमेन्ट् करी तो सबन्की कटिंग् काढ़-काढ़के

मैंने उनकु दिखाई. तब उनने कही के ये तो हमकु पता ही नहीं हतो के कटिंग् तुम्हारे पास हे. तीस चालीस पचास बरसकी सब कटिंग् मेरे पास सुरक्षित रखी भई हें. क्योंके छापा पढ़वेमें मजा नहीं आयो. कटिंग् पढ़वेमें मजा आयो तो मैंने कही के रख दो संभालके.

जो अपन् स्नेहसु हासिल करें हें, वो साधनाके द्वारा सिद्ध होतो फल सिद्ध हो गयो तो भी अपन्कु वो साधना करनो अच्छो लगे हे. कई लोग कहें हें के पुस्तककु पढ़वेके बाद वाको क्या फल? मैं अपनी एक सच्ची बात कहूं मनकी. पढ़वेके बाद भी मोकु पुस्तकको फल लगतो होवे हे क्योंके जो पुस्तक मैं पढ़ूं वा पुस्तकपे अन्डर्लाईन् करूं और वाकी सूचना इन्डेक्स्के रूपमें के या पुस्तकमें ये ये विषय हे, वाकी एक सूचिका वा पुस्तकमें रख दूं, जाके कारण फिर वो सारी पुस्तक नहीं पढ़नी पढ़े. वो मेरी होय तो मोकु कॉन्फिडेन्स् आवे के मैंने ये पुस्तक पढ़ी हे. वो जा पुस्तकपे नहीं होय तो कोई पुस्तकें मोकु दो तीन बार भी पढ़नी पढ़ीं क्योंके पढ़ते बखत मैंने वामें अन्डर्लाईन् नहीं करी. फिर मोकु लग्यो के यामें तो कोई नई बातें आ रही हें तो मोकु फिरसु पढ़नी पढ़ीं. जा पुस्तकके साथ मैंने पढ़वेको विलास कियो हे, वा विलासके कारण वा पुस्तकके प्रति मेरो एक स्नेह प्रकट होवे हे.

कांकरोलीवाले व्रजेशकुमारजी मोकु बता रहे हते एक बोहोत अच्छी बात. उनके पास एक पांडुलिपि हे. वामें पिताने पांडुलिपि बेटाकु दी हे. फिर वाकु दुःख हो गयो के अरे रे गल्ती हो गई.

बेटासु फिर ले ली. तो पिताने पुस्तक अपने बेटाकु दी, उनने वहां सही कर दी के पितासु मोकु ये पुस्तक मिली. उनने मांगके वामें लिखी के पुत्रकु दीनी हती पर वासु वापिस मैंने ये पुस्तक लीनी हे. ये पुस्तकके प्रति एक एसोसियेशन् हे. उनको एसोसियेशन् बोल रह्यो हे. वो उनकी वा पुस्तकके मुखड़ेपे बोल रह्यो हे. गल्तीसु बेटाकु दे दी हती पाछे फिरसु मेरे पास आ गई हे. पुस्तकके साथ कछु विलास उनने कियो होयगो. गुसांईजी, श्रीपुरुषोत्तमजी आदिन्के पुस्तकन्के साथ विलास या तरीकेसु लिखे भये हें. इनकी पांडुलिपि कभी भी शुद्ध नहीं होवें. शुद्ध होवेको मतलब के वो पांडुलिपि नहीं रहके उनने वाके साथ क्या क्या विलास कियो हे वो मार्जिन्में लिख्यो भयो मिले हे. यामें सबसु मजेदार श्रीगोपेश्वरजी हें. पुस्तक पढ़ते जाते और वामें चिड़िया मोर गिरिराजजी गाय भी मार्जिन्में कभी-कभी ड्रॉ करते रहते. उनके मनमें क्या भावना आती होयगी के पुस्तक पढ़ रहे हें और बैठे बैठे चिड़िया मोर पोपट गाय बना रहे हें मार्जिन्में. ये 'विलास' कहवावे हे पुस्तकके साथ. जिन पुस्तकन्के साथ अपन् ऐसो विलास करें तो आदमीकी इच्छा नहीं होवे वासु अलग होयवेकी. साधनसु जो साध्य हे, वो सिद्ध हे के असिद्ध हे; यदि सिद्ध हे तो भी वा विषयकी साधना करनी. उदाहरणतया जैसे कोई वाद्य अपन्कु बजानो आ गयो, गीत गानो आ गयो, कोई राग गानो आ गयो तो वाकु गानो के नहीं गानो के केवल इतनो ही रिलेशन् रखनो के जब तक गानो नहीं आयो तब तक ही वाको अभ्यास करनो. जब गानो आ गयो तो गानो ही छोड़ दियो. यदि तुम ये व्यवहार कर रहे हो तो तुम प्रॉफेशनल् गायक हो. पर प्रॉफेशनल् भी ऐसे नहीं करें. प्रॉफेशनलन्कु भी मैं

बोहोतन्कु जानूं हूं. जो गाना उनकु अच्छे लगते होंय वो गाते रहें. आ गयो तो क्यों नहीं गानो? नहीं आयो तो शायद फिर भी नहीं गाते. पर आ गयो तो जरूर गानो चहिये. ये साधनाके बारेमें एक लीलात्मक एप्रोच् हे.

(साधनाकी प्रवृत्ति सिद्धि या असिद्धि की हो सके पर प्रमाणप्रवृत्तिके लिये पूर्वसिद्ध प्रमेय जरूरी)

साधना भी सिद्ध विषयमें हो सके हे और एवरेज् आदमीकु जहां विषय सिद्ध नहीं होय, जहां साध्य होवे, परीक्षाकी तैयारी जैसो अच्छो इन्वॉल्वमेन्ट् होवे. रात रात जगके परीक्षासु पन्द्रहबीस दिन पहले परीक्षासु लगे भये होवे, पहलवानी कर रहे हें पुस्तकन्के साथ. सारी बाय् हार्ट कर ली. वामें ज्यादा इन्वॉल्वमेन्ट् आतो होवे. हर एवरेज् व्यक्तिकु या तरहसु होवे हे. साधनाकी ऐसी ड्रॉबॅक् या डिमेरिट्स् होवे. प्रमाणको जहां तक सवाल हे वहां वाकी ९० प्रतिशत ये ही प्रकृति हे के यदि प्रमेय सिद्ध नहीं हे तो प्रमाणकी प्रवृत्ति ही नहीं होयगी. क्योंके प्रमाण कौनसी तरफ डायरेक्ट् करनो? जैसे अपन् टॅलिस्कोप् देख रहे हें और अपन्कु पता ही नहीं हे के आकाशमें अपन्कु कौनसे एरियामें देखनो हे. तुम घण्टान् टॅलिस्कोप् देखते रहो तो भी कछु पता नहीं चलेगो. जब तुमकु कछु स्पेसिफिक् पॉइन्ट् पता हे के आज हमकु या एरियाके आकाशकु टॅलिस्कोप्सु देखनो हे, तो थोड़े दिन आंख जमाके टॅलिस्कोप्सु देखो तो तुमकु बोहोत बोहोत बातें दीखेंगी वामें. जब तुमने एरिया मार्क आउट कियो आकाशमें के या एरियामें हमकु टॅलिस्कोप्सु देखनो हे के क्या दीख रह्यो हे. प्रमाण, पूर्वसिद्ध प्रमेयकी आशा करे हे के प्रमेय पूर्वसिद्ध होनो चहिये तब मेरो प्रमाण प्रवृत्त होवे.

(षष्ठाख्यानकी प्रमाणकोटिकी उपपत्ति)

ये कथा लीलानुसंधानकी हे, वो या सिनोप्सिस्के तहत प्रमाणकोटिमें डाल्यो गयो हे. खूबसूरती देखो या वल्लभाख्यानकी. प्रमाणकोटिमें डालके, पूर्वसिद्ध जो लीला हे, जो भगवान् व्रजमें नित्य कर रहे हें, वाके लिये गोपालदासजी केह रहे हें **''ये लीला मारे मन वसो''**. मन बसेगो तो वा लीलाकु मैं देख पाऊंगो. वो लीलानुसंधान होयगो तो; क्योंके लीला आज तो घटित हो नहीं रही हे वो तो पूर्वसिद्ध हे. वा पूर्वसिद्ध लीलाकु मैं अपने अनुसंधानके प्रमाणको विषय बना सकूं हूं और वामें सहायता कौनकी चहिये? टॅलिस्कोप् जैसे गुसांईजीकी सहायता. आप मोकु ये टॅलिस्कोपिक् सहायता प्रदान करो. कौनसो टॅलिस्कोप्? श्रवण स्मरण कीर्तन को टॅलिस्कोप् मोकु प्रोवाईड् करो. वो टॅलिस्कोप् आप मोकु प्रोवाईड् करोगे, श्रवण कीर्तन स्मरणको तो मोकु वो लीलानुसंधान बन्यो रहेगो. मेरो प्रमाण श्रवणादिको प्रमेयके बारेमें इन्टरएक्ट् करवे लग जायगो, ये उनने बतायो.

प्रश्नोत्तर

प्रश्न : Should kripa and Sanubhav coincide? Sanubhav as explained yesterday, is it Fal ? If yes then will it fall in yashodotsanglalit area only?

उत्तर : अच्छो प्रश्न हे. सबसु पहले को-इन्साड्को अर्थ अपनकु समझनो चहिये. 'को-इन्सिडेन्स् साइमलटेनियस् (एक समयमें कालकी दृष्टिसु)के अर्थमें भी हो सके हे; को-इन्सिडेन्स् को-एग्ज़िस्टेन्स् (सह अस्तित्व देशकी दृष्टिसु)के अर्थमें भी हो सके हे

जहां साइमलटेनियस् हानेको कोई इश्यु नहीं हे और को-एग्जिस्टेन्स् भी नहीं, as a part and whole, many a times part co-incidense with and whole co-incidence with part. को-इन्सिडेन्स्के बोहोत सारे मॉडेल् हो सकें. जो तू पूछनो चाह रही हे तो क्या साइमलटेनियस् होवेके अर्थमें के को-एग्ज़िस्टेन्स्के अर्थमें के होल् एण्ड् पार्टके अर्थमें? ये तीनों सम्भावनायें को-इन्सिडेन्स्की हो सकें हें. ये जो को-इन्सिडेन्स् हे, ये पाछे ऑब्जेक्टिव् को-इन्सिडेन्स् हे, सब्जॅक्टिव् नहीं हे. बहुत बार सब्जॅक्टिव् को-इन्सिडेन्स् भी होते होवे हें. वाकु समझो अच्छी तरहसुं. In the frame work of time चीज दो साथमें नहीं हें. In the frame work of space भी चीज दो साथमें नहीं हें; yet our mind conceive it as a coincidence. एक्च्युअली गोपालदासजीको आख्यान अपन्ने देख्यो वो हर बखत विठ्ठलनाथके साथ ही अपने इन्टरएक्शन्कु नहीं मान रहे हें पर कृष्णके साथ को-इन्साईड् कर रहे हें. कृष्णके साथ जो उनकु इन्टरएक्शन् चहिये वाकु कोई भूत या भविष्य की प्लानिंग्की तरफ नहीं देखके वर्तमानमें गुसांईजीके साथ को-इन्साईड् कर रहे हें और वो को-इन्सिडेन्स् सब्जेक्टिव् को-इन्सिडेन्स् हे. हम अच्छी तरहसु जानें हें के जहां तक गुसांईजी और कृष्ण को प्रश्न हे वामें कृष्ण तो द्वापरमें हते टाईम्के हिसाबसु और खाली द्वापरमें ही नहीं जैसे के गोपालदासजी खुद बता रहे हें के **सारस्वतलीला ते जन लहे**. ये सारस्वत कल्प नहीं हे. आजको कल्प तो श्वेतवाराह कल्प हे. (करीब १५ नील वर्षन्को अन्तर हे दोनोंके समयमें) या समयकु गोपालदासजी को-इन्साईड् कर रहे हें. श्रीगुसांईजीके जन्मकु सारस्वतकल्पकी लीलाके श्रीकृष्णके जन्मसु और श्रीगुसांईजीकी

एक्टिविटीकु श्रीकृष्णकी एक्टिविटीसु मिला रहे हें और वो को-इन्सिडेन्स् फ्रेमवर्क ऑफ् टाईम् एण्ड् स्पेस्में ऑब्जेक्टिव् नहीं हे. दो ऑब्जेक्ट्स् होते भये भी भावात्मक को-इन्सिडेन्स् हे. ये सब्जेक्टिव् को-इन्सिडेन्स् हे. तो बोहोत सारे मॉडेल् हो सकें हें. अपन् को-इन्सिडेन्स् शब्द वापरें पर वाकी पूरी रेन्जकी अवेयरनेस् होनी चहिये के वाके कितने को-इन्सिडेन्स् हो सके हें. जो तेने बात पूछी कृपा और सानुभाव को को-इन्साईड्की, वामें मैं ये कहनो चाहूंगो के कृपा और सानुभाव एज़् ए पार्ट एण्ड् होल् को-इन्साइडेड् हें. यदि तुम्हारेपे कृपा हे तो तुमकु सानुभाव भी हो सके हे. यदि कृपा नहीं हे तो सानुभाव होनो बोहोत ही कठिन हे. As a whole and part they co-incide with each other. लेकिन ऐसे दो स्वतन्त्र फिनोमिना नहीं के जो टाईम् और स्पेस् के बीचमें हों, वो सम्भव नहीं हे.

सब्जेक्टिव् को-इन्सिडेन्स्को जहां तक सवाल हे, वाके कछु कॅरेक्टरिस्टिक्स् हें. वो को-इन्सिडेन्स् कब होवे? बोहोत बखत सब्जेक्टिवली अपन् जाकु साइनेस्थेसिया कह रहे हें, वो दो अलग-अलग टाईम्के अलग-अलग स्पेस्के, अलग-अलग फिनोमिनाकु अपनो माइन्ड् क्लब् करके देखतो होवे हे. जाको नाम 'सायनेस्थेसिया' हे और माइन्ड् ही क्लब् करके देखे ऐसो नहीं अपनी आंख भी देख लेवे हे वो माइन्ड्के प्रेशर्के कारण. कान भी सुन लेवे और बोहोतसी बार अपनकु फीलिंग् टच् भी होवे लग जाय हे. स्मॅल् भी फील् हो सके हे. यह जरूरी नहीं हे के सब्जेक्टिव् को-इन्सिडेन्स् सिर्फ भावनात्मक ही होवे हे.

साइकॉलॉजिकल् भी हो सके हे, साईकिक् ट्रबल् भी हो सके हे क्योंके बोहोत सारे साइनेस्थेसिया मेंटल् डिरेन्ज़मेन्ट्के कारण भी आवें. क्योंके अपने ब्रेनकी नर्व्ज़् डिफरेन्ट् सेन्टर्में जा रही हें, उनमें कहीं क्रिस्क्रॉस् हो जाय तब अपन् देखते होंय तो सुनाई देवे, सुनाई देतो होय तो दिखाई देवे लग जाय. जैसे जब टेलीफोन्की लाईन् मिल जायें तो नम्बर कोईको डायल करें और उठावे कोई भलतो ही आदमी. गलत लाईन जुड़ जाय. जैसे टेलीफोनमें गलत कनेक्शन् हो जाय, वा तरहसु ब्रेन्में भी गलत कनेक्शन् हो जातो होवे हे. और वा गलत कनेक्शन्के कारण भी कई बखत साईनेस्थेसिया होवे हे. It is not the esthatic synaesthesia but due to derangement of the brain faculty there are multiple ranges of co-incidence. पर कई बार अपन्कु सानुभाव हो रह्यो हे; जैसे लॉजिक्में ऐसो कह्यो जाय के जहां भी स्मोक् हे वहां फायर् हे. जहां फायर् हे वामें हर बखत स्मोक्को को-इन्सिडेन्स् होनो जरूरी नहीं हे. क्यों? क्योंके एक रेश्यो एसेन्डाई(कारक हेतु) और दूसरो रेश्यो कॉग्निसेन्डाई(ज्ञापक हेतु). रेश्यो एसेन्डाई क्या हे? फायर्(कारक हेतु) स्मोक्कु पैदा करे हे. but you can not be sure on account of the existent fire that there has to be a smoke. जैसे बिजलीको, गॅस्को चूल्हा हे. वो धुंआ नहीं छोड़े और जलवे लग जाय. तो वहां फायर् हे पर स्मोक् नहीं हे. और जहां स्मोक् (ज्ञापक हेतु) हे वहां तो फायर् होवे ही हे. क्योंके जो धुंआ हे वो फायर्को रेश्यो कॉग्निसेन्डाई हे. Reason to understand. reason to be aware of and causal reason and logical reason. रेश्यो एसेन्डाई कॉज़ल् रीज़न् हे. ऑब्जेक्टिव् रीज़न् हे और रेश्यो कॉग्निसेन्डाई लॉजिकल् रीज़न् हे माने लॉजिक् कैसे काम करे है.

तो सानुभावकु क्या अपन् स्मोक्की तरह ट्रीट् करें? और कृपाकु अपन् फायर्की तरह ट्रीट् करें. जहां भी सानुभाव हे वहां कृपाको होनो जरूरी हे. लॉजिकली या तरहसु ही लगे हे. बोहोत सारे अपने लॉजिक् ठाकुरजीके सामने चलते नहीं होवें. वो छलिया हे. वो लॉजिक् दुनियामें चलें क्योंके दुनियाकी बोहोत सारी बातें लॉजिक्के नियमन्में बंधी भई हें. क्यों बंधी भई हें? क्योंके वो जैसी हें वैसी हें. उनको मोड् ऑफ् फन्क्शन् कछु एक डिफाईन्ड् कॅरेक्टर्को हे. ठाकुरजीको मोड् ऑफ् फन्क्शन् कैसो हे? कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं. वो छलिया कब छल जाय, वाकी गॅरैन्टी नहीं ले सकें.

अपन् ये नहीं केह सकें के जब भी अपन्कु सानुभाव हे वो सानुभाव भगवत्कृपाको रेश्यो कॉग्निसेन्डाई हे. It is a logical reason to confirm that yes there it is but that is not necessary, क्योंके वो फिनोमिना कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं सर्वसमर्थ हे. खोटो तुम्हारेमें सानुभाव पैदा कर दे और कृपा करे ही नहीं. वो सम्भावना हें वहां. और वो सम्भावना कब होयगी के जब अपनेमें अहंकार हे, जब अपनेमें मँकी बिजनेस् प्रकट हो रह्यो हे के आपकु सानुभाव हो रह्यो हे तो हम क्यों रखड़ गये? फिर क्या हे के अपन् जोर लगावें. जब छींक नहीं आ रही होय तो सूंघनी सूंघके छींक लावें हें. तब छींक नहीं आती होय तो भी आकऽऽछीं हो जाय. ऐसे ही कोई भगवदीयकु सानुभाव हो रह्यो हे तो अपन्कु भी सूंघापन चढ़े के वाकु सानुभाव और हमकु सानुभाव नहीं? तो माइन्डपे बोहोत प्रेशर् लगाओ तो हो जाय सानुभाव. वो सानुभाव जो माईन्ड्पे प्रेशर् लगावेके कारण भयो हे वामें कोई गॅरैन्टी नहीं हे

के वामें भगवत्कृपा रूपी फायर हे के नहीं पर सानुभावरूपी धुंआ तो हे. लेकिन या प्रकारके सानुभावमें ये निष्कर्ष निकालनो के यामें कृपा हे के नहीं बोहोत ही मुश्किल हे क्योंके प्रभु कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं सर्व-सामर्थ्यवान हें. वो सबकी लगामें अपने हाथमें रखे हें. तुम वैसो निष्कर्ष नहीं निकाल सको हो. लेकिन सानुभाव और कृपा को-इन्साईड् हो सकें हें. प्रभु प्रकट नहीं होंय पर वो अपनो सानुभाव कोईकु भी प्रकट कर सकें हें और वो चीज भागवतमें निरन्तर हर जगह जब भी ऐसो कछु भयो हे तो भगवान्ने आकाशवाणी प्रकट कर दी हे. खुद नहीं प्रकट भये. तो आकाशवाणी प्रकट भई तो सानुभाव प्रकट भयो के नहीं भगवान्के होवेको? उनने अपनो प्लान् भी वहां रिवील् कियो हे. कई बखत वाणी प्रकट नहीं भई हे, खुद प्रकट हो गये हें. ध्रुवके सामने खुद प्रकट हो गये. यहां तक के ध्रुव समझ नहीं पा रह्यो हतो के क्या बोलुं? वाके गालपे शंख लगाके वाकु बोलतो और कर दियो. प्रभु सब तरहकी मॅथड् जानें हें. वो तो ''जरा सामने तो आ ओ छलिये, छुप छुप छलनेमें क्या राज हे.'' वो फिल्मी गीत वाली वहां प्रोब्लम् हे. अपन् कह नहीं सकें के कौनसी मॅथड्; कब वो क्या लागु कर देगो और क्या नहीं करेगो! सभी तरहकी छींक होवे तो छींक ही हें, कोई ना कर सके के छींक नहीं हे. पर कोई नाककी छींक होवे तो कोई सूंघनीकी छींक होवे हे. स्निफर्की छींक अलग होवे हे. वाकी साउन्ड् भी अलग हे. वाकी जॉय् सन्तुष्टि अलग हे और जो नेचरल् छींक हे वाकी तकलीफ अलग हे. वाको आ जानो एक अलग हे. वाकी सन्तुष्टि भी अलग हे. छींक दोनों एक हें पर दोनोंके गुणन्में भेद हें.

प्रश्न : जैसी कि आपने आज्ञा करी के कुण्ठारहित होना वैकुण्ठकी अवस्था है. ठीक प्रकार सायुज्य और सालोक्य होना अन्ततः उस आनन्दकी स्थायी अनुभूति है. जिसे हम कृष्णके साकाररूपमें स्वीकार करते हैं और जो गद्यमन्त्रमें भी उल्लेखित है.

उत्तर : मुख्य बात यामें ये हे के संस्कृतमें जो सालोक्य और सायुज्य की इटमोलॉजी हे, जा तरहसु ये टर्म् कॉइन् हुई हे, वो या तरहकी हे. दोनोंके लोक समान हें के नहीं? अथवा दोनोंको योग समान होय के नहीं? जिन दोनोंन्को योग समान होय वाकु 'सायुज्य' कहें हें. जिन दोनोंन्को लोक समान हों वाकु 'सालोक्य' कहें हें. याकी ब्युटी देखो. अपने उत्तरभारतमें शादीके बाद पतिपत्नीको सालोक्य होवे हे ससुरालमें. केरलमें पतिपत्नीको ससुराल होवे हे लड़कीके पीहरमें क्योंके नम्बूदरीपादन्में लड़की पीहरसु ससुराल आवे ही नहीं हे. लड़कान्कु वहां जानो पड़े हे. तो सालोक्य वहां भी होवे हे. दोनोंन्के लोक तो कॉमन् हो जाते होवें हें पर कौनसे लोकमें उनको सालोक्य हे, ये तो मेजर् इश्यु रहेगो के नहीं?

हम गुसांईयन्की सबसु बड़ी तकलीफ ये रही, आजकल नहीं हे. हम लोग गृहस्थी हते. यासु ठाकुरजीकी सेवा खुद करते हते. मुखिया भीतरियान् सु नहीं करवाते हते. जैसे मेरी दादी भी ठाकुरजीकु सखड़ी अपने हाथसु सिद्ध करके धरती हती और फिर खाती हती. नौकरन्के द्वारा सखड़ी सिद्ध भई नहीं लेती हती. अहमदाबादवाले ये रणछोड़लालजी अभी रीसेन्टली भये, वो भी स्वयंपाकी हते. कोईके हाथको बनायो भयो नहीं खाते. ऐसे पुराने जमानामें बोहोतसे बालक स्वयंपाकी हते जो दूसरेके हाथको बनायो

भयो खाते ही नहीं और गृहस्थी भी हते हम लोग. अब कोई सूतक आय, पिंडरू आय तो ठाकुरजीकी सेवा करे कौन? तो हम लोगन्ने प्रिफर् कियो, जान-जानके ऐसी फेमिलीमेंसु अपनी लड़कीके लिये लड़का लाये जो हमारे यहां रहें, ये सालोक्य. इनिशीयली जो हमारे घरमें घरजमाई बनके रहते हते वो बड़े भगवदीय होते हते. लालूभट्टजी, मठपति जयगोपाल जैसे, क्योंके वो जानते हते अच्छी तरहसु के हम गुसांई लोग कितने सेवापरायण हते और जब हम लड़कीकु और जमाईकु अपने घरमें रखते हते, तो उनके दिलमें एक धन्यवादको भाव आतो हतो के इनके घरके ठाकुरजीकी सेवा निभावेके लिये हम यहां रह रहे हें. अल्टीमेटली वो पद्धति चालु रही. कौनसी हद तक के सेवा करनी हमने छोड़ दी, मुखिया भीतरिया सेवा करते रहें और हम आरती कर आवें हें. अब वो दूसरेकु पता नहीं चले पर घरके जमाईसु छिपानो तो मुश्किल हे. उन दुष्ट जमाईयन्कु हमारेमें श्रद्धा नहीं रह गई क्योंके वो रहस्य देख गये के आरती तो ये सिर्फ पब्लिक्कु दिखावेके लिये करें हें बाकी घरमें तो ये मौज ही मार रहे हें. अब वो भक्त नहीं रह गये. अब उनने हमारी लड़कीन्सु झगड़नो शुरु कियो. अब पूरी दो जमात पैदा हो गई हें. एक जमाईयन्की और एक महाराजन्की जमात. दोनोंन्में आपसमें ऐसो द्वेष हे के कोई भी महाराजकु देखो तो वो जमाईयन्कु गाली देवे हे. कोई भी जमाईकु देखो तो वो महाराजकु गाली देवे हे. अब वो वा जन्क्चर् तक बात पोहोंच गई हे के दुष्ट महाराजन्कु न तो लड़की दो और न लड़का दो. बेचारे हम महाराज लोग डोल रहे हें यहां वहां के कहां शादी करनी लड़का-लड़कीन् की? जो हमारी कॉम्युनिटीके हे उनकु कोई भी अपनी

लड़की लड़का देनो ही नहीं चाहे हे. आपसमें इतनो द्वेष बढ़ गयो हे. बोहोत सारे महाराज या बातसु सफर् करें हें के ये भटड़ा हे, ये ऐसो हे, ये वैसो हे. ऐसी ऐसी गाली देवें हें के जो थोड़ो बोहोत स्नेह भी करतो होय तो वाके दिलमें द्वेष पैदा हो ही जाय. और वो हमकु या तरहसु गाली देते होवें तो हमकु भी उनसु द्वेष हो जाय हे. अब सालोक्यको ऐसो टेरीबल् परिणाम आ गयो हे. याके बजाय लड़कीन्कु ससुराल भिजवा दियो होतो तो नुकसान एक हो सकतो हतो के शायद वाकु वहां अपने पुष्टिमार्गको वातावरण नहीं मिल पातो. अब भी वैष्णव बिचारे कितनो सफर् कर रहे हें या प्रोब्लम्कु लेके के अपनी वैष्णव लड़कीकु गैर-वैष्णवके यहां भिजवानो के नहीं भिजवानो? बोहोत बड़ो कॉन्फ्लिक्ट् हे इन सारे इश्युन्कु लेके. अब अचानक गोस्वामिन्कु कान पकड़के कबूल करनो पड़्यो के कोई लालाजी आवे ही नहीं हे घर जमाई रहवेकु. सब बिदक गये हें. लड़कीन्कु देनो ही पड़े हे वहां सालोक्यमें जावेके लिये. वहां जाके वाकु पुष्टिमार्गीय वातावरण मिले के नहीं मिले, वाकी कोई गेरेन्टी नहीं हे. लालाजीकु फ्रस्ट्रेशन् क्या होवे हे के वैष्णव पाछे लालाजीकु नमस्कार भी नहीं करें हें और बेटीजीके पैर छू जावें हें. तो उनको ईगो हर्ट होवे हे. उनकु लगे के ये हमारी कैसी पत्नी के याके पैर छूवें और हमकु कोई नमस्कार भी नहीं करे? वैष्णव ये समझें हें के ये सब भटड़े हें. उनको ईगो और हर्ट हो जातो होवे हे. अब वो वैष्णवन्कु तो कछु केह नहीं सकें पर पत्नीकु घोंचा मारें. वासु पत्नीकु गुस्सा आवे तो वो लालाजीन्सु झगड़ें. फिर वो सारो घोंचा महाराजन्पे आवे हे. यों एक महाभारत चलती रहे हे. तो सालोक्यमें अपन्कु थोड़ी तो

कलक्युलेशन् रखनी चहिये के कहां सालोक्य होय तो अपने लिये मॅनेजेबल् होयगो और कहां सालोक्य होयगो तो अपने लिये मॅनेजेबल् नहीं होयगो. जैसे जमाईको सालोक्य ससुरालमें होय, ससुरजी यदि इतने स्पिरिच्युअल् हैं के जमाई उनको शिष्य हो जाय तो तो सालोक्य मॅनेजेबल् होयगो अन्यथा एक न एक दिन झगड़ा तो होनो ही हे ससुरजीके साथ. क्योंके जमाईसु आप ये तो एक्स्पॅक्ट् नहीं कर सको के वो बेटाकी तरह हम्बली बिहेव् करे. वाके मनमें ये ईगो होवे हे के आपकी बेटी मेरी पत्नी हे. वा ईगोसु वो कैसे बाहर निकलेगो? ये प्रोब्लम् हर बखत रहे हे पुरुषवादकी. हरेकके जीवनमें रहे हे. जो साधारण लड़कियें होवें वो तो सहन कर लेती होवें हें पुरुषवादकु, पर बेटीजी जाके सब पैर छूते होंय, जाकु सब माथा झुकाते होंय, वो चाहे कितनी भी हम्बल् बने पर वाके मनमें ये अभिमान तो रहे ही हे के ये मेरो पति अलललटप्पु हे. मेरे पैर छूवें हें सब, याके कौन पैर छूवे हे? कोई बेटीजी कहें हें के चरणस्पर्श दो ही मत. कोई बेटीजी कहें हें के चरणस्पर्श दो जब लालाजी नहीं बैठे होंय. या तरहसु मल्टीपल् प्रोब्लम् क्रियेट् होवें हें हमारे समाजमें. काफी घृणा तिरस्कारको भाव एक-दूसरेके प्रति पनप जातो होवे हे.

सालोक्य कहांसु होय? जैसे ठाकुरजीकु अपन् अपने लोकमें पधरायें, तो वो सालोक्य हे. या अपन् ठाकुरजीके लोकमें जाके सालोक्यमें होंयगे. वामें सीधीसी बात है के वहां अपन् चले जायेंगे सालोक्य तो ऐसो अपर् थम्ब् उनको हे के वहां उनकु श्रद्धा हो जायगी, जैसे पुराने लालाजीनकु हो जाती हती. यहां अपन् पधरायेंगे

ना सालोक्यके मूडमें तो ठाकुरजी भी थोड़ो सफोकेशन् करेंगे मॉडर्न जमाई लालाजीन्की तरह के मेरे साथ क्या हो रह्यो हे? कौन तरहकी मालट्रीटमेन्ट् मेरे साथ हो रही हे? आखिर समझ का रख्यो हे तुमने मोकु. मैं ब्रह्माण्डनायक हूं. जैसे लालाजी समझें के अन्तमें तो मैं तुम्हारी बेटीजीको पति हूं. क्या समझ रख्यो है तुमने? तुम्हारो बेटा हूं क्या? वो ग्रज् स्वस्थ सम्बन्ध नहीं क्रियेट् होवे देवे हे. तो याहीलिये अपने यहां यद्यपि ऐसो कहें के ब्रह्मसम्बन्धके कारण मेरे घरमें ठाकुरजी पधार आय, वाकु अपन् सालोक्य मुक्ति नहीं मानें हें. वाकु हम ऐसे कहें हें के मेरे घरको ठाकुर मेरे घरमें पधार्‌यो हे और मैं वाको सेवक हूं. वामें अपन् बराबरीको सजेशन् नहीं दे रहे हें के तुम्हारो और मेरो अब तो एक लोक हो गयो ना! थियोरिटिकली तो हो गयो हे पर ऐसे बोल्यो नहीं जाय हे. जैसे बापकी औरतकु 'बापकी औरत' नहीं कहके 'मां' कह्यो जाय हे. ऐसे अपन् वाकु सालोक्य नहीं कहें हें. अपन् वाकु अपने घरको ठाकुर कहें हें. मैं मेरे ठाकुरको सेवक हूं. जासुं ठाकुरजीकु कोई गलत संदेश न चल्यो जाय के आखिर समझ क्या रख्यो हे मोकु?

अब रही बात सायुज्यकी. तो कमीबेशी यही बात सायुज्यमें भी हे. क्योंके 'सायुज्य'को अर्थ हे के आप वाकु बराबरीके दर्जामें मान रहे हो मुक्तिके लेवलपे. वहां आप बराबरीके दर्जामें ट्रीट् करोगे तो वहां तो मॅनेजेबल् हे पर यहां अपन् बराबरीके दर्जा मानेंगे तो मुश्किल क्या खड़ी होयगी के जा तरहको यशोदोत्संगलालित आपकु सेवाके लिये महाप्रभुजी पधरानो चाहें हें एक आज्ञाके साथ के आपकु अपनो आत्मसमर्पण वाके सामने करनो हे. वो

आत्मसमर्पण करे तो वाकु सानुभाव होयगो पर शुरुआत आत्मसमर्पणकी वो नहीं करेगो. आत्मसमर्पणकी शुरुआत तो आपकु ही करनी पड़ेगी. आत्मसमर्पणके लिये वाकु आपपे निर्भर होनो हे. वो जब जता दे के मैं तोपे निर्भर हूं वो वाको सानुभाव होयगो. जा दिन वाने जता दियो के मैं तेरेपे निर्भर हूं वो वाको सानुभाव होयगो और वो जब तक ये नहीं जतावे, तब तक फेसवॅल्युपे अपन्कु वाके साथ व्यवहारको जो अपनो पॅटर्न हे, वो सायुज्यको नहीं रखके स्वामी और सेवक को, भक्त और भगवान् को, घरको ठाकुर और घरके सेवक को फॉरमेट् रखनो पड़ेगो. एक तरहसु वो सायुज्य तो हे ही ना! सायुज्य नहीं हे ऐसो तो नहीं केह सकें मगर बापकी औरतकु तो 'मां' ही कह्यो जायगो, 'बापकी औरत' नहीं कह्यो जायगो. ऐसो तो वाकु नहीं कह्यो जायगो के तुम्हारो (ठाकुरजीको) और मेरो सालोक्य हो गयो हे या सायुज्य हो गयो हे.

प्रश्न : आपने कह्यो के एक दिनमें होती श्रद्धा अंधश्रद्धा हे. अपनी वार्तामें सौ प्रतिशत हे के महाप्रभुजी गुसांईजी कु देखते ही जीवमें आपको माहात्म्यज्ञान और श्रद्धा पनप जाती हती. याकु आप कैसे जस्टिफाई करो हो? ये तो सौ प्रतिशत अंधश्रद्धा नहीं हती.

उत्तर : सबसु पहले तो प्रश्नकर्ताकु अच्छो प्रश्न करवेकी बधाई. चाहे प्रमाणपंथ होय, प्रमेयपंथ होय, साधनपंथ होय, फलपंथ होय, प्रश्न याको ये हे के वा पंथसु और वा गन्तव्यसु अपनो कमिटमेन्ट्, अपनो एसोसियेशन्, अपनो एफिलियेशन् कितनो हे? जो बात मैं आपकु समझानो चाहू हूं वो ये बात के यदि अपनो

एफिलियेशन्, अपनो एसोसियेशन्, अपनो कमिटमेन्ट् वाके प्रति स्ट्रोंग् नहीं हे तो क्या होवे? जैसे अपन् कोई आइडियल् कॅरेक्टर्कु सुन लें के वो ऐसे हते, वो वैसे हते और वाकेलिये अपन् ये सोचें के अपनेमें भी गुन प्रकट हो जायें! बाय्डिफॉल्ट् हर मनुष्यके भीतर एक हीरो वर्शिप्की टेन्डेन्सी रही भई हे, सोशियल् एनीमल् होवेके कारण. तो अपन्ने कोईकु एक हीरो मान लियो और चुन लियो के ऐसो हीरो होनो चहिये और वाके हिसाबसु अपन् होवें के नहीं होवें, फिर भी जो अपन् वाकी कॉपीकेट् बनवेकी कोशिश करें हें और वा कॅापीकेट्में अपन्कु एक दिनमें श्रद्धा भी हो जाय और अपन् सोचें के एक दिनमें निष्ठा भी हो गई, विश्वास भी हो गयो. वा बातके लिये मैंने कही हती के ये सब एक दिनमें नहीं होवे. जैसे बोहोत सारे साईन्स्के प्रयोग भी हिस्ट्रीके कछु क्षणमें वो खोज लिये गये, या डिस्कवर् किये या आविष्कार भये. कछु बरसन् प्रयोग करवेके बाद पता चले. साधारणतया क्या होवे हे के कोई भी इन्वेन्शन्की या डिस्कवरीकी जब अपन् धांधली करें हें, तो साईन्स्की एक डिसिप्लिन् हे के वाकु तब तक डिक्लेयर् मत करो जब तक वो सिद्ध न हो जाय. यदि डिक्लेयर् भी कर रहे हो तो वाकु थियरीके रूपमें मत करो परन्तु ऑब्जर्वड् डेटाके रूपमें करो के भई ये डेटा ऑब्जर्व् कियो हे. अभी और ऑब्जर्व् करेंगे और वा निश्चित समय तक ऑब्जर्व करेंगे. वाके बाद फिर याकु थियरीके रूपमें स्वीकार करेंगे तो क्या होवे के वो गड़बड़ घोटाला नहीं होवे.

मैं अक्सर अपनी खुदकी एक फनी बात अपने प्रवचनमें बतातो रहूं. सिन्थॉल् साबुन् आतो हतो. वाके विज्ञापनमें आतो हतो

के क्लोरोफिल्, जो हफ्तान् ताजो रखे हे वो वामें डल्यो भयो हे. वासु तुम नहाओगे तो ताजे बने रहोगे. वो साबुन् भी हरे रंगको ही आतो हतो. वाके विज्ञापनमें हरे रंगके पत्ता आते हते और कह्यो जातो के या साबुन्सु नहाओगे तो तुम्हारी चमड़ी भी हरी भरी रहेगी. वो सजेशन् एकदम स्ट्रोंग् माईन्ड्में बैठ गयो. मैंने कही के फिर दूसरे साबुन् काहेकु वापरनो, सिन्थॉल् ही वापरनो. चमड़ी हरी भरी रहनी चहिये. खैर ! वहां तक कभी हरकत नहीं आई. फिर वाको व्यसन हो गयो, **"चेतः तत्प्रवणं सेवा"**. अब फिर कभी सिन्थॉल्सु नहानो नहीं मिले तो चमड़ीमें ड्राईनेस् आवे. मैंने अपने फॅमिली डॉक्टर्सु पूछी के ये क्या लफड़ा हे? कभी नहीं मिले गाममें तो दूसरो साबुन भी वापरनो पड़े. सचमुचमें ड्राईनेस् आवे लग गई. डॉक्टर्ने मोकु कही के ''बोहोत चिन्ता मत करो''. मैंने कही के ''देखो मैं कलसु छोड़के बताऊं तुमकु''. पांचवें छटे दिन चमड़ी एकदम ड्राई हो गई. डॉक्टर्कु दिखाई के भई के नहीं भयी! डॉक्टर्कु फिर भी मेरेपे विश्वास नहीं आयो. मैंने भी छोड़ी नहीं के अब अपन्कु क्या करनो! अब यामें तो ट्रॅप् हो गये. वाकु वापरतो रह्यो. अचानक एक दिन 'साईन्स् टुडे' करके टाईम्स् ऑफ इण्डियाको पब्लिकेशन् आतो हतो. वामें एक रिसर्चको आर्टिकल् आयो. यामें जो तत्त्व हे वो ब्रेन्में स्टोर् होवे और वो ब्रेन्कु डॅमेज् करे हे. मैंने डरके मारे छोड़ दियो. वाके बाद कभी फिर हाथमें ड्राईनेस् आई ही नहीं. अब याकु श्रद्धा समझनी के अंधश्रद्धा समझनी के फिर हिप्नोटिज़्म् समझनो के सेल्फ् हिप्नोटिज़्म् समझनो. उनने पहले कही के यामें क्लोरोफिल् डाल्यो जाय यासु हरो भरो

रहे हे वा डेटाकु बाहर काढ़ दियो. अभी अखबारमें पढ़ो तो रोज न जाने कौन बदमाशी करे हे, एक दिन आवे के चाय कॉफी पीवेसु हार्ट्-अटॅक् आवे. दूसरे दिन आवे के चाय काफी को घूंट लेवेसु हार्टकु बोहोत तसल्ली मिले हे. वो चाय कम्पनीवाले वाकु ये केह देते होंयगे के तुम ये डेटा छाप दो के हमने सर्वे कियो हे. कौन देखवे गयो के सर्वे कियो के नहीं कियो! एक दिन आ जाय के ऐसो होवे हे. दूसरे दिन पाछो कछु दूसरी रिपोर्ट आ जाय. मेरो एक दोस्त जाकु कॉफी बोहोत अच्छी लगती हती, वो दो साल पहले यहां एक सेमिनार्में आयो हतो. मैंने वाकु कही के "देखो तुम कॉफी पीयो हो और वो तुमकु अच्छी भी लगे हे. मेरे यहां पियो, मोकु भी कॉफीको शौक हे." तो वाने कही "नहीं गोस्वामी कॉफी पीवेसु हार्ट टिक टिक टिक होवे हे." मैंने कही के "चाय पियो. पर मेरे तो कभी कॉफी पीवेसु हार्ट टिक टिक नहीं होवे." वाने कहीं पढ़ लियो होयगो के कॉफी पीवेसु हार्ट टिक टिक टिक होवे हे. आदमी शिकार हे. कोई शिकार होवे हे और कोई शिकार नहीं होवे हे. ये सारी बात कैसी हें? अपन् जो इम्प्रेशन् गॅदर् कर रहे हें, वाको अपने ऊपर प्रभाव कितनो हे! यदि थोड़े धीरजसु अपन् गॅदर् करें तो वाके अन्धश्रद्धामें कल्मिनेट् होवेके चान्सेस् कम होवें. धांधलमें करें नॉरमली तो अन्धश्रद्धामें कल्मिनेट् होवेके चान्सेस् बोहोत ज्यादा होवें हें.

मुख्य ये बात हे. यामें अपन् गणितके नियम लागू नहीं कर सकें. पुरानी पुस्तकें टेक्स्ट्की देखोगे तो वामें ऐसो मिलेगो के जितने भी मानवीय साईन्स् हें, उन सबके जो नियम हें वो एप्रोक्सिमेट् लॉ

हें, वो मेकेनिकल् लॉ नहीं हें. ये मूल अन्तर मान्यो जातो हतो फिज़िकल् साईन्स् और मेकेनिकल् साईन्स्को; इनमें वैज्ञानिक लोग ऐसे सोचते हते के मेकेनिकल् लॉ के थ्रु गवर्न हो रहे हें और जितने भी मानवीय साईन्स् हें जैसे सायकॉलॉजी हे, सोशियोलॉजी हे, ईकोनोमिक्स् हे, वामें कछु न कछु फ्लक्च्युएशन्, कछु न कछु रूल्को अपवाद, कछु न कछु गड़बड़ होती रहे हे. अब तो फिज़िक्स्में भी वाही तरहके लफड़ा निकले के जा तरहके लफड़ा मानवीय साईन्स्में हते. बोहोत सारे लोग मानवीय साईन्स्कु या तरहसु डील् करें हें जैसे के कोई फिज़िक्स्को या कॅमिस्ट्रीको या गणितको साईन्स् होय. मेरो कहवेको मतलब हे कोई रिपोर्ट सर्वेके आधारपर आ जायें. मानवीय साईन्स्के तो वाकु वाही तरहसु स्वीकारते होवें हें. कोई अपनी खोपड़ी वापरते नहीं होवें हे. बस छापा पढ़ें और मान लें के सर्वे रिपोर्ट आ गई और ऐसो हो गयो.

या अर्थमें मैंने बात समझानी चाही हती के उतनी हर बातकी जल्दी नहीं करनी. वाको एक सीधोसो उदाहरण समझनो होय तो मैं ऐसे कह सकूं के जा चीजकु अपन् झटपटसु पैदा करें वो वस्तु झटपट खराब हो जाय. जाकु बोहोत ज्यादा सेकें वो थोड़ी धीरे खराब होवे, जल्दी खराब नहीं होवे. तुरत तलके निकाली गई वस्तुमें तुरत पानी आ जायगो. पर कोई चीज ज्यादा तली तो वामें पानी नहीं आयगो. वो थोड़ी कड़क रहेगी. ये श्रीनाथजीकी जो मठड़ियें होवे हें, वो खूब तली जायें. वो दो-चार महीना भी चलें, वामें कोई हरकत नहीं आवे. मूल कारण क्या? जितनो भी डीप्-फ्राई करो, वामेंसु पानीको एलीमेन्ट् भाप बनके उड़ जाय हे. जब

पानीको तत्त्व खतम हो जाय तो वाकी लास्टिंग्–वॅल्यु बढ़ जाती होवे. पुराने जमानामें याहीलिये बाटीकु बोहोत कड़क सेकके स्टोर् रखते किला या गढ़न् में. वो लंबे समय तक स्टोर्ड् रहती. अचानक कोई आके छह महीना भी घेरा डाले तो अपन्कु नई रसोई यदि खतम हो जाय तो वो स्टोर् की गई बाटी खाई जा सकती हती इतनी वाकु सेकते हते. ये सब तरीका हें ज्यादा सेकोगे तो ज्यादा चलेगी, कम सेकोगे तो कम चलेगी. जैसे रोटीके बजाय थपड़ी या गांठिया ज्यादा चले. क्यों ज्यादा चले? क्योंके वाकु ज्यादा सेक्यो हे, ज्यादा तल्यो हे. वाको सिद्धान्त ये ही हे. ऐसे ही अपनी बुद्धिकु भी जा बातकु स्वीकारवेमें ज्यादा तली, ज्यादा सेकी, तो वाकी लास्टिंग् वॅल्यु थोड़ी ज्यादा होवे हे. मैं वा तरीकेके मॅथेमेटिकल् रूल्की बात नहीं कर रह्यो हूं के एक दिनमें भई तो अंधश्रद्धा हे और दस बरसमें भई तो अंधश्रधा नहीं हे क्योंके वाकु अपन् कोई टाईम्लिमिट्में तो बांध नहीं सकें के कितने सालमें वो श्रद्धा अन्धश्रद्धामें तबदील नहीं होयगी. ऐसे तो अपन् बांध नहीं सकें. ये सवाल मॅथेमेटिकल्, फिज़ीकल् साईन्स् या कॅमिकल् साईन्स् को नहीं होके मानवीय विज्ञानको हे जामें हर बखत वा तरीकेके फ्लक्च्युएशन् रहते ही होवें.

प्रश्न : गुसांईजीने गोपालदासजीकु वाचा प्रदान करी, बोलते कर दिये तो याकु अपन् अन्यथाकर्तुं सामर्थ्य क्यों नहीं समझ सकें?

उत्तर : अरे भई जो समझनो होय समझो. मोकु वामें क्या आपत्ति हो सके हे?

QQQ

वल्लभाख्यान सातवों

(ज्योतिप्रकरण – ईशानुकथा)

(राग सामेरी)

(निर्गुणभक्तिके अनुभावरूप सेवाकथाकी श्रीमद्वल्लभ विट्ठलको वैभव)

आप सेवा करी शीखवे श्रीहरि।।
भक्तिपक्ष वैभव सुदृढ कीधो ।।
आपनी लीला ते वदन पोते कही।।
उच्चार आनंद ते अधिक दीधो ।।१।।
वेददधि मध्य नवनीत जे भजनरस।।
मथित माधुरी जीवे श्रवण पीधो ।।
तक्रसम कर्मपथ स्नेह–रस–हीन जे।।
श्वेत जाणी विमुख ताणी लीधो ।।२।।

(विषयासक्तिके कारण प्रपन्न न होवेवाले जीवन्की निन्दा)

ए चरणशरण विना लोक दशचारमां।।
कहोने कोनो कांई अर्थ सीधो ।।
शुं कहुं चतुर थई थई अने विस्तरे।।
भजे नहीं पशु जेम विषय कीधो ।।३।।

(''आचार्यं मां विजानीयाद्'' ये श्रुतिवचनसु पुष्ट्याचार्यको पुरुषोत्तमपनेा वेदादिशास्त्रकु प्रतिपाद्य लगतो होवेपर भी कण्ठतः अप्रतिपादन लोकवेदसु अतीत होवेके कारण)

बोल वल्लभसुवन विमल वाणी।।

जेनी गति ब्रह्मादि देवे न जाणी।
गूढ रस तत्त्व जे वेदनी वाणी
ते प्रकट कीधी भक्त हेत जाणी।।४।।
नंदनंदनरूपे रासलीला करी।।
पोते न उच्चरी छानी राखी।
दिवस एकादनी उत्तराकुंवर प्रति।।
व्यासनंदन विमल वदन भाखी।।५।।
ब्रह्मादि महामुनी अतिज्ञान पारंगत।।
ते मधुसिंधुनी कहिये माखी।।
न कोई हुवो न होय ए रूप सम।।
तेहना सकल निजनिगम साखी।।६।।

(आचार्यसु विमुखकी निन्दा और अभिमुखकी स्तुति)
ए प्रभु रसपुंज ते भूमिपर रुचि करी।।
भाग्यहीन जीव जेणे कणिका न चाखी।।
तेने देव ऊपर रह्या धिक्कार बोले।।
मंदमति कही अने निन्दा दाखी।।७।।
विवुध वांछे वास वसुमती ऊपरे
श्रीवल्लभकुंवरनी टहेल करवा।।

(श्रीविट्ठलेशप्रभुचरणमें स्थायिनिर्गुणभक्तिभावके संचारिभावतया चन्द्रावलीजीके भावको उपपादन)
घोषथी वेगे पांऊ धारिया गिरि भणी
श्रीगिरिराजधरणनो ताप हरवा।।८।।

फूल फेंटे भर्यां वसन वाघा तणां।।
विविध भूषण ते अंग धरवा।
तुरंग चाल्यो वायु वेगे उतावळो।।
जाणे नौका चाली सिंधु तरवा ।।९।।

दिवस एकार्धनो विरह ते युगसमो।।
निरांजन मिषे रूप हृदय धरवा।।
जीवने एह कृत्य नित्यप्रति क्षणु-क्षणु।।
'श्रीविठ्ठलनाथ' एवा उच्चरवा।।१०।।

रूप बेउ एक ते भिन्न थई विस्तरे
विविध लीला करे भजनसार।।
विविध वचनावली नयन सेने करी
संज्ञा सूचवे निशि विहार।।११।।

रत्नमुक्तावली पाटसूत्रे करी।।
गलसरी शोभिता करे शृंगार।।
विविध कुसुमावली ग्रथित हाथे करी।।
एक-एकने कंठे आरोपे हार।।१२।।

विविध मेवा भोग मधुर मिष्ठान्न रस।।
रसमस्या अर्पे ते बहु प्रकार।।
विविध बीडां सुगंध कर्पूर एलची।।
लविंग-पूंगी अने खेरसार।।१३।।

व्यंजन शीतल वायु मुकुर कर-कमल धरि।।
देखाडतां मोहे सकल संसार।।

(या प्रकारसु भक्तिपरायण आचार्यमें उनके अनुगामिन्को भी ऐसे भक्तिभावके संचारको निरूपण)

एह सेवारस प्रकट पोते करी।।
निज सेवक तणी कीधी सार ।।१४।।

ए अहर्निश ध्यान श्रीवल्लभाधीशनुं।।
सकल कलि–मल–दुरित–कोटि क्षाले ।।
ए प्रभु भुवि प्रकट विप्र–वर–तनु धरी।।
दीठडे त्रिभुवन तणां चित्त चाले ।।१५।।

जालरंध्रे सखी जाणे चित्रे लखी।।
वांछिता नाथनी छबि निहाळे ।।
कमल खंजन मीन मधुप ज्यां त्यां थकी।।
वक्र लोचन प्रांत पाछा वाळे ।।१६।।

हावभावादिक कोटि–कोटि करे,
मदन–ज्वर–व्यथा ते वेग टाळे।।

(उपसंहारपद्यमें प्रभुचरणकी स्वमाहात्म्यकी सत्यापकत्वकी स्तुति)

दासनो दास भणे सकल सज्जन सुणे।।
श्रीविट्ठल आपनुं विरद पाळे ।।१७।।

(पूर्वसिद्ध सेवाकी साधना क्यों?)

ये जो स्कीम् हे, यामें यहां आके प्रमाणके बजाय प्रकरण बदल रह्यो हे. ज्योतींषिलीला शुरु हो रही हे. 'ज्योतींष' माने प्रकाश या एन्लाईटन्मेन्ट् या इल्युमिनेशन्. जब तुमने वो इल्युमिनेशन् देख लियो के या तरहकी नित्यलीला हे, वा तरहकी नित्यलीलाकी

नित्यसेवा करनी के नहीं करनी? यदि नित्यसेवा करनी तो सिद्धकी करनी के साध्यकी करनी? ये कुछ प्रश्न हें. यदि वाकी यशोदाके द्वारा सिद्ध सेवा हे तो अपन्कु क्या करवेकी जरूरत हे? यशोदा तो वाकी फुल् केयर् ले ही रही हे. वृन्दावनमें जब गाय चरावे जा रहे हें तो सखायें भी उनकी फुल केयर् ले रहे हें. वृन्दावनमें तो माहोल ये हे, जा तरहको वेणुगीत और युगलगीत में बतायो हे के पेड़ पहाड़ पौधा जानवर सब लोग ठाकुरजीकी केयर् ले रहे हें. सभी ठाकुरजीकी सेवामें लगे भये हें. ''**सख्युव्यर्धात् स्ववपुषाम्बुद आतपत्रम्**'' (भाग.पुरा.१०।१८।१६) वा वातावरणकी हर चीज वाकी सेवामें लगी भई हे. लीलानुसंधानमें वो सिद्ध हे. सिद्ध होय तो अपने साधना करनी के नहीं करनी? यदि अपनेमें लीलाभाव नहीं हे, यदि अपनेमें गणनाको भाव हे, तो अपन्कु तुरत ये लगेगो के यामें अपन्कु क्या करवेको हे? सारी केयर् जब पहलेसु ही ली जा रही हे तो वामें मोकु क्या करनो?

फिलोसॉफीकी वर्ल्ड् कॉन्फ्रेन्समें एक महिला हती. मेरेसु इतनो चौड़ो कन्धा. माथेपे थ्री-टायर् टीकी. पहले लाल, फिर सफेद, फिर काली, थ्री-टायर् टीकी. वाने मोसु कही के ''यहां आओ.'' मैं नर्वस् हो गयो के पता नहीं क्या होवे जा रह्यो हे? मैंने सोची के ''सरफरोशीकी तमन्ना अब हमारे दिलमें हे. देखना हे जोर कितना बाजुए कातिलमें हे.'' क्यों बुला रही हे, काहेकु बुला रही हे चलो भई. ले गई मोकु एकदम दूर अकेलेमें और कही के ''अपन् बात करेंगे.'' मैंने कही ''क्या बात करनी हे.'' वहां जाके मोसु कही के ''मैंने तुम्हारे पुष्टिमार्गको साहित्य पढ्यो. बोहोत मोकु अच्छो लग्यो.

मैंने तुमकु ये बात पूछवेके लिये बुलायो हे के मोकु कृष्ण पसन्द नहीं हे. वाके पास पहलेसु ही सोलह हजार हें तो मैं तो वाके लिये एक और बोझ बनूंगी. मैं कृष्णकी पूजा नहीं करनी चाहूं." मैंने कही के "तो आप मोसु पूछनो क्या चाहो हो?" बोली के "नहीं नहीं, मैं आपसु ये पूछनो चाहूं हूँ के पुष्टिभक्ति मैं महादेवजीकी कर सकूं. मैंने रामकु सोच्यो हतो पर फिर मैंने सोची के राम अपनी एक पत्नीकु तो रख नहीं सके तो वो मोकु कैसे रख सकेंगे?" मैंने सोची के महामाया प्रकट हो गई. मैंने कही के "तो फिर तुम करनो क्या चाहो हो?" बोली "ये सारे आदमी बास्टर्ड् हें." मैंने कही "यामें तो मैं भी आ गयो!" बोली "नहीं नहीं, मैं आपके बारेमें नहीं बोल रही हूं." मैंने फिर पूछी "तो आप करनो क्या चाहो हो? बोली के "मैं तो पुष्टिवर्शिप् ऑफ् शिवा करनी चाहूं हूं. तुम क्या मोकु मार्गप्रदर्शन कर सको?" मैंने कही के "जहां तक मैं जानू हूँ के वाकी भी एक पत्नी हे पार्वती और वा पार्वतीको कॉन्फ्लिक्ट् हे गंगाजीके साथ. वो शिवसु पूछे हे के आप गंगाकु सिरपे धारण क्यों करो हो और मोकु आप अपने बाजुमें क्यों रखो हो? याकेलिये मैं तो आपको मार्गप्रदर्शन नहीं कर सकूं." देखो प्रॉब्लेम् हे जॅन्युइन्.

अब कौनकु क्या पसन्द आवे सिद्धसाधनामें, साध्यसाधनामें, ये तो पूरो अन्प्रेडिक्टेबल् कोर्स् हे. यहां अपनी खोपड़ी काम नहीं करे. अब वो सिद्ध हे के वाके सोलह हजार हें तो वामें मैं क्यों बढ़ोत्तरी करूं? वो तो मेरो ख्याल ही नहीं रख पायगो या लिये मैं कृष्णकु

पूजनो नहीं चाहूं. काम खतम. सिद्धसाधक. वो कोई ऐसेकु साध्य करनो चाहे के जाकी वाकी पत्नीसु बनती नहीं होय और वो वाके ठिकाने रिप्लेस् हो जानो चाहे! अब ऐसो देवता लानो कहांसु? सब देवतायें चालाक हें. अपनी पत्नीसु बनाके रखें, कोई झगड़ा करें ही नहीं हें. अब वा स्कीम्में याकु कहां रिप्लेस् करनो? ये एक जॅन्युइन् प्रॉब्लेम् हती.

(साधनामें साधकभाव जरूरी)

सिद्धकु साधनो जैसे कृष्णकु के कोई असिद्ध ब्रह्मचारी देव होय वाकु साधनो, ये बोहोत जेन्युइन् विचारको विषय हे. कौनकु साधें तो सधेगो! अब प्रमाण सिद्धविषयको होवे हे. पर जाको साधनाके बारेमें या तरीकेको एप्रोच् हे, वामें साधनाको भाव कमजोर हे और कछु पावेको, एचीव् करवेको भाव ज्यादा हे. वो साधकको भाव नहीं हे. वो सिद्धको भाव हे. पहलेसु या तरीकेको एक सिद्ध होवेको दिलमें भर्यो भयो प्रोग्राम् हे जो सिद्ध होनो हे, साधक नहीं होनो हे. जिनकु सिद्ध ही होनो हे उनकु कोई भी बखत अपन् साधना करवेकी कछु भी बात कहें तो उनको इन्वॉल्वमेन्ट् नहीं होवे. जाके भीतर सिद्ध होवेको भाव नहीं हे वाकु या तरीकेको प्रभेद पैदा नहीं होवे हे. जैसे अपन्ने प्रमाणसु कोई चीज देख ली, वाकु जान लियो; अब वाके बाद देखनो के नहीं देखनो?

अक्सर लोग ये कहते होवें, फिल्मकी बात बताऊं; फिल्म अच्छी लगी? तो कहें के ''अच्छी लगी'' देख ली? हां देख ली. दूसरी बार अब काहेकु देखनी जब पहले देख ली. अच्छी लगे

फिल्म तो नक्की करो के अच्छी लगी के नहीं लगी. अच्छी लगी तो ''बार बार देखो, हजार बार देखो, देखनेकी चीज हे हमारी दिलरुबा.' यदि देखवेकी चीज हे हमारी दिलरुबा तो काहेकु नहीं हजार बार देखनो? या तो कह दो के अच्छी नहीं लगी, खतम भई बात. उनकु वो वस्तुकु देखवेको भाव नहीं हे, अपने देख लेवेके ईगोके सेटिस्फेक्शन्को भाव ज्यादा हे के हमने देख लियो. बाकी जो सचमुचमें उनकु ऐसो भाव होय के चीज देखवे लायक हे, तो ये गीत गानो ही पड़ेगो के ''बार बार देखो हजार बार देखो, हे देखनेकी चीज हमारी दिलरुबा.''

ऐसे ही साध्य और साधन को जो प्रश्न हे वहां भी ये ही बात हे. यदि तुममें सिद्ध होवेकी कोई दुर्दान्त भावना भरी भई हे, तो जो भी चीज सिद्ध हो गई, वाकी साधना करवेमें तुम्हारो मन नहीं लगेगो. यदि तुम इतने एडमेन्ट् हो; कई बखत ऐसे कॅरेक्टर् जो भिड़ जायें ना अपनेसु तो मैं उनसु ये ही कहतो होऊं के अब तो तुम जनम गये, अब काहेकु जी रहे हो, मर जाओ ना आनन्दसु! अरे भई! जी गये ना एक बखत तो, अब सिद्ध हो गयो के तुम जीवित हो, अब चलो मरो. जीवनकी साधना तो तुम सिद्ध होते भये भी रोज कर रहे हो. रोज सुबह उठ रहे हो, रोज सुबह नहा रहे हो, रोज सुबह दोपहर खा रहे हो, रोज रातकु सो रहे हो, रोज घूमवे जा रहे हो. जीवनकी साधनामें सोचो के अब तो जीवन सिद्ध हो गयो अब ज्यादा जीवेकी क्या जरूरत हे? कॅन्सर् हो जाये तब भी इलाज करवावे तो जावे ही हे. शायद बच जावेके चान्सेस् होंय तो! एकाध चान्स् लेवेमें क्या खराबी हे? माने जीवनकी साधनाके

बारेमें वैसी एप्रोच् नहीं हे.

(जीवनशैलीके रूपमें साधनाप्रणाली जरूरी)

मूल कारण क्या? जीवनसु लगाव अपन्कु ज्यादा हे. उतनो लगाव अपन्कु जाकी साधना कर रहे हें वाके प्रति नहीं हे. जबकि यदि साधनासु अपनो कमिटमेन्ट् हे, वामें निष्ठा हे तो साधना भी अपनी जीवनप्रणाली बन जानी चहिये. जो साधना तुम्हारी लाईफ्-स्टाईल् नहीं हे, वो तो कछु एक्स्ट्रा करिकुलम् एक्टिविटी हे जो तुम कर रहे हो. ठीक हे हरेककु कछु करनो चहिये क्योंके मोनोटोनी एवोइड् करवेके लिये जीवनमें कछु एक्स्ट्रा करिकुलम् एक्टिविटी करनी चहिये, नहीं तो मोनोटोनी आ जायगी. तो वो मोनोटोनी एवोइड् करवेके लिये कछु एक्स्ट्रा करिकुलम् एक्टिविटी कर रहे हो, तो ठीक हे करो! वामें कोई बुरी बात नहीं हे. वामें कोई निन्दाकी बात भी नहीं पर एक बात साफ तौरपे समझ लेनी चहिये के जो साधनाप्रणाली जीवनप्रणाली नहीं बन रही हे, वाके प्रति तुम्हारो कभी भी सचमुचमें कमिटमेन्ट् हो नहीं सके. कमिटमेन्ट् हो नहीं सके करके वा तरहकी साधनाकु तुम जितनी ज्यादा करोगे इतनी तुमकु उबासी ज्यादा आयगी. जितनी उबासी ज्यादा आयगी और करके करते जाओगे वो साधना, तो उबासी आती ही जायगी. यमुनाकष्टम् हो जायगो यमुनाष्टकके बजाय. वामें अपनो डिस्-इन्वॉल्वमेन्ट् बढ़तो चल्यो जायगो. जैसे जैसे डिस्-इन्वॉल्वमेन्ट् बढ़तो गयो, ऐसे जाकु तुमने सद्वासनाके तहत एडोप्ट् कियो हे, वो डायल्युट् होके असद्वासना वाकु ड्राईव् करवे लग जायगी. साधनाके धर्ममें या तरीकेकी इन्ट्रिकेसी रही भई हे.

जा साधनाप्रणालीकु अपन् जीवनप्रणाली बना लें हें वा साधनामें अपनो भाव कैसो हो जाये? सिद्ध क्या करनो हे? सिद्ध तो कछु भी नहीं करनो हे. हमारी जीवनप्रणाली ऐसी हे, हम ऐसे जी रहे हें. यामें पानो क्या हे? एचीव् क्या करनो हे? न कछु एचीव् करनो हे न कछु खोनो हे. ये तो जीवनप्रणाली बनते ही या तरीकेको एक नयो विज़न् अपने सामने आवे हे. अब सेवाकु बना रहे हो के नाचकु बना रहे हो के गावेकु बना रहे हो के खावेकु बना रहे हो के घूमवेकु बना रहे हो. वो जर्नलिज़म्कु बना रहे हो के झाड़ू काढ़वेकु बना रहे हो, जाकु भी आपने अपनी जीवनप्रणाली बनाई वाके सामने आपकु ये सवाल पैदा नहीं होयगो के क्यों करें? हमने कर लियो, अब हमकु अनुभव हो गयो, याकी सारी बारीकियां हमारे ख्यालमें आ गई, अब यामें जानवेको क्या रह्यो? ये लॉजिकली कब होयगो? वो तब होयगो के जा बखत वाकु अपन्ने लाईफ्स्टाईल्की तरह स्वीकार करी होयगी तब. यदि एक्स्ट्रा-करिकुलम् एक्टिविटीकी तरह स्वीकारी होयगी तो संभव नहीं हे. वो लीलानुसंधान जो प्रमाणसु सिद्ध हे वाकु साधनासु सिद्ध करवेके लिये करनो, वो इलिम्युनेशन् करनो हे लाईटको. माने जो आपकी समझ हे वा समझकु अपनी लाईफ्में या तरहसु उतारनो के आप वाकु जीवे लग जाओ. जो लीला आपने जानी, श्रवण कीर्तन स्मरणकी प्रक्रियासु वा लीलाकु आप जा बखत अपने जीवनमें जीवे लग गये, वा बखत आपके सामने ये सारे प्रश्न; जैसे कोईने आके आपकु आसुरीभावसु उल्टो समझा दियो के सेवासु फायदा क्या? तुम्हारेमें विकास क्या भयो? तुम्हारो व्यक्तित्व कितनो बढ़्यो? तुमने एचीव् क्या कियो? अरे भई! एचीव् करवेके लिये करी होती तो ही

तो एचीव् होतो ना! हमने तो जीवेके लिये करी हे, यामें एचीवमेन्ट्को सवाल कहांसु आयो? हमकु थोड़े ही कोई सेवाकी नोबल् प्राईज़् लेनी हती के फिल्म्फेयर् एवार्ड् लेनो हतो. हमने काहेके लिये सेवा करी? क्योंके हमने वाकु एज् ए लाईफस्टाईल् स्वीकारी, वाके लिये सेवा करी. सेवा करी के यज्ञ कियो के झाड़ू काढ़ी के कछु भी कियो, सवाल ये नहीं हे के क्या कियो? जा चीजकु अपन्ने लाईफ्स्टाईल्की तरह स्वीकार कियो, वामें आपने एचीव् क्या कियो, ये प्रश्न क्षुद्र हो जाय. साधककी सुसाईड् कहूं हूं जीवनकी सुसाईड् नहीं केह रह्यो हूं. जो आपके भीतर साधक हे, वो कहीं न कहीं सुसाईड् करनो चाह रह्यो हे. वो तो खाली राईट् अपर्च्युनिटी देख रह्यो हे के राईट् अपर्च्युनिटी कब आवे वा बखत मैं सुसाईड् करूं. बोहोत लोग छोड़ दें साधनाकु याहीलिये. पहले तो बोहोत तामझामसु शुरु करें फिर उनकु लगे के कछु एचीव् नहीं भयो तो फिर छोड़ दें. ये सारो प्रोब्लेम् क्यों होवे? क्योंके वा साधनाकु अपन्ने एक्स्ट्रा कॅरिकुलम् एक्टिविटीकी तरह ट्रीट् कियो. अपन्ने वा साधनाकु अपनी जीवनशैलीके रूपमें स्वीकार नहीं कियो.

(तत्त्वभेदसु धर्मभेद)

मैं पहले भी आपकु दो तीन बखत सुना चुक्यो हूं. बुद्धिस्ट् लोगन्की ज़ेन मेडीटेशन्की प्रक्रिया हे वामें भगवान् बुद्ध कहते हते के शून्यको ध्यान धरो. मेडीटेट् अप्ऑन् ज़ीरो. माईन्ड् स्थिर होवे तो ही तो ज़ीरोपे मेडीटेट् करें. माईन्ड् तो नम्बरन्पे मेडीटेशन् कर रह्यो होवे हे. एकके बाद दो, दोके बाद तीन. उनकु मेडीटेशन् जीरोपे करवेको हे सो वो तो कौन करे? वामें तो प्रॉब्लेम् हे. बुद्धने

कही के "ऑलराईट् रास्ता निकालो. जब तक तुम ज़ीरोपे मेडीटेट् नहीं कर सकते हो, तब तक "**बुद्धं शरणं गच्छामि. संघं शरणं गच्छामि. धम्मं शरणं गच्छामि.**" बुद्धके धर्मकी शरण लो. फिर इनपे मेडीटेट् करो. फिर उनपे मेडीटेशन्की प्रोसेस्सु अपने माईन्ड्कु स्थिर करो. जब स्थिर हो जाये, वाके बाद इन तीनोंन्कु छोड़ो, धम्मकु, संघकु और बुद्धकु, फिर ज़ीरोपे केन्द्रित होओ." ये एक साधनाप्रणालीकी अलग ही वॅरायटी हे. अलग वॅरायटीको एक अलग ही आनन्द भी होयगो. या प्रणालीकु रेफर् करते भये ज़ेन लोगन्ने एक बात कही के जा बखत तुम शून्यके ध्यानकी समाधि लगा रहे हो, वा बखत यदि बुद्ध तुम्हारे ध्यानमें विघ्न कर रह्यो हे तो वाकु मार दो. If buddha comes accross your meditation then kill buddha. This is an excellent interpretation of meditation of Zero. The one who preached, he should also be treated as a disturbance. बुद्ध क्या केह रहे हें के "मैंने तुमकु शून्यकी समाधि या लिये नहीं लगावेकी कही हती के तुम मेरी समाधि लगाओ. मैंने शून्यकी समाधि तुमकु या लिये समझाई हती के तुम अपने आपमें अपनी शून्यताको अनुभव कर सको. तुमकु वो बात समझमें नहीं आती हती तो मैंने तुमकु एक तुक्का बता दियो के ऑलराईट् के तुम पहले मेरो ध्यान धरके अपने माईन्ड्कु स्थिर कर लो. जब स्थिर हो जाये तो वाके बाद छोड़ो मेरो ध्यान और शून्यपे केन्द्रित हो जाओ." खुदको ध्यान क्या धरनो? मैं शून्य हूं. मैं कछु भी नहीं हूं. याकी एक सॅन्क्टिटी हे, याकी कोई इन्टिग्रिटी हे. पर सवाल ये नहीं हे. जो एक स्ट्राइकिंग् स्लोगन् उनने दियो के kill buddha if Buddha comes

accross your meditation. आजके सब लोग जो कहीं **"ईश्वरो अहम् अहं भोगी सिद्धो अहं बलवान् सुखी"** की मानसिकतासु ग्रस्त हें, उनकु ये बात बोहोत अपील् करे. अच्छा ईश्वरकु मार्‌यो जा सके हे यदि ईश्वर अपनी साधनामें डिस्टर्बेन्स् पैदा करतो होय. वासु क्या हे के भीतर छुप्यो भयो जो, मैं ईश्वर हूं, वा भावकी बोहोत अच्छीसी गुदगुदी हो जाये. वाके लिये वो प्रसिद्ध हो गये क्योंके युरोपमें भी क्लिक् होवे वो साधनाप्रणाली. पादरीन्के पेटमें दूखे. सब क्रिश्चियनिटी छोड़के बुद्धिस्ट् नहीं हो जायें कहीं! एक पादरीने किताब लिखी. क्रिश्चियन् मेडीटेशन्. वामें वाने लिख दियो के Kill Christ if Christ comes accros your meditation. मैंने वो पढ़ी हे तो वो मोकु शॉकिंग् लगी. मैंने अपने एक परिचित पादरीकु पूछी के "ये क्या विचार आ गयो तुम्हारे यहां. मैं तो ये समझतो हतो के मनुष्य अपने पापके प्रायश्चित नहीं कर सके और पापको दण्ड कोईकु भुगतनो ही पड़ेगो, या लिये भगवान्ने वाकु कॅम्पनसेट् करवेके लिये क्राईस्टके रूपमें अवतार लियो और मनुष्यके पापको दण्ड खुदने भुगत्यो और वो जो करुणा हे, वो तुम भुगत नहीं सक रहे हो करके वो भुगत रह्यो हे. जैसे बच्चा कार एक्सिडेन्ट्को तूफान करके आवे और जुर्माना अपन् भरें जाके. वा तरहसु भगवान् तुम्हारो पनिशमेन्ट् भरवेके लिये प्रकट हुओ. वामें भी वो एक बखत तुम्हारे मेडीटेशन्में आवे तो वाकु तुम मारोगे? अरे भई कितनी बार मारोगे वाकु?" बेसिक् इश्यु ये हतो.

वाने मोकु लिखी के "नहीं नहीं बात तुम्हारी सच्ची है. पर क्राईस्ट् भी कोईको ध्यान धरतो हतो के नहीं? वाको क्यों नहीं

ध्यान धरनो और अन्नेसेसरी क्राईस्ट्को ध्यान क्यों धरनो?'' फिर मेरो पित्ता उछल्यो. मैंने कही के ''भई देख तुम पादरी है तुम ज्यादा जानो हेा. मैं तो क्रिश्चियनिटीके बारेमें इतनो नहीं जानूं हूं. पर एक बात मोकु पता है के मैं कृष्णको भक्त हूं. मेरी प्रॉब्लेम् ये हे के कृष्ण मेरे मेडीटेशन्में आवे नहीं हे. जब भी कृष्णको मेडीटेशन् करूं तो कोई और और चीज आ जाये पर वो नहीं आवे. लड्डू आ जाये, पूरी आ जाये, सब चीज आ जायें मेडीटेशन्में पर वो कृष्ण नहीं आवे. यदि कृष्ण मेरे मेडीटेशन्में आ जाये तो वो मेरे लिये बड़े भाग्यकी बात होयगी, बड़ो थ्रिलिंग् अनुभव होयगो. मैं कृष्णकु कभी क्लाईन्ट् नहीं मानूं. जैसे वैश्याको क्लाईन्ट् होवे. एक बखत आके सन्तुष्टि हो गई और पैसा देके छुट्टो करो. कृष्णकु तो मैं अपनो प्रिय मानूं हूं. अब बताओ के क्राईस्ट्कु तुम क्या मानो हो? बिलवेड् मानो हो के कॉलगर्ल् मानो हो?'' वाने तुरत पत्र लिख्यो के ''नहीं नहीं, वी आर् विद् यु नॉट् विद ज़ेन.'' अब जाके ठिकाने आयी. अरे भई एक बार नक्की कर के क्राईस्ट्कु तू कॉलगर्ल मान रह्यो हे के अपनी बिलवेड् मान रह्यो है? पेमेन्ट् करते ही छुट्टी! मेडीटेशन् सिद्ध हो गयो, साधना सिद्धि हो गई, अब क्राईस्ट्की जरूरत नहीं हे. ये तो कॉलगर्लवालो एप्रोच् भयो. बिलवेड्वालो एप्रोच् नहीं भयो. मोकु नक्की करके कह के क्राईस्ट् तेरे लिये बिलवेड् हे के कॉलगर्ल् हे? मेरी प्रॉब्लेम् ये हे के कृष्णकु मैं आज तक कॉलगर्ल तरीके ट्रीट् नहीं कर पा रह्यो हूं. मेरी प्रॉब्लेम् ये हे के मैं वाकु बुला रह्यो हूँ पर वो आ नहीं रही हे. तेरी प्रॉब्लेम् क्या ये तो बता भई?'' वाने तुरत कन्फॅस् कियो के ''नहीं नहीं हमारे लिये भी बिलवेड हे क्राईस्ट्, कॉलगर्ल नहीं

हे.'' फिर व्यर्थमें तुम काहेकु गामकु चीट् करो हो! अरे भई वो बात बुद्धके मुंहमें अच्छी लगे. वहां वो सद्वासना हे. अपन् यदि ऐसे बोलें तो महान असद्वासना हे. उनके लिये वो सद्धर्म हे. Considering all their framework theory, practice and their life style. उनके लिये वो सद्धर्म हे पर अपने लिये वो असद्धर्म हो गयो. अपनी प्रॉब्लेम् क्या हे के अपन्ने कृष्णकु या क्राईस्ट्कु कॉलगर्ल् नहीं मान्यो हे. अपन्ने वाकु अपनी बिलवेड् मान्यो हे. वो यदि नहीं आ रही हे तो वो प्रॉब्लेम् हे. यदि आ रही हे तो प्रॉब्लेम् क्या हे? क्यों वाकु मारनो?

(सिद्धकी साधना)

तो अपन् सिद्धकी साधना कर सकें हें. ये एक सेट्-अप् महाप्रभुजीने अपन्कु प्रोवाईड् कियो हे. यदि आप निरोधलक्षण देखोगे तो ''**हरिमूर्तिः सदा ध्येयाः संकल्पादपि तत्रहि.**'' (नि.ल.१७) जा साधनासु तुम वाकु साध रहे हो वो पहलेसु ही अपने संकल्पसु सिद्ध हे. हरिमूर्तिको मेडिटेशन् करो. लीलामें अपन्ने व्रजलीला ली हे. मेडिटेशन्में तुम्हारे सामने जो मूर्ति बैठी भई हे, वाको कर रहे हें के **''हरिमूर्तिः सदा ध्येया,''** ये कृष्ण कैसे हे? ये तो मूर्ति हे. महाप्रभुजी केह रहे हें के नहीं नहीं, **''संकल्पादपि तत्रहि.''** तुम्हारो भी संकल्प हे के नहीं ये कृष्ण हे? याकी सेवा करनी हे. वाको भी संकल्प ''**एनम् उद्धरिष्यामि इति तदा मृदादेः प्रादुर्भूतो.**'' (त.दी.नि.प्र.२।२२८) तुम दोनोंन्को संकल्प हे. तुम दोनोंन्की कोई अरेन्ज्ड् मॅरैज् नहीं हे. तुम्हारी तो लव्मॅरैज् हे. यामें ये भागमभाग कहांसु आई? यदि सिद्ध हे तो साधवेकी जरूरत क्या हे? सिद्ध

याहीलिये तो साधनो हे.

(असद्वासनासु की जाती सेवा भी असद्धर्म)

सिद्ध नहीं होतो तो शायद दूसरेकु ट्राय् करते. अपन् जब शादी-ब्याहकी बात चलावें और सिद्ध नहीं होवे तो दूसरी जगह ट्राय् करें के नहीं? घरमें ठाकुर बिराज रह्यो हे, तुम वाकु ठाकुर भी मान रहे हो, वाके सामने माथा भी झुका रहे हो फिर भी दूसरेकी ट्राय्? मतलब कछु लफड़ा हे. तुम्हारे कमिटमेन्ट्में कोई जातको फ्लक्च्युएशन् दिखाई दे रह्यो हे. अरे भई! जब सिद्ध हे तो फिर काहेकु दूसरी जगह ट्राय् करनो? जो सिद्ध हे वाकु तुम साधवेके लिये तैयार नहीं हो. जब साधवेके लिये तैयार नहीं हो तो तुम्हारी या तरीकेकी साधनामें कोई न कोई असद्वासना जोर पकड़ रही हे.

वो असद्वासना या धर्मकु, यद्यपि सेवा हे, यद्यपि कृष्ण हे, यद्यपि सब कछु हे वो, पर धीरे-धीरे वामेंसु कैसे असद्वासनाकु प्रोमोट् कर देगी, वो तुमकु भी पता नहीं चलेगो. अचानक अंधेरी रातमें जो वो तुम्हारी धर्मसाधना हे वो असद्धर्मसाधना बन सके हे. टर्न् कब आ जाये अपन्कु पता नहीं चले. जैसे रेल् कब मुड़ गई वो पता ही नहीं चले, साईकल् कब मुड़े वो तो अपन्कु दीखे पर रेल् कब मुड़ी वो समझनो बोहोत मुश्किल हे क्योंके वो बोहोत लम्बो टर्न् ले हे. तुरत तो मुड़े नहीं. पूरी साउथवर्ड् जाती भई नॉर्थवर्ड् हो जाये पर कब भई, वो पता नहीं चले. धीरे धीरे मुड़े, ऐसे वो धीरे धीरे टर्न होके मुड़ जाय और साधना असद्वासनाके

कारण वो धर्म भेलसेलके कारण धर्म नहीं रहके असद्धर्म हो जाये. नहीं तो बोहोत पॅराडोक्स् हे. धर्मकु 'सद्'धर्म विशेषण लगानो, ए.सी. करेन्ट् जैसी बात हे. ए.सी.कु फिर करेन्ट् कहनो पड़े! पहले तो ए.सी. केह रहे हो और पाछे ए.सी. करेन्ट् कह रहे हो! ऐसे धर्म कह रहे हो फिर पाछो सत् लगावेकी जरूरत पड़े? मतलब ए.सी. करेन्ट् हो गयो ना. ये ए.सी. करेन्टवालो चक्कर नहीं हे पर एक प्रकार ऐसो हे के जा प्रकारमें कछु बॅड् कन्डक्टर् ऐसे इन्वॉल्व् हो रहे हें के वो करेन्ट् होते भये भी न ए.सी. रह जाय न डी.सी. रह जाय. यदि तुम लकड़ाके टेबल्पे खड़े भये हो तो वहां कोई करेन्ट् पास ही नहीं हो रह्यो हे. ''नाकार उत्कादई ना आशिकी मुद्दई तू इश्करा नालायकी.'' तू इश्क करवेके लायक नहीं हे. इश्ककी एक लायकात होनी चहिये के यदि कोई साध्य सिद्ध हे तो वाके प्रति ज्यादा इन्वॉल्वमेन्ट्की बात आनी चहिये. सिद्ध नहीं होय तो भूलवेको प्रोग्राम् डॅवलप् करो. पर जो सिद्ध हे वाके लिये साधनामें हिचकिचाहट क्यों? या तरीकेके प्रिसपोज़ीशन्सु अपने यहां ठाकुरजीकी सेवा शुरु भई हे. या तरीकेके प्रिसपोज़ीशन्सु जो लोग सेवा नहीं कर पा रहे हें उनकु कछु न कछु तकलीफ होती होवे हे के हम इतने दिनसु सेवा कर रहे हें!! अभी एकने मोसु कही के ''जब भी ठाकुरजीकी सेवा करूं तो मन यहां वहां भटक जाय.'' मैंने कही के ''फिर क्या करनो?'' वाने कही के ''मेरेसु फिर स्वामिनीजीकु गाली निकल जाय.'' स्वामिनीजीकु क्यों गाली निकले सेवा करते करते? ''साली तेरो तो मन लगे मेरो मन क्यों नहीं लगे हे? वाके बाद फिर मोकु अपराधकी भावना होवे हे. कहीं गलत तो

नहीं कह दियो स्वामिनीजीकु? स्वामिनीजी कहीं गुस्सा तो नहीं हो जायेंगी या बातसु? वाके बाद मोकु नर्वसनेस् आवे हे.'' मैंने कही के भई ''तुम एक काम करो. थोड़े दिन सेवा बन्द कर दो और तारक मेहताका उल्टा चश्मा देखो. प्रॉब्लेम् सॉल्व् हो जायगी.'' गाली निकल जाती होय, सेवामें मन नहीं लग रह्यो हे तो बात तो ठीक हे. वाको उपाय न तो मेरे हाथमें हे और न तुम्हारे हाथमें हे. गाली निकल जा रही हे वा गालीकु एवोइड् कैसे कर सके हें? ठाकुरजीकी सेवा बन्द कर दो. तारक मेहताका उल्टा चश्मा देखने लग जाओ. फिर बोली के ''सारे दिन रोनो ही आवे हे.'' मैंने कही ''तारक मेहताका उल्टा चश्मा देखोगी तो रोनो भी बन्द हो जायगो. क्यों नहीं देखो हो तुम?'' बोली के ''यामें मेरी लौकिकासक्ति तो नहीं बढ़ जायगी?'' अरे भई लौकिकासक्तिको यहां प्रश्न कहां रह्यो? जब तुम सेवा करते बखत स्वामिनीजीकु गाली देती हो तो? जो ठाकुरजीकी सेवा करनी हे वामें मन नहीं लग रह्यो हे. वा मन नहीं लगवेके कारण तुमकु स्वामिनीजीपे द्वेष आ रह्यो हे के ''साली तेरो मन लगे हे तो मेरो मन क्यों नहीं लगे हे?'' वा द्वेषके कारण फिर रोनो आवे हे, अपराधबोध होवे हे. सेवा करते बखत असद्वासना कैसे कन्वर्ट् हो जाये वाको ये लिविंग् एग्जाम्पल् हे. वा बखत बेस्ट सॉल्युशन् क्या होवे हे? तारक मेहताका उल्टा चश्मा देखो. सीधो चश्मा पहर्‌यो करके तकलीफ हो रही हे ना! तारक मेहताका उल्टा चश्मा पहरते ही तर जाओगे. वामें ये प्रॉब्लेम् खड़ी कर दें के यामें कहीं लौकिकासक्ति तो नहीं बढ़ जायगी? अरे भई जो रोनो आ रह्यो हे वो बन्द हो जायगो और हंसी

आयगी. जब दिल प्रसन्न हो जाय तब फिर सेवा शुरु कर दीजो कौन ना पाड़े यामें? जब तलक रोनो आ रह्यो हे वहां तलक तारक मेहताका उल्टा चश्मा देखो.

(नींद भगावेके लिये की जाती भगवच्चर्चा असद्धर्म)

श्रीगोकुलनाथजीने याही लिये जब काश्मीरसु पधार रहे हते तब उनके सेवकन्ने कही के अपन् कछु भगवच्चर्चा करें, बोहोत नींद आ रही हे. श्रीगोकुलनाथजीने कही के नींदकु भगावेके लिये लौकिक विषयकी चर्चा करेंगे. जब नींद उड़ जायगी तब भगवच्चर्चा करेंगे. नींद उड़ावेके लिये भगवच्चर्चा नहीं करेंगे, वाके लिये लौकिक चर्चा करेंगे के कौनकी छोरी कौनके साथ भग गई, कौनने कौनको मर्डर् कर दियो! ये सब चर्चा करेंगे नींद उड़ावेके लिये. जब अच्छी तरहसु नींद उड़ जायगी तो वाके बाद भगवच्चर्चा करेंगे. भगवच्चर्चाको उपयोग नींद भगावेके लिये नहीं करनो. श्रीगोकुलनाथजीने कितनी बड़ी बात कही हे! यामें काहेकु घबरानो के लौकिकचर्चा नहीं करेंगे? अब लौकिकचर्चा करेंगे पर नींद उड़ावेके लिये और क्या करें? नींद भी तो एक लौकिक आवेग हे. लौकिकचर्चा भी एक लौकिक आवेग हे. एक लौकिकचर्चाके आवेगसु लौकिक नींदके आवेगकु कॅन्सल् कर दो. बात खतम हो गई.

पेशाब लगी होयगी तो आदमी टॉयलेट्में ही तो जायगो के किचन्में जायगो? टॉयलेट्में ही तो जानो.

श्रीगोकुलनाथजीने ये बात समझाई. यदि नींद आ रही हे और

यात्रामें सोनो भी नहीं हे तो बस लौकिकचर्चा कर लो, नींद उड़ जायगी. जब नींद उड़ जाय तो भगवच्चर्चा कर लेंगे.

(लीलानुसंधानसहित की जाती सेवा ही सद्धर्म)

जा बखत धर्मानुष्ठान अपन् कर रहे हें वा बखत धर्मानुष्ठानमें सद्वासनाकु बढ़ावेकी प्रोसीजर् क्या हे और असद्वासनाकु डायल्युट् करवेकी प्रोसीजर् क्या हें? वो साधना तुम्हारी लाईफ्स्टाईल् हे के नहीं? दूसरे शब्दन्में तुम वा साधनाकु जीवनशैलीके रूपमें अपना पा रहे हो के नहीं? कर पा रहे हो तो निष्ठा पैदा होयगी, नहीं कर पा रहे हो और निष्ठा ही पैदा नहीं हो रही तो कितनो भी प्रयास करो स्वामिनीजीकु गाली निकलेंगी, सम्प्रदायकु गाली निकलेंगी, ये सारे सिस्टम्के लिये गाली निकलेंगी के यामें क्या धर्‌यो हे?

हमने तो भगवान्कु भोग धर्‌यो हे पर आरोगें तो हें ही नहीं. आरोगते भये दर्शन नहीं होवें हें. पौढ़ावेसु फायदा क्या? आंख तो मिचें नहीं हें, नेत्र तो उघाड़ेके उघाड़े ही रहवें हें. मैं भी सोऊं हूँ तो मेरी भी आंख खुली रहें हें और आंखकी कीकी चलें और हें. मोकु तो दीखे नहीं ये रहस्य पर लोग कहें हें. मोकु तो नींद आ रही है ना, भले आंख खुली हें या चल रही हें तो भी. वामें मेरो क्या गयो? जब तक मैं सो रह्यो हूँ तब तक चिन्ताकी कोई बात नहीं हे. ऐसे जब तक मैं ठाकुरजीकु पौढ़ा रह्यो हूँ तब तक ठाकुरजीके नेत्र खुले हें के मिचे भये हें, वाकी चिन्ता मैं क्यों करूं? मैं ठाकुरजीकु भोग धर रह्यो हूं, आरोग्यो के नहीं आरोग्यो वाकी चिन्ता मैं क्यों करूं? मैं ठाकुरजीके चरणस्पर्श कर रह्यो हूं,

मैं ठाकुरजीकु स्नान करा रह्यो हूं, वामें ठाकुरजी फ्रॅश् फील् करें के नहीं वाकी चिन्ता मैं क्यों करूं? छोड़ दो वापे यदि तुमने वाकु जीवनशैलीके रूपमें अपनायो हे तो. ये निष्ठाको प्रकार हे और वो लीलानुसंधान होयगो तो ये सेवामें या तरीकेको लीलानुभाव जग सकेगो. वो लीलानुसंधान नहीं भयो और अपन् सेवा करवे जायेंगे तो कोई बोहोत ही सीरियस् मूड् सेवामें आ जायगो. फिर वामें सारे प्रश्न पैदा हो जायेंगे. सेवा तो करें हें पर मन तो लगे नहीं हे.

(भक्तिको रोल्-मॉडेल् : श्रीगुसांईजी)

वाकेलिये गोपालदासजीने या ईशानुकथा स्थानीय आख्यानमें, भागवतमें जीवन्को जो इल्युमिनेशन् हे, प्रमाणप्रमेयके इन्टरएक्शन्की कथा ईशानुकथा हे. **"ईशस्य अनुवर्तिनां कथा"** (सुबो.२।१०।५) गोपालदासजीकी इन्साईट् देखो के वो ये नहीं कह रहे हें के मैं सेवा कर रह्यो हूं. गुसांईजीकी सेवाकी पूरी दिनचर्या क्या हे वाकी कथा बता रहे हें. **"ईशस्य अनुवर्तिनां कथा ईशानुकथा."** वो भक्तिको अध्याय हे. गुसांईजी कैसे सेवा कर रहे हें, वाको यहां कीर्तन करके गा रहे हें. नवमस्कन्ध भक्तिको माने **"भक्ति सा नवमे मता:"** गुसांईजीने भक्ति करके अपने ठाकुरकु कैसे रिझायो, फुल् फ्लॅज्ड् टोटल् इन्वोल्वमेन्ट् उनको क्या हतो ठाकुरजीकी सेवामें, अहंता-ममताको दारागारपुत्राप्तवित्तके सहित हर तरहसु उनको ठाकुरजीकी सेवामें इन्वोल्वमेन्ट् क्या हतो, वाकी कथा फोकस करके बता रहे हें. अपने पुष्टिमार्गीयसेवाको प्रकार एकदम फोकस् कर दियो हे. ये यदि प्रकार हे तो ये भक्तिको प्रकार हे. ये रोल्-मॉडेल् हे और ये लीलानुसंधानके कारण प्रकट भयो रोल्-मॉडेल् हे. वाके

कारण मैं वाकी कथा गा रह्यो हूँ ''**अहं हरेः तव पादैकमूल-दासानुदासो भवितास्मि भूयः. मनः स्मरेत असुपतेः गुणान् ते गृणीत वाक् कर्म करोतु कायः**''(भाग.पुरा.६।११।२४) ऐसो मॉडेल् एडोप्ट् करके गोपालदासजी नोमें स्कन्धकु यहां कैसे इन्ट्रोड्युस् कर रहे हें.

आप सेवा करी शीखवे श्रीहरि भक्तिपक्ष वैभव सुदृढ कीधो. आपनी लीला ते वदन पोते कही उच्चार आनन्द ते अधिक दीधो. माने सेवा-कथा जो अपने यहांको **''सेवायां वा कथायां वा यस्य आसक्तिः दृढा भवेत्. यावद् जीवं तस्य नाशो न क्वापि इति मतिर्ममः.**'' (भ.व.९) जो एक आदर्श मॉडेल् हतो वाकु गुसांईजीने अपने जीवनमें कैसे अपनाके वा रोल्के मॉडेल् बने और ईशानुकथा प्रकट करी. उनकी या कथाके माध्यमसु उनकी जो दिनचर्याके, टाईम्-टेबल्के आधारपे भक्ति कैसे करनी वो समझा रहे हें. मैं कैसे भक्ति करूं ये नहीं समझा रहे हें. भक्तिको सिद्धान्त क्या हे वो नहीं समझा रहे हें क्योंके ये ईशानुकथा हे. **''ईशस्य अनुगामिनां कथा''** ईशके अनुगामीन्की ये कथा हे. वाकु या तरहसु गोपालदासजी शुरु कर रहे हें.

(सेवाकी निर्गुणरूपता)

वामें सबसु बड़ी बात गोपालदासजीकी अवेयरनेस् देखो पुष्टिमार्गके सिद्धान्तके प्रति के जैसे महाप्रभुजीकी स्पष्ट आज्ञा हें के जब अपन् ठाकुरजीकी सेवा करें तो ठाकुरजीकु परायो मानके नहीं करें. यदि तुम परायो मानके सेवा कर रहे हो तो या तो तुम्हारो सात्त्विकभाव हे, या राजसभाव हे, या तामसभाव हे. महाप्रभुजी

स्पष्ट केह रहे हें के मैं विष्णुस्वामीको अनुयायी होते भये भी सेवाको जहां तक इश्यु है, **"अस्मत् प्रतिपादितं तु नैर्गुण्यम्."** (सुबो.३।३२।३७) याको मतलब क्या? मैं भी ब्रह्म हूँ तू भी ब्रह्म हे. सेवा भी ब्रह्म हे. सेवा मैं जिन पदार्थन्सु कर रह्यो हूँ वो भी ब्रह्म हे, सब कछु ब्रह्म हे. ब्रह्म लटका करे ब्रह्म पासे! ऐसे लीलाके मूड्में सेवा करनी हे. कर्तव्यके अहंकारके या कछु एचीवमेन्ट् करवेके कोई साध्यकु सिद्ध करवेके मूड्में नहीं. जाकी सेवा कर रह्यो हूं, जो सेवा कर रह्यो हूं, जाके कारण सेवा कर रह्यो हूं, प्रमाण प्रमेय साधन फल सब कछु **''सर्वं खलु इदं ब्रह्म''** हे, ये भाव समझके जब अपन् सेवा करें तब अपनो निर्गुणभाव हे अन्यथा सगुणभाव हे. **आप सेवा करी शीखवे श्रीहरि भक्तिपक्ष वैभव सुदृढ कीधो** माने सेवा करवेवालो भी ब्रह्म हे, सेव्य भी ब्रह्म हे, जिन साधनन्सु सेवा की जा रही हे वो भी ब्रह्म हे. सेवाको प्रयोजन भी वाकी लीला ही हे, अपनी कृति नहीं हे. सेवाको जो प्रयोजन, सेवाको जो परिणाम हे, सेवाको जो फाईन् प्रोडक्ट् हे वो भी वो ही हे. या मूड्में सेवा करी तो भक्तिके अन्तर्गत सेवा होयगी. यदि या तरहसु हम सेवा कर रहे हें तो हमारी सेवा हे, हम ठाकुरजीकु प्रसन्न कर रहे हें. वैष्णवन्कु तो ठाकुरजीकु प्रसन्न रखनो भी नहीं आवे हे. क्योंके वैष्णवन्की लायकात क्या? अरे भई! वैष्णवन्की लायकात ही नहीं हे हम गुसांईन्की भी लायकात क्या होयगी? यदि वैष्णव नालायक हें तो ब्रह्मकी एक वॅरायटी हें. गोस्वामी भी एक ब्रह्मकी वॅरायटी हें. ब्रह्मकी वॅरायटी होवेमें गोस्वामी या वैष्णव अन्तर कहां आयो? मान लो के वैष्णव नालायक हें. वॅरायटी कौनकी हें? ब्रह्मकी. गोस्वामी लायक होय,

वॅरायटी कौनकी हे? ब्रह्मकी. तो गोस्वामी और वैष्णव में अन्तर कहां आयो? ब्राह्मिक परस्पॅक्टिव्में अन्तर कहां आयो? माने ब्रह्मसम्बन्धके परस्पॅक्टिव्में देखे तो जितनो गोस्वामीको ब्रह्मसम्बन्ध हे, उतनो वैष्णवको भी ब्रह्मसम्बन्ध हे. **"सर्वेषां ब्रह्मता ततः गंगात्वं सर्वदोषाणां गुणदोषादिवर्णना. गंगात्वे न निरूप्या स्यात् तद्वद् अत्रापि च एव हि."** (सि.र.८) जहां तक ब्रह्मके साथ सम्बन्धको सवाल हे, वामें लायकात या अलायकातको सवाल आयो कहांसुं? यदि लायकातको कोई सवाल होतो तो सीधीसी बात **"ते नाधीतश्रुतिगणाः नोपासितमहत्तमाः. अव्रतातप्ततपसः सत्सङ्गाद् माम् उपागताः केवलेन हि भावेन गोप्यो गावो नगाः मृगाः. येऽन्ये मूढधियो नागाः सिद्धा माम् ईयुः अञ्जसा."** (भाग.पुरा. ११।१२।७-१५) इनमें कौनसी लायकात हती? लायकात तो कछु भी नहीं हती. पर सबसु बड़ी लायकात क्या हती के उन भक्तन्के साथ वो कृष्ण निरोधकी लीला कर रह्यो हतो, वो भी ब्रह्म हते. जो लीला कर रह्यो हतो वो भी ब्रह्म हते, निरोधकी लीला भी ब्रह्मात्मिका हे. **"एतदात्म्यम् इदं सर्वम्"** है. वामें निरुद्ध होवेमें देर कितनी हे, जितनी देर अपन्ने सोच्यो नहीं, उतनी ही देर हे. सोच लियो तो अपन् निरुद्ध हें. समर्पणमें देर कितनी हे? जितनी देर अपन्ने वा मूड्कु एक्वायर् नहीं कियो उतनी देर. वा मूड्कु एक्वायर् कियो तो समर्पित ही हें. जैसे कोई आपसु पूछे के पृथ्वीपे बैठवेमें आपकु कितनो समय लगेगो? जो भी कछु साधना करोगे, पृथ्वीपे बैठके ही तो करोगे ना! यामें समय लगवेको सवाल कहांसु आयो? वामें अधिकारीको सवाल कहांसु आयो? जब अपन् कह रहे हें तो पृथ्वीपे बैठवेकी लायकात डेवलप् कैसे करनी? अरे! बच्चाकु बैठनो

नहीं आवे, पर लेट्‌यो कहां हे? पृथ्वीपे. बीमार पड़ गये, मरवेकी तैयारी हे, जा रहे हो, पर लेटे कहां हो? पृथ्वीपे. दफनायो कहां जायगो? पृथ्वीमें. जलायो कहां जायगो? पृथ्वीपे. पृथ्वीपे लायकातको सवाल कहां आवे? लायकातको सवाल आकाशमें आवे. भूमिपे सवाल नहीं आवे.

भगवान्‌की लीला प्रपंचाधिकरणिका लीला हे. भक्तिकी भी और धर्मकी भी. भक्ति कहां सिद्ध करनी हे? **"भगवान् एव हि फलं सः यथाविर्भवेद् भुवि"** (पु.प्र.म.१७) भूमिपे वो लीला प्रकट होनी हे. भूमिपे लीला प्रकट होवेमें योग्यता अयोग्यता को सवाल कहांसु आ रह्यो हे? ब्रह्मके पर्स्पेक्टिव्‌में जो योग्य हे वो भी ब्रह्मात्मक हे, जो अयोग्य हे वो भी ब्रह्मात्मक हे. माने खुद वेदस्तुतिमें ये बात कही गई हे के जो तोकु द्वेषभावसु भज रहे हें उनकु भी तू वैसे मिल रह्यो हे. जो तोकु कामभावसु भज रहे हें उनकु भी तू वैसे मिल रह्यो हे. जो तोकु शान्तभावसु भज रहे हें उनकु भी तू वैसे मिल रह्यो हे. सारे प्रकार तोकु एप्रोच् करवेवाले समान हें. हमारेमें ये अन्तर आ रह्यो हे, तेरेमें तो ये अन्तर नहीं आ रह्यो हे. क्योंके तू तो सबके लिये कॉमन् हे. **''निभृतमरुन्मनोऽक्षदृढयोगयुजो हृदि यद् मुनय उपासते तद् अरयो अपि ययुः स्मरणात् स्त्रिय उरगेन्द्र भोगभुजदण्डविषक्तधियो वयमपि ते समाः समदृशो अङ्घ्रि सरोजसुधाः''** (भाग.पुरा.१०।८७।२३) तेरे अंघ्रिकी सुधा, तेरे चरणन्‌की सुधा ऐसी हे, तेरी आंखके देखवेकी छटा ऐसी हे के कोई अन्तर फील् ही नहीं हो रह्यो हे. जो द्वेष करवेवालो हे उनकु भी तू वैसे ही मिल रह्यो हे. जो तोकु

चाहवेवालो हे वासु भी तू वैसे ही मिल रह्यो हे. जो न चाह रह्यो हे न द्वेष कर रह्यो हे, शान्तभावसु तोकु निरख रह्यो हे वाकु भी तू उतनी ही शान्तिसु मिल रह्यो हे. **रस भर्‌या लोचन चार**. चारों रस वाके लोचनमें भरे भये हें. प्रेमसु देखो, द्वेषसु देखो, शान्तिसु देखो, घबराके देखो, अद्‌भुत् मानके देखो, जो भी मानके देखो वो एक आंखमें सारे रस भरे भये हें जा तरहसु देखनो होय देखो. वो मौजूद हे. **"सर्वं खल्विदं ब्रह्म."** (बृह.उप.४।५।१९) योग्यता अयोग्यता को प्रश्न कहां आ रह्यो हे?

प्रश्न वहां आ रह्यो हे जा बखत तुम लीलानुसंधानमेंसु विचलित हो रहे हो. लीलानुसंधानको ठेका ले कौन सके? प्रॉफेशनल् कीर्तन करवेवालो, भागवत्कथा करवेवालो? कौन लीलानुसंधानको ठेका ले सके? कौनकु दियो गयो हे ठेका? कोईकु नहीं. तुम्हारे मनमें व्रज प्रकट भयो हे, व्रजमण्डल स्थिर करि स्थापित भयो हे तो लीलानुसंधान अपने आप प्रकट हो जायगो. व्रजमण्डल यदि हृदयमें प्रकट नहीं भयो हे, तो जबरदस्तीसु लीलाकु लाओगे तो वो पोपट जैसे पिंजरा खुलते ही उड़ जाये, वैसे ही लीला उड़ जायगी. लीलानुसंधान रहवेके लिये क्या जरूरी हे? सबसे पहली आवश्यकता अपने हृदयकी व्रजमण्डलता बननी जरूरी हे. हृदय जो व्रजमण्डल नहीं बन्यो, तो कीर्तन गावेसु, या पाठ करवेसु नहीं हो पायेगो. एक हमारे समाधानी हते. वो अधिक मासमें नियम लेते के सौ माला ठाकुरजीकी जपूंगो. अब दोनों काम एक साथ कैसे हो सकें! सौ माला फेरनी माने अच्छो खासो टाईम् लगे. समाधानीको काम पाछे कॉम्प्लिकेटेड्. हर क्लाईन्ट्कु पटानो,

वाकु बीड़ा देनो, प्रसाद देनो. वामें उनकु प्रसाद लेवेको समय हो जातो तो जितनी माला बचती वो फिर अंगुलीसु फेरवेके बजाय मुट्ठीसु फेर देते. फिर वो सौ माला पांच मिनट्में पूरी हो जाती. अपन् घबरा जायें के सौ माला कैसे फेर सकें? पर फेर काहेसु रहे हो? अंगुलीसु के मुट्ठीसु? मुठ्ठीसु फेरो माला, सौ माला बोहोत जल्दी पूरी हो जायेंगी. टाईम् भी वेस्ट नहीं होयगो. समाधान याको नाम! तुरत समाधान कर लियो. अब प्रॉब्लेम् ये हे के माला तुमने जरूर फेर लीं, पर मालामें लीलानुसंधान नहीं रह्यो समाधानानुसंधान रह्यो हे क्योंके टाईम् हो गयो हे और ज्यादा देर माला फेरेंगे तो प्रसादकी पातलकु कितनो परिश्रम हो जायगो? वो भगवदीय होवेके कारण प्रसादकु कितनो परिश्रम हो जायगो? यासु समझा रहे हें **आप सेवा करी शीखवे श्रीहरि, भक्तिपक्ष वैभव सुदृढ कीधो. आपनी लीला ते वदन पोते कही उच्चार आनन्द ते अधिक दीधो**. माने सेवा भी खुद कर रह्यो हे, लीला भी खुद कर रह्यो हे, कथा भी वोही कर रह्यो हे, ये निर्गुणभाव हे.

(भक्तिको रोल्–मॉडेल् ईशानुकथाके रूपमें गुसांईजीको स्थापन)

अब अपन् ये समझें के ये गुसांईजीकी मोनोपोली हे. निश्चित मोनोपोली हे क्योंके उनने या मोनोपोलीकु रॅलिश् करी हे. तुम भी शेयर् कर सको हो. वाकी मोनोपोलीमें तुम्हारो शेयर यदि तुम तदीय हो तो. वाके शेयर्होल्डर् हो वाकी मोनोपोलीमें. बोहोतन्की मोनोपोली होवे हे पर वाकी मोनोपोलीके अपन् शेयर्होल्डर् नहीं हो सकें. ये समझो के गुसांईजीकी मोनोपोली होय तो होयगी पर अपन् भी पुष्टिमार्गीय होवेके कारण वाके शेयर्होल्डर्

हें. क्योंके **"भगवद्-रूप-सेवार्थं तत्सृष्टिः नान्यथा भवेत्."** (पु.प्र.म. १२) अपन् भी वाही पर्पज़सु पैदा भये हें. अपनो स्वरूप कैसे प्रकट भयो? **आप सेवा करी शीखवे श्रीहरि** के मॉडेल्सु अपन् पैदा भये हें. **"भगवद्रूपसेवार्थं तत्सृष्टिः नान्यथा भवेत्."** वो रोल्-मॉडेल् हे. अब गुसांईजी रोल्-मॉडेल् प्रकटे क्योंके उनने वा सेवाप्रणालीकु जीके बतायो. अपन् वा प्रणालीकु जीनो चाह रहे हें. बस ये ही बेसिक् अन्तर हे के उनने जीके बतायो और अपन् जीके नहीं बता पा रहे हें. वहां प्रॉब्लेम् हे अपनी. क्योंके अपनी भक्ति थोड़ी बोहोत यहां वहां भगति भई हे. भजवेवाली भक्ति नहीं भगवेवाली भक्ति हे. घरमें बैठके सेवा करवेवालेकु कोई नहीं ठग सकें. मेरो एक बड़ो प्रिय दोहा हे. ''भगत जगतकु ठगत हे, भगतहु जग ठग जाय. भगतहु जग जो ना ठगे तहां भगत काहे फंस जाय.'' 'भगत' माने हवेलीन्की ओर भागवेवाले. भागतेभयेकु कोई न कोई ठग ले. ''भगत जगतकों ठगत हे,'' भागवेवालो जगतकु ठगे हे, ''भगतहु जग ठग जाय,'' भागवेवालेकु जग भी ठग जाये, ''भगत जगत जो न ठगे,'' भगत जो जगतकु न ठगतो होय, ''तहां भगत काहे फंस जाय.'' तो जो भाग रह्यो हतो वो जगतमें कैसे फंस गयो? 'जगत'को मतलब होवे हे संस्कृतमें धीरे चलवेवालो. 'भगत'को मतलब होवे भागवेवालो. तो सारी दुर्घटना तो भागवेमें ही होवें हें ना! वो चाहे पुष्टिमार्ग होय, चाहे मर्यादामार्ग होय, चाहे पैदल होय, चाहे फुटपाथ् होय, भागोगे तो गिरवेके चान्सेस् ज्यादा हें. धीरे धीरे कदम जमा-जमाके चलो तो कोई गिरवेको चान्स् नहीं हे. सीधीसी बात हे के अपन् भक्ति कर रहे हें के भगति कर रहे हें. वो स्पीड् इन्स्टिगेट्ड् हे. कोई न कोई अपनी असद्वासनासु; कोईने कह दी

के फलानेकु सानुभाव हो रह्यो हे के सानुभाव दीखे हे? हां दीखे हे, ठाकुरजी दीखें हें. कहां दीखें हें? अरे एक कालो धब्बा दीखे हे. तो वामें ठाकुरजीको मुखारविन्द दीखे हे. अरे भई! काला धब्बा दीख रह्यो हे तो वामें ठाकुरजीको मुखारविन्द काहेकु होयगो? पेट मसलके सानुभाव पैदा करनो. ऐसे ही रास्तामें खड़े हो जाओ और एक तरफ देखवे लग जाओ. तो सब लोग वाही तरफ देखवे लग जायेंगे. चाहे कछु भी दीखतो नहीं होय पर कह दो के दीख रह्यो हे तो बस सबकु ऐसो लगेगो के हां कछु तो हे. जब आदमी बोहोत भागे हे तो या तरीकेकी प्रॉब्लेम् हो जाय.

हर बातकु नॉरमली लो क्योंके ये जीवनप्रणाली हे. वामें कछु देखवेकी जरूरत नहीं होवे हे पर वाकु जीवेकी जरूरत होवे हे. अंधे लोग जीवें नहीं हें क्या? ये जो अपन् पेट मसलके दर्द पैदा करें के सानुभाव प्रकट होनो चहिये तो हम सेवा करें! चित्तमें मानसी सेवा होनी चहिये. अरे भई! हो जायगी ना तो लेनेके देने पड़ जायेंगे. आसकरणदासजी घोड़ापे बैठे भये हते पर समझो के तुम ट्रेन्में हो और तुम्हारी कढ़ी कोईपे ढुली तो लोग घेरके पिटाई करेंगे तुम्हारी. कहांसु लायो? ट्रेन्में खड़े होवेकी तो जगह नहीं हे और वामें कढ़ी और ढुल गई तो ऐसी पिटाई करेंगे लोग, "देखता नहीं हे क्या, अन्धा हो गया हे क्या, कढ़ी ढोलता हे हमारेपे." व्यर्थमें खोटी धांधल मत करो. मानसी सेवाकी या बखत जरूरत नहीं हे. या बखत तो सेवाकी जो प्रणाली हे वाकु अपनी जीवनशैली बनावेकी जरूरत हे. वाके जो भी स्लो स्टेप्स् हें, उन स्लो स्टेप्सकु लेवेकी जरूरत हे. **आप सेवा करी शीखवे श्रीहरि भक्तिपक्ष वैभव सुदृढ**

कीधो. आपनी लीला ते वदन पोते कही उच्चार आनन्द ते अधिक दीधो. या निर्गुणभावसु गुसांईजीकी स्तुति करके निर्गुणा भक्तिको रोल्-मॉडेल् ईशानुकथाके रूपमें गुसांईजीकु यहां स्थापित कियो हे. ये बोहोत ही रिमार्केबल् बात नोमें स्कन्धकी आ रही हे; अपनी नहीं केह रहे हें के हमकु सेवा करनी हे. ये केह रहे हें के ऐसी सेवा आपने करी. वो निर्गुणा भक्तिकी सेवा आपने करी हे. महाप्रभुजीने तृतीयस्कन्धमें या पॉईन्ट्कु एम्फेटिकली स्टॅप् बाय् स्टॅप् बतायो हे. पूरे स्कन्धके बारेमें देखो क्या सूझ हे और क्या अवेयरनेस् हे.

(आत्मभावसु प्रभुसेवा)

"वेददधि मध्य नवनीत जे भजनरस मथित माधुरी जीवे श्रवण पीधो. तक्रसम कर्मपथ स्नेह-रस-हीन जे श्वेत जाणी विमुख ताणी लीधो." दो बात कह रहे हें. एक गुसांईजी और एक विमुख. गुसांईजी क्या कर रहे हें? **वेददधि मध्य नवनीत जे भजनरस. "नवा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति. आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति."** (बृह.उप.२।४।५) वो नवनीत रस हे. वा नवनीत रसकु उनने खुदने पीयो, **मथित माधुरी जीवे श्रवणे पीधो.** जीवकु भी मथके पिवायो के तुम या आत्मभावसु प्रभुकी सेवा करो. आत्मभावसु प्रभुकी सेवा करोगे तो वो जीवनशैली बन सकेगी. आत्मभावसु या निर्गुणभावसु प्रभुकी सेवा नहीं करोगे और प्रभु कोई और हे, मैं कोई और हूं, तो कहीं न कहीं तुमकु कोई ट्रांज़ेक्शन् करनो पड़ेगो प्रभुके साथ सेवामें; हम इतने दिनसु सेवा कर रहे हें और अभी तक सानुभावको कोई हिसाब नहीं मिल रह्यो हे! वो

सप्लाई तो भयो ही नहीं हे. चित्तभी चोंट्यो नहीं हे. अरे भई! तो करें क्या, ये तो बताओ ना तुम? ऐसे सब उपद्रव क्यों सूझें? वाको मूल कारण ये हे के आत्मभावसु अपन् सेवा नहीं कर रहे हें. आत्मभावसु जब अपनी सेवा करवेकी तैयारी नहीं हे तब अपन्कु जबरदस्ती सेवा व्यर्थमें थोप दी गई हे. तो यामें तारक मेहताका उल्टा चश्मा देखनो बेस्ट सॉल्युशन् हे. थोड़े दिन देखो तो सब प्रॉब्लेम् सॉल्व् हो जायगी.

(भक्तिमार्गीय विमुखको वर्णन)

तक्रसम कर्मपथ कर्मपथ कैसो हे गोपालदासजी केह रहे हें, नवनीत जैसो तो ये भजनरस हे. कर्मपथ कैसो हे वो अपने यहां भी हो सके हे. मैंने याही पॉइन्ट्कु एलोबरेट् करवेके लिये ये सारी रामायण गाई हे. तक्रसम कर्मपथ कैसे हो सके हे? **स्नेह–रस–हीन जे** स्नेहरससु हीन कर्म तक्रसम हे. वाकु तुम एडोप्ट् क्यों कर रहे हो क्योंके नवनीत भी तो सफेद हे और ये भी तो सफेद ही है ना! सफेद हे तो ठीक हे ले जाओ. सफेद तो चूना भी हे वो भी ले जाओ. सफेद तो यूरियाको पानी भी तो हे वासु गिरिराजजीकु स्नान करा दो. तक्रसम कर्म श्वेतजल, सब श्वेत ही श्वेत हे. जितनो श्वेत हे वो सब वापरो. वो बात गोपालदासजी कह रहे हें के **तक्रसम कर्मपथ स्नेह–रस–हीन जे श्वेत जाणी विमुख ताणी लीधो.** हां–हां! एक मन दूधसु स्नान करानो गिरिराजजीकु. **श्वेत जाणी विमुख ताणी लीधो.** एक मन दूधसु यमुनाजीकु स्नान करानो हे. श्वेत हे ना! अरे भई श्वेत हे पर यूरिया हे के यूरियाको दूध हे? चलेगो, अब श्वेत तो श्वेत हे ना. डालो. तुम्हारे ऊपर या तरहसु

कोई डालेगो तो तुम्हारो क्या हाल होयगो? स्नेहरसहीन जो तक्रसम कर्मपथको श्वेत यूरिया हे; हमकु तो खाली दूध चढ़ानो हे. दूध चढ़ानो हे, बाकी कोई दूसरी बात मत करो. अब वो यूरियाको होय के घासलेटको होय पॅट्रोल्को होय, काहेको भी होय, श्वेत हे ना, पाउडर मिलाके भी दूध बनाके चढ़ाओ! ये कर्मपथ हे. जो विमुख होयगो वो ऐसे ताणेगो. जो अभिमुख होयगो वो कैसे करेगो **वेददधि मध्य नवनीत जे भजनरस, मथित माधुरी जीवे श्रवणें पीधो**. विमुख और अभिमुख के मॉडेल्में वा कॉन्ट्राडिक्शन्कु बता रहे हें. भगवदभिमुख और भगवद्विमुख, ये दो मॉडेल् हें.

उन मॉडेल्में **ए चरणशरण विना लोक दशचारमां कहोने केानो काईं अर्थ सीधो**. कैसे अर्थ सिद्ध होयगो? ये तो जो कोई भजनरसकी जीवनशैलीकु गुसांईजीकी तरह अपनातो होयगो, वाकु अपन् देखें, सोचें तो अपन्कु भजन कैसे करनो वो ख्यालमें आ सके. ये जो **श्वेत जाणी विमुख ताणी लीधो** की प्रोसेस्सु सेवा करवेवाले हें वो ऐसे कहे के ''हम हमारे पैसासु नहीं तो वैष्णवन्के पैसासु निभायेंगे सेवा. तुम्हारे पैसासु नहीं होय तो जो दर्शनार्थी हें उनके पैसासु सेवा निभायेंगे.'' तो कैसे पता चले के पुष्टिमार्गी हे के नहीं हे? **श्वेत जाणी विमुख ताणी लीधो**. वो हमारो तो जन्म जन्मान्तरके वाके साथ चलतो ऋणानुबन्ध हे. वो हमकु पैसा दे रह्यो हे और हम वासु सेवा कर रहे हें. अरे भई! ये कैसो ऋणानुबन्ध? ये कैसी वन्-वे ट्रॅफिक् हे के वाने तुमकु दियो ही नहीं और तुमने ही सबन्कु पहले ऋण दियो हतो. वो **श्वेत जाणी विमुख ताणी लीधो**. या या तरीकेको मिस्इन्टरप्रिटेशन् करें हें.

(विषयासक्तिवश अप्रपन्न जीवन्‌की निन्दा)

शुं कहुं चतुर थई थई अने विस्तरे भजे नहीं पशु जेम विषय कीधो.

(गुसांईजीकी सेवापरता)

बोल वल्लभसुवन विमल वाणी. जेनी गति ब्रह्मादि देवे न जाणी. गूढ रस तत्त्व जे वेदनी वाणी ते प्रकट कीधी भक्त हेत जाणी. नंदनंदनरूपे रासलीला करी, पोते न उच्चरी छानी राखी. दिवस एकादनी उत्तराकुंवर प्रति व्यासनंदन विमल वदन भाखी. ऐसी सेवा–कथाकु वो निरन्तर नहीं चला रहे हें क्योंके तब तो **"सेवायां वा कथायां वा यस्या आसक्तिः दृढ़ा भवेद्. यावज्जीवं तस्य नाशो,"** (भ.व.९) हो ही नहीं सके. आज भक्तिको तो अपनो आत्मघाती मॉडेल् हे, वो कैसो हे? ''सोनाकी कटोरी हती सो देवद्रव्य हतो. जो देवद्रव्य खायेगो सो मेरो नाही कहावेगो''!! ऐसो आत्मघाती मॉडेल् हे!! **व्यासनंदन विमल वदन भाखी. ब्रह्मादि महामुनी अतिज्ञान पारंगत ते मधुसिंधुनी कहिये माखी.** यहां सातवीं कड़ी तक उनने गुसांईजीकी सेवापरता कैसी हती वो बताई.

(आचार्यजीकु अभिमुखकी स्तुति)

वाके बाद क्या केह रहे हें आठवीं कड़ीसु **विबुध वांछे वास वसुमती ऊपरे, श्रीवल्लभकुंवरनी टहेल करवा.** क्योंके जो सेवा हम नहीं कर सक रहे हें, तो वा वल्लभकुंवरकी सेवा हम करेंगे, यदि तुममें अकल होय तो. उनकी सेवा करोगे, माने **"तदीयैः सह तत्परैः यथा चित्तं न दुष्यति."** (भ.व.८)

(गुसांईजीके स्थायिनिर्गुणभक्तिभावको उपपादन)

वो बता रहे हें के **घोषथी वेगें पाऊं धारे ते गिरि भणी, श्रीगिरिराज धरणनो ताप हरवा. फूल फेंटें भर्या वसन वाघा तणां विविध भूषण ते अंग धरवा. तुरंग चाल्यो वायु वेगे उतावलो जाणें नौका चाली सिंधु तरवा.''** फूल गुसांईजी खुदके फेंटामें भर रहे हें. फूलघरियाकु नहीं केह रहे हें. फूल जो ले जा रहे हें श्रीनाथजीके लिये गोकुलसु वो सुबहसु तैयारी करी हे, फूल खुदके फेंटामें भरके ले जा रहे हें. वालिये मैंने गुलकी बात करी के ''गुल होना गुनाह बन जाय ना कभी.'' या तरहसु दिलसु कोई गुल श्रीनाथजीकु दे तो श्रीनाथजीकु भी मजा आवे के गोकुलसु खुदके फेंटामें भरके लाये हें फूलकी माला खुद मोकु अपने हाथसु पहरा रहे हें. वा मालाकु पहरवेंमें श्रीनाथजीकु भी मजा हे. अब ऐजन्सीकु अपन्ने लिखवा दियो के आज श्रीनाथजीको पाटोत्सव हे तो माला पोंहाचा दीजो वहां पोंऽऽऽहोंऽऽऽचोजी. वा मालाकु धरवेकी गरज श्रीनाथजीकु हो ही नहीं सके. भाग जायगो वाके साथ श्रीनाथजी, जो रोज माला पोहोंचायगो तो. गुसांईजीको मॉडेल् एक युनीक् मॉडेल् हे. **दिवस एकार्धनो विरह ते युगसमो, नीरांजन मिष रूप हृदय धरवा.** आरती क्यों करें? या लिये नहीं करें के दर्शनार्थीन्कु दर्शन कराने हें. आरती या लियें करें हें के रातभरमें जो देख नहीं पाये श्रीनाथजीकु, वो आरतीके उजालामें अच्छी तरहसु निरखके देख लें. जासु वो छबि हृदयमें छप जाये. जासु जब गोकुल जा रहे हें वा बखत कोई हरकत नहीं आवे वा विषयमें. **जीवने ए कृत्य नित्य प्रति क्षणु-क्षणु 'श्रीविट्ठलनाथ' एवा उच्चरवा.** या तरहसु सेवापरायण श्रीविट्ठलनाथ हे वामें ''**कृष्णसेवा परं वीक्ष्य दम्भादिरहितं नरं श्रीभागवततत्त्वज्ञं**

भजेद् जिज्ञासुः आदरात्.'' ये कन्डीशन् जो महाप्रभुजीने समझाई हे वो गुसांईजीने जीके बताई हे क्योंके **सेवापर एव गुरु** वहां केह रहे हें वो सेवापरता कथापरता दम्भादिरहितता पूरी निभाई हे याके लिये के **जीवने ए कृत्य नित्य प्रति क्षणु क्षणु श्रीविट्ठलनाथ एवा उच्चरवा, रूप बेउ एक ते भिन्न थई विस्तरे''** फिर वोही निर्गुणभाव ला रहे हें. निर्गुणभाव भूल मत जईयो. **विविधलीला करे भजनसार.**

(ईशत्वसिद्ध भक्तिपरायण गुसांईजीके रोल्–मॉडेल्को अनुगामिन्के लिये भक्तिभावको निरूपण)

ये भक्तिकु कैसे जीनो, ये गोपालदासजीने अपन्कु समझायो हे. नौमें स्कन्धकी भक्तिकी स्टोरीकु कैसे फोकस् करके गुसांईजीपे देख रहे हें. ईशके अनुगामीन्की कैसी कथा हे! ईश खुद अपनो अनुगामी बन्यो हे और वो अनुगामी होवेके कारण ईशत्व तो वामें सिद्ध हे, सिद्ध होते भये भी वाकु या बातकी चिन्ता नहीं हे के जब मैं ईश हूँ तो मोकु सेवा करवेकी क्या जरूरत हे? ईश हूँ याहीलिये सेवा करवेकी जरूरत हे. जो अन्तर आ रह्यो हे वो यहां आ रह्यो हे के मैं ईश हूँ और भक्ति यदि कोई अच्छी चीज हे तो याही लिये मोकु सेवा करवेकी जरूरत हे. मैं ईश हूँ तो मोकु सेवा करवेकी क्या जरूरत हे? ऐसी असद्वासना गुसांईजीमें हती नहीं, हो सके नहीं. **नित्य प्रति क्षणु क्षणु 'श्रीविट्ठलनाथ' एवा उच्चरवा.** ऐसो एक रोल्–मॉडेल् गुसांईजीको हे जाकु यहां गोपालदासजीने ईशानुकथाके रूपमें याद कियो हे.

(ज्योतिप्रकरणको प्रसंग)

अब अपन् आजके प्रकरणपे आवें. ईशानुकथा निरोध और

मुक्ति ये अपने तीन आख्यान, या तीन स्कन्ध; इन तीन स्कन्धन्को प्रकरण मैंने आपकु कल बतायो के ज्योतींषि प्रकरण हे. मैंने कल आपकु समझावेकी कोशिश करी के प्रमेय जा बखत फुल्-फ्लॅज्ड् लेवल्पे प्रकट हो रह्यो हे, वा बखत वा प्रमेयके फुल्-फ्लेज्ड् प्रकट होवेकी प्रक्रियामें प्रमाण प्रकट होवे. जैसे पेड़पे फूल पैदा होवे तो सबसु पहले कलीके रूपमें पैदा होवे. वा कलीकी तरह पैदा भये फूलपे न तो वाके रंग पूरी तरहसु दिखलाई देते होवें, न तो वाकी सुगन्ध, न तो वाकी आकृति दिखलाई देवे हे. क्योंके कलीमें वाकी आकृति भी सिकुड़ी भई होवे हे. जब खिले तब अपन्कु पता चले के कितने पत्तान्के साथ खिल्यो हे. चार पत्तान्के साथ के पांच पन्द्रह पचास पत्ताके साथ वो खिल्यो हे. हर फूलकी अपनी अपनी तासीर हे. हर पत्ता एक रंगके और हर पत्तामें अलग अलग रंग प्रकट करे. वाके भीतर जो केसर हे उनमें गन्धके अलग अलग प्रकार प्रकट करे. एक खाली गुलाबको फूल ले लोगे तो पहली वाकी ग्रीन् कलर्की शीटकु सूंघके देखियो, सुगंध नहीं होवे वामें. खिल्यो नहीं होय तो वो जो गुलाबकी पंखुड़ीको कवर् करके रहतो होय. पंखुड़ी जब खिलें तो वो एकदम नीचे चल्यो जाय. वाकु खिलवेके बाद सूंघोगे तो वामें सुगंध नहीं होवे. कैसे वो मॅनेज् कर रह्यो हे! सुगंधवालो फूल, बिना सुगंधकी पंखुड़ी पहले खोल रह्यो हे क्योंके पूरो खिले वासु पहले कोई सुगन्धकी अदान्त कामनावालो दुर्व्यवहार न कर बैठे! ज्ञानवालो पहले अज्ञान प्रकट कर रह्यो हे. सामर्थ्यवालो भी पहले असामर्थ्य प्रकट कर रह्यो हे सुगंध फैलावेकी. वा हरी पंखुड़ीमें सुगंध फैलावेकी सामर्थ्य नहीं होवे. सारी सुगंध अन्दर समाई भई हे पर सुगंध फैलावेकी सामर्थ्य नहीं हे

वामें. क्योंके वनस्पतिशास्त्रके हिसाबसु वामें वहां पोलन् (मकरन्द) होवें ही नहीं हें करके वो फैलावे ही नहीं हे. वो फैलावे नहीं यासु वा बखत प्रमाणप्रवृत्ति भी नहीं होवे. वा तरीकेके फूलपे न तो कोई तितली जावे, न कोई भंवरा जावे. ''जैसे साहिब घर भले तैसे भले विदेस.'' तितली भंवरा कब जावें? जब वो खिले. खिलवेके कारण वाको रूप प्रकट होवे हे. रूप हे करके तितलीकु वो रूप चहिये. तितली जा फूलपे बैठे वैसो रंग एक्वायर करे वो. मधुमक्खीकु वाको पोलन् चहिये, शहद चहिये. वहांसु वो पोलन् एकत्रित करे. ऐसे हरेक जगह प्रमाणप्रवृत्ति बादमें होवे. जब प्रमेय प्रकटतो होय तब प्रमाणमें प्रवृत्ति हे नहीं. प्रमाणमें प्रवृत्ति बादमें होवे. पर प्रमाणकी प्रवृत्ति प्रमेयके बारेमें हो गई वाके बाद अपन्कु कछु तो क्लिक् होवे के ये क्या हे? वो इल्युमिनेशन् हे, वो ज्योति हे. माने प्रमाण और प्रमेय के इन्टरएक्शन्के एकॉम्पलिश् होवेके बाद अपन्कु माईन्ड्में लाईट् जुड़े. अंग्रेजीमें वाके लिये बड़ो अच्छो शब्द हे 'एन्लाईटन्'. प्रमाण वापरें तो अपन् एन्लाईटन्ड् होवें. या लिये तीन प्रकरण हें : भक्ति निरोध और मुक्ति, ये एन्लाईटन्मेन्ट्के तीन मोड् हें. भक्ति एक तरहको एन्लाईटन्मेन्ट् हे; निरोध कोई दूसरे तरहको एन्लाईटन्मेन्ट् हे; मुक्ति कोई तीसरी तरहको एन्लाईटन्मेन्ट् हे जो प्रमाण और प्रमेय के इन्टरएक्शन्के बाद प्रकट होवे हे.

(भक्तिकी प्रवृत्तिके लिये ब्रह्मको भगवद्रूप)

सबसु पहली बात यामें समझवेकी ये हे, भक्ति क्या करे? भक्ति एक प्रमाणकी प्रवृत्ति हे. जो प्रमेय प्रकट भयो, वाके बारेमें अवेयरनेस् जगावेकी अपने द्वारा ली गई क्इन्टलॅक्च्युअल् कहो,

[ख]सॅन्टीमेन्टल् कहो के [ग]बिहेवियरल् कहो वैसी एक एक्टिवनेस् हे, जो अपन् इनिशियेट कर रहे हें. शास्त्र वाकु क्लासिफाई करके कहे **"[क/१]श्रवणं [क/२]कीर्तनं विष्णोः [क/३]स्मरणं [ग/१]पादसेवनं [ग/२]अर्चनं [ग/३]वंदनं [ख/१]दास्यं [ख/२]सख्यम् [ख/३]आत्मनिवेदनम्"** (भाग.पुरा.७।५।२३) या तरीकेकी तुम एक्सरसाईज़् करोगे तो तुम्हारेमें वाकी अवेयरनेस् थोड़ीसी पैदा होयगी. कैसे? वाकु सुनो, वाकु गाओ, वाकु याद करो. देखो पादसेवन जहांसु इन्ट्रोड्युस् करें हें तो वहांसु [क]ब्रह्म बॅक्ड्रॉप् जा रह्यो हे. भक्ति [ख]परमात्माकु भी ड्रॉप् कर रही हे. हे ब्रह्म पर ब्रह्मने एक प्रमेयरूप धारण करके परमात्माको रूप धारण कियो और वा परमात्माने प्रमेयरूप धारण करके तीसरो [ग]भगवान्को रूप धारण कियो. वो भक्ति यदि भगवान् तक नहीं पहुंचे तो पादसेवन कहां करनो? पांव कहां छूनो? जो गुरु नानककी बात हे के मक्का-मदीनाकी तरफ पैर करके सो गये तो सबन्ने हो-हल्ला मचा दियो के "अरऽऽररऽऽऽरर बड़ो अनर्थ हो गयो, मक्का-मदीनाकी तरफ पैर करके सो गये." उनने कही के "भाई! मैं थक्यो भयो हूं. जहां मक्का-मदीना ना होय वहां मेरे पैर कर दो!" जहां गुरु नानकको पैर सरकावें वहां उनकु मक्का-मदीना दीखे. ये कौनसी रियालिटी हती? वर्च्युअल् हती के साईनेस्थेसिया हतो? ये नानक साहिबकी वार्तामें आवे हे. जहां नानक साहिबको पैर सरकाते, वहां मक्का-मदीना दीखतो. लोगन्ने कही के छोड़ो याकु, ये तो कोई खुराफाती जीव दीखे हे. वास्तवमें तो मक्का-मदीना सरकतो तो नहीं होयगो ऐसे? हमारे ब्रजभाषाको एक बोहोत अच्छो कवि भयो हे, पद्माकर, उनने एक कविता कही हे. स्वामिनीजीके

चरणमें जो महावर लगाई हे वाको एक रंग हे. चरण गोरे हें वो एक रंग हे. वा गोरे रंगके चरणन्में एक सांवरीसी कोई चीज तिल हे. वो कहे हे के वो जहां जहां पैर धर रही हें वहां वहां त्रिवेणी संगम पैदा हो जा रह्यो हे. ''जहां जहां पैर धरत ये भामिनी तहां तहां होत त्रिवेनी.'' क्योंके तीनों रंग हें. उनकु साईनेस्थेसिया होवे. गंगा जमुना और सरस्वती के तीन रंग हें. कालो सफेद और लाल और वो तीनों रंग स्वामिनीजीके चरणन्में दिखलाई दे रहे हें. वहां वो त्रिवेणी संगम पैदा हो जाय हे. ये क्या हे? वाकु भावसु दीख रह्यो हे के स्वामिनीजी जहां भी चरणविन्यास करें वहां वहां संगम पैदा हो जाय हे. एक्च्युअली गुरुनानकजीको जहां जहां पैर घसीट्यो वहां मक्का-मदीना आ जाय. मुल्लान्के बजाय अल्लाह नानकपे कितनो ज्यादा मेहरबान हे ये अपन् समझ सकें.

तो ये बात अपन्कु समझनी चहिये के ब्रह्मकु मुश्किल हे पदवंदन अर्चन को विषय बन जानो. वो तो अब्दुल गफ्फार खान चहिये अर्चन करवेके लिये. कौनसी जगह वंदन करनो ब्रह्मकु? यदि या बाजु वंदन कियो तो या बाजुके ब्रह्मको अपमान हो जायगो. या बाजुके ब्रह्मकु वंदन कियो तो वा वाजुके ब्रह्मको अपमान हो जायगो. ऐसे गोल-गोल घूमते रहेंगे तो अन्तमें वंदन ही नहीं हो पायगो. जब अर्चन करनो हे, वंदन करनो हे तो ये अपनी पर्सनल् डिमान्ड् हे, ये अपनी पर्सनल् लिमिटेशन् हे के हम भक्तिके तहत कछु वाके साथ इन्टरएक्शन् करनो चाह रहे हें. क्यों? क्योंके हम फिगर् हें तो वाके लिये हमकु फिगर् चहिये. जो फिगर् होयगो तो वाके साथ ही हम इन्टरएक्शन् कर पायेंगे. करके फिर ब्रह्म ''**यद्-**

यद् धिया त उरगाय विभायन्ति तद्–तद् वपुः प्रणयसे सदनुग्रहाय.'' (भाग.पुरा.३।९।११) ब्रह्म तुम्हारे लिये बिल्कुल वाही तरहसु हो जाय जैसे बरफ पानीके रूपमें कोई भी फिगर् नहीं होवे हे, पर बरफ जमवेके बाद वामें क्युबिक् फिगर् तो आवे ही हे. या जा भी सांचेमें ढालो तो वो फिगर् बरफकी बने हे. ऐसे तुम्हारी भक्तिके कारण, भक्तिकी जो शीतलता ब्रह्मकु मिले हे ना, वाके कारण ब्रह्ममें थोड़ीसी सॉलिडनेस् आ जाय हे. वो सॉलिड् भयो जो ब्रह्म हे वो भगवान् हें. जो डायल्युटेड् भगवान् ब्रह्म हे, जो लिक्विड् फॉर्मको हे वो ब्रह्म हे. वा लिक्विड् फॉर्ममें तो कोई भी शेप् या साईज़ वगैरह मिलनो मुश्किल हे क्योंके वो तो डायल्युटेड् हे. डायल्युटेड् भगवान् ब्रह्म हे. भगवान् सॉलिड् फ्रोजन् क्युब्की तरह हे शेप्सहित आईसक्रीम्में जैसे अलग अलग शेप् दे दे हें. आकारको स्वाद लो, रंगको स्वाद लो. वा तरीकेको जमो जमायो ब्रह्म बड़ो ही टेस्टी हे. पर डायल्युटेड् ब्रह्मको टेस्ट् लेनो प्रॉब्लमेटिक् हे. वो तो खान अब्दुल गफ्फार जैसो होय तो ले सकें. बाकी तो वा ब्रह्मको टेस्ट् नहीं ले सकें. कोई भी जाके पानीको टेस्ट् ले तो पानीमें टेस्ट् कहां आवे हे? जब वो जम जाय और वाको बरफको गोला बन जाय, वामें देखो बच्चान्में कितनो उत्साह होवे हे खावेको!

क्योंके अपन् फिगर् हें. प्रॉब्लेम् ये हे. वोई फ्रीज्में ठण्डो कियो भयो दूध और वोही जमी भई आईसक्रीम; आदमीकु पागलपन काहेको हे? क्या लफड़ा हे? अरे भई जितनी ठण्डी आईसक्रीम हे उतनो ही ठण्डो दूध पी लो पर वो मजा नहीं आवे. क्यों मजा नहीं आवे? अपनी जीभ फिगरेटिव् हे. सो वो भी कोई

फिगर् चाह रही हे. कोई चीजकु जीभपे घुमावे, ऐसी कोई फिगर् होनी चहिये. दूध तो सीधो गलेमें उतर जाय. मजा बिगड़ जाय. बाकी लगभग उतनो ही ठण्डो होय पर वो मजा नहीं आवे जो मजा आईसक्रीम्में आवे हे!

ये अपने एप्रोच्की बात हे. अब यामें ये बात नहीं हे के दूध मिथ्या हे के वाडीलालकी आईसक्रीम् मायिक हे. ऐसे तो शंकराचार्य सोचें, अपन् नहीं सोचें. अपन् तो ऐसो सोचें के दूध भी सत्य हे और वाड़ीलालकी आईसक्रीम् भी सत्य हे. मगर दूधमें वो मजा नहीं आ रही हे जो वाड़ीलालकी आईसक्रीम्में मजा आ रही हे. क्योंके वहां न वाड़ी हे न लाल हे. यहां सब कछु हे. वाड़ीभी मिल रही हे, लाल भी मिल रह्यो हे. सो अपन् भी वाड़ी और लाल हें सो अपन्कु मजा आ जाय आईसक्रीम् जीभपे धरते ही. दूधमें वो मजा नहीं आवे.

विक्स्की भी लीक्विड् कफ्-सिरप् आवे हे और विक्स्की टेबलेट् आवे हे, वाकु जीभपे रखो. देखो कितनो मजा आवे. वोई एक जमी भई दवा हे और एक पिघली भई दवा हे. वो घूमती रहे जीभपे टक टक होती रहे. मजा आ जाय के सरदी मिट रही हे. ऑटोसजेशन् स्टार्ट हो जाय और वो चमचामें रेड़ते ही अन्दर चली जाय तो अपन्कु पता ही नहीं चले के सरदी मिट रही हे के नहीं मिट रही हे? वो दवापे कौन विश्वास करे वा बखत? अन्दर जीभपे घूमती रहे तो अपनकु कॉन्फिडेन्स् आवे. वा विश्वासके कारण मिट

जाय सरदी. सिन्थॉल्के कारण जैसे ड्राईनेस् मिट जाय वैसे. बोहोत सारी बातें या तरहसु हे. अपन् फिगर् हें करके अपन्कु अपनी रिक्वायरमेन्ट् भी फिगर्बाउन्ड् हे. जहां फिगर नहीं हे वहां भी अपन् फिगर खड़ो करें हें.

(भक्तिभावके दो संबंध ममतामूलक सख्य और अहंतामूलक दास्य)

तकलीफ यामें क्या हे? भक्तिकी इन्ट्रान्ज़िक् नेचर्की बात मैं आपके साथ डिस्कस् करनो चाह रह्यो हूं. क्योंके ईशानुकथा मूलमें भक्तिको चॅप्टर् हे. भक्तिकी सबसु बड़ी तकलीफ ये हे के श्रवण कीर्तन स्मरण पादसेवन अर्चन वंदन तक अपन्ने कियो. अपने पास मॉडेल् दास्यके या सख्यके हें, या शृंगारके हो सकें. नवधाभक्तिमें शृंगारकी वात्सल्यकी गिनती नहीं की हे. ये तो दो मोड् एन्युमरेट् करे हें. जनरलाईज्ड् करके या उपलक्षणके तरहसु. वैसे तो सारे मोड् नवधाभक्तिमें एन्युमरेट् होने चहिये हते. ये मूड् अपने सेन्टिमेन्ट्के हे. सेन्टिमेन्ट्के ये दो रिलेशन् हें, ममतामूलक सख्य और अहंतामूलक दास्य उनकु एक टच् स्टोन् तरीके शास्त्र ले हे. टच् स्टोन् तरीके क्यों ले हे? 'सख्य'को मतलब बराबरीकी शर्तपे. 'दास्य'को मतलब ऊपर नीचे. अब अपने मानवीय सम्बन्धन्में सारे सम्बन्ध याही तरीकेके हें. या तो अपनो सम्बन्ध ऊपर-नीचेको होवे हे या बराबरीको होवे हे. पिता पुत्र ऊपर-नीचेको सम्बन्ध; भाई-भाई बराबरीको सम्बन्ध हे. पुराने जमानेमें पति-पत्नी ऊपर नीचेको सम्बन्ध हतो. अब बराबरीको सम्बन्ध हो गयो हे. क्योंके 'पति'को मतलब हतो के जो रक्षा करे. अब पति बिचारेन्की रक्षा पत्नी करती होवें हें. सम्बन्ध बराबरको हो गयो. याही लिये पहले पति आगे चलतो और पत्नी पीछे चलती. वा सम्बन्धकु बतावेके लिये. पति

अभी भी वा बायस्सु सफर् करते होवें के पत्नीकु बायी तरफ बैठानो, दायी तरफ खुद बैठनो. क्योंके दायी साईड् अपनो एक्टिव् हाथ हे. एक्टिव् हाथसु अपनेकु अपनो एक्टिव् मूड् मेन्टेन् करनो चहिये. ये मेल्शॉवोनिज्म् हे. एक्टिव् हाथ अपन् फ्री रखनो चाहें हें. पॅसिव् हॅन्ड् टु बी एन्गेज्ड् विद् वाईफ्. वा बिचारी वाईफ्को एक्टिव् हॅन्ड् पतिकी तरफ होवे हे और पॅसिव् हॅन्ड् पता नहीं कौनकी तरफ होवे हे. या तरीकेकी अपनी बोहोत सारी बॉडी लॅन्वेज् हें. कोई सम्बन्ध अपन् बराबरीपे लेवें हें कोई सम्बन्ध अपन् बराबरीके लेवल्पे नहीं लेवें हें. गुरु शिष्य जैसे पुराने जमानामें बराबरीके लेवल्पे नहीं हतो. पुराने जमानामें ट्युशन् फी नहीं लेते हते करके गुरु ऊंचो हतो, शिष्य नीचे हतो. आज ट्युशन्फी लेवेके कारण शिष्यें सब ऊंचे चढ़ गये और गुरु सब नीचे हो गये. अभी तो क्लास्रूम् भी ऐसे बनवे लग गये हें के गुरु नीचे होवे और शिष्य उपर होवें हें सब. युनिवर्सिटीमें जाके देख लो क्लास्रूम्. क्योंके ट्युशन् फी ले रहें हें तो शिष्यकु प्रमोट करनो पड़े. पुराने जमानामें गुरु ऊपर बैठतो हतो नीचे देखते भयो और शिष्य नीचे बैठते हते ऊपर देखते भये. अब क्या हे के शिष्य नीचे कृपाकी दृष्टिसु देखे और गुरु दीनताकी दृष्टिसु देखे. तो कालगतिसु गुरु-शिष्यके सम्बन्ध ऊंचे नीचे हो गये.

(स्नेहसंबंधके दो मॉडेल् उंचो-नीचो और बराबरीको)

ये दो मॉडेल् हें. अपन् इनकु सख्य और दास्य में कन्फाईन् नहीं कर सकें. सख्य बराबरीके स्नेहसम्बन्धको मॉडेल् हे. दास्य ऊंचे नीचे लेवलके स्नेहसम्बन्धको मॉडेल् हे. स्नेहकी बेसिक् वॅरायटी दो हें. या तो तुम अपनेसु कोई ऊंचेकु चाह रहे हो या अपनेसु

बराबरीके लेवल्पे कोईकु चाह रहे हो. वो दो वॅरायटी यहां उपलक्षणके तौरपे दी गई हें. बाकी सब वॅरायटी ड्रॉप् करी गई हें. वो याके लिये के तुम्हारो मन या बातकु मानवेके लिये तैयार होवे के भगवान् कोई लेवल्पे तुम्हारे बराबर भी होतो होय तो दूसरे कोई लेवल्पे तुमसु ऊंचो भी हे. या लिये दास्य सख्य तुमकु सजेशन्के रूपमें बतायो गयो हे के या तरहसु तुम अभ्यास करोगे तो तुम भक्तिकु मेनटेन् कर पाओगे. बेसिकली तो माहात्म्यज्ञान और स्नेह की प्रोग्रामिंग् यामें बोल रही हे. जा बखत तुम दास्यभक्ति कर रहे हो वा बखत तुम वाको माहात्म्य स्वीकार कर रहे हो. जा बखत तुम सख्यभक्ति कर रहे हो वा बखत तुम वाके प्रति अपनो स्नेह प्रकट कर रहे हो.

यहाँ सख्यभक्ति या दास्यभक्ति को इश्यु नहीं हे. यहां ये मॉडेलिटीको सवाल हे के जाकु तुम चाह रहे हो वाकु कोई लेवल्पे, अपने लेवल्पे मानवेके बाबजूद फिर भी कोई एन्गल्सु अपनेसु ऊंचो मान रहे हो. वाके पच्चीसन् मॉडेल् हो सकें हें. सोशियल् जो इन्टरएक्शन् हें और अपने जो सोशियल् साइकॉलॉजिकल् कन्सेप्ट् हें वाके मल्टीपल् वो हो सकें हें. माने याकु खाली दास्य और सख्य में ही कन्फाईन् मत करो. मैं जो बात कहनो चाह रह्यो हूं वो ये के याकु एक रिलेशन्के मॉडेल्की तरह स्वीकारो, स्नेहके रिलेशन्के ये दो मॉडेल् हें. इन मॉडेलन्में कछु और भी अपन् सब्स्टीट्युट् कर सकें हें. **"त्वमेव माता च पिता त्वमेव. त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव. त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव."** जैसे अपने यहांकी टर्मिनालोजी सोचो तो

कितने मॉडेल् हें! अपने यहां सेव्यस्वरूपकु 'ठाकुर' कहे हें. ये कौनसो मॉडेल् हे ऊंचे–नीचेको! अपन् अपने यहांके ठाकुरजीकु निधि कहे हें. कौनसो मॉडेल् हे? मेरी निधि मेरी गांठमें. अपन् ऊंचे आ गये और ठाकुरजी नीचे आ गये. मेरी निधि हे. मतलब क्या? मैं याकु रखवेवालो हूं. वो मेरेकु नहीं रखे हे. पर मैं वाकु रखूं हूं. अपनो प्रमोशन् हो गयो. ये भी तो एक स्नेहको लेवल् हे. पज़ेस्ड् होनो और पज़ेस् करनो, ये दोनों ही तो अनुभाव हें स्नेहके. ये दोनों अनुभाव, बिना स्नेहके भी हो सकें हें.

(भक्तिमें स्नेहके दोनों मॉडेल्)

पर यहां भक्तिको जो इश्यु आ रह्यो हे वहां स्नेहसु कोईकु पज़ेस् करनो या स्नेहके कारण कोईसु पज़ेस्ड् हो जानो, वो दोनों स्नेहके प्रकार हें. जहां ऊंचो नीचो भयो वहां कोई पज़ेसर् हे और कोई पज़ेस्ड् हे. जहां बराबरीके लेवल्पे स्नेह हे वहां न वो पज़ेसर् हे और न ये पज़ेस्ड् हे. दोनों ही पज़ेसर् हें और दोनों ही एक दूसरेसु पज़ेस्ड् हें. मॉडेल् ये हे. ये भक्तिकी बोहोत अन्दरकी कथा हे. साधारणतया अपन् या दृष्टिकोणसु भक्तिकी गहराई सोचें नहीं हें के जब यहां भक्तिकी बात करी हे तो कितनी गहराईमें जाके लोगन्ने सोची हे. स्नेहको सम्बन्ध मेन्टेन् करनो हे, या लिये अपन्कु ये दोनों मॉडेल् काममें लाने पड़ेंगे अन्यथा स्नेह अपने आपमें स्वस्थ नहीं रह पायगो. भगवान्के साथ भक्ति करनी हे तो ये मॉडेल् अपन् वापरें हें. तू मेरो पज़ेसर् हे और मैं तेरे द्वारा पज़ेस्ड् हूं. मैं तेरो पज़ेसर् हूं और तू मेरे द्वारा पज़ेस्ड् हे ये **"भर्ता सन् म्रियमाणो बिभर्ति."** (तैत्ति.आर.३।१३।१, चित्यु.७।१) वेदकी

ऋचाकी व्यवहारमें अन्विति हे.

(भक्तिमें भगवच्छास्त्रानुमोदित भगवान्‌की विभावना भक्तके द्वारा)

दास्य और सख्य, जब या तरीकेके सम्बन्धकु अपन्‌ने भगवान्‌के साथ जोड़्यो; मैंने अभी आपकु बात बताई के दोनों पार्टीको कन्सेन्ट् चहिये हे. अपन् अपनो कन्सेन्ट् तो भगवान्‌कु दे दें पर भगवान्‌को कन्सेन्ट् कहांसु लेनो? तो भगवान्‌के जो शास्त्र हें उनमें भगवान्‌ने अपन्‌कु कन्सेन्ट् दी हे यासु प्रमाणपंथ हो रह्‌यो हे. जहां भगवान् ये कन्सेन्ट् नहीं दे रहे हें और ओरल् अन्डर्‌स्टेन्डिंग्‌सु या बिहेवियर् अन्डर्‌स्टेन्डिंग्‌सु काम चल रह्‌यो हे वहां शास्त्रमें जो दी गई हे वो जरूरी नहीं हे. ओ-माय्-गॉड्‌में (हिन्दी फिल्ममें) जो प्रॉब्लेम् हती के कल तोकु वो सवाल करेंगे के तू यदि शास्त्र कह रह्‌यो हे, तू यदि ये कह रह्‌यो हे के ये तेरे भगवान्‌ने नुकसान पोहोंचायो हे तो तेरो और भगवान्‌को एग्रीमेन्ट् कहां हे ये बता? कोई डॉक्युमेन्ट् हे? डॉक्युमेन्ट् तो नहीं हे. कैसे तू क्लेम् कर सके हे जब अपन् दोनोंके बीचमें वो कॉन्ट्रेक्ट साईन नहीं भयो! तब भगवान्‌ने खुद आके वाकु कही के ''ले गीता पढ़''. वो कहे हे के ''बड़ो बोरिंग् विषय हे.'' भगवान्‌ने कही ''कुरान पढ़, बाईबल पढ़. तोकु पता चलेगो के मैंने एग्रीमेन्ट् कियो हे.'' अपने यहां तो नाम नहीं दियो हे पर यहूदीधर्ममें तो याकु क्लीयर्-कट् टर्ममें 'कॉवनेंट्' कह्‌यो गयो हे. यहोबाने कॉवनेंट् कियो हे, एग्रीमेन्ट् कियो हे मानवजातिके साथ. अपने यहां वा तरहसु नहीं कह्‌यो गयो हे के भगवान्‌ने कोई एग्रीमेन्ट् कियो हे. असलमें ये जितने भी सेमेटिक् धर्म हें उनकु गुस्सा याही लिये ज्यादा आवे क्योंके जो भगवान्‌कु मान रहे होवें और उनकु लगे के भगवान्‌ने उनके साथ जो कॉवनेंट्

कियो, वा कॉवनेंट्कु अपन् ब्रीच् कर रहे हैं, तो वाको गुनाह पाछो उनपे आयगो. उनके लिये भगवान्की ये एक और प्रॉब्लेम् हे. जो कॉवनेंट् भयो हे, 'कॉवनेंट्' माने दो स्वतन्त्र व्यक्तिके बीचमें जो एम.ओ.यु. या कॉन्ट्रेक्ट् साईन होवे हे, वा कॉवनेंट्में. भगवान् और मनुष्य के बीचमें जो कॉवनेंट् भयो हे वामेंसु यदि अपन् ब्रीच करें तो वाकु इतनो गुस्सा आवे वो अपन्कु नहीं मारे पर ब्रीच् करवेवालेकी बकरी तककु मारे, बापकु मारे, बेटाकु मारे. "अरे भई! मैंने ब्रीच् कियो तो मेरी बकरीकु क्यों मारे?" तो बोले "नहीं! क्यों तुमने ब्रेक् कियो या लिये तुम्हारी बकरी भी मारूंगो" इतनो गुस्सैल हे वो. उनकु डर लगे के तुम वा कॉवनेंट्कु नहीं पालोगे और वो हमकु मारेगो यासु वो क्रूर हो जाय. वो क्यों क्रूर हो जाय? उनकी साइकॉलॉजीकु ध्यानसु समझो के अपन् उनको धर्म नहीं पालें तो उनकु गुस्सा आवे वाको मूल कारण ये हे के उनकु लगे के कॉवनेंट् ब्रेक् करवेके कारण पता नहीं क्या परिणाम आयेंगे और भगवान् न जाने कौनपे गुस्सा उतारेगो और वामें क्लॅरिफिकेशन् नहीं हे के जो तोड़ेगो वाहीकु मारूंगो. जिनने क्राईस्ट्कु क्रूसिफाई कियो हतो वो तो वाही बखत मर गये, सौ पचास सालमें. यहुदी वाके कारण अभी तक गुनहगार माने जा रहे हें. उनको भगवान् कछु या तरीकेको हे. वो बोहोत ही बदलेकी भावनावालो हे. आदमने अपराध कियो तो आदमकु दण्ड मिलनो चहिये हतो. पर अपन् आदमी हें या लिये सब वा दण्डके अधिकारी हें. माने वंशवारस बैरको नाता निभाव. अब जो वंशवारस बैर रखतो होय तो नॅचरली डर तो लगेगो ही ना! डर लगनो स्वाभाविक हे. उनके जो धर्मानुयायी हें वो इतने कठोर क्यों हो जायें, वाको मूल कारण ये

हे के उनके भीतर ये डर रहे हे के यदि अपन् वा कॉवनेंट्कु तोड़ रहे हें तो पता नहीं वो क्या एक्शन् लेगो? वाको कौन जिम्मेदार होयगो? अपने यहां ऐसो नहीं हे. जो गुनाह कर रह्यो हे वो गुनहगार हे, बाकी सब खेलते कूदते छूट्टे. यालिये अपन्कु टेन्शन् नहीं होवे. कई बखत तो अपन्कु यहां तक लगे के जो गुनाह कर रह्यो हे वापे भी गुनाहको उतनो गुस्सा नहीं आवे क्योंके अपन्कु लीलाबोध हो जाय के न जाने भगवान् क्या लीला करनो चाह रह्यो हे के ऐसो गुनाह कर रह्यो हे! अपनो भगवान् लीलाविहारी होवेके कारण अपनकु गुस्सा होवेको स्कोप् नहीं दे रह्यो हे. उनको भगवान् बोहोत सीरियस् हे. सीरियस् होवेके कारण उनके भक्तन्कु भी सीरियस् होनो पड़े. भगवान्ने उनके भक्तन्की जैसी विभावना करी वैसे भक्त हो गये हें. अपन्ने जैसी भगवान्की विभावना करी वैसो भगवान् हो गयो हे. प्रॉब्लेम् ये हे सृष्टिकी.

(अब्राह्मिक धर्ममें भक्तिको प्रकार)

दास्यके और सख्यके ये रिलेशन्के कारण प्रभुके साथ जा बखत अपनो कोई ट्युनिंग् होवे हे, वा ट्युनिंग्में सबसु आड़े आवेवाली बात हे अपनी अहंता और अपनी ममता. अपनी अहंता और अपनी ममता वा ट्युनिंग्में आड़े आवेवाली बात हे. यालिये जितने धर्म हें सारेके सारे, सब अहंता-ममताको धोबीघाट खोलके बैठे हें. या अहंता-ममताकी टीनोपॉल्सु खूब धुलाई करो. गरमपानीमें उबालो, एसिड्में डालो, इतनो धोकायें मारो के तार तार वाके चिर जायें पर याकी सफाई करो. क्योंके वो वा रिलेशन्की ट्युनिंग्में आड़े आवे. वाको सबसु खूबसूरत उदाहरण दियो हे बाईबलमें. बाईबलमें भगवान्ने आदमकु कही हती के ईडन् गार्डन्

कितनो अच्छो गार्डन हे, यामें आनन्दसु तुम मौज मारो. वाने कही के ''मैं अकेले कैसे एन्जॉय् करूं?'' भगवान्ने कही के ''ले मैं तेरी पसलीमेंसु तेरो पार्टनर् बना दूं'' तो ईव् बना दी. आदमकी पसलीमेंसु ईव् बन गई और भगवान्ने कह दियो के ''ये तेरी लाईफ्पार्टनर् हे''. भगवान् वहां गड़बड़ कर गयो. ये कहनो भूल गयो के मैं भी कछु हूं यामें. अब भगवान्ने वा बिचारे आदमकु समझा दियो. तो आदमकु लग्यो के यामें भगवान्की कोई पार्टनर्शिप् हे नहीं. मेरी पार्टनर तो ये हे. वाके बाद पार्टनर् भी बॅटर्-हाफ होय तो भगवान्की बात माननी के ईव्की बात माननी? वा शैतानने आसुरीने सबसु पहले ईव्कु पटायो. ईव्कु पटाके कही के ''भगवान् तुमकु बेवकूफ बना रह्यो हे. तुम खा लो एपल्.'' ईव्ने कही के ''अच्छा मैं आदमकु पटाऊंगी.'' वाने आदमकु पटा लियो के खा तो ले एक बखत!

फिर गुस्सा हो गयो भगवान्. भगवान्ने कही के ''मैंने ना पाड़ी हती के एप्पल् मत खाईयो, तैंने एप्पल क्यों खायो?'' आदमने वाकु एक बोहोत अच्छी बात कही के ''तैंने ये क्यों कही के ये मेरी लाइफ्पार्टनर् हे? मोकु याके साथ रहनो हे के तेरे साथ रहनो हे? यदि तू मोकु एक लाईफ्पार्टनर् दे रह्यो हे तो वाकी मानूंगो.'' ये सास-ससुरकी और पति-पत्नीकी प्रॉब्लेम् हे के बॅन्ड् बजा-बजाके लड़काकी शादी करें के ये तेरी बॅटर्हाफ् हे. अब पति वाकी बात मानें तो सब कहें के बीबीके आवेके बाद सबन्कु भूल गयो. हमारी बात मानें ही नहीं हे. वोही प्रॉब्लेम् भगवान्की हे. ये आदम तो ईवकी बात मान रह्यो हे मेरी बात नहीं मान रह्यो हे, तो चक्कर क्या हे? जितने मां-बाप हें सब या डिवाइन्

कॉम्प्लेक्स्सू सफर् करते होवें के शादी कौनने करवाई? हमने करवाई. हमारी बात माननी चहिये के बीबीकी बात माननी चहिये? अब पति कहे के भई शादी करी कौनके साथ? याकी बात मानूं के तुम्हारी बात मानूं? वाको सॉल्युशन् ही नहीं आवे और झगड़ा चलतो ही रहे. वो झगड़ा पूरी दुनियामें चल रह्यो हे. भगवान्ने वाकु कह दी के ये तेरी लाईफ्पार्टनर् हे, तेरो बॅटर्-हाफ् हे. वाने कही के ''अब मैं तेरी बात मानूं के याकी बात मानूं?'' वाने कही के ''खा एप्पल्'' तो मैंने खायो. पर भगवान्ने माफ नहीं कियो. या तो एडम्की बातको जबाब देनो चहिये हतो भगवान्कु. जबाब तो शायद भगवान्के पास भी नहीं हतो! पता नहीं उनकु अपनी बॅटर्-हाफ याद आ गई के क्या हो गयो? कछु तो लफड़ा हो गयो. भगवान्ने जबाब दियो नहीं और श्राप दे दियो के तुमने मेरी आज्ञाको उल्लंघन कियो तो ये ये तुम्हारे साथ बीते. तुम मरोगे, तुम पापी हो, तुम्हारी जेनेरेशन्की जेनेरेशन् सब पापी. कोई नुक्सानकी बात नहीं. पापी हो गये तो पृथ्वीपे आ गये. यामें सवाल ये हे के इन्टरएक्ट् करनो कैसे? उनके यहां वोही एक मॉडेल् हे के भगवान् ऊपर हे और हम नीचे हें. ''आसमांपे हे खुदा और जमींपे हम.'' क्राईस्ट्ने पहली बार वो प्रपोज़ल् दियो के "नहीं; भगवान् ऊपर भी हे, दास्यभाव होय तो. और स्वामीको रिलेशन् ही नहीं हे, सख्यको रिलेशन् भी हे. अपने बीचमें मनुष्यरूप धारण करके अवतीर्ण भयो." क्राईस्ट्ने आके पहली बार ये मॅसेज् दियो. वा मॅसेज् देवेको नेट् रिज़ल्ट् अपन् देख सकें के क्रिश्चियानिटी कितनी पॉप्युलर् भई दुनियांमें. एक भगवान् अपने लेवल्पे उतर्यो. अपने लेवल्पे उतरके जैसे अपन् फिगरेटिव् हें वा तरीकेको फिगर् बन्यो.

जैसे अपन् अपने पापकु सफर् कर रहे हें, वा पापकु वो सफर् कर रह्यो हे और वो सफर् करके वाही तरहसु वो रो रह्यो हे जैसे अपन् रो रहे हें के भगवान् तू हमकु भूल क्यों गयो, बोहोत तकलीफ हे पापकी करके वो बात अपीलिंग् लगे. सख्यभक्ति आ गई वहां. अपन् जा तरीकेके हें वा तरीकेकी वाकी फीलिंग्स् आई. वो केवल ऊपर बैठ्यो नहीं रह गयो.

ये जो मॉडेल् हें इन भक्तिन्के या तरहसु मॅनेज् किये जाते अपने इन्टरएक्शन्कु वा प्रमेयके साथमें सबसु ज्यादा तकलीफ क्या आवे के आदमकी वो अहंता के जब भगवान्ने मेरेकु याको पति बनायो हे तो ईव् मेरी हे के भगवान् मेरो हे? अब वाकी ममता वाकु कहे हे के भगवान् तो पता नहीं कब कहां कैसे मेरो हे? गार्डन्में तो घूमवे भी नहीं आवे साथमें. ये तो मेरी लाईफ्पार्टनर् हे जो साथमें घूम रही हे. अब अपने साथ कोई ऐसो व्यवहार करे तो अपन् कौनकु ज्यादा प्रिफर् करेंगे? गॉड्कु चाहेंगे के ईव्कु चाहेंगे? ईव्कु ही तो चाहेंगे ना? सीधीसी बात हे के जो साथ घूम रह्यो हे, जो साथ खा रह्यो हे, जो साथ सो रह्यो हे, वाकु चाहनो के जो सातवें आसमानपे बैठ्यो भयो हे, वासु डरते होय तभी जो अपने साथ हे नहीं, वाकी फिगर् अपन्कु पता नहीं हे, वाकु चाहें तो कैसे चाहें? वो अपन्कु इन्टरएक्ट् करवेमें पैदा होती जेन्युइन् भक्तिमार्गीय मुश्किल हे. ज्ञानमार्गकी कर्ममार्गकी ये मुश्किल नहीं हे. ये मुश्किलात हर बखत भक्तिमार्गकु फेस् करनी पड़े हे.

(भक्तिमार्गमें आत्मसमर्पणके प्रारंभसु संबंध)

भक्तिमार्गने वाके लिये लास्ट्-स्टेप् बतायो के एक काम करो.

श्रवण कीर्तन स्मरण अर्चन वंदन पादसेवन दास्य सख्य, इन सबकु तुम जैसे भी साध सकते होओ साधो और फाईनली तुम आत्मनिवेदन; 'आत्मनिवेदन'को मतलब क्या के मैं और मेरेसु रिलेटेड् हर बात मैं तोकु ऑफर् कर रह्यो हूं. मैं और मेरी सेल्फ् अवेयरनेस् मैं तोकु ऑफर् कर रह्यो हूं. मेरी जो पज़ेसिवनेस् हे ममता, वाकु मैं तोकु ऑफर् कर रह्यो हूं. तब तुमकु एक पूरो पर्सपेक्टिव् ख्यालमें आयगो भक्तिको के "अच्छा मैं डेडीकेटेड् हूं. मैंने अपनी सेल्फ् अवेयरनेस् और मेरी पज़ेसिवनेस् वाकु ऑफर् की हे. यासु अब भले वो दास्य या सख्य के कोई भी मूड्सु मेरे साथ दीखतो न होय, पर जाके लिये मैंने ऑफर् की हे, मैं वाको 'पोर्सुवा' हूं. वाके रिलेशन्में मैं 'आंसुवा' नहीं रह गयो." वो अपने पोर्सुवा होवेको जो अंदाज हे के मैं वाके लिये हूं. **"भगवते कृष्णाय"** हूं. वो मेरे लिये एक रियलाईज़ेशन् हे. जो मेरेलिये हे वाकु मैं पज़ेस् करूंगो पर जब मैं ये सोचूंगो के मैं वाके लिये हूं तो मैं चाहूंगो के मैं वासु पज़ेस्ड् हूं.

अब वो आत्मसमर्पणके द्वारा अपनो भक्तिको फाईनल् मॅसेज् ये दियो गयो के जो **श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीडा** रूपी स्पोर्टस्के फाइनल् रूल्स् हें, सम्प्रदायमें वाकु पहलो बनायो गयो. आत्मसमर्पणदीक्षासु अपनी भक्ति स्टार्ट हो रही हे. बेसिक् ड्रास्टिक् चेन्ज् यहां आ गयो के अपन् अपनी भक्तिके रिलेशन्को आत्मसमर्पणके साथ इनिशियेटिव् स्टार्ट कर रहे हें. अपनी अहंता, अपनी ममता इन दोनोंन्कु मैं पहले ऑफर् कर रह्यो हूं. वाके बाद जो रिलेशन् अपने बीचमें डॅवलप् हो जायें उनकु तू भी रॅलिश्

करियो और मैं भी रॅलिश् करूंगो. पर जेन्युइनली मेरी अहंता, मेरी ममता मैं तोकु ऑफर् करूं तब.

आज अपने यहां ब्रह्मसम्बन्ध अमरीकामें सौ-पचास डॉलर्में बिकतो होय तो यहां सौ सवासौ रूपयामें बिक रह्यो हे. यामें वो अहंता-ममता समर्पित नहीं होय और डॉलर् और रूपया ही समर्पित हो रह्यो हे. पर जहां सचमुचमें अहंता-ममता समर्पित होती होय, ये वहांकी कथा हे. ये हवेलीके ब्रह्मसम्बन्धकी कथा मैं नहीं कह रह्यो हूं क्योंके वो तो रूपयाकी काउन्टिंग् हे. वो तो बार्टर् सिस्टम् हे.

तुम एक सीक्रेट् ले रहे हो और वो एक सीक्रेट्कु बेच रह्यो हे. हालांके वो अब सीक्रेट् भी नहीं रह गयो, रसाभास हो गयो. सीक्रेट् ये के मैं अपनी अहंता-ममता तोकु ऑफर् कर रह्यो हूं. याकु तू पज़ेस् कर ले. मेरो क्या होनो चहिये वाकु तू पज़ेस् कर. मैं क्या हूं वाकु तू पज़ेस् कर. भक्तिके पज़ेशन्को जो मूड् हे वो प्राइमरी हे और वा प्राईमरी मूड्में अपन् फिर सेवा शुरु करें हें. वा प्राइमरी मूड्में अपन् स्नेह शुरु करें हें. ये प्राइमरी मूड् यदि भक्तिको हे तो जो फाइनल् कल्मिनेशन् होयगो वो क्या हे? मेरी अहंता-ममता तेरेमें निरुद्ध हो जाय. सिर्फ ऑफर्ड रहे इतनो ही नहीं, याकु तेरेमें कन्फाईन् हो जानो चहिये. मेरी अहंता, मेरी ममता तेरी अहंता-ममतामें निरुद्ध हो जाय.

अपनी बात ये नहीं हे जो सूफीन्की हती. सूफीन्में एक बोहोत अच्छी बात कही जाय के "मैंने जाके अपनी प्रियतमाको

दरवाजा खटखटायो. वाने भीतरसु पूछ्यो के कौन हे?'' मैंने अपनो नाम बतायो. वाने कही के ''यहां कोई नहीं हे.'' क्योंके जब तुमकु अपनी सेल्फ् अवेयरनेस् हे तो 'मैं' नहीं हूं. तीन बखत लौटावेके बाद जब वाने पूछ्यो के "कौन हे?" तो मैंने कही के "तू हे." तब वाने कही के "अन्दर आ जाओ." अपने यहां ये मोड् नहीं हे. मैं नहीं हूं और तू हे, ये मोड् अपने यहां नहीं हे. अपने यहां क्या मोड् हे. ''तुम भी हो, हम भी हें, दोनों हें आमने सामने. देख लो क्या असर कर दिया प्यारके नामने.'' अपन् भी हें और वो भी हे. दोनों हें पर अन्तर कितनो हे के मैं समर्पित हूं और तू मेरे समर्पणकु स्वीकार करवेवालो हे. यहां आके अपनी स्वतन्त्र क्रीड़ाकी भक्तिको मूड् हे वासु या अर्थमें डिफरेन्ट् हो रह्यो हे.

(ज्योतिके प्रकार और प्रक्रिया)

अपनी एन्लाईटन्मेन्ट्की जो प्रोसेस् हे, अपनी ज्योति या तरीकेकी होनी चहिये के मैं अपनी अहंता-ममताकु कॅन्सल् नहीं कर रह्यो हूं. मैं अहंता-ममताकु धिक्कार नहीं रह्यो हूं. मैं अपनी अहंता-ममताकु झांकी भी नहीं पड़वे दे रह्यो हूं. एन्लाईटन्मेन्ट्के कई प्रकार होवें. जैसे बल्ब्में लाईट् घुसके बल्ब्के कांचके कवर्कु एन्लाईटन् करे. एक एन्लाईटन्मेन्ट्को प्रकार ये हे. दूसरो एन्लाईटन्मेन्ट्को प्रकार ये हे के प्रकाश भीतपे पड़ रह्यो हे और पाछे रिफ्लेक्ट् हो रह्यो हे. एक ऐसो प्रकार हे के सूरज उगते ही जितने भी चमकते तारायें होवें, वो सब चमकने बन्द हो जायें. ये ऐसी दादागिरीको एन्लाईटन्मेन्ट् हे. ''**दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद् युगपदुत्थिता, यदि भाः सदृशी सा स्याद् भासः तस्य महात्मनः.**''

(भग.गीता.११।१२) ऐसे अपनी अहंता–ममताको प्रकाश, जो वाकी अहंता–ममताके महाप्रकाशमें दिखे तो झांकी पड़ जाती होय, वो भी एक प्रकार होवे हे एन्लाईटन्मेन्ट्को. अपनी अहंता–ममताके भीतर घुसके वाकी अहंता–ममता बोलती होय तो वो भी एक प्रकार होयगो. अपनी अहंता–ममतापे वाकी अहंता–ममता रिफ्लेक्ट् होती होय वो भी एन्लाईटन्मेन्ट्को प्रकार होयगो. एन्लाईटन्मेन्ट्को एक ही प्रकार नहीं होयगो बोहोतसे प्रकार होंयगे. अहंता–ममता कायम हे पर वो एन्लाईटन् कैसे होयगी, वाके ये सारे मल्टीपल् मॉडेल् हें.

अहंता–ममताको ये भी मॉडेल् हो सके हे के जैसे वो पेड़न्पे और गाड़ीन्के पीछे रेडियम् लगा दें और लाईट् वापे जो पड़े वो दूसरेकी हे, याकी नहीं हे पर जब दूसरेकी लाईट् यापे पड़े तो ये चमके ऐसे हे जैसे याकी ही लाईट् हो! रेडियमवालो भी एक एन्लाईटन्मेन्ट्को मोड् हो सके. मेरेमें कछु भी लाईट् नहीं हे पर दूसरेकी लाईट्सु चमकूं. चन्द्रमा रेडियम्के सिद्धान्तसु ही तो चमके हे! चन्द्रमाकी चांदनी खुदकी चांदनी नहीं हे. सूरजकी जो धूप पड़ रही हे, वाके कारण वो चांदनी बनके अपने सामने खिले हे. तो एन्लाईटन्मेन्ट्के कितने सारे प्रकार हें!

(अहंता–ममताके समर्पणसु ज्योतिष्मान् होवेको प्रोग्राम्)

वामें असद्वासना और सद्वासना कैसे गेम् प्ले करेगी? कोई गलत असद्वासना तुमने पकड़ ली तो जो अपनो प्रकार हे अहंता–ममताके ज्योतिष्मान् होवेको, मेरी अहंता कौनसी ज्योतिसु द्योतित

होवे, मेरी ममता कौनसी ज्योतिसु द्योतित होवे, वामें अपन्ने कोई दूसरो मॉडेल् एडोप्ट् कर लियो तो **कर्मजड आसुर अन्यउपासक भजनधर्मथी हीन** हो जाओगे. अपनो एक प्रोग्राम् हे और वा प्रोग्राम्के तहत अपन् ये आशा कर रहे हें के मेरी अहंता–ममता या पर्टिक्युलर् मोड्में प्रकाशित होनी चहिये. कौनसे मोड्में? जामें मेरी अहंता–ममता खोटी भी नहीं पड़े, झांकी भी नहीं पड़े. मेरी अहंता–ममता इतनी भी नहीं हो जाय के मेरी आंखके आगे मेरी अहंता–ममता एक परदा बन जाय. अहंता–ममता मेरेपे, मेरी समझपे, मेरी भावनान्पे, परदेकी तरह भी काम कर सके जाके कारण वो दीखे ही नहीं. अच्छो सॉलिड् कर्टेन् लगाओ तो बाहर कितनो भी प्रकाश होवे, वो कर्टेन्के भीतर नहीं आ सके. ऐसे मेरी अहंता–ममता यदि मेरे ही भीतर हृदयके या बुद्धिके रूममें अंधकार पैदा करती होवे. तो ऐसे कर्टेन् (अहंताममताकु) तो खोलनो पड़ेगो, जलानो पड़ेगो और फैंकनो पड़ेगो तब काम चलेगो.

नहीं तो ज्योति होयगी कैसी? बाहर बोहोत प्रकाश हे पर भीतर घुसवे ही नहीं दे प्रकाशकु तो? क्योंके अहंता–ममता कर्टेन्की तरह काम कर रही हे. वामेंसु कौनसी तरहकी प्रोग्रामिंग् अपनी अहंता–ममताकी होनी चहिये. अपनी भक्तिकी रिक्वायरमेन्ट् एन्लाईटन्मेन्ट्की हे. ये नोमें स्कन्धको विषय हे. **पुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीडा**के अन्तर्गत विसाविस् यहां जो गोपालदासजी जा तरीकेको भक्तिको प्रकरण कर रहे हें, वामें अहंता–ममताको कैसो एन्लाईटन्मेन्ट् कर रहे हें, वो अपन् पहली बार शान्त चित्तसु नहीं समझे तो अपन् ईशानुकथाको ज्योतिको प्रकरण हे, वामें ईशानुकथा

भक्तिको द्योतन करवेमें सफल नहीं हो सकेगी. ये एक मूल रिक्वायर्मेन्ट् हे.

फिगर् नहीं बना रह्यो हूं मगर अपने मनमें फिगर् गढ़ो तो मैंने याके उदाहरणन्सु कई फिगर् समझा दिये हें. वामेंसु तुम चुनो के कौनसो फिगर अपने लिये ऐसो हे के जापे अपन् अपनी बुद्धिके माउस्कु क्लिक् करें और फिर अपनी फाईल् खुले. आईकोन मैंने तुमकु बोहोतसे समझा दिये हें. सूर्य और तारा को समझा दियो; भीत और प्रकाश को समझायो; रेडियम्को समझायो.

और भी तुमकु समझनो होय तो एक और अच्छो मॉडेल् तुमकु समझाऊं. आजकल जो नई कार आ रही हें उन कारन्में एक बल्ब् जोड़ें और कांचके इतने सारे टुकड़ायें जड़ें; और उन सब कांचन्में एक बल्ब् प्रकाशित होके छोटो होते भये भी बड़ो प्रकाश करे. खोपड़ी खाली भभका भारी करे. ऐसे अपनी अहंता-ममताके इर्दगिर्द ऐसी सिस्टम् प्रोवाइड् करो के क्षुद्र अहंता-ममता हे पर वाकु तामझाम ऐसो बना रख्यो हे के कोई देखे तो प.भ. हें, बापा हें, बापी हें, पू.पा. हें, पुरुषोत्तम हें और वो छोटोसो बल्ब् हे पर लाईट् ऐसी देगो के अपन्कु लगे के ओहो इतनी ज्यादा लाईट्! वो बल्ब्की लाईट नहीं हे. रिफ्लेक्टर्की लाईट् हे. अभी वो नई कारके पीछे एक बल्ब् जोड़ें और इतने सारे मल्टीपल् रिफ्लेक्टर् लगा दें. वाकु देखें तो अपनी आंखें घबरा जायें के ओहो इतनो ज्यादा प्रकाश? वो प्रकाश बल्ब्को नहीं हे. खाली साधक पास रखे हे के जब आयें तो जयजयकार करो. जब आयें तो हायहत्या मचा दो, शंखें बजाओ, छड़ीदार बुलाओ, ये करो, वो करो. सबकु लगे

के बोहोत लाईट् हे. ऐसे सब रिफ्लेक्टर् साथ रखें और बीचमें घेरे रहें तो बोहोत छोटोसो बल्ब् भी बोहोत चमके हे. ऐसे कई मॉडेल् हें अहंता-ममताके.

यासु ऐसो मत समझियो के अहंता-ममताको एक ही मॉडेल् हे. मल्टीपल मॉडेल् हें. उनमेंसु कौनसे तरहको मॉडेल् अपन्कु यहां ठाकुरजीके साथ भक्तिके रिलेशन्में काम आयगो, वो अपन्कु चुननो हे और वाकु चुनवेके लिये महाप्रभुजीने एक प्रोग्राम् गढ़्यो. वो चुनवेके लिये तुम तुम्हारे तनसु, तुम्हारे वित्तसु अपनी अहंता-ममताकु वामें जोड़ोगे, तो वो जुड़वेके कारण खतम नहीं होयगी पर वासु कनेक्टेड् अहंता-ममता हो जायगी. तो हर बखत तुम्हारी अहंतामें तुमकु वाकी अहंता दीखेगी. वाकी अहंतामें तुमकु तुम्हारी अहंता दीखेगी. तुम्हारी ममतामें तुमकु वाकी ममता दीखेगी. वाकी ममतामें तुमकु अपनी ममता दीखेंगी. वा तरीकेकी वाकी और तुम्हारी अहंता-ममतामें एक तरहको तादात्म्य स्थापित होनो चहिये. न तो भेद और न एकान्तिक अभेद. ये अपनो भक्तिको प्रोग्राम् हे. न तो भेद अहंता-ममताके बीचमें होनो चहिये और न तुम्हारी और वाकी अहंता-ममताके बीचमें एकान्तिक अभेद हो जानो चहिये के तुम्हारी अहंता-ममता वाके आगे बोदी पड़ जाय या खतम ही हो जाय. जैसे ज्यादा वॉल्टेज् आ जाय तो बल्ब् फुट्ट करके फूट जाय. ऐसे वो अपने ब्रह्मत्वको इतनो पावर् सप्लाय् कर दे के अपनी अहंता-ममता फूटके खतम हो जाय. वो सब मुक्तिके प्रकार हें, भक्तिके प्रकार नहीं हें. इतनो ओवर् सप्लाय् कर दियो के अपनो छोटोसो बल्ब् वाकु झेल ही नहीं सके, फूट ही जाय. वो

भक्तिको प्रकार नहीं हे पर मुक्तिको प्रकार हे के जहां अपनी अहंता-ममता भट्ट करके फूट जाय. अपनी अहंता-ममता ऐसी नहीं हे. अपनी अहंता-ममता स्टेब्लाईज़रके साथ वाकु एन्लाईटन्मेन्ट् करवेको प्रोग्राम हे. वाकी अहंता-ममताकु स्टेब्लाईज़् करो. जितनी अहंता-ममताकु तुम झेल सको वाके साथ स्नेह जोड़वेको प्रोग्राम् बनाओ. जो तुम्हारी अहंता-ममता झिल नहीं सके, वाकु वाके साथ जोड़वेकी अन्नेसेसरी असद्वासना या अन्नेसेसरी सद्वासना तुमने जा बखत इन्स्टिगेट् या सप्रेस् करी, वा बखत कहीं न कहीं तुम्हारी भक्ति अन्नॅचरल् हो जायगी. ये अपने यहांकी भक्तिको बोहोत ही गम्भीर रहस्य हे. या थियोरिटिकल् आस्पेक्ट्पे लोगन्को ध्यान नहीं जावे. अपन् उपद्रव करते रहें हें पुष्टिमार्गमें. ये भक्तिको प्रिसपोज़ीशन् हे, थियोरिटिकल् बात हे भक्तिकी, अपनकु समझनो चहिये. वाकु फूटवे नहीं देनी हे.

भगवान्ने अपने मुखारविन्दमें ब्रह्माण्ड दिखायो, यशोदाजीकी ममता या ब्रह्माण्डकु झेल नहीं सकी. यशोदाजीमें भक्तिकी सर्वाइवल्-किट् हती यालिये वाने तुरत ये विचार लियो के ये तो कोई भूतप्रेतकी बाधा हे, याकेलिये मोकु मेरे पुत्रमें ब्रह्माण्ड दिखाई दे रह्यो हे. बुलाओ गर्गाचार्यजीकु, शान्ति कराओ, जासु याके मौंहमें भूतप्रेत दिखाई नहीं दे. ये ओवर् सप्लायकु यशोदाजी झेल गई. हरेक व्यक्तिके बसकी बात तो नहीं हे ना! अर्जुन कहां झेल पायो? कांप गयो एकदम. कहे हे के ''**अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा भयेन च प्रव्यथितं मनो मे.**'' (भग.गीता.११।४५) आज तक तो ऐसो न सुन्यो, न देख्यो. आज देखवेके बाद मेरो ईगो सॅटिस्फाय् तो हो

रह्यो हे के जो आज तक कभी नहीं देख्यो वो देखवेकु मिल रह्यो हे पर देखवेके बाद मोकु ऐसो लगे हे के ये देखवेकी कोई जरूरत ही नहीं हती. याकु देखके मोकु भयसु व्याकुलता हो रही हे. इतनो अधिक ओवर् सप्लाय्! और ज्यादा करोगे तो फूट जायगो. अर्जुन जैसो कह रह्यो हे के "अरे भइ! इतनी ज्यादा विराटता मत दिखा के मेरी अहंता-ममताको फुग्गा फूट जाय. मेरी अहंता-ममताकु एकोमोडेट् कर. जरूरत ये हे के तेरी अहंता-ममताके साथ मेरी अहंता-ममता एकोमोडेट् होवे. मैं और तू दोस्त भी हें और साला बहनोई भी हें. अपन् दोनों गुरु-शिष्य भी हें. हम दोनोंकी अहंता-ममता एक दूसरेके साथ एकोमोडेट् होय इतनो ही ब्रह्मज्ञानको पावर् सप्लाय् कर. ब्रह्मज्ञानको ओवर् सप्लाय् करवेपे तो गड़बड़ हो जायगी." भगवान्के पास जस्टिफिकेशन् हे के एसो समझेगो तो भक्ति कर पायगो. वाके लिये अर्जुन कह रह्यो हे भक्ति कहां करूंगो. पहले तुम भजन करवे लायक स्वस्थ होओ वाके बाद मैं स्वस्थ होऊंगो. "**तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते.**" (भग.गीता.११।४६) "पहले तुम स्वस्थ होओ. मेरे रथमें बैठो, मेरे दोस्त! अचानक ऐसो कैसो हो गयो के तुम विराट बन गये! मैंने ऐसो थोड़े ही कह्यो हतो!" भगवान्ने कही के "तूने ही तो कही हती." अर्जुन बोल्यो के "गल्ती हो गई. अब दोबारा ऐसी गलती नहीं करूंगो. तू स्वस्थ हो जा." ये ओवर् सप्लाय्की बात हे. ऐसो नहीं कहे हे अहंता-ममता ओछी करूंगो. अहंता-ममता पूरी समर्पित करूंगो.

पर यामें प्लग् लगावेके बाद पावर् सप्लाय् आयेगी. (समर्पण करवेके बाद) याके लिये वामें एक चार्जर् लगानो पड़े हे जो पावरकु कन्ट्रोल् करके वामें उतनी ही पावर् भेजे हे के जितनी वाकु चहिये. वैसे ही हमारी अहंता-ममताको मोबाईल् कहीं फूट ही नहीं जाय उतनी ही पावर् वहांसु आनी चहिये जाकु वो झेल सके. वाकी सावधानी तो लेनी पड़ेगी. अपने यहां कौनसी सावधानी लेवेमें आवे हे? समर्पणकी जो बात क्लाइमेक्स्की हती वाकु अपन्ने सबसु पहली करी और वाकु सबसु पहले करके अपनी अहंता-ममता कॅन्सल् न होय, खोटी न पड़ जाय, फूट न जाय, झांकी न पड़ जाय, अहंता-ममता अपनी परदा तरीके न रह जाय. थोड़ी कन्डक्टर् रहे बॅड् कन्डक्टर् न रहे, इन सबन्के लिये अपन्ने ऐसो सोच्यो **"कृष्णसेवा सदा कार्या मानसी सा परा मता चेतस्तत्प्रवणं सेवा तत्सिद्ध्यै तनुवित्तजाः**." (सि.मु.१-२) मेरे अहंकारकु जाकु मैं अपनो व्यक्तित्व समझूं हूं वाकु मैं तेरेमें जोड़ रह्यो हूं. मेरी ममता जाकु मैं अपनो वित्त समझूं हूं वाकु मैं तेरे साथ जोड़ रह्यो हूं. तेरे साथ वाकु मैं शेयर् करूंगो. तू मेरी अहंता-ममताकु शेयर् करतो हो जा. तो अपन् एक दूसरेके पूरक बन सकेंगे. ये अपनो भक्तिको प्रोग्राम् हे, अहंता-ममताकु शेयर् करवेको न के जीवकी अहंता-ममताकु हजम कर जावेको. जैसे बड़े बिज़नेस्वाले छोटे बिज़नेस्वालेन्के बिज़नेसकु एक्वायर् कर लें हें. अपनकु तो पता हे ही के याकी अहंता-ममताको तो कोई पार ही नहीं हे. क्योंके भगवान् कहें हें के "सूरज भी मैं हूं, चांद भी मैं हूं, पहाड़ भी मैं हूं, पत्थर भी मैं हूं, दैत्य भी मैं हूं, दानव भी मैं हूं" अरे भई! इतनी बड़ी अहंता-ममताके भीतर तो मेरी छोटीसी अहंता-ममता खो ही जायगी. मैं भी

अपनी ऐसी अहंता रखूं के मैं तेरो सेवक हूं. तू इतनी ममता रख के आखो ब्रह्माण्ड तेरो नहीं हे, पर ये भक्तको घर मेरो घर हे. मैं भी इतनी ममता रखूंगो के मेरे घरमें जो कछु भी हे वो तेरी सेवाके लिये हाजिर हे. ये प्रोग्राम् हे अपनी भक्तिको, जोके पुष्टिमार्गमें अपन् आजकी तारीखमें समझ नहीं पा रहे हें. क्योंके असद्वासना और सद्वासनान् को ऐसो मॅन्युपुलेशन् हो रह्यो हे के अपनो सेवाधर्म असद्धर्म हो गयो हे. ये मुद्दा मैं बतानो चाहूं हूं. अतएव अपनी प्रभुके साथ सेवारूप रिलेशन्शिप् हे याके पायेमें वहांसु शुरुआत हो रही हे. जो विवेकानन्द कहते हते के ''जहां पाश्चात्य दर्शन खतम होवे हे वहांसु भारतीय दर्शन शुरु होवे हे.'' वैसे ही जहां शास्त्रकी नवधाभक्ति पूरी होवे हे आत्मसमर्पणमें, वहांसु अपनी पुष्टिभक्ति शुरु होवे हे. सबसु पहले आत्मसमर्पण करो. क्योंके आत्मसमर्पण करोगे तो अहंता-ममताकु तुम भली प्रकार अपने आपसु ट्युन्-अप् कर सकोगे. ये प्रोग्राम् हतो.

(भक्तिके प्रोग्राम्में भजनानन्द)

या प्रोग्राम्में अपन् अच्छी तरहसु जानें हें के ब्रह्मसु अपन् अलग भये, क्यों? कभी अपन्ने सोच्यो हे क्यों अलग भये? सूरजसु पृथ्वी अलग भई वाको कारण ऐसो कह्यो जाय के सूरजके सामनेसु कोई एक सूरज जैसो पावरफुल् तारा जा रह्यो हतो. अपन् सूरजमें रहते हते. अचानक अपनेमें एक अट्रेक्शन् आयो. जैसे चन्द्रमा उगे तो समुद्रमें अट्रेक्शन् आवे हे ना; वाकेलिये सूरजके पदार्थन्ने इतने जोरसु उछाल मार्यो के अपन् बाहर आ गये. ब्रह्मके आगे कौनसो स्टार्? ब्रह्मके आगे तो कोई भी स्टार् नहीं हे. ऐसो

कोई भी स्टार नहीं हे के जो ब्रह्मके आगेसु पास भयो होय और वाके कारण वामें उछाल आयो और वाके कारण अपन् बाहर आ गये! पटाखामें अपन् देख सकें हें के पहले दियासलाई लगाओ तो पटाखेमेंसु सब व्युच्चरित होके बाहर आ जायें हें. अब ब्रह्मकी कोठीमें दियासलाई लगाई कौनने, जामेंसु अपनो व्युच्चरण भयो? क्या कह सकें हें अपन् वहां के ब्रह्मने अपने आप दियासलाई लगाई. ब्रह्मकु अपने आनन्दको आनन्द लेनो हतो याके लिये अपनेमेंसु व्युच्चरण कियो. याके लिये अपने भक्तिके प्रोग्राम्में अपन् ब्रह्मानन्दको नहीं मानके भजनानन्दकु मानें हें.

महाप्रभुजी पाछी एक बोहोत सुन्दर बात कहें हें के लक्ष्मी ब्रह्मानन्द हे तो रावण और शिशुपाल कु लक्ष्मी अच्छी लगती होवे हे. अपन्कु लक्ष्मी अच्छी नहीं लगती होवे. मैं अपनी बात नहीं कर रह्यो हूं. मोकु तो मेरी लक्ष्मी अच्छी लगे हे पर ब्रह्मानन्दके बजाय भजनानन्द ही अच्छो लगे हे. अतएव अपनी अहंता–ममताकु धूमधड़ाका करके उड़ा दे, ऐसो ब्रह्मानन्द अपन्कु अच्छो नहीं लगे हे. अर्जुनकु ऐसो ब्रह्मानन्द अच्छो नहीं लग्यो; यशोदाजीकु अच्छो नहीं लग्यो ऐसो ब्रह्मानन्द. अब अपन्कु क्या लगे के जो अपन्कु ब्रह्मानन्दकी बात समझातो होय तो **"आसुरान् तान् अहो बुधाः"** क्योंके या तो वो रावणको बेटा होयगो के शिशुपालको बेटा होयगो. रावणको सीताके ऊपर मन चलतो हतो; शिशुपालको रुक्मणीके ऊपर मन चलतो हतो, अपन् काहेके लिये ब्रह्मानन्दकी इच्छा करें? अपनेकु तो भजनानन्दकी जरूरत हे. ये ब्रह्मको आनन्द ब्रह्मको ही आनन्द हे, कोई दूसरेको नहीं हे. पर ब्रह्मानन्दके प्रति अपनो भाव

ऐसो हो गयो हे. ब्रह्मानन्दको आनन्द लेवेके लिये अपन् अपनी अहंता–ममताकु वाके साथ जोड़वेके लिये तैयार नहीं हें. ब्रह्मानन्दको आनन्द लेवेके लिये अपन् अहंता–ममताकु जोड़वेके लिये जायेंगे तो अपनो बल्ब् फट करके फूट जायगो. ब्रह्मानन्द अपनी अहंता–ममतामें समा नहीं सके हे. अपनी अहंता–ममताकी बाय्–डिफॉल्ट् ऐसी कॅपेसिटी नहीं हे के वो ब्रह्मानन्दकु झेल सके. रत्नाकर बोहोत सुन्दर बात कहे हे के ''बूंदता बिले हे बूंद बिबस बिचारीकी'' ऐसो यदि करोगे तो हम तो एक बूंद हें तिहारी, वा बिन्दुकी बिन्दुता ही खतम हो जायगी. यदि कोई इतनो बड़ो ब्रह्मानन्दको एक्स्पान्शन् करे तो नेट् रिजल्ट्में हमारो क्या होयगो? हमारी बूंद होवेकी जो अहंता हे वो नष्ट हो जायगी. दयारामभाई याकेलिये कहें हें के ''जलने शु जलनो स्वाद, जन जुदो रहीने पामे अल्हाद. सदा सेवो श्रीकृष्णने रे.''

(भक्तिमें अहंता–ममताकी भूमिका और वाको एन्लाईटन्मेन्ट्)

ये मेजर् इश्यु हे के अपनी अहंता–ममताकु फट् करके उड़ा भी नहीं देनो हे. अपनी अहंता–ममताको मर्यादामार्गकी तरह गला भी घोट नहीं देनो हे के हर बखत अपन्कु लगे के ''मैं गुनेहगार, मेरे पाप क्षमा करो, मैं तो आपको गुनेहगार हूं, मैं तो तबसु ही पापी हो गयो के जब मैंने ऐसो काम कर्‌यो.'' अरे भई! जाने गुनाह कियो वाकु दण्ड दे के सबन्कु दण्ड दे. मैं कोई गलत काम करूं तो मोकु दण्ड दे के बकरीकु मारे, मेरे सम्बन्धीन्कु मारे? अपनी ममता झांकी पड़ जाती होवे हे. इतनो ऊंचो विचारनो भगवान्कु, जैसे सूरजके प्रकाशमें तारान्की चमक झांखी पड़ जाती

होवे हे, वैसे अपनी अहंता-ममता ऐसे विचारवेसु खतम तो नहीं होवे हे पर झांखी तो पड़ती ही होवे हे. फिर तो भगवान्के साथ इन्टरएक्ट् करनो कैसे? यामें तो कोई तारा चमकनो भी चाहतो होय तो चमक ही नहीं सकेगो. कोई भी कामके लायक नहीं रह जाय. 'गुड् फॉर् नथिंग्' हो जाय. कोई भी तारा दिखाई नहीं देवे हे सूरजके उगवेके साथ ही. तो क्या तारायें भाग जायें हें? कोई भाग नहीं जावें हें पर सूरजकी धूपके आगे उनको प्रकाश धीमो पड़ जाय हे, सो दीखे ही नहीं हे. वैसे ही अपनी अहंता-ममता बोहोत छोटी पड़ जाय हे वाकी अहंता-ममताको विचार करते ही. पर अपन्कु अपनी अहंता-ममताकु न तो छोटो पाड़नो हे वाकी अहंता-ममताके सामने, न वाकु झांखो पड़ने देनो हे, वाको नाम 'भक्ति' हे.

यासु आत्मसमर्पणको जो मोड् हे, भजनानन्दको हे, **"ब्रह्मानन्दात् समुद्धृत्य भजनानन्दयोजने. लीलाया युज्यते"** (सुबो. १०।२६।१) श्रीमहाप्रभुजी आज्ञा करें हें के ब्रह्मानन्दमेंसु निकालके ये तुम्हारी अहंता-ममताकु भजनानन्दमें इन्वॉल्व् करवेके लिये ये निरोधलीला भगवान्ने प्रकट करी हे. यासु जो भक्त होवे वाकी समर्पित अहंता-ममता निरोधमें कल्मिनेट् हो सके हे. यदि समर्पित अहंता-ममता नहीं होय तो तुम्हारे भीतर भक्ति कोई न कोई सद्वासना या असद्वासना कोई न कोई प्रकारसु अहंता-ममताकु घोटके मार देगी. जैसे आजकी तारीखमें वैष्णवन्की अहंता-ममता घुटके मर गई. क्यों घुटके मर गई? वैष्णवमें विश्वास नहीं हे के हम यदि ठाकुरजीकी सेवा करें तो ठाकुरजी प्रसन्न होंयगे. वो तो बालकन्को एकाधिकार हे. अरे! दो लप्पड़ मारे. ऐसो कैसो

एकाधिकार मान लियो! अहंता–ममता तुम्हारी हे के बालकन्की हे? तुम्हारी अहंता–ममता इतकी छोटी क्यों पड़ गई ठाकुरकी सेवा करवेमें? हमपे ठाकुर कैसे रीझेगो? इतनी छोटी अहंता–ममता? ये पुष्टिमार्गको प्रोग्राम् नहीं हे. ये तो गुण्डा लोगन् द्वारा धूतक फैलावेके लिये खोल्यो भयो भक्तिको प्रोग्राम् हे. ये पुष्टिमार्गीय भक्तिको प्रोग्राम् नहीं हे. पुष्टिमार्गीय भक्तिको प्रोग्राम ये हे के मेरी अहंता–ममताकु मैं तेरे साथ शेयर् कर रह्यो हूं. तेरी अहंता–ममता तू मेरे साथ शेयर् कर. दोनों शेयर्होल्डर् हें. **"दारागारपुत्राप्तवित्तेहपराणि"** सबकु मैं शेयर् कर रह्यो हूं तेरे साथ और तेरी सारी ब्रजलीलाकु मैं शेयर् करूंगो. मेरे सारे गृहसंसारकु तू शेयर् कर. देखो ये मिच्युअल् पार्टनर्शिप्की बात हे के मेरे घर–संसारकु तू शेयर् कर. तेरी जो ब्रजकी लीला हे, **व्रजमंडल स्थिर करी स्थापोजी**. वाकु मैं शेयर् करूंगो. वो व्रजलीला मेरी नहीं हे. क्योंके मैं हतो भी नहीं वा बखत. पर तैंने जो पूंजी जमा करके रखी हे और जब तू मेरे यहां आयगो, वा कॅपिटल्को लाभ मोकु भी मिलेगो. जब मैं अपने घरमें सेवा करूंगो तो मेरे घरमें मेरी अहंताके हॅडिंग्के नीचे या मेरी ममताकी हॅडिंग्के नीचे, जो भी कछु हे, वाकु तू शेयर् कर. मेरो घर, मेरो बच्चा, मेरो पैसा, मेरो धन्धा, मेरी अकल, मेरी दोस्ती, मेरी दुश्मनी वगैरह सबकु तू शेयर् कर.

हमारे यहां याहीलिये गोस्वामिन्में सेवाकी पुस्तकमें लिख्यो भयो हतो के कौनसे घरके साथ अपनो क्या रिलेशन् हे. वो रिलेशन् ऐसो नहीं होतो के कौनके घरके बालकने हमारो क्या इन्सलट् कियो के क्या हमारो आदर कियो. वा घरके साथ अपनो सम्बन्ध कैसो हे

के वा घरको बालक आवे तो वाकु आरतीकी ही सेवा देनी, ज्यादा सेवा नहीं देनी. वा घरको बालक आवे तो आरतीकी सेवा नहीं पर चरणस्पर्शकी सेवा देनी, बोहोत ज्यादा नहीं देनी और ज्यादा घनिष्ठ सम्बन्ध होय तो क्या करनो, ये सब लिख्यो भयो होवे हे हमारे घरकी सेवाकी पुस्तकमें. वाकु शृंगार करवेकी सेवा देनी पर पोढ़ावेकी सेवा नहीं देनी. अब प्रॉब्लेम् ये के पोढ़ावे मुखियाजी, बालक पोढ़ावे ही नहीं. बालक जावें तो कहें के हमारी पुस्तकमें लिख्यो भयो हे के हमारे यहां आपके घरवालेन्कु ठाकुरजीकु पोढ़ावेकी छूट नहीं हे. तो आदमी घबरा जाय. जा बालककु ठाकुरजीकु पोढ़ावेकी इच्छा हो रही हे वाकु तो वो सेवा नहीं देनी और मुखियाजी पोढ़ावें, वो ठीक हे? लेकिन नहीं क्योंके हमारे घरकी चौपड़ीमें लिख्यो भयो हे के ठाकुरजीकु पोढ़ावेकी छूट आपके घरवालेन्कु नहीं हे. ठाकुरजी भी कन्फ्युज्ड् हें के कौनसी तरहकी अहंता–ममताके कौनसे मूड्में इनके साथ जुड़्यो हूं के मुखिया भीतरिया पोढ़ा सकें पर एक बालक जो सचमुचमें भावसु पोढ़ानो चाह रह्यो हे, वो नहीं पोढ़ा सके क्योंके पोढ़ावेकी सेवा एक ऐसी सेवा हे के वो वैष्णवके सामने नहीं होवे, माईन्ड् इट् के जामें वा वैष्णवकु ठाकुरजीकु पटावेकी इच्छा होवे. आरती करवेकी सेवा एक ऐसी सेवा हे के जो वैष्णवकु दी जाय. बड़े भावसु भावभक्तिसु आरती करें; **नीरांजन मिषे रूप हृदय धरवा**. पोढ़ावेकी सेवामें तो कोई नहीं होवे. वो कोई वैष्णव पटावेके लिये तो करेगो नहीं, करेगो बिचारो कोई भी बालक तो वाकु ठाकुरजीपे कछु भक्तिभाव आयो होयगो तो वाके लिये चोपड़ीमें लिख्यो भयो हे के वा घरके साथ अपनो ये सम्बन्ध नहीं हे. मुखियाजी पोढ़ावें पर बालक

भक्तिभाववालो नहीं पोढ़ा सके. अपन् समझ सकें के अपनी दोस्तीकु दुश्मनीकु सबकु प्रभु शेयर् करें. नहीं तो वाकु क्या लेनो देनो हे के कौनसे घरसु तुम्हारो क्या रिलेशन् हे और क्या रिलेशन् नहीं हे? वाकु कब लेनो देनो नहीं हे.

जब श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीड़ा होय तब वाके लिये तो सब समान हें. **''निभृतमरुन्मनोऽक्षदृढयोगयुजो हृदि यन्मुनय उपासते तद् अरयो अपि ययुः स्मरणात् स्त्रिय उरगेन्द्रभोगभुजदण्ड विषक्तधियो वयमपि ते समाः समदृशोऽङ्घ्रिरोजसुधाः''** (भाग.पुरा.१०।८७।२३) जो मनमें ध्यान लगाके समाधिमें अनुभूत कर रहे हें, जो दुश्मनी करके तोकु मारनो चाह रहे हें, जो तेरे बाहु, तेरे सीनापे आकृष्ट होके तेरेसु भेंटनो चाह रही हें और हम तेरी भक्ति करनो चाह रहे हें, तेरे लिये ये सब समान हें. वो कौनसे पुरुषोत्तमके लिये? श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीड़ाकी ये बात हे. अपने घरको ठाकुर ऐसो करे तो अपन् कहेंगे चुप बैठ. हमारो वा घरके साथ रिलेशन् अच्छो नहीं हे. जैसे अपन् अपने बच्चाकु रोकें के नहीं? बच्चा ऐसे कोईके साथ भागतो होय तो अपन् क्या कहेंगे के ''नहीं वहां नहीं जानो. अपनो उनके साथ सम्बन्ध अच्छो नहीं हे.'' वा बच्चाकु समझ ही नहीं पड़े के सम्बन्ध बिगड़्यो क्यों तुम्हारो? बच्चा समझे के कछु बड़ेन्को लफड़ा हे जामें अपन्कु पार्टिसिपेट् नहीं करनो हे. अपन् अपने बच्चाकु कैसे रोंकें वैसे अपने ठाकुरजीकु रोकते आनो चहिये के ''तुम होओगे समान जाके लिये सब सम्बन्ध बराबर हें पर हमारे घरमें तुम्हारे लिये सब समान नहीं हें. क्योंके हमारी अहंता–ममतामें जो हमारे समान हें उनकु तुम समान मानो. जो हमारे लिये समान

नहीं हें, उनकु तुम विषम मानो." वा तरहसु अपन् दोनों अहंता-ममताकु शेयर् करेंगे तब तो ये सम्बन्ध स्वस्थ होयगो. क्योंके तुम अपनी वा पुरुषोत्तमवाली अहंता-ममताकु लाओगे के जो द्वेष कर रह्यो हे वो भी समान हे, जो कामभावसु चाह रह्यो हे वो भी समान हे, जो शान्तभावसु ध्यान कर रह्यो हे वो भी समान हे और माहात्म्यज्ञानपूर्वक सुदृढ़ भक्ति कर रह्यो हे वो भी समान हे.

अब जब सभी समान हें तो वो जो महाकाली हती जाने मोसु कही के ''जब कृष्णके लिये सोलह हजार समान हें तो मैं वहां जाके करूंगी क्या? वामें मेरी काउन्टिंग् कहां होयगी? जब तक मोकु मेरी काउन्टिंग् पता नहीं चले तो ऐसो सट्टा मैं खेलूं क्यों? मेरो प्लेसमेन्ट् कहां?'' अपनी अहंता-ममता या तरीकेको इतनो बड़ो धूमधड़ाका प्रकाशको, एन्लाईटन्मेन्ट्को झेल नहीं सकेगी. यदि कभी सप्लाय् भी कियो तो वॉल्टेज् फ्लक्च्युएशन्के कारण वो अपने आप फट जायगी.

अपन्कु अपनी अहंता-ममता कटवे-कूटवे नहीं देनी हे, घोटनी नहीं हे. अपनी अहंता-ममताकु वाके साथ प्रोग्राम्वाईज़ जोड़नी हे. जोड़नी हे या लिये अपनो ब्रह्मानन्दसु उद्धार करके अपने भजनानन्दमें लगा दे!! ये हकीकत हे. ''जानते हैं हम भी जन्नतकी हकीकत लेकिन दिलको बहलानेको गालिब ये ख्याल अच्छा हे.'' जैसे मेरी अहंता वाके अनुपातमें तू तेरी अहंता रख. मेरी ममता वा अनुपातमें तू तेरी ममता रख. वा अनुपातकी ममताकी कॅपिटल् तू यहां लगा. अन्नेसेसरी ज्यादा कॅपिटल् लगाके सारो बिजनेस् तू पचा

जाय स्वराज पॉलकी तरह, ऐसो लफड़ा नहीं होनो चहिये और मैं कभी ऐसो नहीं करूंगो के मैं अपनी अहंता-ममता ज्यादा लगाके तेरी लीलान्कु कभी व्यर्थमें बेचूं. तेरी भक्तिकु कभी बेचूंगो नहीं, तेरे स्वरूपकु कभी बेचूंगो नहीं. तेरी इन्टिग्रिटीकु कभी बेचूंगो नहीं, तू जा डेलीकेसीसु मेरे घरमें आयो हे, वो डेलीकेसी मैं तेरे साथ हमेशा निभाऊंगो. मैं अपनी अहंता-ममताकु अन्नेसेसरीली इतनी पर्स्यु नहीं करूंगो के तोकु ही बेचवे लग जाऊं. माने एक दूसरेके बिजनेस्कु पचा जावेकी, ज्यादा इन्वेस्टमेन्ट् करके अहंता-ममताकी, वो अपने यहां भक्तिको प्रोसीज़र् नहीं हतो. अपने यहां तो बराबरीको प्रोसीज़र् हतो. तू भी अपनी थोड़ी अहंता-ममता लगा, थोड़ी मैं अपनी अहंता-ममता लगाऊं. चलो स्टार्ट करो बिजनेस् 'कृष्ण एण्ड कम्पनी'को.

(भक्तिको मूड)

या लिये एन्लाईटन्मेन्ट्के स्वरूपमें भक्तिके लिये महाप्रभुजी ये कह रहे हें के प्रपंचको लय होवे हे. कौनसो लय? लयके भी कई मोड् हें. डिज़ोल्व् हो जानो, मिंगल् हो जानो. जैसे रसगुल्ला चाशनीमें डिज़ोल्व् नहीं होवे पर चाशनीमें मिंगल् हो जाय. खुदके अन्दर चाश्नी भर ले, खुदको टेस्ट् थोड़ोसो चाशनीमें डाल दे. ऐसे रसगुल्ला गुलाबजामुन की तरह अपनी अहंता-ममता भगवान्की कृपाकी चाशनीमें होनी चहिये. थोड़ो रस वहांसु एब्सोर्ब करे, थोड़ो अपनो टेस्ट वो वामें डाले. वो डिज़ोल्व् नहीं हो जाय. दूधकु पानीमें मिलाओ तो दूधमें पानी मिल जाय और पता ही नहीं चले के दूध हे के पानी हे? वा तरीकेको नहीं. रसगुल्लाके तरीकेको लय भक्ति हे. ये भक्तिके प्रोग्राम्के तहत महाप्रभुजीने नोमें स्कन्धमें भार

देके समझाई भयी बात हे. अपनी भक्तिको ये मूड् होनो चहिये. ये यदि भक्तिको मूड् होयगो, तो निरोधमें कल्मिनेट् हो सके हे.

प्रश्नोत्तर

प्रश्न : सेवा करते भये महाप्रभुजीकी इन्साईट् ऐसी हती के जिनकी सेवा कर रहे हो वो ब्रह्म, जासु कर रहे हो वो भी ब्रह्म, ये बात तो सही हे. आपने आज्ञा करी हती के अपन् सेवा करते बखत ऐसी दृष्टि रखें तो वो 'निर्गुणभक्ति' कहलायेगी. अब यदि ये सोच दृढ़ हो गई तो लीलानुसंधान कैसे रहेगो?

उत्तर : यद्यपि अपन् ब्रह्मलीला या परमात्मलीला ऐसो शब्द बोहोत कम वापरें हें, कभी कभाक कोई भूलेचूके वापरे हे. जब भी शब्द वापरें वो प्रभुकी लीला, भगवान्की लीला, कृष्णकी लीला. पर यदि सच्चे अर्थमें भगवान्की लीला लेनो होय, तो शायद पॉसिबल् हे के भगवान्की लीला हो भी सके हे और नहीं भी हो सके हे, लीला यदि होवे हे तो ब्रह्मकी ही होवे हे. वाको कारण क्या? वाको कारण ये हे के 'भगवान्'को मतलब जामें ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान वैराग्य ये सब स्वाभाविक हें, अपरिछिन्न हें, असीमित स्वाभाविक हें, वाकु अपन् 'भगवान्' कहें हें. अब वाकु यदि अपन् भगवान् मानते होय तो लीलाविहारी होनो वाको जरूरी नहीं हे. वो अपनी भगवत्ताके कारण कहीं न कहीं अपने ऐश्वर्यकु प्रकट करेगो, आनन्दकु प्रकट करवेके बजाय. कहीं न कहीं वीर्य प्रकट करेगो, कहीं न कहीं अपनो यश प्रकट करवेको कोई काम करेगो, कभी कोई श्री प्रकट करवेको काम करेगो, कभी कोई ज्ञान प्रकट करेगो. तो जरूरी थोड़े ही हे के वा स्थितिमें भगवान् जो काम कर रह्यो

हे वो लीला ही होय! क्योंके लीलाकी परिभाषामें अपन्ने एक बात देखी के आनन्दको उच्छलन लीला हे. भगवान्के ये ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान वैराग्य अपरिमित असीमित और स्वाभाविक गुण हें, उनमेंसु वो कोई एक गुणके कारण काम कर रह्यो हे तो वाको लीला होनो जरूरी नहीं हे. क्योंके जरूरी नहीं हे के इनमें आनन्द ही प्रकट होतो होय. महाप्रभुजीने या लिये एक सिस्टम् समझाई हे के जहां आनन्द अपरिमित हे, वहां ऐश्वर्य ज्ञान वीर्य यश श्री वैराग्य ये सब अपरिमित हें और स्वाभाविक भी हें. जहां स्वाभाविक ज्ञान नहीं हे, वहां भी ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान वैराग्य नहीं होंयगे ऐसी बात नहीं हे और थोड़ो थोड़ो ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान वैराग्य अपन् सबमें हे. कोई विषयको अपन्कु ज्ञान हे. बोहोत सारे विषयन्के अज्ञान होवेके बजाय कोई न कोई व्यक्ति कोई न कोई विषयको एक्स्पर्ट होवे हे. हर व्यक्तिमें कोई न कोई वीर्य भी होवे हे. 'वीर्य' माने सामर्थ्य. हर व्यक्तिको कोई यश भी होवे हे. ये पब्लिसिटीके एजेन्टन्कु सोंप दो काम तो वो तुम्हारो पूरो यश करवा दें. आजकल तो एजेन्सी खुल गई हें. तुम्हारो यश होय के नहीं होय पर पेमेन्ट् करो तो सब जगह तुम्हारो यश फैला दें. पब्लिसिटीके बोर्ड लगा दें तो तुम्हारो यश हो जाय. श्रीकु बढ़ावेके लिये तो आजकल इतनी फेशियल् ट्रीटमेन्ट् अवेलेबल् होवे हे के कोईमें श्री नहीं हे तो फिरभी कालीकी गोरी हो जाय. ऊंची नीची नाक होय तो वाकु भी ठीक कर दें प्लास्टिक् सर्जरी करके. तो श्री भी सबमें आ सके. ऐसी तो कोई बात नहीं हे के नहीं आ सके. ज्ञान भी एक अपने पास अच्छोसो लॅप्-टॉप् रखें जामें पूरी दुनियाकी इन्फॉर्मेशन् रखी भई होय तो जो भी ज्ञान चहिये होय वो

टिप् ऑफ् दि फिन्गर्पे मिल जाय. जो बड़े बड़े ऋषिमुनीन्कु नहीं मिलतो होय वो अपन्कु मिल जाय. कौनने कही के नहीं मिल सके ज्ञान? और वैराग्य तो अपन् कम्प्युटर्के सामने बैठें तो आ ही जाय. क्योंके जो भी कम्प्युटर्के सामने बैठें उनकु दुनियासु बात करवेकी फुरसत ही नहीं होवे हे. लोग यहां तक कहवें हें के पत्नीसु भी बात करनी होय तो फेस् टु फेस् नहीं करें पर फेस्बुक्के थ्रु बात करें. कम्प्युटर्में तो वैराग्य आ ही जाय. तो अपन् भी भगवान् हें. भगवान् अपन् हो सकें पर ये सब भगवत्ता जो अपनेमें आ रही हे, वो आनन्दके उच्छलनके कारण नहीं आ रही हे. कोई न कोई प्रेशर् अपने ऊपर ऐसो ग्लोबलाईज़ेशन्को आ गयो हे के वा प्रेशर्में अपन् ये सारे गुण एक्वायर् नहीं करेंगे तो ''सब ले गये हम ही रह गये'' हो जायगो. ये सारे गुणन्कु एक्वायर् करनो ही पड़े. अपन्कु आर्टिफिशियली भगवान् बननो पड़े हे. वो आर्टिफिशियली भगवान् बन जावेके कारण अपन्के कामके रूपमें सिद्ध नहीं होंयगे.

अपन् लीला नहीं कर सकें, ऐसी बात नहीं हे. जो काम अपन् अपने आनन्दके उच्छलनसु कर रहे हें वो काम अपन् भी लीलाके रूपमें कर रहे हें. पर जो काम या तरीकेके कॅल्कुलेशन्सु कर रहे हें, उन कामन्में अपनो लीलाभाव प्रकट होवेके बजाय कोई तो ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान वैराग्य को भाव प्रकट हो रह्यो हे. यासु समझमें आवे के 'भगवल्लीला' शब्द यद्यपि वापरो जाय हे पर सचमुचमें यदि लीला कर पावेके सबसु ज्यादा चान्स् होय तो ब्रह्मके हें. वाको कारण क्या? क्योंके ब्रह्मके सामने कोई हे नहीं. ब्रह्मकु कोईसु रति हे नहीं. ब्रह्मकु जो कछु करनो हे वो आत्मरतिके

एक्स्प्रेशन्में करनो हे. तो यदि कोई लीला करे हे तो सचमुचमें ब्रह्म ही कर सके हे. पर वाके बाद तकलीफ ये हे के **निर्गुणनो निर्देश अटपटो रसना शी पेरे कहिये. रूपवर्णवपु दृष्ट पदारथ त्यां एको नव लहिये.** वा ब्रह्मकी स्तुति भी गानी तो कहां बैठके गानी? कैसे गानी? करके ब्रह्मके साथ इन्टरएक्ट् करवेमें अपनी कछु सीमायें हें. वो ब्रह्मको डॅवलपमेन्ट् हे परमात्मा और भगवान् तरीके और भगवान्के बाद वाकु कृष्ण तरीके और ज्यादा पर्सनल् कोई डीटी तरीके, वा डॅवलपमेन्ट्के साथ अपन् इन्टरएक्ट् कर सकें. क्योंके अपन् भी वा ब्रह्मके वैसे डेवलपमेन्ट् हें. वो जो इम्पर्सनल् ब्रह्म हे वामें अपन् एक पर्सनल् रूपके साथ डॅवलप् भये. अपन् भी वाके पर्सन् डेवलप् भये हें. अपन्कु वा तरीकेको पर्सन् मिले तो अपन् वाके साथ इन्टरएक्ट् कर सकें. वैसो पर्सन् नहीं मिले तो वो अपनी लिमिट् हे, अपन्कु तकलीफ हो जाय.

अपन् सब जानें हें के अपनो देश भारत हे. अब भारतमातासु बात कहां करोगे? या भारतमाताके कौनसी जगह कान हें, वाके हाथ कहां हें? भारतमातासु कहो के आशीर्वाद दे दे तो कौनसे हाथसु आशीर्वाद देगी? अपन्कु पता ही नहीं हे के कहां वाके कान हें, कहां वाके हाथ हें, कहां वाकी आंख हे, कहां जाके अपन् खड़े होंय तो वाकी निगाहमें आयेंगे? अब भारतमाता तो मान रहे हें ना! अपन् क्या कहें के चलो सोनियामाता मायावतीमाता ममतामाता या जयललितामाता कु पकड़ लो. ''मां मुझे अपनी गोदीमें बिठालो के आज मेरा कोई नहीं.'' भारतमाता खोजवे कहां जानी? प्रॉब्लेम् ये हे. हर बखत पर्सन् पर्सन्के साथ इन्टरएक्ट् कर

सके. इम्पर्सन्के साथ इन्टरएक्ट् करोगे तो करोगे कैसे? वा इम्पर्सनके साथ इन्टरएक्ट् करवेके लिये वाके साथ अपने भीतर वा तरीकेकी कल्चर् डेवलप् होनी चहिये के अपन् जो कछु भी काम या एक्टिविटी कर रहे हें. सोच रहे हें, समझ रहे हें, बोल रहे हें, वो कछु इम्पर्सनल् लेवल्पे करें. बोहोत कल्टीवेशन्की जरूरत हे. ऐसे ही नहीं हो जाय. बोहोत मुश्किलसु वो सिद्धि प्राप्त होवे हे. अपन् यों कहें के चुटकी बजाई और सिद्ध हो जाय वैसो नहीं हे. समझ जायें अपन् या बातकु पर समझवेके बाद भी; देखो २६ जनवरी आवे तो एक डण्डापे झण्डा गाढ़के भारतमाताकु सलाम करनो पड़े. अब भारतमाताकु कपड़ापे सलाम करनो के भूमिपे सलाम करनो? तो एक फिगर् या पर्सन् अपनकु खड़ो करनो पड़े सलाम करवेके लिये; भारतमाताकु यों क्यों नहीं सलाम करें? भारतमाता नीचे हे के झण्डामें हे? भई भारतमाताकु भी सलाम करनो होयगो तो एक झण्डा फहरानो पड़ेगो और वाकु सलाम करनो पड़ेगो ''जन गन मन अधिनायक जय हे'' करके. नीचे कहां करनो पता ही नहीं पड़े. बोहोत कम व्यक्तिन्कु समझमें आवे.

खान अब्दुल गफ्फार खानने जब हिन्दुस्तानमें लॅण्ड् कियो हतो तो मोकु उनकी वो बात बोहोत ही थ्रिलिंग् लगे हे. उनने गांधीजीके साथ अंग्रेजन्के विरुद्ध सत्याग्रह कियो हतो. पूरो सत्याग्रह करवेके बाद काँग्रेसीन्ने उनकु दगा दे दियो. उनने पूरे भारतकी स्वतन्त्रताके लिये सत्याग्रह कियो हतो और उनकी पख्तूनन्की पूरी टोली वामें शामिल हती. उनसु पूछे बिना पाकिस्तान बनाके उन पख्तूनन्के पख्तूनिस्तानकु पाकिस्तानको पार्ट मान लियो. आज तक उनके आपसमें बने नहीं हे. जब उनने पख्तूनिस्तानकी मांग करी तो

पाकिस्तान सरकारने उनकु जेलमें भर दियो. बरसन वो बिचारो गरीब जेलमें रह्यो. जब पहली बार छूट्यो और भारत आयो, तो दिल्ली एअर्पोर्टपे उतरते ही वाने सबसु पहले जमीनकु चूम्यो. "या जमीनकु स्वतन्त्र करवेके लिये मैंने इतनो संघर्ष कियो हतो" और जितने प्रेस् रिपोर्टर् हते उनकु वाने कही "तुम हिन्दुस्तानी लोगन्ने हमकु दगा दियो हे. हमने या जमीनके लिये वो स्वतन्त्रताको संग्राम लड़्यो हतो. जब तुमकु स्वतन्त्रता मिली तब तुमने हमारो ख्याल ही नहीं रख्यो." ये खान अब्दुल गफ्फारके शब्द हते. "तुमने हमकु दगा दियो. तुम दगाबाज हो. जमीन दगाबाज नहीं हे" करके प्लेन्सु उतरते ही सबसु पहले वाने जमीनकु चूम्यो. बॅक्टेरिया मौंहमें घुस जायेंगे, जर्म्स् लग जायेंगे, ये कोई विचार नहीं कियो. स्नेह एक ऐसी चीज हे वाको एक प्रमाण हे के कोई विचार नहीं. "या जमीनके लिये मैंने संघर्ष कियो हे. या जमीनके लिये मैं इतने दिन जेलमें रह्यो और तुम लोगन्कु स्वतन्त्रता मिली तो तुम हमकु दगा देके भग गये." सबन्के फेस्पे कही. कोई तो खान अब्दुल गफ्फार जैसो चहिये जमीनकु प्यार करवेवालो. बाकी कुर्सीकु प्यार करवेवाले तो अपन् सब हें. ऐसे गट्स् कौनमें हें? कोईमें नहीं हें. वा जमीनपे रखी भई कुर्सीकु, ऑफिस्कु सब लोग प्यार करें. कोई विरले ही खान अब्दुल गफ्फार खान जैसे हो सकें. इतनो भाव आवे कौनमें? बोहोत मुश्किल हे ये भाव होनो. जो देशभक्तिको दम्भ करते होंयगे या सचमुचमें अहंकार रखते होंयगे या सचमुचमें देशभक्तिसु सफर् करते होंयगे, उनकु भी इतनो भाव आनो, बोहोत मुश्किल हे. वाको मूल कारण ये हे के भूमि इम्पर्सनल् हे और अपन् हर बखत पर्सन् या फिगर् होवेके कारण, फिगर् ही खोजते होवें. वाकी सबसु बड़ी

खासियत अपने ज्ञानमें; कम्प्युटर्को या मोबाईल्को ज्ञान अपन्कु कभी भी कोई आईकोन्के बिना नहीं होवे. हर बखत अपन्कु आईकोन चहिये. क्यों? अपनी आंखें फिगर् ही खोजती होवें. या लिये घण्टा भर मैं यहां कोई विषय रोऊं वो आपकु समझमें नहीं आयगो. एक फिगर् बना दऊं तो तुरत सबकु क्या फील् होयगो के हां हां बराबर. अब समझमें आ गई बात. क्योंके अपन् खुद फिगर् हें. अपनी आंखें फिगर् खोज रही हें. ये होनो बोहोत मुश्किल हे के बिना कोई फिगरेटिव् मोड्के अपन् ज्ञानकु समझ सकें या कोई ऑब्जेक्ट्कु ऑब्जेक्ट्के रूपमें बिना कोई फिगर्के समझ सकें. वो तो कोई विरलो ही समझ सके. हर कोई नहीं समझ सके.

या लिये अपन् ब्रह्मकी बात भी करते होंय तो लीला तो कोईके समझमें नहीं आयगी के लीला हे के नहीं. ब्रह्मको मतलब हे के जामें कहीं भी वॉटर्टाईट् कम्पार्टमेन्ट् नहीं हे. अब जामें कम्पार्टमेन्ट् नहीं हे तो वाको फिगर् नहीं हे. जाको फिगर् नहीं हे वाके साथ अपन् इन्टरएक्ट् नहीं कर पावें. इन्टरएक्ट् नहीं कर पावें करके अपन्कु वाकी लीला समझमें नहीं आवे. वो करतो भी होय लीला, तो महाप्रभुजी जैसेकु तो समझमें आवे के ये सब लीला ब्रह्मकी हे. बाकी औसतन् आदमीकु ब्रह्मलीला समझमें नहीं आवे. यदि लीला समझानी हे तो कोई भगवान् या अवतार वाके सामने दीखनो चहिये के देख ये भगवान्, ये अवतार याकी लीला, फिर सबकु समझमें आ जाय. ब्रह्मकी लीला कहो तो खोपड़ी खाली हो जाय. क्या बात कर रहे हो? ब्रह्मके साथ लीलाको क्या सम्बन्ध? क्योंके आदमीके ब्रेन्की जो बनावट (कॉन्स्टिट्युशन्) हे, वो फिगरके साथ इन्टरएक्ट् करवेके लिये बनी हे. करके जहां भी कोई नॉन्–

फिगरेटिव् बात आ गई तो ब्रेन् थोड़ो सुस्त हो जाय. लगे के क्या लफड़ा हे? ब्रेन् ऐसे समझ जाय के ये भाषा मेरी नहीं हे. जब भी कोई फिगर अपन्ने प्रपोज़् कियो तो तुरत ब्रेन् एलर्ट हो जाय, तुरत ब्रेन् इन्टरएक्ट् करतो हो जाय. वो आप कम्प्युटर्पे मोबाईल्पे देख लो. अक्षर लिख्यो होय और आईकोन् दियो होय तो अपन् क्या चुनेंगे? पहले अपन् आईकोन् चुनेंगे. अक्षर बादमें चुनेंगे. अक्सर ऐसे होवे. ये रोड्की साईन्में भी पूरी इन्स्ट्रक्शन् लिखी भई होवे; दायें मुड़ो, बायें मुड़ो. अपनी आंख वाकु देखनो नहीं चाहे. तीरको निशान बना दियो होय, स्कूल्को आईकोन् बना दियो होय तो ड्राईवर्कु तुरत समझमें आवे के यहां गाड़ी धीमे चलानी, स्कूल् हे. क्यों? मूलकारण के अपन् खुद फिगर् हें, जैसे कौआकु कौआकी भाषा समझमें आवे, कोयल बिचारी कितनो भी कुहुकुहु करे वो कौआकु समझमें नहीं आवे. ऐसे अपन् फिगर् हें अपन्कु फिगर ही समझमें आवे. कछु भी नॉन-फिगरेटिव् मोड्में आयो नहीं तो फटसु अपनी खोपड़ी काम करनो कम कर दे.

आश्रयको पद गाके यहां समाप्त करेंगे.

QQQ

वल्लभाख्यान आठवों

(ज्योतिप्रकरण – निरोधलीला)

(राग धन्याश्री)

(व्रजजीवनप्राणरूप धर्म प्रभुको और प्रभुचरणको उभय साधारण होवेसु दोनोंके व्रजवास साधननिरोधरूप)

ललित मनोहर श्रीवल्लभ–सुवन सुजाण।
नखशिख सुन्दर व्रजजन–जीवन–प्राण ।।१।।

(स्वस्वरूपसु श्रीविट्ठलनाथजीके द्वारा प्रमाणादिको निरोध)

वदनकांति जाणे उदया कोटिक भाण।
द्विजकुलमंडन प्रगट्या पुरुष प्रमाण ।।२।।(प्रमाणनिरोध)
नाम निरूपम उच्चरे सकलकल्याण।
तेना साखी चारे वेद–पुराण ।।३।।(प्रमेयनिरोध)
असुर हणेवा ब्रह्मवाद करपाण।
भक्ति करे सहु वाजंते रे निसाण।।४।।(साधननिरोध)
वैष्णवजनने आपे पदनिर्वाण।(फलनिरोध)

(व्रजवाससु व्रजभावभावुक भक्तन्को साधननिरोधको प्रकार)

मारग मुक्तो कोई न मागे दाण ।।५।।
चरणचाखडी वंदे राणोराण।
सरस थया जे हुता प्रेत पाषाण ।।६।।
हतित–पतितनुं जुवो तमे प्रकट एंधाण।
शेष सहस्रमुख उच्चरे जेना वखाण ।।७।।
चौद लोकमां वरते जेनी आण।
त्रास तिमिरनुं जाणे सकल विहाण ।।८।।

अधर्म सकलनुं पेरे पेरे कीधुं वित्राण।
धर्म सकलनुं प्रभुजीये कीधुं त्राण।।९।।
सन्मुख कीधां जे हुता भ्रष्ट अजाण।
निर्भय कीधां शिरपर धरी निजपाण।।१०।।
निगमतत्त्वरस यश भर्या अमृतसंधान।
रूपसुन्दरता शुं कहुं! नहीं को'ए समान ।।११।।
कृपा करी हरी राखी बहु विध का'न।
सेवक जनने राखी ल्यो एह ल्हाण।।१२।।

(नादसृष्टिके पुष्टिजीवन्कु श्रीविट्ठलनाथजीके स्वरूपसु भगवान् श्रीकृष्णमें फलात्मकनिरोधकी प्राप्ति)

एवा ते गुणनिधि नाथ गातां ब्रह्महत्यादिक अघ टळे।
लीला ते लहरी सिंधु झीले रासरसिकने जई मळे।।१३।।
नि:साधन-जन-हित करेवा श्रीनाथ विट्ठल आवीयां।
ब्रजमां ते हींडे मलपतां ते ब्रजसखी मन भावीयां।।१४।।
कमलनेणे ने अमृतवेणे वाक्यमाधुरी रेडतां।
वेदध्वनि मिषे हस्तचलणे शोभे सौने तेडतां।।१५।।
रंगे ते रमतां रसभर्यां प्रभु घोषमां लीला करे।
अधिक-अधिक प्रतापपूरण यश दशोदिश विस्तरे।।१६।।

(श्रीविट्ठलनाथजीके द्वारा प्रकाशित निजशक्तिरूपसप्तात्मजन्की फलनिरोधलीला)

भांति-भांति लीला करे प्रभु साते स्वरूप सोहामणां।
एक-एकथी अधिक शोभा ब्रजसखी ले भामणां।।१७।।
पेरे पेरे परिवार सोहे, देव मोहे निरखतां।

उत्साह आनन्द अधिक वाध्यो कुसुम वरखे हरखतां ।।१८।।

प्रति सदन शोभा अतिघणी भणी वेद वदने न जाय ।
मकरंद माता भ्रमर गुंजे पक्षिनाद सुहाय ।।१९।।

(श्रीविट्ठलनाथजीकी अन्त:पुरलीलामें भी फलरूपा श्रीनवनीतप्रियजीमें निरुद्धता)

अंत:पुरलीला करे प्रभु सकलजन संतोषतां ।
जाणे मत्त मातंग छूट्या नूपुरने निरघोषतां ।।२०।।

हार कंकण कर्णभूषण नाद नाना हींडतां ।
गान गाये ने सूर सुहाये 'श्रीनवनीतप्रियाजी'ने पोढतां।।२१।।

संध्या समें सिंगार नौतन फूल गूंथे सहु मळी ।
सदनशोभा निरखतां ते लक्ष्मी मन पाम्या रळी ।।२२।।

वास वांछे ब्रज बसेवा एणी पेरे सुख पामवां ।
श्रीपुरुषोत्तम उत्तम वरने समे जोई शिर नामवां ।।२३।।

(श्रीविट्ठलनाथजीके आवासमें स्थित प्रिय और आप्तजनन्को भी भगवत्सेवा–कथामें फलनिरोधको निरूपण)

लीलाने अनुसार कलरव कूजतां द्विज शोभतां ।
स्वस्वभाव–त्यागी ध्यानरागी कोईक भावे लोभतां ।।२४।।

सहचरीरत्न सुकंठ नादे गान सुयश प्रकार ।
रसिक जन सहु संग मळीने करे ते उच्चार ।।२५।।

एणी पेरे लीला करे श्रीवल्लभराजकुमार ।
भक्तजननां कोड पूरो आपो चरणविहार ।।२६।।

(निरोधको मूड और वाकी प्रक्रिया)

निरोधके पाछे कई तरहके मॉडेल् हो सकें हें. ऐसो निरोध के तुमकु खतम ही कर दियो जाय. ऐसो निरोध के तुमकु तुम ही नहीं रहवे दियो जाय. दयारामभाई पाछे रोवें के मोकु चतुर्भुज मत बना. मोकु चतुर्भुज होनो अच्छो नहीं लग रह्यो हे. ''व्रज व्हालु रे वैकुंठ नहीं जाऊं. मने गमे ना चतुर्भुज थाऊ.'' दयारामभाई याही लिये रो रहे हें. अपन् अपने ठाकुरजीकु कह सकें के अपन्कु ऐसो सारूप्य प्रदान मत कर के तू भी चतुर्भुज और मैं भी चतुर्भुज! अरे भई मेरे दो हाथ ही रहवे दे ना! मेरे जो दो हाथ हें उनसु तू सेवा लेवे तैयार हे के नहीं? तू तेरे चार नहीं हजार हाथ रख. मेरे दो हाथमें तेरे दो हाथ हें के नहीं, बस ये बता दे तो सारी बातन्को खुलासा हो जाय. ''मने गमे ना चतुर्भुज थाऊ.'' भक्तिके सेन्टिमेन्ट्कु अपन् यहां कहनो चाह रहे हें के वाके लिये होयगें वाके हजार हाथ, होंयगे वाके चार हाथ, पर पहले तू अपने हाथकु मेरे हाथमें दे दे. मेरे हाथसु मैं तेरे हाथकु पकड़ लऊं, तब अपन् दोनों एक दूसरेमें निरुद्ध हो जायेंगे. तेरो हाथ मैंने पकड़ लियो, मेरो हाथ तैंने पकड़ लियो, दोनों एक दूसरेके हाथ पकड़ रहे हें, दोनोंने एक दूसरेको हाथ पकड़ लियो, तो दोनों एक दूसरेसु निरुद्ध हो जायेंगे. वो डेवलप्मेन्ट् कब हो सकेगो? जब तेरे भी हाथ होंयगे और मेरे भी हाथ होंयगे. मेरे शायद शारीरिक हाथ होंयगे, जड़ हाथ होंयगे. तेरे आनन्दात्मक हाथ होंयगे, **''आनन्दमात्रकरपादमुखोदरादि''** बस ये ही तो वो बात हे के मैं आनन्दकु खोज रह्यो हूं और तू मेरी जड़ताकु खोजवे लग जा तो बस बात बन गई और अपनी जोड़ी जम गई. क्योंके तैंने ब्रह्मानन्द मानवेके लिये ही तो जड़ जगत्

प्रकट कियो हे. मैं तोकु मना नहीं करूं के तू ब्रह्मानन्द मत मान, मेरे हाथ पकड़वेमें तो तू अपनो ब्रह्मानन्द मान और तेरो हाथ पकड़वेमें मोकु भजनानन्द मानवे दे. तू ब्रह्मानन्द माने तो वामें मोकु क्या तकलीफ हे?

रासलीलाको स्वरूप समझो. भगवान्को एक हाथ एक गोपीके कन्धापे हे. दूसरो हाथ दूसरी गोपीके कन्धापे हे. वापे कौन गोपीकु ऑब्जेक्शन् हो सके? पर दोनों हाथ ही कोईके कन्धापे रख दे और मैं रासमें पार्ट भी लऊं और मेरे कन्धापे हाथ भी नहीं! फिर तो वा महाकालीकी बात सच्ची हे के फिर मैं वाकु काहेकु चुनूं? फिर मेरो प्लेसमेन्ट् क्या हे? जब साथमें नाचवेके लिये आये हें तो एक हाथ तो मेरे कन्धापे होनो चहिये के नहीं? और मैं अपनो हाथ रखूं वाके लिये तेरो कन्धा भी तो होनो चहिये. कन्धापे हाथ रखो के हाथमें हाथ डालो जो भी रासकी बॉडी लेन्वेज् होय, वा बॉडी लेन्वेज्में अपन् दोनोंके हाथ एक दूसरेके साथ होने चहियें. ऐसो नहीं के नाच भी रहें हें और साथमें हाथ हे ही नहीं. अब दूसरेके साथ वाके हजार हाथ हें और वो कौनसे हाथसु कौन दूसरेके साथ नाच रह्यो हे तो वो नन् ऑफ् अवर् बिज़नेस्. अपनो ये बिज़नेस् हे के मेरे साथ तू निरुद्ध हे के नहीं? जो मेरे साथ निरुद्ध हे वाको नाम साधननिरोध हे और जब मैंने तेरे हाथमें हाथ डाल्यो तो वो फलनिरोध हो जायगो क्योंके मोकु भजनानन्द मिल रह्यो हे और तोकु ब्रह्मानन्द मिल रह्यो हे. महाप्रभुजीने भक्तिको कितनो खूबसूरत पॅटर्न सोच्यो हे. जब मैं तेरे हाथमें हाथ डालूंगो, तो मोकु क्या मिलेगो? भजनानन्द मिलेगो. अब तेरी कोई लाचारी होयगी के

तू ब्रह्मानन्दके अलावा कोई दूसरो आनन्द नहीं मान सके हे क्योंके तोकु ये प्रॉब्लेम् तो हे ही नहीं के तू जड़में आनन्द नहीं ले सके. तू जड़में भी ब्रह्मानन्द ही ले. ये तेरो बिज़नेस् हे. हमारे हाथमें तेरो हाथ होनो चहिये के जासु हम भजनानन्द मान सकें. ये निरोधकी प्रक्रिया हे. याहीलिये प्रभुचरण आज्ञा करें हें, **''निःसाधन फलात्मायं प्रादुर्भूतोस्ति गोकुले तएवास्ति नैश्चिन्त्यम् ऐहिके पारलौकिके.''** (सुबो.टिप्प.१०।५।२९) हम तेरे हजार हाथसु हाथ मिलावे जायेंगे तो कन्फ्युज्ड् हो जायेंगे के पता नहीं कौनसे हाथसु हाथ मिलानो? कौनसे हाथमें गदा निकले. कौनसे हाथमें चक्र निकले. अपन् हाथ मिलावे जायें और अपनो हाथ ही कट जाय. रिस्क् हे. पर तोकु तो पता हे के हमारे हाथसु हाथ मिलावेमें तेरो कौनसो हाथ खाली हे! वो हाथ हमारेसु मिला. बस बात बन गई. भजनानन्द हमकु मिल जायगो और तोकु ब्रह्मानन्द मिल जायगो. ये निरोधकी प्रक्रिया हे. निरोधकी प्रक्रियामें याही लिये कहें हे **''निरोधो अस्य अनुशयनम् आत्मनः सह शक्तिभिः''**(भाग.पुरा.२।१०।६) **''निरोधो अस्य अनुशयनं प्रपञ्चे क्रीडनं हरेः दुर्विभाव्याभिः शक्तिभिः.''** (सुबो.१०।१।१।९) प्रपञ्चमें आके वो जा बखत क्रीड़ा करे हे; प्रपञ्चमें क्रीडा करवेको वाको मॉडेल् क्या हे? जैसे तुम हो, वा तरीकेकी क्रीड़ा मैं तुम्हारे साथ कर रह्यो हूं. वा तरीकेकी क्रीडा कर रह्यो हे और वाकु रेसिप्रोकेट् कर रह्यो हे, तो अपन् भी वामें निरुद्ध हो सकेंगे और **''स्वभावस्य अन्यथाभावो न वै शक्यः कथञ्चन. अतः त्रिविधजीवेषु त्रिविधा भगवत्कृतिः''** (सुबो.कारिका.१०।५।१।६) तामसकु तामस रिस्पॉन्स् देनो, सात्त्विककु सात्त्विक रिस्पॉन्स् देनो, राजसकु राजस रिस्पॉन्स् देनो, निर्गुणकु निर्गुण रिस्पॉन्स् देनो. वा तरीकेके रेस्पॉन्स्

देवेकी तेरे पास यदि सामर्थ्य होय तो निरोधलीला प्रपञ्चमें संभव हो सके और हर बखत तू वो ही सामर्थ्य वापरतो होय के ओवर् पॉवर् सप्लाय् करके हमारी अहंता-ममताकु फोड़ ही देतो होय, अपनी चले तो कछु नहीं पर ''बूंदता विले है. बूंद विवस विचारीकी.'' तो भक्तिके प्रोग्राम्के तहत, निरुद्ध होवेके प्रोग्राम्के तहत, अपन् जो चाह रहे हें, जा तरीकेको एन्लाईटन्मेन्ट्को सपना देख रहे हें, वो या तरीकेको ये एन्लाईटनमेन्ट् हे. वा तरीकेको एन्लाईटन्मेन्ट् नहीं हे के अपनी अहंता-ममताको बल्ब् फूट जाय ओवर् पावर् सप्लाय्सु. न वा तरीकेको एन्लाईटन्मेन्ट् हे के अपनो जुड़्यो होय तो भी दीखनो ही बन्द हो जाय. ये म्युनिसिपालिटीवाले बोहोत बखत रोड्की बत्ती बन्द करनो भूल जायें. वो अपन्कु पता भी नहीं चले हे के बत्ती बुझानो भूल गये हें. वो तो शामकु पाछी पता चले के अच्छा ये जल रही हती. दिनमें सूरज ऊगते ही वो जलती बत्ती दीखनी बन्द हो जाय. ऐसी छोटी पड़ जाय ऐसी अहंता-ममता अपन्कु नहीं चहिये. अपन्कु ऐसी अहंताममता चहिये के जामें अपनी अहंता-ममता अपन्कु दीखे. कौनसी? **"दासोऽहम्, कृष्णः मम"** वा तरीकेकी अहंता-ममतामें कोई दीखे तेरी अहंता-ममतासु ट्युन्-अप् होके. वो अपनी भक्तिको, अपने निरोधको प्रोग्राम् हे.

मोकु लगे हे के आज अपन् निरोधस्कन्धपे नहीं पोहोंच सकेंगे और जहां तक सवाल हे मुक्तिस्कन्धको वो आशा तो बोहोत दूर हे. पर संक्षेपमें एक बात समझा दऊं के या आठवें आख्यानमें गोपालदासजीने प्रमाणनिरोध, प्रमेयनिरोध, साधननिरोध, फलनिरोध और इतनो ही नहीं और बहोत सारी बात यहां कही हें और ऐसे

ही मेरी टीका छप जायगी, शरदबाबा सेमिनार् कर रहे हें तब देख सकोगे आनन्दसु. अहंता-ममताको निरोध, तेरी अहंता-ममताको मेरी अहंता-ममतामें निरोध और मेरी अहंता-ममताको तेरी अहंता-ममतामें निरोध माने साधननिरोध और फलनिरोध. ये सारे मॉडेल् बताके तेरी पुष्टिको मेरी भक्तिमें निरोध और मेरी भक्तिको तेरी पुष्टिमें निरोध, मेरी मर्यादाको तेरी मर्यादामें निरोध और तेरी मर्यादाको मेरी मर्यादामें निरोध होनो चहिये. माने **''स एव कदाचित् जगदुद्धारार्थं अखण्डः पूर्णएव प्रादुर्भूतः कृष्ण इत्युच्यते.''** (त.दी.नि.प्र.१।१) तू तेरी अखण्ड प्रादुर्भूतता रखते भये मेरे घरमें बिराजेगो तो तेरी मर्यादाको मेरेमें निरोध हो गयो. मैं अपनी सारी सांसारिकता रखते भये तेरी सेवाके लिये तैयार हो पायो तो मेरी अहंता-ममताको तेरेमें निरोध हो गयो. वा तरीकेको ये एन्लाईटन्मेन्ट्को प्रोग्राम् हे.

QQQ

वल्लभाख्यान नोमों

(ज्योतिप्रकरण–मुक्तिलीला)

(राग विभास)

(भक्तिमार्गमें भगवदीय होनो मोक्षसुं श्रेष्ठ उपलब्धि हे वो वल्लभपरिवारमें कैसे निभी वाको विवरण)

नित प्रति क्षणु क्षणु समरियें,
श्रीवल्लभनो परिवार रे रसना।
श्रीपुरुषोत्तम प्रगटिया,
जगतनो करेवा उद्धार रे रसना।।१।।
कलिमां कारण एह छे,
बीजुं सर्वे भूमिनो भार रे रसना।
ए बिना बीजुं सर्वे बादलुं,
चौदलोकनो शणगार रे रसना।।२।।

(प्रमाणरूप श्रीगोपीनाथजी और प्रमेयरूप श्रीविट्ठलनाथजी की भगवदीयताको स्वरूप)

'श्रीगोपीनाथजी' सोहामणा,
नवजल घन तनु भाण रे रसना।
सुखदाता लघु भ्रातनां,
पूरण पुरुष प्रमाण रे रसना।।३।।
कमललोचन करुणा भर्यां।
'श्रीविट्ठल' सुखरास रे रसना।।
डीठडे ताप त्रिविध टळे,
स्मरण मात्र अघनाश रे रसना।।४।।

(प्रभुचरणके सप्त आत्मजन्‌की भगवदीयताको स्वरूप)

'श्रीगिरिधर' नर भूषण भ्रात,
सकल धुरिधार रे रसना।
वक्ता वेद शास्त्र तणां,
'श्रीभामिनीजी' भरतार रे रसना।।५।।
'श्रीगोविन्दजी' आनन्दमय,
धर्म सकलनुं धाम रे रसना।
'श्रीराणीजी' रंजन रूडला भक्त,
सकल विश्राम रे रसना।।६।।
'श्रीबालकृष्णजी' बालुवा,
सुंदर भीनले वान रे रसना।
कमल लोचन 'कमला'पति,
छबि नहीं को'ए समान रे रसना।।७।।
'श्रीगोकुलपति' अति गुणनिधि,
तात तणों प्रतिबिम्ब रे रसना।
'श्रीपारवती' पति प्रेमशुं,
शोभा सकल कुटुम्ब रे रसना।।८।।
'श्रीरघुपति' अति गजगति,
रतिपति करूं बलिहार रे रसना।
'श्रीजानकी' जीवन ए सदा,
मध्य मणी रत्नमय हार रे रसना।।९।।
'श्रीजदुपति' जीवन जगतना,
सदा मन प्रसन्न हुलास रे रसना।

नाह ते 'श्रीमहाराणी' तणां,
मुख माधुरी विलास रे रसना ।।१०।।
'श्रीघनश्यामजी' सींचे सुधा,
जीवन सकल ब्रह्मांड रे रसना ।
नाथ ते 'श्रीकृष्णावती' तणां,
लीला नित्य अखंड रे रसना ।।११।।

(श्रीगोपीनाथजीकी दोनों पुत्रीन्‌की भगवदीयताको स्वरूप)

'श्रीलक्ष्मी' 'सत्यभामा' ए बेहु,
अग्रजनी अनुहार रे रसना ।
श्रीनवनीतप्रियाजीने रीझव्या,
सेवा विविध प्रकार रे रसना ।।१२।।

(श्रीविट्ठलनाथजीकी चारों पुत्रीन्‌की भगवदीयताको स्वरूप)

'शोभा' 'यमुना' 'कमला' 'देवका',
जेने सात बांधव सोभाग रे रसना ।
एहुना चरणस्मरण करी, श्रीविट्ठल–
पद–रजरति मांग रे रसना ।।१३।।

(आख्यानोपसंहार)

पुत्र पौत्रादिक सुख शुं कहूं,
जो तू मुखमां एक रे रसना ।
'श्रीविट्ठल' कल्पद्रुम फळ्यो,
तेनी शाखा पसरी अनेक रे रसना ।।१४।।

(मुक्ति : ''भगवदीयत्वेन परिसमाप्तासर्वार्था:'')

वा तरीकेके एन्लाईटनमेन्ट्के प्रोग्राम्में जो नोमो आख्यान हे, वामें अपन्कु हर बखत ये प्रॉब्लेम् आवे के यामें मुक्तिकी क्या बात आई हे? फॅमिलीट्रीकु वर्णित करी हे. तो अपने ध्यानमेंसु एक बात चूक जाय हे और वो बात क्या हे? महाप्रभुजीको प्रिसपोज़ीशन् देखो, महाप्रभुजी कह रहे हें के एकादशस्कन्धमें मुक्तिकी वार्ता हे; **"स्वरूपस्थो यदा जीवो कृतार्थ: स निगद्यते"** (बा.बो.७) स्वरूपस्थ होनो ही मुक्ति हे. गुसांईजीके हर बालक या बेटीजी जो हें, उनके एक एक स्वरूप हें और उनके वा एक एक स्वरूपमें वो स्थित हें और वो ही उनकी मुक्ति हे. गोपालदासजी ये मॉडेल् लेके चले हें के सातों बालकें स्वरूपस्थ हें. याके लिये वो कह रहे हें के **नित्य प्रति क्षणुं क्षणुं समरिये रे 'श्रीवल्लभ'नो परिवार रे रसना.** क्योंके हर परिवारके मॅम्बर्को एक स्वरूप हे. कोई ने कोई ठाकुरजीकु रिझायो. कोईने कोई ठाकुरजीकु रिझायो; कोईने कछु कर्यो, कोईने कछु कर्यो. हर बालक अपने अपने ठाकुरकी सेवामें अपनी अपनी बहूजीन्के साथ जुड़्यो भयो हे **"दारागारपुत्राप्तवित्त"** सबन्को समर्पण करके ठाकुरजीके साथ जुड़्यो भयो हे. यासु ज्यादा मुक्ति क्या होनी चहिये! भागवत खुद कहे हे के **"भगवदीयत्वेन परिसमाप्तासर्वार्था:."** (भाग.पुरा.५।६।१७) भागवत एक बोहोत सुन्दर बात कहे हे के भक्तिके प्रोग्राम्कु जा बखत आदमी जीवे, वा बखत संसारकी आग जलावे नहीं हे ऐसी बात नहीं हे. संसारकी जलावेवाली आगकु तो तीन बखत सुबह शाम रात जले पर तीन बखत जलते भये भी वो अपन्कु जल्यो नहीं माने क्योंके तेरी भक्ति एक ऐसो ए.सी. सिस्टम् प्रोवाईड् करती रहे के वाकी जलन वाकु

महसूस नहीं होवे हे. क्योंके **"भगवदीयत्वेन परिसमाप्ता– सर्वार्था:"** ये सारे बालकें जो अपने भगवदीय होवेकी लाईफ्–स्टाईल्कु जी रहे हें, हर बालक जो अपने घरमें ठाकुरजीकी सेवामें जुट्यो भयो हे, वो मुक्त हे. या लिये नोमो आख्यान मुक्तिको आख्यान हे. मुक्तिकी परिभाषामें ये बात आ गई के स्वरूपस्थ होनो मुक्ति हे. अपनो सच्चो स्वरूप क्या हे? अपन् ठाकुरजीके बन जायें. ठाकुरजीकु अपनो बना सकें. वो अपने लेवल्में **स्वस्वरूपार्थ प्र्योझिया कृत हुता जे संसार. राजकाजे जोडिया जन उच्चावच नरनार.** माने श्रीगोपीनाथजीकी बेटीजीकी वार्तामें ऐसो प्रसंग आवे के कोईकी शादी हो रही हती. वो बिचारे बालविधवा हते. उनने गुसांईजीके सामने जिद कियो के "मेरो पति कहां हे? मेरी शादी क्यों नहीं करी?" गुसांईजीने कही के "तू एक काम कर. ये नवनीतप्रियाजी जो घरमें बिराजे हें वो तेरे पति हें." वाकु गोपालदासजी कह रहे हें के **नवनीतप्रियाजीने रीझव्या.** वो नवनीतप्रियाजीकी सेवामें ऐसी जुट गई के उनकु कभी बालवैधव्य सतायो नहीं. गुसांईजीने बस **सरसवचन उच्चार मात्रे संशयनो परिहार** कर दियो. वा जमानामें दूसरी शादी मान्य नहीं हती जासु के फिरसु शादी करवा देते. उनने पकड़ लियो श्रीनवनीतप्रियाजीकु. **नवनीतप्रियाजीने रीझव्या.** वो उनकी मुक्ति हो गई. तकलीफ नहीं देतो होयगो वैधव्य बेटीजीकु ऐसी बात नहीं हे. पर भागवतकार खुद कहे हे के सारी तकलीफकु झेलते भये वो भक्ति वाकु ऐसी ठण्डी करती रहे हे के वो वा तकलीफकु भी रॅलिश् करें हें के ये तो पार्ट ऑफ् दि गेम् हे.

क्रिकेट् खेलें तो पसीना नहीं आवे? टांग नहीं टूटे? बॉल्

कॅच् करवेमें अंगुली नहीं फट जाय? बोहोत सारी तकलीफ होवें हें पर ये सब तो पार्ट ऑफ दि गेम् हें. पार्ट ऑफ दि गेम् समझके वाकु रॅलिश् करे और क्रिकेट् चालू रहे. बॉलरकु हर बॉलकु फेंकवेके लिये दौड़नो पड़े फिर फील्डरकु दौड़नो पड़े बॉलकु रोकवेके लिये. ठीक हे ये सब पार्ट ऑफ दि गेम् हे. जब गेम्को पार्ट हे तो सब वो काम करेंगे जो वामें करने होवें हें. वहां कोई ऐसे नहीं सोचे के बॅट्स्मॅन् तो खड़ो ही भयो हे और हमकु दौड़नो पड़ रह्यो हे. अरे भई! फील्डिंग् करते बखत हर फील्डर् और बॉलर् कु दौड़नो ही पड़े हे. बॅटस्मॅनकु रन बनावेके लिये विकेट्के बीचमें दौड़नो पड़े हे. यहां दौड़वेको मतलब संसारमें दौड़नो, संसारके सुख-दुःखमें दौड़नो. ये तो दौड़ते रहेंगे अपन्. कई बखत बॉल् छटक भी जायगी, कई बखत कॅच् भी कर लेंगे, कई बखत चौका छक्का भी लगेगो, कई बखत रन्-आउट् भी होंयगे. जब भी अपन् कोई खेल खेल रहें हें तो मल्टीपल् पॉसिबिलिटीज़् आर् देयर् इन् देट् गेम. वाके लिये अपनकु मनमें स्पोर्टस्मॅन् स्पिरिट् रखते भये उन सारी सम्भावनानकु झेलनो पड़ेगो. यदि ऐसी स्पिरिट् रखेंगे तो ये खेल चलतो रहेगो, लीला चलती रहेगी, तुम्हारे घरमें भी चलती रहेगी, ब्रह्माण्डमें चले के नहीं चले, वाकी कौनकु परवाह हे!

अपने घरमें चलनी चहिये ये प्रभुकी लीला. अपने घरमें जो लीला चल रही हे वाकु तो अपनकु विचारनो पड़ेगो. ब्रह्माण्डमें जो लीला चले के ना चले वाकी फिकर वो ब्रह्माण्डनायक करेगो. यदि या लीलाकु अपन् प्रभुके साथ अपने घरमें विचार रहे हें तो अपन् मुक्त ही हें.

(भक्तकी स्वरूपभावापत्ति और आश्रयभावापत्ति)

भक्तको लीलाके प्रारंभमें भगवद्विचारित स्वरूप **''भगवद्-रूप-सेवार्थं तत्सृष्टिः''** (पु.प्र.म.१२) भक्तमें बीजभाव होवेको रोल् अदा करतो होवे. वो जब वैसो रोल् अदा करवे लग जाय तो जीवकी स्वरूपभावापत्ति या स्वरूपस्था प्रकट होती होवे जो भागवतके एकादशस्कन्धमें और यहां नवमाख्यानके विषयतया वर्णित भयो हे. वाके बाद भक्त भक्ति भजन-साधन और भजनस्थान सर्वत्र पुरुषोत्तमको भजनानुकूल प्राकट्य होवेपे आश्रयलीला द्वादशस्कन्धको विषय ब्रह्मभावापत्ति मानी गयी हे. ये समग्रतया वल्लभाख्यानद्वारा सूचितार्थ हे. महाप्रभुजी कहे हें **''मुक्तानाम् आश्रयः कृष्णः नान्येषाम् इति शास्त्रतः''** (सुबो.११।१।१) स्वरूपभावापत्तिके बाद ये आश्रयभावापत्तिको खुलासा श्रीलालुभट्टजी यों दे हें के पुरुषोत्तमके साथ पुरुषोत्तमभावभरित भक्तन्को पुरुषोत्तमात्मक भजनानन्दको आभोग आश्रयभावापत्ति हे. (प्रमेय.र.१।७)

ये ही प्रोसीज़र् गोपालदासजीने भी संक्षेपमें बतायो हे नोमें आख्यानमें. पढ़के देखोगे तो सबके ऐसे ही वर्णन आ रहे हें के वो कैसे अपने ठाकुरजीकी सेवामें लगे भये हैं. अब इन सबमें मूलबात जो कहवेकी हे; अभी कल मैं यहांसु जा रह्यो हतो तो अचानक मोसु एक गज़ल बन गई कारमें बैठे बैठे. वो गज़ल मैं अपने या मूडकी सुनानो चाह रह्यो हूं.

अपनी हस्तीमें भी एहसास तेरा होता हे
बेखुदी हो मेरी पर तेरा गुमा होता हे
ये तेरी जलवागिरी या फितरते निगाह मेरी

आईना देखा नक्श तेरा बयां होता हे
ये दुईका ने भरम या यक्तना हानेका मलाल
इश्क क्या शह हे निहां रूहमें वो होता हे

''अपनी हस्तीमें भी एहसास तेरा होता हे.'' हस्ती मेरी हे और एहसास तेरो हो रह्यो हे. ''बेखुदी हो मेरी तेरा गुमा होता हे.'' 'बेखुदी' माने मोकु अपनी सेल्फ्-अवेयरनेस् नहीं हे. संभव हे के तेरो गुमा क्यों हो रह्यो हे के तू हे मेरे साथ? **"विद्याऽविद्ये हरेः शक्ती मायय्रैव विनिर्मिते. ते जीवस्यैव नान्यस्य"** (त.दी.नि.१।३१) तो बेखुदी मेरी हो सके हे, पर वामें तेरो गुमा क्यों हो रह्यो हे के तू मोकु मूरख बना रह्यो हे. ''बेखुदी हो मेरी पर तेरा गुमा होता हे.'' ये भक्तिकी बात हे. ये लीलाकी बात हे. ''ये तेरी जलवागिरी या फितरते निगाह मेरी'' ये तू सर्वत्र दर्शन दे रह्यो हे वाके कारण ऐसो हो रह्यो हे के मेरी आंख भक्तिवाली हो गई हें और तोकु ही देखनो चाह रही हें. ये तेरी जलवागिरि माने तू दर्शन दे रह्यो सब जगह, या फितरते निगाह मेरी मैं जब भक्तिमयी निगाहसु देख रह्यो हूं तो तू दिखाई दे रह्यो हे. तू सब जगह हे वाके कारण दिखाई दे रह्यो हे के मेरी निगाह भक्तिमयी हो गई हे वाके लिये सब जगह दिखाई दे रह्यो हे. ''आईना देखा क नक्श तेरा बयां होता हे.'' कांचमें देखूं तो मोकु मेरे चेहराके बजाय तेरो चेहरा क्यों दीख रह्यो हे? अपनी अहंता अपनी ममता अपने चेहरा देखवेको कांच हे. वामें तेरो चेहरा क्यों दीख रह्यो हे? **"दासोऽहम्"** क्यों दीख रह्यो हे? **"श्रीकृष्णशरणं''** क्यों दीख रह्यो हे? वामें तेरो चेहरा क्यों दीख रह्यो हे? ''ये दुईका हे भरम'' या तो मोकु ये

द्वैतको भरम हो रह्यो हे के तेरे मेरेमें द्वैत हे के ''यक्तना होवेका मलाल'' यक्तना माने जैसे **"सः एकाकी न रमते"** (महा.उप.१।१) ऐसे मैं एकाकी रमण नहीं कर पा रह्यो हूं वाकी मोकु कछु बेचैनी हो रही हे याके लिये तू प्रकट हो रह्यो हे. ये द्वैतको भरम हो रह्यो हे के मैं एकाकी रमण नहीं कर पा रह्यो हूं वाकी बेचैनीमें तू मोकु चहिये. ''इश्क क्या शह हे निहां रूहमें वो होता हे.'' ये इश्ककी सामर्थ्य तो देखो के जो बाहर बैठ्यो भयो तू हतो, वो मेरी अन्तरात्मामें आके बैठ गयो हे. पहले बाहर बैठ्यो भयो हतो, ''इश्क क्या शह हे निहां रूहमें वो होता हे.'' 'निहां' माने जो छुप्यो होय जाय हे अन्तरात्मा बन जाय हे. ये काहेके कारण बन रह्यो हे? ये अपन्ने लीला स्टार्ट करी या तरीकेकी, जो अपन्ने मॉडेल् देख्यो के अपन् आत्मसमर्पण कर रहे हें वाकु. वा आत्मसमर्पणके तहत अपन् वाकु डिमान्ड् कर रहे हें तू भले हमें अपनो समर्पण मत कर पर हमारी अहंता-ममतासु एडजस्ट् तो हो! जब तू हमारी अहंता-ममतासु एडजस्ट् हो तो हमारो ये भक्तिको खेल चल सकेगो. वो भक्ति निरोधरूपा हो भी जायगी. वामें लय अहंता-ममताको प्रपंचास्फूर्ति जैसो लय होयगो के अपनी अहंता-ममतामें वाके अलावा और कछु स्फुरित नहीं होयगो. निरोधको ये मॉडेल् आ जायगो. अन्तमें तो हर चीजको स्वरूप लय होनो ही हे तो वो तीसरो एन्लाईटन्मेन्ट् हे के जा बखत अपन्कु लगे के सब बल्ब् फूट गये, खाली वो ही एक बल्ब् ओवर् सप्लाय्को चल रह्यो हे. वो अपने लिये निद्रा हे जामें केदार रागसु फिर वो शुरु होवे हे साईकल् जामें अपन् कहें हें **वंदू श्रीविठ्ठलवर सुंदर नवघनश्याम तमाल. जगतीतल उद्धार करेवा प्रगट्या परम दयाल.** वो

केदाराराग जो प्रलयकी रात्रि हे वामें **"सहस्रपरिवत्सर"**सु सोतो भयो जीव हे, वाकु रात बितानी कैसे, वाको केदारा राग हे के **वंदू श्रीविठ्ठलवर सुंदर नवघनश्याम तमाल. जगतीतल उद्धार करेवा प्रगट्या परम दयाल.** 'प्रकट्या' माने बाहर आनो. 'प्राकट्य' कटे आवरण. 'कट'को मतलब होवे हे कन्सील्मेन्ट्. 'प्राकट्'को मतलब होवे हे रिमूवल् ऑफ् कन्सील्मेन्ट्.

एक वो एसो परम दयाल प्रकटे के जासु वाके और मेरे बीचमे जो वो आवरण हें (अहंताममताके) वाकी बड़ी अहंता-ममता हे, मेरी कोई छोटी अहंता-ममता हे. वाकी बॉम्बास्टिक् बड़ी अहंता मेरेसु जुड़नो नहीं चाहे. मेरी छोटी अहंता वासु जुड़वेमें संकोच करे हे, घबरा रही हे के छोटी पड़ जाऊंगी के फूट ही जाऊंगी. वो दोनोंकी अहंता-ममताकु अपन् या तरहसु एडजस्ट् कर लें के मेरी अहंता-ममता तेरे सामने प्रकट हो जाय और तेरी अहंता-ममता मेरे सामने प्रकट हो सके.

ऐसी अहंता-ममता बन जाय तो ये श्रीवल्लभको परिवार अपन् सब भी हैं और वो नहीं प्रकट होवे तो खाली महाप्रभुजीके वंशमें रिज़र्वेशन् कोटाके कारण **वल्लभनो परिवार** नहीं होवे, वा लिये आश्रयको पद गाके अपन् यहां याकु समाप्त करेंगे.

दृढ़ इन चरणन केरो भरोसो.
श्रीवल्लभनखचन्द्रछटा बिन सब जग मांझ अंधेरो..
साधन और नहीं या कलिमें जासों होय निवेरो.
सूर कहा कहे द्विविध आंधरो, बिना मोलको चेरो..
भरोसो दृढ़ इन चरणन केरो.

QQQ

परिशिष्ट

प्रथमाख्यान

(विवरणम्)

निजात्मजाभ्यां द्वाभ्यान्तु पौत्रैश्च सह सप्तभिः ।।
लक्षणैर्नवभिर्लक्ष्यं श्रीवल्लभमिहाश्रये ।।१ ।।
आख्येयार्थोवल्लभो हि नवाख्यानानि तस्य हि ।।
तत्संख्योपेतशास्त्रं खल्वाख्याननवकं तथा ।।२ ।।
द्वेधाख्येयो प्रमेयोऽत्र मूललीलाप्रभेदतः ।।
आद्यः स्वतन्त्रक्रीडोऽत्र लीलार्थमितरो द्विजः ।।३ ।।
एतद्वक्तुर्गुह्यज्ञानं चातुर्यश्रवणे तथा ।।
तृतीये वर्णितान्यत्र श्रोता जिज्ञासुसादरः ।।४ ।।
अनुगृहीतौ विज्ञेयौ तदीयौ हि मतावुभौ ।।
श्लोकद्वयेन तत्रादौ तत्त्वध्यानं विवक्षितम् ।।५ ।।
श्लोकैकेन हृत्प्रसादोऽमात्सर्यमनने तथा ।।
स्कन्धादिमद्वये यद्वद्ध्यधिकारी च साधनम् ।।६ ।।
श्रीमद्भागवते तद्वल्लीलायाः नवकं तथा ।।
लक्षणत्वेन पुष्टेर्हि सम्प्रदायकथा मता ।।।७ ।।
सर्वमूलप्रमेयो हि ब्रह्मणो हृदि भासितः ।।
श्रीमद्भागवते जन्माद्येति पद्यार्थितं स्वयम् ।८ ।।
'जो सुरता मन'शब्दैः कृपायाः याचनेन च ।।]

वंदू श्रीविट्ठठलवर सुंदर नवघनश्याम तमाल ।।
जगतीतल उद्धार करेवा प्रगट्या परम दयाल ।।१ ।।

श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीडा लीला द्विज तनुधारी।।
सात दिवस गिरिवर कर धार्योवासववृष्टि निवारी।।२।।
ते प्रकट्यानुँ कारण कहिये जो सुरता मन आणों।।
करो कृपा हुं करूं वीनंती पोतानो करि जाणो।।३।।

(इति तत्त्वध्यानम्)

(विवरणम्)

सर्गस्तूत्पत्तिपक्षेण चोपपत्त्या निरूपितः।।९।।
आद्याख्यानेऽक्षरं ह्यत्रारीरं पुरुषोत्तमः।।
नित्यानन्दवपुस्तौ च ज्ञानभक्त्योर्ह्यभीप्सितौ।।१०।।
श्रुत्येकगम्यन्त्वाद्यं हि भक्त्यास्वाद्यरसोऽपरः।।
उभौ कारणरूपौ तौ द्विजाचार्यावतारिणौ।।११।।
शब्दब्रह्मात्मकं चैकं तद्गम्यागम्यरूपिणं।।
स्वयम्प्रकाशरूपं च कृपयान्यप्रकाश्यता।।१२।।
नित्यलीलापरः सर्वव्यापिवैकुण्ठशोभितः।१३।।
वाक्तनुभ्यां च मनसा सर्वसामर्थ्यवान् स्वयम्।।
कर्तुञ्चैवान्यथाकर्तुं भवितुञ्चाभवितुं तथा।।१४।।
नामरूपात्मिकां सृष्टिं संहर्तुं स्वकृतामपि।।
दैवीं चाप्यासुरीं सृष्टिं तत्रानन्दरतिं निजाम्।।१५।।
अनुभावयितुं स्वीयान् स्वयञ्चानुभवाय वै।।
एतौ भक्त्या मायया च उभावपि प्रकाशितौ।।१६।।
यतश्चोभे हि क्रीडायां तस्य शक्ती मते सदा।।
अखण्डसच्चिदानन्दसदंशात्तु क्रियात्मिका।।१७।।
चिदंशाज्ज्ञानरूपात्त्वानन्दांशाद्भि सुखप्रदा।।
प्रकृतिः पुरुषश्चापि तथान्तर्यामिणो मताः।।१८।।

सर्वेऽप्येते ह्यक्षरांशाः यद्धामी पुरुषोत्तमः।।
देशकालातीतरूपनित्यलीलाविहारकृत्।।१९।।
व्यापिवैकुण्ठस्वामी स्वलीलापरिकरैर्युतः।।
भक्त्यात्वनन्यया गम्यो न मुक्तिज्ञानगोचरः।।२०।।
सामर्थ्यं सर्वभवने माया तस्येति कथ्यते।।
विद्याविद्ये त्वंशभूते मायायास्तस्य वै मते।।२१।।
विद्ययाभेदविज्ञानमविद्यातो विभेदधीः।।
भक्त्या तु तस्य तादात्म्यं सर्वत्रैवानुभूयते।।२२।।
अतोहि रासलीलान्यैरात्मारामस्य केलयः।।
स्वसृष्टैः दर्पणोपम्यैर् अनुभावयितुं स्वयम्।।२३।।
रासलीलानिजानन्दानुभूतेर्दर्पणोपमा।।
सृष्टिर्हि जडजीवानां प्रादुर्भूतां चकार स।।२४।।
अवलोकनक्षमाश्चाप्यवलोक्याश्च तेन वै।।
स्वरूपलीलानन्दानां दैवासुरविभेदतः।।२५।।
निजात्मरतिरूपश्रीभक्तिसुन्दरीमोहिताः।।
दैवा अथासुराश्चापि मायादासीवशाः सदा।।२६।।
मायां कृत्वा तु दासीं हि भक्तिं राज्ञीमिवेह च।।
दैवाः भजन्ति बहुधा जातमेकन्तु तं सदा।।२७।।
आसुरास्तु न तं ह्येकं बहुरूपेषु तत्पराः।।
मायातो मोहितास्तस्य भक्तिं दासीं हि मन्वते।।२८।।
क्वचित् कदाचिन् मायां तां बहुभवनात्मिकां वरां।।
मत्वा हि सेवमानास्तु जनिमृत्योस्तु चक्रगाः।।२९।।
तच्छक्तिरूपाविद्यतो भावद्रव्यक्रियाभिदा।।
अज्ञानिनामतो ज्ञातुं नार्हन्ति पुरुषोत्तमम्।।३०।।

तथैव ब्रह्मविद्या हि भावाद्वैतैकबोधिका।।
ज्ञानं यतोहि द्वैतानां स्वप्नत्रयविधूननम्।।३१।।
भावद्रव्यक्रियाद्वैतैः यस्मात् स खलु बुध्यते।।
अनुबोभूयते भक्तैर् अद्वैतत्रिकसाधनात्।।३२।।
स्वप्ने जागरणे चापि ज्ञानिस्वप्नेऽप्यगोचरः।।
ज्ञानिनामतएवैष प्रायो दुर्बोध्यएव हि।।३३।।]

व्यापकरूप अद्वैत ब्रह्म जे 'तेजोमय' कहेवाय।।
आर्यपन्थ अधिकारी मुनिजन ते माँहे लय थाय।।४।।
अक्षर आदि अखण्ड अनुपम उपमा कही न जाय।।
अस्ति–अस्ति सउको मळि बोले ।।
निगम नेति–नेति गाय।।५।।
निर्गुणनो निर्देश अटपटो रसना शी पेरे कहिये।।
रूपवर्णवपु दृष्ट पदारथ त्यां एको नव लहिये।।६।।
(इति उत्पत्तिपक्षानुरोधेन सर्गलीलोपादानकूटस्थतत्त्वम्)
तेह थकी पुरुषोत्तम अळगा लीला अचल विहार।।
ब्रह्मज्ञानी ने मुक्तिमारगी स्वप्ने नहीं व्यवहार।।७।।
ज्यां वृंदावन आदि अचल शशि शरद रेन बहुवेश।।
वनदेवी पद कुमकुम मुखसुख परसे रंग विशेष।।८।।
ज्यां सरिता चामीकर–मणिगण उभय–बद्ध सोपान।।
कमल कुमुद नाना अलि सुंदर मधुर करे त्यां गान।।९।।
कनकलता मालती मल्लिका विविध कुसुम मकरंद।।
शीतल पवन झकोरे परसे अति आनंद।।१०।।
पद्मराग मरकतमणि स्फाटिक श्रीगोवर्धन सोहे।।
ब्रह्मा रुद्र त्याँ कोण बापड़ा श्रीहरिनुँ मन मोहे।।११।।

नाना पक्षीनी शब्दमाधुरी शोभा तणो नहीं पार।।
विविध प्रकारे जूजवा कहेताँ ग्रन्थ थाय विस्तार।।१२।।
श्यामा शतदल नयन सुंदरी यूथ तणो नहीं पार।।
विविध रासमंडल रचना रची खेले श्रीनंदकुमार।।१३।।
एणी पेरे नित्य नवली लीला घोष वाद्य झंकार।।
अंग स्वेद मकरंदे मोह्या मधुप करे गुंजार।।१४।।
(इति उपपत्तिपक्षानुरोधेन नित्यलीलाविहारकर्तृतत्त्वम्)
ए प्रभुने मन इच्छा उपनी यश थावा विस्तार।।
अधिकारी पाँखे ए वाणी नहि कोणे उच्चार।।१५।।
भ्रुभंगेथी सृष्टि नीपनी अति सुंदर ब्रह्माण्ड।।
चौद लोक नानावैचित्र्ये भूमंडल नवखंड।।१६।।
(इति अभिन्ननिमित्तोपादानभूततानिरूपणम्)
पर पोतानी व्यक्ति करेवा सृष्टि ते द्विधा प्रकार।।
दैवी-आसुरी बे उपजावी, प्रभु मन करी विचार।।१७।।
भक्ति सुंदरी ने माया दासी, बे मूरत प्रकटावी।।
तेमां पहेली नखशिख सुभगा, श्रीहरिने मन भावी।।१८।।
कृपाकटाक्षे हुवा अक्षरमां, उपन्या सत्त्व अनंत।।
भक्तिलीन हुवा सौभागी, ते वैष्णव गुणवंत।।१९।।
बीजी कटाक्षे जे जन उपन्या मायामां थया लीन।।
कर्मजड आसुर अन्यउपासक, भजनधर्मथी हीन।।२०।।
(इति माहात्म्यबोधनिरपेक्षक्रियाभगवद्रतिसापेक्षभक्त्योः सृष्टी)

(विवरणम्)

[मायाविद्ये उभे शक्ती तद्दासीकरणेन हि।।३४।।

भजन्ते भगवन्तं ये भक्तिं मत्वा हि स्वामिनीम्।।
पुष्टिमार्गीयजीवास्ते तेषामर्थेहि देशिकम्।।३५।।
प्रादुर्भावयितुं स्वास्यसम्प्रदायं चकार स।।
तथाविधः सम्प्रदायप्रवर्तनमहोत्सवः।।३६।।
पुष्टिस्वरूपसेवातः कथातो वा नचान्यथा।।
वाङ्मनोभ्यान्तु मर्यादाप्रवाहौ यौ व्यवस्थितौ।।३७।।
नियतो मा भूदयं पुष्टेः सम्प्रदायः कदाचन।।
पूर्वन्तु नियतो ह्यासीद् भगवद्रूपमात्रतः।।३८।।
मार्गोयस्तत्सम्प्रदायं स्वचैत्यवपुषाऽकरोत्।।
स्ववल्लभं स्वास्यरूपं प्रादुर्भूतं हि भूतले।।३९।।
अतो हि वाक्पतेस्तादृक्सम्प्रदायप्रवर्तनम्।।
तेनास्मिन् सम्प्रदाये हि पुष्टिर्नावीन्यमश्नुते।।४०।।
भगवद्भोग्यरूपा या सृष्टिः पूर्ववर्तिनी।।
मुक्तिसंसृतिर्भिः लीलानन्दभोक्ता प्रभुः पुरा।।४१।।
स भोग्योऽप्यधुना जातः सम्प्रदाये हि पुष्टिगे।।
पाराधीन्यं हि भोग्यत्वं भोक्ता स्वातक्त्र्यमर्हति।।४२।।
भजने भक्तस्वातक्त्र्यं लीलायां भगवद्गतम्।।
ततस्तद्भजने जीवो नहि केवल भक्तिमान्।।४३।।
स्वातक्त्र्यं रूपलीलानां भावने भक्तिहेतुकम्।।
भगवाँश्चानुकरोत्यत्र भक्तभावविभावितम्।।४४।।
सेवाकथास्वरूपाभ्यां भक्तिभ्यां सदनुग्रहात्।।
अतो ह्याचार्यरूपं स्वं स्वयमाविष्चकार स।।४५।।
एकस्यैवाद्वितीयस्य बहुधा भवनन्तु यद्।।
लीलायां नियतिस्तस्य तया स्वातक्त्र्यमप्यथो।।४६।।

तन्मायामोहितधियां कर्ममार्गैकवर्तिनाम्।।
लीलाबहुत्वनियतिः पारतक्त्र्यं विवक्षितम्।।४७।।
तया नियत्या स्वातक्त्र्यं ब्रह्मतादात्म्यमूलकम्।।
आविष्चकार पुरुषो वल्लभः स्वीयसाधने।।४८।।
''एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतम्
एको देवो देवकीपुत्रएव।।
मन्त्रोऽप्येकस्तस्य नामानि यानि
कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा।।४९।।
इत्याकलय्य सततं विचार्य च पुनःपुनः।।
भगवच्छास्त्रमाज्ञाय यदुक्तं हरिणा स्वयम्''।।५०।।
''यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वञ्च मयि पश्यति।।
तस्याहं न प्रणश्यामि सच मे न प्रणश्यति।।५१।।
सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः''।।
''महात्मनस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः।।५२।।
भजक्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम्।।
सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः।।५३।।
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते...।।
अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधं।।५४।।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम्।।
पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः।।५५।।
वेद्यं पवित्रमोंकार ऋक्सामयजुरेव च।।
गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत्।।५६।।
प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम्''।।
इति श्रुत्युक्तब्रह्मैक्ये नैवं भवितुमर्हति।।५७।।

तथैव चाप्यनेकत्वे देवकर्मविभेदत:।।
शरणं तादात्म्यमेवात्र गतिर्नोविद्यतेऽपरा।।५८।।
यदुक्तं बृहदारण्ये ''स यत्पूर्वोहि सर्वत:।।
सर्वान् हि पाप्मनश्चौषत् तस्मात् पुरुष ओषति।।५९।।
योऽस्मात्तु खलु सर्वस्मात् स्वयं पूर्वं बुभूषति''।।
तादृक्पुरुषप्राकट्ये लीला या युज्यते तु सा।।६०।।
निरूपितास्मिन्नाख्याने कविना तत्त्वदर्शिना।।
सर्गोऽयं सम्प्रदायस्य पुष्टिमार्गाङ्गभावत:।।६१।।]

(ए)तेणी प्रकारे सृष्टि द्विधा गुणमिश्रित चाली जाय।।
भक्तिमारगी जीव स्वतन्त्र केवल भक्त न थाय।।२१।।
श्रीपुरुषोत्तमे वळी विचार्युं, हवे प्रकार शो करिए।।
मारी सेवा अनेक कथारस, निरूपवा तनु धरिए।।२२।।

(इति स्वसृष्टद्विविधजीवयो: मिथ:मिश्रणनिरसनार्थमाचार्यर्यापेक्षा)

(विवरणम्)

[सौभाग्यवर्धनं ह्येतत् पुष्टिजीवात्मनां परम्।।
अतएव हि सञ्जात: कुमारो वल्लभात्मज:।।६२।।
आख्याने प्रथमेस्मिन् हि आश्रयो ब्रह्मरूपवान्।।
पुरुषोत्तमस्तु भगवान् वर्णितो विट्ठलेश्वर:।।६३।।
पुनश्च गोकुले लीला पुष्टिमार्गानुसारिणी।।
कर्तुं समागत: स्वीयान् सनाथीकरणाय हि।।६४।।
द्वैधं तत्त्वस्वरूपेऽत्र [१]कौटस्थ्यविहृती तथा।।
[२]धामधामिप्रभेदेन भिन्नौ ताभ्यां द्विधा [३]जनि:।।६५।।
दैवासुरविभेदेन जीवौ भिन्न[४]कटाक्षजौ।।
तयोर्गती [५]लयौ मूर्त्योरेवं [६]तद्भक्तिमाययो:।।६६।।

सेवाकथाभक्तिमुक्ती कर्मजाड्योन्यपासने ।।
द्विगुणीकृत्य षट्कांगे चतुर्विंशतितत्त्वता ।।६७ ।।
तावद्भिः पद्यैराख्यानं हेतुतत्त्वतयोदितम् ।।
सम्प्रदायस्य स्वीयस्य सर्गलीलानिरूपणे ।।६८ ।।]

भक्तजीवनाँ भाग्य विस्तर्यां, इच्छा करी हरि सार ।।
तेणे हेते आपोपे प्रगट्या श्रीवल्लभराजकुमार ।।२३ ।।
पूर्णब्रह्म श्रीलक्ष्मण–सुत पुरुषोत्तम श्रीविट्ठलनाथ ।।
श्रीगोकुलमाँ प्रगट पधार्या, स्वजन कीधाँ सनाथ ।।२४ ।।

(इति नित्यलीलास्थपुरुषोत्तमस्याचार्यरूपेण भूतलगोकुलागमनम्)

(विवरणम्)

आत्मरासरतीरात्रीरागकेदारयोजनम् ।
क्षणं युगानां शतवद् विरहौत्कण्ठ्यवीक्षितम् ।।६९ ।।
परिवत्सरसहस्रेषूप्तबीजोत्थभावतः ।।
स्वमार्गसर्गतः पूर्वं निशाकष्टवियापनम् ।।७० ।।
साधनीकृत्यैकमेवाद्वितीयं रूपमत्र हि ।।
फलरूपा पुष्टिसृष्टिः बहुधा भवनात्मिका ।।७१ ।।

इति श्रीगोपालदासकृतस्य श्रीवल्लभाख्यानान्तर्गतप्रथमाख्यानस्य प्रमेयखण्डे
पराक्षरब्रह्मणोऽभिन्ननिमित्तोपादानकपुष्टिसंम्प्रदायसर्गवर्णनपरे
गोस्वामिश्रीदीक्षितात्मजेन श्याममनोहरेण
कृतं विवरणं सम्पूर्णम्

QQQ

द्वितीयाख्यान

(विवरणम्)

[पूर्वाख्याने ह्यभक्तानां मायामोहस्य वर्णनाद् ।।
कर्मनिष्ठानिन्दयान्यदेवोपास्तिविनिन्दनात् ।।१ ।।
श्रुत्युक्तबाधनाच्चैषः सम्प्रदायो विमोहकः ।।
इति शंकासमाधानं श्रूयतां यदि रोचते ।।२ ।।
सच्चिदानन्दब्रह्मैव सदंशेन क्रियात्मकं ।।३ ।।
मायया जातमित्युक्ते क्रियातः कर्मसम्भवात् ।।
वर्णाश्रमाचाररूपा तथा यज्ञात्मिकां च वाम् ।।४ ।।
''यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् '' ।।
''मयादौ ब्रह्मणे प्रोक्ता धर्मोयस्यां मदात्मकः'' ।।५ ।।
एवं भगवतोक्तत्वाद् भगवद्रूपिणीं हि ताम् ।।
भगवन्तमविस्मृत्यानुतिष्ठन्नेह दोषभाक् ।।६ ।।
निन्द्यते नहि शास्त्रोक्तमन्यदेवाद्युपासनम् ।।
तमवज्ञाय कुर्वाणो हीनो भजनधर्मतः ।।७ ।।
विनिन्द्यतेऽत्र भक्तेन गीतायां निन्दितो यतः ।।
''यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदक्त्यविपश्चितः ।।८ ।।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ।।
कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदां ।।९ ।।
क्रियाविशेषबहुलां भोगेश्वर्यगतिं प्रति ।।
त्रैगुण्यविषयाः वेदाः निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन ।।१० ।।
येऽप्यन्यदेवताभक्ताः... यजक्त्यविधिपूर्वकम् ।।
अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च ।।११ ।।
नतु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातः च्यवन्ति ते'' ।।

''मन्निष्ठं निर्गुणं स्मृतम्''इत्यादिवचनैरपि ।।१२ ।।
यज्ञेन यज्ञयजनं निर्गुणं समुदाहृतम् ।।
तस्मादत्रापि यज्ञात्मा श्रीहरिः पुरुषो मतः ।।१३ ।।
स्वसम्प्रदायाचार्याणामवतारितयापि च ।।
विसर्गलीलागानेऽतो विसर्गः पौरुषो मतः ।।१४ ।।
''रूपं-रूपं प्रतिरूपश्च जायन्''
स नैव सर्वैरुपलभ्यते क्वचित् ।।
स्वयं हि ब्रह्मात्मकशब्दरूपः
तद्रूपशब्दैरपि नोपलभ्यते ।।१५ ।।
'अशब्द'शब्देन हि सोऽत्र शब्दितः
'नेतीति नेतीति'सचास्ति कथ्यते ।।
वाचोऽनिरूप्यैव निवर्तमानाः
पारं न याक्त्यस्य स्वयंप्रकाशते ।।१६ ।।
पुरुषो दुष्कर्महर्ता सन् स्मृतः सर्वाशुभापहा ।।
मांगल्यं स्तुतितस्तस्य सार्द्धेनोपकृमः कृतः ।।१७ ।।]

श्रीलक्ष्मणसुत श्रीवल्लभरायजी
स्मरण करताँ दुष्कृत जाय जी ।।
कलिजन तरेवा नहि अवर उपाय जी
यज्ञपुरुष हरिनाँ श्रुति गुण गाय जी ।।१ ।।
गाय श्रुति गुण रूप अहर्निश
धरि ध्यान विचार ।।
आनन्दरूप अनूपम सुन्दर
पामे नहि कोई पार ।।२ ।।

(इति यज्ञेन यज्ञयजनयाजनपराद् ब्रह्मरूपाद् विसर्गपुरुषविराट्प्राकट्य-वर्णनोपक्रमः)

(विवरणम्)

[विसर्गलीलाकर्त्रा हि पुष्टिजीवा प्रबोधिता:।।
ब्रह्मानन्दे प्रविष्टानामात्मनैव सुखप्रमा।।१८।।
संघातस्य विलीनत्वाद् भक्तानान्तु विशेषत:।।
सर्वेन्द्रियैस्तथा चान्त:करणैरात्मनापि हि।।१९।।
ब्रह्मभावात्तु भक्तानां गृहएव विशिष्यते।।
तस्माद् गोपालदासोक्ति: ''ब्रह्मानन्द: सुदुर्लभ:।।२०।।
साक्षात्तु ब्रह्मरुद्रेन्द्रदेवतानां हि सर्वदा''।।
सोऽप्येतस्मिन् सम्प्रदाये लभ्यो वाक्पतिपुष्टिना।।२१।।
भूतले जायमाने या जीवे भक्ति: रसात्मिका।।
''रसो वै स''इति श्रुत्या सापि ब्रह्मस्वरूपिणी।।२२।।
साक्षाद् येनानुभूतेह विभावालम्बिनी तत:।।
ब्रह्मानन्दोऽनुभूतो हि लौकिकैरिन्द्रियैरपि।।२३।।
वृन्दावनेन्दुप्राकट्यं तदर्थं भूतले मतम्।।
स्वसर्वस्वं तदीया हि तत्सात्कृत्वानुभुञ्जताम्।।२४।]

प्राणपति–प्रागट्य–कारण
काँइक कहूँ मतिमन्द।।
हर सुर विधाता नव लहे
साक्षाद् ब्रह्मानन्द।।३।।
श्री–वृन्दावन–चन्द–मुखरुचि
अग्नि ते अवतार।।
द्विज–तिलक–त्रिभुवन नाम
निरूपम रूप अंगीकार।।४।।

(इति विसर्गपुरुषप्राकट्येन पूरितं तत्प्रयोजनम्)

(विवरणम्)

[विसर्गलीलाकर्तुस्तु रूपद्वयमिहोच्यते ।।
आद्यं मूलस्वरूपं चावतीर्णं द्वितीयं तथा ।।२५ ।।
प्रमाणसाधनत्वे हि मार्गाचार्यस्वरूपगे ।।
प्रमाणरूपता तत्र षड्भि: श्लोकै: निरूपिता ।।२६ ।।
चतुर्थं श्लोकमारभ्य यावदैकादशं हि सा ।।
ततस्त्रिभिस्साधनता र्विसर्गपुरुषे मता ।।२७ ।।
यादृक् पुरुषरूपं हि वर्णितं वल्लभाष्टके ।।
तादृगेव पुन: श्रीमद्गोपालमुखतोऽब्रवीत् ।।२८ ।।
इतो हि यत्सुबोधिन्यां भक्तौ नैर्गुण्यमीप्सितम् ।।
दाढ्र्याय तस्य स्वाचार्येपुरुषोत्तमतापि वै ।।२९ ।।
प्रसाधयितुमेवात्र देवपूज्यत्वमुच्यते ।।
आचार्योचितरीत्यैव ह्यासुराणां निराकृति: ।।३० ।।
''प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना: न विदुरासुरा:... ।।
असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम्'' ।।३१ ।।
इति गीताभिप्रेतार्थ-साधिकाचार्यकर्तृका ।।
भजनानन्ददानार्थं ब्रह्मवादस्य मण्डनम् ३२ ।।
दशदिक्षु प्रयासेन प्रमाणपरिपोषणात् ।।
देवैर्गेयं चेतरेषां भूरिभीतिकरं पुन: ।।३३ ।।
आचार्यकृत्यसन्तुष्ट्या पुत्रभावमनोरथ: ।।
पाण्डुरंगस्य तद्वच्छ्रीनाथस्यापि निरूपित: ।।३४ ।।]

देवलोक दुंदुभि वागियाँ (वाजिया),
आनन्द करे रे निशंक ।।

असुर–तिमिर उच्छेदवा
भुवि वल्लभदेव मयंक।।५।।
पूर्ण(पूरण) पुरुष प्रमाणपंथा,
व्याख्याता वेदान्त।।
ग्रन्थ सर्वेरसरूप कीधाँ,
पोताने सिद्धान्त।।६।।
रसिकरसना रसिक वाणी,
जाणी नर नवखंड।।
ऊर्ध्वपंथा सुयश(सुजस) प्रसर्यो,
वाधियो ब्रह्मांड।।७।।
एक ब्रह्मांडे जेना जश न माया,
तेना हुवां कोटि अनंत।।
तोय त्याँ थकी वाधियो,
जई वस्यो मुख धीमंत।।८।।
अतुल अमल उद्योत उदयो,
भूतल–द्विज–मार्तंड।।
भक्ति–मारग–केसरी,
गज मायिक–मत शतखंड।।९।।
दिग्विजय दश दिशाए कीधो,
परिक्रमाने व्याज।।
तीर्थ सकल सनाथ कीधाँ,
चरणरेणु–समाज।।१०।।
पत्रावलंबे पंडित जीत्या,
मायिक मत्त–मातंग।।

श्रीकृष्ण पूरण ब्रह्म स्थाप्या,
जेनाँ रूप कोटि अनंग।।११।।
(इति पुष्टिसम्प्रदायविसृष्टपुरुषस्य प्रमाणरूपता)
स्वमारग स्थिर स्थापवा,
आपवा भजनानन्द।।
नाम आप्याँ जीवने,
शुभ मिष्ट मुख–मकरंद।।१२।।
अनेक जीवने कृपा करवा,
देशांतर–प्रवेश।।
कोमल पद ज्याँ कमल विलसे,
धन्य कहुँ ते देश।।१३।।
अंग बंग कलिंग कैकट (कीकट)
मागध मरु सुर सिंध।।
ते तामसनां अघ हर्यां,
परताप पदरज–गंध।।१४।।
(इति पुष्टिसम्प्रदायविसृष्टपुरुषस्य साधनरूपता)
कनकस्नान शतमण सुवर्णे,
कराव्युं महिपाळ।।
ते मूकी वेगें चालिया,
राय दृष्टि न पाछी वाळ।।१५।।
(इति पुष्टिसम्प्रदायाचार्यस्य सम्प्रदायप्रवर्तने लौकिकप्रयोजननिरपेक्षता)
त्याँथी दक्षिण (प्रभु) पाँउ धारिया,
पांडुरंग श्रीविट्ठलनाथ।।
नेत्र मळताँ वात कीधी,

वचन दीधुँ हाथ ।।१६ ।।

वचन निश्चे श्रीनाथे माँग्यु,

कीधी श्रीवल्लभजी शुँ वात ।।

अमने ते इच्छा एह छे जे,

हुँ नन्दन तमे तात ।।१७ ।।

(इति मर्यादापुष्टिनामरूपवत: पुष्टिस्थापनकर्मवदाचार्यवपुर्धारणाय पुरुषोत्तमस्य वल्लभगृहे प्रादुर्भावमनोरथवर्णनम्)

ते पुरुषोत्तम प्रकटशे,

श्रीविट्ठल रूपनिधान ।।

नेत्रकमले नानाभावे,

देशे भक्तने सन्मान ।।१८ ।।

(इति पुष्टिसम्प्रदायमर्यादमण्डनाय प्रमाणप्रमेयोभयरूपपुरुषोत्तमस्य निजहृद्गतस्थायिभावेन विभावनाया: निरूपणम्)

(विवरणम्)

[व्रजे च व्यापिवैकुण्ठे ह्यैश्वर्यादिगुणा: समे ।।
भावे सत्यनुभूयन्तइति यात्रामहोत्सव: ।।३५ ।।
गुणानां भावनेनापि गुण्याविर्भावसम्भव: ।।
शुद्धो हि तीर्थनिरतो कृष्णदर्शनलालस: ।।३६ ।।
कीर्तनस्मरणाभ्याञ्च साकं तीर्थाटनन्तु यत् ।।
कृष्णस्वरूपलीलानन्दावाप्त्यैकप्रयोजनम् ।।३७ ।।
सोऽयं हर्षानुभावो हि भाविप्राकट्यहेतुक: ।।
प्रकटो वल्लभे षड्भि: कविना स निरूपित: ।।३८ ।।
प्रभ्वो: प्राकट्यवृत्तान्तवर्णनांगतया पुन: ।।
बलदेवस्तु वेदोहि मानरूपतया मत: ।।३९ ।।

गोविन्दस्तस्य मेयोऽत्र गूढप्रकटभेदत: ।।
वेदैकगम्यो योऽस्माकं कृपागम्योऽपि तद्विना ।।४० ।।
रूपनाम्नोर्मिथोवृत्तिरन्योन्यस्मिन् हि सर्वदा ।।
मानं गूढप्रमेयात्मा प्रमेये गूढमानता ।।४१ ।।
अग्रजानुजभावेन यदृच्छावगतावुभौ ।।
'वेद'स्यार्थस्तु विज्ञानं रसानन्दस्तदन्तर: ।।४२ ।।
बाह्याभ्यन्तरतस्तत्र बाह्यमान्तरबोधकम् ।।
बाह्ये ज्ञानेऽथ चाभ्यन्तर्ज्ञाने तु पुनरन्यथा ।।४३ ।।
प्रथमं ज्ञायते ह्यन्तर्बाह्ये पश्चात्तु बोधनम् ।।
क्रियाज्ञाने रते तस्मिन् 'गोपी'पदविबोधिते ।।४४ ।।
ज्ञानशून्येऽनुगृह्णाति 'विट्ठले'ति पदाभिध: ।।
एवमन्योन्यनिष्ठौ द्वावपि प्रादुर्भविष्यत: ।।४५ ।।
हर्षातिरेकतस्तस्मात् पिता लीलास्थलेऽव्रजत् ।।]

त्याँथी वृन्दावन पाँउ धारिया,
ज्यां मधुप करे झंकार ।।
कुसुमद्रुम नवमल्लिका,
मकरंदनो नहि पार ।।१९ ।।
तरु तमाल अति शोभताँ,
हेमजूथिका संघोड ।।
ललना ते सुभगाँ लटकताँ,
हींडे ते मोडामोड ।।२० ।।
तानधुनि मुनि मयूररूपे,
साँभळे धरी ध्यान ।।
नित्य–लीला–गान–श्रवणे,

करे ते मधुपान।।२१।।
कुंजसदन सोहामणाँ,
शोभा तणो नहि पार।।
विविध रासमंडल रचना रची,
खेले श्रीनन्दकुमार।।२२।।
रंगे ते रमताँ दीठँडा
बलदेव श्रीगोविंद।।
ते पुत्रभावे प्रकटशे,
मन उपन्यो आनन्द।।२३।।
बलदेव श्रीगोपीनाथ कहिये,
श्रीविट्ठल नन्दानन्द।।
ते वेदपंथ विस्तारशे,
जन आपशे आनन्द।।२४।।

(इति पुत्रभावेन विट्ठलनाथश्रीनाथयोः प्राकट्याश्वासनेन प्रमुदितस्य व्रजयात्रामहोत्सववृत्तम्)

(विवरणम्)

["गुणगाने सुखावाप्तिर्गोविन्दस्य प्रजायते...।।४६।।
तदा सर्वं सदानन्दं हृदिस्थं निर्गतं बहिः...।।
हृद्गतः स्वगुणान् श्रुत्वा पूर्णः प्लावयते जनान्"।।४७।।
गुणगानं हि यात्रावद् जातः प्राकट्यहेतुकः।।
हर्षानुभावो हि पितुः सोऽप्येकेनेह वर्णितः।।४८।।
प्रभ्वोः प्राकट्यवृत्तान्तवर्णनांगतया पुनः।।
"अजायमानो बहुधा यो विजायते
तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्"।।

रसात्मकत्वाद् हृदि संनिविष्टो
भक्तिभावाधीन्यमंगीकरोति ।।४९ ।।]

त्यांथी केशिघाट पांउधारिया,
कही कथा तत्त्वसमाधि ।।
रसपुंज पुरुषोत्तम प्रमाण्या,
सरस्वती तजी आधि ।।२५ ।।
(इति यात्रोत्सवे श्रीभागवतकथोत्सववृत्तान्तः)

(विवरणम्)

[यात्राकथोत्सवात् प्रीतो भगवान् प्रकटः ततः ।।
आभिमुख्येन चायातो गोवर्धनगिरौ तदा ।।५० ।।
मिथोन्यान्योभिमुख्येन सख्येन सुसमागतिः ।।
अन्योन्यवाचो निर्वाहनिर्बन्धे दार्ढ्यबोधिका ।।५१ ।।]

गिरिराजनें आश्वास दीधो,
धरी कोमलचरण ।।
हरखे ते सामा आविया,
श्रीगोवर्धनउद्धरण ।।२६ ।।
हळी-मळीने चालिया,
चरणाट ज्याँ निजधाम ।।
नवरंग नागर प्रगटिया,
मन पूरवा बहु काम ।।२७ ।।

(विवरणम्)

[यज्जातं ब्रह्मणि किञ्चिद् तत्रतत्राविशत् स्वयम् ।।

समवायितया पूर्वं नियामकतया ततः ।।५२ ।।
ब्रह्माण्डविग्रहाभ्यन्तः परमात्मा नियामकः ।।
गुणैर्नियम्यते सृष्टिः कालकर्मस्वभावतः ।।५३ ।।
इतःपूर्वन्तु नाविष्टो साक्षाद्ब्रह्माण्डविग्रहः ।।
आद्ये चतुर्विंशतिर्हि पद्यानां संगतिस्ततः ।।५४ ।।
अथो विसर्गपुरुषाद् जन्मान्तर्यामिणो मतः ।।
विद्वलानुप्रवेशेन तत्त्वेष्वाधिक्यभावतः ।।५५ ।।
संख्याऽतोऽस्मिन्हि पद्यानां जाता ह्यष्टौ च विशंतिः ।।
प्रकृतिपुरुषौ स्यातां तत्त्वरूपौ ततोऽपि वै ।।५६ ।।
परमात्मा परं तत्त्वं सृष्टौ तत्त्वेषु सम्मतम् ।।
अग्रे गृहीतजन्मस्य स्तुतिर्वर्धापनात्मिका ।।५७ ।।
गूढभोक्तृभावरूपो विसर्गः पौरुषोऽत्र हि ।।
वल्लभः फलरूपोऽत्र साधनं गूढभोग्यता ।।५८ ।।
पुरुषोत्तमस्य स्रष्टुर्हि पूर्वाख्यानसूचिता ।।
आख्यानयोर्द्वयोरेवं संगतिस्त्वत्र वै स्फुटा ।।५९ ।।]

तत्त्वसंख्याये कह्या पद,
सार माँहे सार ।
हवे काँई एक स्तुति करुँ,
श्रीवल्लभराजकुमार ।।२८ ।।

(विवरणम्)

[सर्गः प्रभातरूपो हि रामक्रीरागकालवत् ।।
तस्मात् तेनैव रागेणाख्यानं गेयन्तु गायकैः ।।६० ।।]

इति श्रीगोपालदासकृतस्य श्रीवल्लभाख्यानान्तर्गतद्वितीयाख्यानस्य
प्रमेयखण्डेपुष्टिसम्प्रदायब्रह्माण्डान्तर्मूर्तिविराड्रूपपरमात्माविर्भाववर्णनपरे
गोस्वामिश्रीदीक्षितात्मजेन श्याममनोहरेण कृतं विवरणं सम्पूर्णम्

QQQ

तृतीयाख्यान

(विवरणम्)

[स्थानलीलार्थके चास्मिन् आख्याने जन्मवर्णने ।।
विरुद्धधर्माश्रयता जन्मन्येव निरूपिता ।।१ ।।
गोपालगायकस्यापि गेयस्यापि प्रभोस्तथा ।।
देशकालस्वरूपाणां विरुद्धानां हि वर्णनम् ।।२ ।।
''जन्म कर्म च मे दिव्यम् एवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति माम् एति सो अर्जुन'' ।।३ ।।
इति तद् भगवत्प्रोक्तदिव्यताद्योतनाय हि ।।
द्वाभ्यामिह स्थापनं हि निजांगाह्लादतत्कृतम् ।।४ ।।
विरुद्धधर्माश्रयता सूत्रोक्तं ब्रह्मलक्षणम् ।।
तस्यात्र निगमनं यत्तु निर्दोषसमतार्थकम् ।।५ ।।
''अथ सर्वगुणोपेतः कालः परमशोभनः'' ।।
उपस्थितोहि शेषाणां पञ्चानामग्रिमेषु हि ।।६ ।।
वसुदेवस्य मनसो देवकीगर्भसम्भवः ।।
वर्णितोहि सदानन्दः तथाक्कोरःप्रवेशनम् ।।७ ।।
यशोदांके लालितस्य श्रीगोवधर्नधरेऽपि च ।।
सेवापरस्याचार्यस्य भक्तेः नैर्गुण्यबोधकम् ।।८ ।।
श्रीमदाचार्यचरणानां सुतयोरपि सर्वथा ।।
''यस्य देवे परा भक्तिः यथा देवे तथा गुरौ'' ।।९ ।।
कवेर्हृद्भावनैर्गुण्यद्योतकं न तदन्यथा ।।
ब्रह्मणः खलु तादात्म्यं यदप्युक्तं श्रुतौ ततः ।।१० ।।
तदाचार्यात्मजे नैव भिन्नरीत्योपपद्यते ।।
कविर्गोपालदासोऽयं कौमार्येऽप्यनुभूय तत् ।।११ ।।

वर्णयत्यखिलां दिव्यां जन्मलीलां गुरोरिह।।
सिद्ध्यन्ति यस्य गानेन पुष्टिभक्तिफलानि हि।।१२।।]

आ पोष–मध्याह्ने नोमे श्रीनाथजी।।
अक्काजी उर उपन्यो आनन्द।।
आ चंद श्रीवृन्दावन तणो प्रगटियो।।१।।
आ सौभाग्यसुन्दरी मळी धवल गाये।।
सुहाये रूड़ा कंठना नाद।।
आह्लाद उपन्यो ते अंगो–अंग घणो।।२।।

(इति प्रभुश्रीविट्ठलेशस्य जन्मोत्सवे स्वरूपकालयो: विरुद्धधर्माश्रयता–वर्णनम्)

[इत:परन्तु देशादे: पञ्चानां दिव्यता परा।।
संकीर्त्यते प्रमोदेन कवेर्भावानुभाविका।।१३।।
त्रिलोक–शस्तता कर्तु: त्रिभि: पद्यै: विशेषत:।।
भेरीध्वनिपुष्पवृष्टिनृत्यैश्चाप्यभिनन्दनम्।।१४।।
चतुर्थात् सप्तमं यावत् मोदातिशयबोधकम्।।
भक्तिमार्गाब्जमार्तण्डात् चन्द्रो वृन्दावनेऽजनि।।१५।।]

(देश)आ सूतिकासदन सोहामणुँ।।
शोभा रूडी लहेरड़े जाय।।
आ वाजिंत्र वाजे ते समे तणाँ।।३।।
(द्रव्य)आ सर्वस्वदान तेणें समें।।
करे रे श्रीवल्लभजी उदार।।
आ सुकुमार सुत उदयो श्रवणें सुणी।।४।।

(कर्ता)आ पाताळे शेषनाग रीझिया।।
उपर इन्द्रादिक देव।।
आ तत्खेव सुणी निशान वजड़ावियाँ।।५।।
आ ब्रह्मा महादेव मुनि हरखियाँ।।
वरखियाँ कुसुमसमूह।।
आ मोह टाळ्यो जगतनाँ जीवनो।।६।।
आ सिद्ध गन्धर्व गुणी अपसरा।।
उलटियाँ नृत्यने नाद।।
आह्लाद भर्यां श्रीवल्लभजीए मानियाँ।।७।।
(मन्त्र)आ निगम साम ते शाखा सहस्रशुँ।।
करे रे भला निर्घोष।।
आ घोषपति भगवंत भेटताँ।।८।।
(कर्म)आ वेदविहित कृत्य सर्वेकीधाँ।।
दीधाँ बहु पेरे गौदान।।
आ मानशुँ स्वजन संतोषिया।।९।।

(इति देशादिपञ्चकदिव्यतानिरूपणम्)

(विवरणम्)

[दिव्योत्पत्तिमतां दिव्यमर्यादायां हि स्थापनम्।।
जन्मोत्सवः स्थापकस्य दिव्यरीत्या कुतो नहि!।।१६।।
सर्वेषां पुरुषार्थाणां साधको ह्युत्सवो मतः।।
तस्माद्धि तावत्ऋ(५)ऋसंख्याकै; पद्यैर्गीतापरोक्षता।।१७।।
''कृष्णे विश्वेश्वरेऽनन्ते नन्दस्य व्रजमागते।।
गोपाः परस्परं हृष्टाः दधिक्षीरघृताम्बुभिः।।१८।।
आसिञ्चन्तो विलिम्पन्तो नवनीतैश्च चिक्षिपुः''।।

इति द्वापरजन्मोत्सवलीलारीतितः पृथक् ।।१९ ।।
भगवत्स्नापने यादृग्गन्धो पञ्चामृतैः भवेत् ।।
तादृक्सौगक्ध्यप्रसरो वायुना वर्णितोऽत्र हि ।।२० ।।
कीर्तिरूपस्य गन्धस्य लीलासेवाप्रभेदतः ।।
इतीदानीं तदानीञ्चोत्सवयोर्भेदवर्णना ।।२१ ।।
उत्सवोऽतो लौकिकैश्चाप्यात्मारामैरपि स्तुतः ।।
तेनात्रैवोत्सवानन्दप्रयोजनमपि स्फुटम् ।।२२ ।।
''आत्मारामश्च मुनयो निर्ग्रन्थाअप्युरुक्रमे ।।
कुर्वक्त्यक्त्यहैतुकीं भक्तिमित्थम्भूतगुणो हरिः ।।२३ ।।
तदत्र बीजविन्यासो जन्मनि भक्तिहंसके ।।
कामार्थपूर्तये निन्द्यं वृत्त्यर्थं भजनं यतः ।।२४ ।।
विहितञ्चेद् विभूतीनां, निषिद्धं नरकाय वै ।।
मन्तुं वक्तुं च लिखितुमवतारोयमत्र हि ।।२५ ।।
कुंकुंमाक्षतदूर्व्वाभिः स्वर्णपात्रस्थिताभि हि ।।
सहकारपर्णपारिजातैश्चन्दनवारिभिः ।।२६ ।।
तद्गृहाजिरशोभापि वर्णिता रूपगन्धजा ।।
सुस्थाल्यः सज्जिताः सर्वाः सुमांगल्यप्रबोधिकाः ।।२७ ।।]

[१]आ कनककचोळाँ कुमकुमभर्यां ।।
अक्षत दूर्वा भर्या रे सुथाळ ।।
आ माळ पारिजातनी महमहे ।।१० ।।
[२]आ तोरण पर्ण सहकारनाँ ।।
धरणीये चंदनतणाँ नीर ।।
आ वीर श्रीगोपीनाथ, श्रीविट्ठल प्रकटिया ।।११ ।।

[३]आ दधि दूध घृत मधु माँडवे।।
शेरडिये वहेरे सुगंध।।
आ सुगंधे मोह्या अलिकुल आविया।।१२।।
[४]आ सूत मागध साधु सर्वेमळ्या।।
मळिया ते माँहोमाँह।।
आ उत्साह भर्या को कोनैं जाणे नहीं।।१३।।
[५]आ शुकदेव सबल आनंदिया।।
वंदिया श्रीवल्लभजीनाँ चरण।।
आ गिरिधरण श्रीभागवत म्हारूँ निरखशे।।१४।।

(इति कीर्तिद्योतकविविधसौगन्ध्यवर्णनेन जातस्य श्रीवल्लभराजकुमारस्य पञ्चविधपुरुषार्थसाधकं माहात्म्यम्)

(विवरणम्)

[पञ्चभिस्त्वग्रिमैः पद्यैः उक्ते स्तुत्याशिषौ तदा।।
तत्र पद्यद्वये चान्ते गुणगानं च दर्शनम्।।२८।।
''ज्ञानन्तु गुणगानं हि परोक्षे तत् प्रतिष्ठितम्।।
प्रत्यक्षे भजनं श्रेष्ठमेवं चेद् रोधनं स्थिरम्''।।२९।।
इत्याचार्योक्तरीत्यायमवतारो निरोधकृद्।।
अनुगृहीतभक्तानां भविष्यत्यतएव हि।।३०।।
''अपरानिमिषद्दृग्भ्यां जुषाणा तन्मुखाम्बुजम्।।
आपीतमपि नातृप्यत् सन्तस्तच्चरणं यथा''।।३१।।
गोपीनां तन्निरुद्धानां दृशीनामुत्सवो यथा।।
तथा गोपालदासस्य स्वभाग्यस्तुतिरत्र वै।।३२।।
यत् कृतादियुगैर्लभ्यं तद् भक्त्यापि हि लभ्यते।।

यद् भक्त्या लभ्यते तत्तु न तैर्लभ्यं कदाचन।।३३।।
तस्मात्सकलपुरुषार्थहेतुः सा कलौ मता।।
कल्पद्रुमस्तद्रूपेऽस्मिन् जाते भाग्याभिनन्दनम्।।३४।।
श्रीविट्ठलानुभावेन लीलां सारस्वतीं कलौ।।
अनुभूय कविना गीतं श्रोतर्यपि समं फलम्।।३५।।
जन्मनः पद्यगानेन श्रोता द्वारि स्थितो भवेत्।।
एवं हि भाग्यवान् कोऽपि लीलादर्शनदक्षिणः।।३६।।]

आ सकल कला कलिकालमाँ।।
कल्पद्रुम प्रगटियो आज।।
आ काज मनवांछित पूरवा।।१५।।
आ तैलंगतिलक त्रिभुवनधणी।।
मणि मरकत धनवान।।
आ समान रूप निरखताँ कोइ नहीं।।१६।।
आ गणक गर्गादिक आविया।।
भाविया दिये रे आशिष।।
आ जगदीश श्रीवल्लभघेर प्रगटिया।।१७।।
(इति स्तुत्याशिषौ प्रभुश्रीविट्ठलेशस्य)
आ धवलधन्याश्री गान जे करे।।
उच्चरे श्रीविट्ठलजी-अवतार।।
आ सारस्वतलीला ते जन लहे।।१८।।
आ दासनो दास जाय वारणे।।
बारणे रह्यो रे उत्सव जुवे।।
आ को'एक भाग्यवान भगवदीय ते समे।।१९।।

(एतदवतारगुणसंकीर्तनं पारोक्ष्ये आपरोक्ष्ये तु नयनानन्दनयनकारिकृतः परमानन्दएवेति फलश्रुतिः)

(विवरणम्)

[वल्लभं साधनीकृत्य व्रजवृन्दावनादिषु ।।
पुष्टिसृष्टेः स्थापनं हि फलं विट्ठलकर्तृकम् ।।३७।।
वर्धापनीयोत्सवा श्रीर्धन्यताधायिका च या ।।
प्रातर्गेया सम्प्रदाये धन्याश्रीः कीर्तने हि सा ।।३८।।]

इति श्रीगोपालदासकृतस्य श्रीवल्लभाख्यानान्तर्गततृतीयाख्यानस्य
प्रमेयखण्डे पुष्टिसंम्प्रदायमर्यादास्थापकभगवतो श्रीविट्ठलेश्वरस्य
प्रादुर्भावर्णनपरे गोस्वामिश्रीदीक्षितात्मजेन श्याममनोहरेण
कृतं विवरणं सम्पूर्णम्

QQQ

चतुर्थाख्यान

(विवरणम्)

[सर्गादिलीला: स्थानान्ता: प्रमेयप्रतिपादिका: ।।
प्राथम्यं कारणानान्तु कर्त्रुत्पत्त्याश्रया मतम् ।।१ ।।
प्रमैतेषां हि पुष्ट्यूतिमन्वन्तरनिरूपणात् ।।
प्रमाणत्वेन तेनातो लीला: वर्ण्या: इतोऽग्रिमा: ।।२ ।।
तत्रेयं पुष्टिलीला स्वस्थाप्याभिवृद्धिरूपिणी ।।
श्रीमद्वल्लभमार्गस्य पोषकस्तुतिना ह्यत: ।।३ ।।
मंगलाचरणं तस्य रूपकर्मनिरूपकम् ।।
भजनोपदेशात् कृष्णस्य सेवायां तत्परेण हि ।।४ ।।
लाभपूजाद्यपेक्षाभि: रहितेन हि पोषणम् ।।
उपदेष्टुर्लक्षणोपेतप्रभोर्यद् दर्शनं भुवि ।।५ ।।
तेनैवोत्सारणं सर्वद्वन्द्वानां पुष्टिवर्त्मनि ।।
तत्त्वज्ञत्वं भागवते वेदमर्मविचारणात् ।।६ ।।
तस्योपदेशो भक्तेभ्यो मधुरैर्वचनै: सदा ।।
सन्देहवारकैस्तेन मार्गाचार्यत्वद्योतनम् ।।७ ।।
मधुरैर्वचनैर्भक्तिजननेऽस्यानुकूलता ।।
श्रोतृणां हृदये कृष्णभक्त्याविर्भावसम्पदा ।।८ ।।
पादाम्बुजानां तस्माद्धि वन्दनीयत्ववर्णना ।।
पोषितं भुवनं सर्वं परमानन्दरूपिणा ।।९ ।।
तदेतत्तु हरे:साक्षादवतारत्वसाधकम् ।।
भूभाराज्ञानसंहार: आसुरत्वनिर्वतनात् ।।१० ।।
दु:खाभाव: फलं तद्वत् सुखं चापि निरूपितम् ।।
वृन्दावनस्य शृंगाररूपभक्त्यैवमादित: ।।११ ।।

नित्यलीलाथवा कच्चित् सृष्टिलीला न बुध्यते।।
अवतारोऽवतारी वा तत्त्वं कीदृक्तु विट्ठलः!।।१२।।
किं विचार्यं हि गूढेऽस्मिन् भक्ताधारो हि विट्ठलः।।
आचार्यतल्लजः सर्वभक्तानामभयंकरः।।१३।।
कृष्णसेवारते श्रीमद्विट्ठलेशे हि गोकुले।।
तदन्तेवासिनो मुक्ताः मुक्त्याकांक्षाविसर्जनात्।।१५।।
पुष्णात्येवारविन्दः स्वमकरन्दैर्मधुव्रतान्।।
अत आस्यारविन्दस्य वाण्यां हि मकरन्दता।।१६।।
भगवत्यरतिसन्देहवारणाद् विट्ठलेशता।।
स्वनामवाणीभ्यां सिद्धिः कार्ययोरुभयोरपि।।१७।।
श्वेतश्यामारक्तपीतैः नेत्रवर्णैः चतूरसान्।।
सात्त्विकादिस्वभावोत्थान् भक्तहृद्गोचरानपि।।१८।।
प्रबोधयति यस्माद्धि ततः पोषकता वरा।।
सम्प्रदायेऽस्य हि प्रभोः विट्ठलेशस्य सर्वदा।।१९।।
पद्यैरष्टाभिरुदितम् अष्टसिद्धिसमैरिह।।
स्वसम्प्रदायाचार्याणां सुगेयं वै यशो वरम्।।२०।।]

ते पद वंदु श्रीवल्लभनन्दजी।।
त्रिभुवनमंगल परमानन्दजी।।
सकल जीवनो टाळ्यो द्वन्द्वजी।।
जगमां व्याप्यो मुखमकरंदजी।।१।।
सुखद वंदु श्रीवल्लभसुतनां, पदाम्बुज सुकुमार।।
निगमरहस्य विचार कीधो, सकलजन निस्तार।।२।।
ब्रह्मकुल हरि अवतर्या ते टाळवा भूमि भार।।

नाथ विट्ठल नाम निरुपम, वृंदावन–शृंगार।।३।।
एक रसना केम कहुं गुण, प्रकट विविध प्रकार।।
नित्यलीला नित्यनौतन, श्रुति न पामे पार।।४।।
सकलशास्त्र प्रमाण बोले सारमाँहे सार।।
तत्त्वमाँहे तत्त्व त्रिभुवन, भक्तनो आधार।।५।।
सर्वेअंगो–अंग रसभर्यां, रसभर्यां लोचन चार।।
चलण–वलणे बोधव्याँ हृदे भाव अनेक प्रकार।।६।।
मुखसुगंधे मोह्या अलिसकल ते, आवी करे रे गुंजार।।
सरसवचन उच्चारमात्रे, संशयनो परिहार।।७।।
नाम–व्याजे प्रकट कीधो, मुक्ति–शत्रु–कार।।
भुजदण्डपरसें भय हर्या, एवा नाथ अमित उदार।।८।।

(इति प्रमाणप्रकरणे पोषणरीतिनिरूपणम्)

(विवरणम्)

[अभेदज्ञानतो लीलाभेदेभ्यो मुक्तिरिष्यते।।
भेदांगीकरणे तावद् भीतिरेव विवर्धते।।२१।।
श्रुतिगीताभागवताचार्यवाचां प्रमाणगम्।।
ब्रह्मपरमात्मभगवच्छ्रीकृष्णाकृतिविग्रहम्।।२२।।
प्रमेयं, साधनान्यत्र ज्ञानप्रेमार्चनानि वै।।
सायुज्यञ्चाश्रयश्चापि सालोक्यादिचतुष्टयम्।।२३।।
यथायथं हि जीवानां फलरूपचतुष्टयम्।।
पुष्टौ चित्तस्य प्रावीण्ये व्यसनान्मानसी परा।।२४।।
तनोर्नवत्वमेवात्रान्यत्रापि नूतना तनुः।।
सर्वेष्वेतेषु नो भेदो नाप्यभेदोऽथवा पुनः।।२५।।

ततः प्रमेयफलयोः मानसाधनयोरपि ।।
लीलैकस्याद्वितीयस्यानैकविध्यं हि धर्मगम् ।।२६ ।।
तेषाञ्चोपदेशैस्तु स्वस्वरूपप्रबोधनम् ।।
तादृङ्नियोगतश्चैवं संसृतेर्वारणेन च ।।२७ ।।
उच्चावचगतानान्तु सर्वानन्दप्रदः परः ।।
सेव्यसेवकयोस्तेन सर्वतापनिवारकः ।।२८ ।।
योहि श्रीवल्लभस्तस्य मार्गस्यायं सुपोषकः ।।
तत्सेवाकथयोः ज्ञाता वक्ता सम्प्रेरको वरः ।।२९ ।।
वर्णितः कारिकाभिस्तु रीतिर्या पोषणे वरा ।।
बालगोपालदासेन तत्कृपाभाजनेन हि ।।३० ।।]

स्वस्वरूप अर्थेप्रयोजिया, कृत हुता जे संसार ।।
राज–काजे जोड़िया जन, उच्चावच नरनार ।।९ ।।
आगळ अंशे प्रगटिया ते, ग्रन्थ कह्या बहु वार ।।
श्रीयशोदोत्संग–लालित, पूरण अतिसुकुमार ।।१० ।।
अनेक धर्म कह्यां प्रभुजीए, निगमने अनुसार ।।
गिरिराजधरणनो ताप टाळ्यो ।।
श्रीलक्ष्मणसुत निरधार ।।११ ।।
पोते ते प्रगट पोतातणो, रसतणो कर्योरे उच्चार ।।
पोते अंगोअंग सुखद शोभा, सदन–अंगीकार ।।१२ ।।

(इति स्वस्वरूपप्रबोधननियोगाभ्यां प्रभुसेवार्थयोजनं पुष्टिजीवानाम्)

(विवरणम्)

[स्थापनं साधनीकृत्य पितृवर्त्माभिवर्धनम् ।।
पोषणं फलरूपं हि तुर्याख्याने निरूपितम् ।।३१ ।।

बहवो द्वादशा मासादयस्त्यक्त्वा हि तान् पुनः।।
रसराट्स्कन्धसंख्योक्तौ हेतुः पुष्टेर्हि मूलता।।३२।।
प्रमाणेषु हि सर्वेषु ज्योतिरूपफलेषु च।।
आख्याने चाग्रिमे ह्यूतिर्विलासो हि विवक्षितः।।३३।।]

स्कन्धसंख्याए कह्यां पद, श्रीभागवत रसराज।।
भक्तजन–पदरज–प्रतापे सकल सरियां काज।।१३।।
(इति आख्यानोपसंहारे पदसंख्याभिप्रायनिरूपणम्)

[अकुतोभयकारित्वाद् विट्ठलेशस्य भूपता–।।
द्योतने भाति रागोऽयं 'भूपकल्याण'नामकः।।३४।।]

इति श्रीगोपालदासकृतस्य श्रीवल्लभाख्यानान्तर्गतचतुर्थाख्यानस्य
प्रमाणखण्डे पुष्टिसम्प्रदायपोषणलीलाप्रकारवर्णनपरे
गोस्वामिश्रीदीक्षितात्मजेन श्याममनोहरेण
कृतं विवरणं सम्पूर्णम्

QQQ

पंचमाख्यान

(विवरणम्)

[पद्यैकेन प्रतिज्ञात्र पापसन्तापहारको।।
विट्ठलेशप्रभुस्साक्षाद् रासलीलानुभावकः।।
दुःखाभावसुखावाप्तिसाधकत्वेन वर्णितः।।१।।
ऊत्याख्यानोपक्रमेऽत्र वासनानां विशोधकः।।
प्रमेयावगतिस्तेन प्रमाणत्वस्य संगतिः।।२।।]

श्रीविट्ठल सुखकारी।।
नामे निष्पाप थाय नरनारी।।
दुर्गति सकल निवारी।।
प्रगट्या श्रीव्रजपति रासविहारी।।१।।
(इति एतदाख्यानमंगलाचरणम्)

(विवरणम्)

[सदसद्वासनावृद्धिनाशकत्वेन साधकः।।
त्रिभिर्हेतुस्त्वग्रिमैर्हि पद्यैरुक्तार्थसाधकैः।।३।।
प्रपञ्चमायिकत्वे हि न शुद्धं भजनं भवेद्।।
नापि कृष्णं हि विस्मृत्य प्रापञ्चिकरतिर्वरा।।४।।
भक्तिस्तत्कर्तृकत्वस्य ज्ञानेनापि न वै ध्रुवा।।
लीलात्वावगतेः किन्तु कर्मणां नामरूपयोः।।५।।
अतोऽत्र मनसो वाञ्छागोचरो हि निरूपितः।।
भक्तेर्भावानुकूलानां वासनानां हि वर्णने।।६।।
विचारणीयमत्रैतद् कोहि वैतण्डिको मतः।।

नोपलब्धा प्रभोर्ग्रन्थेष्वियं वैतण्डिकप्रथा।।७।।
स्वपक्षरक्षणे दक्षः प्रतिपक्षक्षयंकरः।।
अयं प्रभुः कुतश्चैवं वितण्डारीतिमाश्रयेत्!।।८।।
परासहिष्णुरपि यः स्वमतस्थापनाक्षमः।।
मूर्खोवितण्डां कुरुते 'कुतो'हेतुकुशब्दतः।।९।।
न तद्वचनैः भक्तैर्भ्रमितव्यमितीरणात्।।
भक्तिपक्षैकपातित्वे प्रभुसामर्थ्यवर्णनम्।।१०।।
अत्राख्यानकृतोऽभीष्टं ततोऽन्या कल्पना मुधा।।
युक्तयः खण्डनोक्ता हि वितण्डारीतितोऽपि हि।।११।।
खण्डिता विट्ठलैश्चेति प्रौढिमोक्तिःपितुर्हि मे।।
द्वैतखण्डनकारेण श्रीहर्षेण प्रवर्तिता।।१२।।
युक्तिरीतिरयुक्तेति तातोक्तिर्नादृढा मता।।
प्रसक्त्यानुप्रसक्त्योक्तं किञ्चिदत्र मतं मम।।१३।।
किञ्चार्थेतु श्रुतेर्नीते लीलापरतया हठात्।।
''ये धातुशब्दाः यत्रार्थेह्युपदेशे प्रकीर्तिताः।।१४।।
तथैवार्थोवेदराशेः कर्तव्यो नान्यथा क्वचिद्''।।
इत्याचार्योक्तरीत्या हि वैपरीत्यं कुतो नहि?।।१५।।
''मां विधत्तेऽभिधत्ते मां विकल्प्यापोह्यते त्वहम्।।
एतावान् सर्ववेदार्थः शब्द आस्थाय मां भिदाम्''।।१६।।
इति भागवतोक्त्यार्थस्यान्यत्र नयने तथा।।
भगवत्स्वरूपलीलादेर्वर्णने नार्थबाधनम्।।१७।।
तदेवोक्तं हि सामर्थ्यं स्वगुरोर्विट्ठलस्य हि।।
श्रुतीनामपि भक्तौ हि तात्पर्यनयनं हठात्।।१८।।]

(इति सम्प्रदायाचार्यस्य असद्वासनानिवृत्तिपूर्वकसद्वासनाभिवर्धकत्वेन भक्तिपोषकत्वम्)

मायिक–मत जेणे खंड्यो ।।
भक्तिमारग जेणे बहुपेरे मंड्यो ।।
उत्पथजन सर्वेदंड्यो ।।
मूरख हेतु कुशब्द वितंड्यो ।।२ ।।
वदन–सुधाकर–जोते ।।
वचन सरस रसरास उद्योते ।।
नव–जलघन–वपु पोतें ।।
भक्ति सरस कीधाँ प्रभु हो ते ।।३ ।।
भक्तिपक्ष दृढ कीधो ।।
वचनसुधारस जन श्रुति पीधो ।।
अर्थ सकल तेनो सीधो ।।
ते लीलामाँहे ताणीनें लीधो ।।४ ।।
(इति सदसद्वासनावारणपोषणप्रकारौ)

(विवरणम्)

[प्रतिज्ञातार्थोपनयः चतुर्भिः गीयतेऽत्र हि ।।
अंगीकारेण लीलायां भक्तिर्या जायते वरा ।।१९ ।।
प्रभोः श्रीविट्ठलेशस्य श्रुत्यादेरर्थवर्णनम् ।।
श्रुतं येन स भगवल्लीलायां तत्परोऽभवत् ।।२० ।।
प्रपञ्चो भगवल्लीलारूपोऽयमिति बोधतः ।।
अहन्ताममताजन्यतापानां शमनं मतम् ।।२१ ।।
सोऽहन्तामम्तातापो लीलानवगतेर्मतः ।।
तस्य माहात्म्यतादात्म्यज्ञाने तच्छुद्धिरिष्यते ।।२२ ।।
माहात्म्येन त्वहन्ताया ममतायाश्चेतरेण हि ।।

अहन्ताममताशुद्धौ रतिरंशात्मगामिनी ।।२३ ।।
परमात्मरतिरूपेण लीलया स्फुरति तदा ।।
पारोक्ष्ये सा तु तापेषु लीलात्वमवभासयेत् ।।२४ ।।
निर्वृतिरापरोक्ष्ये चेदानन्दानुभवेन हि ।।
तत्रैव पुरुषार्थानां चतुर्णामंगता मता ।।२५ ।।
अन्यथा तु रसाभासो भक्तावपि विजायते ।।
व्यापिवैकुण्ठरूपे हि व्रजे लीला सनातनी ।।२६ ।।
स्वहृदि तां स्थिरीकर्तुं प्रार्थ्यते विट्ठलेश्वरः ।।
तस्माच् छ्रीविट्ठलेशेनाथवा तस्य विचारणात् ।।२७ ।।
समस्तपुरुषार्थानां सिद्धेरुपनयोऽत्र हि ।।]

जे लीलामां अंगीकार करियो रे ।।
तेनो सकल ताप निस्तरीयो रे ।।५ ।।
जे(/)नें श्रीविट्ठलनाथ विचारे रे ।।
तेनें प्रगट पदारथ चारे रे ।।६ ।।
उपरांत भजनफल आपे रे ।।
व्रजमंडल स्थिर करि स्थापे रे ।।७ ।।
तेने देवमुनि सर्वेगाये रे ।।
ते तो सर्वउपरांत सुहाये रे ।।८ ।।

(इति आचार्यश्रीविट्ठलेशस्य श्रुत्यादिपरमतात्पर्याविष्कारकस्य पञ्चविध पुरुषार्थसाधकत्वम्)

(विवरणम्)

[तदंगीकृतजीवानां मार्गेऽस्मिन् हि प्रवेशतः ।।२८ ।।
मार्गस्यापि स्वरूपोऽत्रानुषंगिकतयोदितः ।।

कालादिपञ्चरूपाच्चाक्षरादपि ह्युत्तमः ।।२९ ।।
पुरुषोत्तमस्य लीला हि नित्यात्मरतिरूपिणी ।।
भगवद्गुणरूपा हि गुणानां संख्ययोदिता ।।३० ।।
श्रीवल्लभश्रीनाथाभ्यां कीर्तिता कारितात्र हि ।।]

तेने काल–कर्म नव बाँधे रे ।।
यम ते शिर धनुष न साँधे रे ।।९ ।।
एवो मार्ग श्रीवल्लभवरनो रे ।।
ज्याँ नहि प्रवेश विधि–हरनो रे ।।१० ।।
ज्याँ नित्यरास बहुपेरे रे ।।
मध्य नायक निरतत घेरे रे ।।११ ।।
ज्यां रत्नजटित तट सरिता रे ।।
नवपल्लव भूमि हरिता रे ।।१२ ।।
ज्यां रत्नधातु गिरिराजे रे ।।
वांजित्र विविध पेरे वाजे रे ।।१३ ।।
ज्यां युवती–यूथ बहुमाँये रे ।।
श्रीजी श्यामलवर्ण सुहाये रे ।।१४ ।।

(इति श्रीवल्लभविट्ठलप्रवर्तितसम्प्रदायस्य भगवदात्मरतिरूप नित्यलीला–प्रवेशसम्पादकत्वेन कालादिसर्वातीता)

(विवरणम्)

[उक्तस्योपनयादूर्ध्वं प्राप्तं निगमनं तथा ।।३१ ।।
ऊर्ग्यतेऽग्रिमपद्येषु भावोद्बोधनाय च ।।
कृष्णसेवापरगुरोरादौ हि सर्वभावतः ।।३२ ।।
भजनं विहितं यस्मादाचार्यैः साधनादिमम् ।।

तस्मान्मत्पितृचरणानां संयोगाभ्यर्थनार्थिका।।३३।।
व्याख्या संयोगएवैकं फलं पुष्टाविति ग्रहात्।।
ज्ञातस्स्वरूपसांनिध्ये कथं रूपवियोगिता?।।३४।।
अतोहि भगवद्रूपानुभावस्य वियोगिता।।
विवक्षिता विभात्यत्र भावभेदोऽथवा भवेत्।।३५।।
दर्शयेन्न गुरुर्यावद् ह्यनुभावो हरेरिह।।
आस्याविर्भाववैयर्थ्यापत्तिर्नूनं भवेत् तदा।।३६।।
पश्चात्तदुपदेशेन भगवत्सेवनान्मता।।
श्रीकृष्णस्वरूपलीलानामनुभावः स्वसेवने।।३७।।
तस्मात्तत्प्रार्थनेयं हि कवेर्बोध्या सुबुद्धिभिः।।]

एणीपेरे श्रीगुसांइजीने जाणो रे।।
जाणी अहर्निश गाई वखाणो रे।।१५।।
जे जीव जाति (जात) होय कोय रे।।
तेने तत्क्षण सर्वेसुख होय रे।।१६।।
सेवक जन दास तमारो रे।।
तेनो रूपवियोग निवारो रे।।१७।।

(इति प्रभुचरणे भगवदनुभावप्रदर्शनप्रार्थना)

(विवरणम्)

[सद्वासनाभिवृद्ध्यर्थं पुष्ट्याचार्यत्वसाधनैः।।
निजाचारस्य निर्वाहो ह्याख्याने फलमीरितम्।।३८।।
समर्पणाद् वा तत्पुष्टिस्तत्पुष्ट्या वा समर्पणम्।।
ब्रह्मसम्बन्धकरणात्तु सर्वेषां ब्रह्मतेति तौ।।३९।।
सन्देहवारकौ वन्द्यौ मार्गप्राकट्यकारकौ।।

योऽङ्गीकर्ता हि मार्गेऽस्मिंस्तल्लीलैवात्र वर्णिता ।।४० ।।
सावेर्यापरपर्यायसामेरीरागयोजना ।।
आख्याने गुर्जरान्ध्राणां सुखदा कविना कृता ।।४१ ।।]

इति श्रीगोपालदासकृतस्य श्रीवल्लभाख्यानान्तर्गतपञ्चमाख्यानस्य
प्रमाणखण्डे पुष्टिसम्प्रदायौपयिकोतिलीलाप्रकारवर्णनपरे
गोस्वामिश्रीदीक्षितात्मजेन श्याममनोहरेण कृतं
विवरणं सम्पूर्णम्

QQQ

षष्ठाख्यान

(विवरणम्)

[प्रार्थनैकेन पद्येन गुरुः प्रार्थ्योहि विट्ठलः।।
यतस्तस्य हि धर्मोऽन्तर्व्रजावस्थापनं सदा।।१।।
''भगवानेव हि फलं स यथाविर्भवेद् भुवि।।
गुणस्वरूपभेदेन तथा'' पुष्टौ फलं भवेत्।।२।
आचार्यचरणोक्तं यद् गुणरूपप्रकाशनम्।।
व्रजभूमौ भगवतः श्रीकृष्णस्येति प्रार्थना।।३।।
''सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिपः।।
स्वस्यायमेव धर्म''स्तु तत्राधिकरणं व्रजः।।४।।
तेनात्र षष्ठाख्याने हि मन्वन्तरविबोधके।।
विवक्षितोऽभिलषितोऽत्र स्वधर्मोव्रजभूमिगः।।५।।]

सगुण सनेही श्यामळा व्हाला ।।
अहर्निश दर्शन आपो जी।।
परम सुख देवाने काजे ।।
व्रजमंड़ल स्थिर करी स्थापो जी।।१।।

(इति पुष्टिसम्प्रदाये व्रजाधिपभजनरूपधर्माधिकरणभूतव्रजमण्डलस्थापनाय गुरोः प्रार्थनम्)

(विवरणम्)

[प्रार्थ्येगुरौ हि सामर्थ्यं नामरूपाश्रितोद्भुतेः।।
वाक्श्रोत्रयोः नेत्रयोश्च व्यापारेण समाश्रयः।।६।।]

श्रीवल्लभकुंवर कोड़ामणां ।।
तमारुँ नाम निरंतर लीजे जी।।
रूप–सुधारस–माधुरी ते लोचन ।।
भरी–भरी पीजे जी।।२।।

(इति भगवल्लीलाकथयोः हृदि स्थिरस्थापनार्थं सर्वात्मना गुर्वाश्रयः)

(विवरणम्)

[सार्धत्रयोदशैः पद्यैः कृष्णलीलाकथापरैः।।
नित्यलीला व्रजे यासीद् हृद्याविर्भावनाय वै।।७।।
निरुद्धता या गोपीनां यशोदोत्संगलालिते।।
सद्धर्मोभजनं भक्तगेहे तद्भावभावना।।८।।
मनोरथस्य तस्यापि साध्यसिद्धविभेदतः।।
सद्धर्मेह्यधिकारित्वं समेषां च कवेरपि।।९।।
कृतातो नित्यलीला या नन्दगेहे व्रजौकसैः।।
सार्धं कृष्णेन तद्भावनातः सेवाधिकारिता।।१०।।
सेवाकथान्यतरयोर् अंगत्वमनुकल्पता।।
विकल्पताचारम्भेऽनारम्भेऽशक्यतयापिच।।११।।
तस्माल् लीलाकथायां हि कवेर्भावो निरूपितः।।
आत्मप्रार्थ्यतयाख्याने चैतस्मिन् प्रभुसंन्निधौ।।१२।।
यदप्युक्तं ''सर्वदैव दर्शनं देहि''हेतुकम्।।
संयोगएव परमं फलं प्रभुमतं त्विह।।१३।।
तत्रापि ललिते स्तोत्रे यदुक्तं तैरपि स्वयम्।।
''प्रायो न दर्शनापेक्षा यत्स्वयं तद्रसात्मकम्।।१४।।
प्रियाहृदयनेत्रेषु निरुद्ध''इति वर्णने।।

ततः संयोगानुभूतेः प्रार्थनं गमकं नहि।।१५।।
ततस्तु पितृचरणानां संयोगफलवादिनाम्।।
व्याख्या त्वप्रकृता भाति रूपाकांक्षाविभेदतः।।१६।।
''भगवान् व्यनक्ति स्वगतिं ह्याचार्यवपुषे''ति यत्।।
श्रीमद्भागवते प्रोक्तं स्वगुरोस् तत्त्वदर्शनम्।।१७।।
तेनैवमत्र संयोगविप्रयोगौ फलात्मकौ।।
नाभिप्रेतौ मतौ पित्राज्ञप्तचिन्तापरस्य मे।।१८।।
''एषह्येवानन्दयाति''श्रुत्या सर्वरसात्मके।।
वात्सल्यसख्यशृंगारभावानां योजनं मतम्।।१९।।
सर्वेऽपि द्विदलात्मानो ह्यन्योन्यविरहात्मकाः।।
''ज्ञानन्तु गुणगानं हि परोक्षे तत् प्रतिष्ठितम्।।२०।।
प्रत्यक्षे भजनं श्रेष्ठं रात्रौ च दिवसे तथा''।।
गोपानां गोपिकानां च संयोगविरहौ तथा।।२१।।
तत्सेवाध्यानरूपौ हि चक्रवत् क्रामिणौ फले।।]

ते पद क्यारे देखिशुँ जे गोधन पूँठे धाये जी।।
व्रजसुंदरी–मुख–सुख पामीने वारंवार अघाये जी।।३।।

(इति वात्सल्यसंयोगरसभावना)

दिवसे सहू श्यामा मळी रसरूप तणो यश गाये जी।।
गोपमंड़ळी मध्य देखीने वारंवार सुख थाये जी।।४।।
वासरनिर्वाह एम करे सखी.....।।

(इति गोपिकानाम् स्वबाह्यशंगाररसात्मकविप्रयोगे गोपानां सख्यरसात्मक–बाह्यसंयोगस्य आन्तरभावना)

.....सखी सायंकाळे पेखे जी।।

अलक मुख खुररज लागी ।।
ते कमल भ्रमर विशेखे जी।।५।।
गोपबालक मंड़ली मध्य रंग अनेक उपजावे जी।।
मत्त–गजगति–मलपताँ ते श्रीगोकुलमां आवे जी।।६।।
लोचनभृंग पीये घणुं ते प्रगट मुखमकरंद जी।।
कमलपत्र शी आंखड़ी ।।
ते जोई–जोई टाळ्यो द्वंद्व जी।।७।।
जोतां तृप्ति न ऊपजे प्रभु अधरसुधाररस पाये जी।।
भुजलता भीड़ी भामिनी त्यारे ।।
दिवस ताप बुझाये जी।।८।।

(इति गोकुलस्थगोपगोपीनां सख्यशृंगारसंयोगयोः लीलाभावना)

पूरणसुख दई गोष्ठमाँ प्रभु आघेरा पाँउ धारे जी।।
यशोदाजी ले भामणाँ सुतने राई–लूण उतारे जी।।९।।
वस्त्रांचल मुखरज पोंछीने रूप सकल निहाळे जी।।
ऊभी थाय रोमावली कर ।।
कोमल अंग संभाळे जी।।१०।।
करी पेरे–पेरे वारणा सुतने सदनमां पधरावे जी।।

(इति वात्सल्यभावे मातुः यशोदायाः यः स्वसुतदर्शनलालनसंयोगः तद्भावना)

[श्रुतीनां हि प्रमेयोऽयं भक्तगेहे विभावितः।।२२।।
प्रमाणैर्नावगम्योऽतो गेहकार्यमिषेण हि।।
भगवत्सेवनं कार्यं नित्यं नैमित्तिकं तथा।।२३।।
तादृश्याः भावनायाश्च मनोरथसुधावनम्।।

येषु सञ्जायते तेषु पुष्टिभक्त्यधिकारिता।।२४।।
सेवनाया अशक्यत्वे परिचर्यामिषेण हि।।
''अतः स्थेयं हरिस्थाने तदीयैः सह तत्परैः।।२५।।
अदूरे विप्रकर्षेही''ति सिद्धान्तबोधनम्।।]

सुंदरी गृहकारज मिषे वळी निरखवानें आवे जी।।११।।
उष्णोदक सोंधो भेळीने अंग अंगोळ करावे जी।।
अंगवस्त्र करी स्वच्छ वपुने पाछे तेल लगावे जी।।१२।।
अनेक सुगंध वसन ने भूषण फूल अंबोड़े फावे जी।।
ठण्ठणतो व्हालो लाड़कड़ो ।।
ते भोजनशाळाए आवे जी।।१३।।
राधा-अधर-सुधा विना पियुने ।।
बीजुं ते कांई नव भावे जी।।
प्रातः पधारे ने निशाए आवे ।।
व्हालो प्रीति नवी उपजावे जी।।१४।।
मातानुं मन रंजवा व्हालो आरोग्या बहु स्वादे जी।।
सुगंध बीड़ी कर धरीने उठ्या नूपुरने नादे जी।।१५।।
सकल व्रजमां पोढ़िया व्हालो ।।
विविध रस सुखदान जी।।

(इति क्रियारूपभक्तिमद्गेहस्थभजनं प्रमाणरूपभक्तिमतां किञ्चिदशक्यमपि तत्परिचर्यापरम्परया शक्यमपि भवतीति भावनानिरूपणम्)

(विवरणम्)

[एकेन स्वीयसर्वेषु भक्तेष्वपि हरेस्तथा।।२६।।
निरुद्धतायाः सिद्धिर्हि विट्ठलानुग्रहाद् भवेत्।।

प्रार्थ्योपसंहृतिस्त्वत्र सार्धैकेनैव द्योतिता ।।२७।।
साधनीकृत्य पुष्टानामाचारं निखिलेष्वपि ।।
व्रजमण्डललीलाया: प्राकट्यं फलमीरितम् ।।२८।।
षष्ठाख्याने पूर्वोत्तरभावरूपा हि संगति: ।।]

ए लीला मारे मन वसो जे भक्त मागे मान जी ।।१६।।
श्रीविट्ठल द्विजरूप तमारी लीला एणी पेरे झाझी जी ।।
ओळव्ये केम चालशे जे प्रीत अमशुं बाझी जी ।।१७।।

(विवरणम्)

[दर्शने प्रातरारभ्य मनोरथसमुद्भव: ।।२९।।
सञ्जायते हि रागेण भक्तेषु परजेन हि ।।
एवं विवक्षितं भाति प्रभूणां चेत्कृपा मयि ।।३०।।]

इति श्रीगोपालदासकृतस्य श्रीवल्लभाख्यानान्तर्गतषष्ठाख्यानस्य
प्रमाणखण्डे पुष्टिसम्प्रदायसद्धर्मलीलाप्रकारवर्णनपरे
गोस्वामिश्रीदीक्षितात्मजेन श्याममनोहरेण
कृतं विवरणं सम्पूर्णम्

QQQ

सप्तमाख्यान

(विवरणम्)

['ज्योतींषि'नामके खण्डे लीलायाश्चाश्रयस्य वै ।।
द्युतिर्भक्तिनिरोधाभ्यां देहिनामथ मुक्तिना ।।१ ।।
ईशानुगमनं भक्तिः सेतरासक्तिवर्ज्जिता ।।
चेन्निरोधः स्वस्वरूपेष्ववस्थानं हि मुक्तता ।।२ ।।
सप्तमे चाष्टमे चैवान्तिमे चापि क्रमेण हि ।।
आख्यानेष्विह वर्ण्यानां विषयाणान्तु संगतिः ।।३ ।।
भगवत्समर्पिताहन्ता तथैव ममतापि वै ।।
स्यातां सद्वासनातस्ते योग्ये शुद्धिर्निरुद्धता ।।४ ।।
ह्यनन्यासक्तयोर्लोके मुक्तेऽलौकिकता तयोः ।।
मर्यादापुष्टिभक्त्योर्हि भेदोऽत्राप्रतिपित्सितः ।।५ ।।
एकैव पुष्टिभक्तिर्या व्रजलीलानुभाविका ।।
स्वगृहे तनुवित्तादेः श्रीकृष्णाय समर्पणम् ।।६ ।।
सेवारूपा समाख्याता कथारूपापरा मता ।।
श्रुतिगीताब्रह्मसूत्रश्रीमद्भागवतस्य हि ।।७ ।।
एकवाक्यतया ब्रह्म परमात्मा भगवानपि ।।
श्रीकृष्णएव श्रोतव्यः कीर्तितव्यः सएव हि ।।८ ।।
स्मर्तव्यो भजनीयश्च दास्यसख्यमनोरतेः ।।
स्वस्वीयार्पणसेवायां स्वगेहाधिष्ठितस्य हि ।।९ ।।
भक्तये वापि भक्त्या वा मध्यमोत्तमभावतः ।।
पुष्टिभक्तेरियं रीतिः व्रजराजावलम्बिनी ।।१० ।।
भावेन भावनेनापि फलसाधनभेदतः ।।
ईशस्यानुगतिस्त्वित्थम्भूता भक्तिर्हि वर्ण्यते ।।११ ।।

सगुणा निर्गुणा भक्तेर्द्वैधं तादात्म्यमूलकम्।।
भेदलीलासहिष्णुत्वं स्वरूपाभेदपूर्वकम्।।१२।।
लीलाभेदावलम्बिन्याः भक्तेः सगुणता मता।।
स्वरूपाभेदबोधो हि लीलातो मोचको मतः।।१३।।
लीलया भिन्नभूतस्य स्वरूपेऽद्वयता परा।।
यो लीलाश्रययोर्भेदः यश्चाभेदः स्वरूपगः।।१४।।
'तादात्म्य'पदवाच्यः सो भक्तेस्तदनुभावता।।
माहात्म्यज्ञानपूर्वा चेत् तादात्म्यरतिनिर्गुणा।।१५।।
''क्रियया क्रतुभिर्दानैः तपस्स्वाध्यायमर्शनैः।।
आत्मेन्द्रिजयेनापि संन्यासेन च कर्मणाम्।।१६।।
योगेन विविधांगेन भक्तियोगेन चैव हि।।
धर्मेणोभयचिह्नेन यः प्रवृत्तिनिवृत्तिमान्।।१७।।
आत्मतत्त्वावबोधेन वैराग्येन दृढेन च।।
ईयते भगवान् एभिः सगुणो निर्गुणः स्वदृक्''।।१८।।
''ज्ञाननिष्ठश्च मन्निष्ठो नैर्गुण्यो भक्तिलक्षणः।।
द्वयोरप्येकएवार्थोभगवच्छब्दलक्षणः''।।१९।।
''अविश्वं विश्वसृक् चापि ह्येकं भूतेन्द्रियात्मकम्''।।
''कश्चिदेवं हि मनुते ह्यात्मा चानन्दमूर्तिमान्''।।२०।।
इत्थम्भूतं हरिं मत्वा भजनानन्दतत्परः।।
निर्गुणो हि मतो भक्तः सुबोधिन्यां हि वल्लभैः।।२१।।
वेदोदधौ यात्मरतिः सर्वस्नेहाश्रया हि सा।।
''न वा सर्वस्य कामाये''तिश्रुत्या निरूपिता।।२२।।
श्रीमद्भागवते तस्याः माहात्म्यज्ञानसंस्कृतिः।।
तया हि भक्तिरूपे तु स्फुटत्यात्मरतिस्तदा।।२३।।

''अहमात्मात्मनां धातः प्रेष्ठः सन् प्रेयसामपि।।
अतो मयि रतिं कुर्याद् देहादिर्यत्कृते प्रियः''।।२४।।
सर्गेऽतो निर्गुणा भक्तिर् आत्मानन्दरतिप्रदा।।
प्रयोजनानुकूला हि सृष्टेः सृष्टेऽन्यथा कुतः!।।२५।।
अतः श्रीवल्लभसुतो व्रजे भक्तिपरायणः।।
पित्रा संकीर्तितां भक्तिं चकारैवोत्तमामिति।।२६।।
तत्कीर्तिं कीर्तयन्नाद्ये पद्ये तद्भक्तिवैभवम्।।
सेवाकथारूपभक्तेः नैर्गुण्यं प्रतिपादयन्।।२७।।
उन्नीते नवनीते हि निःसारे साधनान्तरे।।
फलान्तरे रतिर्याश्च सोभयोः श्वेतिमाभ्रमः।।२८।।
धर्मैकस्यैव सामान्याद् धर्म्यैक्यभ्रमणाज् जनाः।।
परिभ्रमन्ति संसारे निःसारे विमुखाः जनाः।।२९।।
इति द्वितीयपद्येऽपि कविना वर्ण्यते मुदा।।]

आप सेवा करी शीखवे श्रीहरि।।
भक्तिपक्ष वैभव सुदृढ़ कीधो।।
आपनी लीला ते वदन पोते कही(धरी)।।
उच्चार आनंद ते अधिक दीधो।।१।।
वेददधि मध्य नवनीत जे भजनरस।।
मथित माधुरी जीवे श्रवण पीधो।।
तक्रसम कर्मपथ स्नेह-रस-हीन जे।।
श्वेत जाणी विमुख ताणी लीधो।।२।।

(इति निर्गुणभक्त्यनुभावरूपयोः सेवाकथयोः श्रीमद्वल्लभविट्ठलवैभव-रूपता)

(विवरणम्)

[विषयासक्तिमूढानां विमुखानां ह निन्दनम् ।।३० ।।
''ब्रह्मानन्दात् समुद्धृत्य भजनानन्दयोजने ।।
लीला या''हि निरोधार्था साप्यत्र विनिरूप्यते ।।३१ ।।
''ब्रह्मानन्दे प्रविष्टानामात्मनैव सुखप्रमा ।।
संघातस्य विलीनत्वाद् भक्तानान्तु विशेषत: ।।३२ ।।
सर्वेन्द्रियैस्तथाचान्त:करणैरात्मनापि हि ।।
ब्रह्मभावात्तु भक्तानां गृहएव विशिष्यते'' ।।३३ ।।
व्युच्चरिता: विप्रयुक्ताश्चात्मानन्दानुभूतये ।।
भोग्या जीवा यएवेह न भक्त्या ते भजन्ति हि ।।३४ ।।
अविद्याभातविषये रममाणा पशूपमा: ।।
निजात्मानन्दवैविध्ये भोग्यास्ते भगवन्मता: ।।३५ ।।
ज्ञानिनोऽहंधिया तस्योपासने हि परायणा: ।।
ब्रह्मानन्दानुभूत्यै ह रमन्तो मोक्षकांक्षिण: ।।३६ ।।
अनुग्रहेणैव भगवान् येषां भोक्तृत्वमिच्छति ।।
ते भूमौ भजनानन्दभोक्तारो भवितुं क्षमा: ।।३७ ।।
भजनानन्दभोक्तृणां भावभेदोऽत्र विद्यते ।।
श्रियं ब्रह्मानन्दरूपां भक्ता: वांछन्ति नैव ताम् ।।३८ ।।
तत्कामास्त्विह लीलायां चैद्यरावणपौण्ड्रका: ।।
ततोहि तदनिच्छातो भजनानन्दैकरागिता ।।३९ ।।
विदुषां मतिमतामेतल्लीलेहैव भूयसी ।।
कृष्णलीलारसाविष्टरासलीलामहोदधे: ।।४० ।।
भक्त्यैकलभ्यस्य गुरो: दौंलभ्यं चापि वर्णितम् ।।
इति निन्दास्तुती पद्यैस्सार्धसप्तभिरग्रिमै: ।।४१ ।।

''स्तुत्यर्था यान्यनिन्दा सा स्तुत्यं स्तौति''नयादिह।।
लीलायामन्यस्फूर्तिः नो मन्तव्या हि कदाचन।।४२।।]

ए चरणशरण विना लोक दशचारमां।।
कहो(नि/)ने को(/के)नो कांई अर्थ सीधो।।
शुं कहुं चतुर थई थई अने विस्तरे।।
भजे नहि पशु जेम विषय की(/गी)धो।।३।।

(इति विषयासक्ततया अप्रपन्नानां निन्दा)

बोल वल्लभसुवन विमल वाणी।।
जेनी गति ब्रह्मादि देवे न जाणी।।
गूढ़ रस तत्त्व जे वेदनी वाणी।।
ते प्रगट कीधी भक्त हेत जाणी।।४।।
नंदनंदनरूपे रासलीला करी।।
पोते न उच्चरी छानी राखी।।
दिवस एकार्धनो(एकादनी) उत्तराकुंवर प्रति।।
व्यासनंदन विमल वदन भाखी।।५।।
ब्रह्मादि महामुनि अतिज्ञान पारंगत।।
ते मधुसिंधुनी कहिये माखी।।
न कोई हुवो न होय ए रूप सम।।
तेहनाँ सकल निजनिगम साखी।।६।।

(इति त्रिभिः ''आचार्यं मां विजानीयाद्'' इति श्रुतेः पुष्ट्याचार्यस्य पुरुषोत्तमत्वेन वेदादिशास्त्रप्रतिपित्सितत्वेऽपि कण्ठतोऽप्रतिपादनं लोक-वेदातीतत्वहेतुकम्)

ए प्रभु रसपुंज ते भूमिपर रुचि करी।।
भाग्यहीन जीव जेणे कणिका न चाखी।।

तेने देव ऊपर रह्या धिक्कार बोले।।
मंदमति कही अने निंदा दाखी।।७।।
विबुध वांछे वास वसुमती ऊपरे।।
श्रीवल्लभकुंवरनी टहेल करवा।।
(इति आचार्यविमुखाभिमुखयोः जीवयोः गर्हास्तुती)

(विवरणम्)

[भुवि भक्तिप्रचारैककृते स्वान्वयकृत्पितुः।।
वंशोदधिविधुर्भक्तिकल्पद्रुमनवांकुरः।।४३।।
श्रीगोकुलकृतावासः कालिन्दीपुलिनप्रियः।।
गोवर्धनागमरतः प्रियवृन्दावनाचलः।।४४।।
कृष्णसेवापरो भूत्वा कृष्णसेवोपदेशकः।।
श्रीभागवतगूढार्थप्रकाशनपरायणः।।४५।।
व्रजेऽवात्सीद् यदा तस्य या सेवारीतिरुत्तमा।।
प्रवर्तितोपदिष्टा खल्वष्टमस्योत्तरार्धतः।।४६।।
चतुर्दशस्य पूर्वार्धंयावत् पद्यैः हि सप्तमे।।
भक्त्याख्याने गुरोरित्थं परिचर्यैककांक्षिणा।।४७।।
कविनानुगृहीतेन गोपालेन ह्यतोऽत्र हि।।
सम्प्रदायाचार्यवर्येलीलालक्षणसंगतिः।।४८।।
किञ्च
स्वकीयानां कुमारीणां सेवाभावो हि स्वगृहे।।
कृष्णदासाद्यधिकृते गोवर्धनगिरिस्थिते।।४९।।
परार्थस्थापिते देवे चन्द्रावल्याः विभावना।।
स्ववर्त्मभावनाग्रन्थेषूक्ता वै श्रुतिरूपता।।५०।।

वरस्तु रात्रौ क्रीडाया: कुमारीणां व्रतेप्सित:।।
श्रुतिरूपा: प्रमाशक्त्या स्वत: श्रुत्वैव वव्रजु:।।५१।।
अतो नेत्रकटाक्षेण निशाविहृतिसूचना।।
आभ्यन्तरफलरूपा सा स्वगृहे सेवनोत्तरा।।५२।।
चन्द्रावल्या: भावनात: सेव्यसेवकयोरपि।।
मिथो माधुर्यभावात्मान्योन्यप्रणयिताकथा।।५३।।
दिनैकार्धमिते काले विप्रयोगासहिष्णुता।।
तुरंगगतिना गत्वा नीराजनमिषेण हि।।५४।।
निवार्योयो वियोगोऽत्र परकीयास्वभावग:।।
तत्कथा गुम्फितेशानुकथाख्याने तयोस्तदा।।५५।।
भक्ते: सञ्चारिभावत्वेनोद्गता स्नेहतस्तयो:।।
कुमारीणां श्रुतीनां च क्रियाज्ञानस्वरूपता।।५६।।
पश्चादपि हरेस्सेवा मतौत्सर्ग्यापवादत:।।
निराकृता न सम्प्रदाये गृहदेवालयभेदत:।।५७।।
गोकुलग्रामवद्देवालयग्रामेऽपि स्वामिता।।
परिक्रीता विद्वलेशै: म्लेच्छराज्ञाभिसम्मता।।५८।।
निजगेहस्थित्यभावे निजग्रामस्थसेव्यता।।
सा देवालयमर्यादा स्वसिद्धान्तापवादत:।।५९।।
अकर्तुमन्यथाकर्तुंकर्तुं सामर्थ्यमस्ति हि।।
अतएवोक्तमाचार्यै: ''रीतिर्देवालयस्य हि।।६०।।
(अपवादतया) देवदमने ह्युचिता'' तदा।।
भक्तेर्हि बीजदार्ढ्यन्तु स्वगृहे सेवयैव हि।।६१।।
बीजदार्ढ्योत्तरं गेहत्यागे बाधो यथा नहि।।
मुख्यानुकल्परूपेण परार्थस्यापि पूजने।।६२।।

गृहाद्यर्पणन्यूनेऽपि न भक्तौ हि विरोधिता।।
''ज्ञानाभावे पुष्टिमार्गी''त्युपदिष्टो यथा तथा।।६३।।
''तदीयैस्तत्परैस्साकं''स्थितिकल्पोऽयमुच्यते।।
अतएवोक्तमाचार्यैः तथा ज्येष्ठात्मजैरपि।।६४।।
''जगन्नाथे विट्ठले च श्रीरंगे वेंकटे तथा''।।
''विप्रा गावो हरेर्भक्ताः सदा पूज्या हरेः प्रियाः।।६४।।
गृहस्थस्यातिथिर्यस्मात् पूज्यो दीनो दयास्पदः।।
जगन्नाथे द्वारिकायां श्रीरंगे व्रजमण्डले।।६५।।
यत्र पूजाप्रवाहस्स्यात् तत्र तिष्ठेत तत्परः''।।
मर्यादाभक्तिरीत्यापि कृष्णस्य भजनेऽपि वै।।६६।।
सेवास्वरूपबाधेऽपि न भक्तौ बाधकं हि तत्।।
नापिचैतावता पुष्टिरीतित्यागो गृहे मतः।।६७।।
स्वगेहे न निजाचार्यरीतित्यागेन सेवनम्।।
सेवायां हि नियुक्तिस्तु गृहादेः त्यागिनां मता।।६८।।
गृहस्थानां गृहे ह्येव सेवा सर्वसमर्पणात्।।
गृहस्थसेव्यविस्मृत्या न शोभा तत्र चोत्सवे।।६९।।
कटाक्षवैपरीत्येन मायायां हि लयो मतः।।
देहान्ते कृष्णदासस्य दुर्गतेर्नियमोक्तिना।।७०।।
कुब्जेव कामरत्यास्तु प्रकारोऽयं न शंसितः।।
प्रमाणदृष्ट्यात्वेवं हि प्रमेयबलमन्यथा।।७१।।
कर्तुं तस्य हि सामर्थ्याद् यथेच्छति करोति सः।।
आज्ञया चान्यथारीतिर् अन्यथात्वपराधिता।।७२।।
यथाप्रमाणं कर्तव्यं प्रमेये नाधिकारिता।।]

घोषथी वेगे पांउ धारिया गिरि भणी।।
श्रीगिरिराजधरणनो ताप हरवा।।८।।
फूल फेंटे भर्या वसन वाघा तणाँ।।
विविध भूषण ते अंग धरवा।।
तुरंग चाल्यो वायु वेगे उतावळो।।
जाणे नौका चाली सिंधु तरवा।।९।।
दिवस एकार्धनो विरह ते युगसमो।।
निरांजन मिषे रूप हृदय धरवा।।
जीवने एह कृत्य नित्यप्रति क्षणुँ–क्षणुँ।।
'श्रीविट्ठलनाथ' एवा उच्चरवा।।१०।।
रूप बेउ एक ते भिन्न थई विस्तरे।।
विविध लीला करे भजनसार।।
विविध वचनावली नयन सेने करी।।
संज्ञा सूचवे निशि विहार।।११।।
रत्नमुक्तावली पाटसूत्रे करी।।
गलसरी(/दुल्लरी) शोभिता करे शृंगार।।
विविध कुसुमावली ग्रथित हाथे करी।।
एक एकने कंठे आरोपे हार।।१२।।
विविध मेवा भोग मधुर मिष्टान्न रस।।
र(/ध)समस्या अर्पेते बहु प्रकार।।
विविध बीडां सुगंध कर्पूर एलची।।
लविंग पूंगी अने खेरसार।।१३।।
व्यजन शीतल वायु मुकुर कर कमल धरी।।
देखाड़ताँ मोहे सकल संसार।।

(इति श्रीविट्ठलेशप्रभुचरणे स्थायिनिर्गुणभक्तिभावस्य सञ्चारिभावतया चन्द्रावल्याः भावस्योपपादनम्)

(विवरणम्)

[''बाललीलादिसुप्रीतो गोपीसम्बन्धिसत्कथः ।।७३ ।।
पितृप्रवर्तितपथप्रचारसुविचारकः'' ।।
प्रभुः श्रीविट्ठलेशः ''श्रीकृष्णभक्तिप्रवर्तकः ।।७४ ।।
अनेकमार्गसंक्लिष्टजीवस्वास्थ्यप्रदो महान्'' ।।
इत्थं पिता च पुत्रश्चाप्युभौ श्रीकृष्णप्रापकौ ।।७५ ।।
अतोहि विप्ररूपं वै धृत्वायातौ स्वगोकुले ।।
वाक्सुधाकृष्टभक्तान्तर्हृत्सन्देहनिवारकौ ।।७६ ।।
तयोर्ध्यानेन निखिलप्रतिबन्धनिवारणम् ।।]

एह सेवारस प्रकट पोते करी ।।
निज सेवक तणी कीधी सार ।।१४ ।।
ए अहर्निश ध्यान श्रीवल्लभाधीशनुँ ।।
सकल कलि–मल–दुरित–कोटि क्षाले ।।
ए प्रभु भुवि प्रगट विप्र–वर–तनु धरी ।।
दीठड़े त्रिभुवन तणाँ चित्त चाले ।।१३/१५ ।।
हावभावादिक कोटि–कोटि करे ।।
मदन–ज्वर–व्यथा ते वेगे टाळे ।।
जालरंध्रे सखी जाणे चित्रे लखी ।।
वांछिता नाथनी छबि निहाळे ।।१६ ।।
कमल खंजन मीन मधुप ज्यां त्यां थकी ।।
वक्र लोचन प्रांत पाछां वाळे ।।

(इति एवंभूतभक्तिपरायणे आचार्येतदनुगामिनामपि ईदृग्भावसंचार निरूपणम्)

(विवरणम्)

[कृष्णसेवापरस्साक्षात् उपदेशपरस्तथा ।।७७ ।।
विट्ठलो निजदासानां भक्तिवर्त्मनि नायकः ।।
श्रोतव्यः सकलैः सद्भिः स्वकीर्त्या भक्तिपोषकः ।।७८ ।।
तेन भक्तेर्बीजदाढ्र्येनिरोधः फलितो भवेत् ।।
दर्शनीयतमो भक्तनेत्रयोर्हि सुधाकरः ।।७९ ।।
अतो गोपालदासस्य नयनाम्बुजभास्करः ।।
व्रजमण्डलप्राकट्यं साधनीकृत्य विट्ठलः ।।८० ।।
व्रजाधिपस्य भक्तिन्तु फलरूपां हि निर्गुणाम् ।।
सञ्चकारेति कविना कीर्तितं भक्तिभावतः ।।८१ ।।
अत्र केदारसामेर्यौः विकल्पो रागयोजने ।।
आख्यानगानवेलातः कदेति नहि बुध्यते ।।८२ ।।
इतीशानुकथारूपाख्यानव्याख्योदिता मया ।।
श्रीमद्विट्ठलनाथस्य कृपामात्रावलम्बिना ।।८३ ।।]

दासनो दास भणे सकल सज्जन सुणे ।।
श्रीविट्ठल आपनुँ बिरद पाळे ।।१५/१७ ।।

(इति उपसंहारपद्ये प्रभुचरणस्य स्वमाहात्म्यसत्यापकत्वस्तुतिः)

इति श्रीगोपालदासकृतस्य श्रीवल्लभाख्यानान्तर्गतसप्तमाख्यानस्य ज्योतींषिखण्डे पुष्टिसम्प्रदायेशानुकथारूपभक्तिलीलाप्रकारवर्णनपरे गोस्वामिश्रीदीक्षितात्मजेन श्याममनोहरेण कृतं विवरणं सम्पूर्णम्

QQQ

(विवरणम्)

[सजातीयविजातीयस्वगतद्वैतवर्जिते ।।
अखण्डसच्चिदानन्दे स्वानन्दांशतिरोहतिः ।।१ ।।
दृश्यं द्रव्यं सदंशेन, तस्य द्रष्टा चिदंशतः ।।
प्रादुर्भवतस्तत्रोपादानांशिनि खण्डशः ।।२ ।।
कर्मरूपे दृश्यखण्डे कर्मनामनि द्रष्टरि ।।
प्रादुर्भूते ह्युभे तत्र, स्वरूपज्ञानवर्जिते ।।३ ।।
द्रष्टरि दृश्यसंमोहलीलया सृष्टिसंसृती ।।
अहंकारः प्राकृतो हि चितोऽन्तःकरणं मतम् ।।४ ।।
स्वस्वरूपास्मारकं सच् चात्मरत्यारुपाधि तत् ।।
ताभ्यान्तु कर्मणां नामरूपयोः संगतिर्हि या ।।५ ।।
जनिकाऽसद्वासनायाः विषयासक्तिसाधिका ।।
विषयो भगवानेव यद्यप्येवं तथापि या ।।६ ।।
विषयताहंममतिः चिदविद्यायुतेर्मता ।।
मायिकी सान्तरा भाति दृश्यद्रष्ट्रोर्न धर्मिता ।।७ ।।
तत्र सर्गविसर्गस्थानलीलासु व्यवस्थितिः ।।
पोषणं तत्र सदसद्वासनाभ्यां यथायथम् ।।८ ।।
सद्वासनाकृतं कर्म धर्मरूपं भवेत्तथा ।।
असद्वासनयाऽधर्मः संगतेस्संग्रहो ह्ययम् ।।९ ।।
त्रैवर्गिकानां धर्मार्थकामानां पुरुषार्थता ।।
प्रवृत्तिरूपोऽयं धर्मोनिवृत्तिर्मुक्तिरूपिणी ।।१० ।।
सदसद्वासने हेतू स्यातां त उभयत्र हि ।।
भक्तिस्तु पञ्चमो ज्ञेयः पुरुषार्थ सहि सप्तमे ।।११ ।।

आख्याने, बीजभावो यो वासना सांशिनि वरा।।
कृपैकमूला चेत् पुष्टिभक्तिरेवमुदीरिता।।१२।।
निजाहंममतायास्तु तस्माएव समर्पणात्।।
विनियोगात्तयोरेवं विषयाणां तयोरपि।।१३।।
शुद्धिस्त्वेतयोर्यर्हि विषयाणां हि विस्मृतिः।।
शनकैस्तु भवेत्सिद्धो निरोधः परमात्मनि।।१४।।
तथा तत्साधनार्थं हि फलसाधनभिन्नता।।
निरोद्धुर्हि निरोध्येषु निरोधः साधनं मतम्।।१५।।
तेनैव जायते रोधो निरोध्यानां परात्मनि।।
तादृश्येव हि लीलात्र चाष्टमे प्रतिपित्सिता।।१६।।
श्रीविट्ठलस्य श्रीकृष्णे निजात्मात्मीययोजनम्।।
तत्सेवाकथयोस्तत्र स्वीयास्तु बिन्दुनादजाः।।१७।।
सर्वेषां स्वस्वाधिकारानुकूल्येन नियोजनम्।।
यथा स्वस्य तदीयानां तत्पराणां तथा पुनः।।१८।।
सेवायां परिचर्यायां तस्य निरोधस्तेन संगतिः।।
प्रभुर्निरुद्धो रोधेन निरोधपदवींगतः।।१९।।
निरुद्धानान्तु रोधाय निरोधमतनीत् स्वयम्।।
अहन्तामते लीने ह्यन्यस्मरणवर्जिते।।२०।।
तन्मनस्के तदालापे तद्विचेष्टे तदात्मिके।।
नातः स्वरूपतो नो वा विषयाणां हि नष्टता।।२१।।
''ऐतदात्म्यमिदं सर्वं''-''यत्र नान्यद्धि पश्यति''।।
भूमानन्दसुखावाप्तिर्निरुद्धानां हि विट्ठले।।२२।।
''गोकुले गोपिकानां च सर्वेषां व्रजवासिनाम्।।
यत् सुखं समभूत्'' तद्वै विट्ठलो विदधाति हि।।२३।।

उपक्रमो निरोद्धुर्हि व्रजागतिपुरस्सरः।।
'व्रजजीवनप्राणो'क्त्या द्योतितो विट्ठलस्य हि।।२४।।
प्रमाणादिचतुर्णां हि निरोधो वर्ण्यते ततः।।
सार्धैस्त्रिभिस्तु पद्यैर्हि निरोधाख्यानवर्णने।।२५।।]

ललित मनोहर श्रीवल्लभ–सुवन सुजाण।
नखशिख सुंदर व्रजजन–जीवन–प्राण।।१।।

(इति व्रजजीवनप्राणत्वरूपोभयसाधारणधर्मेण श्रीवल्लभसुतस्यापि व्रजवासः साधननिरोधरूपः)

वदनकांति जाणे उदया कोटिक भाण।।
द्विजकुलमंडन प्रगट्या पुरुष प्रमाण।।२।।(प्रमाणनिरोधः)
नाम निरूपम उच्चरे सकलकल्याण।।
तेना साखी चारे वेद–पुराण।।३।।(प्रमेयनिरोध)
असुर हणेवा ब्रह्मवाद करपाण।।
भक्ति करे सौ वाजिंते रे निशाण।।४।।(साधननिरोध)
वैष्णवजनने आपे पदनिर्वाण।।(फलनिरोध)

(इति स्वस्वरूपेण श्रीविट्ठलेशकृतः प्रमाणादिचतुष्टयनिरोधः)

(विवरणम्)

[सार्धसप्तभि पद्यैस्तु तत्प्रकारो निरूपितः।।
अनैर्भर्यं स्वेतरेषु प्रमाणादिचतुर्ष्वपि।।२६।।
स्वीयरूपेण हस्तेन वाचापि हि निरोधकृत्।।
निरोधायैव भक्तानां व्रजलीलारते हरौ।।२७।।
निन्द्यवन्द्येषु जीवेषु माहात्म्यस्य प्रकाशनात्।।

लोकेऽमुष्मिन् परेऽज्ञानतिमिरस्य निवारणात्।।२८।।
अधर्मनाशनाच्चैवं धर्मत्राणाच्छ्रुतेरपि।।
भीतिं निवार्य भक्तानां भक्तौ संयोजनादपि।।२९।।
वाक्सुधापानतृप्तानां सेवकानां सुपोषणात्।।
कर्वेस्स्वस्यापिहि कृते प्रार्थ्यपादारविन्दतः।।३०।।
अनन्योपमरूपस्य विट्ठलस्य निरूपणम्।।
''निःसाधनफलात्मायं व्यक्तिर्भगवतो नृप।।३१।।
अव्ययस्याप्रमेयस्य निगुर्णस्य गुणात्मनः''।।
फलात्मा फलदः साक्षात् तथा श्रीविट्ठलेश्वरः।।३२।।
अह्क्यापृता ये निशि निद्रिताश्च
व्रजौकसः साधनवर्जिता वै।।
तद्भावसम्भावितरूपलीलया
स्वस्मिंस्तु तानेकपरान् चकार।।३३।।
यथा पुरा सैव हि रीतिरत्र
प्रदर्शिता वल्लभसूनुनापि।।
निरूपिता चेह मनोरमेषु
आख्यानपद्येष्वपि विट्ठलस्य।।३४।।]

मारग मुक्तो(क्ति) कोई न मागे दाण।।५।।
चरणचाखड़ी वंदे राणोराण।।
सरस थया जे हुता प्रेत पाषाण।।६।।
हतित–पतितनुँ जुओ तमे प्रकट एँधाण।।
शेष सहस्रमुख उच्चरे जेनाँ वखाण।।७।।
चौद लोकमां वरते जेनी आण।।

त्रास तिमिरनुँ जाणे सकल विहाण।।८।।
अधर्म सकलनुं पेरे पेरे कीधुँ वित्राण।।
धर्म सकलनुं प्रभुजीये कीधुं त्राण।।९।।
सन्मुख कीधाँ जे हुता भ्रष्ट अजाण।।
निर्भय कीधा शिरपर धरी निजपाण।।१०।।
निगमतत्त्वरस यश भर्यां अमृतसंधान।।
रूपसुंदरता शुं कहुं! नहि को'ए(ह) समान।।११।।
कृपा करी हरि राखी बहु विध का'न।।
सेवक जनने राखी ल्यो ए ल्हाण।।१२।।

(इति व्रजवासेन व्रजभावभावुकानां भक्तानां साधननिरोधनप्रकारः)

(विवरणम्)

[इतःपरं चतुर्भिस्तु निरोध्यानां निरूपणम्।।
पुष्टिमर्यादभिन्नानां गुणवाङ्नेत्रश्रीकरैः।।३५।।
निरोधो नादसृष्टानां लीलया विनिरूपितः।।
निरुद्धचेतसानेन कविना रसवर्षिणा।।३६।।]

एवा ते गुणनिधि नाथ गाताँ ब्रह्म हत्यादिक अघ टळे।।
लीला ते लहरी सिंधु झीले रासरसिकने जई मळे।।१३।।
निःसाधन-जन-हित करेवा श्रीनाथ विट्ठल आविया।।
व्रजमां ते हींड़े मलपताँ ते व्रजसखी मन भाविया।।१४।।
कमलनैणे ने अमृतवेणे वाक्यमाधुरी रेड़ताँ।।
वेदध्वनि मिष हस्तचलणे शोभे सौने तेडताँ।।१५।।
रंगे ते रमता रसभर्या प्रभु घोषमाँ लीला करे।।
अधिक-अधिक प्रतापपूरण यश दशोदिश विस्तरे।।१६।।

(इति नादसृष्टौ पुष्टिमर्यादजातानां श्रीविट्ठलेशस्वरूपेण जातो भगवति श्रीकृष्णे फलात्मकनिरोधः)

(विवरणम्)

[अथेदानीं बिन्दुसृष्टेर्निरोधस्य निरूपणम्।।
द्वापरे शक्तिरूपैस्स्वक्रियाज्ञानादिभिस्तथा।।३७।।
व्यूहैश्चतुर्विधैश्चापि मायाभ्यां योगमोहयोः।।
तस्यात्मनोऽनुशयनं 'निरोध'इति कीर्तितः।।३८।।
अथ स्वात्मजसेव्यानां त्रिभिः पद्यैरुदाहृतः।।
भगवद्विग्रहाणां हि लीलामोदः प्रमोदतः।।३९।।
व्रजौकसां निरोधार्थं विट्ठलाभेददृष्टिना।।
पद्मावत्याः गृहिण्यास्तु द्विजाप्तानां च वर्णनम्।।४०।।
स्त्रियाणाञ्च हरेस्सेवाकथयोः सहचारिणाम्।।
गंगागोविन्ददासादिसदृशानां स्वसद्मनि।।
चतुर्भिश्च पुनर्द्वाभ्यां पद्यैः हृद्यैस्तथात्र हि।।४१।।]

भाँति–भाँति लीला करे प्रभु साते स्वरूप सोहामणाँ।।
एक एकथी अधिक शोभा व्रजसखी ले भामणाँ।।१७।।
पेरे–पेरे परिवार सोहे देव मोहे निरखताँ।।
उत्साह आनंद अधिक वाध्यो कुसुम बरखे हरखताँ।।१८।।
प्रति सदन शोभा अति घणी भणी वेद वदने न जाय।।
मकरंद माला भ्रमर गूँजे पक्षिनाद सोहाय।।१९।।

(इति निजशक्तिरूपसप्तात्मजफलनिरोधलीला श्रीविट्ठलेन प्रकाशिता)

अंतःपुरलीला करे प्रभु सकल जन संतोषवा।।
जाणे ते मत्त मातंग छूट्या नूपुरने निर्घोषताँ।।२०।।

हार कंकण कर्णभूषण नाद नाना हींडताँ।।

गान गाये ने स्वर सुहाये ।।

'श्रीनवनीत प्रियाजी'ने पोढताँ।।२१।।

संध्या समे शृंगार नौतन फूल गूँथे सहु मळी।।

सदनशोभा निरखताँ ते लक्ष्मी मन पाम्याँ रळी।।२२।।

वास वांछे व्रज वसेवा एणी पेरे सुख पामवा।।

श्रीपुरुषोत्तम उत्तम वरने समय जोइ शिर नामवा।।२३।।

(इति श्रीविट्ठलेशस्य अन्त:पुरलीलायामपि फलरूपा श्रीनवनीतप्रिय-निरुद्धता)

लीलाने अनुसार कलरव कूजता द्विज शोभताँ।।

स्वस्वभाव-त्यागी ध्यानरागी ।।

कोईक भावे लोभताँ।।२४।।

सहचरीरत्न सुकंठ नादे गान सुयश प्रकार।।

रसिकजन सौ संग मळीने करे ते उच्चार।।२५।।

(इति श्रीविट्ठलेशसद्मनि स्थितानां प्रियाप्तजनानामपि भगवत्सेवाकथयो: फलनिरोधनिरूपणम्)

(विवरणम्)

[साधनीकृत्य भक्तेर्हि नैर्गुण्यात् या निरुद्धता।।
भगवद्भक्तयोर्जाता मिथस्तत्फलमत्र हि।।४२।।
इत्थं निरोधलीलां हि श्रीविट्ठलप्रभोरिमाम्।।
वर्णयित्वाथ स्वस्यापि तत्राकांक्षा निवेदिता।।४३।।
पद्येनैकेन कविना 'धन्याश्री'रागरञ्जिता।।
निजात्मन्यपि धन्या श्री निरोधाख्यानख्यापिता।।४४।।]

एणी पेरे लीला करे श्रीवल्लभराजकुमार।।
भक्तजननाँ कोड पूरो आपो चरणविहार।।२६।।

इति श्रीगोपालदासकृतस्य श्रीवल्लभाख्यानान्तर्गताष्टमाख्यानस्य
ज्योतींषिखण्डे पुष्टिसम्प्रदायनिरोधलीलाप्रकारवर्णनपरे
गोस्वामिश्रीदीक्षितात्मजेन श्याममनोहरेण
कृतं विवरणं सम्पूर्णम्

QQQ

नवमाख्यान

(विवरणम्)

[सोऽबिभेच्च बिभेत्येवमेकाकी पुरुषोऽत्र हि ।।
स्वरूपैक्यविमर्शेतु भयहेतुर्न कश्चन ।।१ ।।
तथापि नैव चैकाकी रन्तुमात्मरतौ पराम् ।।
रतिं हि मनुतेऽतोऽत्र सृष्टिसृष्ट्रोः द्विता कृता ।।२ ।।
आत्मन्येवात्मनात्मानं द्विरूपं वै चकार सः ।।
स्वानन्दोच्छलनं यस्मिन् कर्मणि निष्प्रयोजनम् ।।३ ।।
अनायासेन तच्चैव लीलात्वेनाभ्युपेयते ।।
सति चैवमियं सृष्टिः कथं लीलात्वमाप्नुयात् ? ।।४ ।।
श्रूयतां हि समाधानं नैव चात्यन्तिकी भिदा ।।
सृष्टेषु त्वैक्यबोधेन रहितेष्वपि सृष्टरि ।।५ ।।
लीलात्वं तत्कृतौ स्वैक्याखण्डबोधादखण्डितम् ।।
सभयं रमणं चाप्यरमणं निर्भयं तथा ।।६ ।।
उभे नैवाभिलषिते निर्भयं रमणं ततः ।।
लीलात्मकमभीष्टं वै सृष्टौ मूलप्रयोजनम् ।।७ ।।
स्वरूपैक्ये ह्यनिरताः संसृतौ निरतास्ततः ।।
संसृतेर्भेदतो भीताः मुक्तिं कांक्षन्ति वै पराम् ।।८ ।।
अतोऽनुरूपता भक्तौ लीलात्मकतयैव हि ।।
परजीवात्मनोरैक्ये कृपाभक्त्योर्हि भिन्नता ।।९ ।।
लीलयैव हि तेनास्मिन् सम्प्रदायेऽभ्युपेयते ।।
भगवद्भजनं नूनमतीतं संसृतेः पुनः ।।१० ।।
मुक्तितोऽप्युत्तमं साक्षात् पुरुषोत्तमगामिनम् ।।

क्षरातीतोऽक्षराच्चैवोत्तमः स परिकीर्तितः।।११।।
तस्य या स्वगृहे सेवा सा मुक्तेरपि मुक्तता।।
''यो दुस्त्यजानि''त्यारभ्य चोक्तं
भागवतेऽपि यत्।।१२।।
''अभवः फल्गु''रेवेह तत्सपर्यारतस्य हि।।
अथापि वर्णितं किञ्चिदन्यत्रापि सुनिश्चितम्।।१३।।
''भक्तौ च यस्यामेव कवयो आत्मानम् अविरतं
विविधवृजिनसंसारपरितापोपतप्य मानम् अनुसवनं स्नापयन्तः
तस्यैव परया निर्वृत्त्या हि अपवर्गम् आत्यन्तिकं
परमपुरुषार्थमपि नो एव आद्रियन्ते भगवदीयत्वेनैव
परिसमाप्तसर्वार्थाः''
भगवदीयत्वमेतादृक् तुच्छीकृतमुक्तिकम्।।
मुक्तेरपीत्थं मुक्तिर्या सा चाख्याने निरूप्यते।।१४।।
आख्यानस्य समाख्यातु वल्लभाख्यानमेव हि।।
अतः श्रीवल्लभाचार्यः सर्गाश्रयसमाश्रयः।।१५।।
तदेतत्सूचनायैव मुक्त्याख्याने कविस्स्वयम्।।
परिवारं वल्लभस्य संकीर्तयति नेतरम्।।१६।।
आश्रयो द्विविधो मोक्षाश्रय-सर्गात्मभेदतः।।
सर्गात्मातु विराट्साक्षाद् वाक्पतिर्वल्लभो मतः।।१७
विप्रदेहधरो, मुक्त्यै मुक्तसर्गाश्रयो हरिः।।
मुक्तिर्नोसंसृतेरेव किन्तु मुक्तेर्हि मुक्तता।।१८
इयं साधारणा नैव मुक्तैर्मृग्या हि भूतले।।
'स्वतन्त्रक्रीड'इत्युक्तः सर्गाख्याने हि चादिमे।।१९
आस्यांशिनोस्तु तादात्म्यं तेनाध्यात्माधिदेवते।।

नवलक्षणलक्ष्यो हि वल्लभश्चाश्रयो मत: ।।२० ।।
''श्रीकृष्ण: परमानन्दो दशलीलायुत: सदा ।।
विस्फुरन् पर''इत्युक्तेस्तल्लीलाश्रयरूपिणी ।।२१ ।।
तस्य स्वतन्त्रक्रीडस्य प्रमातन्त्रात्मिकापि या ।।
भूमावाचार्यलीला सा गीताख्यानेषु सर्वथा ।।
''योऽध्यात्मिकोऽयं पुरुष: सोसावेवाधिदैविक: ।।
यस्तत्रोभयविच्छेदस्स: स्मृतो ह्याधिभौतिक: ।।[२३]
एकमेकतराभावे यदा नोपलभामहे ।।
उभयं तत्र यो वेद सो हरि: स्वाश्रयाश्रय:'' ।।[२४]
सर्गात्मा वचने योस्मिन्सोत्राप्याध्यात्मिको मत: ।।
मुक्तानामाश्रय: कृष्णो ह्याधिदैविक उच्यते ।।[२५]
'मुक्तोपसृप्य'वचनाद् भौतिको विप्ररूपधृक् ।।
सर्गात्माध्यात्मिक: प्रोक्तो विप्रदेहोधिभौतिक:[२६]
अन्योन्यनिर्भरौ द्वौतु तृतीय:स्वाश्रयाश्रय: ।।
सेव्यसेवकभावे तु भेदएव हि भासते ।।२७ ।।
सेव्यसेवकयोरत्रातोऽभेदेन निरूपणम् ।।
आख्याने नवमे चास्मिन् गोपालेन कृतं मुदा ।।[२८]
पद्यद्वयेन सर्वादौ स्तुति: श्रीवल्लभस्य हि ।।
सर्गात्मनश्च लक्ष्यस्य लक्षणै: नवकैर्यत: ।।२९ ।।]

नित्य प्रति क्षणुं क्षणुं समरिये ।।
श्रीवल्लभनो परिवार रे रसना ।।
श्रीपुरुषोत्तम प्रगटिया जगतनो ।।
करेवा उद्धार रे रसना ।।१ ।।
कलिमां कारण एह छे बीजुं सर्वेभूमिनो भार रे रसना ।।

ए विना बीजुं सर्वेबादलुं चौदलोकशणगार रे रसना ।।२ ।।

(विवरणम्)

[पद्यद्वयेनाग्रिमेण वल्लभात्मजकीर्तनम् ।।
ज्येष्ठ: प्रमाणरूपोहि प्रमेयात्मापरस्तथा ।।३० ।।
भूमौ भक्तिप्रचारार्थं उभावन्योन्यसंश्रितौ ।।
प्रमेयस्य सुखावाप्ति: स्वप्रमाहेतुका मता ।।३१ ।।
प्रमाणस्य सुखेनैव प्रवृत्ति: स्वप्रमेयगा ।।
अत्र केवलमर्यादा ज्येष्ठे श्रीवल्लभात्मजे ।।३२ ।।
कैश्चित्तु कल्प्यते पित्रा तत्रायं दीक्षितो नवा ? ।।
पुष्टौ पित्रा दीक्षितोऽपि पुष्टिस्थो यदि नोच्यते ।।[३३]
वार्ता केतरवैष्णवानां निजापर्णकारिणाम् ! ।।
चतुरशीतिभक्तानां पुष्टिमार्गानुगामिनाम् ।।३४ ।।
मर्यादयार्चितानाञ्च पश्चाद् भावप्रतिष्ठया ।।
आचार्यसेवितानां च विभूनाञ्चाप्यपुष्टता ।।३५ ।।
मर्यादाभक्तगेहेषु सेवितानां कुतो नहि ? ।।
नवनीतप्रियो योहि यशोदोत्संगलालितो ।।३६ ।।
प्रमाणलीलारूपत्वात्स्यान्मर्यादास्थितो न किम् ? ।।
स्वपित्राऽदीक्षितत्वन्तु वक्तुं नैव हि शक्यते ।।३७ ।।
पितुर्गेहस्थसेव्यानां न स्यात् सेवाधिकारिता ! ।।
पत्रेष्वनुजस्यापि अन्यत्रावस्थितस्य च ।।३८ ।।
अग्रजाय प्रेषितेषु सेव्यांघ्रिनतिवेदनम् ।।
तदानीं तेन तेषां हि सेवाग्रजकृतोच्यते ।।३९ ।।
''यदनुग्रहतो जन्तु: सर्वदु:खातिगो भवेत्'' ।।
वन्द्यस्याग्रजस्यैतद् विमार्गित्वे कथं भवेत् ? ।।४० ।।

पुष्टिमार्गेह्यसेव्यत्वे स्वाग्रजस्थापितस्य हि ।।
भ्रातु: कथं हि वन्द्यत्वं ? तथात्वेऽन्याश्रयो न किम् ?
सावधानतया तस्माद् वक्तव्यं यद् विवक्षितम् ।।
यदि गोपालदासोक्तं ह्यनुजप्रेरितं मतम् ।।४२ ।।
तदा नैवाग्रजस्यैवं मर्यादामार्गगामिता ।।
श्रीवल्लभापराधाय कल्पितापि भवेद् यत: ।।४३ ।।
निजाचार्यात्मजे तस्मान्मर्यादामार्गिता मृषा ।।
कदा केन हि कस्माद्धि कल्पितेति न विद्महे ।।४४
अतो माणिकचन्दोऽपि पूर्वं श्रीविट्ठलेशत: ।।
गोपीनाथं गुणातीततया स्तौतीति संगतम् ।।४५ ।।
प्रमाणमग्रजो ज्ञेय: सुखराशिरथापर: ।।
ज्ञानार्थं तदुपयोगो नो सुखार्थमपि क्वचित् ।।४६ ।।
इति चेन्नहि तद् युक्तमन्योन्याश्रितता तयो: ।।
अज्ञाते न सुखं किञ्चिज्ज्ञाते ज्ञानाप्यता ध्रुवा ।।४७
ज्ञानोपार्जनदु:खं यत् तत् सुखाय भवेन्न किम् ! ।।
निर्मूलात: कल्पनेयं व्रजरायेण घोषिता ।।४८ ।।]

'गोपीनाथजी' सोहामणा नवजल ।।
घन तनु भाण रे रसना ।।
सुखदाता लघु भ्रातना पूरण पुरुष प्रमाण रे रसना ।।३ ।।
कमल लोचन करुणा भर्या ।।
'श्रीविट्ठल' सुख राश रे रसना ।।
दीठडे ताप त्रिविध टळे ।।
स्मरण मात्र अघ नाश रे रसना ।।४ ।।

(विवरणम्)

[सप्तानामात्माजानां श्रीविट्ठलेशस्य चाग्रिमैः।।
पद्यैरापञ्चमादेकादशं यावत् सुकीर्तनम्।।४९]

'श्रीगिरिधर' नर भूषण भ्रात सकल धुरिधार रे रसना।।
वक्ता वेद शास्त्र तणां ।।
'श्रीभामिनीजी' भरथार रे रसना।।५।।
'श्रीगोविंदजी' आनंदमय धर्म सकलनुं धाम रे रसना।।
'श्रीराणीजी' रंजन रूडला भक्त ।।
सकल विश्राम रे रसना।।६।।
'श्रीबालकृष्णजी' (अति)बालुडा ।।
सुंदर भीनले वान रे रसना।।
कमल लोचन 'कमला'पति ।।
छबि नहि को'ए समान रे रसना।।७।।
'श्रीगोकुलपति' अति गुणनिधि ।।
तात तणो प्रतिबिंब रे रसना।।
'श्रीपारवती'पति प्रेमशुं शोभा ।।
सकल कुटुंब रे रसना।।८।।
'श्रीरधुपति' अति गजगति ।।
रतिपति करुं बलिहार रे रसना।।
'श्रीजानकी' जीवन ए सदा ।।
मध्य मणिरत्नमय हार रे रसना।।९।।
'श्रीयदुपति' जीवन जगतनां सदा ।।

मन प्रसन्न उल्लास रे रसना ।।
नाथ ते 'श्रीमहाराणी' तणाँ ।।
मुखमाधुरी विलास रे रसना ।।१० ।।
'श्रीघनश्यामजी' सींचे सुधा ।।
जीवन सकल ब्रह्मांड रे रसना ।।
नाथ ते 'श्रीकृष्णावती' तणा ।।
लीला नित्य अखंड रे रसना ।।११ ।।

(विवरणम्)

[नन्व् 'अग्रज'पदेनात्र गोपीनाथो विवक्षितः ।।
चेत्तदनुहारितायां पुत्र्योरपि कुतो नहि ? ।।५० ।।
मर्यादामार्गितैवं हि तथा तत्सेवया कुतः ।।
नवनीतप्रियस्यात्र तोषो हि वर्णितो भवेत् ! ।।५१ ।।
भगिन्योरग्रजस्तस्मादभिप्रेतो मतो यदि ।।
'पुरुषोत्तम'इति ख्यातस्ततस्तदनुहारिता ।।५२ ।।
भगिन्योः वर्णितातो हि प्रभुस्तेनापि तोषितः ।।
भावोऽत्रैवं हि व्याख्येयः शब्दस्वारस्ययोजितः ।।५३ ।।]

श्रीलक्ष्मी सत्याभामा बेउ अग्रजनी अनुहार रे रसना ।।
श्रीनवनीतप्रियाजीने रीझव्या ।।
सेव्या विविध प्रकार रे रसना ।।१२ ।।

(विवरणम्)

[चतसृणां विट्ठलस्य सुतानां नामकीर्तनम् ।।

ताश्चोद्वाहिता: स्वस्वगेहे सेव्यपरायणा: ।।५४
सामान्यमेतद्धि कुले कृष्णेनैवात्मसात्कृते ।।
तत: स्मरणमेतेषां मुक्तेरप्यधिकं मतम् ।।५५]

शोभा यमुना कमला देवका ।।
जेने सात बांधव सौभाग्य रे रसना ।।
एहुना चरणस्मरण करी ।।
श्रीविट्ठलपदरजरति माग्य रे रसना ।।१३ ।।

(विवरणम्)

[भक्तिकल्पद्रुम: श्रीमान् विट्ठल: परमो मत: ।।
''अस्मत्कुलं निष्कलंकं यत्कृष्णेनात्मसात्कृतम्'' ।।
अत्र लिंगस्तु विज्ञेय आचार्योद्दिष्टरीतिना ।।५६
बहिर्मुखो विरुद्धो यो न स्मर्तव्य: कदाचन ।।
भक्तिकल्पतरौ जाते कलिवल्मीककीटता ।।५७
कलिकालप्रवाहस्था आसुर्येव प्रवाहिता ।।
सेव्यानां लाभपूजायै प्रदर्शनपरा हि या ।।५८ ।।
देवद्रव्योपभोगाय तनुवित्तविभागजा ।।
पातित्यापादिका निन्द्यात्वाजीविका हि सा ।।५९
अतो न तादृशामत्र ध्यानं कीर्तनमेव वा ।।
वल्लभेनैव ''यो देवद्रव्याद: सतु मे नहि'' ।।६०
उक्तत्वेन कुलैक्यस्य भ्राक्त्या पूज्यत्वधीर्मुधा ।।
यदुवंशजा: न किं सन्ति कुतस्ते कृष्णसंभ्रमात् ।।६१ ।।
न पूज्यन्तेऽधुना यो हि कृष्ण: कृष्णास्यपूजित: ।।

कृष्णसेवापरस्तस्माद् दम्भादिरहितो नरः ।।६२ ।।
श्रीभागवततत्त्वज्ञो ज्ञेयश्चाचार्यवंशजः ।।
श्रीविट्ठलेशमाहात्म्यादन्यथा च्युतिरेव हि ।।६३ ।।
स्मयापहश्रीवल्लभोपदिष्टा रीतिः सतां मता ।।
ततो हि वंशजा येतु नामनिर्देशवर्जिता ।।६४ ।।
तेष्वाचार्यचरणोक्तलक्षणे कल्पवृक्षता ।।
भक्तेर्विविक्षिता नूनं बोद्धव्या भक्तिभावतः ।।६५ ।।
अन्यत्र रक्तसम्बन्धो न कल्पद्रुमतावहः ।।
श्रीकृष्णरामयोः रक्तसम्बन्धेऽपि नचेशता ।।६६ ।।
ननु भक्तिप्रचारार्था वंशजाचार्यता यदा ।
अन्यथा न भवेत्सातु यादवानां कथाऽतथा ।।६७ ।।
यथोपदिष्टभक्तेर्हि भक्तित्वं न तदन्यथा ।।
''सेवा प्रमाणमूलैव पुरुषार्थ''तया मता ।।६८ ।।
''आचार्यैरुपदिष्टेन विरुद्धं भ्रान्तमासुरम्'' ।।
अथ प्रकृतविषये हीदं तावद् विचिक्त्यते ।।६९ ।।
नो निरोधात्परतरमित्याचार्योक्तितस्तथा ।।
''भक्ताः पूर्वत्र निर्दिष्टास्ते रोद्धव्या विमुक्तये'' ।।७० ।।
अनयोर्वचनयोरेकवाक्यत्वं कथं पुनः ? ।।
ततश्चैको निरोधोऽपि चतुर्धा विनिरूप्यते ।।७१ ।।
प्रमाणात्मा प्रमेयात्मा साधनात्मा फलात्मकः ।।
मुक्त्याख्याने हि सर्वेषां स्वस्वरूपस्थता पुनः ।।७२ ।।
लीलेयमाश्रयस्यैव 'वल्लभाख्यान'नामतः ।।
शास्त्रार्थरूपा विज्ञेया निजास्येनैव कारिता ।।७३ ।।
''श्रीकृष्णः परमानन्दः दशलीलायुतः सदा ।।

सर्वभक्तसमुद्धारे विस्फुरन्'' पुरुषोत्तमः ।।७४ ।।
व्याख्यातं वल्लभाख्यानं वल्लभोक्तविचिन्तनात् ।।
यदि दुष्टमदुष्टं वा वल्लभ ! त्वं गतिर्मम ।।७५ ।।
अधीतो हि स्वसिद्धान्तः कृपालोः स्वपितुर्मुखात् ।।
तदध्यापितशक्त्या हि ऋतं मन्ये मतं तु मे ।।७६ ।।
उद्यमोऽयं मदीयोऽतः स्वबोधपरिशुद्धये ।।
अथ जीवस्वभावेन प्रमादेनापि भूरिशः ।।७६ ।।
यथोपदिष्टाचरणे सामर्थ्यस्य क्षतेरपि ।।
अहंकृतिर्नोचितात्र जाने दैन्यमितो मयि ।।७७ ।।
अनिराकार्यगर्वोऽपि गुरुर्मेवल्लभो यतः ।।
पितुर्नियोगात्कैशौर्यात्संनिष्ठो बोधलब्धये ।।७८ ।।
तथापि मे यथाबोधाचारे शैथिल्यमेव हि ।।
को नियोक्ता भवेन्मेऽत्र ऋते त्वां वल्लभप्रभो ! ।।
याचेऽहं दैन्यभावेन शैथिल्यं शिथिलीकुरु ।।७९ ।।
लक्ष्मीभार्यस्य मे याच्ञा नान्येतु विषये क्वचित् ।।
वाञ्छैकेयं हि हृदयान्नापयाति कदाचन ।।८० ।।
प्रातर्गेयेन रागेण विभासेन विभासितम् ।।
आचार्यवंशगानं हि भक्तिकल्पद्रुमोपमम् ।।८१ ।।]

पुत्रपौत्रादिक सुख शुं कहुं ।।
जो तुं मुखमां(हे) एक रे रसना ।।
श्रीविट्ठल कल्पद्रुम फळ्यो ।।
तेनी शाखा प्रसरी अनेक रे रसना ।।१४ ।।

इति श्रीगोपालदासकृतस्य श्रीवल्लभाख्यानान्तर्गतनवमाख्यानस्य
ज्योतिःखण्डे पुष्टिसम्प्रदायमुक्तिलीलाप्रकारवर्णनपरे

गोस्वामिश्रीदीक्षितात्मजेन श्याममनोहरेण कृतं
विवरणं सम्पूर्णम्

वन्दे श्रीवल्लभाचार्यं गोपीनाथानुजं सदा।
वन्दे गोपालदासं च जनकं दीक्षितं तथा।।
वन्दे कृपयैतेषां गेहे सेव्यान् प्रभूनपि।
वन्दे गुरूँश्च तान्सर्वान् पाठितोऽस्मि श्रमादहम्।।
कमलापतिमारम्भे झोपाह्वं कृष्णमाधवम्।
धर्मदेवं बालकृष्णं सुब्रह्मण्यौ तथेतरान्।।
आयुष्मता शरदाऽऽयोजितायां
विचारगोष्ठ्यां हि किशनगढ़े या।
श्रीवल्लभाख्याननवीनव्याख्या
प्रतिश्रुतेयं परिपूर्णतामगात्।।
द्विसहस्रमिते वर्षेव्यतीतएकोनसप्तति।
तमेऽसितचतुर्थ्यां तु पोषे मुंबइपत्तने।।

QQQ

उद्धरण तालिका

अ

अतएव श्रुतौ...	(त.दी.नि.१।४०)	४२,१५५
अतः शिवश्च विष्णुश्च जगतो...	(बा.बो.११)	४३५
अतस्तु ब्रह्मवादेन...	(सि.मु.१२)	३१८
अत्र सर्गो विसर्गश्च...	(भाग.पुरा.२।१०।१)	१९
अथ सर्वगुणोपेतः कालः...	(भाग.पुरा.१०।३।१)	१८२
अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्टवा...	(भग.गीता.११।४५)	५७८
अनायासेन हर्षात् क्रियमाणा...	(सुबो.१।१।१७)	२२८
अन्य तत्र विधाय मानुषतनुं...	(सुबो.मं.५)	३२४
अर्थं तस्य विवेचितुं न हि विभु...	(सुबो.मं.५)	२१५
अर्थोऽयमेव निखिलैरपि वेदवाक्यैः...	(त.दी.नि.१।१०४)	२१४
अपश्यत् पुरुषं पूर्णम्...	(भाग.पुरा.१।७।४)	५६
अवतारी हरिः कृष्णः श्रीभागवत...	(त.दी.नि.१।११)	२५७
अव्यक्तं व्यक्तिम् आपन्नं...	(भग.गीता.७।२४)	२६३
अव्यावृत्तो भजेत् कृष्णं पूजया...	(भ.व.२–३)	२८८
अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं...		२३८
अशरीरस्य विष्णोः पुरुष...	(सुबो.२।१०।२)	७२
अस्मत् प्रतिपाद्यं तु...	(सुबो.३।३२।३७)	५४२
असन्नेव स भवति...	(तैत्ति.उप.२।१)	३६
अहं निरुद्धो रोधेन निरोधपदवीं गतः...	(नि.ल.१०)	४८८

अहं हरे तव पादैकमूल–दासा...	(भाग.पुरा.६।११।२४)	५४१
अहं भक्त पराधीनो...	(भाग.पुरा.९।४।६३)	५०
अहन्येपृतं निशिशयानम्...	(भाग.पुरा.२।७।३१)	६६
अज्ञानादथवा ज्ञानात्...	(नव.४)	३२४

आ

आचार्य चैत्यवपुषा...	(भाग.पुरा.११।२९।६)	८८
आत्मानंदसमुद्रस्थं कृष्णमेव...	(सि.मु.१६)	१६६
आत्मारामोऽपि अरीरमत्...	(भाग.पुरा १०।२९।४२)	३५१
आत्मावारे श्रोतव्यो...	(बृह.उप.२।४।५)	३५
आत्मैव इदं अग्र आसीत्...	(बृह.उप.१।४।१)	१५४
आनन्दस्य हरेर्लीला...	(त.दी.नि.३।१।३)	१५१

इ

इदं भागवतं नाम...	(भाग.पुरा.२।७।५१)	५५

ई

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशे...	(भग.गीता.१८।६१)	३२७
ईश्वरो अहम् अहं भोगी...	(भग.गीता.१६।१४)	४६,३२६
ईश्वरस्यापि इर्शितव्यापेक्षणात्...	(सुबो.३।९।९)	२५६,२६५

उ

उत्पन्नानां तत्तन्मर्यादया...	(सुबो.२।१०।२)	१७४,३०५

ऊ

ऊतय कर्मवासनाः... (भाग.पुरा.२।१०।४) ४२६

ऋ

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्... (ऋक्.संहि.२।१६४।२६।३६) २३८

ए

एकोऽहं बहुस्याम् प्रजायेय... (छान्दो.उप.६।२।३) १५७

एतासां तु अधुनैव बहिः... (सुबो.टिप्प.१०।४४।२९) ३९७

एनम् उद्धरिष्यामि इति तदा.. (त.दी.नि.प्र.२।२२८) ५३४

एष उ एव एनं साधु कर्म... (कौषि.उप.३।८) ३८८

क

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्म... (भग.गीता.३।१५) २३६

कर्मणि अकर्म यः पश्येद्... (भग.गीता.४।१८) ३१२,३१५

कर्मनिष्ठा तदा ज्ञेया यदा... (त.दी.नि.१।१७) ४४४

किरात-हूणान्ध्र-पुलिन्द... (भाग.पुरा.२।४।१८) २३२

कृष्णसेवा सदा कार्या मानसी... (सि.मु.२) ४९८

कृष्णसेवापरं वीक्ष्य दम्भादिरहितं नरं... (त.दी.दि.२।२२७) १२७,१९१

ग

गोप्य कामाद् भयात् कंसो... (भाग.पुरा.७।१।३०) २४४

च

चित्तोद्वेगं विधायापि हरिः...	(नव.८)	२०४

ज

जन्मना जायते शूद्र संस्काराद्...	(ब्राह्मणोत्प.मा.१।१३)	२०९
जन्माद्यस्य यतो अन्वयात्...	(भाग.पुरा.१।१।१)	५८
जहुर्गुणमयं देहं सद्यः...	(भाग.पुरा.१०।२६।११)	२६५
जानीतं परमं तत्त्वं...	(अणु.भा.४।४।२२)	४३५

त

तत्सिद्धयै तनुवित्तजा...	(सि.मु.१)	२९२
तत् सृष्टवा तदेव...	(तैत्ति.उप.२।६)	२५५
तदभावे स्वयं वाऽपि मूर्तिं...	(त.दी.नि.२।२३०)	३५८
तदहं भक्त्युपहृतम्...	(भग.गीता.९।२६)	३४८
तदाश्रयतदीयत्वबुद्धयै किञ्चित्...	(बा.बो.१९)	४३५
तस्मात् श्रीवल्लभाख्य त्वदुदितवचनाद्...	(वल्लभाष्टकम्–३)	२१३
तस्मात् भारत...	(भाग.पुरा.२।१।५)	३५
तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते...	(भग.गीता.१६।२४)	२३६
तीर्थपर्यटनं श्रेष्ठं सर्वेषां...	(त.दी.नि.२।२४७)	३३५
त्वं भावयोग परिभावित...	(भाग.पुरा.३।९।११)	३४९
ते नाधीतश्रुतिगणा...	(भाग.पुरा.११।१२।७–८)	६६
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो...	(भग.गीता.११।४६)	५७९

द

दयया निजमाहात्म्यं करिष्यन्...	(सर्वो.३)	२११
दशमस्य विशुद्ध्यर्थम्...	(भाग.पुरा.२।१०।२)	२९
दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्...	(भग.गीता.११।१२)	५७७
देवान् भावयता अनेन ते देवा...	(भग.गीता.३।११)	३८१
देवीं वाचम् अजनयन्त देवाः...	(ऋक्.संहि.८।१००।१७।११)	३३८
दैवी सम्पद् विमोक्षाय...	(भग.गीता.१६।५)	२१०

ध

धन्यासु मूढमतयो...	(भाग.पुरा.१०।१८।११)	४५९

न

न भयं तेन कर्तव्यं ब्राह्मणानाम्...	(पत्रा.३८)	२०८
न मां दुष्कृतिनो...	(भग.गीता.७।१५)	३२७
नमामि हृदये शेषे...	(सुबो.का.१०।१।१)	४७६
नमो भगवते तस्मै...	(त.दी.नि.१।१।१)	६१
न वा अरे सर्वस्य कामाय...	(बृह.उप.२।४।५)	३४२
नाभूद् इति अवगत्य...	(त.दी.नि.३।१२।३९)	२९१
नासतो विद्यते भावो नाभावा..	(भग.गीता.२।१६)	१०१
निःसाधन फलात्मायं प्रादुर्भूतोस्ति...	(सुबो.टिप्प.१०।५।२८)	६०३
निगम कल्पतरोर्गलितं फलं...	(भाग.पुरा.१।१।३)	२५४
निभृतमरुन्मनोऽक्षदृढयोगयुजो...	(भाग.पुरा.१०।८७।२३)	५४४
निरोधो अस्य अनुशयनं...	(सुबो.१०।१।१।९)	६०३

निरोधो अस्य अनुशयनम् आत्मनः..	(भाग.पुरा.२।१०।६)	६०३
निश्चितपदैः उद्दीप्तदीपाकृतिः...	(त.दी.नि.३।१२।३९)	२९१
निष्ठाभावे फलं तस्माद् नास्त्येवेति..	(त.दी.नि.१।१८)	४४५

प

पराञ्चिखानि व्यतृणत् स्वयंभू...	(कठोप.२।१।१)	२६१
पाप्मानं औषत् तस्मात् पुरुषः	(बृह.उप.१।४।१)	१५६
पुष्टानाम् आचार ऊति...	(सुबो.२।१०।१)	३००
प्रत्यक्षे भजनं श्रेष्ठम्...	(त.दी.नि.३।१०।१११)	१९४
प्रपंचमेव मिथ्या इति उक्त्वा...	(त.दी.नि.प्र.१।२३)	३७०
प्रमेयं हरिरेवैकः...	(त.दी.नि.२।८४)	२६९
प्रार्थिते वा ततः किं स्यात्..	(वि.धै.आ.२)	४९५
प्रेम्णो अन्यत् साधनं लोके नास्ति...	(त.दी.नि.२।३२६)	२९८
पितृ–प्रवर्तित–पथ...	(नाम.स्तोत्र.१२)	१४१
पौरुषः सर्गो विसर्गः...	(भाग.पुरा.२।१०।३)	१५२

फ

फलं वा साधनं वा यत्र...	(पुष्टिमार्गलक्षणानि.१)	३२०

ब

बहिः प्राकट्यमेव भगवतो...	(सुबो.टि.१०।२६।७)	३९७
बाधसम्भावनायान्तु नैकान्ते...	(भ.व.१०)	२८९
बाहुप्रसारपरिरम्भकरालकोरु...	(भाग.पु.१०।३०।४६)	२३०

बृहद् उपलब्धम् एतद् अवयन्ति...	(भाग.पु.१०।८७।१५)	२६१
ब्रज भयो महरिके पूत जब यह...	(जन्माष्टमी पद)	१७७
ब्रह्मणो गुणवैशम्याद्...	(भाग.पुरा.२।१०।१३)	१२०
ब्रह्मानन्दात् समुधृत्य...	(सुबो.१०।२६।१)	५८४
ब्रह्मा विष्णुः रुद्रश्च भूत्वा पुनः...	(सुबो.१०।२९।१)	१८०
ब्राह्मणो अस्य मुखम्...	(तैत्ति.आर.३।१३।२)	४३,३२९
ब्राह्मण्यं काचिद् देवता सा च...	(सुबो.२।१।३०)	२०७
ब्राह्मण्यकर्मविरोधेन देहाद् अपयाति...		

भ

भक्त्यभावेतु तीरस्थो यथा दुष्टैः...	(सि.मु.२०)	३१४
भगवदीयत्वेन परिसमाप्तासर्वार्थाः..	(भाग.पुरा.५।६।१७)	६०९
भगवानेव हि फलं स यथाविर्भवेद्...	(पु.प्र.म.१७)	६९
भर्ता सन् म्रियमाणो बिभर्ति...	(तैत्ति.आर.३।१४।१)	३८१,५६४
भावो भावनया सिद्धः साधनं...	(सं.नि.८)	१८८
भिद्यते हृदय ग्रन्थिः...	(मुण्ड.उप.२।२।८)	६८,४९३

म

मर्यादया गुणज्ञास्ते...	(पु.प्र.म.१६)	१३७
मामेव ये प्रपद्यन्ते...	(भग.गीता.७।१४)	३२८
मा कर्मफल हेतुः भूः मा ते...	(भग.गीता.२।४७)	४८८
मां विधत्ते अभिधत्ते मां...	(भाग.पुरा.११।२१।४३)	२४१
मां व्यासवच्छ्रीपतिः..	(सुबो.मं.५)	२१५

मिथ्यात्वस्य च मिथ्यात्वे...	(न्याय.सि.ईश्व.परि.)	१००
मुक्तानाम् आश्रयः कृष्णः...	(सुबो.११।१।१)	६१२

य

यच्च दुःखं यशोदाया नन्दादीनां...	(नि.ल.१)	४८८
यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते...	(तैत्ति.३।१)	२५९
यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य...	(तैत्ति.उप.२।४।५)	२३८
यत्र एकाग्रता तत्र अविशेषात्...	(ब्र.सू.४।१।४)	१९३,४७९
यथाकथञ्चित् कृष्णस्य भजनं...	(त.दी.नि.१।१५)	३७०
यद्-यद् धिया त उरगाय...	(भाग.पुरा.३।९।११)	२१२,२४४
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिः...	(भग.गीता.४।७)	४३१
यस्मात् क्षरम् अतीतो अहम्...	(भग.गीता.१५।१८)	९९,१३२
यस्य देवे परा भक्ति यथा देवे...	(श्वेता.उप.६।२३)	१८२
यज्ञ-भोक्ता यज्ञ-कर्ता...	(सर्वो.३०)	११७
यत्रैव प्रिणाति तत्रैव...	(सुबो.२।२।६)	३४८
यो वा अनन्तस्य गुणा अनन्ताः...	(भाग.पुरा.११।४।२)	२९४
यो हि गुरुः कृष्णसेवाम् उपदेक्ष्यति..	(त.दी.नि.प्र.२।२२७)	४२३
योऽन्तः प्रविश्य मम वाचम् इमां...	(भाग.पुरा.४।९।६)	३५०
योगास्त्रयो मया प्रोक्ता नृणां श्रेयो...	(भाग.पुरा.११।२०।६)	२५९
युक्ताहारविहारस्य...	(भग.गीता.६।१७)	४५४

ल

लक्षणां नैव वक्ष्यामि न न्यूनाद्...	(सुबो.मं.६)	२१४

व

वदन्ति तत् तत्त्वविदः...	(भाग.पुरा.१।२।११)	३०
वाण्या यदा तदा स्वास्यं प्रार्दुभूतं...	(सर्वो.स्तो.३)	२११
विक्षेपाद् अथवा अशक्त्या...	(त.दी.नि.२।२५०–२५१)	३११
विग्रहकर्षितानि इन्द्रियाणि विक्षेपं...	(त.दी.नि.प्र.२।२४७)	३४३
विद्याऽविद्ये हरेः शक्ती मायय्रैव...	(त.दी.नि.१।३१)	६१३
वेदप्रणिहितो धर्मः अधर्मः...	(भाग.पुरा.६।१।४०)	१८५
वेदाभ्यासाद् भवेद् विप्रो ब्रह्मज्ञो...	(अत्रि.स्मृ.१४१)	२०९
वेदाः श्रीकृष्णवाक्यानि...	(त.दी.नि.१।७)	२९०
वेदैश्च सर्वैं अहमेव वेद्य...	(भग.गीता.१५।१५)	२४१

श

शन्नो मित्र शं वरुण शन्नो भवति..	(ऋग्.१।९०।९)	१८५
शब्दो न यत्र पुरुकारकवान्...	(भाग.पुरा.२।७।४७)	३५
शास्त्रे स्कन्धे प्रकरणे...	(त.दी.नि.३।१।२)	२१६
शैशवे अभ्यस्तविद्यानां यौवने...	(रघु.वं.१।८)	२३७

श्र

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः...	(भाग.पुरा.७।५।२३)	५५७
श्रीमद्भागवतं समस्तनिगमन्यायैक...	(त.दी.नि.३।१२।३९)	२९०

श्रीवल्लभाचार्यमते फलं तत्प्राकट्यम्... (वै.वे.२५२ वा.१.प्र.५) २८५

स

स एकाकी न रमते... (महा.उप.१।१) ६१४
स एव कदाचित् जगदुद्धारार्थः... (त.दी.नि.प्र.१।१) ६०८
सख्युव्यर्धात् स्ववपुषाम्बुद्... (भाग.पुरा.१०।१८।१६) ५२४
सांख्यो बहुविधः प्रोक्तः... (त.दी.नि.१।९३) १४२
सर्गादिषु प्रमेयं लक्षणम्... (सुबो.२।१०।२) २६६
सत्त्वात् संजायते ज्ञानम्... (भग.गीता.१४।१७) १८१
सदाचारो मन्वन्तरम्... (सुबो.२।१०।१) ४३४
स तं यो अस्मात् पूर्वो... (बृह.उप.१।४।१) १५७
सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो... (चतु.१) २८८
सर्ववेदान्तप्रत्ययम्... (ब्र.सू.३।३।१) १९२
सर्वस्य चाहं हृदि... (भग.गीता.१५।१५) ४७९
सर्वं खलु इदं ब्रह्म... (छान्दो.उप.३।१४।१) ५४५
सर्वमेव हि भगवान्... (सुबो.३।३२।३२) २९४
सहैव सन्तं न विजानन्ति देवा... (तैत्ति.आर.३।११।५) ३४६
संगच्छध्वं संवदध्वं... (ऋक्.संहि.८।८।४८) ४४०
संसुप्तवत् शून्यवत्... (भाग.पुरा.१२।४।२१) ३५
स्थितानां अभिवृद्धि पोषणम्... (सुबो.२।१०।१) २९९
स्वकर्मणा तम् अभ्यर्थ... (भग.गीता.१८।४६) ११७
स्वधर्मम् अनुतिष्ठन् वै भारद्वैगुण्यम्... (बा.बो.१९) ४३८
स्वरूपस्थो यदा जीवो कृतार्थः स... (बा.बो.७) ६०९

स्वं ह्यपीता भवति...	(छांदो.६।८।१)	३३०
स्वर्गापवर्गनरकेष्वपि तुल्यार्थदर्शिनः...	(भाग.पुरा.६।१७।२८)	१६४
स्थितिः वैकुण्ठविजयः...	(भाग.पुरा.१०।२।४)	१७४
सेवायां लौकिकी...	(स्वमार्गीयशरण–समर्पण..४८)	३४०

ह

हरिमूर्तिः सदा ध्येया संकल्पादपि...	(नि.ल.१७)	५३४
हरेरपि हरि यदि...	(सुबो.कारि १०।१८।११।२६)	४०३

QQQ